आर्य लेखक कोश

डा. भवानीलाल भारतीय

ग्रन्थ परिचय

ीय इतिहास में उन्नीसवीं शताब्दी का
देश के धार्मिक, सांस्कृतिक तथा सामा-
युत्थान की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण
इसी युग में जन्म लेकर राष्ट्र पुरुष
सरस्वती ने देश के सार्वजनिक जीवन में
का संचार किया तथा भारतीय जन-
व्याप्त हताशा, निराशा एवं हीन-
ो दूर करने का सार्थक प्रयास किया ।
चारों के प्रचार प्रसार के लिये उन्होंने
र लेखनी, दोनों साधनों को अपनाया
पकाल में ही सहस्रों पृष्ठों में समाहित
विशाल साहित्य की रचना की ।
ुयायियों, भक्तों और प्रशंसकों ने भी
प्रतिपादित वैदिक जीवन दृष्टि की
ं महत्ता का अनुभव किया और उसी
शैली में विपुल साहित्य का निर्माण
स्तुत आर्यलेखक कोश उन सहस्राधिक
वं साहित्यकारों के जीवन और लेखन
त्त प्रस्तुत करता है जो दयानन्दीय
रा से प्रभावित होकर वाङ्मय की
किसी विधा को अपनी विचाराभिव्यक्ति

आर्य लेखक कोश

(आर्यसमाज तथा ऋषि दयानन्द विषयक लेखन से जुड़े सहस्राधिक लेखकों के जीवन एवं कार्यवृत्त का विस्तृत विवरण)

लेखक

प्रो. (डा.) भवानीलाल भारतीय

भूमिका

(पद्मश्री) श्री क्षेमचन्द्र सुमन

दयानन्द अध्ययन संस्थान

जोधपुर (राजस्थान)
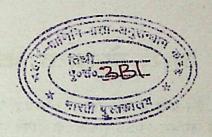
समर्पण

आर्य लेखकों का यह इतिवृत्त परक ग्रन्थ समर्पित है—

- आर्य यति मण्डल के अध्यक्ष, तप, त्याग एवं तितिक्षा की मूर्ति स्वामी सर्वानन्दजी महाराज को, जिनका आशीर्वाद एवं वरदहस्त आर्यसमाज के साहित्यिक अनुष्ठानों के लिये सदा उपलब्ध रहा हैं।
- महामहोपाध्याय पं. युधिष्ठिर मीमांसक को, जो ऋषि दयानन्द एवं आर्यसमाज के जीवन एवं पुरावृत्त के लेखन तथा प्रकाशन में प्रगाढ़ रुचि रखते हैं।
- भारत के भूतपूर्व नियंत्रक तथा महालेखा-परीक्षक श्री त्रिलोकी-नाथ चतुर्वेदी को जो अपने व्यस्त प्रशासकीय कार्यों के होते हुए भी ऋषि दयानन्द के जीवन तथा आर्य साहित्य के अध्ययन और मनन में अनन्य अभिरुचि रखते हैं।

—भवानीलाल भारतीय

आर्य लेखक कोश : एक दृष्टि में

१. इस ग्रन्थ में आर्यसमाज से सम्बद्ध, उसके हितैषी, प्रशंसक तथा अन्य प्रकार से जुड़े दिवंगत एवं वर्तमान लगभग १२०० लेखकों के जीवन एवं लेखन वृत्तान्त का उल्लेख है।

२. इन लेखकों में शास्त्रज्ञ विद्वान्, वेदादि आर्ष ग्रन्थों के टीका, भाष्य तथा व्याख्यानादि के लेखक, विभिन्न भाषाओं एवं विधाओं में विपुल साहित्य सृष्टि करने वाले मौलिक लेखक, कवि, अनुवादक, पत्रकार तथा अन्य सभी प्रकार के मसिजीवियों को सम्मिलित किया गया है।

३. इस ग्रन्थ में ऋषि दयानन्द के समस्त ग्रन्थों के विभिन्न भाषाओं में अनुवादकर्ताओं तथा उन पर टीका, टिप्पणी, भाष्य, व्याख्यानादि लिखने वालों का भी विवरण दिया गया है।

४. इस कोश में आर्यसमाज के अधिकांश गुरुकुलों के स्नातकों, अध्यापकों, उपाध्यायों एवं आचार्यों की साहित्यिक उपलब्धियों का भी उल्लेख है।

५. प्रस्तुत ग्रन्थ में आर्यसमाज की अनेक विदुषी लेखिकाओं की साहित्यिक साधना का आकलन है।

६. इस कोष में जिन भारतीय तथा देशीय भाषाओं के रचनाकारों का विवरण एकत्र किया गया है, वे निम्न हैं—संस्कृत, हिन्दी, पंजाबी, कन्नड़, तमिल, तेलुगु, मलयालम, असमिया, बंगला, उड़िया, नेपाली, उर्दू, बर्मी, अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच आदि।

७. आर्य लेखक कोश में आर्यसमाजी वेदभाष्यकारों, ब्राह्मण ग्रन्थों के व्याख्याकारों, उपनिषदों के टीकाकारों, रामायण, महाभारत, मन्वादि स्मृति ग्रन्थों, दर्शनों, तथा अन्यान्य प्राचीन एवं अर्वाचीन शास्त्र ग्रन्थों की विवेचना करने वालों, खण्डन-मण्डन प्रधान साहित्य लिखने वाले शास्त्रार्थी विद्वानों एवं नाना शास्त्रों एवं विद्याओं में पारंगत विपश्चितों की सारस्वत सेवा का समग्र विवरण है।

८. इस महत्त्वपूर्ण संदर्भ ग्रन्थ में भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में कार्यरत संस्कृत, वेद, दर्शन, हिन्दी तथा अन्य विषयों के आर्यसमाजी प्रोफेसरों के लेखन वृत्त को समाविष्ट किया गया है।

९. इस ग्रन्थ में भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में पी-एच. डी. तथा तत्सदृश उपाधि के लिये स्वीकृत शोध प्रबंधों तथा उनके शोधकर्त्ताओं का भी कालक्रमानुसार विवरण एकत्र किया गया है जो ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज के किसी न किसी पक्ष को लेकर लिखे गये हैं। ध्यातव्य है कि ऐसे ३० शोध प्रबंध तो इस कोश के लेखक के मार्ग-दर्शन में दयानन्द शोधपीठ, पंजाब विश्वविद्यालय से ही स्वीकार किये गये हैं।

१०. परिशिष्ट में दण्डी विरजानन्द के लेखन वृत्त, आर्यसाहित्य के पोषक तथा संरक्षक महानुभावों के जीवन वृत्तान्त के अतिरिक्त स्वामी दर्शनानन्द और पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के ट्रैक्टों की यथोपलब्ध सूची भी दी गई है।

पुरोवाक्

आर्य लेखक कोश की तैयारी विगत दो दशाब्दों से चल रही थी और आज इसे पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। अमर धर्मवीर पं. लेखराम ने अपनी मृत्यु शैया से आर्य जाति को जो संदेश दिया था, उसका भाव यही था कि आर्य-समाज में तहरीर (लेखन) और तक़रीर (व्याख्यान) का काम बन्द नहीं होना चाहिए। प्रस्तुत ग्रन्थ में आर्यसमाज ने अपने एक सौ पन्द्रह वर्षों के जीवनकाल में तहरीर का जो कार्य किया है, उसका विवरण देने का ही प्रयास किया गया है। इस दीर्घ अवधि में आर्यसमाज से सम्बद्ध लेखकों द्वारा जिस विशाल साहित्य का निर्माण हुआ हैं, वह गुण-वत्ता और परिमाण, दोनों ही दृष्टियों से विराट् एवं महत्त्वपूर्ण है।

आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती उन्नीसवीं शताब्दी के जननायकों में सर्वप्रमुख एवं प्रथम थे जिन्होंने यह अनुभव किया था कि वैचारिक परिवर्तन लाने में साहित्य और विशेषतः लोक भाषा में रचित साहित्य का प्रमुख योगदान होता है। अपने से पूर्ववर्ती और समकालीन भारतीय नवजागरण के पुरोधा तुल्य महा-पुरुषों की ही भांति उन्होंने इस देश और सम्पूर्ण मानवता के सार्वत्रिक अभ्युत्थान का प्रयत्न तो किया ही, किन्तु यह बात विशेष रूप से ध्यान में रखनी है कि उन्होंने राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सेन तथा स्वामी विवेका-नन्द की भांति स्वविचारों की अभिव्यक्ति के लिये विदेशी भाषा का सहारा नहीं लिया। स्वामी दयानन्द को इस बात का गौरव प्राप्त है कि उन्होंने अपने धर्मान्दोलन का आधार जिस वैदिक विचारधारा को बनाया, उसके मूल-स्रोत रूप वेदों का भारत की जन भाषा हिन्दी में सर्व-प्रथम भाष्य करने का प्रयास भी किया। ऐसा करने में उनका प्रयोजन यह बतलाना था कि शास्त्र-चर्चा और धर्म विचार के लिये लोक की भाषा, जन जन की बोली को सशक्त माध्यम के रूप में स्वीकार किया जाना ही उचित होगा।

आर्यसमाज ने हिन्दी भाषा और उसके साहित्य को धार्मिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक तथा सामाजिक एवं राजनैतिक चेतना से परिपूर्ण ग्रन्थों का एक विशाल भण्डार प्रदान कर किस प्रकार समृद्ध किया है, इसकी तो कहानी ही पृथक् है। विगत एक शताब्दी से भी अधिक समय से आर्यसमाज से जुड़े लेखकों ने वेद, उपनिषद्, वेदांग, दर्शन, स्मृति, इतिहास, आख्यान आदि के गीर्वाण-वाणी में उपलब्ध शास्त्रों के शतशः भाष्य, टीका, व्याख्यान, अनुवाद आदि लिख कर इन कालजयी ग्रन्थों को जन सामान्य के लिये सुलभ बनाया है। इन लेखकों ने न केवल शास्त्रीय वाङ्मय को ही आम जनता तक पहुंचाया, अपितु उन्होंने काव्य, निबन्ध, जीवनचरित, आत्मकथा और संस्मरण, यहां तक कि उपन्यास, कहानी और नाटक जैसी विविध साहित्य-विधाओं को भी अपने लेखन की परिधि में लिया और हिन्दी के रसात्मक तथा ज्ञानवर्धक साहित्य को सब प्रकार से समृद्ध किया। यह कहना तो अत्युक्ति ही होगी कि हिन्दी के कथा साहित्य, नाटक अथवा समालोचना-साहित्य को विकसित तथा उन्नत करने में आर्यसमाजी लेखकों की बहुत बड़ी भूमिका रही है। किन्तु इस तथ्य को भी नकारना सम्भव नहीं है कि प्रेमचन्द तथा सुदर्शन जैसे कथाकार आर्यसमाजी विचार-धारा से प्रभावित एवं अनुप्राणित रहे, नारायणप्रसाद बेताब जैसे पारसी शैली के नाटककार आर्यसमाज से सीधे जुड़े रहे तथा डॉ. नगेन्द्र और डॉ. विजयेन्द्र स्नातक जैसे हिन्दी के शीर्षस्थ समालोचक आर्यसमाजी परिवार एवं परिवेश में ही जनमे, पले तथा बढ़े।

जहां तक कविता का सवाल है, यह निरपवाद रूप से कहा जा सकता है कि द्विवेदी काल के कवियों ने अपने काव्य में देशभक्ति, राष्ट्रीयता, अतीत के गौरव गान और

सामाजिक जागरण जैसे विषयों को प्रधानता दी, उसके पीछे भी आर्यसमाज की प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष प्रेरणा ही कार्य कर रही थी। हिन्दी साहित्य के अनेक पूर्वाग्रही इतिहास लेखकों ने पं. नाथूरामशंकर शर्मा जैसे आर्यसमाजी कवि के काव्य को मात्र पवित्रतावादी, [Puritan] शुष्क तर्क से अनुप्राणित तथा खण्डनात्मक कहकर उसे सरसता से शून्य बताने की धृष्टता तो की, किन्तु वे यह भूल गये कि शंकर की कविता में लालित्य, माधुर्य और उक्ति वैचित्र्य का कभी अभाव नहीं रहा। तभी तो आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी जब सरस्वती में केरल के चित्रकार राजा रवि वर्मा के रामायण, महाभारत तथा अन्यान्य पुरा गाथाओं पर आधारित चित्र छापते, तो उन चित्रों के नीचे भाव परिचायक काव्य पंक्तियां शंकरजी से ही लिखवाते थे। और यह भी सत्य है कि उस युग के सर्वश्री मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', ठाकुर गोपालशरणसिंह, रामचरित उपाध्याय, गयाप्रसाद शुक्ल सनेही तथा लोचनप्रसाद पाण्डेय जैसे कवियों के काव्य में विद्यमान सांस्कृतिक चेतना तथा नवजागरण के स्वरों के पीछे आर्यसमाज का नवोत्थानवादी उद्घोष ही गुंजरित हो रहा था।

साहित्य के इतिहासकारों ने इस तथ्य को तो स्वीकार किया ही है कि स्वामी दयानन्द के समकालीन भारतेन्दु हरिश्चन्द्र धार्मिक आस्था की दृष्टि से चाहे पुष्टिमार्गी वैष्णव ही थे, किन्तु धार्मिक पाखण्डों के प्रति उनका तीव्र आक्रोश तथा सामाजिक सुधारों के लिये उनकी ललक दयानन्दीय विचारधारा से ही अनुप्राणित थी। तभी तो भारतेन्दु ने अपने पत्र 'कविवचन सुधा' के सम्पादक मण्डल में दयानन्द सरस्वती को स्थान दिया और उनकी मृत्यु पर 'स्वर्ग में विचारसभा का अधिवेशन' जैसा लेख लिखकर स्वामीजी की स्वदेश भक्ति का प्रशस्तिगायन किया। यही बात उस युग के उन सभी लेखकों के बारे में भी कही जा सकती है जिनमें सर्वश्री बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी आदि की गणना होती है।

आर्यसमाज ने केवल हिन्दी के ही साहित्य-भण्डार को समृद्ध किया हो, ऐसी बात नहीं है। आर्यसमाज के प्रवर्त्तक का संदेश सम्पूर्ण मानवता के लिये था और आर्यसमाज आन्दोलन केवल भारत तक ही सीमित नहीं रहा। जिस संगठन का मुख्य उद्देश्य ही 'संसार का उपकार करना' रहा, उससे यह आशा तो की ही जा सकती थी कि वह मानव मात्र के अभ्युत्थान और हित का संदेशवाहक बन कर वेदों की कल्याणी वाणी तथा वेद प्रतिपादित विश्ववारा संस्कृति को एक बार पुनः समस्त भूमण्डल पर प्रसारित करने का पुरुषार्थ करेगा। कारण कि प्रत्येक आर्यसमाजी यह विश्वास लेकर चलता था कि सुदूर अतीत में वैदिक संस्कृति ही मानव जाति की आदि संस्कृति रही है और उसके पुनः प्रचरित होने में ही मानवता का हित है। इसी वैदिक धर्म और आर्य संस्कृति का भारत और उसके बाहर के देशों में प्रचार करने के लिये जब आर्यसमाज को अपने उपदेशकों और प्रचारकों को सर्वत्र भेजना पड़ा तो हिन्दी से इतर भारतीय तथा अन्य देशों की भाषाओं में साहित्य प्रणयन की आवश्यकता पड़ी। परिणामतः आर्यसमाज के सर्वप्रमुख सिद्धान्त ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के जहां प्रायः सभी भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुए वहां भारतेतर देशों की भाषाओं में भी उसे अनूदित किया गया। अंग्रेजी, जर्मन तथा फ्रैंच के अतिरिक्त चीनी और बर्मी आदि ऐशियायी तथा स्वाहिली जैसी अफ्रीकी भाषा में भी उसका अनुवाद हुआ। केवल सत्यार्थप्रकाश के अनुवाद तक ही यह कार्य सीमित नहीं रहा। अंग्रेजी और उर्दू में आर्यसमाज विषयक विशाल साहित्य का प्रणयन हुआ। तत्पश्चात् यथावश्यकता पंजाबी, सिंधी, मराठी, गुजराती, बंगला तथा उड़िया आदि भारतीय भाषाओं में भी प्रचुर साहित्य लिखा गया। यहां तक कि कन्नड़, मलयालम, तेलुगु और तमिल में भी पर्याप्त लेखन हुआ। आर्यसमाज के तमिल लेखकों में एम. आर. जम्बुनाथन, कन्नड़ लेखकों में पं. सुधाकर चतुर्वेदी और पं. मंजुनाथ शास्त्री, मलयालम भाषा के कृतिकारों में पं. नरेन्द्रभूषण तथा तेलुगु लिखने वालों में पं. गोपदेव के नाम सहज ही लिये जा सकते हैं। रही बात संस्कृत की, वह तो आर्यसमाज की शास्त्रीय विचारधारा का मूल उत्स

एवं प्रेरणा स्रोत ही थी। अतः संस्कृत के साहित्य का उन्नयन करने में यदि आर्यसमाजी लेखकों का कुछ अवदान रहा तो वह स्वाभाविक ही था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि आर्यसमाज से सम्बद्ध लेखकों ने भिन्न-भिन्न भाषाओं में, साहित्य की विभिन्न विधाओं और शैलियों में जिस विराट् वाङ्मय की संरचना की है, वह विपुलकाय तो है ही, विगत एक सौ वर्षों से भारतीय महाद्वीप तथा इतर देशों के जन समुदाय को अपनी जीवन्त तथा प्रभविष्णु अन्तश्चेतना से अनुप्राणित एवं आप्यायित भी करता रहा है। प्रस्तुत लेखक-कोश का प्रयोजन इसी सारस्वत सत्र के सहस्राधिक होताओं की साधना तथा उनके व्यक्तित्व और कृतित्व का परिचय पाठकों तक पहुंचाना है। लेखकों के परिचयात्मक कोशों का प्रणयन अन्यत्र भी हुआ है। हिन्दी साहित्य कोश (द्वितीय खण्ड डा. धीरेन्द्र वर्मा तथा अन्यों द्वारा सम्पादित) में हिन्दी साहित्य के प्रणेताओं का परिचय विस्तार से दिया गया है। आचार्य क्षेमचन्द्र सुमन के दिवंगत हिन्दी सेवी (अब तक प्रकाशित दो खण्ड) में तो देश देशान्तरों के लगभग १० हजार उन दिवंगत हिन्दी लेखकों का सचित्र परिचय देने की योजना बनाई गई हैं जो १८०० ई. के बाद के हैं। डा. गंगाराम गर्ग ने 'एन्साइक्लोपीडिया ऑफ इण्डियन लिटरेचर' में संस्कृत, पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषाओं के अनेक रचनाकारों का संक्षिप्त परिचय दिया है।

प्रस्तुत आर्य लेखक कोश की कतिपय विशेषताओं को निम्न प्रकार से परिगणित किया जा सकता है—

१. इस कोश में उन्हीं लेखकों को प्रधान रूप से समाविष्ट किया गया है जो दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्यसमाज से किसी न किसी रूप में सम्बद्ध रहे हैं। इसमें दिवंगत और वर्तमान दोनों प्रकार के लेखक हैं।

२. स्वामी दयानन्द तथा आर्यसमाज के विचारों और कार्यों का विवेचन और मूल्यांकन करने वाले उन भारतीय तथा अन्य देशस्थ लेखकों को भी इनमें ले लिया गया है जो आर्यसमाज के संगठन से औपचारिक रूप से सम्बद्ध नहीं रहे। यथा, भारत के योगी अरविन्द और साधु टी. एल. वास्वानी तथा अमेरिकन चिन्तक एण्ड्रू जैक्सन डेविस और फ्रांसीसी लेखक रौमां रौलां।

३. स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज विषयक शोध-परक लेखन में संलग्न आस्ट्रेलिया के विद्वान् डा. जे. टी. एफ. जॉर्डन्स तथा अमेरिका के प्रो. केनेथ डब्लू. जॉन्स का विवरण भी यहां आपको मिलेगा।

४. इस ग्रन्थ में स्वामी दयानन्द तथा आर्यसमाज विषयक विश्वविद्यालयीय स्तर का शोधकार्य करने वाले शोध-कर्मियों का विवरण भी दिया गया है। परिशिष्ट में भारत तथा अन्य देशों के विश्वविद्यालयों में एतद् विषयक हुए शोध कार्यों का यथोपलब्ध विवरण उपलब्ध कराया गया है। यह उतना ही है जितना मुझे प्राप्त हो सका। इसमें वेद तथा अन्य विषयों को लेकर किये गये आर्यसमाजी विद्वानों के शोधकार्य को सम्मिलित नहीं किया गया। एक तो यह बहुत विस्तृत कार्य है, किन्तु प्रमुखतः कोशकार का प्रयोजन दयानन्द और आर्यसमाज विषयक अन्वेषण को ही प्रकाश में लाना था।

५. स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों के विभिन्न भाषाओं में किये गये अनुवाद कार्य को सम्पन्न करने वाले अनुवादकों का भी परिचय देना मुझे समीचीन जान पड़ा। इसीलिये सत्यार्थप्रकाश के बर्मी अनुवादक भिक्षु ऊ कित्तिमा तथा फ्रैंच अनुवादिका लुई मौरेन का विवरण दिया गया।

६. आर्य लेखकों की इस परिसीमा में संस्कृत, हिन्दी, उर्दू तथा अंग्रेजी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं के लेखक भी आ गये हैं।

७. मुख्यतया लेखकों का विवरण देने में निम्न पद्धति का प्रयोग किया गया है। लेखक की जन्मतिथि, जन्म-स्थान, माता-पिता का नामोल्लेख, शिक्षा, कार्य या आजीविका एवं लेखन कार्य विवरण। किन्तु पाठक ध्यान रक्खें कि जिस लेखक का जितना कुछ विवरण मिला उसे देना ही कोशकार की सीमा थी। दिवंगतों की निधन तिथियां भी यथाशक्य दी गई हैं।

८. जिन लेखकों का जीवनवृत्त विस्तृत रूप से जीवनचरित ग्रन्थों में मिलता है, उनका इतिवृत्त अत्यन्त संक्षेप में देकर मुख्यत: उनका लेखकीय योगदान ही उजागर किया गया है। जो पाठक ऋषि दयानन्द, पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. गुरुदत्त आदि के जीवन का विस्तार से अध्ययन करना चाहें वे तत् तत् व्यक्ति के जीवनचरितों को पढ़ सकते हैं। कोशकार का उद्देश्य तो उनकी साहित्यिक उपलब्धि को ही दिखाना है। यत्र तत्र विशेष अध्ययन (वि. अ.) का संकेत देकर उन ग्रन्थों का नामोल्लेख किया गया है जहां से उनके बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है। वर्तमान लेखकों के पूरे पते भी दिये गये हैं।

९. सामग्री संकलन में इस बात का विशेष ध्यान रक्खा गया है कि आर्यसमाज के उन सभी विख्यात, अल्पज्ञात तथा अख्यात लेखकों की यथा प्राप्त जानकारी पाठकों तक पहुंचा दी जाये जिन्होंने किसी न किसी रूप में इस महान् धर्मान्दोलन को अपनी लेखनी के द्वारा बल प्रदान किया है और ऋषिकल्प दयानन्द सरस्वती की लोकहितकारी शिक्षा को जन जन तक पहुंचाने का प्रयास किया है। यही कारण है कि इस विराट् लेखक-समुदाय में शास्त्रों के पारदर्शी विद्वान् और व्याख्याकार हैं, तो शतश: कवि, पत्रकार, प्रचारक, उपदेशक, अध्यापक, शोधकर्मी लोगों का भी समावेश हुआ है। तथापि कोशकार यह दावा नहीं करता कि यह कार्य अपने आप में समग्र या परिपूर्ण है। अनवधानता या सामग्री सुलभ न होने के कारण कई व्यक्तियों का परिचय छूटा ही होगा। ऐसे विशाल संदर्भ ग्रन्थों का द्वितीय संस्करण तो प्राय: नहीं ही निकलता अत: पाठकों को उतने पर ही सन्तोष करना होगा, जो यहां दिया जा सका है। कुछ बाद में प्राप्त विवरण पूरक सूची में दे दिये हैं।

कृतज्ञता-ज्ञापन तथा अन्तिम निवेदन—

जैसा कि मैं आरम्भ में ही कह चुका हूं इस सामग्री का संग्रह तो मैं विगत २० वर्षों की अपनी अनवरत साधना और श्रम से कर ही रहा था। इस अवधि में मैंने सहस्राधिक लेखकों के जीवन एवं साहित्य का परिचय विभिन्न स्रोतों से एकत्र किया। पाठकों के मन में सहज जिज्ञासा होगी कि इतनी विपुलकाय, विषय वैविध्य को लिये हुए, विभिन्न भाषाओं में लिखी गई परिचयात्मक सामग्री को मैंने कैसे एकत्र किया? उत्तर में निवेदन है कि इसमें मेरा सहस्रों ग्रन्थों का अध्ययन, हजारों पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित अपेक्षित सामग्री का संचय और संकलन, आर्यसमाजेतर साहित्य से प्राप्त जानकारी तथा अनेक परिचितों, मित्रों तथा समान अभिरुचि वाले बंधुओं से प्रदत्त विवरण ही आधार बने हैं। मैंने सैंकड़ों लेखकों से व्यक्तिगत पत्राचार किया, मिलने पर उनसे वांछित जानकारी ली और अन्य प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष साधनों से इच्छित तथ्य एकत्र किये।

अल्प ज्ञात एवं सर्वथा अख्यात लेखकों के बारे में जानकारी प्राप्त करने की मेरी उत्सुकता का तो पाठक अंदाजा ही लगा सकते हैं। ऐसे विवरणों के मिल जाने पर मेरी प्रसन्नता का अनुमान तो वही व्यक्ति करेगा जो समान शील, व्यसन और अभिरुचि रखता हो। एक ही उदाहरण देता हूं। वर्षों पहले विहार के एक लेखक श्री शिवनन्दन-प्रसाद कुलियार ने अंग्रेजी में स्वामी दयानन्द का एक विशद जीवनचरित लिखा था। यह ग्रन्थ मैंने कई वर्ष पूर्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पुस्तकालय से लेकर पढ़ा भी था, किन्तु इसके लेखक के बारे में मेरी जानकारी नगण्य ही थी। अचानक मुझे एक वयोवृद्ध आर्य सज्जन जो परोपकारी के ग्राहक और पाठक भी हैं, पं. केवलपति शर्मा (फरीदपुर जिला पटना) ने कुलियार महाशय की न केवल सम्पूर्ण जानकारी ही दी अपितु उनके पुत्रों को पत्र लिखकर उनका चित्र तथा विस्तृत जीवनवृत्त भी भिजवाया। ऐसे एक नहीं, अनेक उदाहरण हैं जिनसे पाठकों को इस ग्रन्थ में एकत्र सामग्री के स्रोतों की विविधता की जानकारी मिलेगी। कई लेखकों ने बार बार लिखने पर भी जब इच्छित सूचनायें नहीं भेजीं तो मुझे उतने पर ही सन्तोष करना पड़ा जो मैंने अपने बल बूते पर प्राप्त किया था।

अब समस्या यह थी कि इस विशाल ग्रन्थ को प्रकाशित कैसे किया जाये? मैंने तो स्वप्न में भी नहीं सोचा

था कि हजारों पृष्ठों में लिखी गई आर्य लेखकों की यह बिरुदावली कभी पाठकों के समक्ष आ भी सकेगी। शायद यह मेरे आर्यसमाज विषयक विशाल पुस्तकालय तथा अभिलेखागार में अमुद्रित रूप में ही पड़ी रहती और भविष्य में उत्पन्न होने वाले किसी सुयोग की प्रतीक्षा करती। कारण कि आर्यसमाज में ऐतिहासिक अनुसंधान और लेखन की स्थिति नितान्त शोचनीय है। जो संस्थायें और समाज जागरूक, जमाने की धड़कन को पहचानने वाले तथा प्रगतिशील होते हैं वे तो अपने भविषय की ही भांति अपने ज्वलन्त अतीत को भी सुरक्षित रखने में रुचि लेते हैं, किन्तु आज आर्यसमाज की स्थिति भिन्न है। यहां पठन-पाठन, साहित्य प्रणयन और प्रकाशन को नितान्त गौण समझा जाता है। अतः मैं तो प्रायः ही महाकवि भवभूति की मनोदशा में जी कर वह उठता था—

उत्पत्स्यते मम कोऽपि समानधर्मा,
कालोह्यं निरवधि विपुला च पृथ्वीः॥

शायद भविष्य में मेरा भी कोई समानधर्मी पैदा होगा क्योंकि काल अनन्त है और माता धरित्री भी विपुलाकार है। यदि आस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय के प्रोफेसर जॉर्डन्स स्वामी दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द के विषय में अनुसंधान ग्रंथ लिख सकते हैं और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के मैनहट्टन स्थित कैन्सास विश्वविद्यालय के डा. कैनेथ जॉन्स आर्यसमाज के दुर्लभ साहित्य के लुप्त होने और स्वल्पकाल पश्चात् पूर्णतया अलभ्य हो जाने पर चिन्ता व्यक्त कर सकते हैं तो शायद दयानन्द के अनुयायियों में भी कोई ऐसा व्यक्ति उत्पन्न हो सकता है जो मेरे इस श्रम के महत्त्व को समझेगा तथा इसे प्रकाश में लाने का यत्न करेगा।

तथापि एक विचार यह भी आया कि यदि कुछ जीवन शेष है तो क्यों नहीं आर्य लेखक कोश के प्रकाशन के लिये पुरुषार्थ किया जाये। मैं यह तो जानता था कि आर्यसमाज की कोई भी सभा या संस्था इस बृहदाकार ग्रन्थ को छापने का उत्तरदायित्व अपने ऊपर नहीं लेगी, हालांकि यह काम उन्हीं का था। इतर मतावलम्बी अपने साहित्य को प्रकाशित एवं प्रसारित करने के लिये अपने केन्द्रीय संगठनों पर ही निर्भर होते हैं, किन्तु आर्यसमाज की स्थिति कुछ भिन्न प्रकार की है। आज हमारी शिरोमणि-सभायें विभिन्न प्रकार के शताब्दी समारोहों, जलसों, जुलूसों, भाषणों, प्रस्तावों और निष्फल आन्दोलनों की मृग-मरीचिका से ग्रस्त तथा भ्रमित है। इन्हीं संस्थाओं और नेताओं का मार्गदर्शन प्राप्त कर आर्य जनता भी अपना समय, श्रम और धन इधर-उधर समारोहों और आयोजनों में आने जाने में नष्ट करती है जब कि साहित्य संरक्षण और साहित्य प्रचार की ओर न तो नेताओं का ही ध्यान जाता है और न आर्यजनों का।

एक युग था, जब आर्यसमाज का बहुसंख्यक वर्ग ऋषि दयानन्द और उनके अनुवर्ती पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी दर्शनानन्द, पं. आर्यमुनि, पं. तुलसीराम स्वामी, महात्मा नारायण स्वामी तथा पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जैसे शतशः लेखकों की रचनाओं को रुचि पूर्वक पढ़ कर अपने ज्ञान को विशद करता था। स्वामी दर्शनानन्द के अल्प मूल्य और लघु आकार वाले ट्रैक्टों को पढ़ कर ही लोग वैदिक सिद्धान्तों के पारगामी जानकार बन जाते थे। महात्मा नारायण स्वामी द्वारा लिखित उपनिषद्-भाष्यों को पढ़ कर सहस्रों जिज्ञासुओं ने अध्यात्म मार्ग के रहस्य को जाना तथा आत्मिक शान्ति प्राप्त की थी। पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय की आस्तिकवाद, अद्वैतवाद, शांकर-भाष्यालोचन, जीवात्मा, मैं और मेरा भगवान् जैसी दार्शनिक रचनाओं का अनुशीलन कर सैकड़ों पाठकों ने परमात्मा के अस्तित्व तथा जीव, ईश्वर और प्रकृति की अनादिता एवं स्वतन्त्र निरपेक्ष सत्ता के सिद्धांत को जाना, समझा तथा शंकराचार्य प्रतिपादित अद्वैतवाद के स्खलनों एवं न्यूनताओं को भी आत्मसात किया था।

किन्तु आज स्थिति सर्वथा भिन्न है। आज के हालात तो ऐसे हैं कि आर्यसमाज के साधारण सदस्य की तो बात ही दूर रही, आर्यसमाजों तथा सभाओं के अधिकारी एवं नेतृ वर्ग को भी उपरिवर्णित आर्य लेखकों के कृतित्व की बात ही छोड़िये, उनके नाम तक की जानकारी नहीं है। ऐसी स्थिति में आर्य लेखकों के इस विशद परिचयात्मक कोश का प्रकाशन क्या किसी दुस्साहस से कम था, और

वह भी तब, जब यह कार्य प्रचुर व्ययसाध्य था। अन्ततः मैंने यही सोचा कि इस ग्रंथ को प्रकाशित करने का उद्योग अवश्य करना चाहिए। इस कार्य की रूपरेखा कुछ इस प्रकार बनी। मैंने हिसाब लगाया कि यदि ५०० व्यक्ति या संस्थायें ग्रन्थ के अग्रिम मूल्य के रूप में १०० रुपये दे दें तो ग्रन्थ की लागत ५० सहस्त्र रुपये एकत्र हो जायेंगे। मैंने यह भी सोचा कि आधी सदी से मैं आर्यसमाज से जुड़ा हूँ तथा मेरा सामाजिक जीवन भी प्रौढ़ता प्राप्त कर चुका है। जम्मू से लेकर मद्रास तथा पोरबन्दर से लेकर कलकत्ता तक के आर्य जनों के स्नेह और सम्मान का मैं भाजन रहा हूँ और आर्य बन्धुओं से मेरा परिचय का दायरा भी सुविस्तृत है। मुझे विश्वास था कि यदि मैं इस योजना के अनुसार ५०० व्यक्तियों एवं संस्थाओं से अनुरोध करूंगा तो इच्छित राशि एकत्र हो ही जायेगी। किन्तु दूसरी ओर यह संकोच भी था कि व्यर्थ में जग-हंसाई होगी। अपने युवा काल से लेकर अब तक आर्यसमाज के स्थानीय, राज्यस्तरीय और सार्वदेशिक संगठनों से पर्याप्त काल तक सम्बद्ध रहने पर भी मैंने कभी चंदा मांगने की योग्यता अर्जित नहीं की। आर्यसमाज के प्रति मेरी देन भी मुख्यतः बौद्धिक ही रही, क्योंकि १९४९ से आरम्भ कर १९९१ तक के अध्यापकीय जीवन में इतना कुछ अर्जित भी नहीं कर सका कि द्रव्य देकर अपनी मातृ संस्था की सेवा करता। तभी तो किसी वयोवृद्ध तुरीयाश्रमी ने मेरे बारे में कहा बताते हैं कि भारतीयजी विद्वान् तो हैं, किन्तु दान नहीं करते। अथवा साठ वर्ष पूरे करके भी भारतीयजी वानप्रस्थी नहीं बने। अब मैं ऐसे व्यक्तियों को कैसे समझाता कि विगत चालीस वर्षों से मेरा तो एक-एक क्षण, ज़िन्दगी का एक एक लमहा ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज विषयक चिन्तन, मनन तथा लेखन को ही समर्पित रहा है। शायद लोगों की धारणा है कि कोई व्यक्ति लाखों रुपये देकर ही आर्यसमाज की सेवा कर सकता है अथवा पीत वस्त्र पहन कर वानप्रस्थ लेना ही जीवन का चरम पुरुषार्थ है।

इस प्रसंग को यहीं समाप्त करता हूँ। शायद नियति को मंजूर था कि यह ग्रन्थ छपे। मैंने एक अपील छपवाई और उसे लेखक बंधुओं, सभा-संस्थाओं के अधिकारियों तथा परिचित आर्य सज्जनों के पास भेजा। इसमें ग्रन्थ के अग्रिम मूल्य के रूप में १०० रुपये देने का अनुरोध था। जिन लेखकों का विवरण इसमें जाना था, उनके लिये तो ग्रन्थ की उपयोगिता थी ही, अन्य पाठकों के लिये मात्र सौ रुपये में एक महत्त्वपूर्ण संदर्भ ग्रन्थ को प्राप्त कर लेना भी कोई घाटे का सौदा नहीं था। मेरा विचार था कि ६ मास तक धन संग्रह करूंगा और वर्ष के अवशिष्ट ६ मास में ग्रन्थ का मुद्रण होगा। ईश्वर की कुछ ऐसी कृपा हुई कि इच्छित राशि पांच मास में ही प्राप्त हो गई और अब यह ग्रन्थ पाठकों के हाथ में है।

इस सारस्वत सत्र में होता और यजमान बनकर जिन जिन सज्जनों तथा संस्थाओं ने अपनी आहुति दी, उनकी विस्तृत सूची तो ग्रन्थान्त में जा ही रही है, कुछ विशिष्ट व्यक्तियों की चर्चा करना भी प्रासंगिक है। आर्य यतिमण्डल के अध्यक्ष, तप और त्याग की मूर्ति स्वामी सर्वानन्दजी ने सर्वप्रथम २००० रुपये प्रदान कर मेरा उत्साह वर्धन किया। जब दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी स्वरूपानन्द से मैंने १०० रुपये की याचना की तो उन्होंने २५० रुपये प्रदान किये। एक संन्यासी द्वारा प्रवर्तित आर्यसमाज के इस सारस्वतयज्ञ में संन्यासियों की इन आहुतियों का पड़ना आशीर्वाद के तुल्य था और श्लाघनीय तो था ही।

यहां अपनी एक हिमाकत की भी चर्चा करूं। मेरी मूल योजना तो इतनी ही थी यदि आर्यसमाज के वर्तमान (जीवित) लेखक भी इस कार्य में मेरा सहयोग करें तो पर्याप्त राशि एकत्र हो जायेगी। इसमें उनका द्विविध लाभ था। जैसा कि मैंने अपने मुद्रित अनुरोध पत्र में लिखा था, प्रथम तो इसमें अग्रिम मूल्य दाता साहित्यकार की साधना का प्रामाणिक दस्तावेज उन्हें उपलब्ध हो जाता और साथ ही आर्यसमाज के दिवंगत सैंकड़ों लेखकों का वृत्तान्त भी उन्हें मिलता। तथापि मेरा विचार यह नहीं था कि मैं आर्यसमाज के उन मूर्धन्य, सब प्रकार से सम्मानित सरस्वती पुत्रों से भी १०० रुपयों की याचना करूं, क्योंकि जिन महानुभावों ने अपनी यशस्वी लेखनी और

स्पृहणीय मनीषा से आर्य साहित्य को समृद्ध किया तथा उसे गरिमा प्रदान की, उनसे ग्रन्थ का अग्रिम मूल्य मांगना, वह भी यह कहकर कि इस ग्रन्थ में उनका भी विवरण जा रहा है क्या मेरी धृष्टता नहीं होगी। किन्तु जब मैंने पं. युधिष्ठिरजी मीमांसक को यह विज्ञप्ति भेजी तो १०० रुपये प्रदान करने वाली पंक्ति पर मैंने अनायास ही टिक (सही) कर दिया। अब तो तीर हाथ से निकल चुका था। किन्तु मुझे सुखद आश्चर्य तो तब हुआ जब मीमांसकजी ने मेरी विज्ञप्ति के उत्तर में इस कार्य के लिये मेरी अभ्यर्थना ही नहीं की, अपितु यह भी लिखा कि आपने (भवानीलाल भारतीय ने) जिस महत्त्वपूर्ण कार्य को हाथ में लिया है, उसकी आवश्यकता और उपयोगिता को देखते हुए मैं स्वयं इसके लिये एक हजार रुपये भेज रहा हूँ। तो मेरी धृष्टता का भी सुखद परि-परिणाम ही निकाला। एक लेखक ही लेखक की भावना और पीड़ा को समझता है। जब स्वयं युधिष्ठिरजी जैसे वैदिकमनीषा के चूडान्त ज्ञान के धनी का आशीर्वाद एवं साहाय्य मुझे प्राप्त हो गया तो मेरा स्वयं को कृतकृत्य समझना उचित ही था।

आर्यसमाज के अन्य सम्पन्न श्रेष्ठियों, परिचित मित्रों तथा लेखक बंधुओं ने भी इसमें अपना योगदान दिया। मैंने तो इस ग्रन्थ के लिये धन की याचना करने में अपने सगे सम्बन्धियों तक को नहीं छोड़ा, बिना इस बात का विचार किये कि वे आर्यसमाज के प्रति आस्था रखते हैं या नहीं। वस्तुतः सरस्वती की सेवा पूजा में तो सभी को आगे आना चाहिए, यही विचार कर मैंने अपने पुत्रों, भाइयों, भतीजों, भान्जों, दौहित्रों, दामादों, समधियों, सालों तक को इस कार्य में अपना योगदान करने के लिये कहा और मुझे यह लिखते हुए प्रसन्नता है कि सभी ने मेरे अनुरोध का सकारात्मक उत्तर दिया। मैंने अपने व्यक्तिगत मित्रों से भी कुछ राशियाँ प्राप्त करने में संकोच नहीं किया। इस प्रकार सभी के सहयोग से यह महत् अनुष्ठान पूरा हुआ।

आर्य लेखक कोश की कुछ विशेषताओं को पृथक् सूत्रबद्ध किया है ताकि पाठक एक ही दृष्टि में उसके महत्त्व का अनुमान कर लें। इस ग्रन्थ की सीमाओं से मुझ से अधिक और कौन परिचित होगा। इसे पाठकों तक पहुंचाने के लिये मैंने इसकी सामग्री जुटाने, लिखने, प्रेस कापी तैयार करने आदि के कार्य तो किये ही, सहयोग में प्राप्त राशियों का हिसाब रखने, प्रूफ देखने, पत्र व्यवहार करने, यहाँ तक कि डिस्पैच करने का कार्य भी स्वयं ही किया। अन्य शब्दों में मैंने लेखक के अतिरिक्त लेखाकार, लिपिक यहाँ तक कि चपरासी तक की भूमिका का निर्वहन किया। किन्तु ऐसा कर मैंने स्वकर्त्तव्य का पालन ही किया है और आर्यसमाज के सरस्वती पुत्रों के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धा ही अर्पित की है।

आर्य लेखक कोश के सुरुचि पूर्ण मुद्रण के लिये वैदिक यंत्रालय अजमेर के कुशल एवं अनुभवी प्रबंधक श्री सतीशचन्द्र शुक्ल का आभार प्रकट करना आवश्यक है। उन्होंने इस कार्य में व्यक्तिगत रुचि ली और यथाशक्य इसे सुन्दर साज सज्जा से युक्त बनाया। पाण्डुलिपि का टंकण मेरे विभाग के ही श्री होशियारसिंह ने किया। चण्डीगढ जैसे हिन्दी टंकण की दृष्टि से शुष्क मरुस्थल में उनके जैसा निपुण हिन्दी टंकक अपवाद ही है। मेरी सहधर्मिणी श्रीमती शान्ति भारतीय ने समय-समय पर अपने उपयोगी परामर्श एवं सुझाव दिये एतदर्थ उनके प्रति आभार व्यक्त करना तो स्वयं के प्रति कृतज्ञ होने जैसा ही है। अन्य सभी मित्रों, शुभचिन्तकों तथा बंधुओं के प्रति भी मैं श्रद्धानत हूँ जिन्होंने इस कार्य को आशीर्वाद देकर मुझे उपकृत किया। आशा है पाठक इसी भाव से ग्रन्थ का आद्योपान्त अवलोकन कर स्व प्रतिक्रियाओं से मुझे अवगत करायेंगे।

विदुषांवशंवद,
भवानीलाल भारतीय
दयानन्द शोधपीठ,
पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

ऋषि दयानन्द का बोधोत्सव
(फाल्गुन कृष्णा १३, सं. २०४७ वि.)

लेखक क्रम

पूरक सूची

परिशिष्ट

प्रो. (डा.) भवानीलाल भारतीय की कुछ महत्त्वपूर्ण कृतियाँ

(१) महर्षि दयानन्द और राजा राममोहनराय : तुलनात्मक अध्ययन—१९५७ में प्रकाशित। सम्प्रति अनुपलब्ध।

(२) श्री कृष्ण चरित—१९५८ तथा १९८२ में दो संस्करण छपे। पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय साहित्य-पुरस्कार से १९८२ में पुरस्कृत।

(३) ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की संस्कृत साहित्य को देन—पी. एच-डी. की उपाधि के लिये स्वीकृत शोध प्रबंध। सेठ आनन्दीलाल पोद्दार ट्रस्ट की आर्थिक सहायता से १९५८ में प्रकाशित।

(४) दयानन्द शास्त्रार्थ संग्रह (सम्पादन)—१९७० तथा १९८२ में रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित।

(५) महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द—१९७५ तथा १९८६ में दो बार प्रकाशित। पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय पुरस्कार से १९७६ में सम्मानित।

(६) आर्यसमाज के वेदसेवक विद्वान्—१९७४ में चौधरी नारायणसिंह ट्रस्ट द्वारा पुरस्कृत।

(७) परोपकारिणी सभा का इतिहास—१९७५ में प्रकाशित।

(८) महर्षि दयानन्द की आत्मकथा—(१९७५)—मूल हस्तलेख के आधार पर सम्पादित।

(९) उपदेश मंजरी (सम्पादित)—१९७६ तथा १९८५ में दो बार प्रकाशित।

(१०) ज्ञानदर्शन—सत्यार्थप्रकाश के ११वें समुल्लास का भाष्य। १९७७ में विद्यावती शारदा पुरस्कार से पुरस्कृत।

(११) आर्यसमाज : अतीत की उपलब्धियाँ और भविष्य के प्रश्न—१९७८ में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा पं. लेखराम साहित्य पुरस्कार से सम्मानित।

(१२) आर्यसमाज के पत्र और पत्रकार—(आर्यसमाजी पत्रकारिता का प्रामाणिक, शोधपूर्ण इतिहास)—१९८१।

(१३) आर्यसमाज—(लाला लाजपतराय के अंग्रेजी ग्रन्थ का अनुवाद)—१९८२।

(१४) नवजागरण के पुरोधा : दयानन्द सरस्वती—ऋषि दयानन्द का सर्वाधिक प्रामाणिक तथा वैज्ञानिक शैली में लिखित बृहत् जीवन चरित। चौधरी नारायणसिंह ट्रस्ट द्वारा १९८३ में तथा श्री घूड़मल आर्य साहित्य पुरस्कार से १९९१ में पुरस्कृत।

(१५) दयानन्द साहित्य सर्वस्व—(The Bibliography of Swami Dayanand)—स्वामी दयानन्द द्वारा रचित तथा उनके सम्बन्ध में विभिन्न भाषाओं में लिखे गये समग्र ग्रन्थों की प्रामाणिक सूची—१९८३ में दयानन्द शोध पीठ पंजाब विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित।

(१६) पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा—भारत में क्रान्तिकारी चेष्टा के आद्य प्रवर्त्तक तथा ऋषि दयानन्द के पट्ट शिष्य का हिन्दी में प्रथम बार लिखा गया विस्तृत, प्रामाणिक जीवनचरित—१९८४।

(१७) आर्यसमाज के साहित्य का इतिहास (पञ्चम खण्ड)—आर्यसमाज के तत्त्वावधान में रचित समस्त वाङ्मय का सर्वांगीण तथा प्रामाणिक विवरण—१९८६।

(१८) स्वामी दयानन्द के भक्त, प्रशंसक और सत्संगी—ऋषि के जीवनचरित का पूरक ग्रन्थ—१९८६।

(१९) स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली—(९ खण्डों में)—अमर धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द के समग्र हिन्दी और अंग्रेजी साहित्य का वैज्ञानिक सम्पादन। स्वामीजी की मौलिक जीवनी तथा उनके अंग्रेजी ग्रन्थों के अनुवाद सहित। श्री गोविन्दराम हासानन्द साहित्य पुरस्कार से सम्मानित—१९८७। पुनः श्री घूड़मल आर्य-साहित्य पुरस्कार से पुरस्कृत—१९९१।

(२०) आर्य लेख कोश—सहस्राधिक आर्य लेखकों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचायक विशाल संदर्भ ग्रन्थ—१९९१।

भूमिका

'आर्य लेखक कोश' नामक इस ग्रन्थ में आर्य-जगत् के प्रख्यात मनीषी डॉ. भवानीलाल भारतीय ने ऐसे सहस्राधिक लेखकों का परिचय प्रस्तुत किया है जिन्होंने समय-समय पर आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती से सम्बन्धित विविध कार्यक्रमों तथा सिद्धान्तों के प्रचार एवं प्रसार में अपनी रचनात्मक प्रतिभा का सदुपयोग किया है।

डॉ. भारतीय का अधिकांश जीवन आर्य-समाज और उसकी विभिन्न प्रवृत्तियों से सम्बन्धित रहा है और अब भी वे ऋषि दयानन्द एवं आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रामाणिक व्याख्याता एवं प्रस्तोता माने जाते हैं। अतः यह स्वाभाविक ही है कि उनका ध्यान ऐसे दुर्वह कार्य की सम्पूर्ति की ओर गया, जिसके लिए अनेक वर्ष की कठोर साधना एवं अध्यवसायिता अपेक्षित होती है।

'कोश' का निर्माण करना साधारण कार्य नहीं है। उसकी संरचना करने के लिए तो डॉ. भारतीय जैसे अनेक जागरूक एवं मेधावी व्यक्तियों को दीर्घकाल तक शोध एवं अनुसन्धान करने की अपेक्षा थी। फिर भी यह उनका अद्‌भुत कार्य-कौशल है कि लगभग दो दशक के अनवरत परिश्रम एवं सतत साधना के बल पर वे इस असम्भाव्य कार्य को अकेले ही सम्पन्न कर सके हैं। ऐसे सन्दर्भ ग्रन्थ के निर्माण में दो दशक तो क्या, कई शतियाँ भी लग सकती थीं।

इस ग्रन्थ की एक अभूतपूर्व विशेषता यह भी है कि विज्ञ लेखक ने इसमें हिन्दी, संस्कृत, उर्दू और अंग्रेजी के अतिरिक्त भारत तथा विदेश की कई भाषाओं में प्रकाशित उन ग्रन्थों तथा उनके लेखकों का परिचय भी प्रस्तुत किया है जिन्होंने अपनी-अपनी भाषाओं में ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से सम्बन्धित विभिन्न प्रवृत्तियों एवं आन्दोलनों के सम्बन्ध में उपयोगी प्रकाश डाला है। ऐसी भाषाओं में पंजाबी, कन्नड़, तमिल, तेलुगु, मलयालम, असमिया, बंगला, उड़िया आदि भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त नेपाली, बर्मी, जर्मन और फ्रेंच के नाम भी उल्लेखनीय हैं।

वैसे तो सामान्यतः भारत की सभी भाषाओं और प्रांतों में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रवर्तित विचारधारा और उनके सुधारवादी आन्दोलनों का प्रचुर प्रभाव पड़ा है, किन्तु इस ग्रन्थ में उन्हीं लेखकों और कृतियों का संदर्भ प्रस्तुत किया गया है जिनमें सीधे-सीधे आर्यसमाज के विविध कार्यकलापों का विश्लेषण-अध्ययन मिलता है।

'कोश' की विशेषता यह होती है कि जिस उद्देश्य को लक्ष्य करके उसकी रचना की जाती है उसे पूर्णता तक पहुँचाने में लेखक को अत्यन्त सावधान रहना पड़ता है। उसे पग-पग पर इस बात का भी ध्यान रखना पड़ता है कि उसकी रचना का सारा कलेवर सभी दृष्टि से संतुलित रहे। ऐसा न हो कि ग्रन्थ का कोई वर्णन तो आवश्यकता या औचित्य से अधिक बढ़ जाय और कोई उसकी तुलना में क्षीणकाय या सर्वथाहीन प्रतीत हो। सभी वर्णन नपे-तुले, मर्यादित और यथासाध्य संक्षिप्त होने चाहिए। जहाँ तक इस ग्रन्थ की उपादेयता का प्रश्न है वह सर्वथा असंदिग्ध है।

मैं डॉ. भारतीय को इस महत्त्वपूर्ण परिचय-ग्रन्थ की प्रस्तुति के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ।

अजय निवास,
जी-१०, दिलशाद कॉलोनी,
दिल्ली-११००९५

—क्षेमचन्द्र 'सुमन'
२४ मार्च, १९९१

आर्यसमाज के प्रसिद्ध लेखक तथा शोधकर्मी

डा. भवानीलाल भारतीय

तिथियों के माध्यम से जीवन परिचय

१९२८—परवतसर (जिला नागौर) में जन्म।

१९४६—१८ वर्ष की आयु में आर्यसमाज जोधपुर की सदस्यता ग्रहण की।

१९४९—बी. ए. के पश्चात् शिक्षा का कार्य अंगीकार किया।

१९४९—इसी वर्ष नगर आर्यसमाज जोधपुर के मंत्री निर्वाचित। प्रथम कृति 'ऋषि दयानन्द और अन्य भारतीय धर्माचार्य' छपी।

१९५०—आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान में प्रथम बार प्रतिनिधि बने। तत्पश्चात् अनेक बार अन्तरंग सदस्य, उपमंत्री, मंत्री (१९६९-७२) तथा उपप्रधान आदि पदों पर रहे।

१९५१—'सिद्धान्त वाचस्पति' सर्वप्रथम स्थान में रहकर उत्तीर्ण।

१९५३—हिन्दी में एम. ए. (प्रथम श्रेणी, तथा विश्वविद्यालय में द्वितीय स्थान)

१९५९—सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के सदस्य तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में प्रतिनिधि बने।

१९६१—संस्कृत में एम. ए. तथा राजस्थान कालेज शिक्षा सेवा (R.E.S.) में प्रविष्ट।

१९६८—आर्यसमाज का संस्कृत भाषा और साहित्य को योगदान विषय पर राजस्थान विश्वविद्यालय में डाक्टर ऑफ फिलासफी की उपाधि।
परीक्षक थे—डा. मंगलदेव शास्त्री और डा. सूर्यकान्त।

१९६९—गवर्नमेंट कालेज अजमेर के हिन्दी विभाग में आये।

१९७०—परोपकारिणी सभा अजमेर के सदस्य तथा संयुक्त मंत्री चुने गये। इस पद पर १९८८ तक रहे। इसी वर्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री पद पर निर्वाचित।

१९८०—दयानन्द शोध पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ के अध्यक्ष तथा प्रोफेसर पद पर नियुक्ति।

१९८५—आर्यसमाज बड़ा बाजार कलकत्ता द्वारा साहित्यिक सेवाओं के लिये सम्मानित।

१९८८—दयानन्द शोधपीठ के अध्यक्ष पद से सेवा मुक्त। तीन वर्ष के लिये प्रोफेसर पद पर पुनः नियुक्ति।

१९९१—पंजाब विश्वविद्यालय की सेवा से निवृत्ति।

डा. भवानीलाल भारतीय का पुस्तक संग्रह

लगभग ६ सहस्र पुस्तकों के इस संग्रह में ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज विषयक दो हजार अलभ्य एवं विभिन्न भाषाओं में प्रणीत ग्रन्थों का अपूर्व संग्रह है।

सौ वर्ष से भी अधिक पुरानी आर्यसमाज की कुछ पत्र-पत्रिकाओं के अतिरिक्त वर्तमान मासिक पत्रों की लगभग २५० संचिकायें। भारतीय नवजागरण विषयक साहित्य की दृष्टि से शोधार्थियों के लिये अत्यन्त उपयोगी यह पुस्तकालय देश एवं विदेश के सभी विद्वानों से प्रशंसित रहा है।

आर्य लेखक कोश के पाठकों के लिये आवश्यक संकेत—

ले. का. से लेखन कार्य तथा व. प. से वर्तमान पता का अभिप्राय है।

आर्यलेखक कोश

स्वामी दयानन्द सरस्वती
(१८८१ वि.—१९४० वि.)

अपने युगान्तरकारी विचारों की अभिव्यक्ति के लिये, दयानन्द सरस्वती ने वाणी और लेखनी का साथ साथ प्रयोग किया था। उनके द्वारा लिखित ग्रन्थों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

१. संध्या—इस लघु पुस्तक का प्रकाशन १९२० वि. में हुआ। ३० हजार प्रतियाँ आगरा के सेठ रूपलाल के आर्थिक सहयोग से ज्वालाप्रकाश प्रेस आगरा से छपाई गईं और वितरित की गईं। पुस्तक के परिशिष्ट में लक्ष्मीसूक्त (श्रीसूक्त) दिया गया था।

२. भागवतखण्डन (पाखण्डखण्डन)—वैष्णव भागवत के खण्डन में लिखी गई यह संस्कृत पुस्तक ज्वाला-प्रकाश प्रेस आगरा में मुद्रित होकर १९२३ वि. में प्रकाशित हुई। वर्षों तक अनुपलब्ध रहने के पश्चात् पं. युधिष्ठिर मीमांसक ने इसका पुनरुद्धार किया तथा टिप्पणी एवं हिन्दी अनुवाद सहित २०१८ वि. में प्रकाशिन किया।

३. सत्यार्थप्रकाश (प्रथम संस्करण)—राजा जयकृष्ण-दास के अनुरोध से लिखा गया यह ग्रन्थ स्टार प्रेस बनारस में मुद्रित होकर १९३१ वि. में प्रकाशित हुआ। इसमें केवल १२ समुल्लास ही छप सके थे, यद्यपि पाण्डुलिपि में १४ समुल्लास थे।

४. सत्यार्थप्रकाश (द्वितीय संस्करण)—प्रथम संस्करण को आद्योपान्त संशोधित एवं परिवर्धित कर यह संस्करण तैयार किया गया। इसमें १३वें और १४वें समुल्लासों का भी समावेश था। यह स्वामीजी की मृत्यु के पश्चात् १९४१ वि. में वैदिक यंत्रालय प्रयाग में छपा।

५. संध्योपासनादि पंचमहायज्ञ विधि—इस पुस्तक का यह प्रथम संस्करण था जो आर्य प्रेस बम्बई में १९३१ वि. में छपा।

६. पंचमहायज्ञविधि—यह आज उपलब्ध संशोधित संस्करण है। इसे प्रथम बार लाजरस प्रेस बनारस से छपा कर १९३४ वि. में प्रकाशित किया गया।

७. वेदान्तिध्वान्त निवारण—शांकर अद्वैत वेदान्त के खण्डन में लिखा गया यह ग्रन्थ ओरियण्टल प्रेस बम्बई से १९३२ वि. में मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ।

८. वेदविरुद्धमतखण्डन—वल्लभाचार्य संस्थापित पुष्टिमार्ग के खण्डन में लिखा गया संस्कृत मूल व हिन्दी अनुवाद युक्त यह ग्रन्थ निर्णयसागर प्रेस बम्बई में मुद्रित होकर १९३१ वि. में प्रकाशित हुआ। पं श्यामजी कृष्ण वर्मा कृत गुजराती अनुवाद भी इसमें साथ ही छपा था।

९. शिक्षापत्रीध्वान्तनिवारण—गुजरात में प्रचलित स्वामीनारायण मत की शिक्षाओं की आलोचना में लिखा गया यह ग्रन्थ १९३२ वि. में ओरियण्टल प्रेस बम्बई से प्रकाशित हुआ। यह पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा कृत गुजराती अनुवाद सहित छपा था।

१०. आर्याभिविनय—ऋग्वेद और यजुर्वेद के १०८ मन्त्रों की ईश्वरप्रार्थना युक्त व्याख्या वाला यह ग्रन्थ आर्य मण्डल प्रेस बम्बई से १९३२ वि. में मुद्रित होकर प्रका-शित हुआ।

११. संस्कारविधि—षोडश संस्कारों के विधि विधान से युक्त यह ग्रन्थ ऐशियाटिक प्रेस बम्बई से मुद्रित होकर १९३३ वि. में प्रकाशित हुआ।

१२. संस्कारविधि (द्वितीय संस्करण)—उपर्युक्त ग्रन्थ का आद्योपान्त संशोधित और परिवर्धित संस्करण वैदिक यन्त्रालय प्रयाग से १९४१ वि. में (स्वामीजी की मृत्यु के पश्चात्) प्रकाशित हुआ।

१३. वेदभाष्यम् (नमूने का अंक)—वेदभाष्य को आरम्भ करने से पूर्व ऋग्वेद के कतिपय प्रारम्भिक मन्त्रों का अर्थ नमूने के रूप में लिखकर विद्वानों की सम्मति हेतु

तैयार किया गया। इसे लाजरस प्रेस प्रयाग ने १९३३ वि. में छापा।

१४. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका—वेदभाष्यविषयक स्व-सिद्धान्तों का निरूपण करने हेतु इस ग्रन्थ की रचना हुई। यह मासिक पत्र के रूप में छपता था। प्रथम १४ अंक लाजरस प्रेस बनारस में १९३४-३५ वि. में छपे। अव-शिष्ट दो अंक निर्णयसागर प्रेस बम्बई में छपे।

१५. ऋग्वेदभाष्यम् (मण्डल ७, सूक्त ६२, मन्त्र २ तक)—यह १९३५ वि. में निर्णयसागर प्रेस बम्बई में मुद्रित होना आरम्भ हुआ और १९५६ वि. पर्यन्त छपता रहा। बम्बई के पश्चात् इसका मुद्रण वैदिक यन्त्रालय (प्रथम काशी, पश्चात् प्रयाग, अन्ततः अजमेर) में हुआ।

१६. यजुर्वेदभाष्य—इसका प्रकाशन १९३५ वि. में निर्णयसागर प्रेस बम्बई में आरम्भ हुआ और समाप्ति वैदिक यन्त्रालय (काशी, प्रयाग) में हुई।

१७. आर्योद्देश्यरत्नमाला—आर्यों के मन्तव्यों की निदर्शक यह रत्नमाला चश्म-ए-नूर प्रेस अमृतसर में मुद्रित होकर १९४६ वि. में छपी।

१८. भ्रान्तिनिवारण—दयानन्द सरस्वतीकृत ऋग्वेद-भाष्य पर पं. महेशचन्द्र न्यायरत्न के आक्षेपों के निराकरण में लिखा गया यह ग्रन्थ आर्यभूषण प्रेस शाहजहाँपुर में १९३७ वि. में मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ।

१९. अष्टाध्यायी भाष्य (२ भाग)—इनका लेखन काल तो १९३५-३६ वि. का है किन्तु प्रकाशन वैदिक यन्त्रालय अजमेर द्वारा १९८४ वि. तथा १९९७ वि. में क्रमशः हुआ।

२०. संस्कृतवाक्यप्रबोध—वैदिक यन्त्रालय काशी से १९३६ वि. में प्रकाशित।

२१. व्यवहारभानु—बालकों को व्यवहार और चरित्र ज्ञान कराने के लिये लिखा गया यह ग्रन्थ वैदिक यन्त्रालय, काशी से १९३६ वि. में प्रकाशित हुआ।

२२. गोतम अहल्या की कथा—पुराणोक्त प्रचलित कथा का वास्तविक रूप इस लघु पुस्तक में दिखाया गया है। इसका मुद्रण १९३७ वि. में वैदिक यन्त्रालय काशी में हुआ था। आज यह अनुपलब्ध है।

२३. भ्रमोच्छेदन—राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द के वेद और ब्राह्मण ग्रन्थ विषयक विचारों के खण्डन में लिखी गई यह पुस्तक १९३७ वि. में वैदिक यन्त्रालय काशी ने प्रकाशित की।

२४. गोकरुणानिधि—गो आदि उपयोगी पशुओं की रक्षा में लिखी गई यह पुस्तक १९३७ वि. में वैदिक यन्त्रालय काशी से छपी।

२५. वेदांगप्रकाश (भाग-१४)—वेदाध्ययन में सहा-यक ये १४ ग्रन्थ वैदिक यन्त्रालय काशी एवं प्रयाग से १९३६-१९४० वि. की अवधि में छपे।

शास्त्रार्थ ग्रन्थ—

१. काशी शास्त्रार्थ (प्रथम संस्करण)—यह शास्त्रार्थ सत्यधर्मविचार शीर्षक से लाइट प्रेस बनारस में मुद्रित होकर १९२६ वि. में प्रकाशित हुआ था। वर्षों तक यह ग्रन्थ अप्राप्य था। इसे डा० ब्रजमोहन जावलिया ने महा-राजा जयपुर के निजी ग्रन्थसंग्रह पोथीखाने से ढूंढ निकाला और पं. युधिष्ठिर मीमांसक ने वेदवाणी में प्रकाशित किया।

२. काशी शास्त्रार्थ (संशोधित द्वितीय संस्करण)—वैदिक यन्त्रालय काशी से १९३७ वि. में प्रकाशित।

३. हुगली शास्त्रार्थ (प्रतिमापूजनविचार)—लाइट प्रेस बनारस से १९३० वि. में मुद्रित।

४. सत्यधर्मविचार (मेला चांदापुर)—वैदिक यन्त्रा-लय काशी से १९३७ वि. में प्रकाशित। इसमें शाहजहां-पुर जिले के चांदापुर ग्राम में स्वामी दयानन्द और पादरियों तथा मौलवियों के बीच हुई धर्मचर्चा का विवरण है।

५. जालंधर शास्त्रार्थ—पंजाब के जालंधर नगर में मौलवी अहमदहसन से हुए शास्त्रार्थ का विवरण पंजाबी प्रेस, लाहौर से १९३४ वि. में मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ।

६. सत्यासत्य विवेक (बरेली शास्त्रार्थ)—बरेली के

पादरी डा० टी. जे. स्कॉट से हुई धर्म चर्चा को शाहजहांपुर के आर्यभूषण प्रेस ने उर्दू में प्रकाशित किया।

स्वामी दयानन्द के द्वारा लिखे गये तथा तैयार कराये गये अन्य अनेक ग्रन्थ परोपकारिणी सभा के ग्रन्थागार में विद्यमान हैं। इनकी सूची भी प्रकाशित हो चुकी है। (द्रष्टव्य—ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास)। चारों वेदों का भाष्य लिखने का संकल्प कर स्वामीजी ने चतुर्वेदविषयसूची का प्रणयन किया था। इसे इन पंक्तियों के लेखक द्वारा सम्पादित किया जा कर २०२८ वि. में वैदिक यन्त्रालय, अजमेर ने प्रकाशित किया।

वि. अ.—ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास—पं. युधिष्ठिर मीमांसक तथा दयानन्दग्रन्थ सर्वस्व—डा० भवानीलाल भारतीय।

अखिलविनय

आर्य पत्रकार श्री अखिलविनय का जन्म राजस्थान के पिलानी नगर में १५ अक्टूबर १९२६ को पं. रूपराम शास्त्री के यहाँ हुआ। आपकी प्रथम रचना आर्यमित्र में १९४६ में प्रकाशित हुई। आपने हिन्दी में एम. ए. १९५५ में किया और पत्रकारिता के क्षेत्र में आये। सर्वप्रथम आगरा से प्रकाशित कर्मयोग के सम्पादकीय विभाग में रहे। तत्पश्चात् विश्व साहित्य तथा विश्वज्योति (होशियारपुर) के सम्पादकीय विभाग में भी काम किया। विगत कई वर्षों से बम्बई में निवास कर हिन्दी के प्रमुख लेखकों, पत्रकारों और साहित्यकारों के इतिवृत्तों का स्वसम्पादित 'विश्व हिन्दी-सेवी समाचार' के द्वारा प्रकाशन कर रहे हैं।

ले. का.—हिन्दी की पत्र-पत्रिकायें १९४८, राजा राममोहनराय १९६०।

वि. अ.—'हिन्दी सेवा के चालीस वर्ष'—कमला-प्रकाशन पिलानी।

व. प.—ए-६।१३-३० जीवनबीमा नगर, बोरीवली पश्चिम, बम्बई—४०००९२।

पं. अखिलानन्द ब्रह्मचारी

वाल्मीकीय रामायण के मर्मज्ञ पं. अखिलानन्द ब्रह्मचारी का जन्म १ अगस्त १८८४ को जौनपुर जिले के पटखोली ग्राम में पं. बाबूराम पाठक के यहाँ हुआ। इनका संस्कृत अध्ययन स्वामी पूर्णानन्द के सान्निध्य में हुआ जो प्रथम कानपुर तथा उसके पश्चात् साधु आश्रम हरदुआगंज (अलीगढ़) में रहकर जिज्ञासु छात्रों को शिक्षा देते थे। १९१८ में आप काशी आये और सार्वजनिक सेवा में जुट गये। स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी उन्होंने भाग लिया तथा स्वामी श्रद्धानन्द के साथ शुद्धि कार्य में सक्रिय रहे। १९३० में वे झरिया (बिहार) आये और आजीवन वहीं रहे। १९ अक्टूबर १९६९ को उनका निधन हुआ। ब्रह्मचारीजी ने वाल्मीकीय रामायण की विवेचनात्मक टीका लिखी है।

ले. का.—१. बालकाण्ड—इसके अनुवादक पं. युधिष्ठिर मीमांसक तथा परिशोधक ब्रह्मचारीजी थे। ग्रन्थारम्भ की विवेचना में रामायण में क्षेपक अंशों की चर्चा करते हुए प्रस्तुत टीका की विशेषताओं को वर्णित किया गया है। यह खण्ड रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा २०२५ वि. में ट्रस्ट की ग्रन्थमाला के ३१वें पुष्प के रूप में प्रकाशित हुआ। २. अयोध्याकाण्ड—अनुवाद तथा परिशोधन ब्रह्मचारीजी ने किया। २०१९ वि., ३. अरण्य, किष्किन्धा काण्ड २०२१ वि., ४. सुन्दरकाण्ड—२०२३ वि., ५. युद्धकाण्ड—इस काण्ड का अनुवाद ब्रह्मचारीजी नहीं कर सके। पं. विजयपाल व्याकरणाचार्य द्वारा २०२९ वि. में यह कार्य सम्पन्न हुआ।

पं. अखिलानन्द शर्मा कविरत्न

संस्कृत में सरस कविता लिखने वाले पं. अखिलानन्द कविरत्न का जन्म बदायूं जिले के चन्द्रनगर नामक ग्राम में माघ शुक्ला २, १९३७ वि. को पं. टीकाराम तथा श्रीमती सुबुद्धि देवी के यहाँ हुआ। पं. टीकाराम स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में उस समय आये, जब स्वामीजी गंगा के किनारे कर्णवास में निवास कर रहे थे। स्वामी दयानन्द के सहपाठी पं. युगलकिशोर तथा अल्मोड़ा निवासी पं. विष्णुदत्त से अखिलानन्द ने विभिन्न शास्त्रों का अध्ययन किया। अध्ययन समाप्ति के पश्चात् वे आर्यसमाज के उपदेशक बन गये। संस्कृत काव्य रचना में उनकी असाधारण गति थी। वर्णव्यवस्था पर सैद्धान्तिक

मतभेद हो जाने के कारण उन्होंने आर्यसमाज का परित्याग कर दिया और सनातन धर्म के प्रवक्ता बनकर आर्य विद्वानों से शास्त्रार्थ करने लगे। ८ मई १९५८ को ७८ वर्ष की आयु में कविरत्न अखिलानन्द का निधन हुआ।

ले. का.—१. दयानन्द लहरी—शिखरिणी छन्दों में निबद्ध यह काव्य कृति २५ नवम्बर १९०६ को लिखी गई। इसके विभिन्न संस्करण १९०७, १९१३, १९३४ तथा १९७६ में प्रकाशित हुए। २. दयानन्द दिग्विजय महाकाव्य-संस्कृत की महाकाव्य शैली में लिखा गया यह विशाल ग्रन्थ १९१० में इण्डियन प्रेस प्रयाग में छपा। २१ सर्ग तथा २३४८ श्लोकों में समाप्त इस काव्य कृति का द्वितीय संस्करण श्री चतुरसेन गुप्त ने आर्य धर्म प्रकाशन शामली (उ. प्र.) से २०२७ वि. में प्रकाशित किया। इस संस्करण की विस्तृत भूमिका इस कोशकार ने लिखी थी। ३. वैदिक सिद्धान्त वर्णन काव्य—१९६९ वि.। ४. भामिनी भूषण काव्य—१९७६ वि.। ५. लघुकाव्यसंग्रह के अन्तर्गत ईश्वर स्तुति काव्य (२२ पद्य) धर्म-लक्षण काव्य (१८ पद्य) सत्य वर्णन काव्य (दयानन्द प्रतिपादित अष्ट सत्य) तथा गप्प वर्णन काव्य (दयानन्द प्रोक्त गप्पाष्टक) शीर्षक चार काव्यों का संग्रह हुआ है। १९६५ वि.। ६. वृहत्काव्य संग्रह—इसमें आर्य वृत्तेन्दु चन्द्रिका १९६५ वि., वार्षिकोत्सव चम्पू, परोपकार कल्पद्रुम १९६५ वि., गुरुकुलोदय काव्य, उपनयनप्रशंसन काव्य, विवाह-विनोद काव्य, शोकसंम्मूर्छन काव्य, (पं. तुलसीराम स्वामी के निधन पर लिखी गई शोकगीतिका) तथा विद्याविनोद काव्य संगृहीत हैं। ७. आर्यनियमोदय काव्य—आर्यसमाज के दस नियमों की व्याख्या—१९६४ वि., ८. आर्यशिरोभूषण काव्य—आर्योद्देश्यरत्नमाला का १२२ वसन्ततिलका छन्दों में काव्यानुवाद—१९६४ वि., ९. संगीतरत्नमंजूषा—सवैया, चौपाई, गजल, कव्वाली, चौताला, दादरा आदि हिन्दी, उर्दू के पद्य रूपों तथा संगीत विधानों का संस्कृत रूप। १०. ब्राह्मणमहत्त्वादर्श—१९७१ वि., ११. सनाढ्यविजय महाकाव्य—१९७१ वि., १२. वैधव्य-विध्वंसन चम्पू—१९६४ वि., १३. द्विजराजविजय चम्पू, १४. विज्ञानोदय चम्पू।

उपर्युक्त के अतिरिक्त कैटालोगस कैटागोरम में शर्माजी के अन्य ११ काव्यों का उल्लेख मिलता है। मिश्रबंधु विनोद खण्ड—३ में भी इनके ग्रन्थों का नामोल्लेख हुआ है। विरजानन्द दैवकरणि ने सुधारक मासिक (जनवरी १९६९) में उनके १३ ऐसे ग्रन्थों का भी नामोल्लेख किया है जो उक्त सूची में नहीं हैं।

अखिलानन्द शर्मा रचित शास्त्रीय ग्रन्थ—

१. पाणिनीयसूत्रार्थप्रकाश २. छन्द : सूत्रम् (पिंगल कृत छन्दः सूत्रम् पर संस्कृतभाष्य) १९६५ वि., ३. वामन कृत काव्यालंकारसूत्रम् १९६० वि.।

कतिपय अन्य ग्रन्थ—वैदिकविज्ञानमीमांसा, संस्कृत-साहित्यस्यवर्तमान दशा, वैदिकवर्णव्यवस्था १९७३ वि.

दयानन्द दिग्विजय की भूमिका से ज्ञात होता है कि उन्होंने सत्यार्थप्रकाश का संस्कृतानुवाद भी किया था। शायद यह प्रकाशित नहीं हो सका। सनातन धर्मी बनने के पश्चात् अखिलानन्द शर्मा ने सनातनधर्म विजय महाकाव्य, वेदत्रयीसमालोचन, अथर्ववेदालोचन, सत्यार्थ-प्रकाशालोचन आदि कई ग्रन्थ लिखे।

स्वामी अखिलानन्द सरस्वती (श्री कालीचरण आर्य)

आर्यसमाज के उच्च कोटि के नेता तथा कार्यकर्ता श्री कालीचरण का जन्म १८९१ में हुआ। आप अपनी मातृ संस्था के अनथक सेवक तथा समर्पित कार्यकर्ता थे। ये अनेक वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री पद पर रहे। १९६२ में आपने संन्यास ले लिया और अखिलानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात हुए। १९६३ में आप धर्म प्रचारार्थ मॉरिशस गये और पर्याप्त समय तक वहां रह कर आर्यसमाज के कार्य को गति प्रदान की। १९ दिसम्बर १९८२ को गाजियाबाद में आपका निधन हो गया।

"कर्म और भोग" १९६३ आपकी दार्शनिक कृति है जिसमें कर्मफल सिद्धान्त का शास्त्रीय विवेचन किया गया है।

पं. अखिलेश आचार्य

श्री आचार्य गुरुकुल आमसेना जिला कालाहण्डी (उडीसा) के उपाचार्य हैं।

ले. का.—ऋषि दयानन्द प्रणीत ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका तथा आर्याभिविनय का उड़िया अनुवाद, महात्मा आनन्दस्वामी रचित वैदिक सत्यनारायण व्रतकथा का उड़िया अनुवाद, ब्रह्मचर्य संदेश, स्वामी दयानन्द सरस्वती (उड़िया जीवनी) १९८३.

पं. अखिलेश शर्मा

महर्षि दयानन्द की प्रशस्ति को काव्य के माध्यम से प्रस्तुत करने वाले पं. अखिलेश शर्मा का जन्म भाद्रपद शुक्ला ५ सं. १९६५ को सीतापुर (उत्तर प्रदेश) जिले के मछरेहटा ग्राम में हुआ। इनके पिता श्री मंगलदत्त त्रिवेदी मध्यवित्त के कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। बाल्यकाल में इनकी शिक्षा हिन्दी तथा उर्दू तक सीमित रही। १९८० वि. में मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण की, १९८६ वि. में अध्यापक का प्रशिक्षण लिया और सीतापुर जिला बोर्ड के विद्यालयों में अध्यापन करने लगे।

महर्षि दयानन्द पर ब्रजभाषा में ओजस्वी काव्य लिखने की प्रेरणा इन्हें महाकवि मेधाव्रताचार्य के दयानन्ददिग्विजय तथा दयानन्दलहरी जैसे संस्कृत काव्यों से मिली। २००२ वि. के चैत्र शुक्ला पंचमी के दिन कवि ने ब्रजभाषा में दयानन्दलहरी नामक काव्य की रचना की जिसमें ४७ छन्दों में स्वामी दयानन्द का ओज पूर्ण शैली में गुणानुवाद किया गया था। यह काव्य 'महर्षि दयानन्द' शीर्षक से साहित्य मण्डल दिल्ली द्वारा १९४९ में पं. जगत्कुमार शास्त्री की टीका सहित प्रकाशित हुआ। इसका एक अन्य संस्करण दयानन्द लहरी शीर्षक से हिन्दी साहित्य भण्डार लखनऊ द्वारा १९६१ में प्रकाशित हुआ। इनमें कुल ५२ छंद संकलित थे।

स्वामी अग्निदेव भीष्म

श्री भीष्म का जन्म भाद्रपद अमावस्या १९८५ वि. को रोहतक जिले के ग्राम टिटोली में हुआ। पर्याप्त समय तक ये पशुचारण का कार्य करते रहे। तत्पश्चात् दयानन्द मठ रोहतक, उपदेशक विद्यालय यमुनानगर और दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में रहकर इन्होंने विभिन्न शास्त्रों का अभ्यास किया। पंजाब हिन्दी सत्याग्रह में भाग लेकर आपने कारावास के कष्ट सहन किये। पुनः आप संन्यास लेकर धर्म प्रचार में लग गये।

ले. का.—कथा संग्रह, सन्त रविदास संदेश, बच्चों के हित की बातें, भरत की शपथें, स्त्री भजन-संग्रह, भक्ति रस, भजनमाला, वैदिक शिक्षक, ईश्वर भक्ति, आदर्श भजनावली, दयानन्द भजनावली, महापुरुषों के विचार, गुदड़ी के लाल।

व. प.—वैदिक अग्नि प्रकाशन संस्थान, हिसार (हरयाणा)

स्वामी अग्निवेश

पूर्वाश्रम में श्री श्यामराव के नाम से विख्यात स्वामी अग्निवेश का जन्म आंध्रप्रदेश में २१ सितम्बर १९३९ को हुआ। इनकी शिक्षा कलकत्ता में हुई जहाँ से उन्होंने एम. काम. तथा एल.एल. बी. की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं और कलकत्ता के ही एक कालेज में अध्यापन करने लगे। पं. बुद्धदेव विद्यालंकार के सम्पर्क में आकर श्यामराव आर्यसमाज की ओर आकृष्ट हुए और हरयाणा को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। कालान्तर में स्वामी ब्रह्ममुनि से उन्होंने संन्यास की दीक्षा ली तथा आर्यसमाज को सामाजिक तथा राजनैतिक प्रगतिशील कार्यक्रमों को अपनाने की पेरणा करते रहे। आपने आर्य युवक परिषद् का संगठन किया और 'राजधर्म' नामक एक विचारप्रधान पत्र निकाला। सक्रिय राजनीति में भी स्वामी अग्निवेश की रुचि रही और वे कुछ काल तक हरयाणा के शिक्षा मंत्री भी रहे।

आर्यसमाज की विचारधारा में समाजवाद पर आधारित आर्थिक चिन्तन को समायोजित करना स्वामी अग्निवेश का प्रमुख अवदान है। आजकल दिल्ली से क्रान्तिधर्मी नामक पाक्षिक पत्र निकाल रहे हैं।

ले. का.—१. वैदिक समाजवाद—१९७९, २. आर्यसमाज क्या करे, किधर जाय ?, ३. आर्य राष्ट्र।

व. प.—७, जंतरमंतर रोड, नई दिल्ली–११०००१.

स्वामी अच्युतानन्द सरस्वती

अविभाजित पंजाब के सरगोधा जिले के खुशाव नामक कस्बे में स्वामी अच्युतानन्द का जन्म १८५३ में हुआ। इन्होंने वेदान्त की विचारधारा में दीक्षित होकर संन्यास ग्रहण कर लिया और एक संन्यासी-मण्डल का गठन कर उसके मण्डलेश्वर बन गये। स्वामी दयानन्द से एक बार उनका वेदान्त विषय पर विचार (शास्त्रार्थ) भी हुआ था। यह भी ज्ञात हुआ है कि इन्होंने अद्वैतमत के अनुसार उपनिषदों की एक टीका भी लिखी थी। पं. गुरुदत्त विद्यार्थी की प्रेरणा से स्वामी अच्युतानन्द ने अद्वैतवाद का परित्याग किया और १८८८ में अपने अनुयायी संन्यासीमण्डल को छोड़कर आर्यसमाज की दीक्षा ले ली। तत्श्चात् वे आजीवन वैदिक धर्म के प्रचार में संलग्न रहे। ३० सितम्बर १९४१ को ८८ वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

ले. का.—व्याख्यान माला—संस्कृत ग्रन्थों से संगृहीत सूक्तियों का विशाल संग्रह है। इसमें विभिन्न ५२ विषयों से सम्बन्धित सुभाषितों को एकत्रित किया गया है। इसका हिन्दी अनुवाद यज्ञदेव शास्त्री ने किया है जो गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली ने प्रकाशित किया था। मूल ग्रन्थ १९६२ वि. (१९०५) में वत्सला यंत्रालय बड़ौदा से मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ था। चारों वेदों के शतक आर्य प्रादेशिक सभा ने प्रकाशित किये। वेद ज्योति—(चारों शतकों का समुच्चय) २०२६ वि.। आर्यभिविनय : द्वितीय भाग—इसे स्वामी दयानन्द कृत आर्याभिविनय का पूरक ग्रन्थ कहना चाहिए। इसमें साम और अथर्ववेद के मंत्रों का सार्थ संकलन है।

श्री अतुलकृष्ण चौधरी

'आर्य रत्न' नामक बंगला मासिक के सम्पादक श्री चौधरी ने बंगला भाषा में 'महर्षि दयानन्द सरस्वती' शीर्षक ग्रन्थ लिखा जो वैदिक साहित्य परिषद् कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।

पं॰ अत्रिदेव गुप्त, विद्यालंकार

अत्रिदेव गुप्त का जन्म सहारनपुर जिले के आलमपुर ग्राम में १९०२ में हुआ। आपने १९२४ में गुरुकुल काँगड़ी से विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की। गुरुकुल काँगड़ी के आयुर्वेद विभाग में अध्यापक पद पर कार्य करने के अनन्तर आपने जामनगर के आयुर्वेद संस्थान में भी अध्यापन किया। वे डी. ए. वी. आयुर्वेदिक कॉलेज जालंधर के प्राचार्य पद पर भी रहे। तदुपरान्त हिन्दू विश्वविद्यालय में आयुर्वेद कॉलेज के प्रिंसिपल पद पर वर्षों तक कार्य किया। आपने स्वामी दयानन्द लिखित संस्कारविधि की आयुर्वेद की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण व्याख्या 'संस्कारविधि विमर्श' शीर्षक लिखी जो १९५१ में गोविन्दराम हासानन्द द्वारा प्रकाशित हुई। आपका निधन १२ जून १९६६ को वाराणसी में हुआ। आपने आयुर्वेद और चिकित्सा से सम्बन्धित लगभग १६-१७ ग्रन्थ लिखे थे।

पं. अनन्त गणेश धारेश्वर बी. ए. (आत्मा)

अंग्रेजी भाषा में श्रेष्ठ साहित्य का प्रणयन करने वाले पं. धारेश्वर हैदराबाद दक्षिण के निवासी थे। गुरुकुल काँगड़ी की अंग्रेजी मासिक पत्रिका वैदिक-मैग-जीन में इनके लेख प्रमुखता से छपते थे। जब यह पत्रिका कांगड़ी से निकलनी बन्द हो गई तो पं. धारेश्वर ने इसे हैदराबाद से निकालना आरम्भ किया और जीवन पर्यन्त प्रकाशित करते रहे। उस्मानिया विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष पद पर भी इन्होंने कार्य किया तथा जीवन का अन्तिम समय कन्या गुरुकुल बेगम पेट, हैदरा-बाद में व्यतीत किया। पं. धारेश्वर ने लगभग १०० वर्ष की आयु प्राप्त की।

ले. का.—१. वेदमंत्रार्थ प्रकाश २. भाग—यजुर्वेद तथा ऋग्वेद के 'उद्वयं तमसस्परि' (३८.२४) तथा (उपत्वाग्ने दिवेदिवे'' १.१.५) मंत्रों की संस्कृत तथा हिन्दी व्याख्या। इन्होंने अंग्रेजी में 'आत्मा' के नाम से कई ग्रन्थ लिखे जो वैदिक पैम्फ्लेट् शीर्षक ग्रन्थमाला में छपे। इन ग्रन्थों का विवरण इस प्रकार है—

1. The Supreme aim of Life हिन्दी, मराठी, तेलुगु तथा तमिल में भी अनूदित। 2. Love of God and God of Love. ऋग्वेद (३.४१.७) की व्याख्या।

3. The super man यजुर्वेद के मंत्र (३८.३९) की व्याख्या। 4. Way from woe to weal. 5. Madman's dream. 6. Scientific Beauty of Sanskrit. 7. How to shape our course of life? 8. Self respect and self-help. 9. The three fold need and duty of mankind. 10. Reason, Revelation and Religion. 11. The Ramayan : What can it teach us? 12. Gems of thoughts from the Vedas. 13. Vedic Teachings and Ideals.—डा. रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर लिखित 'प्रपन्न प्रलपित' शीर्षक मराठी ग्रन्थ में वैदिक तत्त्वज्ञान और उपासना की तुलना में उपनिषद् प्रतिपादित तत्त्वज्ञान, गीता में अभिव्यक्त भक्ति सिद्धान्त तथा तुकाराम आदि महाराष्ट्र सन्तों की कविता में व्यक्त भक्तिवाद को श्रेष्ठ घोषित किया गया था। 'आत्मा' ने उक्त ग्रन्थ की विस्तृत समीक्षा लिखी जो इस पुस्तक के रूप में दयानन्द जन्म शताब्दी ग्रन्थमाला के अन्तर्गत १९८१ वि. में महात्मा नारायण स्वामी द्वारा प्रकाशित हुई। इस ग्रन्थ का परिशिष्ट भाग Vedic Ideals शीर्षक से १९२७ में पृथक् छपा।

पं अनिरुद्ध शर्मा

शेरकोट (जिला बिजनौर) निवासी श्री शर्मा ने महर्षि दयानन्द काव्य लिखा है। ३६३ छन्दों में समाप्त यह काव्य कृति वैदिक संस्थान वालावाली, (बिजनौर) से २०२२ वि. (१९६४) में छपी, उठो जवान बांकुरो (काव्य संग्रह) १९६४।

शान्त स्वामी अनुभवानन्द

शान्त स्वामी का जन्म अमृतसर जिले के किला भंगियाँ ग्राम में १८६० में हुआ। इनका बचपन का नाम खुशहालचन्द था। इनकी शिक्षा एफ. ए. तक हुई। संस्कृत पढने की इच्छा जागृत होने पर इन्होंने सत्यव्रत वानप्रस्थी नाम धारण किया तथा अनेक स्थानों पर रह कर अध्ययन किया। कुछ काल तक अमरोहा (उत्तर प्रदेश) के शान्त आश्रम में रहे। आर्यसमाज के प्रचारक बन कर शान्त स्वामी ने समस्त देश का भ्रमण किया। जलियांवाला बाग हत्या काण्ड से क्षुब्ध होकर जब उन्होंने विदेशी सत्ता के विरोध में एक व्याख्यान दिया तो उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। कई मास पश्चात् उन्हें मुक्त किया गया तो वे अमृतसर से रावलपिण्डी चले गये। वे धर्मप्रचारार्थ विदेशों में भी गये तथा लाहौर में रावी पार के विरजानन्दाश्रम में पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के साथ रहे। देश विभाजन के पश्चात् वे स्वामी आत्मानन्द सरस्वती के वैदिक साधन आश्रम, यमुनानगर में भी कुछ काल तक रहे। ९२ वर्ष की आयु में ७ अगस्त १९५२ को इनका अम्बाला में निधन हुआ। ये बहुभाषाविज्ञ, अत्यन्त स्वाध्यायशील तथा सफल लेखक थे।

ले. का.—१. भक्त की भावना—(वेद मन्त्रों की आध्यात्मिक व्याख्या) १९८१ वि. २. वेद से वेद का अर्थ, ३. आर्यसमाज परिचय—१९२६, ४. निरुक्त का मूल वेद में १९९६ वि.

अनूदित ग्रन्थ-आर्य पथिक ग्रन्थावली—पं. लेखराम के उर्दू ग्रन्थ संग्रह कुलियात आर्य मुसाफिर का आर्य पथिक ग्रन्थावली के नाम से तीन भागों में अनुवाद। यह स्टार प्रेस प्रयाग से प्रकाशित हुई। प्रथम भाग में पं. लेखराम का जीवनचरित दिया गया है। आदर्श सुधारक दयानन्द-देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय लिखित प्रसिद्ध ग्रन्थ का बंगला से हिन्दी अनुवाद।

अनूपचन्द 'आफताब' पानीपती

'आफताब' तखल्लुस (उपनाम) वाले अनूपचन्द का जन्म १८९६ में पानीपत (तब का जिला करनाल) में हुआ। आप उच्च शिक्षित थे तथा वकालत करते थे। आर्यसमाज के साथ-साथ आपने राष्ट्रीय आन्दोलन में भी भाग लिया और उर्दू में अनेक राष्ट्रीय कवितायें लिखीं। आपने एक मुसलमान लेखक मौलवी गुलाम हुसैन द्वारा लिखित आक्षेपात्मक पुस्तक स्वामी दयानन्द और उसकी तालीम के उत्तर में 'ऋषि का बोल बाला' (१९३३) नामक ग्रन्थ उर्दू में लिखा। आपके निम्न काव्य संग्रह प्रकाशित हुए—जज्बातें आफताब, खयालाते आफताब,

जोशे वतन तथा आफताबे वतन। आपका निधन १९६८ में हुआ।

पं. अनूप शर्मा

वीर रस के सिद्ध कवि पं. अनूप शर्मा का जन्म ५ सितम्बर १८९९ को सीतापुर जिले के नवीनगर नामक कस्बे में पं. बद्रीप्रसाद त्रिपाठी के यहाँ हुआ। १९२३ में इन्होंने कैनिंग कालेज लखनऊ से बी. ए. किया। पुनः आगरा विश्वविद्यालय से एम. ए. तथा काशी विश्वविद्यालय से बी. टी. की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। प्रारम्भ में शर्माजी ने जीविका निर्वाह के लिये माधुरी, मर्यादा तथा वर्तमान आदि पत्रों में काम किया। कुछ काल तक वे मध्यप्रदेश के सीतामऊ राज्य के हाई स्कूल में प्रधानाध्यापक रहे। १९४० से १९५२ तक इन्होंने धामपुर (बिजनौर) में भी अध्यापन किया। पुनः १९५४ से १९५८ तक आकाशवाणी लखनऊ के देहाती कार्यक्रम में कार्यरत रहे। १९६० में इनका लखनऊ में देहान्त हुआ। यों तो शर्माजी के सिद्धार्थ, वर्धमान, अग्निपथ आदि अनेक विख्यात काव्य ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं, किन्तु धार्मिक आस्था से वे आर्यसमाजी थे। स्वामी दयानन्द की प्रशंसा में लिखे गये उनके १५ कवित्तों को पन्नालाल पीयूष ने स्वसम्पादित 'दयानन्द' शीर्षक पद्य ग्रन्थ में संगृहीत किया है।

आचार्य स्वामी अभयदेव—(पं. देव शर्मा 'अभय' विद्यालंकार)

वैदिक वाङ्मय के प्रकाण्ड विद्वान् तथा लेखक पं. देव शर्मा 'अभय' का जन्म २ जुलाई १८९६ को मुजफ्फरनगर के चरथावल ग्राम में पं. रामप्रसाद के यहाँ हुआ था। सात वर्ष की आयु में इन्हें गुरुकुल कांगड़ी में प्रविष्ट कराया गया। १९१९ में आपने विद्यालंकार की उपाधि ग्रहण की। महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन से प्रेरणा लेकर आपने देश के स्वाधीनता संग्राम में भाग लिया तथा खादी प्रचार, मदिरा निषेध, विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार आदि कार्यक्रमों में अपना योगदान किया। १९३० में आपको सत्याग्रह आन्दोल में भाग लेने के कारण जेल यात्रा भी करनी पड़ी।

स्वामी श्रद्धानन्दजी के आग्रह से आपने गुरुकुल कांगड़ी में वेद के उपाध्याय पद को स्वीकार किया। ६ मास पश्चात् आपको गुरुकुल का उपाचार्य बना दिया गया। आचार्य रामदेवजी के दक्षिण अफ्रीका में जाने पर आपको आचार्य पद पर कार्य करना पड़ा। एक वर्ष पश्चात् आचार्य रामदेव के स्वदेश लौट आने पर आप इस पद से मुक्त होकर उत्तराखण्ड में अज्ञातवास तथा साधना हेतु चले गये। अज्ञातवास से लौट कर आपने देश का विस्तृत भ्रमण किया। महात्मा गाँधी के साबरमती आश्रम में भी रहने का उन्हें अवसर मिला। यहाँ आपने महात्माजी को गुजराती के बदले हिन्दी में दैनिक प्रार्थना सम्पन्न करने की प्रेरणा दी। देशाटन के पश्चात् आप पुनः गुरुकुल में लौटे तथा आचार्य पद संभाला। कालान्तर में आप योगी अरविंद की साधना पद्धति से प्रभावित हुए तथा वर्ष में चार मास अरविन्द आश्रम पाण्डिचेरी में व्यतीत कर योग साधना करने लगे। ३ अप्रैल, १९३८ को आपने गंगापार की पुरानी गुरुकुल भूमि में जाकर स्वामी सत्यानन्द से संन्यास की दीक्षा ली। अब आप स्वामी अभयदेव के नाम से विख्यात हुए। १९४२ में आपने गुरुकुल से सम्बन्ध समाप्त कर लिया तथा स्वग्राम चरथावल में अरविंद निकेतन की स्थापना की। यहाँ रहकर आप वेद तथा योग के प्रचार में लगे रहे। ९ जनवरी १९७० को आपका निधन हुआ।

ले. का.—वैदिक विनय ३, भाग— गुरुकुल कांगड़ी की स्वाध्याय मंजरी शीर्षक ग्रन्थमाला पुष्प ३, ४, ५ के अन्तर्गत क्रमशः १९८८ वि. १९८९ वि. तथा १९९० वि. में प्रकाशित। वर्ष के ३६५ दिनों में पढने के लिये मंत्रों की सुन्दर व्याख्या। इसी ग्रन्थ को वेदांजलि शीर्षक से दयानन्द संस्थान दिल्ली ने २०३३ वि. में प्रकाशित किया।

ब्राह्मण की गौ—अथर्ववेद के ब्रह्मगवी सूक्त की व्याख्या १९८६ वि. वैदिकब्रह्मचर्यगीत—अथर्ववेद के ब्रह्मचर्यसूक्त की व्याख्या २००१ वैदिक उपदेशमाला, तरंगित हृदय—गद्य काव्य।

आपने श्री अरविन्द लिखित स्वामी दयानन्द विषयक सुप्रसिद्ध निबन्धों का हिन्दी अनुवाद किया। ये निबंध

मूलतः वैदिक मैगजीन (गुरुकुल कांगड़ी की मासिक मुखपत्रिका) के लिए १९१६ में लिखे गये थे।

श्री अरविंद के वेद विषयक ग्रन्थ 'वेद रहस्य' का हिन्दी अनुवाद भी आचार्य अभयदेव ने किया था।

महात्मा अभय मुनि (पं भगवतीप्रसाद अभय)

राजस्थानी भाषा में सुन्दर, शिक्षाप्रद, मनोरंजक तथा भावप्रधान काव्य रचना करने वाले पं. भगवतीप्रसाद अभय का जन्म ज्येष्ठ शु. १५ सं. १९६२ वि. को राजस्थान के नागौर कस्बे के एक पुष्करणा ब्राह्मण (व्यास) परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम पं. उदयकृष्ण व्यास था। इनके परिवार के लोग वल्लभ मतानुयायी वैष्णव थे, जबकि श्री भगवतीप्रसाद शिवपूजा करते थे। इनकी शिक्षा साधारण हिन्दी, गणित तथा ज्योतिष की हुई। व्यवसाय के रूप में इन्होंने ज्योतिष के कार्य को अपनाया और जन्मपत्र, वर्षफल आदि बनाने लगे। कालान्तर में इनकी रुचि भजन-गायन और संगीत की ओर हुई। इसी बीच इनका परिचय आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के उपदेशक पं. रामसहाय शर्मा से हुआ। इन्हीं की प्रेरणा से इन्होंने आर्य भजनोपदेशक बनने का निश्चय किया और १९३३ में आर्य प्रतिनिधि सभा में इनकी नियुक्ति हुई। तब से १९७४ पर्यन्त इन्होंने सभा के अधीन रहकर सर्वत्र धर्मप्रचार किया। तदनन्तर सभा की सेवा से अवकाश लेकर स्वतन्त्र रूप से धर्मप्रचार में लगे।

ले. का.— वसन्त विहार तीन भाग, फागुन सुधार भजन, होली रो हेलो, धरती रो हेलो, अभय भजनावली चार भाग, अभयगीताञ्जलि, ३ भाग, राजस्थानी-रस धारा भाग—४, श्रीकृष्ण सुदामाचरित, नागौर नगर दर्शन।

व. प.—नया दरवाजा, नागौर (राजस्थान)

स्वामी अभयानन्द सरस्वती

योग विद्या के मर्मज्ञ स्वामी अभयनन्द काशी के निवासी थे। इस नगर में इन्होंने योग मण्डल नामक एक संस्था की भी स्थापना की थी।

ले. का.—१. प्राणायामविधि—१९८० वि., २. सप्त प्रश्नोत्तरमाला, ३. मनोयोग हिप्नोटिज्म १९७९ वि.।

पं. अभिविनय भारथी

श्रीभारथी का जन्म १ जनवरी १९३१ को पं. विष्णुदत्त शुक्ल तथा माता कमलादेवी के यहाँ बर्मा देश की राजधानी रंगून में हुआ। इनके पूर्वज उत्तरप्रदेश के थे जो ब्रह्मदेश में निवास करने लगे थे। १९४२ में भारथीजी भारत आये तथा विभिन्न स्थानों पर रहकर विद्याध्ययन किया। विशेषतः शास्त्रों की शिक्षा पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु तथा पं. विश्वम्भरदत्त पर्वतीय से प्राप्त की। आपने पं. भगवद्दत्तजी को शतपथ ब्राह्मण पर भाष्य लेखन में सहयोग दिया। १९८४ से आपने त्रैमासिक 'वेदोद्धारिणी' पत्रिका आरम्भ की। इसमें हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी में उच्च कोटि के शोधपरक निबंध छपते हैं।

ले.का.—हव्य मीमांसा, द्वादशमहादैवतेष्टि महायज्ञ।

व.प.—११, पश्चिमी पटेल नगर,
दिल्ली—११०००८.

लाला अमरनाथ

लालाजी अमृतसर आर्यसमाज के आरम्भिक सदस्य थे। इन्होंने सतमपरीक्षा नामक एक लघु ग्रन्थ उर्दू में लिखा जो १९४३ वि. में प्रकाशित हुआ। इसका हिन्दी अनुवाद दिल्ली के श्री जगन्नाथ ने किया। लीथो की छपाई में यह पुस्तक १९४३ वि. में दिल्ली से ही छपी।

महात्मा अमर स्वामी सरस्वती (ठाकुर अमरसिंह आर्य पथिक)

ठाकुर अमरसिंह का जन्म वैशाख कृष्णा २ सं. १९५१ वि. (अप्रेल १८९४) को बुलन्दशहर जिले के अरनिया ग्राम में ठाकुर टीकमसिंह तथा श्रीमती राजकुमारी के यहाँ हुआ। ठाकुर टीकमसिंह ने कर्णवास के निकट गंगा तट पर स्वामी दयानन्द के दर्शन किये थे तथा उनके प्रवचन श्रवण का लाभ भी लिया था। ठा. अमरसिंह की शिक्षा राधाकृष्ण संस्कृत पाठशाला खुर्जा में पं. चण्डीप्रसाद तथा प. परमानन्द के सान्निध्य में हुई। १९१४ से १९१८

तक वे आगरा के मुसाफिर विद्यालय में रहे। यहां उन्होंने फारसी तथा अरबी पढी तथा मौलवो करीमुद्दीन से विधिवत् कुरान का अध्ययन किया। महात्मा हंसराज की प्रेरणा से वे १९१८ में आर्य प्रादेशिक सभा में आये और उपदेशक बन गए। देश विभाजन के पश्चात् ठाकुर अमरसिंह ने विभिन्न स्थानों को केन्द्र बनाकर धर्मोपदेश का कार्य जारी रखा। १९६७ में उन्होंने संन्यास धारण किया और अमर स्वामी के नाम से जाने गये। ४ सितम्बर १९८७ को गाजियाबाद में इनका निधन हो गया। शास्त्रार्थ तथा प्रवचन कला में निपुण अमर स्वामी एक सिद्धहस्त लेखक भी थे।

ले. का.—१. आर्य सिद्धान्त सागर प्रथम भाग—ईश्वर, जीव, प्रकृति, तथा अन्य सैकड़ों विषयों पर शास्त्रीय प्रमाणों का यह अद्भुत संग्रह आर्य प्रादेशिक सभा के महात्मा हंसराज साहित्य विभाग द्वारा २००० वि. (१९४३) में प्रकाशित हुआ। पं. वैद्यनाथ शास्त्री इस ग्रन्थ के सहलेखक थे। २. जीवित पितर—जीवित व्यक्तियों की ही पितर संज्ञा होती है, इस सिद्धान्त की पुष्टि में लिखा गया। २०१७ वि., ३. हनुमान आदि वानर बंदर थे या मनुष्य, १९५९, ४. क्या रावण विजयदशमी को मारा गया था, २०२३ वि., ५. रामायण दर्पण। ६. क्या द्रोपदी के पाँच पति थे? १९६९, ७. गीता और वेद २०२८ वि., ८. गीता और ऋषि दयानंद, ९. गीता में ईश्वर का स्वरूप, १०. भारतीय करण २०१६ वि., ११. शास्त्रार्थ संग्रह, १२. मूर्तिपूजा की हानियाँ—२०२१ वि., १३. संध्या के दो मंत्रों की व्याख्या, १४. परापूजा—शंकराचार्य कृत प्रसिद्ध स्तोत्र का अनुवाद, १५. आचार्य शुकराज शास्त्री का धर्म बलिदान—नेपाल के आर्य शहीद की जीवनी। २०२७, वि., १६. ऋषि दयानन्द के सम्बन्ध में लोकमत १९६२, १७. प्रस्थान त्रयी, १८. अमरगीतांजली (भजन संग्रह) ३ भाग, १९. प्रश्नोत्तरी—स्वामी शंकराचार्य कृत ग्रन्थ का अनुवाद। २०. निर्णय के तट पर खण्ड १ अमर स्वामी द्वारा किये गये १४ शास्त्रार्थों का प्रामाणिक विवरण १९७९। खण्ड २ में आर्य विद्वानों द्वारा किये गये ४१ शास्त्रार्थों का विवरण (१९८६), २१. शास्त्रार्थ एक शंकराचार्य से। २२. सत्यार्थप्रकाश मण्डन भाग—१ (१९८३), २३. शिवाजी का पत्र जयसिंह के नाम १९५५ २४. गीता अमर विवेक भाष्य—प्रथम अध्याय मात्र। १९८३।

म. अमर स्वामी के देहान्त के पश्चात् निर्णय के तट पर' का तीसरा खण्ड श्री लाजपतराय ने १९८८ में प्रकाशित किया। इसमें ३२ शास्त्रार्थों का विवरण है।

वि. अ.—शास्त्रार्थ केसरी अमर स्वामी अभिनन्दन ग्रन्थ—ठाकुर विक्रमसिंह द्वारा सम्पादित (१९७८)।

भक्त अमीचन्द मेहता

कवि, संगीतज्ञ तथा गायक अमीचन्द मेहता का जन्म पश्चिमी पंजाब के जिला जेहलम की तहसील पिंडदादन खाँ के ग्राम हरणपुर में हुआ। ये मुहियाल ब्राह्मण थे। इनकी उपजाति बाली थी। गायन के प्रति इनका बाल्यकाल से ही अनुराग था। युग की रीति के अनुसार अमीचन्द ने उर्दू पढी और जेहलम तहसील में वासिल-बाकीनवीस का पद पा गए। कुछ काल बाद वे चुंगी के दरोगा बन गये और नायब तहसीलदार के पद पर भी उनकी पदोन्नति हुई। मेहता अमीचन्द का आरम्भिक जीवन दुराचार का जीवित चित्र था। किन्तु स्वामी दयानन्द के एक वाक्य "मेहता, तुम हो तो हीरे, किन्तु कीचड़ में पड़े हो" ने उनका जीवन बदल दिया। अब उनकी मद्यपान, मांसाहार तथा अन्य प्रकार की दुश्चरित्रतायें समाप्त हुईं और उन्होंने अपना अवशिष्ट जीवन काव्य और संगीत के माध्यम से वैदिक धर्म के प्रचार करने में लगाया। २९ जुलाई १८९३ को उनका निधन हुआ। अमीचन्द के भजनों के अनेक संग्रह समय-समय पर छपे। हमारी जानकारी में निम्न तीन आये हैं—

१. आर्य भजन संग्रह-देवदत्त शर्मा ने इसे फर्रुखाबाद से १८८९ में प्रकाशित किया। इसमें अमीचन्द के अतिरिक्त सरदार कान्हसिंह के भजन भी संगृहीत हैं।

२. अमीरस सार—इसका सम्पादन पं. चमूपति ने किया था और राजपाल लाहौर ने दयानन्द

जन्म शताब्दी ग्रन्थमाला—३ के अन्तर्गत १९२५ में प्रकाशित किया।

३. अमीरसुधा—पं. दौलतराम शास्त्री द्वारा सम्पादित और रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित।

लाला अमीचन्द

इन्होंने उर्दू में स्वामी दयानन्द का जीवनचरित लिखा था।

अमरेश आर्य

इनका मुसलमानी नाम शेख अमीर मोहम्मद 'अफज़ल उलउलमा' था। इस्लाम को त्यागकर वैदिक धर्म की दीक्षा लेने वाले तमिलनाडु निवासी श्री अमरेश आर्य की निम्न रचनायें प्रकाशित हुई हैं—

कुरान : महर्षि दयानन्द की दृष्टि में (१९८३), इस्लामी वहदानियत और शिर्क की हकीकत—१९८२, Why I gave up Islam. ? १९८२, मैंने दीन इस्लाम क्यों तर्क किया ?

व. प.—द्वारा दयानन्द भवन, रामलील मैदान, नई दिल्ली—११०००२.

स्वामी अमृतानन्द सरस्वती

आप उत्तरप्रदेश के निवासी थे। आपके द्वारा लिखित अष्टाध्यायी भाष्य का उल्लेख मिलता है। 'ओंकार' की व्याख्या में लिखा गया आपका प्रसिद्ध संस्कृत निबन्ध ओंकारदर्शनम् आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश से २००८ वि. में प्रकाशित हुआ।

अमृतानन्द सरस्वती (ताराचन्द आर्य)

सरगोधा (पाकिस्तान) निवासी श्री ताराचन्द आर्य सिख मत के विशेषज्ञ विद्वान् थे। इन्होंने स्वामी आत्मानन्दजी से संन्यास की दीक्षा ली और उन्हीं के आश्रम में यमुनानगर में रहे।

ले. का.—१. प्रमुख सिख विद्वानों से पांच प्रश्न २. गुरुमत सार ३. सिख गुरु और यज्ञोपवीत ४. गुरुग्रन्थ साहब की आत्मकथा ५. बिला शुबा नवीन सिख हिन्दू नहीं ६. सिख गुरुओं का सच्चा दर्शन ७. खालसा ज्ञान प्रकाश ८. दयानन्द शतक ९. ओंकार स्तोत्र स्वामी अमृतानन्द के उपर्युक्त अधिकांश ग्रन्थ वैदिक साधन आश्रम, यमुनानगर से प्रकाशित हुए। कुछ के उर्दू अनुवाद भी छपे।

पं. अयोध्याप्रसाद वैदिक मिशनरी

पं. अयोध्याप्रसाद का जन्म १६ मार्च १८८८ को बिहार के गया जिले की नवादा तहसील के अन्तर्गत आमुआ नामक ग्राम में बाबू बंशीधरलाल तथा गणेशकुमारी के यहां हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू, फारसी तथा अरबी भाषाओं की हुई। आर्यसमाज से इनका परिचय इनके मामा ने कराया जिसके कारण अयोध्याप्रसाद ने सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन किया। हजारीबाग और पटना में अध्ययन करने के पश्चात् वे कलकत्ता आये और १९१५ में बी. ए. की परीक्षा दी। अब वे आर्यसमाज कलकत्ता के पुरोहित और आचार्य पद पर नियुक्त किये गये और सेठ युगलकिशोर बिड़ला की आर्थिक सहायता से १९३३ में अमेरिका के शिकागो नगर में आयोजित विश्वधर्म सम्मेलन में वैदिक धर्म के प्रतिनिधि बन कर पहुँचे। सम्मेलन में उन्होंने 'वैदिक धर्म की महत्ता और विश्वशांति' विषय पर प्रभावशाली भाषण दिया। अमेरिका से वे ट्रिनिडाड तथा डच गायना आदि देशों में धर्म प्रचारार्थ गये। विदेश यात्रा से लौट कर वे स्थायी रूप से कलकत्ता में ही रहने लगे, जहाँ ११ मार्च १९६५ को ७७ वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ।

ले. का.—१. The Gems or Vedic Wisdom—वेद के कतिपय मन्त्रों का अंग्रेजी भाषानुवाद १९३३. २. Vedic Thoughts—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक उपर्युक्त ग्रन्थ का ही नवीन संस्करण है। ३. ओम्—माहात्म्य तथा ४. बुद्ध भगवान् वैदिक सिद्धान्तों के विरोधी नहीं थे। इन दो ग्रन्थों को आर्यसमाज कलकत्ता ने प्रकाशित किया। ५. इस्लाम कैसे फैला ? गोविन्दराम हासानन्द कलकत्ता द्वारा प्रकाशित।

वि. अ.—आर्य संसार का पं. अयोध्याप्रसाद स्मारक अंक अप्रैल, मई १९६५

मुन्शी अयोध्याप्रसाद

मांस भक्षण के खण्डन में लिखी गई इनकी पुस्तक 'बकरा विनय' हिन्दी तथा उर्दू, दोनों भाषाओं में छपी। इसका द्वितीय संस्करण-श्यामलाल वर्मा बरेली द्वारा १९६८ वि. में प्रकाशित हुआ।

अर्जुनदेव वर्णी

वर्णीजी का जन्म १९५१ में मध्यप्रदेश के रायपुर जिले के नरतोरा नामक ग्राम में श्री रामलाल के यहां हुआ। इनकी शिक्षा गुरुकुल कालवा तथा गुरुकुल सिंहपुरा में हुई। स्वामी सत्यपतिजी से इन्होंने मीमांसा को छोड़कर पांचों वैदिक दर्शन पढ़े। स्वामी ब्रह्ममुनि से निरुक्त का अध्ययन किया।

ले. का—चतुर्वेद मन्त्रानुक्रम सूची—निरूक्त, आरण्यक, आर्षेयादि ब्राह्मण तथा काण्वादि संहिताओं एवं ऋषि दयानन्द के समस्त ग्रन्थों में व्याख्यात मन्त्रों के संकेतों से संयोजित यह एक महत्त्वपूर्ण संदर्भ ग्रन्थ है। १९८३

व. प.—दर्शनयोग विद्यालय, आर्यवन, रोजड़, डा.-सागपुर—३८३३०७. जिला—साबरकांठा (गुजरात)

बावा अर्जुनसिंह

बावा अर्जुनसिंह प्रसिद्ध आर्य लेखक बाबा छज्जूसिंह के छोटे भाई तथा आर्यसमाज लाहौर की साप्ताहिक अंग्रेजी पत्रिका-आर्यपत्रिका के प्रथम सम्पादक थे। इन्होंने अपना साहित्य अंग्रेजी में लिखा। स्वामी दयानन्द की जीवनी के अतिरिक्त उनके अनेक लघु ग्रन्थों का अंग्रेजी में अनुवाद किया। १९०१ में इनका निधन हो गया।

ले. का.—१. आर्योद्देश्यरत्नमाला—अंग्रेजी अनुवाद के साथ-साथ प्रत्येक मन्तव्य पर स्वतन्त्र टिप्पणी भी लिखी गई है। प्रारम्भ में यह अनुवाद आर्य पत्रिका लाहौर में धारावाही The Garland of the Aryan Wisdom शीर्षक से प्रकाशित हुआ। पुन: वैदिक यन्त्रालय अजमेर से पुस्तकाकार छपा।

२. वेदान्तिध्वान्त निवारण—स्वामी दयानन्द की इस कृति का अनुवाद Neo Vedantism Refuted शीर्षक से तैयार किया गया। पहले आर्यपत्रिका में छपा। अनुवाद के प्रारम्भ में बावा अर्जुनसिंह ने सात पृष्ठों की एक विद्वतापूर्ण भूमिका लिखी थी। भूमिका के अन्त में दी गई तिथि से ज्ञात होता है कि अनुवाद जुलाई १८९९ में पूरा हुआ। वैदिक यन्त्रालय, अजमेर ने इसे पुस्तकाकार प्रकाशित किया।

३. व्यवहारभानु—बाल शिक्षा का यह ग्रन्थ अंग्रेजी में अनूदित होकर आर्यन् प्रिंटिंग पब्लिशिंग एण्ड जनरल ट्रेडिंग कम्पनी लाहौर द्वारा प्रकाशित हुआ।

४. सत्य धर्म विचार (मेला चांदापुर) पादरियों और मौलवियों से हुए इस शास्त्रार्थ के विवरण का अंग्रेजी अनुवाद उपर्युक्त प्रकाशक ने प्रकाशित किया।

५. पंचमहायज्ञ विधि का अंग्रेजी अनुवाद।

स्वामी दयानन्द के उपर्युक्त पांच ग्रन्थों के अनुवाद के अतिरिक्त बावा अर्जुनसिंह ने अपने मित्र पं. चरणदास बी. ए. के आग्रह पर स्वामी दयानन्द का एक लघु जीवन चरित—Dayanand Saraswati—The founder of the Arya Samaj शीर्षक से लिखा जो पंजाब प्रिंटिंग वर्क्स, लाहौर से १९०२ में छपा। द्वितीय संस्करण Ess-Ess Publications नई दिल्ली ने १९७९ में प्रकाशित किया।

सरदार अर्जुनसिंह

अमर शहीद भगतसिंह के पितामह सरदार अर्जुनसिंह जालन्धर जिले के खटकड़कलां ग्राम के निवासी थे। इन्होंने स्वामी दयानन्द के दर्शन किये थे और उनके उपदेश भी सुने थे। १८९० में इन्होंने आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण की और उत्साहपूर्वक वैदिक धर्म के प्रचार में लग गये। इन्होंने अपने दो पौत्रों-जगत्सिंह और भगतसिंह का वैदिक विधि से यज्ञोपवीत संस्कार पं. लोकनाथ तर्कवाचस्पति के आचार्यत्व में कराया। सिख गुरुओं की शिक्षाओं को वेदानुकूल सिद्ध करते हुए आपने एक उर्दू पुस्तक 'हमारे गुरु साहबान वेदों के पैरो थे' शीर्षक लिखी जो

बर्मन एण्ड कम्पनी लाहौर से छपी। इनका निधन १९३३ में हुआ।

श्री अरविन्द

सुप्रसिद्ध योगी तथा चिन्तक अरविन्द का जन्म १५ अगस्त १८७२ को श्रीकृष्णधन घोष के यहाँ कलकत्ता में हुआ। इनके नाना श्री राजनारायण बोस ब्रह्मसमाज के प्रसिद्ध नेता तथा स्वामी दयानन्द के समकालीन थे। स्वामीजी के कलकत्ता प्रवास के समय बोस महाशय की उनसे भेंट भी हुई थी। श्री अरविन्द ने अपना अध्ययन समाप्त कर बड़ौदा राज्य में दीवान का पद सम्भाला। इसके पश्चात् वे सशस्त्र क्रान्ति चेष्टा द्वारा देश को स्वतन्त्र करने के अभियान में जुट गये। परन्तु बाद में अपनी राजनैतिक गतिविधियों को समाप्त कर वे फ्रान्सीसी उपनिवेश पाण्डिचेरी में रहकर साधनारत हो गये। कालान्तर में उन्होंने अपनी योगपद्धति तथा दार्शनिक सम्प्रदाय प्रवर्तित किया। ५ दिसम्बर १९५० को श्री अरविन्द का निधन हो गया। आचार्य रामदेवजी के आग्रह पर श्री अरविन्द ने स्वामी दयानन्द के व्यक्तित्व एवं वेद विषयक विचारों पर दो लेख लिखे थे जो वैदिक मैगजीन (अप्रैल मई १९१६) में प्रकाशित हुए। ये लेख पुस्तकाकार छपे, मूल रूप में भी और हिन्दी में अनूदित होकर। इनका विवरण इस प्रकार है—

१. Dayanand : The man and his work. स्टार प्रेस प्रयाग से १९१६ में प्रकाशित। २. Dayanand as viewed by Shri Arvinda Ghosh with an appreciation by A. J. Davis of America. वैदिक पुस्तकालय लाहौर से १९१८ में प्रकाशित। ३. Dayanand and the Veda आर्य कुमार सभा मद्रास द्वारा १९२० में प्रकाशित। ४. Dayanand : The man and his work वजीरचन्द शर्मा लाहौर द्वारा १९२२ में प्रकाशित। ५. Dayanand and the Veda आर्यकुमार सभा कलकत्ता (१९२६) तथा आर्यकुमार सभा पटना द्वारा (१९२७) प्रकाशित। ६. Dayanand: The man and his work सत्यवादी कार्यालय सक्खर (सिंध)। सार्वदेशिक सभा (१९३५ व १९४७) तथा लखनऊ से (१९३५) प्रकाशित। ७. Swami Dayanand Saraswati : The maker of Modern India. डा० के. सी. यादव द्वारा सम्पादित तथा आर्य प्रादेशिक उप सभा हरयाणा द्वारा १९७५ में प्रकाशित। ८. Bankim, Tilak and Dayanand आर्य प्रकाशन गृह कलकत्ता से १९४० तथा १९४४ में प्रकाशित। इसी ग्रन्थ को सार्वदेशिक सभा ने भी प्रकाशित किया। ९. दयानन्द-उपर्युक्त लेखों का आचार्य अभयदेव विद्यालंकार कृत हिन्दी अनुवाद। श्री अरविन्द के इन दोनों लेखों का एक सुसम्पादित संस्करण डी. ए. वी. कालेज कम्बाला नगर के अंग्रेजी विभाग के प्रवक्ता डा. ऋषिराम भारद्वाज ने तैयार किया है। Swami Dayanand Saraswati : An Assessment by Sri Arvinda Ghosh शीर्षक यह ग्रन्थ १९८७ में प्रकाशित हुआ है।

डा. अरविन्दकुमार

डा. अरविन्द का जन्म २५ मार्च १९५५ को पटना में श्री राजेन्द्रप्रसाद वर्मा के यहां हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल सिंहपुरा तथा गुरुकुल भैंसवाल में हुई। १९७५ में इन्होंने गुरुकुल कांगड़ी से विद्यालंकार की उपाधि ग्रहण की तथा १९७७ में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपने 'भवानन्द कृत कारक चक्र—एक समीक्षात्मक अध्ययन' विषय पर शोध कार्य किया जिस पर उन्हें कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से १९८२ में पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त हुई।

व. प.—संस्कृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र।

पं. अलगूराय शास्त्री

आर्यसमाज के प्रसिद्ध कार्यकर्ता तथा स्वाधीनता सेनानी पं. अलगूराय शास्त्री का जन्म २९ जनवरी १९९० को आजमगढ़ जिले के अमिला नामक ग्राम में हुआ। १९२३ में आपने काशी विद्यापीठ से अपनी शिक्षा समाप्त की तथा लाला लाजपतराय द्वारा स्थापित लोक सेवक मण्डल के माध्यम

से देश सेवा में प्रवृत्त हुए। आर्यसमाज से भी आपका सम्पर्क रहा और मेरठ जिले की प्रसिद्ध शिक्षण संस्था गुरुकुल डौरली के आप वर्षों तक कुलपति रहे। स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लेने के कारण आपको अनेक बार जेलयात्रायें भी करनी पड़ीं। १९४२ से १९४५ तक के कारावास जीवन में आपने एकशोध पूर्ण ग्रन्थ 'ऋग्वेद रहस्य' लिखा जो आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश द्वारा १९५१ में प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थ से आपका विशाल स्वाध्याय एवं चिन्तन प्रकट होता है। राजनीति में आकण्ठ निमग्न रहकर भी आप साहित्य सेवा के लिए समय निकाल ही लेते थे। आपने लाला लाजपतराय का जीवनचरित्र लिखा था। शास्त्रीजी का निधन १२ फरवरी १९६७ को हुआ।

पं. अवधबिहारीलाल

इनका जन्म २४ जरवरी १९०३ को मुंगेर जिले के पुराना गंज नामक स्थान में श्री मुरलीधर के यहाँ हुआ। इनकी शिक्षा भागलपुर में हुई जहाँ से इन्होंने एम. ए. और बी. एल. की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। कुछ काल तक ये वकालत करते रहे। १९३६ में कलकत्ता आये और आर्यसमाज के साथ जुड़े। यहाँ इन्होंने अध्ययन के कार्य को चुना और दक्षिण कलकत्ता आर्य विद्यालय के प्रधान पद पर आजीवन रहे। ५ दिसम्बर १९६० को इनका निधन हो गया। आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल-आसाम के मासिक मुख पत्र आर्यसमाज का सम्पादन करने के अतिरिक्त आपने निम्न ग्रन्थ भी लिखे—

१. हम आर्यसमाजी क्यों बनें ? १९९६ वि. (१९३९)। २. आर्य रत्न मंजूषा—(सुभाषित संग्रह) १९८५ (द्वितीय संस्करण)। ३. प्रार्थना पुस्तक (द्वितीय संस्करण) १९५८।

पं. अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

पं. अवनीन्द्रकुमार का जन्म २२ मार्च १९०७ को दानापुर (बिहार) में हुआ। १९८४ वि. में वे गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक बने। उनकी गणना हिन्दी के प्रमुख पत्रकारों में होती है। उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मासिक मुख पत्र आर्य का सम्पादन १९२८ से १९३४ तक किया। तत्पश्चात् वे दैनिक नवयुग, दैनिक हिन्दुस्तान, दैनिक नवभारत आदि पत्रों के भी सम्पादक रहे। इनका निधन ३ मार्च १९८६ को हुआ।

ले. का—पं. सत्यकाम विद्यालंकार के संयुक्त लेखन में पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति का जीवनचरित्र २०२३ वि.।

डॉ. अविनाशचन्द्र बोस

वेदों के विद्वान् तथा उच्चकोटि के लेखक डॉ. अविनाशचन्द्र बोस का जन्म १८९५ में बंगाल में हुआ। कलकत्ता विश्वविद्यालय से उन्होंने १९१९ में अंग्रेजी में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। १९२० में वे राजाराम कॉलेज कोल्हापुर में अंग्रेजी के प्राध्यापक नियुक्त हुए तथा वहाँ १९४५ तक रहे। इस बीच उन्होंने डब्लिन विश्वविद्यालय से पी. एच. डी. की उपाधि भी ग्रहण की। उन्होंने वेदों का गम्भीर अध्ययन किया तथा वेद विषयक अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे। आपका निधन ५ सितम्बर १९७४ को हो गया।

ले. का—1. Words from the Vedas 1950 2. The Call of the Vedas 1954 3. Hymns from the Vedas 1966 4. Swami Dayanand (A Biography) 5. Aryan Ideals : A study of Arya Samaj principles. 1941

श्री अशोक आर्य

श्री आर्य का जन्म अबोहर (पंजाब) में लाला ठाकुरदास के यहाँ ९ जून १९३४ को हुआ। इनकी शिक्षा एम. ए. (हिन्दी) तक हुई। इन्होंने पुस्तकालय-विज्ञान में स्नातक परीक्षा पंजाब विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की तथा वर्तमान में ये माता मिसरी देवी डी. ए. वी महिला कॉलेज, गिदड़बाहा (पंजाब) में पुस्तकालयाध्यक्ष के पद पर कार्यरत हैं। श्री आर्य ने अबोहर में रहते हुए पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय-प्रकाशन मन्दिर के माध्यम से वैदिक ग्रन्थों के प्रकाशन में सहयोग दिया।

ले. का—आर्यसमाज की उपलब्धियाँ १९८३ तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेखन। सम्प्रति श्री आर्य दयानन्द शोधपीठ, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ से 'हिन्दी के जीवनी साहित्य को आर्यसमाज की देन' विषय पर शोध कार्य कर रहे हैं।

व. प.—माता मिसरी देवी डी. ए. वी. कन्या कॉलेज, गिदड़बाहा-१५२१०१ (फरीदकोट)।

अहलूवालिया, एम. एम.

श्री अहलूवालिया ने नेशनल कौंसिल ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्च एण्ड ट्रेनिंग (NCERT) के तत्त्वावधान में स्वामी दयानन्द की एक अंग्रेजी जीवनी लिखी है। उक्त कौंसिल ने इसे १९७१ में प्रकाशित किया।

स्वामी आत्मानन्द तीर्थ

आर्ष योग विद्यापीठ खरखौदा (मेरठ) के आचार्य हैं।

ले. का—१. वेदानुसार वास्तविक सृष्टि सम्वत् १९७३८ १३०६१। २. आदिम सत्यार्थप्रकाश के महत्त्वपूर्ण संस्मरण (२०३१ वि.) इस कृति में सत्यार्थप्रकाश के प्रथम संस्करण के महत्त्वपूर्ण उद्धरण संकलित किये गये हैं तथा आर्यसमाज की स्थापना तिथि पर भी विचार किया गया है।

आत्मानन्द भिक्षु

आपका जन्म १९३० वि. में हुआ। आप पं. लेखराम के भाषण से प्रभावित होकर १९४१ वि. में आर्यसमाज में प्रविष्ट हुए तथा उन्हीं से यज्ञोपवीत ग्रहण किया। आपने आर्यसमाज की आन्तरिक स्थिति का विश्लेषण करते हुए पुस्तक लिखी, जिसका शीर्षक था—ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों और आर्यसमाज के कर्त्तव्यों पर एक दृष्टि।

अन्य ग्रन्थ—अन्नमय कोश, अस्थिपिंजर और अस्थियों के जोड़, शरीर की मांस पेशियाँ और व्यायाम, भोजन की गति, त्वचा, इन्द्रिय विज्ञान आदि।

स्वामी आत्मानन्द सरस्वती (पं. मुक्तिराम उपाध्याय)

स्वामी आत्मानन्द का जन्म मेरठ जिले के अंछाड़ नामक ग्राम में १८७९ में पं. दीनदयालु के यहाँ हुआ। इनकी शिक्षा मेरठ और काशी में हुई। काशी में इन्होंने व्याकरण, साहित्य और वेदान्तादि दर्शनों का अध्ययन किया। यहाँ वे आर्यसमाज के सम्पर्क में आये और आर्य सिद्धान्तों का विशद अनुशीलन किया। कालान्तर में ये रावलपिण्डी के निकटवर्ती चोहा भक्तां ग्राम में स्थित गुरुकुल में आ गये और वहीं अध्यापन करने लगे। १९१६ से १९४७ तक वे गुरुकुल रावलपिण्डी के आचार्य पद पर रहे। इस समय वे पं. मुक्तिराम उपाध्याय के नाम से जाने जाते थे। संन्यास ग्रहण करने के अनन्तर इन्होंने स्वामी आत्मानन्द नाम धारण कर लिया। देश विभाजन के पश्चात् स्वामीजी यमुनानगर आ गये और वैदिक साधन आश्रम की स्थापना कर उपदेशक विद्यालय का संचालन करने लगे। वे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान भी रहे और उन्हीं के नेतृत्व में पंजाब का हिन्दी सत्याग्रह संचालित हुआ। १८ दिसम्बर १९६० को गुरुकुल झज्जर में इनका निधन हो गया।

ले. का—संध्या के तीन अंग—(प्राणायाम, अघमर्षण तथा मनसा परिक्रमा के मन्त्रों की आध्यात्मिक व्याख्या) १९९० वि. (१९३३)। संध्या अष्टांगयोग—(उपर्युक्त ग्रन्थ का परिवर्धित रूप) २०३८ वि.। वैदिक गीता—(प्रक्षिप्त श्लोकों के तार्किक विवेचन तथा विस्तृत आलोचनात्मक भूमिका सहित भगवद्गीता की आर्यसमाज के सिद्धान्तानुकूल टीका) १९९२ वि.।

मनोविज्ञान तथा शिव संकल्प—(यजुर्वेद के शिवसंकल्पात्मक मन्त्रों की रुचिकर व्याख्या)। आत्मानन्द लेखमाला भाग-१—(स्वामीजी के स्फुट लेखों का एक संग्रह) १९६४। गोमेधयज्ञ पद्धति—२००८ वि.। आदर्श ब्रह्मचारी—आत्मानन्द लेखमाला भाग-१—१९६४।

वि. अ.—आत्मानन्द जीवन ज्योति—ले. स्वामी वेदानन्द वेदवागीश।

पं. आत्माराम अमृतसरी

पं. आत्माराम का जन्म आषाढ कृ. प्रतिपदा १९२४ वि. को अमृतसर में श्री राधाकृष्ण तथा माया देवी के यहाँ हुआ। मैट्रिक का अध्ययन पूरा कर सरकारी सेवा में प्रविष्ट होने के बजाय इन्होंने आर्यसमाज के लिये स्वजीवन को समर्पित कर दिया। पं. गुरुदत्त के सहयोग से उन्होंने लाहौर को अपना कार्य क्षेत्र बनाया और डी. ए. वी. मिडिल स्कूल में सहायक अध्यापक बन गये। वे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपमन्त्री तथा मन्त्री भी रहे। स्वामी नित्यानन्द और स्वामी विश्वेश्वरानन्द का परामर्श स्वीकार कर बड़ौदा के प्रगतिशील नरेश महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ ने इन्हें अपने राज्य में बुला लिया और अछूतों के लिये स्थापित विद्यालयों का निरीक्षक नियुक्त किया। इस कार्य को उन्होंने सुचारु रूप से किया और हरिजन वर्ग में उनके प्रयासों से शिक्षा का प्रचार हुआ। उन्होंने बड़ौदा में आर्य कन्या महाविद्यालय की भी स्थापना की। २५ जुलाई १९३८ को उनका निधन हो गया। पं. आत्माराम का अध्ययन व्यापक और बहुमुखी था।

ले. का—१. पं. लेखराम द्वारा महर्षि दयानन्द के उर्दू जीवनचरित्र की सामग्री को सुव्यवस्थित कर उसका सम्पादन। यह ग्रन्थ १८९७ में महाशय मुन्शीराम के उद्योग से छपा। २. सत्यार्थप्रकाश का उर्दू अनुवाद भक्त रैमल और निहालसिंह के सहयोग से किया, १८९८। ३. सत्यार्थप्रकाश का पंजाबी अनुवाद—१८९९। इसके अतिरिक्त आपके अन्य ग्रन्थों का विवरण इस प्रकार है। १. रत्न संहार—(भजन संग्रह) १९४६ वि. (१८८९) २. क्या मांस भक्षण आर्य धर्मानुकूल है ? १८९० । ३. मांस भक्षण निषेध १९९२ । ४. ब्रह्मयज्ञ—(१८९७) (इसका बंगला तथा गुजराती भाषा में भी अनुवाद हुआ)। ५. संस्कार चन्द्रिका—(स्वामी दयानन्द कृत संस्कारविधि की विस्तृत व्याख्या)। यह ग्रन्थ आगरा निवासी पं. भीमसेन शर्मा के सहलेखन में तैयार किया गया था। प्रथम संस्करण १९६९ वि. (१९१३)। ६. सृष्टि विज्ञान—(यजुर्वेद के ३१वें अध्याय की व्याख्या १९१६)। ७. तुलनात्मक धर्म विचार—(एफ. बी. जेकन्स लिखित Comparative Religion नामक ग्रन्थ का अनुवाद) १९७७ वि. (१९२१)। ८. वैदिक विवाहादर्श—१९१०। मुन्शी वृन्दावन (पं. आत्माराम के ससुर) ने इसका उर्दू भाषा में अनुवाद किया। ९. बल प्राप्ति—यजुर्वेद के एक मन्त्र की व्याख्या)। १०. वेदो में शरीरविज्ञान और शल्य क्रिया—बल प्राप्ति शीर्षक पुस्तक का यह परिवर्धित संस्करण है। ११. गीता सार। १२. ऋषि पूजा की वैदिक विधि—१९२४। १३. महर्षि दयानन्द के पूर्व का भारत—रामविलास शारदा लिखित स्वामी दयानन्द की जीवनी आर्यधर्मेन्द्रजीवन की विशद भूमिका (१९०३) इसे 'महर्षि दयानन्द के पूर्व का भारत' शीर्षक से गोविन्दराम हासानन्द ने १९५९ में पुनः प्रकाशित किया। १४. सामान्य धर्म। १५. पं. गुरुदत्त कृत ईश तथा माण्डूक्य उपनिषदों की अंग्रेजी टीकाओं का हिन्दी अनुवाद। १६. अवतार रहस्य (अनूदित ग्रन्थ) १९२२। १७. दिग्विज्ञान—(संध्या के मनसा परिक्रमा मन्त्रों की वैज्ञानिक व्याख्या) १९२५। पं. आत्माराम के अधिकांश ग्रन्थ जयदेव ब्रदर्स बड़ौदा ने प्रकाशित किये थे।

वि. अ.—आदर्श दम्पती और मेहकती मानवता (गुजराती) शीर्षक जीवन चरित ले. सुश्री सुशीला पंडित।

श्री आदित्यपालसिंह आर्य

श्री आर्य का जन्म ३ सितम्बर १९३७ को फर्रुखाबाद जिले के ग्राम चिलखरा में श्री जगनूलाल मित्र के यहाँ हुआ। इंजीनियरिंग में डिप्लोमा लेने के पश्चात् श्री आर्य मध्यप्रदेश के सिंचाई विभाग में नियुक्त हो गये। अब वे अधिशाषी अभियंता के पद पर कार्यरत हैं।

ले. का—१. ऋषि दयानन्द और उनकी मान्यताएँ—स्वामी दयानन्द के मन्तव्य, आर्योद्देश्यरत्नमाला में परिगणित सिद्धान्त तथा सत्यार्थप्रकाश में उल्लिखित ईश्वर के १०० नामों का संग्रह २०४० वि.। २. पं. दीनबंधु वेद शास्त्री द्वारा प्रस्तुत तथा स्वामी सच्चिदानन्द योगी द्वारा प्रकाशित 'योगी का आत्मचरित्र' का सम्पादित संस्करण-२०४४ वि.। ३. ऋषि दयानन्द के

साढ़े पांच वर्ष। ४. दयानन्द जैसा मैंने समझा (२०४४ वि.)।

व. प.—एफ. ५/५२, चार इमली, भोपाल (म.प्र.).

डॉ. आनन्दकुमार, आई. पी. एस.

इनका जन्म ग्राम दुष्टाकलां (जिला बदायूं) में हुआ। डॉ. आनन्द की शिक्षा गुरुकुल झज्जर तथा गुरुकुल कांगड़ी में हुई। यहाँ से इन्होंने संस्कृत में एम. ए. करने के पश्चात् दयानन्द शोध पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय के अन्तर्गत शोधार्थी के रूप में कार्य किया और चारों वेद संहिताओं में त्रैतवाद शीर्षक विषय पर पी. एच. डी. उपाधि ग्रहण की। अखिल भारतीय पुलिस सेवा में चुने जाने के पश्चात् डॉ. आनन्दकुमार आजकल मध्यप्रदेश के पुलिस विभाग में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक हैं।

व. प.—वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, ग्वालियर (म. प्र.)

पं. आनन्दप्रिय पण्डित

पं. आत्माराम अमृतसरी के द्वितीय पुत्र पं. आनन्दप्रिय का जन्म २८ मई १८९९ को अमृतसर में हुआ। इनका प्रारम्भिक शिक्षण गुजरांवाला गुरुकुल में हुआ। १९१९ में इन्होंने आगरा से बी. ए. तथा १९२१ में इलाहाबाद से एल. एल. बी. की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। कुछ समय तक कोल्हापुर तथा बड़ौदा की राज्य सेवा में रहने के पश्चात् वे आर्यसमाज के सार्वजनिक जीवन में आ गये। आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा के संचालन में उनका योगदान सर्वाधिक रहा। अन्य अनेक शिक्षा संस्थाओं की स्थापना एवं संचालन के साथ-साथ वे गुजरात प्रान्त में आर्यसमाज की विचारधारा का प्रचार करने में भी अग्रणी रहे हैं।

ले. का.—सुखी घर। पं. आनन्दप्रिय ने आर्य पत्रों में अनेक विचारपूर्ण लेख लिखे हैं।

वि. अ.—कर्मवीर पं. आनन्दप्रिय अभिनन्दन ग्रन्थ पं. शंकरदेव विद्यालंकार द्वारा सम्पादित १९७६।

व. प.—आत्माराम पथ, कारेली बाग, वडोदरा (गुजरात)।

स्वामी आनन्दबोध (लाला रामगोपाल शालवाले)

आर्यसमाज के विख्यात नेता तथा कार्यकर्त्ता लाला रामगोपालजी का जन्म १९०९ में काश्मीर प्रदेश के अनन्तनाग नगर में हुआ। मूलतः आप अमृतसर के निवासी हैं। इनके पिता का नाम लाला नन्दलाल था।

लालाजी १९२७ में दिल्ली आये और आर्यसमाज के सदस्य बने। यहाँ पं. रामचन्द्र देहलवी आपके प्रेरणा-स्रोत थे। कालान्तर में आर्यसामज दीवानहाल के मन्त्री एवं प्रधान पद पर रहकर आपने सामाजिक कार्य किया। आप आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वर्षों तक अन्तरंग सभासद रहे। सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री तथा उपप्रधान के पदों पर भी रहे, तथा आज भी इस सभा के प्रधान हैं। लालाजी उच्चकोटि के व्याख्याता, संगठक तथा कार्यकर्ता हैं।

कुछ वर्ष पूर्व आपने स्वामी सर्वानन्दजी से संन्यास की दीक्षा ली और आनन्दबोध नाम धारण किया।

ले. का.—पूजा किसकी की ? ब्रह्मकुमारी संस्था—इसका अनुवाद गुजराती में 'ब्रह्माकुमारी संस्थानी पोल' शीर्षक से हुआ है। आर्यसमाज १७७३.

वि. अ.—लाला रामगोपाल शालवाले अभिनन्दन ग्रन्थ—सार्वदेशिक सभा द्वारा १९७८ में प्रकाशित।

व. प.—दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली—११०००२.

आनन्द भिक्षु सरस्वती

भिक्षुजी का जन्म १८७८ में उत्तरप्रदेश के फतेहपुर हसवा नामक नगर में हुआ। इनका पूर्वाश्रम का नाम बलदेवप्रसाद श्रीवास्तव था। प्रारम्भ में इन्होंने रेलवे में नौकरी की। तत्पश्चात् १९१८ में वानप्रस्थ ग्रहण कर लिया और गुरुकुल वृन्दावन में रहने लगे। महात्मा नारायण स्वामीजी की प्रेरणा से आपने वहाँ अवैतनिक रूप में मुख्याधिष्ठाता पद पर कार्य किया। १९२० में आपने

संन्यास ग्रहण किया और आनन्द भिक्षु सरस्वती के नाम से विख्यात हुए। कालान्तर में आप दिल्ली आ गये और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय मंत्री, तत्पश्चात् मंत्री भी रहे। इसी अवधि में आपने सभा के मुखपत्र सार्वदेशिक का सम्पादन किया। आपका निधन १९३६ में हुआ।

ले. का.—हमारा प्राचीन गौरव, भावना, महकते फूल।

पं. आनन्दवर्धन रत्नपारखी, विद्यालंकार

संस्कृत के प्रगल्भ लेखक श्री रत्नपारखी का जन्म आंध्रप्रदेश के बीदर तालुकान्तर्गत हलिखेड नामक ग्राम में २९ दिसम्बर १९१९ को हुआ। आपकी शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी में हुई जहां से आपने १९४१ में विद्यालंकार की उपाधि ग्रहण की। आपने अनेक स्थानों पर अध्यापन कार्य किया तथा विभिन्न समाचारपत्रों में सहकारी सम्पादक के पद पर रहे। कालान्तर में आप राज्य सभा में वरिष्ठ अनुवादक के रूप में नियुक्त हुए और १९७८ में इस कार्य से अवकाश ग्रहण किया। इनका निधन १५ मई १९७४ को गुड़गांव में हुआ।

ले. का.—श्री रत्नपारखी का संस्कृत के अतिरिक्त हिन्दी, मराठी, कन्नड़, तेलुगु, बंगला, अंग्रेजी आदि भाषाओं पर असाधारण अधिकार था। आपने संस्कृत में संवादमाला (१९५९) तथा कुसुमलक्ष्मी (१९६१) शीर्षक दो ग्रन्थ लिखे। संवादमाला नित्य प्रति के जीवन से सम्बन्धित संस्कृत संवादों का संग्रह है जबकि कुसुमलक्ष्मी उपन्यास है। आपने हिन्दी में काव्य रचना भी की थी। विहग (१९५४) रश्मिहास (१९५६) तथा सांध्यरव (१९५६) आपकी हिन्दी काव्य कृतियां हैं।

स्वामी आनन्दवेश

संन्यास पूर्व ब्रह्मचारी बलदेव नैष्ठिक नाम धारण करने वाले स्वामी आनन्दवेश का जन्म ३ फरवरी १९३३ को सोनीपत जिले के कवाली ग्राम में हुआ। गुरुकुल झज्जर में संस्कृत व्याकरण पढ़ने के पश्चात् आपने दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर में अध्ययन किया और सिद्धान्त शिरोमणि की उपाधि ग्रहण की। १२ जून १९७६ में आपने स्वामी वेदानन्द वेद-वागीश से संन्यास की दीक्षा ग्रहण की। १९६४ में आपने मुजफ्फरनगर जिले के शुक्रताल नामक स्थान में गुरुकुल की स्थापना की। आप अनेक वर्षों से संस्कृतिसंदेश नामक मासिक पत्र का सम्पादन भी कर रहे हैं।

ले. का.—ब्रह्मचर्य संदेश, भारतीय संस्कृति तथा यज्ञोपवीत, भारतीय संस्कृति तथा गाय, पंच महायज्ञ संदेश, योग विज्ञान, योग विज्ञान-प्राणायाम, योग-विज्ञान प्रत्याहार, योग विज्ञान-धारणा, सत्संग का जादू, तीर्थ-संदेश, दृष्टान्त संदेश, भजन-संदेश, नारी-संदेश, परमात्मा की खोज, प्रेरक जीवनियां, आर्य सत्यनारायण व्रत कथा, मनोहर पुष्पांजलि, कर्तव्य-संदेश, शांति-संदेश, मृत्यु और श्रद्धांजलि।

व. प.—गुरुकुल महाविद्यालय, शुक्रताल (मुजफ्फर-नगर)।

बाबू आनन्दस्वरूप

आप कानपुर की आर्यसामाजिक गतिविधियों के प्राण रूप थे। डी. ए. वी. कालेज कानपुर की संस्थापना में इनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। वे वर्षों तक आर्य-समाज मेस्टन रोड कानपुर के प्रधान भी रहे। व्यवसाय से आप वकील थे।

ले. का.—१. धर्म महामण्डल की कृष्ण लीला—मूल पुस्तक उर्दू में लिखी गई थी। कैलाशनाथ वाजपेयी ने इसका अनुवाद किया और आर्यसमाज कानपुर ने १९५७ वि. में प्रकाशित किया। कुछ अन्य उर्दू ग्रन्थ-हवन फ्वायद (हवन के लाभ), सुर्मा चश्म, नालये दिल, दीदये वसीरत, दायरे हकीकत, आर्यसमाज और पालिटिक्स।

महात्मा आनन्दस्वामी (खुशहालचन्द खुर्सन्द)

महात्मा आनन्द स्वामी का पूर्व आश्रम का नाम खुशहालचन्द था। इनका जन्म पश्चिमी पंजाब के गुजरात जिले के जलालपुर जट्टां ग्राम में श्री गणेशदास तथा

जीवनदेवी के यहाँ कार्तिक शुक्ला ११ सं. १९४० वि. (१५ अक्टूबर १८८३) को हुआ। ये शीघ्र की आर्यसमाज के सम्पर्क में आ गये और महात्मा हंसराज के सहयोगी बनकर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा में कार्य करने लगे। इन्होंने सभा के मुखपत्र आर्य गजट का सम्पादन किया तथा आर्यसमाज द्वारा संचालित सार्वजनिक हित के कार्यक्रमों और आन्दोलनों में समय-समय पर भाग लिया। हैदराबाद आर्य सत्याग्रह तथा सिंध के सत्यार्थप्रकाश-प्रतिबंध विरोधी आन्दोलन में उनकी प्रमुख भूमिका रही। १९४८ में उन्होंने स्वामी आत्मानन्द सरस्वती से संन्यास धारण किया। तत्पश्चात् वे जीवन पर्यन्त देश विदेश में धर्म प्रचारार्थ निरन्तर भ्रमण करते रहे। २४ अक्टूबर १९७७ को दिल्ली में उनका निधन हुआ।

ले. का.—प्रभु भक्ति : १९९६ वि. (१९३९)। प्रभु दर्शन, तत्त्वज्ञान १९५३। महामंत्र-गायत्री मंत्र की विशद् व्याख्या १९५६।

समय-समय पर विभिन्न स्थानों पर दिए गये उनके उपदेशों एवं प्रवचनों को संकलित कर पुस्तकाकार प्रकाशित किया गया। ऐसे ग्रन्थ हैं—१. आनन्द गायत्री कथा १९५७। २. उपनिषदों का संदेश। ३. एक ही रास्ता १९६२। ४. मानव जीवन गाथा। ५. भगवान् शंकर और दयानन्द सं. २०१४ वि.। (१९६७) ६. सुखी गृहस्थ १९७१। ७. सत्यनारायण व्रत कथा। ८. दो रास्ते। १९७२। ९. यह धन किसका है? १९७१ माँ गायत्री (गुजराती अनुवाद) १९७६। १०. भक्त और भगवान् १९५९। ११. बोध कथाएँ। १२. दुनियां में रहना किस तरह १९७५। १३. मानव और मानवता १४. प्रभु मिलन की राह में १९६८। १५. घोर घने जंगल में १९६३। १६. दो रास्ते १९७२। १७. आनन्द भगवत्कथा—अर्थात् वैदिक सत्यनारायण कथा। १८. जाग ए मानव—१९६६। १९. त्यागमयी देवियाँ। २०. प्यारा ऋषि १९३९। २१. मंदिर प्रवेश (यम नियम विवेचन)। २२. 'जेल की कहानी' शीर्षक संस्मरण ग्रन्थ आपने हैदराबाद सत्याग्रह के समय की कारावास यात्रा के अनुभवों के आधार पर लिखा था। २३. प्रभु मिलन की राह। २४. मन की बात। महात्मा आनन्द स्वामी के निम्न ग्रन्थों का गुजराती में अनुवाद प्रकाशित हो चुका है—

एकज मार्ग (एक ही रास्ता), आनन्द पथ, तत्त्वज्ञान, उपनिषदो नो संदेश, शंकर अने दयानन्द, सुखी गृहस्थ—अनु, दयाल आर्य (१९६९)।

महात्माजी द्वारा लिखित तथा प्रवचनों के रूप में प्रस्तुत उपर्युक्त पुस्तकों में से अनेक ग्रन्थों के उर्दू, मराठी, गुजराती, अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं में अनुवाद भी हुए हैं। महात्माजी की प्रायः सभी पुस्तकें, एक दो को छोड़कर गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली ने प्रकाशित की हैं। उनके ग्रन्थों के अंग्रेजी अनुवादों का विवरण इस प्रकार है—

१. एक ही रास्ता—The Only way.
२. आनन्द गायत्री कथा—Anand Gayatri Discourses.

वि. अ.—महात्मा आनन्द स्वामी का जीवनचरित्र —ले. रणवीर

डॉ. आनन्द सुमन

वैदिक धर्म में दीक्षित होने से पूर्व इनका नाम कुंवर रफत अखलाक था। इनके पिता का नाम डा. कुंवर अखलाक तथा माता का नाम नायाबजहाँ बेगम था। इनका जन्म सम्भल जिला मुरादाबाद में २४ मार्च १९५३ को हुआ। इन्होंने अलीगढ़, दरभंगा तथा दिल्ली में चिकित्सा विषय का अध्ययन किया।

ले. का.—सामाजिक स्वर्ग (वैदिक वर्ण व्यवस्था पर शोध लेख) मैंने इस्लाम क्यों छोड़ा? १९८४, क्रान्ति के स्वर १९८४, वेद और कुरआन—तुलनात्मक अध्ययन १९८५, इस्लाम में नारी। २०४२ वि., हिन्दोस्तां हमारा, सामाजिक स्वर्ग, मैं हिन्दू क्यों बना? सिंह गर्जना, वैदिक सूक्तिसुमन। इन ग्रन्थों का प्रकाशन क्रांति प्रकाशन देहरादून से हुआ।

व. प. ४० बी., सेवक आश्रम मार्ग देहरादून —२४८००१

ब्रह्मचारी आर्य नरेश

नैष्ठिक ब्रह्मचारी आर्यनरेश का जन्म हिमाचल प्रदेश के नाहन नगर में हुआ। आपने सिविल इंजीनियरी की परीक्षा पास की, किन्तु धर्म प्रचार की धुन में १९७२ में राजकीय सेवा से त्यागपत्र दे दिया। तत्पश्चात् आपने गुरुकुल कालवा तथा गुरुकुलसिंहपुरा में रह कर व्याकरण, निरुक्त आदि शास्त्रों का अध्ययन किया। आर्यनरेश विगत अनेक वर्षों से देश में सर्वत्र भ्रमण कर वैदिक धर्म के प्रचार में संलग्न हैं।

ले. का.—योग पथ, ऋषि दयानन्द की यौगिक सिद्धियाँ, चमत्कार, गुप्त इतिहास, अज्ञान की आग, बंदा वैरागी, विश्व गुरु योगेश्वर कृष्ण, गोवा का खूनी इतिहास, बूंद बूंद सागर, मृत्यु के पश्चात्, आरम्भिक वैदिक ज्ञान, नमस्ते ही क्यों ?, गीत गंगा, टंकारा की टंकार, क्या वेद ईश्वर कृत हैं ? राधास्वामीमतप्रकाश, मोही के निर्मोही, (स्वामी स्वतन्त्रतानन्दजी का जीवनचरित), शुद्ध वेदपाठ के नियम, समाज सुधारक आर्य महात्मा बुद्ध, वे युग पुरुष कौन थे ? बंधन कैसे तोड़ें ? कुछ तो विचारो, कुरान तथा वेद का तुलनात्मक अध्ययन। तथाकथित आचार्य रजनीश के खण्डन में लिखे गये ग्रन्थ-वाममार्ग से कामयोग तक, भोग और भगवान्, रजनीश टेस्ट ट्यूब में।

व. प.—४९, ज्ञानसदन, माडलबस्ती, दिल्ली।

महात्मा आर्य भिक्षु

महात्मा आर्य भिक्षु का जन्म ३१ जनवरी १९२३ को मुगलसराय में श्री प्रसादजी के यहाँ हुआ। इनकी शिक्षा हरिश्चन्द्र कॉलेज वाराणसी में हुई। इनका पूर्वाश्रम का नाम श्री रामजीप्रसाद गुप्त था। कालान्तर में इन्होंने वानप्रस्थ की दीक्षा ली और धर्म प्रचार में जुट गये। आप आर्यगजट के सम्पादक रहे हैं। परोपकारिणी सभा के आप सदस्य हैं तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक ट्रस्ट अजमेर के प्रधान पद पर आप कई वर्षों से कार्य कर रहे हैं।

ले. का.—वैदिक धर्म और विश्वशान्ति।

व. प.—आर्यवानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर (हरिद्वार)

महामहोपाध्याय पं. आर्यमुनि

पं. आर्यमुनि का जन्म भूतपूर्व पटियाला राज्य के रूमाणा ग्राम में १८६२ में हुआ था। इनका जन्म का नाम मणिराम था। आर्यसमाज में प्रविष्ट होने के पश्चात् इन्होंने अपना नाम आर्यमुनि रख लिया। काशी में रहकर पं. आर्यमुनि ने संस्कृत भाषा तथा वैदिक वाङ्मय का विशद् अध्ययन किया। पुनः डी. ए. वी. कॉलेज, लाहौर में संस्कृत के वर्षों तक प्रोफेसर रहे। अन्य मतावलम्बियों के साथ होने वाले शास्त्रार्थों में भी पं. आर्यमुनि भाग लेते थे। आर्यसमाज वच्छोवाली (गुरुकुल पार्टी) लाहौर के वार्षिकोत्सव के पश्चात् तीन दिन तक निरन्तर विभिन्न मतावलम्बियों से धार्मिक चर्चा होती थी। इस धर्म सम्वाद में पं. आर्यमुनि ही आर्यसमाज का प्रतिनिधित्व करते थे। लाहौर में ही महात्मा हंसराज की अध्यक्षता में 'वेद में इतिहास' विषय को लेकर आर्यसमाजी विद्वानों का प्रसिद्ध शास्त्रार्थ पं. विश्वबन्धु शास्त्री से हुआ था। इसमें भी प्रमुख प्रवक्ता के रूप में अन्य विद्वानों के साथ पं. आर्यमुनि विद्यमान थे।

पं. आर्यमुनि को इनके अगाध पांडित्य तथा अपार वैदुष्य के कारण तत्कालीन भारत सरकार ने 'महामहोपाध्याय' की उपाधि प्रदान की थी। आर्यसमाज के वे एक मात्र विद्वान् थे, जो उस समय इस उपाधि के योग्य समझे गए। पं. आर्यमुनि ने प्रायः सभी शास्त्र ग्रन्थों पर टीका, भाष्य एवं व्याख्यायें लिखी हैं।

ले. का.—ऋग्वेद भाष्य—स्वामी दयानन्द ऋग्वेद पर पूर्ण भाष्य नहीं कर सके थे। स्वामीजी ने सप्तम मण्डल का भाष्य जिस स्थान पर छोड़ा, वहाँ से आगे नवम मण्डल पर्यन्त भाष्य दयानन्द सरस्वती की शैली में ही आर्यमुनि ने किया। यह भाष्य ६ खंडों में समाप्त हुआ है। प्रथम खंड (भूमिका) १९७४ वि. द्वितीय खंड (सप्तम मण्डल पर्यन्त) १९७५ वि. तृतीय खण्ड—(अष्टम मण्डल पूर्वार्द्ध-१९७९ वि.), चतुर्थखण्ड—(अष्टम मण्डल उत्तरार्द्ध १९८० वि.)। पंचम खण्ड—(नवम मण्डल का पूर्वार्द्ध १९७९ वि.) षष्ठ खण्ड—(नवम मण्डल का उत्तरार्द्ध १९८०)।

इस प्रकार ऋग्वेद के ३ मण्डलों का यह विस्तृत भाष्य ६ वर्षों में पूर्ण हुआ। उपनिषद्भाष्य—पं. आर्यमुनि ने ईश से लेकर बृहदारण्यक पर्यन्त दस उपनिषदों पर भाष्य लिखा। आर्यमुनि का यह भाष्य शंकराचार्य के अद्वैत प्रतिपादक उपनिषद् भाष्य का प्रत्याख्यान करने वाला भाष्य है। प्रायः प्रत्येक उपनिषद् वाक्य के शंकर कृत अर्थों का खण्डन करते हुए उपनिषदों की भेदपरक व्याख्या की गई है।

१. उपनिषदार्य भाष्य भाग-१, (१९६६ वि. १९१०) २. उपनिषदार्य भाष्य—भाग-२ (१९१०) ३. छान्दोग्योपनिषद् भाग—१ (१९१०) ४. बृहदारण्यकोपनिषद् भाष्य (१९८१ वि. १९२४) **दर्शन भाष्य,** १. सांख्यार्य भाष्य, (१९६३ वि. १९१६) २. योगार्य भाष्य, ३. न्यायार्य भाष्य, (१९६५ वि. १९०९) ४. वैशेषिकार्य भाष्य (१९०७) ५. वेदान्तार्य भाष्य, (१९६० वि.) ६. मीमांसार्य भाष्य-दो भाग (६ अध्याय पर्यन्त)· (१९६४ वि.)

दर्शनों का भाष्य लिखते समय भी आर्यमुनि ने अपनी मौलिकता का परिचय दिया है। वे स्वामी दयानन्द के मन्तव्यों का अनुसरण करते हुए सभी दर्शनों में पृथक्-पृथक् विषयों का निरूपण स्वीकार करते हैं तथा उन्हें परस्पर अविरोधी बताते हैं। वेदान्तार्य भाष्य में उन्होंने वैयासिक सूत्रों की भेदपरक व्याख्या करते हुए शंकर कृत भाष्य से अपनी असहमति व्यक्त की है। इसी प्रकार मीमांसा दर्शन में निरूपित यज्ञों को वे अहिंसा युक्त कर्मकाण्ड मानते हैं। उनका इस सम्बन्ध में निम्न दावा है—

मीमांसा के विषय में पशुवध को नहिं काम।
वैदिकमत की ख्याति में यही हमारो काम॥

वाल्मीकि रामायणार्य टीका दो खण्डों में (१९६९ वि. १९१२), महाभारतार्य-टीका-महाभारत का संक्षिप्त संस्करण-मूल व हिन्दी अनुवाद (प्रथम भाग १९७१ वि. द्वितीय भाग १९७२ वि.) गीतायोगप्रदीपार्य भाष्य—(१९०४ १९६१ वि.) मानवार्य भाष्य—(मनुस्मृति की टीका, १९७० वि.)

अन्य ग्रन्थ—षड्दर्शनादर्श—षड्दर्शनों की समन्वयात्मक समीक्षा। वेदान्तत्त्वकौमुदी—वेदान्त दर्शन के मुख्य सिद्धान्त (१९१२) वेदान्त कथा—(१८९९) आर्यमन्तव्यप्रकाश—(प्रथम भाग १९०२ द्वितीय भाग १९०३ में)।

आर्य मन्तव्य दर्पण भाग—१. वैदिक काल का इतिहास—(१९२५), वेद मर्यादा—(१९७४ वि. १९१७)।

नरेन्द्र जीवन चरित्र (भीष्म पितामह की जीवनी १९७६ वि.), दयानन्द महाकाव्य—अर्थात् दयानन्द चरित मानस काव्य—(रामचरितमानस की शैली पर लिखित, १९८१ वि.) पं. आर्यमुनि के अधिकांश ग्रन्थ लाहौर तथा काशी से छपे। इन ग्रन्थों का प्रकाशन पं. देवदत्त शर्मा ने किया था।

पं. आशुराम आर्य

वेदों के उर्दू अनुवादक पं. आशुराम का जन्म १९१३ में मुलतान (पाकिस्तान) जिले के खानपुर नामक ग्राम में हुआ। छात्रावस्था से ही आप आर्यसमाज की गतिविधियों में भाग लेने लगे थे। देश विभाजन के पश्चात् वे प्रथम अम्बाला में रहे और उसके पश्चात् चण्डीगढ़ में बस गये। श्री आर्य ने उर्दू में वेदों के अनुवाद का कार्य आरम्भ किया और इस दिशा में उन्हें पर्याप्त सफलता भी मिली है।

ले. का.—१. यजुर्वेद का उर्दू अनुवाद—(चतुर्थ अध्याय पर्यन्त १९८४) २. ऋग्वेद का उर्दू अनुवाद—(प्रथम मण्डल के १७वें सूक्त पर्यन्त १९८६) ३. सामवेद—पूर्वार्चिक तथा महानाम्नी ऋचा पर्यन्त भाष्य। इसमें उर्दू के साथ हिन्दी में भी मन्त्रों का सरल भावार्थ दिया गया है।

व. प.—१५९४, सैक्टर ७ सी. चण्डीगढ़.

पं. इन्दुपति मुखोपाध्याय

ये बंगला भाषी लेखक थे।
इनके द्वारा निम्न पुस्तकें लिखी गईं—१. जातेर खबर, २. हिन्दू धर्मेर व्याधि ओ चिकित्सा।

इन्दुलाल याजनिक (याज्ञिक)

स्वामी दयानन्द के पट्ट शिष्य, सुप्रसिद्ध संस्कृतज्ञ विद्वान् तथा देश भक्त पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा का प्रामाणिक जीवनचरित लिखने वाले इन्दुलाल याज्ञिक का जन्म १८९२ में हुआ। व्यवसाय से वे वकील थे, किन्तु महात्मा गांधी के आह्वान पर उन्होंने अदालतों का बहिष्कार किया। वे पत्रकार भी रहे। उन्होंने बम्बई समाचार, नवजीवन तथा यंग इण्डिया का सम्पादन किया। कालान्तर में वे समाजवादी आन्दोलन से जुड़े और किसानों के हित में काम करते रहे। उनका अंग्रेजी में लिखा श्यामजी कृष्ण वर्मा का जीवनचरित १९५० में छपा था। **Shyamji Krishna Varma : Life and Times of an Indian Revolutionary** शीर्षक इस जीवनी की भूमिका नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के बड़े भाई श्री शरतचन्द्र बोस ने लिखी थी। यह श्यामजी कृष्ण वर्मा का प्रथम और प्रामाणिक जीवनचरित है।

पं. इन्दु शर्मा भारद्वाज

मेरठ जिले के किरठल ग्राम में इन्दु शर्मा भारद्वाज का जन्म १८८३ में हुआ। ये अच्छे विद्वान् तथा सुलेखक थे। शर्माजी का निधन १९१३ में हुआ।

ले. का.—१. रणवीर अभिमन्यु, १९१२, अंगराज कर्ण। ये दोनों जीवनचरित थे। २. कन्योपनयन संस्कार—(कन्याओं के उपनयन के समर्थन में लिखा गया) १९६५ वि.। इनके द्वारा संकलित एक अन्य पुस्तक 'ख्याल सरोवर' (१९१२) का भी उल्लेख हुआ है। ३. ईश्वर प्रार्थना—१९१७।

मुन्शी इन्द्रजीत

शाहजहांपुर जिले के तिलहर ग्राम के निवासी मुन्शी इन्द्रजीत का जन्म १९२९ वि. में हुआ था। अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल को आर्यसमाज की ओर आकृष्ट करने में आपका महत्त्वपूर्ण हाथ रहा था। बिस्मिल ने अपनी आत्मकथा में इनका उल्लेख किया है। मुन्शीजी शाहजहांपुर के मुंसिफ कार्यालय में पेशकार के पद पर रहे थे।

ले. का.—१. नारी धर्म विचार—चार भाग, २. मांस भक्ष्याभक्ष्य विचार—यह पुस्तक पहले उर्दू में तथा इसके बाद हिन्दी में छपीं। ३. मदिरा पान विचार—हिन्दी तथा उर्दू में प्रकाशित। ४. प्रायश्चित विचार—हिन्दी तथा उर्दू में प्रकाशित।

इन्द्रजीत गिरि

श्री गिरि का जन्म २ जनवरी १९३३ को महाराष्ट्र के लातूर जिले ने मोगरमा ग्राम में श्री लखपतिगिरि के यहाँ हुआ। साधारण हिन्दी और मराठी शिक्षित इन्द्रजीत गिरि ने भजन मण्डली के माध्यम से महाराष्ट्र में धर्मप्रचार का कार्य किया। आपने महाराष्ट्र के सन्त तुकाराम के अभंगों की शैली में मराठी भजन लिखे हैं, जिनके संग्रह 'वैदिक अभंग' और 'वैदिक श्लोक' शीर्षक से प्रकाशित हो चुके हैं।

ब. प. डा. मोगरमा (जिला लातूर-महाराष्ट्र)—४१३५१६.

पं. इन्द्रदत्त

ये अलीगढ़ के निवासी थे।

ले. का.—१. नमस्ते दर्पण, २. विधवा विवाह।

पं. इन्द्रदत्त शर्मा

मिश्रबन्धु विनोद में संख्या ३०४८ पर उल्लिखित पं. इन्द्रदत्त शर्मा मिर्जापुर के निवासी थे।

ले.का.—१. बाइविल समीक्षा—१९००, २. पौराणिकों से प्रश्न—१९०३, ३. वैदिक शिक्षा दर्पण भाग १, १९१६, ४. ईश्वर प्रार्थना—१९१७।

पं. इन्द्रदेव

पीलीभीत जिले के ग्राम जतीपुर निवासी पं. इन्द्रदेव आदर्श गुरुकुल शाही (जिला पीलीभीत) के कुलपति हैं। कई वर्षों से 'आर्यराष्ट्र' नामक पत्र का सम्पादन भी कर रहे हैं। आपने अखिल भारतीय आर्यसभा स्थापित की है।

ले. का.—१. ऋषिदयानन्द की जन्मतिथि, संस्कृति, समज वा समाज १९६५, जादू टोना, २. पाणिनीय शिक्षा

की व्याख्या १९८०, दयानन्द रेखा से अंकित आर्यावर्त १९६३, नामकरण पद्धति, बलिवैश्व, सूर्यसिद्धान्तसारिणी

ब. प.—गुरुकुल शाही (जिला पीलीभीत)

मुन्शी इन्द्रमणि

इस्लाम धर्म के मर्मज्ञ समालोचक तथा प्रारम्भ काल में स्वामी दयानन्द के सहयोगी मुन्शी इन्द्रमणि का जन्म मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश) में १८४५ में हुआ था। इन्होंने अरबी, फारसी तथा उर्दू का अध्ययन किया तथा इस्लाम धर्म के ग्रन्थों का गम्भीर अनुशीलन किया था। स्वामी दयानन्द से इनकी प्रथम भेंट अलीगढ़ में और उसके बाद मुरादाबाद में हुई। जब शाहजहाँपुर जिले के चाँदापुर ग्राम में स्वामी दयानन्द ईसाई पादरियों तथा मुसलमान मौलवियों से धार्मिक विषयों पर शास्त्रार्थ करने के लिए आमंत्रित किये गये तो मुन्शी इन्द्रमणि को भी स्वामीजी के सहयोगी के रूप में बुलाया गया था।

मुसलमानी मत के कुछ कट्टरपन्थी प्रचारकों ने हिन्दू धर्म की निंदा में जो पुस्तकें समय-समय पर लिखीं, उनका तत्परतापूर्वक उत्तर देने के कारण तत्कालीन हिन्दूसमाज में मुन्शी इन्द्रमणि को विशेष प्रतिष्ठा मिली थी। ओबेदुल्ला नामक किसी व्यक्ति ने १२७४ हिजरी में 'तुहफतुल हिन्द' पुस्तक लिखी। इसके उत्तर में मुन्शीजी ने उसी वर्ष में 'तुहफ़ुतल इस्लाम' नामक पुस्तक लिखी। मौलवी सैयद महमूदहुसैन ने मुन्शीजी की उपर्युक्त पुस्तक के खण्डन में 'खिलअत अल् हुनूद' शीर्षक पुस्तक फारसी में लिखी जो १२८१ हिजरी (१९१२ वि.) में प्रकाशित हुई। उसका प्रत्युत्तर मुन्शी इन्द्रमणि ने 'पादाशे इस्लाम' लिखकर दिया जो १९२५ वि. में प्रकाशित हुई। बरेली के एक अज्ञातनामा लेखक की पुस्तक 'मसनवी असूले दीन हिन्दू' का उत्तर मुन्शीजी ने 'असूले दीने अहमद' लिखकर दिया जो १८६९ में प्रकाशित हुई। १८७३ में एक अन्य आपत्तिजनक पुस्तक 'तेगेफकीर बर गर्दने शरीर' प्रकाशित हुई। मुरादाबाद के दो लेखकों—मौलवी अहमददीन तथा मौलवी कुतुब आलम ने क्रमशः 'एजाज़े मुहम्मदी' तथा 'हदिया उल अस्नाम' लिखी। इन पुस्तकों के उत्तर में मुन्शी इन्द्रमणि ने 'हमलए हिन्द, 'समसामे हिन्द' (प्रथम प्रकाशन काल १९२२ वि. १८६५) तथा सौलते हिन्द (प्रकाशन १८६८) लिखी। इनके प्रथम दो संस्करण क्रमशः मेरठ तथा बरेली से छपे थे, जबकि तीसरा संस्करण १८८० में मुरादाबाद से प्रकाशित हुआ। इन पुस्तकों को आपत्तिजनक मानकर सरकार ने जब मुन्शीजी के खिलाफ मुकद्दमा चलाया तो मुन्शीजी ने इस परिस्थिति से स्वामी दयानन्द को अवगत कराया। स्वामीजी ने इन्द्रमणि पर दायर किये गये अभियोग को एक सामाजिक चुनौती के रूप में लिया तथा मुकद्दमा लड़ने के लिये धन एकत्र करने हेतु देश की विभिन्न आर्यसमाजों से अपील की।

स्वामीजी की अपील पर इन्द्रमणि के मुकद्दमे की सहायता के लिये विभिन्न आर्यसमाजों से पर्याप्त राशि एकत्रित हुई। जब मुन्शी इन्द्रमणि ने यह चाहा कि इस प्रकार एकत्रित हुआ सारा धन उन्हें ही सौंप दिया जाय, तो स्वामीजी ने इससे असहमति प्रकट की। इसी बात को लेकर स्वामी दयानन्द तथा मुन्शीजी में मतभेद हुआ आगे। चलकर जब मुन्शीजी ने इस विवाद को सार्वजनिक रूप देकर स्वामीजी पर मिथ्या आरोप लगाने चाहे तो स्वामीजी ने भी स्पष्टीकरण रूप में अपने मन्तव्य को पत्रों में प्रकाशित कराया। अन्ततः मुन्शी इन्द्रमणि को आर्यसमाज मुरादाबाद के प्रधान पद से मुक्त कर दिया गया। सैद्धान्तिक दृष्टि से भी मुन्शी इन्द्रमणि प्रायः स्वामी से अपना मतभेद प्रकट करते रहते थे। इसलिये भी उनका आर्यसमाज में रहना कठिन हो गया। इनका निधन १९२१ में हुआ।

ले. का.—आर्यतत्त्वप्रकाश-भाग २, अनन्ततत्वप्रकाश वेदद्वार प्रकाश, आर्य प्रश्नोत्तरी, इन्द्र वज्र (१९०१), वेद समीक्षा, कुरान समीक्षा, बाइबिल समीक्षा (१८८० से १९०७ के बीच प्रकाशित) मिशकात (इस्लाम की आलोचना)

कालान्तर में मुन्शीजी ने मुरादाबाद में तन्त्र प्रभाकर प्रेस की स्थापना की तथा स्वयं एवं अपने शिष्य जगन्नाथदास की पुस्तकों को इसी प्रेस से प्रकाशित किया।

पं. इन्द्रराज

उत्तरप्रदेश के प्रसिद्ध आर्यसमाजी कार्यकर्ता तथा नेता श्री इन्द्रराज का जन्म १० जुलाई १९३० को रावलपिण्डी (पाकिस्तान) में श्री दीवानचन्द के यहाँ हुआ। इनका अध्ययन स्वामी आत्मानन्दजी के द्वारा संचालित गुरुकुल रावल में हुआ। देश विभाजन के पश्चात् ये मेरठ में रहने लगे। आर्यसमाज मेरठ से इनके सार्वजनिक जीवन का आरम्भ हुआ और वर्तमान में वे आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान पद को अलंकृत कर रहे हैं। पंजाब के हिन्दी रक्षा आन्दोलन तथा गोरक्षा आन्दोलन में भी इन्होंने भाग लिया था।

ले. का.—यज्ञ पर्व सुधा, द्विजेन्द्रनाथ स्मृति लेख संग्रह (सम्पादन)।

व. प.—५, मीरा बाई मार्ग, लखनऊ।

ठाकुर इन्द्र वर्मा

शास्त्रार्थ महारथी ठा. अमरसिंह आर्य मुसाफिर के सम्बन्धी (साले) ठाकुर इन्द्र वर्मा अपने समय के प्रसिद्ध भजनोपदेशक थे।

ले. का.—१. शमशीरे शुद्धि—ख्वाजा हसननिजामी लिखित दाइये इस्लाम का उत्तर (१०८ द.)। २. ऋषि जीवन पताका (१०८ द.)

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति

गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्दजी के द्वितीय पुत्र पं इन्द्र का जन्म ७ नवम्बर १८८९ (१९४६ वि.) को जालन्धर में हुआ। उनकी माता का नाम शिवदेवी था। गुरुकुल कांगड़ी के आरम्भ होते ही उनके पिता महात्मा मुन्शीराम ने इन्द्रजी को इसमें प्रविष्ट करा दिया। गंगा किनारे कांगड़ी ग्राम में गुरुकुल को विधिवत् चलाने के पूर्व प्रारम्भिक कक्षाएँ गुरुकुल गुजरांवाला में स्थापित की गई थीं। इन्द्रजी का प्रवेश भी यहीं हुआ। १९१२ में पं. इन्द्र अपने अग्रज हरिश्चन्द्र के साथ गुरुकुल कांगड़ी के प्रथम स्नातक बने और 'वेदालंकार' तथा 'विद्यावाचस्पति' की उपाधियाँ ग्रहण कीं। कुछ काल तक गुरुकुल में ही अध्यापन करने के अनन्तर वे इसी संस्था के मुख्याधिष्ठाता, उपकुलपति तथा कुलपति भी रहे। हिन्दी पत्रकारिता में उनका योगदान ऐतिहासिक रहा और उन्होंने विभिन्न पत्रों का सम्पादन किया। वे देश की स्वतन्त्रता के आन्दोलन में भी भाग लेते रहे तथा अनेक वार कारावास का दण्ड भोगा। देश के स्वतन्त्र होने पर उन्हें राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया गया। २३ अगस्त १९६० को दिल्ली में उनका निधन हो गया। यहाँ उनके आर्यसमाज से सम्बन्धित साहित्य का ही उल्लेख किया जा रहा है।

ले. का.—उपनिषदों की भूमिका, वैदिक ईश्वरवाद (पं. गंगाप्रसाद जज, पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर तथा पं. घासीराम के निबन्धों का सम्पादित संग्रह, १९१६)। आर्यसमाज का इतिहास (स्वामी श्रद्धानन्द की प्रेरणा से लिखित प्रथम खण्ड—१९८१ वि.), आर्यसमाज का इतिहास परिवर्धित दो खण्ड (१९५६–५७), ईशोपनिषद् भाष्य (२०१३ वि.), गुरुकुल शिक्षाप्रणाली के मूल तत्त्व, अध्यात्म रोगों की चिकित्सा, राष्ट्रीयता का मूल मन्त्र (१९१४), महर्षि दयानन्द जीवन चरित (१९४५) विजय पुस्तक भण्डार, गोविन्दराम, हासानन्द तथा सुबोध पाकेट बुक्स में प्रकाशित, मेरे पिता (स्वामी श्रद्धानन्द के संस्मरण १९५७), भारतेतिहास : ३० अध्यायों में संस्कृत का ऐतिहासिक काव्य—१९७०, स्वराज्य संग्राम में आर्यसमाज का भाग।

वि. अ.—पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति—सत्यकाम विद्यालंकार तथा अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार।

व. प.—

स्वामी इष्टानन्द सरस्वती (पं. गदाधरप्रसाद इष्ट)

पं. गदाधरप्रसाद का जन्म माघ १९३९ वि. में हरदोई के निकटवर्ती बावन नामक कस्बे में पं. बांकेलाल के यहाँ हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्तप्रान्त में उपदेशक बनकर आपने धर्म प्रचार किया। जीविका निर्वाह के लिये ये लखनऊ में चिकित्सा का कार्य भी करते रहे। संन्यास धारणकर स्वामी इष्टानन्द कहलाये।

ले. का. सत्यसागर—सत्यार्थप्रकाश का गोस्वामी तुलसी-

दास रचित रामचरितमानस की शैली में पद्यानुवाद। यह ग्रन्थ बहुत लोकप्रिय हुआ और १९९० वि. तक इसके चार संस्करण छपे। संस्कारसागर—संस्कारविधि में वर्णित षोडश संस्कारों का विविध छन्दों और काव्य रूपों में वर्णन (१९३६)।

पं. ईश्वरचन्द्र दर्शनाचार्य

दर्शनों के अद्वितीय विद्वान् पं. ईश्वरचन्द्र पं. मुक्तिराम उपाध्याय (स्वामी आत्मानन्द) के शिष्य थे। अठारह वर्ष की अल्पायु में ही आपने साहित्य, व्याकरण, दर्शन आदि का गहन अध्ययन कर लिया था। काशी के विद्वानों में इनका बड़ा सम्मान था। काशी की विद्वत् परिषद् ने इन्हें 'तर्कार्णव' की उपाधि से विभूषित किया। छोटी अवस्था में ही आप गुरुकुल कांगड़ी में उपाध्याय पद पर नियुक्त हुए। आर्यसमाज में विशेष सम्मान न मिलने और आजीविका का कोई साधन उपलब्ध न होने पर आप विगत अनेक वर्षों से बम्बई में रहते हुए जैन पण्डितों और साधुओं को जैन दर्शन का अध्ययन कराकर स्वजीविकोपार्जन कर रहे थे। २१ अप्रैल १९९० को आपका निधन हो गया।

ले. का.—आपने पूंजीवाद एवं समाजवाद की तार्किक समीक्षा करते हुए 'अर्थ-धर्म-मीमांसा' नामक पुस्तक लिखी जो आर्यसमाज कूचिपूडि़ (आंध्र) द्वारा अम्बादर्शन ग्रन्थमाला ८ के रूप में २०१४ वि. (१९५७) में प्रकाशित हुई।

डा. उजागर पटेल

डा. पटेल का जन्म ५ अप्रैल १९५२ को उडीसा राज्य के सुन्दरगढ़ जिले के ग्राम उजलपुर में हुआ। इन्होंने गणित में एम. ए. करने के पश्चात् इसी विषय में पी-एच. डी. की शोध उपाधि प्राप्त की। सम्प्रति वे गवर्नमेंट कॉलेज सुन्दरगढ़ में गणित के प्रवक्ता पद पर कार्यरत हैं। डॉ. पटेल वैदिक अनुसंधान परिषद् उजलपुर के मंत्री तथा गुरुकुल आश्रम वेदव्यास राऊरकेला के न्यासी सदस्य हैं।

ले. का.—'वैदिक पीयूष' नामक द्विमासिक शोध पत्रिका का दो वर्षों तक सम्पादन करने के अतिरिक्त डॉ. पटेल ने विभिन्न उडिया पत्रों में उच्च कोटि के शोध निबन्ध लिखे हैं। उन्होंने पं. युधिष्ठिर मीमांसक की 'वेदार्थ प्रक्रियाः ऐतिहासिक मीमांसा' शीर्षक पुस्तक का उड़िया में अनुवाद किया है, जो प्रकाशित हो चुका है।

व. प. — डा.—उजलपुर, जिला—सुन्दरगढ़—७७००११ (उड़ीसा)

प्रो. उत्तमचन्द्र शरर

प्रसिद्ध वक्ता, कवि एवं उपदेशक उत्तमचन्द्र शरर का जन्म १५ नवम्बर १९१६ को पश्चिमी पाकिस्तान के मुजफ्फरगढ़ जिले के सीतपुर ग्राम में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में हुई। बाल्यकाल में ही आर्यसमाज के विचारों से परिचय हुआ। आप हैदराबाद के सत्याग्रह में गये तथा १६ मास तक कारावास में रहे। आपने हिन्दी तथा संस्कृत में एम. ए. किया और आर्य कॉलेज पानीपत में १९५८ में हिन्दी के प्राध्यापक बने। १९७८ में डी. ए. वी. कॉलेज करनाल से अवकाश ग्रहण किया। उर्दू में कविता लिखने की ओर शररजी की प्रारम्भ से ही रुचि रही है। इनकी कृतियों के नाम हैं—फूल और कांटे (उर्दू कविता) आर्य का शिकवा (उर्दू व हिन्दी कविताओं का संग्रह) पं. भीमसेन के उत्तर में लिखी उर्दू पुस्तक—कुछ गलतफहमियों का इज़ाला।

व. प.—कलन्दर चौक, पानीपत (हरयाणा)

उत्तममुनि वानप्रस्थी

लातूर (कर्नाटक) के निवासी थे।

ले. का.—१. वैदिक त्रैत सिद्धान्त (मराठी)

उदयभान शास्त्री

श्री उदयभान का जन्म हरयाणा के जीन्द जिले के बेलरखा नामक ग्राम में श्री लक्ष्मीचन्द के यहाँ १५ अप्रैल १९५९ को हुआ। इनका अध्ययन भिवानी तथा कुरुक्षेत्र में हुआ। इन्होंने १९७१ में शास्त्री तथा १९८२ में शिक्षा-शास्त्री की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। १९८४ में संस्कृत में प्रथम श्रेणी में एम. ए. किया। आपने दयानन्द शोधपीठ

पंजाब विश्वविद्यालय से १९९० में 'वेदाध्ययन में आर्यसमाज का योगदान' विषय लेकर पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की है।

व. प.—ग्राम व डा.—बेलरखा (हिसार)

पं. उदयवीर शास्त्री

दर्शनशास्त्र के उद्भट विद्वान् पं. उदयवीर शास्त्री का जन्म पौष शुक्ला १०, सं. १९५१ वि. रविवार, तदनुसार ६ जनवरी १८९५ को बुलन्दशहर जिले के बनैल ग्राम में हुआ।

इनकी प्रारम्भिक शिक्षा स्वग्राम में ही हुई। तत्पश्चात् जुलाई १९०४ में नौ वर्ष की आयु में इन्हें गुरुकुल सिकन्दराबाद में प्रविष्ट कराया गया। पुनः उच्च शिक्षा के लिये अगस्त १९१० में ये गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में प्रविष्ट हुए। पं. उदयवीर ने न्यायतीर्थ तथा सांख्य-योगतीर्थ (१९१५ व १९१६ में) की परीक्षाएँ कलकत्ता से उत्तीर्ण कीं। पुनः पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री, बनारस से वेदान्ताचार्य, गुरुकुल महाविद्यालय से विद्याभास्कर आदि परीक्षायें भी सफलता पूर्वक उत्तीर्ण कीं। आपको गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से ही 'विद्यावाचस्पति' की मानद उपाधि प्रदान की गई है। जगन्नाथपुरी के भूतपूर्व शंकराचार्य श्री भारती कृष्णतीर्थ ने आपके अपार वैदुष्य को देखते हुए आपको 'वेदरत्न' तथा 'शास्त्र शेवधि' की उपाधियों से विभूषित किया।

नियमित अध्ययन को समाप्त करने के पश्चात् आपने गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, नेशनल कॉलेज लाहौर, दयानन्द ब्राह्मविद्यालय लाहौर तथा शार्दूल संस्कृत विद्यापीठ बीकानेर जैसी संस्थाओं में अध्यापन कार्य भी किया। शास्त्रीजी ने अपना सम्पूर्ण जीवन शास्त्रालोचन तथा उच्च कोटि के दार्शनिक ग्रन्थों के प्रणयन में व्यतीत किया है। दर्शनों पर उनका अधिकार है तथा वे सांख्यदर्शन के विशेषज्ञ विद्वान् माने जाते हैं।

ले. का.—कौटलीय अर्थशास्त्र (हिन्दी रूपान्तर) तीन खण्डों में (१९२५), नय-चन्द्रिका—कौटलीय अर्थशास्त्र पर माधव यज्वा लिखित टीका का सम्पादन। वाग्भटालंकार—संस्कृत हिन्दी व्याख्या—(१९२५)।

शास्त्रीजी के दर्शनशास्त्रों के व्याख्यापरक तथा ऐतिहासिक गवेषणापूर्ण ग्रन्थों का विवरण इस प्रकार है—

सांख्य दर्शन का इतिहास—विरजानन्द वैदिक संस्थान से प्रकाशित प्रथम संस्करण—(२००७ वि., १९५१)। ग्रन्थ की महत्ता इसी बात से अनुमित होती है कि इस पर लेखक को निम्न पुरस्कार प्राप्त हुए—

१२०० रु. सेठ हरजीमल डालमिया पुरस्कार, १२०० रु. हिन्दी साहित्य सम्मेलन से मंगलाप्रसाद पुरस्कार, १२०० रु. उत्तरप्रदेश सरकार का पुरस्कार, १००० रु. बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् का पुरस्कार।

सांख्य सिद्धान्त (२०१९ वि.), सांख्यदर्शन—विद्योदय भाष्य (२०१७ वि.), ब्रह्मसूत्र—विद्योदय भाष्य (२०२३ वि.), वेदान्तदर्शन का इतिहास (२०२७ वि.), वैशेषिकदर्शन—विद्योदय भाष्य (२०१९ वि.), न्यायदर्शन—विद्योदय भाष्य (२०३४ वि.), योगदर्शन—विद्योदय भाष्य।

आर्य समाज सान्ताक्रूज बम्बई ने आपको १९८७ में वेदवेदांग पुरस्कार से सम्मानित किया था।

वि. अ.—ऋतम्भरा (अभिनन्दन ग्रन्थ) १९८६

व. प.—८७ मधुबन कालोनी, नाकामदार, अजमेर

वी. उपेन्द्रराव

श्री उपेन्द्रराव का जन्म ३ जुलाई १९२९ को बैंगलौर में हुआ। इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् वे मध्यप्रदेश के सिंचाई विभाग में नियुक्त हुए। १९८७ में उन्होंने इसी विभाग के अधिशासी अभियन्ता के पद से अवकाश लिया। अपने सेवा काल के दौरान उज्जैन में वे आर्यसमाज के सम्पर्क में आये और पाणिनीय पद्धति से संस्कृत का अध्ययन किया। श्री राव ने दयानन्द लिखित संस्कारविधि का कन्नड़ भाषा में अनुवाद किया है। यह १९८९ में प्रकाशित हुआ। इसी प्रकार सत्यार्थप्रकाश के कन्नड़ अनुवाद के परिष्कार का कार्य भी उन्होंने गत वर्ष पूरा किया। यह परिष्कृत कन्नड़ संस्करण आर्यसमाज

विश्वेश्वरपुरम्, बेंगलोर द्वारा १९९० में प्रकाशित हुआ है।

व. प.—ई ६/१५८, प्राइवेट सैक्टर, एरिया कालोनी, भोपाल।

पं. उमरावसिंह

थाम्पसन इंजीनियरिंग कॉलेज रुड़की के अध्यापक पं. उमरावसिंह स्वामी दयानन्द के समकालीन थे। उन्हीं के आमंत्रण पर स्वामीजी १८७८ में रुड़की आये थे। स्वामी दयानन्द के जीवनचरित में पं. उमरावसिंह का उल्लेख प्रासंगिक स्थलों पर मिलता है। जब आर्यसमाज और थियोसोफिकल सोसाइटी में पारस्परिक मतभेद हुए और सोसाइटी के मुख पत्र The Theosophist ने जुलाई १८८२ के अंक में एक अतिरिक्त परिशिष्ट निकालकर आर्यसमाज की आलोचना की, तो पं. उमरावसिंह ने Reply to Extra Supplement to the Theosophist for July 1882 नामक एक पुस्तक लिखकर उसका उत्तर दिया। यह पुस्तक १८८२ में लाहौर से छपी थी।

पं. उमेशकुमार शास्त्री

पं. उमेशकुमार शास्त्री का जन्म ९ मार्च १९६२ को बिहार के औरंगाबाद जिले के एक ग्राम तेयाप गोह में हुआ। आपने दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार से विद्यानिधि की उपाधि ग्रहण की। तत्पश्चात् हिन्दी एवं संस्कृत में एम. ए. की परीक्षाएँ भी उत्तीर्ण कीं। सम्प्रति ये आर्यसमाज सैक्टर ७ चण्डीगढ़ में पुरोहित के पद पर कार्यरत हैं।

आपने 'याजुष मंत्रों में आध्यात्मिक भावना : एक आलोचनात्मक अनुशीलन' विषय लेकर दयानन्द शोध पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय से १९९० में पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की है।

व. प.—आर्यसमाज सैक्टर ७, चण्डीगढ़।

राजाधिराज उम्मेदसिंह श्रेयार्थी

ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त शाहपुराधीश राजा नाहरसिंह के बड़े पुत्र युवराज उम्मेदसिंह थे। इनका यज्ञोपवीत संस्कार स्वामी नित्यानन्द एवं स्वामी विश्वेवरानन्द ने कराया था। जब ये युवराज ही थे, २७ दिसम्बर १९०६ को इन्हें परोपकारिणी सभा का सभासद मनोनीत किया गया। अपने पिता की ही भांति उम्मेदसिंह भी स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों के प्रति अनन्य निष्ठा रखते थे। १९३३ में अजमेर में आयोजित दयानन्द निर्वाण अर्धशताब्दी समारोह की अध्यक्षता इन्होंने ही की। पर्याप्त आयु हो जाने पर आपने अपना राजकार्य और शासन सत्ता अपने पुत्र श्री सुदर्शनदेव को सौंप दी और विधिवत् वानप्रस्थ की दीक्षा ले ली। १९५४ में आपका निधन हुआ। आपने 'बलिवैश्वदेव पर विचार' शीर्षक एक पुस्तक लिखी है जो वेदप्रचार कोश शाहपुरा से प्रकाशित हुई थी।

प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

कलकत्ता के प्रसिद्ध आर्य विद्वान् पं. उमाकान्त उपाध्याय का जन्म कार्तिक शुक्ला १४ सं. १९८४ वि. (१९२७) को उत्तरप्रदेश के सुलतानपुर जिले के भौआरा ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम पं. नागेश्वर उपाध्याय था। उपाध्यायजी की प्रारम्भिक शिक्षा गाँव में ही हुई जहाँ से आपने मिडिल की परीक्षा पास की। कलकत्ता में आपने संस्कृत का अध्ययन किया। अर्थशास्त्र में आप एम. ए. हैं तथा विगत अनेक वर्षों से जयपुरिया कालेज कलकत्ता में अर्थशास्त्र का अध्यापन कर रहे हैं। आप आर्यसमाज कलकत्ता के आचार्य भी हैं।

ले. का.—१. श्रावणी उपाकर्म, २. भगवान् श्री कृष्ण, ३. मूर्तिपूजा समीक्षा, ४. अर्थ शौच, ५. आर्यसमाज से परिचय, ६. कम्युनिस्टों के मोर्चे पर स्वामी दयानन्द, ७. वेदों में गोरक्षा या गोवध, ८. श्राद्ध तर्पण, ९. कर्मकाण्ड—१९७६, १०. हंसामत की मिथ्यावाणी, ११. वेद में नारी, १२. 'काशी की पाण्डित्य परम्परा' में काशी शास्त्रार्थ : एक समीक्षा (१९८३) उपर्युक्त सभी ग्रन्थ आर्यसमाज कलकत्ता ने प्रकाशित किये।

प्रो. उपाध्याय आर्यसमाज कलकत्ता के मासिक मुख पत्र 'आर्यसंसार' के सम्पादक पद का निर्वाह अनेक वर्षों से

कर रहे हैं। आपका लिखा आर्यसमाज कलकत्ता का इतिहास (१९८५) अपने विषय का प्रामाणिक ग्रन्थ है।

व. प.—एफ-३०, ईशावास्यम्, कालिन्दी, कलकत्ता-८९

ब्रह्मचारी उषर्बुध

ब्रह्मचारी उषर्बुध ने अल्पवयस में ही वेदों के अर्थों को हृदयंगम करने में विचित्र सूझ का परिचय दिया था। उन दिनों इनका कार्यक्षेत्र दिल्ली था। कालान्तर में ये अमेरिका चले गये। इन्होंने यूरोप तथा अन्य पश्चिमी महाद्वीपों का भ्रमण किया है और अब अमेरिका में रहकर भारतीय साहित्य तथा संस्कृति के प्रचार में संलग्न हैं।

ले. का.—१. सुपथ दर्शन, २. रुद्र देवता, ३. वैदिक धर्म की अनादिता—२००८ वि. (१९५१)।

मुन्शी उल्फतराय

उर्दू लेखक मुंशी उल्फतराय ने 'महर्षि दयानंद : संसार की नजरों में' शीर्षक ग्रन्थ लिखा। इसमें विश्व के महापुरुषों की महर्षि विषयक सम्मतियों एवं श्रद्धांजलियों का संग्रह है।

कविवर ऊमरदान

स्वामी दयानन्द के समकालीन तथा उनके भक्त कविवर ऊमरदान का जन्म जोधपुर जिले के ढाढरवाड़ा ग्राम में वैशाख शुक्ला २, सं. १९०८ वि. शनिवार को चारण बखशीराम के यहाँ हुआ। प्रारम्भ में ये रामस्नेही सम्प्रदाय के सम्पर्क में आये किन्तु इस मत के साधुओं के दुराचार से खिन्न होकर इससे पृथक् हो गये। स्वामी दयानन्द को जोधपुर आमंत्रित कराने वालों में ऊमरदान की प्रमुख भूमिका थी। वे स्वामी दयानन्द के जोधपुर प्रवास में उनके निकट सम्पर्क में आये और आर्यसमाज के सभासद बन गये। ५१ वर्ष की आयु में ११ मार्च १९०३ (फाल्गुन शुक्ला १३ सं. १९६० वि.) को जोधपुर में उनका स्वर्गवास हो गया। उनके समस्त काव्य का संग्रह 'ऊमर काव्य' के नाम से प्रथम बार १९६३ वि. में, द्वितीय बार आर्यसमाज जोधपुर द्वारा १९६९ वि. में तथा तृतीय बार जगदीशसिंह गहलोत द्वारा सम्पादित होकर १९८७ वि. (१९३०) में प्रकाशित हुआ। इस काव्य में दयानन्द री दया, दयानन्द दर्शन आदि स्फुट कविताओं में कवि ने अपनी मातृभाषा डिंगल में स्वामी दयानन्द का प्रशस्तिगान किया है। इसके अतिरिक्त इनकी कविता में नशा निंदा, सन्तों और असन्तों का वर्णन, ईश्वरोपासना आदि अन्य विषय भी वर्णित हुए हैं।

डा. ऊषा ज्योतिष्मती

डा. ऊषा ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से रसायन-शास्त्र में एम. एस सी. तथा डी. फिल. की उपाधियां ग्रहण की हैं। आप स्वामी (डा.) सत्यप्रकाश की शिष्या रही हैं।

ले. का.—पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय—व्यक्तित्व और कृतित्व १९८१, महर्षि दयानन्द—जीवनवृत्त और कृतित्व, १९८३।

व. प.—डा. रत्नकुमारी स्वाध्याय संस्थान, विज्ञान-परिषद् परिसर, महर्षि दयानन्द मार्ग, इलाहाबाद-२।

दीनबंधु एण्ड्रूज, चार्ल्स फ्रेयर

भारत भक्त एण्ड्रूज का जन्म १२ फरवरी १८७१ को इंग्लैण्ड के एक नगर कार्लाइल के एक मिश्नरी परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम एडविन एण्ड्रूज था। अपना अध्ययन समाप्त कर वे एक ईसाई प्रचारक के रूप में भारत आये। दिल्ली के सेंट स्टीफैन्स कालेज में वे प्राचार्य भी रहे। कालान्तर में भारत की पराधीनता और इस देश की दुरवस्था ने उन्हें भारतवासियों के प्रति संवेनदशील बनाया। महात्मा गाँधी, गोपाल कृष्ण गोखले, कवि गुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर तथा महात्मा मुंशीराम से दीनबंधु एण्ड्रूज के सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध थे। उन्होंने भारतीय नवजागरण पर महत्त्वपूर्ण जानकारीयुक्त ग्रन्थ 'रेनासां इन इण्डिया' शीर्षक लिखा है। इसमें स्वामी दयानन्द एवं आर्यसमाज का सैद्धान्तिक विश्लेषण करते हुए उपयोगी सामग्री दी गई है। दयानन्द जन्मशताब्दी के अवसर पर एण्ड्रूज ने जो पुस्तक लिखी उसका हिन्दी अनुवाद

'दयानन्द जन्म शताब्दी का महत्त्व : श्री एण्ड्रूज की दृष्टि में' शीर्षक से छपा था।

एल्बर्स, ए. क्रिस्टीना

यह एक जर्मन महिला थीं। १९३९ में कलकत्ता के प्रसिद्ध आर्य विद्वान् पं. अयोध्याप्रसाद ने इनसे स्वामी दयानन्द की प्रशंसा में एक अंग्रेजी कविता लिखने का आग्रह किया। उनके अनुरोध को स्वीकार कर एल्बर्स ने 'Swami Dayanand : The Spirit Hero' शीर्षक एक लम्बी कविता लिखी जो जागृति प्रिंटिंग वर्क्स सलकिया, कलकत्ता से प्रकाशित हुई। दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर यही पुस्तक डा. सत्यप्रकाश द्वारा रत्नकुमारी स्वाध्याय संस्थान इलाहाबाद से १९८३ में पुनः प्रकाशित हुई।

ओमन, जॉन कैम्पबेल

जे. सी. ओमन गवर्नमेंट कालेज लाहौर में भौतिकी के प्रोफेसर थे। जब वे लम्बी छुट्टी पर गये, तब उनके स्थान पर कुछ दिनों तक पं. गुरुदत्त ने उक्त कालेज में पढाया था। ओमन ने अपने दो ग्रन्थों में स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज का विस्तार पूर्वक उल्लेख किया तथा उनके सिद्धान्तों एवं कार्यों की विवेचना की है। ये ग्रन्थ हैं—The Mystics, Ascetics and Saints of India (लंदन 1903) तथा Cults, Customs and Superstitions of India (1908)। इस ग्रन्थ का सातवां अध्याय The Arya Samaj and its Founder शीर्षक पर्याप्त लम्बा है।

पं. ओमप्रकाश आर्य

श्री आर्य का जन्म २४ फाल्गुन १९७५ वि. (१ मार्च १९१९) को पाकिस्तान के सरगोधा जिले के भेरा नगर में श्री हरवंशलाल के यहाँ हुआ। इनकी शिक्षा राजकीय हाई स्कूल भेरा में दशम कक्षा तक हुई। १९३६ में वे रावलपिण्डी आये और स्वामी आत्मानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित गुरुकुल के कार्यालय मंत्री का कार्य संभाला। इस अवधि में उन्हें आर्यसमाज के अनेक मूर्धन्य विद्वानों के सम्पर्क में आने का अवसर मिला। देश विभाजन के पश्चात् वे १ दिसम्बर १९४७ को अमृतसर आये। कई वर्षों तक श्री आर्य ने आर्य प्रादेशिक सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यालय अधीक्षक पद पर कार्य किया। सम्प्रति वे स्वतन्त्र रूप से धर्म प्रचार में संलग्न हैं।

ले. का.—देशभक्त भाई परमानन्द, राष्ट्रपुरुष स्वामी श्रद्धानन्द, मुनिवर पं. गुरुदत्त, भारत की हरिजन समस्या और आर्यसमाज का दृष्टिकोण, पुराणों की दृष्टि में हरिजन समस्या। एकेश्वरवाद, देवयज्ञ प्रदीप (संकलन एवं सम्पादन), अमृतमंथन, बोधप्रसाद, राष्ट्रवंदना। मौलिक लेखक होने के अतिरिक्त श्री आर्य ने आर्यसमाज के विगत काल के महान् साहित्यकारों के उपयोगी ग्रन्थों को पुनः प्रकाशित भी किया। पं, गुरुदत्त, पं. चमूपति, स्वामी अनुभवानन्द, स्वामी सत्यानन्द, पं. लोकनाथ, स्वामी धर्मानन्द तथा विज्ञानमार्तण्ड वात्स्यायन आदि की अनेक कृतियों को एक बार पुनः पाठकों को उपलब्ध कराने का श्रेय उन्हें है।

व. प.—१९६, प्रेमनगर, करनाल (हरयाणा)

श्री ओम्प्रकाश त्यागी

आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता तथा आर्यवीर दल के प्रमुख कार्यकर्ता श्री ओम्प्रकाश त्यागी का जन्म बुलन्दशहर जिले के ग्राम तौली में १० दिसम्बर १९१४ को हुआ। आपके पिता श्री रामस्वरूप कृषक थे। श्री त्यागी की शिक्षा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में हुई जहाँ से इन्होंने बी. एस सी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। श्री त्यागी प्रारम्भ से ही आर्यवीर दल के कार्यकर्ता रहे। वे दल के सेनापति व प्रधान संचालक भी रहे। वर्षों तक वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री पद पर रहे तथा १९७७ में संसद् सदस्य चुने गये। उन्होंने अनेक बार धर्म प्रचारार्थ विदेश यात्रायें कीं। १० मई १९८६ को उनका निधन हुआ।

ले. का—आर्यवीर दल शिक्षण सम्बन्धी ग्रन्थ—आर्यवीर दल लेखमाला—१९४६, २. आर्यवीर दल बौद्धिक शिक्षण, ईसाई मत की आलोचना से सम्बन्धित

ग्रन्थ—१. भारत में भयंकर ईसाई षड्यंत्र (२०११ वि.) २. विदेशी आक्रान्ता ईसाई पादरियों से प्रश्न—(२०११ वि.) ३. और पादरी भाग गया, ४. स्वतन्त्रता खतरे में, ५. बाइबिल को चुनौती, ६. ज्ञान-विज्ञान का शत्रु ईसाई मत।

अन्य ग्रन्थ—चमड़े के लिये गोवध (१९५३) पंजाब का हिन्दी आन्दोलन १९५७, वैदिक धर्म का परिचय, धर्म चिन्तन—(१९७०), आस्तिक नास्तिक संवाद (१९७३), संघर्ष ही जीवन, हिन्दू धर्म : विदेशी षड्यंत्र के घेरे में, एक ही मार्ग, (१९७४) आर्यसमाज और अस्पृश्यता निवारण, विदेशी देन : अस्पृश्यता (१९७१), जन्मगत जात-पांत : वेदविरुद्ध, साम्प्रदायिकता और उसका विरोध, मत खण्डन। उनके एक ही मार्ग तथा आस्तिक नास्तिक संवाद का अंग्रेजी अनुवाद The only way तथा Theism and Atheism शीर्षक छपे हैं।

श्री ओम्प्रकाश दास

उड़ीसा के आर्य नेता श्री प्रियव्रतदास के पुत्र श्री ओम्प्रकाश दास का जन्म २६ अक्टूबर १९६३ को हुआ। आर्यसमाज के प्रचार में इनकी विशेष रुचि है। वर्तमान में उड़ीसा की एक मिल में इंजीनियर हैं।

इन्होंने उड़िया भाषा में स्वामी श्रद्धानन्द जीवनी, सुरापानर विभीषिका तथा धूम्रपानरु दुर्गति आदि ग्रन्थ लिखे हैं।

व. प.—१३९, शहीद नगर, भुवनेश्वर (उड़ीसा)

प्रो. ओम्प्रकाश ब्रह्मचारी

श्री ब्रह्मचारी का जन्म २४ दिसम्बर १९४३ को बिहार के सीतामढी जिले के बैरगनियां कस्बे में हुआ। इनकी शिक्षा अर्थशास्त्र तथा संस्कृत में एम. ए. तक हुई है। विगत कई वर्षों से ये डा. राममनोहर लोहिया स्मारक महाविद्यालय मुजफ्फरपुर में अर्थशास्त्र विभाग के अध्यक्ष हैं। आप उत्तर बिहार आर्य सभा के मन्त्री भी हैं। आपके अनेक शोधपूर्ण निबन्ध आर्यसमाज की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं। विगत अनेक वर्षों से आप मुजफ्फरपुर से 'स्वाध्याय-निर्णय' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन कर रहे हैं। इसके आचार्य रामानन्द शास्त्री स्मृति अंक, सत्यार्थप्रकाश अंक, तथा डा. भवानीलाल भारतीय सम्मान अंक आपकी कुशल सम्पादन कला के प्रमाण हैं। स्वामी दयानन्द के आर्थिक विचार तथा कार्लमार्क्स एवं स्वामी दयानन्द के आर्थिक एवं राजनैतिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन आपकी प्रकाशनाधीन रचनाएँ हैं।

व. प.—५ प्रकाश सरणि, रमना, मुजफ्फरपुर-२।

डा. ओम्प्रकाश [रंगून वाले]

डा. ओम्प्रकाश का जन्म ७ अक्टूबर १९१२ को ब्रह्मदेश के माण्डले नगर में श्री आत्माराम और द्रौपदी देवी के यहाँ हुआ। इन्होंने रंगून के मेडिकल कॉलेज से १९३८ में एम. बी. बी. एस. तथा १९५६ में साहित्यरत्न की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। आपने बर्मा में आर्यसमाज के संगठन और प्रचार तथा हिन्दी के प्रचार-प्रसार का सराहनीय कार्य किया। बर्मी भाषा में सत्यार्थप्रकाश का अनुवाद भी आपकी प्रेरणा से ही हुआ। बर्मा निवास के दिनों में आपने सत्संग गुटका का सम्पादन किया जो उस देश में बहुत लोकप्रिय हुआ। १९७५ में आपने पं. नरदेव वेदालंकार की अंग्रेजी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद 'आर्यसमाज : आदर्श और उपलब्धियाँ' शीर्षक से किया।

व. प.—सी-३४, पंचशील कॉलोनी, नई दिल्ली-१७

ओम्प्रकाश विद्यावाचस्पति

आपका जन्म १९३६ में जयपुर में हुआ। आर्यसमाज के प्रति आपकी रुचि छात्रावस्था से ही रही और आर्यसमाज कृष्णपोल बाजार जयपुर में आपने सक्रिय रूप से भाग लेना आरम्भ किया। आप विगत अनेक वर्षों से आर्यमार्तण्ड पाक्षिक का सम्पादन कर रहे हैं।

ले. का—क्या आर्यसमाज की आवश्यकता नहीं? १९५५, आर्यसमाज जयपुर के सौ वर्ष (आर्यसमाज जयपुर के स्थापना शताब्दी समारोह पर प्रकाशित) १९७९।

व. प.—सम्पादक आर्यमार्तण्ड, आर्यसमाज आदर्श-नगर जयपुर।

डा. ओम्प्रकाश वेदालंकार

आपका जन्म १० मार्च १९३३ को अम्बाला नगर में हुआ। इनके पिता पं. शशिभूषण विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक थे। २०१० वि. में ओम्प्रकाश ने गुरुकुल कांगड़ी से वेदालंकार की उपाधि ग्रहण की और स्नातक बने। तदनन्तर हिन्दी और संस्कृत में एम. ए. तथा आगरा विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। १९६१ से वे राजस्थान कॉलेज शिक्षा सेवा में हैं।

ले. का.—१. शान्ति कथा (मृत्यु से अमृत की ओर), १९८१। इस पुस्तक का प्रयोजन स्पष्ट करते हुए लेखक ने लिखा है कि आर्य परिवारों में किसी व्यक्ति की मृत्यु के वाद परिजनों को सान्त्वना देने के लिये यदि इसका पाठ किया जाय तो उत्तम रहेगा। २. धरती पर स्वर्ग—पंचायतन पूजा—शिव, शक्ति, विष्णु, गणेश और सूर्य का वैदिक दृष्टिकोण से विवेचन, १९८७। ३. शिव-रात्रि का पावन संदेश।

व. प.—१७ कृष्णनगर, भरतपुर-३२१००१ (राज.)

डा. ओम्प्रकाश शर्मा

डा. ओम्प्रकाश शर्मा का जन्म ४ अगस्त १९५२ को सोनीपत (हरयाणा) में हुआ। इनकी शिक्षा एम. ए. (हिन्दी) तक हुई। आपने दयानन्द शोधपीठ, पंजाब विश्वविद्यालय से 'हिन्दी के दार्शनिक और धार्मिक साहित्य को आर्यसमाज की देन' विषय लेकर १९८७ में पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की है।

व. प.—राजभाषा अधिकारी, सैण्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, अम्बाला कैंट।

पं. ओम्प्रकाश शास्त्री

शास्त्रार्थ कला निष्णात तथा प्रसिद्ध व्याख्याता पं. ओम्प्रकाश शास्त्री का जन्म १९११ में देवबन्द (जिला सहारनपुर) में महाशय उमरावसिंह के यहाँ हुआ। १९२१ में इन्हें गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर में प्रविष्ट कराया गया। वहाँ से १९३४ में आपने 'विद्या-भास्कर' की उपाधि प्राप्त की तथा शास्त्री परीक्षा भी उत्तीर्ण की। स्वामी शुद्धबोध तीर्थ, पं. भीमसेन शर्मा, पं. पद्मसिंह शर्मा तथा पं. नरदेव शास्त्री जैसे गुरुओं के निकट रहकर आपने व्याकरण, दर्शन, साहित्य तथा वेदादि शास्त्रों का अध्ययन किया। इन्होंने आर्य सिद्धान्तों का विशिष्ट अध्ययन तथा शास्त्रार्थ कला का शिक्षण पं. रामचन्द्र देहलवी से प्राप्त किया।

शास्त्रीजी १९३६ से १९३९ तक आर्यसमाज चावड़ी बाजार, दिल्ली के पुरोहित रहे। स्वामी श्रद्धानन्द ट्रस्ट के प्रतिनिधि रूप में आपने रांची में रहकर वैदिक मिश्नरी का कार्य किया। ये १९५१ से १९६२ तक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के महोपदेशक भी रहे। सम्प्रति स्वतन्त्र रूप से उपदेश कार्य में संलग्न हैं। आपने विपक्षियों से अनेक शास्त्रार्थ भी किये हैं।

ले. का.—१. प्रार्थना प्रबोध—सुखदास्मृति ग्रन्थ-माला-१, १९५७। २. वृक्ष जड़ हैं—सुखदा स्मृति ग्रन्थमाला-२, १९६३। ३. पौराणिक आचार्यों की दृष्टि में साकारवाद, १९७५।

व. प.—खतौली (मुजफ्फरनगर)।

डा. ओम्पाल शास्त्री

२१ अक्टूबर १९५४ को श्री ओम्पाल का जन्म मुरादाबाद जिले के जगुवा खुर्द ग्राम में श्री धर्मसिंह के यहाँ हुआ। आर्यसमाज से इनका सम्पर्क बाल्यकाल में ही हो गया। १९७२ में दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में प्रविष्ट हुए और विद्यावाचस्पति की उपाधि ग्रहण की। लुधियाना में आप आर्यसमाज के पुरोहित के रूप में वर्षों तक कार्यरत रहे और इसी बीच प्रभाकर, विद्याभास्कर तथा एम. ए. (हिन्दी) की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। 'प्रेमचन्दकालीन हिन्दी उपन्यासों पर आर्यसमाज का प्रभाव' शीर्षक शोधप्रबन्ध लिखकर आपने १९८५ में पंजाब विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। कुछ काल तक डी. ए. वी. कॉलेज, चण्डीगढ़ में हिन्दी के प्राध्यापक पद पर कार्यरत

रहे। सम्प्रति इन्द्रभान कॉलेज पानीपत में हिन्दी के प्रवक्ता हैं।

व. प.—आई. बी. कॉलेज, पानीपत (हरयाणा)

स्वामी ओम्प्रेमी चतुर्थाश्रमी [रामनारायण माथुर]

शाजापुर (मध्यप्रदेश) के निवासी श्री स्वामी ओम्प्रेमी का जन्म १९१८ में हुआ। इनके पिता श्री सूर्यप्रसाद (सूर्यानन्द सरस्वती) वैदिक धर्म के प्रति दृढ़ आस्थावान थे। श्री माथुर ने जीविका निर्वाहार्थ वकालत आरम्भ की। साथ ही आर्यसमाज की गतिविधियों में भी भाग लेते रहे। कालान्तर में इन्होंने गृहस्थ का त्याग कर चतुर्थाश्रम को स्वीकार किया। सम्प्रति ये गुरुकुल होशंगाबाद में निवास कर रहे हैं।

ले. का—ऋग्विनय गीतिका (प्रथम प्रकाश)—(आर्याभिविनय के मन्त्रों का पद्यानुवाद, २०१९ वि.) माण्डवी महाशया—भरत की पत्नी माण्डवी को आधार बना कर लिखा गया ३००० पद्यों का महाकाव्य। ओ३म् सुकीर्तन, प्रवैदिक पावन प्रसाद तथा उपनिषदीय सत्य-नारायण तत्त्वकथा।

इनका विशाल पद्य साहित्य अप्रकाशित है।

व. प.—गुरुकुल होशंगाबाद (म. प्र.)।

स्वामी ओम्भक्त (पं. रामसहाय शर्मा)

राजस्थान में आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता और प्रचारक पं. रामसहाय शर्मा का जन्म १९५० वि. (१८९३) में भूतपूर्व जयपुर राज्य के कस्बा रसीदपुर मण्डावर के किसी निकटवर्ती स्थान में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री रामचन्द्र शर्मा तथा माता का नाम जीवणीबाई था। इनके पिता कालान्तर में जीविका निर्वाह हेतु अजमेर आ गये। यहां पर ही आपका सम्पर्क आर्य-समाज से हुआ और सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने लगे। १९१० में इन्होंने अजमेर में आर्य विद्यार्थी सभा स्थापित की और चाँदकरण शारदा तथा उनके अनुज मानकरण शारदा के साथ काम करने लगे। १९११ में इन्होंने डी. ए. वी. शाखा पाठशाला में अध्यापन भी किया। १९१२ में आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् स्वामी दर्शनानन्दजी का जैनमत के प्रसिद्ध आचार्य पं. गोपालदास वरैया से 'क्या ईश्वर सृष्टिकर्ता है?' विषय पर अजमेर में शास्त्रार्थ हुआ। पं. रामसहाय ने उस समय इस शास्त्रार्थ को सफल बनाने में रात दिन एक कर दिया। पं. दुर्गादत्त शास्त्री तथा पं. शम्भुदयाल शास्त्री से जैनमत छुड़वा कर उन्हें आर्यसमाज में प्रविष्ट कराया।

स्वामी दर्शनानन्द तथा स्वामी सत्यानन्द की प्रेरणा से पं. रामसहाय १९१५ में संस्कृत अध्ययनार्थ काशी चले गये। तदनन्तर वे पं. भोजदत्त शर्मा द्वारा संचालित आर्य मुसाफिर विद्यालय आगरा में आ गये। यहाँ उनका परिचय और सान्निध्य महापण्डित राहुल सांकृत्यायन, जो उन दिनों केदारनाथ पाण्डेय के नाम से जाने जाते थे तथा पं. महेशप्रसाद मौलवी से हुआ जो उन दिनों मुसाफिर विद्यालय में ही पढ़ते थे। पं. रामसहाय पुनः अजमेर आये और डी. ए. वी. हाई स्कूल में संस्कृत तथा धर्मशिक्षा पढ़ाने लगे। नवम्बर १९१८ में उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान में उपदेशक का कार्य आरम्भ किया और मृत्यु पर्यन्त समस्त राजस्थान तथा मालवा प्रदेश में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ भ्रमण करते रहे। १९२३ में जब सभा का मुखपत्र साप्ताहिक आर्यमार्तण्ड प्रकाशित होने लगा तो आप ही उसके सम्पादक बने। कुछ समय के व्यवधान के अतिरिक्त आप इस पत्र का सम्पादन १९७० तक करते रहे। आपका निधन ३० जनवरी १९७४ को जोधपुर में हुआ। कालान्तर में आपने क्रमशः वानप्रस्थ और संन्यास की दीक्षा ले ली थी तथा स्वामी ओम्भक्त परिव्राजक के नाम से जाने जाते थे।

ले. का.—"पाप मोचनी कथा—(महाराज के मान-हानि के मुकद्दमे का वृत्तान्त), बम्बई के वल्लभाचार्य मत के आचार्य द्वारा चलाये गये मानहानि के अभियोग का विवरण। राधा का रहस्य (२०१४ वि.), महावीर हनुमान बंदर थे या मनुष्य (२०१२ वि.) भारत कीर्ति—(२०१९) वि. निष्कलंक कृष्ण (२०२६ वि.) पं. रामसहाय शर्मा के सभी ग्रन्थ उनके पुत्र श्री देवप्रकाश आर्य जोधपुर ने प्रकाशित किये थे।

डा० ओम्शरण 'विजय'

डा० विजय का जन्म १५ जुलाई १९३२ को श्री घीसालाल के यहाँ जयपुर में हुआ। एम. ए. (हिन्दी) तथा एल. एल. बी. तक इन्होंने अध्ययन किया। राजस्थान सचिवालय में उच्च पदों पर कार्य करने के पश्चात् इन्होंने राज्य सेवा में अवकाश ले लिया। आपने 'स्वामी दयानन्द के चरितमूलक हिन्दी प्रबन्ध काव्य, शीर्षक विषय पर राजस्थान विश्वविद्यालय से १९८७ में पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। इनका ईशोपनिषद् का हिन्दी काव्यानुवाद 'दिव्य जीवन' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है।

व. प.—३९०, विजय सदन, हनुमानजी का रास्ता, जयपुर।

स्वामी ओमानन्द तीर्थ

सांख्य एवं योगदर्शन के अनन्य विद्वान् तथा अनुभवी साधक स्वामी ओमानन्द तीर्थ ने एतद्विषयक उत्कृष्ट ग्रन्थों की रचना की है। आपने बहुत काल तक गांधी आश्रम पुष्कर में निवास किया। ये योगी स्वामी सोमतीर्थ के शिष्य थे।

ले. का.—१. पातंजल योग प्रदीप—योगदर्शन की प्रामाणिक एवं विशद् टीका—(१९४२), २. षड्दर्शन समन्वय—(१९५१), ३. सांख्य योग सार—कपिल कृत सांख्य तत्त्वसमास तथा योगदर्शन के सूत्रों का सुबोध अर्थ। (२००७ वि.), ४. पातंजल योग और श्री अरविंद की योग पद्धति।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती (आचार्य भगवानदेव)

स्वामी ओमानन्द सरस्वती (पूर्व नामआचार्य भगवानदेव) का जन्म चैत्र शुक्ला ८ सं. १९६७ वि. (९ जून १९११) को दिल्ली के निकटवर्ती नरेला ग्राम के एक धनाड्य जमींदार चौधरी कनकसिंह के यहाँ हुआ। इनकी माता का नाम नान्ही देवी था। इनका बचपन का नाम भगवानसिंह था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा नरेला के हाई स्कूल में हुई। इसके पश्चात् ये दिल्ली के सेंट स्टीफेंस कालेज में अध्ययनार्थ प्रविष्ट हुए। वहाँ से इन्होंने एफ. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् राष्ट्रीय आन्दोलन में कूद पड़ने के कारण इन्होंने आगे पढ़ने का विचार त्याग दिया।

शीघ्र ही श्री भगवानसिंह कांग्रेस तथा आर्यसमाज की गतिविधियों में भाग लेने लगे। कालान्तर में इन्होंने दयानन्द वेद विद्यालय निगमबोध घाट दिल्ली में रहकर संस्कृत व्याकरण का अध्ययन किया। कुछ काल तक गुरुकुल चित्तौडगढ़ में शास्त्राध्ययन करते रहे। १९४२ में इन्होंने गुरुकुल झज्जर का आचार्य पद स्वीकार किया और इस शिक्षण संस्थान को उत्तरोत्तर उन्नत बनाते रहे। इन्हीं के परिश्रम का परिणाम था कि गुरुकुल झज्जर एक आदर्श शिक्षणालय ही नहीं, अपितु आर्ष विद्या के आदर्श प्रतिष्ठान के रूप में विकसित हो सका। १९७० में आचार्य भगवानदेव ने संन्यास ग्रहण कर स्वामी ओमानन्द का नाम धारण किया। परोपकारिणी सभा ने इन्हें अपना प्रधान निर्वाचित किया। स्वामी ओमानन्द ने यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका, पूर्वी ऐशिया के अनेक देशों का भ्रमण किया है। प्राचीन इतिहास और पुरातत्त्व में उनकी गहरी रुचि है।

ले. का—स्वामी ओमानन्द के लेखन का प्रमुख क्षेत्र इतिहास, पुरातत्त्व तथा प्राचीन सिक्कों, मुद्राओं आदि पर गवेषणापूर्ण ग्रन्थ रचना रहा है। उनके अन्य ग्रन्थ हैं—आर्यसमाज के बलिदान (२०३५ वि.) स्वप्नदोष और उसकी चिकित्सा, व्यायाम का महत्त्व, नेत्र रक्षा, भोजन आदि। यात्रा ग्रन्थ—विदेश यात्रा (इंग्लैण्ड) (२०३८ वि.) नैरोबी यात्रा (२०३५ वि.) जापान यात्रा (२०४० वि.) कालापानी यात्रा।

वि. अ.—ओमानन्द सरस्वती अभिनन्दन ग्रन्थ, गुरुकुल झज्जर द्वारा २०४० वि. में प्रकाशित।

व. प.—गुरुकुल झज्जर (रोहतक)

पं. ओंकारनाथ वाजपेयी

वाजपेयीजी का जन्म आगरा जिले के ग्राम महुआ में १८८१ में हुआ। प्रयाग विश्वविद्यालय से मैट्रिक करने के पश्चात् आपने इलाहाबाद में ओंकार प्रेस तथा ओंकार बुक डिपो की स्थापना की। इस प्रकाशन संस्थान से

ओंकार आदर्श माला का आरम्भ हुआ जिसके अन्तर्गत अनेक महापुरुषों के जीवनचरित छपे। जब आप इलाहाबाद की आर्यकुमार सभा के सक्रिय कार्यकर्ता थे, उस समय हिन्दी के विख्यात कवि डा. हरिवंशराय बच्चन भी कुमार सभा में नियमित रूप से जाते थे। उन्हें आर्यसमाज की प्रेरणा वाजपेयीजी से ही मिली थी। आपने महिलोपयोगी साहित्य भी पर्याप्त मात्रा में लिखा और नारी शिक्षण के लिये 'कन्या मनोरंजन' नामक मासिक पत्र भी निकाला। आपका निधन २८ जुलाई १९१८ को हुआ।

ले. का.—आदर्श कन्या पाठशाला, कन्या दिनचर्या, कन्या सदाचार, दो कन्याओं की बातचीत, शान्ता (उपन्यास)—इसमें आर्यसमाजी पात्रों के आधार पर ही कथानक कल्पित किया गया है।

पं. ओंकार मिश्र 'प्रणव'

प्रणवजी का जन्म ८ अगस्त १९१९ को अलीगढ़ जिले के अवीगढ़ ग्राम में पं. प्यारेलाल मिश्र के यहाँ हुआ। आपकी शिक्षा आचार्य तथा संस्कृत में एम. ए. की हुई। देश विभाजन के पूर्व तक ये गुरुकुल जेहलम में पढाते रहे। तत्पश्चात् डी. ए. वी. कालेज फीरोजाबाद में संस्कृत के प्रवक्ता रहे और १९८० में यहाँ से उपाचार्य के पद से निवृत्त हुए। आप सफल कवि तथा लेखक हैं।

ले. का.—बोस बावनी (१९४६), अमर-ज्योति, धारणा, ज्वाला, बहादुर-बावनी, विजय-बावनी, मधुमती, पुरुष सूक्त का हरिगीतिका छन्द में भावानुवाद, सुमंगली, अमरदीप तथा गृहस्थ गौरव—सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थ समुल्लास पर आधारित गद्य कृति (१९८२)। प्रणवजी को हिन्दी के घनाक्षरी छंद लिखने में विशेष निपुणता प्राप्त है। बोस बावनी, बहादुर बावनी तथा विजय बावनी क्रमशः नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, लालबहादुर शास्त्री तथा बंगलादेश की स्वतंत्रता के प्रसंग को लेकर लिखे गये हैं।

व. प.—शास्त्री सदन, रामनगर (कटरा) आगरा-६.

अनिलकुमार आर्य

श्री आर्य का जन्म १४ नवम्बर १९५८ को दिल्ली में हुआ। आपकी शिक्षा एम. ए. (समाजशास्त्र) तक हुई है। आपने केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की स्थापना की तथा युवा उद्घोष नामक पाक्षिक पत्र निकाला, जिसका आप स्वयं सम्पादन करते हैं।

ले. का.—आर्य युवक उद्घोष, पं. गुरुदत्त, महर्षि दयानन्द की विशेषतायें।

व. प.—आर्यसमाज कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-११०००७.

पं. कुंजबिहारीलाल

कवि कुंजबिहारीलाल कानपुर जिले के दुरौली ग्राम के निवासी थे। ये इसी जिले के ग्राम विरहर की पाठशाला में द्वितीय अध्यापक के पद पर रहे। इन्होंने सत्यार्थप्रकाश पर आधारित 'सत्यभास्कर' नामक पद्यात्मक कृति की रचना की, जो १९४४ वि. में प्रकाशित हुई।

मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी

अपने युग में अत्यन्त क्रान्तिकारी विचार रखने वाले कन्हैयालाल अलखधारी का जन्म १८०९ में आगरा में हुआ। इनके पिता का नाम दीवान धर्मदास था। इनकी शिक्षा कलकत्ता में हुई। कुछ काल तक वे बर्मा में भी रहे। तत्पश्चात् भारत लौटे। मार्च १८७३ में अलखधारी ने लुधियाना में 'नीतिप्रकाश' नामक सभा की स्थापना की और इसी नाम का उर्दू पत्र भी निकाला। सनातनधर्मी विद्वान् पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी इनके प्रमुख प्रतिद्वन्द्वी थे जो प्रायः इनके प्रगतिशील विचारों की आलोचना करते रहते थे। स्वामी दयानन्द को पंजाब में आमंत्रित करने वालों में अलखधारी की प्रमुख भूमिका थी। वे स्वामीजी के परम प्रशंसक थे। १ मई १८८२ को इनका निधन हो गया।

ले. का.—कन्हैयालाल अलखधारी के समस्त ग्रन्थ 'कुलियात अलखधारी' शीर्षक से प्रकाशित हुए हैं। उनके अन्य ग्रन्थ हैं—चिराग-ए-हकीकत, शमा-ए-मारिफत, उपनिषद्, भगवद्गीता तथा योगवासिष्ठ के उर्दू अनुवाद। स्वामी दयानन्द विषयक नीतिप्रकाश में छपे उनके उद्धरणों

को एकत्र कर 'स्वामी दयानन्द का हाल' शीर्षक एक उर्दू पुस्तक १८८६ में लाला रामचन्द्र ने मेरठ से प्रकाशित की थी। इसका हिन्दी अनुवाद प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु ने 'महर्षि दयानन्द का सर्वप्रथम जीवन वृत्त' शीर्षक से किया है जो स्वतन्त्रानन्द शोध संस्थान, अबोहर से २०३८ वि. में प्रकाशित हुआ।

कन्हैयालाल चौबे

ईसाई मत के खण्डन में आपके निम्न ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है—१. सन्मत परीक्षा—मुन्शी चुन्नीलाल यंत्रालय फतहगढ़ में मुद्रित, २. ईसाई मत खण्डन, ३. एक पण्डित और ईसाई के विवाद का वृतान्त, ४. यवनमत परीक्षा, ५. जखैया पुराण।

मास्टर कन्हैयालाल

अजमेर के प्रसिद्ध आर्यसमाजी कार्यकर्ता मास्टर कन्हैयालाल का जन्म आश्विन शुक्ला ५, १९२८ वि. को हुआ। प्रारम्भ में वे डी. ए. वी. स्कूल अजमेर में अध्यापक रहे, तत्पश्चात् अजमेर के नार्मल टीचर्स ट्रेनिंग स्कूल के प्राचार्य रहे। परोपकारिणी सभा ने आपको अपना सदस्य मनोनीत किया। वे आर्यसमाज अजमेर तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की गतिविधियों में सक्रिय भाग लेते रहे। आपने अपने ही नगर के एक अन्य आर्यसमाजी कार्यकर्ता मुन्शी पद्मचन्द का जीवनचरित्र लिखा, जो 'विश्वकर्मा मनीषी पद्मचन्दजी' शीर्षक से वैदिक पुस्तकालय, अजमेर से छपा है।

पं. कन्हैयालाल मिश्र आर्योपदेशक

विदेशों में आर्यसमाज का प्रचार करने वाले पं. कन्हैयालाल ने अरब देशों का विस्तृत भ्रमण किया था।

ले. का.—१. मेरी अबीसीनिया यात्रा—१९९२ वि., २. हमारी जापान यात्रा, ३. ईराक की यात्रा, ४. ईराकी कृष्ण।

डा० कपिलदेव द्विवेदी

डा० द्विवेदी गहमर, जिला गाजीपुर के निवासी श्री बलरामदास के पुत्र हैं। इनका जन्म १६ दिसम्बर १९१९ को हुआ। आप संस्कृत के उत्कृष्ट विद्वान् तथा अनेक ग्रन्थों के प्रणेता हैं। आपने १९३९ में गुरुकुल ज्वालापुर से विद्याभास्कर की परीक्षा उत्तीर्ण की। तदनन्तर एम. ए. (हिन्दी, संस्कृत) एम. ओ. एल. तथा १९४९ में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से डी. फिल. किया। व्याकरणाचार्य के अतिरिक्त आपने पंजाब तथा वाराणसी से शास्त्री की परीक्षायें भी ससम्मान उत्तीर्ण कीं। जर्मन, फ्रेंच, रूसी तथा चीनी भाषाओं का भी आपको उत्तम ज्ञान है। आपने उत्तरप्रदेश के राजकीय महाविद्यालयों में संस्कृत प्राध्यापक तथा प्राचार्य पद पर वर्षों तक कार्य किया। डी. फिल. के लिये आपके शोध का विषय था—Contribution of Ancient Indian Grammarians to the study of Semantics. इस शोध प्रबन्ध को हिन्दुस्तानी एकेडमी ने प्रकाशित किया तथा उत्तरप्रदेश सरकार ने पुरस्कृत किया। आपने संस्कृत शिक्षा से सम्बन्धित अनेक पाठ्य पुस्तकें, व्याकरण, रचना, अनुवाद, टीका आदि की लिखी हैं।

ले. का.—१. महात्मा नारायण स्वामी की आत्मकथा (सम्पादित) (१९८२) वेदामृतम् ग्रन्थमाला के अन्तर्गत सुखी जीवन, सुखी गृहस्थ, सुखी परिवार, सुखी समाज, आचार शिक्षा, नीति शिक्षा, वेदों में नारी तथा वैदिक मनोविज्ञान शीर्षक ग्रन्थ १९८२-८८ की अवधि में निकल चुके हैं। यह ग्रन्थमाला ४० पुस्तकों की होगी। संस्कृत में आपने काव्य रचना भी की हैं। आपके ऐसे दो ग्रन्थ राष्ट्र गीतांजलि तथा शान्ति स्तोत्रम् प्रकाशित हुए हैं। आपका शोध प्रबन्ध 'अर्थ विज्ञान और व्याकरण दर्शन' भी छप चुका है। सम्प्रति ज्ञानपुर (वाराणसी) में विश्वभारती अनुसंधान परिषद् के निदेशक के रूप में लेखन तथा शोध कार्य में रत हैं।

व. प.—विश्वभारती अनुसंधान परिषद्, ज्ञानपुर (वाराणसी)।

डा. कपिलदेव शास्त्री

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में स्थापित दयानन्दपीठ के विगत अध्यक्ष डा. कपिलदेव का जन्म १० दिसम्बर

१९२७ को गोरखपुर जिले के शिवपुरी ग्राम में हुआ। आपने पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु तथा पं. युधिष्ठिर मीमांसक के सान्निध्य में रहकर संस्कृत का अध्ययन किया। विरजानन्द विद्यालय शाहदरा-लाहौर, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय तथा राजकीय संस्कृत कॉलेज बनारस में आपका अध्ययन हुआ। १९५९ में आप कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में संस्कृत प्रवक्ता बने। कालान्तर में इसी विश्वविद्यालय में प्रथम रीडर तथा बाद में दयानन्द प्रोफेसर के पद पर रहे। ३१ दिसम्बर १९८७ को आपने इस पद से अवकाश लिया। ३ मार्च १९९० को एक सड़क दुर्घटना में आपका निधन हो गया।

ले. का.—Gana Patha ascribed to Panini-- कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय (१९६७), वैयाकरण सिद्धान्तपरम लघु मंजूषा—(१९७५), वैदिक ऋषि : एक परिशीलन—१९७८., वैयाकरण सिद्धान्त मंजूषा ऑफ नागेश भट्ट कुरुक्षेत्र (१९८४), संस्कृत में गणपाठ की परम्परा और आचार्य पाणिनि (शोध प्रबन्ध) १९६१, ऋषि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य में अग्निदेवता का स्वरूप (व्याख्यान-१९८६), ऋषि दयानन्द कृत यजुर्वेद भाष्य में अग्नि का स्वरूप : एक परिशीलन १९८८.

इनके अतिरिक्त विभिन्न शोधपत्रिकाओं में आपके अनेक उच्चकोटि के शोध निबन्ध छपे हैं।

डा. कमल पुंजाणी

डा. पुंजाणी का जन्म १४ जनवरी १९४२ को गुजरात के जामनगर शहर में हुआ। इनकी शिक्षा एम. ए. (हिन्दी) तक हुई। सम्प्रति जामनगर के एक कॉलेज में हिन्दी प्रवक्ता हैं। इन्होंने 'हिन्दी का पत्र साहित्य' विषय पर पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की है। आपने विषय का यह प्रथम शोध प्रबन्ध है और डा. पुंजाणी ने इसमें स्वामी दयानन्द के पत्र साहित्य पर विशद् आलोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपके अनेक शोध निबन्ध प्रकाशित हुए हैं। डा. कमल की कविताओं के दो संग्रह 'प्रतिबिम्बित इन्द्र-धनुष' तथा 'क्षितिज से दूर' प्रकाशित हो चुके हैं।

व. प.—प्रीतदीप, १-सिद्धार्थ टेन्टामेंट्स, जामनगर ३६१००८ (गुजरात)।

डा. (श्रीमती) कमला

श्रीमती कमला का जन्म १५ अक्टूबर १९५४ को रोहतक जिले के लोहारखेड़ी नामक ग्राम में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल नरेला (दिल्ली) तथा कन्या गुरुकुल सिद्धिपुर लोवा कलां में हुई। इन्होंने व्याकरणाचार्य तथा एम. ए. तक अध्ययन किया। दयानन्द शोधपीठ पंजाब विश्वविद्यालय से श्रीमती कमला ने 'ऋग्वेद में नारी : एक विवेचनात्मक अध्ययन' शीर्षक शोध प्रबन्ध लिखकर १९८९ में पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की।

व. प.—राजसिंह राठी का मकान, मोहल्ला खारी कुई, झज्जर (रोहतक)

पं. कमलेशकुमार आर्य अग्निहोत्री

राजस्थान के नागौर जिलान्तर्गत मारोठ ग्राम में इनका जन्म भाद्रपद कृ. ४ सं. १९८८ वि. (एक सितम्बर १९३१) को हुआ। भजन, गायन और संगीत के द्वारा विगत कई वर्षों से ये धर्म प्रचार कर रहे हैं। वर्तमान में अहमदाबाद में रहते हैं। इनकी आत्मकथा 'मेरी जीवनयात्रा' शीर्षक २०३५ वि. में प्रकाशित हुई। इनके स्वरचित भजनों की अनेक पुस्तकें छपी हैं। दूरदर्शन पर महाभारत के प्रसारण में दिखाई जाने वाली ऐतिहासिक त्रुटियों का वे गहराई से अध्ययन करते हैं और इस सम्बन्ध में उनकी लेखमाला अनेक पत्रों में प्रकाशित हो रही है। इस लेखमाला का गुजराती, सिंधी तथा कन्नड़ भाषा में भी अनुवाद हुआ है। दूरदर्शन पर प्रसारित उत्तर-रामायण की समीक्षा भी पुस्तकाकार छपी है। दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम महाभारत की समीक्षा में लिखी आपकी पुस्तक 'दूरदर्शन धारावाहिक महाभारत की समीक्षा' (भाग १) आपके विशद अध्ययन तथा समीक्षा शक्ति प्रदर्शित करती है।

व. प.—आर्यसमाज देवलाली बाजार, कुबेर नगर, अहमदाबाद ३८२३४०।

कर्ण कवि

आर्यसमाज की सुधारवादी विचारधारा को काव्य के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान करने वाले कर्ण कवि का जन्म अलीगढ़ जिले के चण्डोली खुर्द नामक ग्राम में १८८१ (१९३८ वि.) में हुआ था। यह ग्राम अलीगढ़-अतरौली मार्ग पर साधु आश्रम (स्वामी सर्वदानन्द द्वारा स्थापित) के निकट नहर के समीप है। कविताकामिनी-कान्त पं. नाथूरामशंकर शर्मा आपके काव्य गुरु थे। कर्ण कवि की कविता में आर्यसमाज के सुधार प्रधान तथा देशभक्ति के भावों से युक्त विचारधारा के सर्वत्र दर्शन होते हैं। आपका निधन २० जून १९४३ को हुआ।

ले. का.—स्वामी दयानन्द (जीवनचरित १९७२ वि.) सुमनमाला, यमुना-लहरी, अनुराग वाटिका, काव्य कुसुमोद्यान (संग्रह ग्रन्थ), कर्णामृत (प्रथम भाग)—(१९७४ वि.) कामना-कौमुदी तथा कर्णसतसई आपकी अप्रकाशित कृतियां हैं। मिश्रबन्धु विनोद में इनकी निम्न अन्य कृतियों का उल्लेख हुआ है—शुद्धिपथ, मेरा मत, अमृतोदधि।

श्री कर्मनारायण कपूर

श्री कपूर का जन्म जुलाई १९०७ में गुजरांवाला (पाकिस्तान) जिले के हफीजाबाद गाँव में हुआ। इनके पिता का नाम श्री काशीराम कपूर था। इनकी शिक्षा डी. ए. वी. कॉलेज लाहौर से हुई जहाँ से इन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय की बी. ए. आनर्स तथा एल-एल. बी. की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। पांच वर्ष तक इन्होंने वकालत की तथा भारत सरकार के पुनर्वास मन्त्रालय में भी कार्य किया।

ले. का.—१. Autobiography of a Soul, २. Vedic Prayers, ३. Swami Shraddhanand, ४. सनातन वैदिक धर्म, ५. आत्मा की जीवनगाथा, ६. Vegetarianism Versus Meat Eating, ७. वेद दर्शन-सृष्टि रचना, ८. Glimpses of the Vedas 1989.

व. प.—६ ए/३१ डब्लू. ई. ए., करोलबाग, नई दिल्ली ११०००५।

डा. कर्मसिंह आर्य

डा. आर्य का जन्म हिमाचल प्रदेश के जिला चम्बा के अन्तर्गत ग्राम सरूंडा में श्री चतरोराम के यहाँ हुआ। इन्होंने हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय से १९८५ में संस्कृत में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। दयानन्द शोध पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान में इन्होंने पी-एच. डी. के लिये 'दयानन्दीय वाङ्मय में षडदर्शन विषयक सन्दर्भों का आलोचनात्मक अध्ययन' विषय लिया, जिस पर उन्हें उक्त उपाधि प्राप्त हुई। १९८१ से १९८८ तक ये आर्य-समाज लोअर बाजार शिमला में पुरोहित के पद पर रहे। सम्प्रति वे हिमाचल प्रदेश की कला, भाषा एवं संस्कृति अकादमी में कार्यरत हैं।

ले. का.—स्वप्नवासवदत्तम् नाटक का चम्बयाली बोली में रूपान्तर (१९८७)। महर्षि दयानन्द सरस्वती के दार्शनिक मन्तव्य (१९९०)। केनोपनिषद् का हिन्दी और हिमाचली (पहाड़ी) में रूपान्तर (१९९०)।

व. प.—हिमाचल प्रदेश कला, भाषा एवं संस्कृति अकादमी, क्लिफ एण्ड एस्टेट शिमला-१।

स्वामी कर्मानन्द सरस्वती

जैनमत के मर्मज्ञ विद्वान् स्वामी कर्मानन्द का मूल नाम विरदीचन्द था। ये हरयाणा के हिसार नगर के निवासी वैश्य थे। इन्होंने जैन मत का गम्भीर अध्ययन किया तथा जैन मत विषयक अनेक आलोचनात्मक ग्रन्थ भी लिखे। जैन विद्वानों से इन्होंने अनेक शास्त्रार्थ भी किये किन्तु कारणवश इन्हें आर्यसमाज से पृथक् कर दिया गया। इसके बाद ये स्वयं जैनी बन गये और जैनमत का पक्ष लेकर आर्यसमाज के विद्वानों से शास्त्रार्थ करने लगे। अम्बाला छावनी में पं. बुद्धदेव मीरपुरी से इनका शास्त्रार्थ हुआ था।

ले. का.—१. जैनमत दर्पण, २. जैन मत प्राचीन नहीं है, ३. जैनमत लीला, ४. जैन गप्पाष्टक, ५. जैनमत परिचय, ६. जैनमत प्रकाश, ७. भूमण्डल के जैनियों से १०० प्रश्न, ८. जैनियों का काल और ईश्वर, ९. जैन मत समीक्षा, १०. जैनमत पोलप्रकाश। ये सभी ग्रन्थ ओंकार

प्रेस अजमेर से प्रकाशित हुए। ११. भूमण्डल के समस्त जैनियों से हमारे १०० प्रश्न, १२. जैन भ्रमोच्छेदन (१९८९ वि.), १३. जैनियों का विचित्र ज्योतिष (१९९० वि.), १४. दिगम्बर गप्पदीपिका—(१९९० वि.), १५. जैनमत प्रकाश भाग—१, १६. जैन तिमिर भास्कर, १७. जैनियों का काल और वैदिक ईश्वर, १८. पौराणिक पण्डित कालूराम शास्त्री के उत्तर रूप में कालूतिमिर-प्रकाश।

श्रीमती कविता वाचक्नवी

श्रीमती कविता का जन्म ६ फरवरी १९६३ को अमृतसर में हुआ। वाराणसी के सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् इनका विवाह निष्ठावान् आर्यसमाजी डा. हरिश्चन्द्र से हुआ। श्रीमती कविता ने 'महर्षि दयानन्द एवं उनकी योग निष्ठा' शीर्षक पुस्तक लिखी है जो रत्नकुमारी स्वाध्याय संस्थान, इलाहाबाद से प्रकाशित हुई है।

व. प.—१३ अश्वमेध सोसाइटी ७५, रामबाग कालोनी, पौड रोड, पुणे-४११०२९ (महाराष्ट्र)।

कवि कस्तूरचन्द्र 'घनसार'

घनसार उपनाम धारी कवि कस्तूरचन्द का जन्म १९६६ वि. (१९०९) में जोधपुर जिले के कस्बा पींपाड़ सिटी में श्री मुकुन्दराम के यहाँ हुआ। इनकी अनेक काव्य रचनायें विभिन्न आर्य पत्रों में प्रकाशित हुई हैं। मानस मोती, गायत्री शतक, ओम्शतक शीर्षक आपके तीन काव्य संग्रह छपे हैं।

व. प.—डा. पींपाड़ सिटी (जोधपुर)

सरदार कान्हसिंह

आप पंजाब के पुराने भजनोपदेशक थे। इनके भजनों का संग्रह उर्दू में भजनप्रकाश तथा संगीत सुधाकर शीर्षक से छपा। इसका हिन्दी संस्करण १८८९ में आर्य भजन संग्रह शीर्षक से प्रकाशित हुआ।

कामताप्रसाद रसबिंदु

श्री रसबिंदु गोरखपुर जनपद के बडहलगंज कस्बे के निवासी हैं। इन्होंने स्वामी दयानन्द के जीवन पर आधारित 'ज्वाला' नामक एक काव्यकृति का प्रणयन किया है। इसका प्रकाशन १९७३ में हुआ।

कालीचरण आर्योपदेशक

श्री कालीचरण हैदराबाद के निवासी हैं। आपने 'आदि शंकर एवं स्वामी दयानन्द की वैचारिक सामीप्यता' शीर्षक एक तुलनात्मक ग्रन्थ की रचना की है। इसका तेलुगु में अनुवाद हुआ तथा वंदेमातरम् वीरभद्र राव ने इसे Adi Shankar and Swamy Dayanand : Near Similarity in view शीर्षक से अंग्रेजी में अनूदित किया है। इस ग्रन्थ का प्रकाशन १९८६ में हुआ।

लाल कालीचरण फर्रुखाबाद

फर्रुखाबाद के श्रेष्ठि वर्ग के अनेक महानुभाव स्वामी दयानन्द के भक्त एवं अनुयायी थे। इन्हीं में लाला कालीचरण, रामचरण—इन दो सहोदर भाइयों का नाम उल्लेखनीय है। लाला कालीचरण १९३७ वि. में आर्यसमाज फर्रुखाबाद के सदस्य बने। वे इस आर्यसमाज के सात वर्ष तक मंत्री पद पर भी रहे। इसी अधिकार से उन्होंने आर्यसमाज फर्रुखाबाद के मासिक मुखपत्र 'भारत सुदशाप्रवर्त्तक' का सम्पादन भी किया था। स्वामीजी ने इन दोनों भाइयों को परोपकारिणी सभा का सदस्य मनोनीत किया। लाला कालीचरण ने १८९० में उक्त सभा की सदस्यता से त्यागपत्र दे दिया था। आपका निधन १९०० में हुआ। आपके द्वारा लिखित एक नाटक 'कुमति' का उल्लेख मिलता है। इन्होंने कुछ हास्य-व्यंग्य की रचनायें भी लिखीं जो भारत-सुदशाप्रवर्त्तक में प्रकाशित हुई थीं। इनके नाम हैं—पोप पुष्पांजलि (स्तोत्र शैली की व्यंग्य प्रधान रचना मार्च १८८३), बिल्ली माहात्म्य (जून १८८३)।

पं. कालीचरण शर्मा

अरबी, फारसी के प्रकाण्ड विद्वान् तथा इस्लाम के मर्मज्ञ पं. कालीचरण शर्मा का जन्म १८७८ में बदायूं

जिले के एक ग्राम में हुआ। इनका अध्ययन आगरा स्थित सुप्रसिद्ध मुसाफिर विद्यालय में हुआ, जिसे पं. भोजदत्त शर्मा ने अमर शहीद पं. लेखराम की स्मृति में स्थापित किया था। पं. कालीचरण ने इस्लाम और ईसाई मत का विस्तृत और गम्भीर अध्ययन किया। अपने जीवन-काल में उन्होंने विपक्षियों से सैंकड़ों शास्त्रार्थ किये। लगभग १८ वर्ष तक शर्माजी डी. ए. वी. कालेज कानपुर में धर्मशिक्षा के अध्यापक रहे। कानपुर में उन्होंने आर्य-तर्क मण्डल की स्थापना की, जिसके द्वारा वैदिक धर्म पर किये जाने वाले आक्षेपों का उत्तर दिया जाता था। कालेज से अवकाश ग्रहण करने के पश्चात् आपने राजस्थान को अपना कार्य क्षेत्र बनाया। ९० वर्ष की आयु में १३ सितम्बर १९६८ को बांदीकुई (राजस्थान) में इनका निधन हुआ।

ले. का—कुरानेमजीद (प्रथम भाग) हिन्दी अनुवाद—विचित्र जीवनचरित (पैगम्बर मोहम्मद की जीवनी) १९१८।

इस्लाम के खण्डन में लिखित ग्रन्थ

१. अल्लाहमियां का हुलिया—(१९८० वि.), २. अल्लाहमियां की सुन्नत (१९८० वि.), ३. अल्लाहमियां की फोटो (१९२६), ४. इस्लामी गप्पें, ५. काठ का उल्लू (१९२६), ६. मुसलमानी बुर्का, ७. कुरान और उसकी शिक्षा, ८. अल्लाहमियां की चालों का नमूना।

उपर्युक्त पुस्तकें मूलतः उर्दू में लिखी गई थीं। हिन्दी में इनके अनुवादक थे कु. राममनोहरसिंह लखीमपुरी।

ईसाईमत के खण्डन में लिखित पुस्तकें

ईसाईमतदर्पण, बाइबिल मत परीक्षा, वैदिक यज्ञ में मसीही मत की आहुति। अन्य ग्रन्थ—सत्यार्थप्रकाश का अरबी अनुवाद, ईशोपनिषद् का उर्दू व अरबी अनुवाद, स्वानेह ऊमरी-आरिफ दयानन्द सरस्वती (फारसी में स्वामी दयानन्द का जीवन चरित), आर्यों का प्राचीन गौरव (१९३१) हास्यरत्नमाला, ईश्वर धर्मज्ञान (नास्तिक मत खण्डन), वैदिक रूसी साम्यवाद (कम्युनिज्म मत खण्डन) पशुबधनिषेध (मांस खाना पाप है), जैन और बौद्ध एक हैं, वेद स्वाध्याय (वेद मन्त्रों की व्याख्या)।

महात्मा कालूराम योगी

योगीजी का जन्म राजस्थान के सीकर जिले के रामगढ़ ग्राम में ज्येष्ठ कृष्णा ६ सं. १८९३ वि. को पं. कृष्णदत्त त्रिपाठी के यहाँ हुआ। इनकी शिक्षा साधारण स्तर की ही हुई। १९३७ वि. में ये जयपुर आये और वहां वैदिक धर्म सभा की स्थापना की। महात्माजी ने राजस्थान के सीकर, चूरू, झुंझनूं, नागौर आदि जिलों में भगवद्भक्ति का प्रचार किया तथा अनेक स्थानों पर आर्यसमाजें स्थापित कीं। उनका स्वामी दयानन्द से पत्र-व्यवहार भी हुआ था। वे राजस्थानी भाषा में भजन लिखते थे। आज भी उनके इन भजनों का उपर्युक्त क्षेत्रों में प्रचार है। उनके भजनों का संग्रह 'भजनोदय' शीर्षक से १९८१ वि. में छपा था।

वि. अ.—महात्मा कालूराम योगी का जीवनचरित : डा० भवानीलाल भारतीय।

काशीनाथ खत्री

आर्यसमाज के प्रारम्भकालीन लेखकों में काशीनाथ खत्री का नाम उल्लेखनीय है। इनका जन्म आगरा के माईथान मोहल्ले में १८४९ में हुआ। इनके पिता का नाम दयालदास टण्डन था जो स्वयं हिन्दी के कवि थे। इन्हें लिखने की प्रेरणा अपने पिता से ही मिली। शिक्षा समाप्ति के उपरान्त आप इलाहाबाद जिले के सिरसा ग्राम में चले गये तथा शिक्षक का कार्य करने लगे। आपने कुछ समय तक सरकार में रिपोर्टर का कार्य भी किया तथा कालान्तर में गवर्नर के कार्यालय में पुस्तकालयाध्यक्ष के पद पर रहे।

आप आर्यसमाज के सक्रिय सदस्य थे तथा इलाहाबाद एवं समीपवर्ती स्थानों पर व्याख्यान देते रहते थे। आपके लेखन तथा प्रचार कार्य का विवरण फर्रुखाबाद से प्रकाशित होने वाले 'भारतसुदशाप्रवर्तक' मासिक पत्र में

समय-समय पर प्रकाशित होता था। इनका निधन ९ जनवरी १८९१ को हुआ।

ले. का.—नीत्युपदेश, मनुष्य के लिये सच्चा सुख किसमें है और वह क्यों कर प्राप्त हो सकता है? (आर्यसमाज प्रयाग में १६ नवम्बर १८८४ को दिये गये व्याख्यान का सारांश) १८८५, विधवा विवाह के शास्त्रिक प्रमाण, वालविवाह संवाद नाटक, वाल्य विवाह की कुरीति की महा हानियाँ, मातृभाषा की उन्नति किस विधि होनी चाहिए (१८८५), ऑल्काट साहब के लेक्चर आदि। तीन परम मनोहर रूपक, सिंध देश की राजकुमारियाँ, गुन्नौर की रानी, महाराजा लव का स्वप्न।

मास्टर काशीनाथ

आर्यसमाज की स्थापना के समय बम्बई में उसके २८ नियम बनाये गये थे। इन नियमों का अंग्रेजी अनुवाद मास्टर काशीनाथ ने 'Swami Dayanand's Twenty-Eight Principles of the Arya Samaj शीर्षक से किया। इसे वजीरचन्द शर्मा लाहौर ने प्रकाशित किया था।

डा. काशीनाथ शास्त्री

आर्यसमाज के मननशील विद्वान् और लेखक पं. काशीनाथ शास्त्री का जन्म १ मई १९११ को उत्तरप्रदेश के फतेहपुर जिले के कौड़ा जहानाबाद नामक ग्राम के निवासी श्री रघुनाथ के यहाँ हुआ था। इनके पिता दृढ़ आर्यसमाजी थे। जीविकावश शास्त्रीजी गोंदिया (महाराष्ट्र) में निवास करते थे और चिकित्सा के द्वारा आजीविका निर्वाह करते रहे। आपने 'शास्त्री' के अतिरिक्त नागपुर विश्वविद्यालय से एम. ए. की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ के मासिक मुखपत्र आर्य सेवक के प्रबन्ध सम्पादक के रूप में आपने कार्य किया। इनका निधन ४ अक्टूबर १९८८ को हुआ।

ले. का—१. वैदिक संध्या (१९३३ व १९४०), २. रामायण प्रदीप मीमांसा—वाल्मीकीय रामायण का समीक्षात्मक अध्ययन (१९३३), ३. जल्पवाद खण्डन (उपर्युक्त पुस्तक पर किये आक्षेपों का निराकरण १९३३), ४. आर्यों का आदि देश (१९५३), ५. सत्य की खोज (१९५४), ६. ईसाई मत की छानबीन (१९५४), ७. वैदिक कालीन भारत—आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ द्वारा पुरस्कृत (१९७१), ८. अनुपम मणिमाला—(अध्यात्म उपदेश प्रधान ग्रन्थ, १९७३)।

काहनचन्द्र वर्मा

श्री वर्मा लाहौर के निवासी थे। ईसाइयत विषयक उनका अध्ययन बहुत विस्तृत था। इस शताब्दी के आरम्भ में लंदन मिशन सोसाइटी के प्रचारक तथा Modern Religious Movements in India. के लेखक पादरी जे. एन. फर्कुहर से इनका शास्त्रार्थ हुआ था। विवाद का विषय था ईसा मसीह की ऐतिहासिकता। वर्माजी का कहना था कि ईसा नाम का कोई पुरुष कभी हुआ ही नहीं। ईसा विषयक प्रचलित गाथायें पौराणिक दन्तकथायें (Mythology) ही हैं। पादरी फर्कुहर उस समय लंदन मिशन सोसाइटी द्वारा भवानीपुर कलकत्ता में संचालित कालेज के प्रिंसिपल थे। इसी शास्त्रार्थ को वर्माजी ने Christ : A Myth शीर्षक पुस्तक में प्रकाशित किया। यह पुस्तक अत्यन्त लोकप्रिय हुई और १९८५ वि. (१९२८) में इसका १२वां संस्करण प्रकाशित हुआ। काहनचन्द्र वर्मा ने भारत के दक्षिणी प्रान्तों का व्यापक भ्रमण किया था। वे प्रचारार्थ श्रीलंका भी गये थे।

ले. का.—Is not Christianity a false and fabulous Religion ? (1917), Hindus: A Dying nation and how to revive it ?, The History of Christ., The True Religion.

ऊ. कित्तिमा

सत्यार्थप्रकाश के बर्मी भाषा में अनुवादक बौद्ध भिक्षु ऊ. कित्तिमा का जन्म २४ अगस्त १९०२ को वर्मा के अराकान प्रान्त के रुकछौं नामक ग्राम में हुआ। उन्होंने सत्रह वर्ष की आयु में प्रव्रज्या ली और भिक्षु बन कर बौद्ध धर्म तथा उसके साहित्य का अध्ययन करने के लिए

भारत आये। इनका संस्कृत अध्ययन गुरुकुल कांगड़ी में हुआ। पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय की प्रेरणा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा ब्रह्मदेश के मंत्री डा. ओम्प्रकाश के अनुरोध से आपने सत्यार्थप्रकाश का वर्मी में अनुवाद किया जो १९५९ में रंगून से प्रकाशित हुआ। भिक्षुजी ने वाल्मीकीय रामायण का बर्मी भाषा में अनुवाद किया जो हिन्दू सेण्ट्रल बोर्ड रंगून से प्रकाशित हुआ था।

इनका निधन २३ अप्रैल १९८७ को वाराणसी में हुआ।

किशनचन्द जेबा

उर्दू के लेखक थे। इनकी नाट्यकृति 'शहीद संन्यासी' स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर आधारित है। पारसी नाटक शैली पर लिखी यह कृति लाजपतराय एण्ड सन्स लाहौर द्वारा १९२७ में प्रकाशित हुई थी।

सरदार किशनसिंह

शहीद भगतसिंह के पिता किशनसिंह को अपने पिता सरदार अर्जुनसिंह से आर्यसमाज के प्रति श्रद्धा का भाव विरासत में मिला। इनकी शिक्षा सांईदास ऐंग्लो संस्कृत स्कूल जालंधर में हुई जहाँ से इन्होंने आठवीं तक शिक्षा पाई। यहीं वे लाला सांईदास के पुत्र मास्टर सुन्दरदास के सम्पर्क में आये जिन्होंने किशनसिंह को देशभक्ति और राष्ट्रवाद की शिक्षा दी। लाला लाजपतराय के सहयोगी बन कर उन्होंने समय समय पर अकाल सहायता तथा भूकम्प पीड़ितों के सहायता कार्यों में भाग लिया।

सरदार किशनसिंह ने गुरुमर्यादा हिस्सा-१ (गुरुओं की शादियां) शीर्षक पुस्तक उर्दू में लिखी, जिसमें सिद्ध किया गया था कि सिख गुरुओं के विवाह वैदिक (हिन्दू) विधि से ही सम्पन्न हुए थे।

श्री किशोरीलाल गुप्त

अलीगढ जिले के निवासी श्री गुप्त पेशे से शिक्षक थे। वे अलीगढ के धर्मसमाज कालेज में प्रवक्ता तथा प्राचार्य पद पर रहे।

ले. का.—बाल वेदामृत (१९९० वि.), २. दयानन्द के दिव्य विचार (स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश का संस्करण) (१९३४), ३. महर्षि दयानन्द सरस्वती का आदर्श जीवनचरित (१९३७), ४. राष्ट्रनिर्माण के व्यावहारिक सुझाव, ५. संस्कृत प्रबोध।

श्री गुप्त ने गोविन्द ब्रदर्स अलीगढ नामक प्रकाशन संस्था का संचालन किया। इनके उपर्युक्त ग्रन्थ भी वहीं से छपे।

कुन्दनलाल आर्य

श्री आर्य जालंधर के निवासी थे। आपने स्वामी दयानन्द की एक जीवनी 'पूर्ण पुरुष का विचित्र जीवन-चरित' शीर्षक लिखी। इसमें संसार के अनेक महापुरुषों की विशेषतायें समष्टि रूप में स्वामी दयानन्द में दिखलाई गई हैं।

ठाकुर कुन्दनसिंह कुश

श्री कुश का जन्म १८७८ में सहारनपुर जिले के ग्राम नगली महनाज में हुआ। बाल्यकाल में ही उन पर आर्यसमाज की विचारधारा का प्रभाव पड़ा और वे धर्म-प्रचार में जुट गये। इनकी शिक्षा एण्ट्रेंस तक हुई। तत्पश्चात् वे डी. ए. वी. हाई स्कूल मुजफ्फरनगर में इतिहास के अध्यापक बने और १९२१ में असहयोग आन्दोलन के दौरान नौकरी छोड़ कर आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। १९२८ में वे फीजी द्वीप चले गये और वहाँ डी. ए. वी. हाई स्कूल में मुख्याध्यापक बन गये। सेवा से अवकाश लेकर वे फीजी में ही रहे। २४ मार्च १९६७ को इनका निधन हो गया।

ले. का.—क्षत्रिय जाति का इतिहास तथा कुछ अन्य ग्रन्थ।

श्री कुलदीप चड्ढा

श्री चड्ढा का जन्म ६ अप्रैल १९२५ को लाहौर में हुआ। इनके पिता का नाम श्री गोपालदास चड्ढा तथा माता का नाम श्रीमती विद्यावती था। इनकी शिक्षा

डी. ए. वी. हाई स्कूल लाहौर तथा डी. ए. वी. कालेज लाहौर में हुई। १९४८ में आपने पंजाब विश्वविद्यालय से एम. एस-सी. ग्रानर्स की परीक्षा उत्तीर्ण की। आर्यसमाज के प्रायः सभी पत्रों में उनकी रचनाएं प्रकाशित होती थीं। २४ अप्रैल १९७८ को इनका इन्दौर में निधन हो गया।

ले. का.—दीप विमर्श तथा दीपार्चन (१९८२) शीर्षक दो निवन्ध संग्रह।

प्रा. कुशलदेव शास्त्री

श्री शास्त्री का जन्म ६ जून १९५१ को लातूर जिले के वडवलनागनाथ ग्राम में श्री शंकरदेव माधवराव कापसे के यहाँ हुआ। इनकी माता का नाम श्रीमती प्रयागबाई था। गुरुकुल झज्जर से व्याकरणाचार्य तथा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से विद्याभास्कर उपाधि ग्रहण करने के अनन्तर आपने आगरा विश्वविद्यालय से एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। आप आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र के उपमंत्री हैं। आपने पं. गोपालराव हरि देशमुख लिखित मराठी ग्रन्थ 'पं. स्वामी श्रीमद्दयानन्द सरस्वती' का हिन्दी अनुवाद किया है जो वेदवाणी के १९८२ के विशेषांक में प्रकाशित हुआ है। स्वामी दयानन्द के जीवन तथा व्यक्तित्व विषयक गवेषणा में शास्त्रीजी की विशेष रुचि है जो वेदवाणी के दयानन्द अंकों में प्रकाशित उनके निम्न लेखों से ज्ञात होती है—

ऋषि दयानन्द को लिखा गया (१३ जुलाई १८७५) मराठी पत्र (१९८३), विष्णुशास्त्री चिपलूणकर द्वारा अपनी पुस्तक निबंधमाला में ऋषि दयानन्द विषयक संदर्भ (अनुवाद) १९८३, ऋषि दयानन्द के महाराष्ट्रीय सहयोगी (१९८५), विष्णुशास्त्री चिपलूणकर और ऋषि दयानन्द (१९८८), स्वामी दयानन्द और दादा साहब खापर्डे : शास्त्रचर्चा (१९८९-९०)।

व. प.—सुभाष कॉलेज, नान्देड़ ४३१६०१ (महाराष्ट्र)

डॉ. कुसुमलता आर्य

डॉ. आर्य का जन्म ८ अप्रैल १९४७ को बुलन्दशहर जिले के सिकन्दराबाद नामक कस्बे में हुआ। आपने वनस्थली विद्यापीठ से संस्कृत में एम. ए. किया तथा वहीं से पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। सम्प्रति ये वनस्थली विद्यापीठ में छात्रावास अधीक्षिका तथा संस्कृत की प्रवक्ता हैं। आपकी पी-एच. डी. का शोध प्रबन्ध 'पुरुष सूक्त का आलोचनात्मक अध्ययन' है जिसे समर्पणानन्द शोध संस्थान ने प्रकाशित किया है।

व. प.—श्रीशान्ता कुंज, वनस्थली विद्यापीठ ३०४०२२ (टोंक, राजस्थान)।

कृपाकृष्ण अमीन

रोहतक निवासी मुन्शी प्रभुलाल माथुर के पुत्र कृपाकृष्ण मुरादाबाद की दीवानी अदालत में अमीन के पद पर कार्य करते थे। इन्होंने स्वामी दयानन्द प्रणीत वेदभाष्य से १०८ मन्त्रों का सार्थ संग्रह किया। ऋग्वेद के ५३ तथा यजुर्वेद के ५५ मन्त्रों का भाषा पदार्थ एवं भावार्थ युक्त यह संग्रह 'आर्याभिविनय' नाम से ही १९६१ वि. में प्रकाशित हुआ।

डा० कृपालचन्द्र यादव

इतिहास के प्रख्यात विद्वान् डा० यादव का जन्म ११ अक्टूबर १९३६ को रोहतक जिले के ग्राम नाहर में श्री सोहनसिंह यादव के यहाँ हुआ। इनकी शिक्षा एम. ए. इतिहास (१९६१) तक हुई तथा इतिहास में ही इन्होंने १९६७ में पी-एच. डी. की उपाधि ग्रहण की। आप कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर हैं।

ले. का.—Swami Dayanand Saraswati : The Maker of Modern India—श्री अरविन्द के स्वामी दयानन्द विषयक दो प्रख्यात लेखों का सम्पादित संस्करण १९७६, Autobiography of Dayanand Saraswati.—थियोसोफिस्ट के तीन अंकों में प्रकाशित स्वामी दयानंद की आत्मकथा का समीक्षात्मक भूमिका तथा उपयोगी परिशिष्टों सहित सम्पादन। अब तक इसके तीन संस्करण १९७७, १९७८ तथा १९८७ में निकल चुके हैं। १९८८ में इसका एक संस्करण संयुक्त राज्य अमेरिका से भी

निकला है। Arya Samaj and the Freedom Movement : प्रथम खण्ड—आचार्य कृष्णसिंह आर्य के सहलेखन में। अन्य ग्रन्थ—राव तुलाराम, History and Culture of Haryana : A classified and annotated Bibliography, हरयाणा—कवियों, शायरों और भजनोपदेशकों का योगदान १९८८, श्री मुरलीधर का जीवनचरित।

व. प.—इतिहास विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र (हरयाणा)।

महाशय कृष्ण

महाशयजी का जन्म १८८० में वज़ीराबाद (पाकिस्तान) में श्री ताराचन्द के यहाँ हुआ। इनका मूल नाम राधाकृष्ण था, जिसे आपने बदल कर 'कृष्ण' कर दिया। लाहौर से आपने बी. ए. किया और शीघ्र ही आर्यसमाज की पत्रकारिता से जुड़ गये। १९०६ में उन्होंने उर्दू पत्र साप्ताहिक प्रकाश निकाला तथा १९१९ में दैनिक प्रताप का प्रकाशन किया। देश विभाजन के पश्चात् महाशयजी का निवास दिल्ली रहा। १९४७ से लेकर मृत्यु पर्यन्त वे वीरप्रताप तथा वीर अर्जुन में समसामयिक तथा आर्यसामाजिक समस्याओं पर लिखते रहे। महाशयजी वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा परोपकारिणी सभा के प्रधान रहे। २४ फरवरी १९६३ को दिल्ली में उनका निधन हो गया।

वि. अ.— जीवनसंघर्ष शीर्षक पं. सत्यदेव विद्यालंकार लिखित जीवनी।

प्रो. कृष्णकुमार

आप डी. ए. वी. कॉलेज कानपुर में दर्शनशास्त्र के सहायक प्रोफेसर थे। स्वामी दयानन्द की निर्वाण शताब्दी के अवसर पर आपने The Aryan Path नामक एक उत्तम ग्रन्थ लिखा था जो १९३३ में छपा।

डॉ. कृष्णकुमार धवन

डॉ. धवन का जन्म २१ नवम्बर १९२६ को श्रीनगर में हुआ। इन्होंने संस्कृत एवं हिन्दी में एम. ए., एम. ओ. एल. तथा पी-एच. डी की उपाधियाँ प्राप्त की हैं। आपने डी. ए. वी. कॉलेज चण्डीगढ़ में संस्कृत के प्रवक्ता तथा दयानन्द कॉलेज हिसार के प्राचार्य पद पर कार्य किया। 'उपनिषदों में काव्यतत्त्व' विषय पर आपने अपना पी. एच. डी. का शोध कार्य सम्पन्न किया था। आपने उपनिषद्कोश का भी प्रणयन किया है। सम्प्रति आप विश्व वेद परिषद् की चण्डीगढ़ शाखा के अध्यक्ष हैं।

व. प.—८८, सैक्टर-१६, चण्डीगढ़.

कृष्णगोपाल आर्यसेवक

इनका जन्म चन्योट (पाकिस्तान) में हुआ। प्रारम्भ में आप सनातनधर्म के महावीरदल में कार्य करते थे, किन्तु स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं से परिचित होने के पश्चात् आप आर्यसमाज की ओर आकृष्ट हुए। देश विभाजन के पश्चात् आपका कार्यक्षेत्र आगरा रहा। वर्तमान में आप वानप्रस्थ की दीक्षा लेकर समाज सेवा में लगे हुए हैं।

ले. का.—कल्याण का मार्ग, पौराणिक पोल प्रकाश, सत्य धर्मप्रकाश—संवाद शैली में लिखी गई यह पुस्तक आर्य सिद्धान्तों को सुगम बनाने का सफल प्रयास है। अब तक इसके कई संस्करण निकले हैं तथा वैद्य महेन्द्रनाथ वेदालंकार ने इसका गुजराती अनुवाद (प्र. १९८७) भी किया है।

व. प.—कृष्णा मेडिकल हाल, नाई की मण्डी, आगरा।

श्री कृष्णगोपाल माथुर

श्री माथुर का जन्म १८८९ में राजस्थान की झालावाड़ रियासत की सुकेत तहसील के एक कायस्थ परिवार में हुआ। इन्होंने स्वाध्याय के बल पर हिन्दी, संस्कृत, उर्दू तथा अंग्रेजी आदि भाषाओं का ज्ञान उपार्जित किया। इनकी रचनायें इन्दु, सरस्वती आदि पत्रिकाओं में छपती थीं। आप मासिक 'परोपकारी' में प्रायः लिखा करते थे। आपकी रचनाओं में 'वक्तृत्व कला,' (अपने विषय की हिन्दी भाषा की प्रथम पुस्तक)

मणिमाला, दृष्टान्त-रत्नाकर, युधिष्ठिर (जीवनचरित), किससे क्या सीखें ? आदि प्रमुख हैं। कालान्तर में उनका निवास एवं कार्य क्षेत्र उज्जैन रहा। यहीं २० दिसम्बर १९८६ को श्री माथुर का निधन हुआ।

कृष्णचन्द्र विद्यालंकार

मुजफ्फरगढ़ जिले के बसीड़ा ग्राम में श्री जैसाराम के यहाँ २८ नवम्बर १९०४ को श्री कृष्णचन्द्र का जन्म हुआ। अध्ययन के लिये ये गुरुकुल कांगड़ी में प्रविष्ट हुए और १९८२ वि. में विद्यालंकार उपाधि ग्रहण कर स्नातक बने। हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में श्री विद्यालंकार एक जाने माने हस्ताक्षर थे। उन्होंने त्यागभूमि मासिक तथा वीर अर्जुन साप्ताहिक का वर्षों तक सम्पादन किया। कालान्तर में हिन्दी में आर्थिक विषयों से सम्बन्धित पत्र का अभाव जानकर उन्होंने 'सम्पदा' नामक पत्रिका निकाली जिसका वे जीवन पर्यन्त सम्पादन करते रहे। १९ फरवरी १९८३ को दिल्ली में उनका निधन हुआ।

ले. का.—अछूतोद्धार १९३३, सुभाषित रत्नमाला १९५१।

कृष्णचन्द्र विरमानी

श्री विरमानी डेरा इस्माइल खां (पाकिस्तान) के निवासी थे।

ले. का.—१. वैदिक दान—१९८४ वि. (१९२७), २. दयानन्दसिद्धान्तभास्कर—विभिन्न विषयों पर स्वामी दयानन्द के मन्तव्यों का वर्गीकृत संग्रह (१९३३)।

पं. कृष्णदत्त

पं. कृष्णदत्त का जन्म १९१६ (शिवरात्रि) में कर्नाटक राज्य के भालकी तालुके के अन्तर्गत आंबेसांगवी नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम श्री गोकुल-प्रसाद था, जो वकील थे। इनकी शिक्षा उस्मानिया विश्वविद्यालय में हुई जहाँ से आपने एम. ए. और बी. एड. की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। आपने हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह में भाग लिया और सत्याग्रह के मुख्य कार्यालय शोलापुर में प्रचार कार्य के अधिष्ठाता रहे। आप १९४५ में आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम-राज्य के मन्त्री चुने गये और आर्यभानु, दिग्विजय, अंगद तथा आर्यजीवन पत्रों का सम्पादन किया। १९६१ से १९७६ तक ये हिन्दी महाविद्यालय हैदराबाद के प्राचार्य रहे।

ले. का.—सत्यार्थप्रकाश का विरोध क्यों? (१९४२), महर्षि दयानन्द वचनामृत, आर्यसमाज स्वरूप और कार्य (१९७२), बने तो तब, जब कुछ करना चाहो—(१९७२), जीवन-ज्योति (शहीद श्यामलालजी का जीवन-परिचय)—श्री खण्डेराव के सहलेखन में (१९६४), स्व. लक्ष्मणराव आर्य बिचकुन्दा निवासी की जीवनी (१९७२), आर्यसमाज जहीराबाद का इतिहास (१९७३)।

व. प.—१-८-७००/६ पद्मानगर, नल्ला कुण्टा हैदराबाद ५०००४४.

डा. कृष्णपालसिंह

डा. सिंह का जन्म १ जनवरी १९४७ को फर्रूखाबाद जिले के कुबेरपुर ग्राम में श्री सोहनलालसिंह के यहाँ हुआ। १९७० में इन्होंने इंजीनियरी में डिप्लोमा परीक्षा जोधपुर से उत्तीर्ण की, किन्तु संस्कृत में अभिरुचि होने के कारण जोधपुर विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए. किया तथा 'महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का समालोचनात्मक अध्ययन' विषय लेकर १९८४ में पी-एच. डी. उपाधि प्राप्त की। आप विगत कई वर्षों से दयानन्द कॉलेज अजमेर में संस्कृत के प्राध्यापक हैं।

ले. का.—महर्षि दयानन्द पत्रों के दर्पण में १९८८।

व. प.—संस्कृत विभाग, दयानन्द कॉलेज, अजमेर—३०५००१.

पं. कृष्णराम इच्छाराम

स्वामी दयानन्द के समकालीन और उनके भक्त कृष्णराम इच्छाराम गुजरात के ग्राम खरसाड़ के निवासी थे। वे स्वामीजी के बम्बई प्रान्त में भ्रमण के समय अनेक स्थानों पर उनके साथ रहे।

ले. का.—आर्यों जागृत हो—मूल गुजराती व्याख्यान का हिन्दी अनुवाद १८९८।

डा० कृष्णलाल

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् तथा दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के प्रोफेसर डा० कृष्णलाल का जन्म २० नवम्बर १९३३ को अण्डमान द्वीप की राजधानी पोर्ट ब्लेयर में श्री किशोरीलाल के यहां हुआ। १९५६ में इन्होंने एम. ए. (संस्कृत) तथा १९६५ में पी-एच. डी. की उपाधियाँ ग्रहण कीं। १९७२ से आप दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग से सम्बद्ध हैं। उससे पूर्व १९५६ से १९७२ तक वे पी. जी. डी. ए. वी. कालेज दिल्ली में संस्कृत के प्राध्यापक रहे।

ले. का.—वैदिक संग्रह(१९७३), वेदप्रकाश (१९७२), गृह्यमंत्र और उनका विनियोग (शोध प्रवन्ध १९७०), वेद संचिति १९८१, संस्कृत शोध : वैदिक अध्ययन (१९८१), प्रह्लाद स्मारक—वैदिक व्याख्यानमाला (प्रथम स्तवक) सम्पादित ग्रंथ (१९८२), वैदिक यज्ञों का स्वरूप—पशुवलि के विशेष संदर्भ में (१९८९), इनके अतिरिक्त आपके अनेक संस्कृत काव्य तथा लघु कथा आदि के संग्रह छप चुके हैं।

व. प.—ई. ९३७ विश्वनीड़, सरस्वतीविहार दिल्ली-११००३४.

कृष्णलाल कुसुमाकर

सरस काव्य रचना करने वाले कवि कृष्णलाल कुसुमाकर का जन्म १ अक्टूबर १९१२ को फीरोजाबाद जिले के ग्राम ढोलपुरा में हुआ। उनकी शिक्षा एम. ए. तक हुई। वर्षों तक डी. ए. वी. कालेज फीरोजाबाद में अध्यापन कार्य करने के पश्चात् वे सेवा निवृत्त हुए। कुसुमाकर जी के काव्य गुरु पं. गयाप्रसाद शुक्ल सनेही तथा पं. हरिशंकर शर्मा रहे हैं। उन्हें सर्वश्री बनारसीदास चतुर्वेदी, बाबू गुलाबराय, डा. सत्येन्द्र तथा गोपालप्रसाद व्यास जैसे साहित्यकारों के सम्पर्क में आने का अवसर मिला और उनकी काव्य प्रतिभा निरन्तर विकसित होती रही।

ले. का.—चिता की चिनगारी (ब्रिटिश सरकार द्वारा जब्त), नव बाला, भयंकर भूल, ग्राम गीतांजलि, आलोक, वेद-वीणा (यजुर्वेद के ३१-३२ अध्याय), धारणा, सुमंगली, कुसुमांजलि, गो गौरव, शतदल, तथा महर्षि महिमा।

व. प.—३०१ आर्यनगर, फीरोजाबाद (उ.प्र.)

डा० कृष्णवल्लभ पालीवाल

डा० पालीवाल का जन्म १५ अक्टूबर १९२७ को एटा जिले के डुंडवारा ग्राम में हुआ। इनकी शिक्षा रसायन शास्त्र में एम. एस-सी. तथा पी-एच. डी. तक हुई। महात्मा अमरस्वामी की प्रेरणा से इनका आर्यसमाज में प्रवेश हुआ। उदयपुर विश्वविद्यालय में ये कृषि विज्ञान के रीडर पद पर रहे, तत्पश्चात् भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में कार्य किया।

ले. का.—१. आर्यसमाज क्या मानता है ?, २. वेद-ईश्वरीय ज्ञान, ३. Introduction of the Vedas (सम्पादित), ४. हिन्दू धर्मशास्त्रों में छुआछूत—वेद परिचायिका तथा Vedas Introduced (प्रकाशनाधीन)।

व. प.—१२९ डी. डी. ए. फ्लेट्स, राजोरी गार्डन, नई दिल्ली ११००२७.

कृष्णस्वरूप विद्यालंकार

भगवद्गीता के मर्मज्ञ विद्वान् पं. कृष्णस्वरूप विद्यालंकार का जन्म चैत्र शुक्ला ८ सं. १९५५ वि. (१८९८) को बदायूं जिलान्तर्गत इस्लामनगर में श्री रामचरणलाल के यहां हुआ। पिता आर्यसमाजी थे, अतः उन्होंने अपने पुत्र को गुरुकुल कांगड़ी में प्रविष्ट कराया। यहां से आपने १९७५ वि. (१९१९) में विद्यालंकार की उपाधि ग्रहण की। स्नातक होने के पश्चात् विद्यालंकारजी ने समाज-सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया तथा १९३० व १९४२ के स्वतन्त्रता आन्दोलनों में भी भाग लिया। देश के स्वतन्त्र हो जाने के पश्चात् वे उत्तरप्रदेश के पंचायत-राज्य विभाग में प्रशिक्षक के पद पर रहे। १६ फरवरी १९८० को आपका निधन हो गया।

ले. का.—गीता मर्म (१९६१), गीताविज्ञान विवेचन (१९६३), उपर्युक्त दोनों ग्रन्थ उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत हुए। गीतार्थसारबोधिनी, बाल विवाह, अछूतोद्धार, आनन्द यहीं है, वैदिक संभोग मर्यादा।

प्रि. कृष्णसिंह आर्य

श्री आर्य का जन्म ५ अक्टूबर १९३७ को देहरादून जिले के भोगपुर नामक ग्राम में हुआ। इन्होंने वनस्पति-शास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधि ली और डी. ए.वी. कालेज, चण्डीगढ़ में अध्यापन आरम्भ किया। विगत दस वर्षों से वे इसी कालेज के प्राचार्य पद पर आसीन हैं।

ले. का.—१. Swami Dayanand Saraswati : A study of his Life and Work पी. डी. शास्त्री के सहलेखन में लिखी गई अंग्रेजी जीवनी (१९८७), २. स्वामी दयानन्द का एक लघु अंग्रेजी जीवनचरित भी श्री आर्य ने लिखा, जिसे डी. ए. वी. प्रकाशन संस्थान ने १९८७ में प्रकाशित किया, ३. Arya Samaj and the Freedom Movement (१८७५-१९१८) डा. कृपालचन्द्र यादव के सहलेखन में लिखा (१९८८)—इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ में भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन में आर्यसमाज की भूमिका को ऐतिहासिक और पुरातात्त्विक प्रमाणों के आधार पर सिद्ध किया गया है।

व. प.—डी. ए. वी. कालेज, चण्डीगढ़.

श्री कृष्णानन्द

उत्तरप्रदेश के निवासी श्री कृष्णानन्द अपने समय के प्रसिद्ध विद्वान् थे।

ले. का—१. छूतछात व जाति पांति (१९२६), २. कौन धर्म श्रेष्ठ है ? (१९२८), ३. चार धर्मों की तुलना (वैदिक, बौद्ध, ईसाई तथा इस्लाम का तुलनात्मक अध्ययन) (१९३६), ४. मुसलमान भाइयों के सोचने योग्य बातें।

श्री केदारनाथ आर्य

आप अयोध्या (फैजाबाद) के निवासी थे। आपने स्वाधीनता संग्राम के समय ९ बार जेल यात्रा की। आपने अयोध्या तीर्थस्थान में फैले भ्रष्टाचार एवं दुराचार का भण्डाफोड किया तथा राम जन्म स्थान के मन्दिरों और मठों के अधीशों के दुश्चरित्रता पूर्ण कृत्यों को जनता के समक्ष रक्खा। आपने 'वर्तमान श्री अयोध्या माहात्म्य' शीर्षक पुस्तक लिखकर इस तीर्थस्थान में व्याप्त बुराइयों का यथार्थ चित्र उपस्थित किया। आपने फैजाबाद आर्यसमाज का इतिहास भी लिखा जो उक्त समाज की स्वर्ण जयन्ती पर १९४१ में प्रकाशित हुआ। आपका निधन १९५८ में हुआ।

श्री केदारनाथ गुप्त

उत्तरप्रदेश के बांदा जनपद के राजापुर ग्राम में श्री गुप्त का जन्म १८९३ में हुआ। गोस्वामी तुलसीदास को जन्म देने का श्रेय भी इसी ग्राम को है। व्यवसाय से ये अध्यापक थे और अग्रवाल विद्यालय दारागंज, प्रयाग के प्रधानाचार्य रहे। आपने छात्रहितकारी ग्रन्थमाला नामक एक बालोपयोगी पुस्तकमाला का प्रकाशन आरम्भ किया जिसके अन्तर्गत स्वदेश-विदेश के अनेक महापुरुषों की सरल जीवनियां छपीं। इनमें से अधिकांश के लेखक स्वयं गुप्त जी ही थे। इसी ग्रन्थमाला में संख्या २७ पर स्वामी दयानन्द का जीवनचरित श्री गुप्त द्वारा लिखा जाकर प्रकाशित हुआ। २५ जुलाई १९८२ को प्रयाग में ही इनका निधन हो गया।

मुन्शी केवलकृष्ण

उर्दू के कवि तथा स्वामी दयानन्द के प्रति गहन आस्था रखने वाले मुन्शी केवलकृष्ण के पिता का नाम मुन्शी राधाकृष्ण था। इनका जन्म आश्विन पूर्णिमा १८८५ वि. (१८२८) को हुआ। इनके पूर्वज पटियाला राज्य के छत बिनूड़ नामक ग्राम के रहने वाले थे, किन्तु मुसलमानी शासन काल में वे रोहतक में रहने लगे थे। उस युग में प्रचलित दुष्प्रवृत्तियों के कारण मुन्शीजी को मांस-भक्षण,

मदिरापान, यहां तक कि वेश्यागमन से भी कोई परहेज नहीं था। जिस समय स्वामी दयानन्द का पंजाब में आगमन हुआ, उस समय मुन्शीजी शाहपुर में मुंसिफ थे। स्वामीजी के उपदेशों के प्रभाव से इनके सभी दुर्व्यसन छूटे और ये आर्यसमाज के दृढ़ अनुयायी बन गये। कई वर्षों तक वे आर्यसमाज गुजरांवाला के प्रधान रहे। आपके भाई मुन्शी नारायणकृष्ण तथा पुत्र मुन्शी कर्ताकृष्ण भी आर्यसमाज के अनुयायी थे। डी. ए. वी. कालेज लाहौर की स्थापना के समय आपने कालेज निधि में पर्याप्त राशि प्रदान की। आपका निधन १५ दिसम्बर १९०९ को हुआ। मुन्शीजी उर्दू के श्रेष्ठ कवि थे। प्रारम्भ में तो वे उर्दू काव्य की परम्परा का अनुकरण करते हुए शृंगार रस की ही कविताएँ लिखते रहे, परन्तु आर्यसमाज में प्रविष्ट होने के पश्चात् आपने शान्तरस की काव्य रचना करने में ही अपनी प्रतिभा का उपयोग किया। उर्दू में इनका तखल्लुस 'उर्फ' तथा हिन्दी में 'केवल' रहता था।

ले. का.—संध्या मंजूम (संध्या का उर्दू पद्यानुवाद), इसके कई संस्करण प्रकाशित हुए। आर्याभिविनय मंजूम (आर्याभिविनय का उर्दू पद्यानुवाद—नवम्बर १९०२) इसका हिन्दी रूपान्तर आर्य विनयपत्रिका शीर्षक से छपा था। संगीत सुधाकर—(काव्य संग्रह)। भजनमुक्तावली—(१९०१), उस्तादेशायरी—(काव्य रचना के नियम बताने वाला ग्रन्थ), विचारपत्र, राजेसरबस्ता, इजहारेसदाकत या जवाबुलजवाब।

अन्तिम तीन पुस्तकें आर्यसमाज के उस विवाद से सम्बन्धित हैं जिसमें मांसाहार के औचित्य अथवा अनौचित्य ने एक भीषण गृह-कलह का रूप धारण कर लिया था।

केवलकृष्ण शर्मा

मैनपुरी के निकटवर्ती कुरावली नामक ग्राम के निवासी श्री केवलकृष्ण आर्यसमाज बरेली के उपदेशक थे। इन्होंने १८८८ में स्वामी दयानन्द कृत आर्योद्देश्यरत्नमाला का हिन्दी पद्यानुवाद सदुद्देश्यरत्नमाला (आर्य पत्र बरेली में प्रकाशित) शीर्षक से किया। इस अनुवाद में दोहा, सोरठा, सवैया और रोला छन्द का प्रयोग हुआ है।

पं. केवलानन्द शर्मा

शर्माजी संस्कृत के रससिद्ध कवि थे। इनकी एक काव्य कृति 'यतीन्द्र शतकम्' को रामगोपाल आर्य आजमगढ़ ने १९३८ में प्रकाशित किया था। यह ग्रन्थ स्वामी दयानन्द की प्रशस्ति में लिखा गया ११० श्लोकों का उत्कृष्ट संस्कृत काव्य है।

स्वामी केवलानन्द सरस्वती

आर्यसमाज के तपस्वी संत स्वामी केवलानंद सरस्वती का जन्म मुरादाबाद जिले के काई नाम ग्राम में जनवरी १८९५ में हुआ। विद्यार्थी काल में आपने आर्य युवक-समाज अमृतसर द्वारा स्थापित संस्कृत पाठशाला में संस्कृत का अध्ययन किया। पुनः काशी चले गये। आपने आर्यसमाज में दीक्षा लेने के अनन्तर बिजनौर जिले के दारानगर गंज कस्बे के निकट गंगा तट पर निगम आश्रम की स्थापना की। आप कुशल वक्ता, कवि तथा धर्म-प्रचारक थे। आपका निधन २० नवम्बर १९४९ को दिल्ली में हुआ।

ले. का.—भक्तिमार्ग (१९२८), केवलानन्द भजनमाला (१९३०), भूलों को भूलें (१९८६ वि.), ज्ञानदर्पण (१९४१), आनन्दमंजूषा।

आपने काव्य रचना भी की है जिसमें इनका उपनाम 'केवल' प्रयुक्त हुआ है।

पं. केशवदेव ज्ञानी

ज्ञानीजी का जन्म बहावलपुर (पाकिस्तान) में हुआ। इनका अध्ययन गुरुकुल कांगड़ी में हुआ, जहाँ से आपने १९७९ वि. में सिद्धान्तालंकार की उपाधि प्राप्त की।

ज्ञानीजी ने दक्षिण भारत में आर्यसमाज के सिद्धान्तों का व्यापक प्रचार किया तथा अनेक आर्यसमाजों की स्थापना की। इनकी रचनायें प्रायः अंग्रेजी में हैं जो आर्यसमाज मद्रास द्वारा प्रकाशित हुई थीं।

ले. का.—1. The Vedic Caste System and the Pancham Problem, 2. The Outlines of Arya Samaj (1933), 3. Hinduism Versus Christianity, 4. Hinduism and Islam., 5. Verses from the Vedas (1936)., 6. The Inner man and other Lectures on Arya Philosophy 1934, यह ग्रन्थ पं. केशवदेव ज्ञानी ने प्रकाशित किया था। इसमें निम्न लेखों का संग्रह था—पं. गंगाप्रसाद जज का The Inner man and the Inner World, पं. चमूपति का Shri Krishna, तथा पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय का The Three Eternals, ग्रन्थ का प्राक्कथन आचार्य रामदेव ने लिखा था, 7. Sayings of Swami Dayanand (1936), ८. आर्यसमाज का संक्षिप्त परिचय।

डा. केशवदेव शास्त्री

शास्त्रीजी का जन्म अविभाजित पंजाब के जिला मॉन्टगुमरी के कमालिया नामक ग्राम में १८८१ में चौधरी सुखानन्द के यहाँ हुआ। इनकी शिक्षा डी. ए. वी. कालेज लाहौर में हुई। कुछ समय तक इन्होंने वैदिक यंत्रालय अजमेर के प्रबन्धक पद पर कार्य किया। ये स्वामी श्रद्धानन्द के पत्र सद्धर्मप्रचारक के अधिष्ठाता पद पर भी रहे और उसी समय पं. लेखराम के ग्रन्थसंग्रह 'कुलियात आर्यमुसाफिर' को प्रकाशित किया। पश्चात् वे पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण कर आयुर्वेद का अध्ययन करने कलकत्ता चले गये और वहाँ से भिषगाचार्य की उपाधि प्राप्त की। १९७८ वि. से वे काशी में रहने लगे। इन्होंने आर्य कुमार आन्दोलन में भाग लिया तथा १९०९ में आर्य कुमार परिषद् के रावलपिण्डी अधिवेशन की अध्यक्षता की। १९१५ में वे अमेरिका चले गये और वहाँ से एम. डी. की उपाधि लेकर लौटे। आपने एक अमेरिकन युवती को वैदिक धर्म में दीक्षित कर उससे विवाह किया। शास्त्रीजी सार्वदेशिक सभा के मंत्री (१९२३-१९२८) भी रहे और सभा के मुख पत्र 'सार्वदेशिक' का वर्षों तक सम्पादन किया। २६ अक्टूबर १९२८ को उनका निधन हुआ।

ले. का.—१. अमर जीवन (१९२५), २. धर्मशिक्षा प्रवेशिका, ३. धर्मशिक्षा (तीन भाग), ४. बालविवाह कैसे चला ?, ५. ऋतुचर्या, ६. वस्तिकर्म विधि, ७. प्रार्थनाविधि (काशी से प्रकाशित), ८. श्रीमद्दयानन्द जन्म वृतान्त (सार्वदेशिक साहित्य ग्रन्थमाला-१, १९२५), ९. पारिवारिक जीवन।

अमेरिका प्रवास-काल की रचनायें—

1. Bible in India (Abridged), 2. Unknown Life of Jesus., 3. Christianity and Hinduism Compared., 4. World's Great Religions.

पं. केशवराम विष्णुलाल पण्ड्या

श्री पण्ड्या लखनऊ के निवासी गुजराती ब्राह्मण थे। इनका जन्म १९०८ वि. (१८५१) में हुआ था। जब स्वामी दयानन्द का लखनऊ आगमन हुआ तो उन्होंने स्वामीजी के व्याख्यान सुने और महर्षि के अनुयायी बन गये। आर्यसमाज लखनऊ (गणेशगंज) की स्थापना के काल से ही ये इसके सक्रिय कार्यकर्ता तथा पदाधिकारी रहे। पण्ड्याजी ने स्वामी दयानन्द का एक जीवनचरित लिखा था जो पाण्डुलिपि रूप में आर्यसमाज गणेशगंज लखनऊ में विद्यमान था। स्व. मामराजसिंह ने इसे १७ मार्च १९२७ को देखा था। इसमें महर्षि की जन्मतिथि भाद्रपद शुक्ला ९, १८८१ वि. अंकित थी, ऐसा श्री मामराजसिंह ने अपने एक लेख में लिखा है।

ले. का.—केशवराम पण्ड्या ने आर्यसमाज गणेशगंज के इतिहास का संकलन किया जो १९०५ में छपा। इससे स्वा. दयानन्द के लखनऊ आगमन तथा इस नगर में आर्यसमाज की पुरानी गतिविधियों की जानकारी मिलती है।

पं. केशव शर्मा

पं. केशव शर्मा गोपेश्वर (गढ़वाल) के निवासी थे। यद्यपि वे आर्यसमाजी नहीं थे किन्तु उन्होंने स्वामी दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट संध्या-पद्धति की दो व्याख्यायें लिखीं जो पं. नरदेव शास्त्री तथा पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जैसे विख्यात आर्य विद्वानों द्वारा प्रशंसित हुईं। १. ये हैं संध्या विज्ञान (१९९३ वि.) तथा २. विश्वव्यापी संध्या।

केशवय्य

आपने कन्नड़ भाषा में 'स्वामी दयानन्द सरस्वती यवर चरिते' शीर्षक जीवन चरित लिखा है। १९१० में इसका प्रकाशन मैसूर से हुआ।

अन्ने केशवार्य शास्त्री

शास्त्रीजी हैदराबाद (आंध्रप्रदेश) के निवासी थे। आपने स्वामी दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य का तेलुगु में अनुवाद किया तथा स्वव्यय से उसे प्रकाशित भी कराया। इनका निधन १९७३ में हुआ।

डा. केशु भाई देसाई

डा. केशु भाई का जन्म गुजरात के मेहसाना जिले के खेरालु नामक ग्राम में वैशाख शुक्ला ५ सं २००५ वि. (३ मई १९४९) को श्री नाथूभाई देसाई के यहाँ हुआ। आपने महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ विश्वविद्यालय बडौदा से एम. बी., बी. एस. की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा की राष्ट्रभाषारत्न भी पास की। आप व्यवसाय से चिकित्सक हैं। आप गुजराती के सफल कथाकार हैं। आपने महर्षि दयानन्द की मृत्यु के घटनाचक्र को लेकर एक रोचक उपन्यास 'सूरज बुझाव्यां नुं पाप' शीर्षक लिखा है। इसका हिन्दी अनुवाद इस कोशकार (डा. भारतीय) ने किया जो प्रकाशनाधीन है।

व. प.—'धरती नु छोरू' अस्पताल, डा.—तलोद (साबरकांठा)-३८३२१५।

पं. कैलासनाथ वाजपेयी

ये कानपुर के निवासी थे। इनका जन्म १९३४ वि. तथा मृत्यु १९६३ वि. में हुई।

ले. का.—१. आर्य गीतावली, २. पौराणिक भ्रान्ति-हरण, ३. स्वामी दयानन्द-जीवनचरित, ४. धर्म महामण्डल की कृष्णलीला (श्री आनन्दस्वरूप वकील की उर्दू पुस्तक का अनुवाद।)

पं. क्षितीशकुमार वेदालंकार

प्रख्यात पत्रकार तथा लेखक श्री क्षितीशकुमार वेदालंकार का जन्म १६ सितम्बर १९१६ को दिल्ली में श्री मानकचन्द के यहां हुआ। गुरुकुल कांगड़ी में अध्ययन समाप्त कर १९९६ वि. (१९३९) में इन्होंने वेदालंकार को उपाधि ग्रहण की। आपने आगरा विश्वविद्यालय से एम. ए. संस्कृत की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। क्षितीशजी ने वीर अर्जुन दैनिक का सम्पादन किया। तत्पश्चात् वे दैनिक हिन्दुस्तान के सहायक सम्पादक रहे। पर्याप्त समय तक हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में रहकर उन्होंने अवकाश ग्रहण किया। वर्तमान में वे आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के साप्ताहिक मुखपत्र आर्यजगत का सम्पादन कर रहे हैं।

ले. का.—आर्य सत्याग्रह में गुरुकुल की आहुति (१९३९), जातिभेद का अभिशाप—(भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद द्वारा प्रकाशित), सम्पादन—पं. सातवलेकर अभिनन्दन ग्रन्थ तथा आर्य महासम्मेलन मारिशस—स्मारिका, दयानन्द दिव्य दर्शन—(१९७३), दिव्य दयानन्द (२०४० वि.), ईश्वर : वैज्ञानिकों की दृष्टि में (सम्पादित ग्रन्थ), आर्यसमाज की विचारधारा १९६५, आर्य सत्याग्रह में गुरुकुल की आहुति 'निजाम की जेल में' शीर्षक से १९८६ में पुनः छपी। 'पंजाब तूफान के दौर से' पंजाब की वर्तमान समस्या से सम्बन्धित। इसका एक अंश 'असलियत क्या है' ? शीर्षक से पृथक छपा। The storm in Panjab. शीर्षक से उक्त ग्रन्थ का अंग्रेजी अनुवाद भी छपा। 'हिन्द की चादर पर दाग'—क्षितीशजी के आर्य जगत् में लिखे गये कतिपय सम्पादकीय लेखों का संग्रह (१९८८).

वि. अ.—पत्रकारिता के पुरोधा : सं. वीरेन्द्रकुमार आर्य (१९८९).

व. प.—डी. ८१ गुलमोहर पार्क, नई दिल्ली—११००४९

पं. क्षेत्रपाल शर्मा

शर्माजी का जन्म आगरा जिले के गोंछ ग्राम में १८७० में हुआ। इनके पिता का नाम पं. चतुर्भुज शर्मा

था। बाल्यावस्था ही में ये मथुरा आ गये और स्वामी दयानन्द के सहाध्यायी पं. उदयप्रकाश से अध्ययन किया। कालान्तर में ये प्रयाग पहुंचे तथा वहाँ स्वामी दयानन्द के आद्य शिष्य पं. भीमसेन शर्मा से विद्याध्ययन करते रहे।

१८९९ में आप कलकत्ता चले गये। यहाँ सम्पादकाचार्य पं. रुद्रदत्त शर्मा के सहकारी के रूप में आप 'आर्यावर्त' पत्र का सम्पादन करने लगे। यहीं से इनका लेखकीय जीवन आरम्भ हुआ। कालान्तर में ये प्रसिद्ध हिन्दी दैनिक 'भारतमित्र' के सम्पादकीय विभाग में भी काम करते रहे। शर्माजी ने मथुरा में सुख संचारक कम्पनी तथा सुधा सिंधु औषधि के द्वारा पर्याप्त द्रव्योपार्जन किया तथा व्यवसाय में अपूर्व सफलता प्राप्त की। कलकत्ता निवास काल के समय आपने 'सांख्य दर्शन' का भाषानुवाद किया था।

शर्माजी का निधन २४ जनवरी १९४२ को हुआ।

पं. क्षेमकरणदास त्रिवेदी

अथर्ववेद भाष्यकार पं. क्षेमकरणदास त्रिवेदी का जन्म कार्तिक शुक्ला ७ सं. १९०५ वि. (३ नवम्बर १८४८) को अलीगढ़ जिले के शाहपुर माडराक नामक ग्राम के एक कायस्थ परिवार में लाला फुन्दनलाल के यहाँ हुआ। १८७१ में इन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से एन्ट्रेंस की परीक्षा पास की। १८७६ में इन्होंने मुरादाबाद में स्वामी दयानन्द के व्याख्यान सुने और उन्हीं से यज्ञोपवीत लिया। १८७९ में मुरादाबाद में जब आर्यसमाज की स्थापना हुई तो ये उसके मंत्री चुने गये। जीविका हेतु उन्होंने जोधपुर बीकानेर रेलवे में नौकरी की और १९०७ में वहाँ से अवकाश लिया। महात्मा मुन्शीराम की प्रेरणा से क्षेमकरणदास ने संस्कृत का अध्ययन किया और वेद का विशेष अनुशीलन बड़ौदा में रहकर किया। यहाँ से सामवेद का अध्ययन किया और पुनः गुरुकुल कांगड़ी में आकर गुरुवर काशीनाथजी तथा पं. शिवशंकर शर्मा से वेदों का विधिवत् अध्ययन किया। १९६८ वि. में ये फिर बड़ौदा गये और ऋग्वेद तथा अथर्ववेद की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। सामवेद की परीक्षा पहले ही दे चुके थे। इस प्रकार तीन वेदों की परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने के कारण वे 'त्रिवेदी' उपाधि के अधिकारी हुये। तत्पश्चात् उन्होंने अथर्ववेद का भाष्य लिखा और वर्षों की साधना के पश्चात् इसे पूरा किया। १३ फरवरी १९३९ को ९० वर्ष की आयु में इनका निधन हुआ।

ले. का.—१. श्री रुद्राध्याय-यजुर्वेद के १६वें अध्याय की व्याख्या (१९६३ वि., १९०६), इसमें सम्पूर्ण अध्याय का भावार्थ संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी में दिया गया है। २. हवन मन्त्र—स्वामी दयानन्द द्वारा निर्धारित ईश्वर स्तुति-प्रार्थनोपासना, स्वस्तिवाचन तथा शान्तिकरण के मन्त्रों की व्याख्या (१९६८ वि., १९१२), ३. अथर्ववेद भाष्य—यह त्रिवेदीजी का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण साहित्यिक कार्य था। भाष्य लेखन १९६८ वि. (१९१२) में, प्रारम्भ होकर १९७८ वि. (१९२१) में समाप्त हुआ। ४. अथर्ववेद भाष्य—का द्वितीय संस्करण सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा दिल्ली ने २०३० वि. में तथा तृतीय संस्करण डा. प्रज्ञादेवी ने सम्पादित कर प्रकाशित किया। ५. गोपथ ब्राह्मण भाष्य—अथर्ववेद के गोपथ ब्राह्मण का भाष्य १८८१ वि. (१९२४) में प्रकाशित हुआ। डा. प्रज्ञादेवी व उनकी अनुजा सुश्री मेधादेवी ने इसे सम्पादित कर २०३४ वि. (१९७७) में पुनः प्रकाशित किया। ६. अथर्ववेद संहिताया पदानां वर्णानुक्रम सूचीपत्रम् १९२१ (१९७८ वि.), ७. वेद विद्यायें—गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी में पठित निबंध (१९७१ वि., १९१४), ८. विधवा मंगल (उर्दू)।

वि. प.—पं क्षेमकरणदास का जीवन चरितः सुशीला देवी जौहरी।

पं. क्षेमचन्द्र सुमन

विख्यात लेखक, कवि तथा पत्रकार श्री क्षेमचन्द्र सुमन का जन्म १६ सितम्बर १९१६ को मेरठ जिले के बाबूगढ़ ग्राम में हुआ। इनकी शिक्षा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में हुई। शिक्षा समाप्त कर ये पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रविष्ट हुए। आप आर्य मित्र के सहायक सम्पादक रहे तथा अन्य अनेक पत्रों का सम्पादन किया। स्वतन्त्रता

आन्दोलन में भाग लेने के कारण आपको कारावास की यातानाएँ भी सहन करनी पड़ीं। देश के स्वतन्त्र हो जाने के पश्चात् दिल्ली को आपने अपनी कार्यस्थली बनाया और विभिन्न साहित्यिक एवं सामाजिक प्रवृत्तियों में संलग्न हो गये। केन्द्रीय साहित्य अकादमी में दीर्घ काल तक सेवा करने के अनन्तर आपने अवकाश ग्रहण किया। भारत सरकार ने हिन्दी सेवाओं के उपलक्ष्य में आपको पद्मश्री की उपाधि से सम्मानित किया। सुमनजी का साहित्य विविध रूपों एवं शैलियों में लिखा गया है। कविता, समीक्षा, जीवनी, संस्मरण, निबन्ध आदि अनेक विधाओं में आपने अपनी प्रतिभा को व्यक्त किया है। हिन्दी साहित्य को आर्यसमाज की देन (१९७१) तथा स्वामी दयानन्द की प्रशंसा में लिखी गई हिन्दी कविताओं का सम्पादित संग्रह 'वंदना के स्वर' (१९७५) आपकी आर्यसमाज विषयक कृतियाँ हैं। सम्प्रति अनेक खण्डों में आप 'दिवंगत हिन्दी सेवी' का लेखन एवं सम्पादन कर रहे हैं। इसके दो खण्ड निकल चुके हैं जिनमें आर्यसमाज से सम्बद्ध अनेक लेखकों का सचित्र विवरण निबद्ध किया गया है। देशभक्त कुँवर चाँदकरण शारदा-स्मृति ग्रन्थ का सम्पादन भी सुमनजी ने किया जो १९८९ में प्रकाशित हुआ। अन्य ग्रन्थ—१. अध्यक्षीय भाषण : बिहार राज्य द्वादश आर्य महासम्मेलन के अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन (१९६३), २. दयानन्द और हिन्दी पत्रकारिता (गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में प्रदत्त भाषण—१९८५)।

वि. अ.—एक व्यक्ति : एक संस्था (अभिनन्दन ग्रन्थ) सं पद्मसिंह शर्मा कमलेश १९६६।

व. प.—अजय निवास, दिलशाद कॉलोनी शाहदरा, दिल्ली।

खुन्नीलाल शास्त्री

आपने 'पंजाब मांस भक्षण वर्जिनी सभा' लाहौर में एक व्याख्यान दिया था जो १८९२ में 'मांस भक्षण निषेध' शीर्षक से विरजानन्द यंत्रालय लाहौर से छपा।

पं. गंगाधर शास्त्री

आप बिहार के निवासी हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के महोपदेशक के रूप में आप अपने प्रान्त में धर्म-प्रचार का कार्य विगत कई वर्षों से कर रहे हैं। शास्त्रीजी संस्कृत के प्रसिद्ध कवि हैं।

ले. का.—वैदिक विवाह पद्धति, प्राचीन श्री सत्य-नारायण कथा—(प्रश्नोपनिषद् का विशिष्ट संस्करण) (१९६६)।

व. प.—आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार, मुनीश्वरानन्द भवन नया टोला पटना-४।

पं गंगाप्रसाद उपाध्याय

आर्यसमाज के लब्धप्रतिष्ठ लेखक, दार्शनिक तथा साहित्यकार पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय का जन्म ६ सितम्बर १८८१ को एटा जिले के नदरई नामक ग्राम में श्री कुंजबिहारीलाल के यहाँ हुआ। इन्होंने अंग्रेजी तथा दर्शनशास्त्र में क्रमशः १९०८ तथा १९१२ में एम. ए. किया। प्रारम्भ में कुछ समय तक राजकीय स्कूलों में अध्यपान किया किन्तु १९१८ में वहाँ से त्यागपत्र देकर डी. ए. वी. हाई स्कूल इलाहाबाद में मुख्याध्यापक के पद आ गये। १९३६ में इस कार्य से अवकाश लेने के पश्चात् उपाध्यायजी ने स्वजीवन को आर्यसमाज के लिए ही समर्पित कर दिया। वे आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान पद पर १९४१ से १९४४ पर्यन्त रहे। तत्पश्चात् सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के उपप्रधान (१९४३) तथा मंत्री (१९४६-१९५१) भी रहे। इसी बीच आप धर्म प्रचारार्थ दक्षिण अफ्रीका, थाईलैण्ड एवं सिंगापुर गये। १९५९ में दयानन्द दीक्षा शताब्दी के अवसर पर मथुरा में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद की अध्यक्षता में आपका सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया तथा अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया। अत्यन्त वृद्ध हो जाने पर भी आप निरन्तर अध्ययन एवं लेखन में लगे रहे। २९ अगस्त १९६८ को आपका निधन हो गया।

ले. का.—उपाध्यायजी का साहित्य मात्रा और गुण, दोनों दृष्टियों से विपुल तथा महत्त्वपूर्ण है। उसको निम्न वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

(अ) मौलिक दार्शनिक ग्रन्थ

१. आस्तिकवाद—(१९२६) हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने इस पर १९३१ में लेखक को मंगलाप्रसाद पुरस्कार देकर सम्मानित किया, २. अद्वैतवाद—(१९२८) प्रथम 'माधुरी' लखनऊ में कुछ समय तक धारावाही छपा, पश्चात् पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ, ३. जीवात्मा—(१९३३), ४. शांकर भाष्यालोचन (१९४७) मुक्ति से पुनरावृत्ति १९५०, ५. मैं और मेरा भगवान् (I and my god) का स्वामी वेदानन्द तीर्थ कृत अनुवाद, ६. मीमांसा-प्रदीप, ७. Vedic Philosophy, ८. कर्मफल सिद्धान्त।

(आ) प्राचीन शास्त्रों के भाष्य एवं अनुवाद

१. सर्वदर्शन सिद्धान्त संग्रह—शंकराचार्य कृत ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद (१९२४), २. मनुस्मृति की टीका (१९३६), ३. ईशोपनिषद् भाष्य (१९४०), ४. ऋग्वेदीय ऐतरेय ब्राह्मण (२००६ वि.) हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने प्रकाशित किया। ५. शतपथ ब्राह्मण—उपाध्याय जी के निधन के उपरान्त डा. स्वामी सत्यप्रकाश की विस्तृत भूमिका सहित ३ खण्डों में १९६९ में प्रकाशित, ६. मीमांसा—शाबर भाष्य का अनुवाद (पाण्डुलिपि)।

(इ) वेदों तथा उपनिषदों के व्याख्यापरक ग्रन्थ

१. वैदिक मणिमाला (१९३६), २. भगवत् कथा (उपनिषदों के आख्यानों का संग्रह) (१९४३), ३. वेद प्रवचन (१९६३), ४. वेद और मानव कल्याण (१९५९), ५. Vedic Culture पं. ठाकुर दत्त शर्मा के अमृतधारा पुरस्कार से पुरस्कृत (१९४९), इसका हिन्दी अनुवाद पं. रघुनाथप्रसाद पाठक ने 'वैदिक संस्कृति' शीर्षक से किया है। वैदिक सिद्धान्त विमर्श १९७२।

(ई) आर्यसमाज विषयक साहित्य (हिन्दी तथा अंग्रेजी)

१. आर्यसमाज (१९२४), २. सनातन धर्म और आर्यसमाज (१९५१), ३. आर्यसमाज की नीति (१९५१), ४. आर्यसमाज और इस्लाम (१९६७) यह उर्दू में भी छपी। 5. The Origin, Mission and Scope of Arya-Samaj (1940), 6. The Arya Samaj and the International Aryan League (1947), 7. The Arya Samaj : A World Movment (1953)

(उ) तुलनात्मक अध्ययन विषयक ग्रन्थ

१. शंकर, रामानुज, दयानन्द (१९३०), २. राजा राममोहनराय, केशवचन्द्र सेन, दयानन्द (१९३१), ३. सायण और दयानन्द (१९५७), 4. Social Reconstructicn by Buddha and Dayanand—(१९५६), महात्मा गौतम बुद्ध की २५००वीं जन्मतिथि पर प्रकाशित) राष्ट्र निर्माता स्वामी दयानन्द १९३३। उपाध्याय जी ने सत्यप्रकाश का अंग्रेजी में प्रामाणिक विशुद्ध अनुवाद १९४६ में किया तथा उन्हीं की प्रेरणा एवं पुरुषार्थ से ऋषि दयानन्द के इस अमर ग्रन्थ के चीनी तथा बर्मी भाषा में अनुवाद छपे। सत्यार्थप्रकाशः एक अध्ययन, राष्ट्र निर्माता स्वामी दयानन्द।

(ऊ) स्वामी दयानन्द विषयक अंग्रेजी ग्रन्थ

Swami Dayanand's Contribution to Hindu Solidarity. (रिलिजियस रेनांसा सिरीज के अन्तर्गत प्रकाशित १९३९.) 2. The Sage of Modern Times-Swami Dayanand (1953), 3. Swami Dayanand on the Formation and Functions of the State—1954, 4. Landmarks of Swami Dayanand's Teachings—1947., 5. Philosophy of Dayanand 1955.

(ए) कर्मकाण्ड विषयक ग्रन्थ

१. वैदिक विवाह पद्धति (१९२८), २. वैदिक उपनयन-वेदारम्भ पद्धति (१९३०), ३. संध्या क्या, क्यों, कैसे ? (१९६४), ४. सरल संध्या-विधि (१९५१), ५. संस्कार प्रकाश, ६. धर्म शिक्षा पद्धति (१० भागों में) प्रथम दो ग्रन्थों का सह लेखन पं. सत्यव्रत उपाध्याय के साथ हुआ।

(ऐ) स्फुट ग्रन्थ

१. विधवाविवाहमीमांसा (१९२०), २. महिला-व्यवहार चन्द्रिका (१९३८), ३. हम क्या खायें ? घास

या मांस ? (१९४९), ४. कम्युनिज्म (१९५०) उत्तर-प्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत, ५. जीवनचक्र-आत्मकथा (१९५४), उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा पुरस्कृत धर्मसुधा-सार (१९५४), भारतीय उत्थान और पतन की कहानी, धर्म, कर्म की कसौटी पर, गंगा ज्ञानधारा १९७६, धर्म-शिक्षा पद्धति १९३०, मूर्तिपूजा १९६९।

(ओ) अन्य मतों से सम्बन्धित ग्रन्थ

१. धम्मपद का हिन्दी अनुवाद (१९३३), २. इस्लाम के दीपक (१९६३) मसाबीहुल इस्लाम शीर्षक से उर्दू में भी प्रकाशित, ३. सनातनधर्म (१९६५)।

(औ) उपाध्याय जी की संस्कृत कृतियाँ

१. आर्य स्मृति-मनुस्मृति की शैली पर १५ अध्यायों में विभक्त धर्मशास्त्र (१९४७), २. आर्योदय काव्य, दो खण्डों में (१९५०) कुल २१ सर्ग तथा ११६६ श्लोक।

(अं) अंग्रेजी ग्रन्थ

ये Religious Renaissance Series के अन्तर्गत १९३९-४२ में छपे। इस ग्रन्थमाला के सम्पादक मण्डल में स्वयं उपाध्यायजी के अतिरिक्त डा. बाबूराम सक्सेना (इलाहाबाद विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के तत्कालीन रीडर), डा. धीरेन्द्र वर्मा (उक्त विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के तत्कालीन रीडर) डा. सत्यप्रकाश (उक्त विश्व-विद्यालय में रसायन विभाग के प्रवक्ता) तथा श्री मदन मोहन सेठ थे।

1. Reason and Religion (1939), 2. Swami Dayanand's Contribution to Hindu-Solidarity (1939), 3. I and my God (1939), 4. Origin, Mission and Scope of Arya Samaj (1940), 5. Worship (1940), 6 Christianity in India (1941), 7. Superstition (1941), 8. Marriage and Married Life (1942). इसका हिन्दी अनुवाद 'विवाह और विवाहित जीवन' शीर्षक से पं. रघुनाथप्रसाद पाठक ने किया—(१९५७) Vedic-Culture (1949)।

(अः) उपाध्यायजी ने आर्यसमाज चौक प्रयाग के तत्वावधान में हिन्दी, उर्दू तथा अंग्रेजी में एक ट्रैक्टमाला निकाली। इसके अन्तर्गत अंग्रेजी में १३, हिन्दी में ६१ तथा कुछ ट्रैक्ट उर्दू में छपे। कुछ प्रकाशित ट्रैक्टों के अनु-वाद गुजराती, मराठी, बंगला, तमिल और तेलुगु में भी हुए।

अपनी विदेश यात्राओं से लौटकर उपाध्यायजी ने १९५३-५४ में 'आर्यसमाज—विश्वप्रचार सिरीज' के अन्तर्गत अंग्रेजी में विदेशों में प्रचारार्थ ९ पुस्तकें लिखकर प्रकाशित कीं। इनमें Elementary Teachings Of Hinduism तथा Life After Death आदि प्रमुख हैं।

उपाध्यायजी के लेखन कर्म की विशेषता यह रही कि उन्होंने गम्भीर से गम्भीर तथा सरल से सरल विषय पर अपनी लेखनी चलाई। उन्होंने हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी तथा संस्कृत, चारों भाषाओं में लिखा। 'इस्लाम के दीपक' जैसी पुस्तक को पढ़कर बड़े-बड़े मौलवियों और इस्लाम के मर्मज्ञ विद्वानों को भी उपाध्यायजी की लेखनी का कायल होना पड़ा था। पं. गोपदेव ने उपाध्यायजी की आस्तिकवाद तथा Worship का तेलुगु में अनुवाद किया है।

वि. अ.—व्यक्ति से व्यक्तित्व (राजेन्द्र जिज्ञासु), जीवन चक्र (आत्मकथा)।

पं. गंगाप्रसाद जज

पं. गंगाप्रसाद का जन्म वैशाख कृष्णा १३, १९२८ वि. (१८७१) को मेरठ में श्री फकीरचन्द के यहाँ हुआ। आगरा कालेज में इन्होंने अध्ययन किया और १८९३ में एम. ए. की परीक्षा पास की। इसी समय ये आर्यसमाज में प्रविष्ट हो गये। प्रथम इन्होंने मेरठ कालेज में अध्यापन किया, तत्पश्चात् संयुक्त प्रान्त की प्रशासनिक सेवा में आ गये और कई वर्षों तक उच्च पदों पर रहे। १९२२ से १९३९ तक वे टिंहरी राज्य में मुख्य न्यायाधीश के पद पर भी रहे। राज्य की सेवा से अवकाश लेकर उन्होंने आर्य-विरक्त आश्रम ज्वालापुर में निवास किया। १९४१ से १९४४ तक आप सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहे। वे

परोपकारिणी सभा के सभासद भी थे। १३ जनवरी १९६६ को ९४ वर्ष की आयु में इनका निधन हो गया।

पं. गंगाप्रसाद का साहित्य हिन्दी एवं अंग्रेजी, दोनों भाषाओं में लिखा गया है।

ले.का.—श्री स्वामी दयानन्द पर विचार (१८९७), ज्योतिष चन्द्रिका—(१८८९)

आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त ने आपकी निम्न लघु पुस्तकें प्रकाशित की।

१. मनुष्य समाज ('ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद' मंत्र की व्याख्या (१८९७), २. 'आकृष्णेन रजसा' मंत्र की व्याख्या (१८९७), ३. सूर्य सप्ताश्व वर्णन, ४. Vedic Text No. 1 (The Constitution of the Human Society 1900), 5. Vedic Text No. 2 (Septenary Composition of Solar Light-1900) ये दोनों पुस्तकें मनुष्य समाज तथा सूर्य सप्ताश्व वर्णन का अंग्रेजी अनुवाद है। 6. Problems of Life., 7. Problems of Universe, 8. The Caste System. अन्तिम पुस्तक का हिन्दी अनुवाद 'जातिभेद' शीर्षक से १९१६ में छपा। यह इतनी लोकप्रिय हुई कि इसके गुजराती, मराठी, तेलुगु तथा मलयालम में भी अनुवाद हुए। पं. गंगाप्रसाद की सर्वोत्तम कृति The FountainHead of Religion है। इसमें विश्व में प्रचलित सभी धर्मों का मूल स्रोत वैदिक धर्म सिद्ध किया गया है। मूलत: यह वैदिक मैगजीन में धारावाही छपती रही। इसका पुस्तकाकार प्रथम संस्करण १९०९ में छपा। तत्पश्चात् आर्यसमाज मद्रास और आर्य साहित्य मण्डल अजमेर ने भी इसे प्रकाशित किया। इसका हिन्दी अनुवाद 'धर्म का आदि स्रोत' शीर्षक से हरिशंकर शर्मा ने किया जो आर्यप्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त से १९७६ वि. में छपा। इसी का उर्दू अनुवाद पं. घासीराम ने किया था जो 'सरचश्मेमज़ाहिब' शीर्षक से छपा। इनकी कुछ अन्य कृतियाँ हैं—केन और कठ उपनिषद् का अंग्रेजी अनुवाद (१९५१) गरुड़पुराण की आलोचना, वैदिक धर्म और विकास, मेरी आत्मकथा (१९५४) तथा पंच कोश और सूक्ष्म जगत् (१९६४)

वि. अ.—मेरी आत्मकथा : आर्य साहित्य मण्डल अजमेर से प्रकाशित।

पं. गंगाप्रसाद विद्यार्थी

विद्यार्थीजी का जन्म माघ कृष्णा प्रतिपदा १९७६ वि. (६ जनवरी १९२०) को कानपुर जिले के गहलों नामक ग्राम में श्री मूलचन्द शर्मा के यहाँ हुआ। इन्होंने डाक और तार विभाग में सेवा आरम्भ की और संभागीय अभियन्ता के पद से १९७७ में अवकाश लिया। सेवा निवृत्ति के पश्चात् आप संस्कृत अध्ययन में प्रवृत्त हुए और महारानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर से प्रथम श्रेणी में संस्कृत में एम. ए. किया। तदनन्तर 'अथर्ववेद में दाम्पत्य जीवन' विषय लेकर १९८७ में उसी विश्वविद्यालय से एम. फिल. की उपाधि ग्रहण की। मार्च १९८८ से आप आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश एवं विदर्भ के मासिक मुख पत्र 'आर्य सेवक' का सम्पादन कर रहे हैं। आपकी विभिन्न विद्वतापूर्ण रचनायें परोपकारी, सार्वदेशिक, आर्य जगत् आदि पत्रों में प्रकाशित होती रहती हैं। 'पाणिनीय अष्टाध्यायी' तथा 'धातुपाठ' पर लिखी आपकी हिन्दी व्याख्यायें अभी अप्रकाशित हैं।

व. प.—१७५ जयनगर जबलपुर (म. प्र.)—४८२००२।

डा. गंगाराम गर्ग

डा. गर्ग का जन्म १२ अप्रैल १९२४ को करनाल जिले के अन्तर्गत कोहंड ग्राम में लाला मुन्शीराम के यहाँ हुआ। पंजाब विश्वविद्यालय से उन्होंने पी-एच. डी. की उपाधि ग्रहण की। वे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक तथा कुलसचिव के पद पर रहे हैं। स्वामी दयानन्द की निर्वाण शताब्दी के अवसर पर डा. गर्ग ने 'World Perspectives on Swami Dayanand Saraswati' शीर्षक ग्रन्थ का सम्पादन किया। इसमें आपने ऋषि दयानन्द पर एतद्देशीय तथा अन्य देशों के विद्वानों ने विचारपूर्ण लेखों का संग्रह किया है। इसे कन्सेप्ट पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली ने १९८४ में

प्रकाशित किया। इनकी एक अन्य पुस्तक Encyclopaedia of Indian Literature (संस्कृत, पालि, प्राकृत और अपभ्रंश) में अनेक आर्यसमाजी लेखकों का विवरण एकत्र किया गया है।

व. प.—II ४ वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर, हरिद्वार—२४९४०७

गंगाराम पाठक

इन्होंने गुरुकुल कांगड़ी का इतिहास (१९०२–१९३७) लिखा है।

श्री गंगाराम वानप्रस्थी

हैदराबाद (आंध्रप्रदेश) के निवासी श्री गंगाराम 'वर्णाश्रम पत्रक' नामक पत्र के सम्पादक हैं। ७ फरवरी १९८४ को इन्होंने वानप्रस्थ में प्रवेश किया। 'ऋषिचरित्रप्रकाश' नामक आपकी एक पुस्तक धर्म ग्रन्थ प्रकाशक संघ हैदराबाद से १९४६ में छपी।

व. प.—५–३–३८७ तोपखाना मार्ग, हैदराबाद—५०००१२ (आंध्रप्रदेश)।

गंगासहाय शर्मा

शर्माजी ने एक कर्मकाण्ड का ग्रन्थ कर्मप्रभाकर (आह्निक कृत्य) लिखा था। यह १९३३ में प्रकाशित हुआ।

पं. गंडाराम

पं. गंडाराम आर्य शहीद पं. लेखराम के चाचा थे। इनके पिता का नाम नारायणसिंह था। पशुबध निषेध तथा मांसाहार खण्डन में आपकी पुस्तक 'वकीले हैवानात' उर्दू में प्रकाशित हुई। इसका दूसरा संस्करण १९१३ में छपा। आपने उर्दू में पं. लेखराम का जीवनचरित्र भी लिखा है। इनका नाम था स्वानेह ऊमरी पं. लेखराम।

श्री गजानन्द आर्य

परोपकारिणी सभा के वर्तमान मन्त्री गजानन्द आर्य का जन्म ९ अगस्त १९३० को राजस्थान के शेरड़ा ग्राम में श्री लालमन आर्य के यहाँ हुआ। आर्यसमाज की विचारधारा आपको पैतृक दाय के रूप में मिली। अपने व्यावसायिक दायित्वों को निभाते हुए भी आपने आर्यसमाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों को कभी विस्मृत नहीं किया। १९८५ में उन्हें परोपकारिणी सभा का सदस्य चुना गया और १९८६ में वे इस सभा के मन्त्री निर्वाचित हुए।

ले. का.—१. आर्यसमाजोदय, २. वीरांगना महारानी कैकेयी—(१९८६) ३. आर्यसमाज की मान्यतायें (१९८६)। आपके विद्वतापूर्ण लेख आर्यसमाज के पत्रों में प्रायः प्रकाशित होते रहते हैं।

व. प.—सुक्षिति, १९–बालीगंज सर्क्यूलर रोड़, कलकत्ता—७०००१९।

श्री गणपतिराय अग्रवाल

ये सरदारशहर जिला चूरू (राजस्थान) के निवासी थे। आपने इस्लाम विषयक साहित्य लिखा था।

ले. का.—खूनी इतिहास—(१९२४), इस्लाम धर्म की समीक्षा—(१९२४), विश्वासघात।

पं. गणपति शर्मा

शास्त्रार्थ महारथी, अद्वितीय वाग्मी तथा दार्शनिक पं. गणपति शर्मा का जन्म राजस्थान के चूरू नगर में १९३० वि. (१८७३) में पाराशर गोत्रीय पारीक ब्राह्मण पं. भानीरामजी के यहाँ हुआ। पिता पं. भानीराम पौरोहित्य के साथ-साथ वैद्यक का व्यवसाय भी करते थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा चूरू में ही हुई। व्याकरण तथा साहित्य में आपने अच्छा नैपुण्य प्राप्त कर लिया। राजस्थान में आर्यसमाज के महान् प्रचारक, स्वामी दयानन्द के प्रत्यक्ष शिष्य पं. कालूरामजी के उपदेशों से गणपति शर्मा आर्यसमाजी बने। २२ वर्ष की अवस्था में इन्होंने आर्यसमाज में प्रवेश किया। उनकी वाग्मिता तथा तर्क शक्ति का परिचय आर्य जनता को तब मिला जब १९६० वि. के कांगड़ी गुरुकुल के प्रथम वार्षिकोत्सव पर उनकी वक्तृता से श्रोतागण चमत्कृत हुए।

पं गणपति शर्मा के व्याख्यानों और शास्त्रार्थों की धूम आर्यसमाज में सर्वत्र व्याप्त रही। ईश्वर-सिद्धि तथा

वेदों की अपौरुषेयता पर उनके व्याख्यान सहस्रों की उपस्थिति में सुने जाते थे। शास्त्रार्थों में उन्होंने अनेक पण्डितों, पादरियों तथा अन्य मतावलम्बियों को पराजित किया था। खेद है कि वक्तृत्व कला-कुशल गणपति शर्मा की लेखबद्ध एकमात्र कृति 'ईश्वर भक्ति विषयक व्याख्यान' ही है जो शंकरदत्त शर्मा द्वारा वैदिक पुस्तकालय मुरादाबाद से प्रकाशित हुई थी। ३९ वर्ष की अल्पायु में पं. गणपति शर्मा का २७ जून १९१२ को जगरांव (पंजाब) में निधन हुआ।

वि. अ.—पं. गणपति शर्मा : भवानीलाल भारतीय

श्री गणेश जनार्दन अगाशे

जिस समय स्वामी दयानन्द ने पूना में अपने प्रसिद्ध व्याख्यान दिये, उस समय इस नगर की हाई स्कूल के सहायक मुख्याध्यापक श्री गणेश जनार्दन अगाशे बी. ए. ने तत्काल इन व्याख्यानों का मराठी अनुवाद कर डाला था। यही व्याख्यान मराठी में प्रकाशित वे प्रसिद्ध व्याख्यान हैं जो कालान्तर में 'उपदेशमंजरी' के रूप में हिन्दी में प्रकाशित हुए थे। अगाशेजी ने इन मराठी व्याख्यानों की एक प्रति स्वामी दयानन्द के जीवनचरित के स्वनामधन्य लेखक पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय को प्रदान की थी।

पं. गणेशदत्त शर्मा 'इन्द्र'

मध्यप्रदेश के जिला शाजापुर के आगर कस्बे के निवासी पं. गणेशदत्त शर्मा प्रौढ लेखक तथा साहित्यकार थे। इनका जन्म १९५१ वि. में हुआ। उन्होंने अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की है। २० मार्च १९९० को उनका निधन हुआ।

ले. का.—विश्व का प्रथम राष्ट्र गीत (अथर्ववेद के भूमि सूक्त का हिन्दी-अंग्रेजी पद्यानुवाद—(१९६४), योगासन, वेद में स्त्रियां, आर्यसमाज की महत्ता—१९२७, पुजारीजी नरक में क्यों? (१९२१), वैदिक पताका, उपदेश-कुसुमांजलि, वीर कर्ण, अर्जुन, भीम, भीष्म, अभिमन्यु आदि महाभारतीय वीरों के जीवनचरित, स्त्रियों के व्यायाम, स्वास्थ्योपदेश आदि।

गणेशदास आनन्द

स्यालकोट निवासी गणेशदास वर्मा (बाद में आनन्द लिखने लगे) ने १९२० के असहयोग आन्दोलन में भाग लिया और जेल गये। यहाँ रह कर आपने स्वामी दयानन्द कृत आर्याभिविनय का उर्दू अनुवाद किया। इस वैदिक-प्रार्थना पुस्तक में अभिव्यक्त राष्ट्रीय भावों को हृदयंगम कर श्री आनन्द ने इसका अत्यन्त भावप्रवण अनुवाद किया था। आर्याभिविनय का यह उर्दू अनुवाद 'स्वराज्य पथ प्रदर्शक' अथवा 'प्रार्थना रहस्य' शीर्षक से दो खण्डों में छपा था। इनके अन्य ग्रन्थ हैं—प्राचीन आर्य राजनीति तथा प्राचीन आर्य सभ्यता।

लेखक ने इन ग्रन्थों की रचना जेल में की थी, अतः इन्हें 'तोहफाए जेल' ग्रन्थमाला शीर्षक से नारायणदत्त सहगल एण्ड सन्स लाहौर ने छापा था। श्री आनन्द की दो अन्य पुस्तकों का भी उल्लेख हुआ है—काग हंस परीक्षा तथा मेघ और उनकी शुद्धि।

श्री गणेशनारायण सोमानी

श्री गोपीनाथ सोमानी के पुत्र तथा जयपुर के प्रसिद्ध आर्यसमाजी कार्यकर्त्ता श्री गणेशनारायण सोमानी का जन्म एक प्रतिष्ठित माहेश्वरी वैश्य परिवार में ११ सितम्बर १८७७ को हुआ। आपने बी. ए. तक शिक्षा प्राप्त की। आप आर्यसमाज जयपुर के सदस्य तथा सक्रिय कार्यकर्त्ता रहे तथा वर्षों तक इस समाज के प्रधान भी रहे। आपने १९३२ में यूरोप के अनेक देशों की यात्रा की थी। आप जयपुर राज्य तथा अन्यत्र भी अनेक प्रतिष्ठित पदों पर रहे। आपकी अग्रजा श्रीमती गुलाबदेवी (चाचीजी) ने अजमेर में नारी शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया था।

ले. का.—मेरी यूरोप यात्रा—१९३२।

पं. गणेशप्रसाद शर्मा

आर्यसमाज के प्राचीन पत्र भारतसुदशाप्रवर्त्तक के सम्पादक तथा सफल लेखक पं. गणेशप्रसाद शर्मा जन्मना स्वामी दयानन्द के ही सजातीय औदीच्य ब्राह्मण थे। इनका निवास फर्रुखाबाद था, जहाँ स्वामीजी ने एकाधिक

बार निवास किया था। इनका जन्म १९१९ वि. (१८६२) में हुआ था। शर्माजी स्वामीजी के सम्पर्क में आये तथा उनके भक्त एवं अनुयायी बन गये। प्रारम्भ में वे शैवमतावलम्बी थे, किन्तु स्वामी दयानन्द के सान्निध्य में रहकर उन्होंने वैदिक मत को अंगीकार कर लिया था। भारतसुदशाप्रवर्तक का सम्पादन उन्होंने लगन के साथ कई वर्षों तक किया। उनका हस्तलेख सुन्दर तथा सुडौल था। अतः स्वामीजी उन्हें लेखक अथवा लिपिक के रूप में अपने साथ रखना चाहते थे, किन्तु शर्माजी पारिवारिक परिस्थितियों के कारण स्वामीजी के साथ नहीं रह सके। 'फर्रुखाबाद का इतिहास' लिखकर जहाँ गणेशप्रसाद शर्मा ने अपने जिले के भौगोलिक, ऐतिहासिक तथा पुरातात्त्विक इतिवृत्त को प्रस्तुत किया है, वहाँ इस नगर में स्वामी दयानन्द के विभिन्न समयों में आगमन के वृत्तान्त को पूर्ण सत्यता के साथ निबद्ध कर डाला है। उनका निधन १९३२ ई. के मार्च मास में हुआ।

ले. का.—१. फर्रुखाबाद का इतिहास—(१९३१), २. वैदिक विजय—(१९०२), ३. श्रीयुत स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज की कुछ दिनचर्या—स्वामीजी की आत्मकथा का सम्पादित संस्करण, १८८७ में लीथो से प्रकाशित, ४. ईश्वर सिद्धि—(१८८७), ५. ईश्वर की सत्ता (१८९९), ६. ईश्वर का स्वरूप और गुण, कर्म, स्वभाव, ७. ईश्वर प्राप्ति के उपाय, ८. ईश्वर भक्ति और उसकी प्राप्ति (१९००), ९. जीव विचार, १०. आवागमन भाग—१ (१८९७), ११. पुरुषार्थ, १२. जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय (१८९७), १३. मत निर्णय : तुलनात्मक अध्ययन (१८९८), १४. सामाजिक स्तुति प्रार्थनोपासना, १५. आर्यसमाज के उपकार, १६. पुराणोत्पत्ति (१८९४), १७. पुराण लीला (१८९७), १८. भागवत व्यवस्था (१८९७), १९. नमूना भागवत, २०. भागवत के दोष, २१. हवन यज्ञ के लाभ (१८८९), २२. होम यज्ञ (१८९८), २३. भोजन विवेक, २४. विद्यार्थी शिक्षा, २५. भजन विनोद, २६. मांस खाने के दोष, २७. वृक्षों में जीव निर्णय, २८. ओंकार की व्याख्या (प्रणव व्याख्या), २९. गायत्री व्याख्या (गुरुमंत्र व्याख्या), ३०. महाव्याहृति व्याख्या, ३१. स्त्री शिक्षा, ३२. वीर्य रक्षा, ३३. झींगुर महातम (प्रहसन), ३४. द्रौपदी कीचक (उपन्यास), ३५. भूत निर्णय-अर्थात् भूत लीला (१८९७), ३६. मद्यदोष (१८९७), ३७. रजस्वला विवाह विवेक (१९०३), ३८. वेदसार का लवेदपन—(राव रोशनसिंह लिखित वेदसार का खण्डन), ३९. वेद महिमा—(आर्य-समाज के तृतीय नियम की व्याख्या) (१८९६), ४०. गंगा की महिमा (१९०१)।

पं. गणेशप्रसाद शर्मा के उपर्युक्त ग्रन्थों में से अधिकांश पहले पत्र-पत्रिकाओं में छप जाते थे, कालान्तर में उन्हें ही पुस्तक रूप में पृथक्शः प्रकाशित किया जाता था। फर्रुखाबाद में इनकी एक पुस्तकों की दूकान—'आर्य गुर्जर पुस्तकालय' के नाम से चलती थी।

गणेश रामचन्द्र शर्मा

शर्माजी महाराष्ट्र प्रान्त के निवासी थे, किन्तु इनका कार्यक्षेत्र राजस्थान रहा। ये जोधपुर (मारवाड़) राज्य की ओर से आर्यसमाज के वैतनिक प्रचारक के रूप में कार्य करते रहे। शर्माजी ने स्वामी दयानन्द के पूना में दिये गये कुछ व्याख्यानों का मराठी से हिन्दी में भाषान्तर किया था। ये अनूदित व्याख्यान इस प्रकार प्रकाशित हुए थे—१. ईश्वर सिद्धि विषयक व्याख्यान, २. धर्माधर्म विषयक, ३. वेद विषयक, ४. जन्म विषयक, ५. यज्ञ संस्कार विषयक, ६. इतिहास विषयक।

ये सभी व्याख्यान १९५० वि. में आर्य पुस्तक प्रचारिणी सभा राजस्थान द्वारा वैदिक यन्त्रालय, अजमेर में मुद्रित होकर प्रकाशित हुए।

श्री गणेशीलाल

आर्यसमाज के प्रारम्भ कालीन लेखकों में आपका नाम आता है। आपकी एक अंग्रेजी पुस्तक The Arya-Samaj Catechism or the Indian Youth's moral companion आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा १८८६ में प्रकाशित हुई। ये अपने को F.A.S. (Fellow Arya Samaj) कहते थे और अपने नाम के आगे ऐसा ही लिखते भी थे।

ठाकुर गदाधरसिंह (१)

ठाकुर गदाधरसिंह का नाम हिन्दी के उन प्रारम्भिक लेखकों में आता है, जिन्होंने यात्रा वृतान्त लिखने में पहल की। इनका जन्म ग्राम बगौछा जिला हरदोई में एक मध्यमवर्गीय राजपूत परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम ठाकुर दरियावसिंह था। गदाधरसिंह का जन्म १९२६ वि. (अक्टूबर १८६९) में हुआ जबकि इनके पिता बंगाल की पांचवीं नैटिव इन्फैन्ट्री में सूबेदार के पद पर वाराणसी में नियुक्त थे। बचपन में ही ठाकुर गदाधरसिंह को स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं ने प्रभावित किया और उन्होंने स्वामीजी के ग्रन्थों को ध्यानपूर्वक पढ़ा। १७ वर्ष की आयु में एन्ट्रेन्स तक पढ़कर गदाधरसिंह भी अपने पिता की पल्टन में ही भर्ती हो गए। सेना में रहने के कारण इन्हें बर्मा, चीन तथा इंग्लैण्ड की यात्रा का अवसर मिला, फलतः विदेश यात्राओं का वृत्तांत लिखने में इनकी सहज अभिरुचि जागृत हुई।

१९००-०२ में अपनी पलटन के साथ ठाकुर साहब चीन गये, जिसका रोचक वर्णन उन्होंने अपनी पुस्तक 'चीन में तेरह मास' में किया। इसे ग्रन्थकार ने ही १९०३ में लखनऊ से प्रकाशित किया। इनकी द्वितीय कृति 'हमारी एडवर्ड तिलक यात्रा' है जिसमें लेखक के इंग्लैण्ड यात्रा विषयक संस्मरण लिखे गये हैं। ठाकुर साहब का तीसरा ग्रन्थ 'रूस जापान युद्ध' था, जो दो भागों में छपा। १९वीं शती के हिन्दी भाषा के उन्नायकों में गदाधरसिंह का नाम स्मरणीय है। १५ अक्टूबर १९७४ वि. को इनका देहान्त हो गया। मिश्रबन्धुओं के अनुसार ये कानपुर जिले के संचैड़ी ग्राम के निवासी थे।

ठाकुर गदाधरसिंह (२)

स्वामी दयानन्द के जीवन को आधार बना कर हिन्दी महाकाव्य 'दयानन्दायन' की रचना करने वाले महाकवि ठाकुर गदाधरसिंह का जन्म मार्गशीर्ष ९ सं. १९३५ वि. (१८७८) को बनारस जिले के ग्राम प्रभुपुरा में हुआ। इनके पिता का नाम ठाकुर जानकीसिंह तथा माता का नाम दुखना देवी था। आपकी शिक्षा हिन्दी व उर्दू की हुई। १९०५ से १९२० तक आपने गुरुकुल कांगड़ी, ऋषिकुल हरिद्वार तथा बर्मा में रहकर हिन्दी का अध्यापन किया। महात्मा गांधी द्वारा प्रवर्तित स्वतन्त्रता-संग्राम में भी आपने सक्रिय रूप से भाग लिया था। आपका निधन १८ जनवरी १९३० को काशी में हुआ।

ले. का.—१, दयानन्दायन महाकाव्य (२०११ वि.) २. धर्मवीर हकीकतराय (खण्डकाव्य), ३. धर्मवीर फतेहसिंह तथा जोरावरसिंह (गुरु गोविन्दसिंह के पुत्रों) के बलिदान की कहानी, ४. भरत महिमा सतसई (७०० दोहों का काव्य), ५. भृगुवंश बावनी (५२ पद्यों का काव्य), ६. किनाराम का चरित (अघोर पंथी साधु का जीवन-चरित)।

बाबू गदाधरसिंह

काशी नागरी प्रचारिणी सभा का पुस्तकालय 'आर्यभाषा पुस्तकालय' के नाम से जाना जाता है और यह भारत में हिन्दी की प्रकाशित पुस्तकों का सबसे बड़ा भण्डार है। यह पुस्तकालय बाबू गदाधरसिंह द्वारा स्थापित किया था और कालान्तर में उन्होंने इसे सभा को अर्पित कर दिया। ऋषि दयानन्द हिन्दी को 'आर्य भाषा' नाम से पुकारते थे। बाबू गदाधरसिंह भी ऋषि के अनुयायी और भक्त थे। अतः उन्होंने अपने व्यक्तिगत पुस्तकालय को 'आर्यभाषा पुस्तकालय' नाम दिया और स्वप्रयत्नों से इसे बढ़ाते रहे। उन्हीं श्री गदाधरसिंह द्वारा स्थापित 'आर्यभाषा पुस्तकालय' का लाभ आज सहस्रों शोध विद्वानों और छात्रों द्वारा लिया जा रहा है।

बाबू गदाधरसिंह का जन्म १९०५ वि. (१८४८) में हुआ। इनके पिता रामसहायसिंह काशी की कमिश्नरी में मुन्शी थे। १८६८ में गदाधरसिंह ने एंट्रेंस परीक्षा पास की। कुछ समय तक इन्हें हरिश्चन्द्र स्कूल में १६ रु. मासिक पर अध्यापन कार्य भी करना पड़ा। १८७१ में राजा शिवप्रसाद की सहायता से उन्हें बन्दोवस्त विभाग में नौकरी मिल गई और ये कानपुर चले गये। बाद में १८७४ में आजमगढ़ में कानूनगो नियत हुए। १८८३ में पेशकार पद पर नियत होकर वे मिर्जापुर आये और

१८९३ तक इसी पद पर योग्यतापूर्वक कार्य करते रहे। नौकरी के साथ साथ गदाधरसिंह ने साहित्य सेवा भी की। १८७८ में उनकी प्रथम कथा कृति 'कादम्बरी' प्रकाशित हुई। यह वाणभट्ट रचित 'कादम्बरी' का सीधा अनुवाद न होकर उसके किसी बंगला रूपान्तर पर आधारित स्वतन्त्र हिन्दी कृति है।

इन्होंने रमेशचन्द्रदत्त के बंगला उपन्यास 'बंग विजेता' का अनुवाद भी किया जो १८८३ में भारत जीवन प्रेस काशी में मुद्रित हुआ। पुस्तक के मुख्य पृष्ठ पर छपा था—बंग विजेता—जिसे गदाधरसिंह सरिश्तेदार, कलेक्टरी मिर्जापुर ने बंगभाषा से शुद्ध आर्य भापा में उलथा किया। इसके अतिरिक्त बंकिमचन्द्र के दुर्गेशन-नंदिनी उपन्यास तथा शेक्सपियर के नाटक आथेलो का अनुवाद भी गदाधरसिंह ने किया।

पत्नी का निधन हो जाने और कोई सन्तान न होने के कारण १८८४ में बाबू गदाधरसिंह ने एक पुस्तकालय की स्थापना अपने उत्तराधिकारी के रूप में की। धीरे-धीरे पुस्तकों की संख्या बढ़ती गई। १८९० तक यह पुस्तकालय मिर्जापुर में ही रहा परन्तु इसी वर्ष के समाप्त होते होते वे इसे काशी ले आये। इसी बीच इनका स्थानान्तरण इटावा हो गया। यहाँ उन्हें ज्ञात हुआ कि पुस्तकालय की स्थिति अच्छी नहीं है, तो वे दो वर्ष का अवकाश लेकर १८९६ में काशी आ गये। नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना १८९३ में हो चुकी थी और बाबू गदाधरसिंह १८९४ से ही उसके सभासद थे। इसलिये उन्होंने यही उचित समझा कि पुस्तकालय का प्रवन्ध सभा को दे दिया जाय। फलतः यह पुस्तकालय सभा को दे दिया गया और तब से निरन्तर उसमें संगृहीत पुस्तकों की वृद्धि होती रही। आर्य भाषा पुस्तकालय के संस्थापक, साहित्य सेवी बाबू गदाधरसिंह की मृत्यु २० जुलाई १८९८ (१९५५ वि.) को हो गई परन्तु उनकी कीर्ति उक्त पुस्तकालय के रूप में चिरस्थायिनी है।

गायत्री देवी

देवीजी अलीगढ़ जिले के ग्राम जलालपुर निवासी श्री गिरेन्द्रसिंह वर्मा की पुत्री थीं। इन्होंने सुन्दर काव्य रचना की है। आपने उस युग में प्रचलित राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त की शैली का अनुसरण किया है। रामानुज लक्ष्मण को नायक बना कर उन्होंने आदर्श त्यागी लक्ष्मण (१९७७ वि.) नामक १२१ पद्यों का खण्डकाव्य लिखा जिस पर गुप्तजी के 'जयद्रथवध' की स्पष्ट छाप है। उनका कारुण्य भारती (१९७७ वि.) काव्य गुप्तजी के काव्य 'भारती भारती' से प्रभावित है।

श्रीमती गार्गी माथुर

आर्यसमाज के विख्यात शोध विद्वान् डा. भवानीलाल भारतीय की सुपुत्री गार्गी माथुर का जन्म २८ अक्टूबर १९५४ को जोधपुर में हुआ। इनकी शिक्षा गवर्नमेंट कालेज अजमेर में हुई जहाँ से इन्होंने प्रथम श्रेणी में एम. ए. (हिन्दी) की परीक्षा उत्तीर्ण की। इनका विवाह ११ फरवरी १९८२ को जोधपुर निवासी श्री महेशचन्द्र माथुर से सम्पन्न हुआ। 'अजमेर क्षेत्र के आर्यसमाजी साहित्यकारों की हिन्दी साहित्य को देन' इनका लघु शोध-प्रबंध है। इन्होंने १९७७ में आर्यसमाज कलकत्ता द्वारा 'भारतीय स्वाधीनता संग्राम में आर्यसमाज का योगदान' विषय पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता (१९७७) में भाग लेकर द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया। यह निबंध आर्यसंसार के विशेषांक में प्रकाशित हो चुका है।

ब. प.—हनुमान चौक, खांडा फलसा, जोधपुर—३४२००१.

डा. ग्राहम, जेम्स रीड

अमेरिका निवासी डा. ग्राहम का जन्म १९०७ में हुआ। इन्होंने पंजाब में अध्यापन कार्य किया। आर्यसमाज से परिचय प्राप्त करने पर आपने येल विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. करने का विचार किया और प्रो. जे. सी. आर्चर के निर्देशन में AryaSamaj as a Reformation in Hinduism with Special Reference to Caste. शीर्षक विषय पर शोध प्रवन्ध लिखकर १९४३ में शोध-उपाधि ग्रहण की। यह शोध प्रवन्ध यद्यपि प्रकाशित नहीं हुआ है किन्तु १९८४ में इसकी फोटो स्टेट प्रति यूनीवर्सिटी माइक्रोफिल्म्स इण्टरनेशनल मिशिगन (यू. एस. ए.) द्वारा उपलब्ध कराई गई है। प्रस्तुत शोध प्रवन्ध आर्यसमाज पर

लिखा गया प्रथम शोध कार्य है तथा किसी विदेशी द्वारा लिखा गया प्रथम शोध-प्रबन्ध है।

श्री गिरधारीलाल शर्मा

उत्तरप्रदेश के निवासी श्री शर्मा ने महापण्डित विष्णु शर्मा द्वारा निबद्ध नीति ग्रन्थ हितोपदेश का दोहा-चौपाई शैली में पद्यानुवाद किया था। १९०१ में स्वामी प्रेस मेरठ से यह पुस्तकाकार छपा।

ठाकुर गिरिवरसिंह वर्मा

श्री वर्मा का जन्म चांदीख (उत्तरप्रदेश) में हुआ। आपके द्वारा लिखित 'पोप प्रदीप' नामक एक पुस्तक अत्यन्त लोकप्रिय हुई। इसका प्रथम संस्करण १९४३ वि. (१८८६) में छपा। तिमिरनाशक प्रेस काशी ने इसका दूसरा संस्करण १८८९ में छापा। भास्कर प्रेस मेरठ से १९१२ में एक अन्य संस्करण निकला। 'जगत्-हितैषी' नामक आपकी एक अन्य कृति भी छपी थी।

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी

अनुपम मेधावी पं. गुरुदत्त का जन्म २६ अप्रैल १८६४ को मुलतान (पाकिस्तान) में श्रीरामकृष्ण के यहाँ हुआ। उनकी उच्च शिक्षा लाहौर में हुई जहाँ विज्ञान विषय लेकर उन्होंने एम. ए. की परीक्षा पास की। उन दिनों विज्ञान के स्नातकों को भी एम. ए. की ही उपाधि दी जाती थी। २० जून १८८० को वे लाहौर आर्यसमाज के सभासद बने और स्वामी दयानन्द के रुग्ण होने पर उनकी सेवा सुश्रूषा के लिएं उक्त आर्यसमाज ने उन्हें लाला जीवनदास के साथ अजमेर भेजा। स्वामी दयानन्द केदेहान्त के पश्चात् जब लाहौर के आर्य पुरुषों ने अपने आचार्य की स्मृति में डी. ए. वी. कालेज स्थापित करने का संकल्प किया, तो पं. गुरुदत्त इस कार्य की पूर्ति में सर्वात्मना लग गये। यों तो इनका सम्पूर्ण जीवन ही आर्यसमाज के कार्य के लिये समर्पित था, किन्तु उनकी प्रबल इच्छा रही कि स्वामी दयानन्द के स्मारक रूप डी. ए. वी. कालेज लाहौर में वेदादि शास्त्रों तथा संस्कृत भाषा एवं साहित्य का उच्च स्तरीय अध्ययन-अध्यापन प्रचलित किया जाय। इसके लिये उन्हें अपने साथियों और सहयोगियों के साथ संघर्ष भी करना पड़ा। १९ मार्च १८९० को अल्पावस्था में ही पं. गुरुदत्त का निधन हो गया। जुलाई १८८९ में पं. गुरुदत्त ने वैदिक मैगजीन नामक एक उच्च कोटि की शोधपत्रिका निकाली, जिसके कुछ ही अंक निकल पाये। उनका समस्त लेखन अंग्रेजी में हुआ।

ले. का.—वैदिक संज्ञा विज्ञान—१. (The Terminology of the Vedas) वेदार्थ को समझने में सहायक इस ग्रन्थ को ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में रक्खा गया था (१८८८), यह आर्य पत्रिका के ११ जुलाई, १ अगस्त, १९ सितम्बर तथा १० अक्टूबर १८८२ के अंकों में धारावाही छपा था, २. The Terminology of the Vedas and the European Scholars.(1889), यह उक्त पुस्तक का ही परिशिष्ट है जिसमें प्रो. मैक्समूलर तथा प्रो. मोनियर विलियम्स की वेदार्थ विषयक धारणाओं का खण्डन किया गया है, ३. ईश, मुण्डक तथा माण्डूक्य उपनिषदों की व्याख्या, 4. Vedic Text No. 1, 2, 3 इनके अन्तर्गत ऋग्वेद १. २. १. ऋग्वेद १. २. ७ तथा ऋग्वेद १.५०. १-३ इन पाँच मंत्रों की वैज्ञानिक व्याख्या की गई है। कतिपय अन्य ग्रन्थ—Evidences of the Human Spirit. (1889) Pecuniomania. (1889). The Realities of Inner life. Criticism of Monier William, Indian Wisdom. 1893 A Reply to Mr. Williams' Criticism on Niyoga. (1890).

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी के कुछ अन्य स्फुट लेख—

1. Conscience and the Vedas, with reference to the BrahmoSamaj., 2. Religious Sermons. (Criticism of a book entitled Short Sermons and Essays on Religious subjects by a Punjabi Brahmo.), 3. A Reply to some Criticism of Svamiji's Veda Bhashya., 4. Origin of thought and Language : 1. Virjanand Press Lahore 1888, 2. Arya Society, Lahore 1893 5. Man's Progress Downwards., 6. Righteouness or Unrighteosness of Flesh Eating., 7. A

Reply to Mr. T. Williams' letter on 'Idolatory in the Vedas.' 8. Mr. T. Williams on Vedic Text No. 1 (The Atmosphere), 9. Mr. Pincot on the Vedas.

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी के सभी ग्रन्थों के संग्रहों का विवरण—

1. The Works of Late Pandit Gurudatta Vidyarthi M. A. with a Biographical Sketch. Edited by Jiwan Das Pensionor, Vice-President Lahore Arya Samaj. The Aryan printing publishing & General Trading Co. Ltd. Lahore.

इनके तीन संस्करण निकले—

1897 I Ed., 1902 II Ed., 1912 III Ed.

2. Wisdom of the Rishis or Works of Pt. Gurudatta Vidyarthi M. A with a Biographical Sketch by Pt. Chamupati M. A. Edited by (Swami) Vedanand Tirth. Rajpal & Sons Lahore 1912 and Sarvadeshik Pustakalya Delhi 1959.

उक्त ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद गुरुदत्त लेखावली शीर्षक से पं. भगवद्दत्त तथा पं. सन्तराम ने संयुक्त रूप से किया। इसके अब तक तीन संस्करण (१९१८ में लाहौर से, १९६० में गोविन्दराम हासानन्द से तथा १९८६ में वेद प्रचारक मण्डल नई दिल्ली से) निकल चुके हैं।

वि. अ.—पं. गुरुदत्त विद्यार्थी—ले. डा. रामप्रकाश।

वैद्य गुरुदत्त

प्रसिद्ध कथा लेखक तथा चिन्तक गुरुदत्त का जन्म ८ दिसम्बर १८९४ को लाहौर के एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार में हुआ। रसायन में एम. एस-सी. करने के पश्चात् वे गवर्नमेंट कालेज, लाहौर में डिमान्स्ट्रेटर बने। कुछ काल तक नेशनल स्कूल लाहौर के मुख्याध्यापक भी रहे। जीविका निर्वाह के लिये उन्होंने वैद्यक सीखी और देश विभाजन से पूर्व ही दिल्ली आकर रहने लगे। कालान्तर में उन्होंने वैद्यक के साथ साथ लेखन को भी अपनाया और शताधिक उपन्यासों की रचना की। इसके अतिरिक्त वेद, उपनिषद्, दर्शन तथा गीता आदि धर्म-ग्रन्थों की भी स्वविचारानुकूल व्याख्यायें लिखीं। वे आर्यसमाज की विचारधारा से स्वयं को सम्वद्ध मानते थे। ८ अप्रैल १९८९ को उनका दिल्ली में निधन हो गया।

ले. का.—महर्षि दयानन्द जीवनचरित्र—१९८१ तथा वेद, उपनिषद्, दर्शन, गीता आदि शास्त्रों पर मौलिक चिन्तनयुक्त अन्य अनेक ग्रन्थ।

पं. गोकुलचन्द्र दीक्षित 'चन्द्र'

श्री दीक्षित का जन्म इटावा जिले के लखना ग्राम में मार्गशीर्ष शुक्ला ११ सं. १९४४ वि. को पं. चन्द्रिका-प्रसाद के यहाँ हुआ। मैट्रिक तक अध्ययन करने के पश्चात् ये भरतपुर (राजस्थान) आ गये। एक आर्य संन्यासी के सम्पर्क में आकर दीक्षितजी भी आर्यसमाजी बन गये। इन्होंने भरतपुर राज्य में नौकरी की, किन्तु १९३० के सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने के कारण इन्हें कारावास का दण्ड तो मिला ही, राज्य सेवा से भी मुक्ति मिल गई। दीक्षितजी द्वारा रचित साहित्य परिमाण में विपुल हैं।

ले. का.—दर्शन शास्त्रों के भाष्य—दीक्षितजी ने सांख्य, योग, वैशेषिक तथा मीमांसा दर्शन (तृतीय अध्याय पर्यन्त) का हिन्दी भाष्य किया। उनकी दर्शन विषयक दो अन्य पुस्तकों 'योगविधि' तथा 'षड्दर्शन सम्पत्ति' का भी उल्लेख मिलता है। स्वामी दर्शनानन्द रचित प्रायः सभी ग्रन्थों का उर्दू से हिन्दी में अनुवाद करने का श्रेय श्री दीक्षित को ही है। स्वामीजी के उपनिषद् भाष्य (ईश से लेकर माडूक्य पर्यन्त उपनिषदों की उर्दू टीका), गीता भाष्य तथा सांख्य, न्याय तथा वेदान्त दर्शन के उर्दू भाष्यों का हिन्दी अनुवाद भी उन्होंने किया। स्वामी दर्शनानन्द के अधिकांश ट्रैक्ट, जो दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह के अन्तर्गत संगृहीत किये गये, दीक्षितजी के द्वारा ही अनूदित किये गये हैं। इस संग्रह का पूर्वार्द्ध १९७१ वि. में तथा उत्तरार्द्ध १९३८ में छपा। इनके द्वारा सांख्य कारिका (ईश्वर-कृष्ण लिखित) तथा विदुर नीति की टीका भी लिखी गई।

डा. गोकुलचन्द नारंग

सुप्रसिद्ध शिक्षाविद्, राजनीतिज्ञ तथा व्यवसायी डा. गोकुलचन्द नारंग का जन्म पंजाब के वद्दोके गोसाईं नामक ग्राम में १७ नवम्बर १८७८ को हुआ था। इनकी उच्च शिक्षा लाहौर में हुई। एम. ए. करने के पश्चात् ये लाहौर के डी. ए. वी. कालेज में (१९०१-०७ तक) इतिहास के प्राध्यापक रहे। कालान्तर में इन्होंने इंग्लैण्ड से बैरिस्टरी पास की और लाहौर चीफ कोर्ट में १९१० से १९३० तक वकालत करते रहे। आर्यसमाज की प्रवृत्तियों में डा. नारंग ने प्रारम्भ से ही रुचि ली तथा महात्मा हंसराज के सहयोगी के रूप में कार्य किया। डा. नारंग के विचार हिन्दुत्व के प्रति निष्ठा को लिये हुए थे। राजनीति में डा. नारंग की गहरी रुचि थी। ये पंजाब के स्वायत्त शासन मंत्री भी रहे। इनका निधन १९६९ में हुआ।

ले. का.—१. The Luther of India—यंगमेन्स आर्यसमाज ट्रैक्ट सोसाइटी, लाहौर द्वारा १९१२ में प्रकाशित। इसी का एक अन्य संस्करण ईश्वरचन्द्र आर्य ट्रैक्ट सोसाइटी, लाहौर ने १९१३ में तथा आर्यसमाज कालीकट (केरल) ने १९२४ में प्रकाशित किया, २. Teachings of Swami Dayanand.. ३. Message of the Vedas १९०७ में यंगमेन्स ट्रैक्ट सोसाइटी, लाहौर से प्रकाशित। १९४६ में न्यू बुक सोसाइटी द्वारा पुनः प्रकाशित, ४. Real Hinduism, ५. Transformation of Sikhism. (डा. नारंग की शोध उपाधि के लिये लिखा गया प्रबन्ध), ६. गीता सार, ७. हकीकतराय का जीवन चरित।

पं. गोपदेव

तेलुगु भाषा में आर्यसाहित्य का प्रणयन करने वाले पं. गोपदेव का जन्म आन्ध्रप्रदेश के गुन्टूर जिले में तेनाली तालुके के अन्तर्गत कुचिपुड़ी ग्राम में श्री रामैया तथा माता श्रीमती अम्बाम्बा के यहाँ १८९८ में हुआ। अध्ययन समाप्त कर इन्होंने स्वग्राम में कुछ काल तक अध्यापन किया। तत्पश्चात् पं. गोपदेव लाहौर स्थित दयानन्द उपदेशक विद्यालय में रहकर वैदिक सिद्धान्तों का अध्ययन करने लगे। तत्पश्चात् दर्शनशास्त्र का विशद् अध्ययन करने के लिये वे गुरुकुल पोठोहार (रावलपिण्डी) के आचार्य पं. मुक्तिराम के समीप रहे तथा उसके बाद काशी आकर पं. देवनारायण तिवारी से व्याकरण, पं. चिन्न स्वामी से मीमांसा तथा पं. महादेव शास्त्री से न्यायदर्शन का अध्ययन किया। १९४० में वे पुनः आन्ध्र प्रदेश लौटे और हैदराबाद सत्याग्रह में अपना योगदान किया। उन्होंने अपने ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना की। १ मार्च १९८४ को आन्ध्र विश्वविद्यालय ने उन्हें कलाप्रपूर्ण की मानद उपाधि से सम्मानित किया।

ले. का.—मीमांसा को छोड़कर पाँचों वैदिकदर्शनों की तेलुगु टीका, उपनिषदों तथा गीता का तेलुगु अनुवाद, स्वामी दयानन्द रचित सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, व्यवहारभानु, आर्योद्देश्यरत्नमाला, आर्याभिविनय, गोकरुणानिधि, वेदान्तिध्वान्तनिवारण तथा भागवत-खण्डन का तेलुगु अनुवाद। पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के आस्तिकवाद तथा Worship शीर्षक ग्रन्थों का तेलुगु अनुवाद। पं. ईश्वरचन्द्र दर्शनाचार्य कृत अर्थधर्म मीमांसा तथा पं. मुक्तिराम उपाध्याय रचित वैदिक-गीता का तेलुगु अनुवाद। कुछ अन्य ग्रन्थ जिनका तेलुगु अनुवाद पं. गोपदेव ने किया—स्वामी दयानन्द जीवनचरित, हेतुवादी दयानन्द, ईशावास्योपनिषद् प्रवचन, आर्य गृहिणी, ऐसुक्रिस्तु रहस्य जीवन, वैदिक दिनचर्या (पंचमहायज्ञविधि)।

व. प.—कुचिपुड़ी (गुन्टूर, आन्ध्रप्रदेश)।

पं गोपाल बी. ए.

पं. गोपाल गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के मुख्याधिष्ठाता थे। इन्होंने उपनिषदों तथा भारतीय दर्शनों पर अनेक महत्त्वपूर्ण एवं मार्मिक व्याख्या ग्रन्थ लिखे हैं।

ले. का.—सांख्य सुधा अर्थात् सांख्य दर्शन का सरस, सुबोध तथा सुन्दर भाष्य। प्राच्य साहित्य सेवा मण्डल नई दिल्ली (१९८५ वि.), योगामृत—(योगदर्शन की टीका) योगदर्शन का अंग्रेजी अनुवाद—The yoga Darsan of Patanjali (१९४१)। वेदान्त विज्ञान भाग—१ वेदान्तदर्शन के प्रथम अध्याय की टीका (१९४०),

उपनिषद् रहस्य, ईशोपनिषद्—अँग्रेजी तथा हिन्दी में सरस अनुवाद, गीतामृत, दर्शन तथा गीता (१९५४) विचार वाटिका, विचार-संयम।

पं. गोपाल ने प्राच्य साहित्य सेवा मण्डल की स्थापना की तथा अपने ग्रन्थों को यहीं से छपाया। इनका कार्य-क्षेत्र मुख्यतया दिल्ली ही था।

पं. गोपालदास देवगण शर्मा

शर्माजी डैडलैटर ऑफिस लाहौर में क्लर्क थे। इन्होंने लाला लाजपतराय लिखित 'महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती और उनका काम' शीर्षक उर्दू ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद किया जो १९५५ वि. में प्रथम बार लाहौर से प्रकाशित हुआ। अष्टाध्यायी-पाणिनीय सूत्रों का सुगम उदाहरणों सहित भाषानुवाद इनकी एक अन्य कृति है, जो लाला रामसहाय नरूला द्वारा लाहौर से प्रकाशित हुई।

पं गोपालराव हरि देशमुख (लोकहितवादी)

स्वामी दयानन्द के भक्त एवं सहयोगी पं. गोपालराव हरि का जन्म १८ फरवरी १८२३ को हरिपन्त देशमुख के यहाँ पुणे में हुआ। अध्ययन समाप्त कर ये सरकारी सेवा में प्रविष्ट हुए और अनेक पदों पर कार्य करते-करते जिला एवं सत्र न्यायाधीश के पद तक पहुँचे। १८७७ में दिल्ली दरबार के अवसर पर उन्हें 'राव बहादुर' की उपाधि प्रदान की गई। १८७९ में उन्होंने सरकारी सेवा से अव-काश ग्रहण किया। वे बम्बई विश्वविद्यालय के फैलो रहे तथा १८८० से १८८२ तक बम्बई धारा सभा के सदस्य भी रहे। १८७४ में देशमुख की स्वामी दयानन्द से बम्बई में भेंट हुई और वे उनके अनुयायी बन गये। पं. गोपाल-राव ने ही स्वामीजी को वेदभाष्य करने की प्रेरणा दी थी। वे नासिक तथा बम्बई की आर्यसमाजों के प्रधान रहे तथा स्वामी दयानन्द ने उन्हें परोपकारिणी सभा का सदस्य मनोनीत किया। १८९३ में उनका निधन हुआ।

यों तो पं. गोपालराव ने अनेक ग्रन्थ लिखे हैं जो इतिहास, राजनीति, समाज सुधार, धर्म आदि से सम्बन्धित हैं, किन्तु स्वामी दयानन्द के जीवन एवं व्यक्तित्व का अनुशीलनपरक उनका एक विस्तृत निबन्ध 'पं स्वामी श्री मद्दयानन्द सरस्वती' शीर्षक उनके द्वारा सम्पादित मासिक लोकहितवादी के जनवरी-फरवरी १८८४ के संयुक्त अंक में छपा। इसका हिन्दी अनुवाद पं. कुशलदेव शास्त्री ने किया है। यह निबन्ध 'ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से सम्बद्ध महत्त्वपूर्ण अभिलेख, (सम्पादक: युधिष्ठिर मीमांसक) में संगृहीत है।

वि. अ.—लोकहितवादी : काल आणि कर्तृत्व, डा. निर्मलकुमार फड़कुले

पं. गोपालराव हरि पुणतांकर (गोपाल शास्त्री, शर्मा)

स्वामी दयानन्द के जीवनकाल में ही उनकी प्रथम हिन्दी जीवनी लिखने वाले पं. गोपालराव हरि महाराष्ट्र-वासी थे। इनका जन्म वैष्णव कुल में हुआ। वे जीविका हेतु मथुरा में रहे। यहाँ उन्हें वैष्णव सम्प्रदाय में प्रचलित नाना प्रकार की विकृतियों और अनाचारों को निकट से देखने का अवसर मिला। फलतः वे वैष्णव मत से विमुख हो गए। झाँसी और इटावे में उन्हें राजकीय सेवा के कारण रहना पड़ा। उस समय महाराष्ट्र के सुधारक विष्णु बुवा ब्रह्मचारी कृत 'वेदोक्तधर्मप्रकाश' नामक ग्रन्थ इन्हें पढ़ने के लिए मिला। इस ग्रन्थ से उन्हें बड़ी प्रेरणा मिली तथा कर्त्तव्याकर्त्तव्य का ज्ञान हुआ। तत्पश्चात् १९२५ वि. में फर्रूखाबाद रहते समय आपका सम्पर्क स्वामी दयानन्द से हुआ तो इनके विचारों में आमूलचूल परिवर्तन आ गया। फलतः आपने वैदिक धर्म की दीक्षा ली तथा फर्रूखाबाद में आर्यसमाज की स्थापना (१२ जुलाई १९७९) में सहयोग दिया। १ अक्टूबर १८७९ को जब आर्यसमाज के पदाधिकारियों का चुनाव हुआ तो पं. गोपालराव को मन्त्री पद पर निर्वाचित किया गया।

पं. गोपालराव हरि शिक्षा विभाग में सब डिप्टी-इन्सपैक्टर थे। पाठशालाओं के निरीक्षण हेतु जाते समय भी आप धर्म प्रचार की भावना से अनुप्राणित रहते थे। कालान्तर में सरकारी सेवा में रहते हुए भी आपने कांग्रेस का कार्य किया। १८८४ में आपने सरकारी सेवा से अव-

काश लिया। १९०० में आपका निधन हुआ, ऐसा अनुमान 'फरूखाबाद के इतिहास' से ज्ञात होता है।

ले. का.—१. दयानन्द दिग्विजयार्क—लेखक की यह सर्वप्रमुख कृति है। यह तीन खण्डों में प्रकाशित हुई। स्वामीजी के जीवनकाल में इसके दो खण्ड छपे। इनका द्वितीय संस्करण संवत् १९४४ वि. (१८८७) में लीथो में छपा। तृतीय खण्ड फतहगढ़ यंत्रालय फतहगढ़ से १८८७ (१९४४ वि.) में छपा। इस ग्रन्थ में स्वामीजी के जीवन तथा व्यक्तित्व के सम्बन्ध में प्रथम बार ऐतिहासिक सामग्री प्रामाणिक रूप से संगृहीत की गई है। आगे के जीवनी लेखकों ने इस ग्रन्थ को आधार रूप में प्रयुक्त किया है। इसका संशोधित संक्षिप्त संस्करण डा. भवानी-लाल भारतीय द्वारा सम्पादित होकर २०३१ (सितम्बर १९७४) में आर्यसाहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली से प्रकाशित हुआ।

२. पाखण्डतिमिर नाशक पत्रचन्द्रिका—१९७८ में थियोसोफिकल सोसाइटी के संस्थापक कर्नल हेनरी एस. ऑल्काट ने अमेरिका से स्वामी दयानन्द के नाम पत्र भेज कर अपनी संस्था को आर्यसमाज की शाखा बनाना स्वीकार किया था। कालान्तर में जब सैद्धान्तिक मतभेद के कारण आर्यसमाज और थियोसोफिकल सोसाइटी का सम्बन्ध विच्छेद हो गया, तो पं गोपालराव हरि ने कर्नल ऑल्काट द्वारा लिखे गए उक्त आठ पत्रों का हिन्दी रूपान्तर उक्त नाम से प्रकाशित किया।

३. तिमिरनाशक तृतीय खण्ड सार—राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द रचित 'इतिहास तिमिरनाशक' के तृतीय भाग का खण्डन।

४. सुन्दरी सुधार—नारी शिक्षा विषयक यह महत्त्व-पूर्ण ग्रन्थ १९५१ वि. (१८९५) में गोधर्मप्रकाश यंत्रालय फरूखाबाद में छपा।

५. प्रस्ताव रत्नाकर—(१८९०)।

६. ज्ञान सागर। 'दयानन्द दिग्विजायार्क' के तृतीय खण्ड की समाप्ति पर लेखक ने 'मदीय वृतम्' शीर्षक आत्म-वृत्तान्त लिखा है।

पं. गोपाल शास्त्री, दर्शन केसरी

बिहार प्रान्त के सिवान मंडल के अन्तर्गत जगन्नाथपुर ग्राम में पं. गोपालशास्त्री का जन्म १८९२ में हुआ। आपने संस्कृत का अध्ययन करने के उपरान्त १९२१ से १९४७ तक काशी विद्यापीठ में संस्कृत का अध्यापन किया। पुनः वेद-वेदांग महाविद्यालय जोशीमठ के आचार्य पद पर पर्याप्त समय तक कार्य करते रहे। विचारों की दृष्टि से आप सनातनधर्मी थे, किन्तु पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के प्रगाढ समर्थक एवं साथी होने के कारण शास्त्रीजी पाणिनीय शैली से संस्कृत अध्ययन करने और कराने के प्रबल समर्थक थे। वे स्वामी दयानन्द की प्रगतिशील विचारधारा के भी परम प्रशंसक तथा उदार विचारों से युक्त थे। आपने पाणिनीय पद्धति पर अनेक ग्रन्थ लिखे हैं। वे काशी की पण्डित सभा के अध्यक्ष भी रहे। उनकी संस्कृत सेवाओं के लिए राष्ट्रपति ने उन्हें १९७६ में सम्मानित किया तथा उत्तरप्रदेश की संस्कृत अकादमी ने १५००० रु. का सर्वोच्च पुरस्कार भी प्रदान किया। आपका निधन जून १९८३ में वाराणसी में हुआ।

ले. का.—१. वेद का अर्थ यज्ञपरक ही नहीं?, २. महर्षि दयानन्द प्रतिपादित वैदिकदर्शनम्—यह शास्त्रीजी की पुस्तक 'षड्दर्शन समन्वय' का एक अंश है, जो प्रज्ञा देवी द्वारा सम्पादित होकर चौधरी प्रतापसिंह करनाल द्वारा १९८१ में प्रकाशित हुआ। व्यवहारभानु का संस्कृत अनुवाद (१९७१)

पं गोवर्धन शास्त्री

गुरुकुल काँगड़ी के अध्यापक पं गोवर्धन शास्त्री का जन्म १८८१ में पाकिस्तान के डेरा गाजी खाँ जिले के तोशा शरीफ नामक ग्राम में हुआ था। १९०५ में गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर से बी. ए की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् आप गुरुकुल काँगड़ी में अध्यापक हो गये और १९१४ पर्यन्त इसी पद पर रहे। गुरुकुल में अध्यापन करते समय स्वामी श्रद्धानन्द की प्रेरणा से आपने भौतिक-विज्ञान एवं रसायन-शास्त्र पर हिन्दी में पाठ्य पुस्तकें लिखीं तथा प्रसिद्ध विचारक रूसो की एक कृति का अनुवाद 'माँ और बच्चा' शीर्षक से किया। दिल्ली से आपने

प्रह्लाद नामक साप्ताहिक पत्र का भी सम्पादन किया और रामजस हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक पद पर रहे। कालान्तर में आपने संस्कृत विषय लेकर एम.ए. (१९१८) तथा एम. ओ. एल. (१९२२) की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। आपने डेरा इस्माइलखाँ के अनेक विद्यालयों का संचालन किया। १९ मार्च १९२७ को उनका डेरा इस्माइल खाँ में ही निधन हो गया। आपकी 'वेदों का अनादित्व' शीर्षक कृति गुरुकुल कांगड़ी से १९१४ में प्रकाशित हुई।

श्री गोविन्दराम हासानन्द

आर्यसमाज के लब्धप्रतिष्ठ साहित्य प्रकाशक श्री गोविन्दराम हासानन्द का जन्म १८८६ में सिंध प्रान्त के शिकारपुर नगर में एक वैष्णव परिवार में हुआ था। आपके पिता श्री हासानन्द प्रसिद्ध गोसेवक तथा गोभक्त थे। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा बम्बई में हुई परन्तु १८९९ में आप कलकत्ता गये और स्वदेशी वस्तुओं की बिक्री का कार्य आरम्भ किया। आप आर्यसमाज कलकत्ता (विधान सरणी) के सदस्य बन गये तथा अनेक पदों पर कार्य किया। इसी समय आपने 'गोविन्दराम हासानन्द' नाम से साहित्यप्रकाशन का कार्य आरम्भ किया और आर्यसमाज से सम्बन्धित सैकड़ों उत्कृष्ट ग्रन्थों का प्रकाशन किया। १९२५ में स्वामी दयानन्द की जन्मशताब्दी के अवसर पर आपने सत्यार्थप्रकाश को प्रकाशित कर सस्ते मूल्य में बेचा। १९३९ में आप दिल्ली आ गये और वहाँ से अपने प्रकाशन कार्य को द्विगुणित उत्साह के साथ आरम्भ किया। १९५२ में आपने 'वेदप्रकाश' मासिक पत्र तथा वेदप्रकाश ट्रैक्टमाला निकालना आरम्भ किया जिसके माध्यम से अनेक उपयोगी पुस्तिकाओं का प्रकाशन हुआ। २५ फरवरी १९६० को आपका दिल्ली में निधन हो गया।

ले. का.—ईसाइयों का भयंकर षड्यन्त्र—वेदप्रकाश माला संख्या ४५ के अन्तर्गत प्रकाशित।

गोविन्दलाल प्रणवधारी, आर्य भटनागर

श्री भटनागर फिरोजपुर से प्रकाशित होने वाले आर्य-गजट के सम्पादक थे। 'रहनुमाए हक' शीर्षक ईसाई मत की आलोचना विषयक इनकी एक पुस्तक १८८६ में प्रकाशित हुई थी।

गोविन्दलाल बंसीलाल पित्ती

बम्बई के विख्यात औद्योगिक पित्ती परिवार में गोविन्दलाल पित्ती का जन्म १८९१ में हुआ। इनके पिता श्री बंसीलाल प्रसिद्ध उद्योगपति थे। यह परिवार प्रारम्भ से ही आर्यसमाज का अनुयायी रहा है। श्री गोविन्दलाल १९३१ से १९३६ तक आर्यसमाज बम्बई के प्रधान रहे। इनकी संस्कृत व्याकरण में विशेष रुचि थी। आचार्य रुद्रमित्र शास्त्री के सहयोग से श्री पित्ती ने वैदिक व्याकरण भास्कर (१९६३) की रचना की जिसमें वैदिक व्याकरण को सुबोध शैली में व्याख्यात किया गया है। व्याकरण विषयक श्री पित्ती की एक अन्य पुस्तक 'लिट् और लुङ् लकार की रूपबोधक सरल विधि' रामलाल कपूर ट्रस्ट से प्रकाशित हुई है। १९७४ में इनका बम्बई में निधन हो गया।

श्री गौरमोहन देव बर्मन, विद्या विनोद

बंगला भाषी श्री बर्मन ने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का बंगला में अनुवाद किया। सत्यार्थप्रकाश का संक्षिप्त एवं सुबोध बंगला संस्करण भी इन्होंने तैयार किया जो सरल सत्यार्थप्रकाश शीर्षक से छपा। 'यज्ञोपवीत' पर इनकी एक अन्य बंगला पुस्तक भी छपी।

गोस्वामी घनश्याम शर्मा

मुलतान निवासी पं. घनश्याम शर्मा गोस्वामी यद्यपि पौराणिक मतावलम्बी थे, किन्तु आर्यसमाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द के प्रति उनके हृदय में बड़ी आस्था थी। इसका कारण यह बताया जाता है कि पं. घनश्याम काशी के महान् विद्वान् पं. बालशास्त्री रानाडे के शिष्य थे। यद्यपि पं. बालशास्त्री ने १८६९ में काशी में स्वामी दयानन्द से मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ किया, तथापि वे स्वामी दयानन्द के विचारों के प्रशंसक भी थे तथा अपने शिष्यों से प्रायः कहते रहते थे कि यदि सत्पथ पर चलना चाहते हो तो दयानन्द के बताये मार्ग पर चलो। वही पथ सत्य

तथा निर्भ्रान्त है । जब लोग उनसे यह पूछते कि यदि वे स्वामी दयानन्द निर्दिष्ट विचारधारा को सत्य मानते हैं तो स्वयं उस पर क्यों नहीं चलते ? इसके उत्तर में पं. बाल शास्त्री कहा करते—"हम संसारी व्यक्ति हैं जो मानापमान, हानि-लाभ, निन्दा-स्तुति से ऊपर नहीं उठ पाये हैं, अतः दयानन्द प्रतिपादित मत को स्वीकार करने में असमर्थ हैं ।"

काशी से अध्ययन समाप्त कर गोस्वामी घनश्याम मुलतान लौटे और वहां अष्टाध्यायी क्रम से विद्यार्थियों को संस्कृत पढ़ाते रहे । पं. ठाकुरदत्त शर्मा (अमृतधारा के प्रवर्तक) ने उनसे संस्कृत पढ़ी थी । १९०६ में आर्यसमाज के एक अन्य विद्वान् स्वामी वेदानन्द तीर्थ, जो उस समय ब्रह्मचारी यशवन्त के नाम से जाने जाते थे, भी १९०६ के आरम्भ में मुलतान आकर गोस्वामीजी से अध्ययन करने लगे । गोस्वामीजी ने 'मनुमांसाशन निषेधः' शीर्षक एक पुस्तक लिखी थी जिसमें मनुस्मृति में आये मांसभक्षण विषयक प्रकरणों का समुचित समाधान किया गया है । उनका एक अन्य ग्रन्थ 'अथ मांस निषेध' १८९२ में छपा था ।

श्री घनश्यामसिंह गुप्त

श्री घनश्यामसिंह गुप्त का जन्म २२ दिसम्बर १८८५ को मध्यप्रदेश के दुर्ग नगर में हुआ । इनकी शिक्षा बी. एस-सी., एल-एल. बी. तक हुई । स्वाधीनता आन्दोलन में गुप्तजी ने सक्रिय भाग लिया । स्वाधीनता प्राप्त होने के पश्चात् ये मध्यप्रदेश की विधानसभा के स्पीकर पद पर रहे । आर्यसमाज द्वारा संचालित हैदराबाद (दक्षिण) सत्याग्रह के समय श्री गुप्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान थे और इस धर्म युद्ध में उन्होंने आर्यसमाज को समुचित नेतृत्व प्रदान किया था । इसी प्रकार १९४६ में सिंध में सत्यार्थप्रकाश की जब्ती के विरोध में चलाये गये आर्य सत्याग्रह तथा १९५७ में पंजाब के हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भी आर्यसमाज को गुप्तजी के परिपक्व नेतृत्व का लाभ मिला था । गुप्तजी अपने जीवन के आरम्भिक काल में गुरुकुल कांगड़ी में विज्ञान के अध्यापक भी रहे थे । १२ जून १९७६ को आपका निधन हुआ ।

ले. का.—१. भारत विद्यादर्श—गुरुकुल कांगड़ी के साहित्य परिषद् में पठित निबन्ध (१९१३) २. राष्ट्रीय एकीकरण और आर्यसमाज (१९६२) ३. पंजाब का हिन्दी-आन्दोलन, ४. पंजाब की भाषा समस्या और आर्यसमाज, ५. Language Agitation in the Punjab., ६. The case of Arya Samaj., ७. A Commentary on Arya Marriage Act.

पं. घासीराम

पं. घासीराम का जन्म कार्तिक पूर्णिमा सं. १९२९ को मेरठ नगर में लाला द्वारिकादास के यहाँ हुआ । इनकी शिक्षा आगरा में हुई जहाँ से उन्होंने १८९६ में एम. ए. और एल. एल. बी. की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं । तत्पश्चात् वे जसवन्त कालेज, जोधपुर में दर्शन एवं तर्कशास्त्र के प्रवक्ता के पद पर नियुक्त हुए किन्तु १९०१ में इस कार्य को छोड़ कर मेरठ आ गये । कुछ काल तक उन्होंने मेरठ में वकालत भी की, किन्तु इस व्यवसाय में उन्हें विशेष सफलता नहीं मिली, इसमें उनकी रुचि भी नहीं थी । वे आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के वर्षों तक प्रधान रहे । ३० नवम्बर १९३४ को उनका निधन हो गया । पं. घासीराम को हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, बंगला और अंग्रेजी आदि भाषाओं का प्रौढ ज्ञान था । वे हिन्दी तथा अंग्रेजी के सफल लेखक थे ।

ले. का.—१. गीता का उर्दू पद्यानुवाद, २. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का अंग्रेजी अनुवाद (१९२५), ३. महात्मा नारायण स्वामी कृत ईशोपनिषद् भाष्य का अंग्रेजी अनुवाद, ४. भक्ति सोपान ।

पं. घासीराम का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य ऋषि दयानन्द के जीवन के गवेषक पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय लिखित बंगला जीवनचरित का अनुवाद एवं सम्पादन है । मुखोपाध्यायजी द्वारा लिखित ऋषि के प्रथम जीवनचरित (१८९४) का हिन्दी अनुवाद पं. घासीराम ने किया जो प्रथम बार १९१२ में भास्कर प्रेस मेरठ द्वारा छपा । जब देवेन्द्र बाबू ने अपने एतद् विषयक विशद अनुसंधान के बाद ऋषि जीवन का पुनर्लेखन आरम्भ किया और चार अध्याय पर्यन्त लिखकर दिवंगत हो गये, तो पं.

घासीराम ने इस सामग्री को काशी से अधिगत किया और ग्रन्थ को पूरा कर दो खण्डों में आर्य साहित्य मण्डल, अजमेर से १९३३ में प्रकाशित कराया। यदि देवेन्द्र बाबू को पं. घासीराम की मैत्री और सहयोग नहीं मिलता, तो उनके द्वारा संगृहीत ऋषि दयानन्द के जीवनचरित विषयक आधारभूत बहुमूल्य सामग्री पाठकों के समक्ष नहीं आ पाती।

श्रीमती चंचलबेन माणेकलाल पाठक

स्वामी दयानन्द की जन्मस्थली टंकारा को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर आजीवन सामाजिक सेवा में लगी रहने वाली चंचलबेन का जन्म १८८४ में हुआ। इनके प्रयत्न से ही टंकारा में आर्यसमाज की स्थापना हुई। वर्षों तक ये इस ग्राम में आर्यपुत्री पाठशाला का संचालन करती रहीं। नवम्बर १९६४ में इनका टंकारा में ही निधन हो गया।

ले. का.—१. आदर्श जीवन, २. आपणी विचार सरणि, ३. धर्मनुं स्वरूप अणे जीवन साथे सम्बन्ध। ४. अगम्य पन्थ के यात्री को आत्मदर्शन।

चक्खनलाल वेदार्थी

आगरा निवासी श्री वेदार्थी की निम्न रचनायें उपलब्ध होती हैं—१. ईशोपनिषद् व्याख्या २. गीता समीक्षा, (१९६२)।

श्री चतुरसेन गुप्त

श्री गुप्त का जन्म मुजफ्फरनगर जिले के शामली कस्बे में १९०६ में हुआ। यद्यपि आपको व्यवस्थित रूप से विद्याध्ययन करने का अवसर नहीं मिला, किन्तु आर्यसमाज के सम्पर्क में आने पर आपने स्वाध्याय के द्वारा ज्ञानोपार्जन किया। आपने स्वयं तो अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे ही, समय समय पर अनेक प्रकाशन संस्थाओं की स्थापना कर उनके द्वारा विभिन्न उपयोगी ग्रन्थों का प्रकाशन भी किया। ऐसे प्रकाशनों में महाभारत प्रकाशन, राष्ट्रनिधि प्रकाशन, सत्यार्थप्रकाश धर्मार्थ ट्रस्ट प्रकाशन, वैदिक धर्मशास्त्र प्रकाशन, भारतीय राजनीति प्रकाशन, सार्वदेशिक प्रकाशन तथा आर्य व्यवहार प्रकाशन आदि के नाम आते हैं। उनका निधन २३ दिसम्बर १९७३ को दिल्ली में हुआ।

ले. का.—सत्यार्थप्रकाश उपदेशामृत (१९८५), स्वर्ग में हड़ताल, साम्प्रदायिकता का नंगानाच, नेहरूजी की आर्य विचारधारा (१९५९), नरक की रिपोर्ट, काश्मीर मुसलमान कैसे बना ?, राष्ट्रपति जी के नाम ११ पत्र (१९६२), पूंजीपतियों की कहानी, भारत माँ की अश्रुधारा, ईसाइयों के खूनी कारनामे, विदेशी समाजवाद के मुँह पर चपत, गाँधी जी की गाय, पागलखाने से, मैं बुद्धू बन गया, भाग्य की बातें, मैं हंसू या रोऊं, परलोक में २६ जनवरी, महान् आर्य हिन्दू जाति मृत्यु के मार्ग पर, रंगीले लाला, पुरुषार्थ प्रकाश, हे मेरे भगवान्। (आत्मकथन) (२०२९ वि.)।

पं. चन्द्रकान्त वेदवाचस्पति

पं. चन्द्रकान्त का जन्म १९०९ में नर्मदाशंकर सदाशिव त्रिवेदी के यहाँ हुआ। ये गुजराती ब्राह्मण थे। इन्होंने सौराष्ट्र के गुरुकुल सोनगढ़ में आचार्य के पद पर कार्य किया। इसके बाद गुरुकुल सूपा के भी आचार्य रहे। काशी की पण्डित परिषद् ने इन्हें 'वेद मनीषी' की उपाधि प्रदान की थी। आप हिन्दी और संस्कृत के उत्तम वक्ता तथा सुलेखक थे। १९५२ में इनका निधन हुआ। पं. चन्द्रकान्त ने १९८८ वि. (१९३२) में गुरुकुल कांगड़ी से 'वेदमन्त्रों के यौगिक अर्थ' शीर्षक शोध-प्रबन्ध लिखकर वेदवाचस्पति की उपाधि प्राप्त की थी।

पं. चन्द्रगुप्त वेदालंकार

प्रसिद्ध वाग्मी तथा इतिहासवेत्ता पं. चन्द्रगुप्त वेदालंकार का जन्म १९१५ में पश्चिमी पंजाब के गोविन्दगढ़ नामक स्थान में हुआ था। इनके पिता श्री लक्ष्मणदास स्टेशन मास्टर थे। चन्द्रगुप्त का शिक्षण गुरुकुल कांगड़ी में हुआ, जहां से आपने १९३७ में वेदालंकार की उपाधि ग्रहण की। १९४० में आप वीर सावरकर, भाई परमानन्द तथा डा. श्यामप्रसाद मुखर्जी के साथ हिन्दू महासभा की राजनीति में प्रविष्ट हुए। आप अपने व्याख्यानों के लिए प्रसिद्ध थे। १९४५ में आपका निधन हो गया।

ले. का.—१. बृहत्तर भारत, १९३९, २. अन्तर्ज्वाला, ३. स्वातन्त्र्य वीर सावरकर (जीवनी) १९३९, ४. राष्ट्र-भाषा क्या हो ? १९३७ ।

चन्द्रनारायण सक्सेना

बरेली निवासी श्री सक्सेना का जन्म १९०१ में हुआ । आप व्यवसाय से वकील थे । आपने स्वामी दयानन्द के मथुरा में विद्याध्ययन प्रसंग को लेकर 'गुरु-धाम' शीर्षक एक सुन्दर नाटक लिखा । इसका प्रकाशन काल २०११ वि. है । स्वामी दयानन्द के एक अन्य जीवन प्रसंग को लेकर आपने 'कर्णवास' शीर्षक नाटक लिखा था । आपके द्वारा लिखे अन्य नाटकों की संख्या १२ के लगभग है ।

चन्द्रपालसिंह यादव 'मयंक'

कवि मयंक का जन्म १ सितम्बर १९२५ को बाबू परमेश्वरीदयालसिंह के यहाँ हुआ । इनकी शिक्षा एम. ए. तथा एल. एल. बी. की हुई । आप कानपुर की आर्य-सामाजिक गतिविधियों में निरन्तर भाग लेते रहे हैं । मयंक बाल साहित्य के सफल प्रणेता तथा कवि हैं । उनकी लगभग २० काव्य कृतियाँ प्रकाशित हुई हैं । व्यवसाय से आप वकील हैं ।

ले. का.—महर्षि दयानन्द सरस्वती, देश हमारा, भारत के रत्न आदि काव्य संग्रह ।

ब.प.—२६१ फेथफुलगंज, कानपुर छावनी २०८००४

प्रो. चन्द्रप्रकाश आर्य

श्री आर्य का जन्म १ सितम्बर १९४२ को राजस्थान के चूरू जिले के धानौठी ग्राम में श्री दिलसुखराय के यहाँ हुआ । इन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से हिन्दी तथा संस्कृत में एम. ए. किया । १९६८ में श्री आर्य दयालसिंह कालेज करनाल में हिन्दी के प्रवक्ता पद पर नियुक्त हुए । आजकल वे इसी कालेज में हिन्दी के स्नातकोत्तर विभाग के अध्यक्ष हैं । अखिल भारतीय प्राच्य विद्या परिषद् के विभिन्न अधिवेशनों में आपने अनेक शोधपत्र प्रस्तुत किये हैं । आपका निबन्ध संग्रह 'मानवता के नाम' शीर्षक से प्रकाशित हो चुका है ।

ब. प.—हिन्दी विभाग, दयालसिंह कालेज, करनाल (हरयाणा) ।

पं. चन्द्रभानु सिद्धान्तभूषण

पं. चन्द्रभानु का जन्म फाल्गुन पूर्णिमा सं. १९६५ वि. (६ मार्च १९०९) को मेरठ जिले के मवाना कलां नामक कस्बे में हुआ । आपके पिता का नाम पं. मुरारि-लाल था । आपकी प्रारम्भिक शिक्षा परीक्षितगढ़, मवानां कला तथा मेरठ में हुई । १९२५ में आपने जैन हाईस्कूल पानीपत से मैट्रिकुलेशन की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की । तदनन्तर १९२५ में ही आप दयानन्द उपदेशक-विद्यालय लाहौर में अध्ययनार्थ प्रविष्ट हुए और ५ वर्ष के अध्ययन के उपरान्त 'सिद्धान्तभूषण' की परीक्षा सर्वप्रथम रहकर उत्तीर्ण की ।

पं. रामचन्द्र देहलवी के अनुरोध पर आप १९३२ में निजाम हैदराबाद में वैदिक धर्म प्रचारार्थ गये । आपके प्रभावशाली भाषणों ने निजाम राज्य के हिन्दुओं में नवीन चेतना उत्पन्न की, किन्तु शासक गण आपके निर्भीक विचारों को सहन नहीं कर सके । परिणामस्वरूप आपको राज्य से निष्कासित कर दिया गया । इसके पश्चात् आपने दिल्ली को अपना कार्यक्षेत्र बनाया । प्रथम आर्यसमाज नयाबाँस दिल्ली में पुरोहित पद पर रहे । तत्पश्चात् १ अगस्त १९३५ से २१ दिसम्बर १९८० तक निरन्तर ४५ वर्षों की दीर्घ अवधि तक आप आर्यसमाज हनुमान-रोड नई दिल्ली के पुरोहित रहे । आपका निधन २७ जुलाई १९८४ को हुआ ।

ले. का.—१. महाभारत सूक्ति सुधा—१९८४, २. वेदों के ५१ उपदेश, ३. प्रार्थना पुष्पांजलि, ४. सरल-संध्या, ५. धर्मशिक्षा, ६. आर्यसमाज हनुमान रोड का ५० वर्षीय इतिहास, ७. Gems of Wisdem culled from the Vedas.

वि. अ.—पं. चन्द्रभानु अभिनन्दन ग्रन्थ—आचार्य विक्रम द्वारा सम्पादित १९८४ ।

डा. चन्द्रभानु सोनवणे वेदालंकार

सोनवणेजी का जन्म ४ मार्च १९२९ को महाराष्ट्र के मागेरगा नामक ग्राम में हुआ। इनका अध्ययन गुरुकुल कांगड़ी में हुआ जहाँ से आपने २००८ वि. (१९५२) में वेदालंकार की उपाधि ग्रहण की। प्रारम्भ में ये डी. ए. वी. कालेज शोलापुर और लातूर में हिन्दी का अध्यापन करते रहे। तदनन्तर मराठावाड़ा विश्वविद्यालय औरंगाबाद में हिन्दी के रीडर बने। 'हिन्दी गद्य साहित्य को आर्यसमाज की देन' विषय पर आपने १९७४ में पी. एच-डी. की उपाधि प्राप्त की। इनका यह शोधग्रन्थ 'हिन्दी गद्य साहित्य' शीर्षक से १९७५ में ग्रन्थम् कानपुर ने प्रकाशित किया। आपकी एक समीक्षा पुस्तक 'भारतेन्दु के विचार : एक पुर्नविचार' पर भी आर्यसमाजी चिन्तन की छाप है। 'सत्यार्थप्रकाश: मेरी दृष्टि में' का प्रकाशन मथुरा से हुआ।

व. प.—४७ समर्थनगर, औरंगाबाद-४३१००४ (महाराष्ट्र)

पं. चन्द्रमणि विद्यालंकार

निरुक्त के भाष्यकार पं. चन्द्रमणि विद्यालंकार का जन्म १६ सितम्बर १८९१ को जालंधर में हुआ। इनके पिता का नाम श्री शालिग्राम था। १९७० वि. (१९१४) में आपने गुरुकुल काँगड़ी से विद्यालंकार की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् गुरुकुल काँगड़ी में ही आप वेदोपाध्याय के पद पर रहे। देहरादून में आपने भास्कर प्रेस की स्थापना की, जहाँ से इनके साहित्य का मुद्रण हुआ। ३० जून १९६५ को आपका निधन हो गया।

ले. का.—वेदार्थ दीपक (निरुक्तभाष्य) निरुक्त की यह सरल टीका हिन्दी भाषा में लिखी गई है। इस ग्रन्थ की मुख्य विशेषता यह है कि मन्त्रों के अर्थ करते समय टीकाकार ने स्वामी दयानन्द प्रतिपादित वेदार्थ शैली का पूरा ध्यान रक्खा है। इसका प्रथम संस्करण १९८२ वि. (१९२६) में प्रकाशित हुआ। आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला दिल्ली ने इसका नवीन संस्करण २०३३ वि. में प्रकाशित किया। श्रीमाद्वल्मीकीय रामायण—धारावाही अनुवाद तीन खण्डों में (१९५१), महर्षि पतंजलि और तत्कालीन भारत—(१९१४), स्वामी दयानन्द का वैदिक स्वराज्य (१९७८ वि.), स्वामी दयानन्द के सत्य, अहिंसा के प्रयोग—(१९४६) वेदार्थ करने की विधि (१९७२ वि.) स्वामी दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य की विषयानुक्रमणिका (१९१७), आर्ष मनुस्मृति (प्रक्षिप्त श्लोक रहित टीका), कल्याण पथ (गीता भाष्य), धम्मपद टीका।

चन्द्रमोहन आर्य

श्री आर्य का जन्म १ मार्च १९६० को जालंधर में श्री जुगलकिशोर आर्य के यहाँ हुआ। आप केन्द्रीय आर्य-युवक परिषद् दिल्ली के सक्रिय कार्यकर्ता तथा परिषद् के पाक्षिक पत्र युवा उद्घोष के संवाददाता हैं। आपने लाला रामचन्द्र धर्मार्थ ट्रस्ट दिल्ली के सहयोग से राम, कृष्ण, स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द तथा महात्मा हंसराज के सुन्दर जीवनचरित ट्रैक्टों के रूप में प्रकाशित किये हैं। मुद्रण कला तथा ब्लाक एवं डिजाइन निर्माण की कला में कुशल श्री आर्य के लेख प्रायः आर्य पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं।

व. प.—ओ. २८, प्रतापनगर दिल्ली-११०००७.

चन्द्रशंकर नर्मदाशंकर पण्ड्या

गुजराती के सिद्धहस्त लेखक श्री पण्ड्या ने 'पं. गुरुदत्त विद्यार्थी ना लेख अने तेमनु जीवनचरित्र' लिखा जो गुजराती भाषा में पं. गुरुदत्त की प्रथम जीवनी है। आर्यप्रकाश कार्यालय आणंद से यह १९१४ में प्रकाशित हुई।

श्रीमती चन्द्रावती लखनपाल

श्रीमती चन्द्रावती लखनपाल का जन्म २९ सितम्बर १९०४ को उत्तरप्रदेश के बिजनौर नगर में हुआ। आपके पिता का नाम श्री जयनारायण शुक्ल था। आपका विवाह गुरुकुल काँगड़ी के आचार्य एवं उपकुलपति श्री सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार के साथ हुआ। आप कन्या गुरुकुल देहरादून की आचार्या रहीं। स्वाधीनता संग्राम में भी आपने भाग लिया तथा कारावास का दण्ड भोगा। आपको अपनी

रचनाओं पर उच्च श्रेणी के साहित्यिक पुरस्कार प्राप्त हुए। 'स्त्रियों की स्थिति' पर हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने सेकसरिया पुरस्कार प्रदान किया तथा 'शिक्षा मनोविज्ञान' पर १९३४ में आपको मंगलाप्रसाद पुरस्कार प्राप्त हुआ। १९५२ में देश की प्रथम राज्य सभा में आपको सदस्य के रूप में राष्ट्रपति डा. राजेन्द्रप्रसाद द्वारा मनोनीत किया गया। आपने कुख्यात अंग्रेज महिला पत्रकार कुमारी कैथरिन मेयो की बदनाम पुस्तक 'मदर इण्डिया' का उत्तर लिखा जो 'मदर इण्डिया का जवाब' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। २९ मार्च १९६९ को आपका निधन हुआ।

पं. चमूपति एम. ए.

उच्चकोटि के वैदिक विद्वान्, प्रगल्भ लेखक तथा भावुक कवि पं. चमूपति का जन्म १५ फरवरी १८९३ को बहावलपुर (पाकिस्तान) में हुआ था। इनके पिता का नाम मेहता वसन्दाराम तथा माता का नाम लक्ष्मी देवी था। इनका बाल्यकाल का नाम चम्पतराय था। मैट्रिक परीक्षा पास कर ये बहावलपुर के इजर्टन कालेज में प्रविष्ट हुए। यहाँ पढते हुए आपने उर्दू में कविता लिखना आरम्भ कर दिया। सर्वप्रथम सिख धर्म के ग्रन्थ 'जपजी' का उर्दू काव्यानुवाद किया। एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् आप बहावलपुर राज्य में अध्यापक बन गये।

मेहता चम्पतराय के विचारों में अभी स्थिरता नहीं आई थी। वे प्रारम्भ में सिख धर्म की ओर आकृष्ट हुए परन्तु पुनः नास्तिकता के विचारों ने जोर मारा। इसी बीच उन्हें स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों के अध्ययन करने का सुयोग मिला। नास्तिकता की विचारधारा से तो छुटकारा मिला परन्तु अब उनका झुकाव शांकर वेदान्त की ओर हो गया। धीरे धीरे वेदान्त के प्रति भी आस्था शिथिल होने लगी, परन्तु मूर्तिपूजा के प्रति उत्साह बढ़ने लगा। अन्ततः चम्पतराय के धार्मिक विचारों की चरम परिणति आर्यसमाज द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म की विचारधारा को स्वीकार कर लेने में हुई। अब वे चम्पतराय से 'चमूपति' बन गए और राज्य सेवा को छोड़कर गुरुकुल मुलतान में चले गए। दो वर्ष तक इस गुरुकुल के अधिष्ठाता पद पर कार्य किया। आचार्य रामदेवजी की प्रेरणा से पं. चमूपति लाहौर आ गए और आर्यप्रतिनिधि सभा, पंजाब का कार्य करने लगे। १९९२ में सभा की आजीवन सेवा का व्रत लेने वाले लोगों ने 'दयानन्द सेवा सदन' की स्थापना की थी। चमूपति भी सदन के सदस्य बने और विधिपूर्वक यह प्रतिज्ञा करते हुये दीक्षा ली—"इससे पूर्व मैं सोच-समझ कर अपनी बुद्धि से स्वतन्त्रता-पूर्वक कार्य करता था। आज मैंने अपनी वह स्वतन्त्रता आर्यप्रतिनिधि सभा को अर्पण कर दी है। अब मैं वह करुंगा, जो सभा कहेगी। अब मैं अपने लिए कुछ न सोचूंगा।"

उन्होंने आर्य प्रतिनिधि पंजाब के मासिक मुख पत्र 'आर्य' का सम्पादन कार्य कुछ वर्ष लाहौर में रहकर किया। सन् १९२७ में पं. चमूपति गुरुकुल कांगड़ी में आचार्य के पद पर नियुक्त हुए। १९३३ में वे गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता बने परन्तु २ वर्ष पश्चात् इस पद से त्याग-पत्र देकर पृथक् हो गए। १५ जून १९३७ को उनका निधन हुआ।

पं. चमूपति असाधारण विद्वान् तथा लेखनी के धनी थे। हिन्दी, उर्दू तथा अंग्रेजी तीनों भाषाओं पर उनका समान रूप से अधिकार था।

ले. का.—जीवन ज्योति (सामवेद के आग्नेय पर्व की भावप्रधान व्याख्या) १. प्रथम संस्करण १९९५ वि., २. सोम सरोवर—(सामवेद के पवमान पर्व की व्याख्या) १९९१ वि., ३. यास्क युग की वेदार्थ शैलियाँ—(१९९२ वि.), ४. वेदार्थ कोष—तीन खण्डों में (स्वामी वेदानन्द तीर्थ के सहलेखन में गुरुकुल काँगड़ी से प्रकाशित) प्रथम भाग १९९१ वि. (१९३४), द्वितीय भाग १९९७ वि. (१९४०) तथा तृतीय भाग १९९६ वि. (१९३९)।

अन्य ग्रन्थ—१. संध्या रहस्य (१९७४ वि.), २. देवयज्ञ रहस्य, ३. देवयज्ञ पर आध्यात्मिक दृष्टि (१९८६ वि. १९२९), ४. वैदिक दर्शन (१९८१ वि.), ५. वैदिक-सिद्धान्त, ६. वैदिक जीवन दर्शन. ७. वैदिक तत्त्वदर्शन, ८. नीहारिकावाद और उपनिषद्—(आर्यसमाज बच्छोवाली लाहौर के उत्सव पर दिया गया व्याख्यान),

९. योगेश्वर कृष्ण—महाभारत पर आधारित कृष्ण की प्रामाणिक जीवनी, १०. हमारे स्वामी (बालोपयोगी जीवन चरित), आर्ष दर्शन, ११. ऋषि दर्शन, १२. ऋषि का चमत्कार, १३. आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का इतिहास (१९३६), १४. वृक्षों का आत्मा, १५. रंगीला रसूल (ब्रिटिश सरकार द्वारा जब्त १९२४)।

उर्दू साहित्य—१. दयानन्द आनन्द सागर (काव्य १९१८), २. भारत की भेंट (कविता), ३. हिन्दुस्तान की कहानी, ४. मरसिया ए गोखले (कविता) ५. समाज और हम, ६ तालीमी ट्रैक्ट, ७. छू मन्तर, ८. काक भुशुण्डी का लेक्चर, ९. जवाहरे जावेद (१९२६), १०. चौदहवीं का चाँद (हक प्रकाश ले. मौ. सनाऊल्ला) का खण्डन, ११. परमात्मा का स्वरूप, १२. नारा-ए तौहीद, १३. मज़हब का मक़सद, १४. गंगा तरंग (कविता), १५. वैराग्य शतक का पद्यानुवाद (अप्रकाशित), १६. सत्यार्थप्रकाश का उर्दू अनुवाद—आ. प्र. सभा पंजाब (१९३९)।

अंग्रेजी ग्रन्थ—1. The Ten Commandments of Dayanand. आर्यसमाज के दस नियमों की व्याख्या, इसी ग्रन्थ को Ten Principles of the Aryasamaj—शीर्षक से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने १९६४ में प्रकाशित किया, 2. Glimpses of Dayanand (1925)., 3. Mahatma Gandhi and the Aryasamaj., ४. यजुर्वेद के प्रथम दो अध्यायों का अंग्रेजी अनुवाद (रा. सा. चौ. प्रतापसिंह की आर्थिक सहायता से छपा)।

पं. चारुदेव शास्त्री

होशियारपुर [पंजाब] जिले के अहियापुर ग्राम में पं. रामकृष्ण तथा भाग्यवती देवी के यहाँ पं. चारुदेव का जन्म ८ मई १८९६ को हुआ। १९२१ में वे डी. ए. वी. कॉलेज लाहौर में संस्कृत के प्रवक्ता पद पर नियुक्त हुए। देश विभाजन के पश्चात् उन्होंने डी. ए. वी. कॉलेज अम्बाला में अध्यापन कार्य किया। १९५१ में आप डी. ए. वी. से सेवानिवृत्त हुए। १९७१ में राष्ट्रपति ने इनकी संस्कृत सेवाओं के लिये प्रशंसापत्र प्रदान किया तथा १९८१ में हिन्दू विश्वविद्यालय काशी ने आपको डी. लिट्. की मानार्ह उपाधि प्रदान की। १९ अप्रैल १९८७ को इनका निधन हुआ।

पं. चारुदेव शास्त्री ने भर्तृहरि के 'वाक्यपदीय' का सम्पादन किया तथा पांच खण्डों में व्याकरण-चन्द्रोदय की रचना की। व्याकरण सम्बन्धी कुछ अन्य ग्रन्थ भी आपने लिखे हैं। आपकी एक अन्य गद्य कृति श्री गांधीचरितामृतम् नामक है।

कुं. चांदकरण शारदा

राजस्थान के विख्यात आर्य नेता कुं. चांदकरण शारदा का जन्म आषाढ़ कृष्णा द्वितीया १९४५ वि. (२५ जून १८८८) को अजमेर के आर्यसमाजी नेता श्री रामविलास शारदा के यहाँ हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा डी. ए. वी. हाई स्कूल अजमेर में हुई जहाँ से १९०६ में आपने एन्ट्रेंस की परीक्षा उत्तीर्ण की। १९१० ई. में आपने गवर्नमेंट कॉलेज, अजमेर से बी. ए. पास किया और आगरा कॉलेज से एल. एल. बी. की परीक्षा पास की।

महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन से प्रेरणा लेकर शारदाजी ने स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लिया तथा कारावास की यातनायें सहन कीं। देशी राज्यों में राजनैतिक चेतना उत्पन्न करने के लिये आपने सर्वश्री गणेशशंकर विद्यार्थी, जमनालाल बजाज तथा विजयसिंह पथिक के सहयोग से राजपूताना मध्यभारत सभा की स्थापना की। परोपकारिणी सभा ने १९३० में इन्हें अपना सदस्य मनोनीत किया। भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् के मंच से आपने युवकों को आर्यसमाज का कार्य करने के लिये प्रेरित किया। वर्षों तक आप आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान व मालवा के प्रधान रहे। हैदराबाद सत्याग्रह में द्वितीय सर्वाधिकारी के रूप में आपने सत्याग्रह किया और गुलबर्गा जेल में रहे। पुनः १९४६ में सिंध में सत्यार्थप्रकाश के १४वें समुल्लास की जब्ती के विरोध में आयोजित आर्यसमाज के सत्याग्रह में भी भाग लिया। टंकारा में स्वामी दयानन्द के स्मारक की स्थापना हेतु धन संग्रहार्थ आप अफ्रीका भी गये।

टंकारा ट्रस्ट के आप प्रथम मन्त्री थे। कार्तिक शुक्ला एकादशी २०१४ वि. (४ नवम्बर १९५७) सोमवार को आपका अजमेर में निधन हुआ।

ले. का.—१. असहयोग, २. माडरेटों की पोल (१९२२), ३. दलितोद्धार (१९८१ वि.), ४. शुद्धि, ५. शुद्धि चन्द्रोदय (१९८४ वि.), ६. विधवा विवाह करो (१९८१ वि.), ७. शारदा एक्ट (१९९५ वि.), ८. हिन्दू संगठन, गुलाब देवी (चाचीजी) अभिनन्दन ग्रन्थ सम्पादन १९५४, वानप्रस्थ ग्रहण कर चांदकरण शारदा ने चन्द्रानन्द परिव्राजक नाम ग्रहण किया। इस अवधि में लिखे गये उनके ग्रन्थ—९. संध्या : आर्यों की दैनिक उपासना (२०१२ वि.), १०. सृष्टि की कहानी—भाग-१ (पुरुष सूक्त के आधार पर सृष्टि उत्पत्ति का विवेचन, ११. नोआखाली का भीषण हत्याकाण्ड (१९४६ की हृदय विदारक घटनाओं का वर्णन)।

वि. अ.—देशभक्त कुं. चांदकरणजी शारदा—(जीवनी)—भवानीलाल भारतीय तथा त्याग की धरोहर—सम्पादक क्षेमचन्द्र सुमन।

स्वामी चिदानन्द सरस्वती

शुद्धि आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने वाले स्वामी चिदानन्द का जन्म चैत्र शुक्ला ९, १९४८ वि. को हुआ था। इनका पूर्वाश्रम का नाम चन्द्रदत्त शर्मा था। आप वर्षों तक भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के मन्त्री रहे तथा शुद्धि सभा के मुखपत्र "शुद्धि समाचार" का सम्पादन किया।

ले. का.—१. शुद्धि व्यवस्था—(१९८३ वि.), २. शुद्धिसंस्कारपद्धति, ३. कालाचांद (बंगाल के ब्राह्मण युवक कालिचन्द्र द्वारा इस्लाम को ग्रहण करने की कथा) १९८५ वि.।

मुन्शी चिम्मनलाल वैश्य

नारी शिक्षा के सुप्रसिद्ध ग्रन्थ 'नारायणी शिक्षा' के लेखक चिम्मनलाल वैश्य मूलतः कासगंज (जिला एटा) के निवासी थे। मिश्रबन्धुओं ने अपने ग्रन्थ मिश्रबन्धु-विनोद में संख्या २७९३ पर उनका उल्लेख किया है तथा इनका जन्म सं. १९१० वि. (१८५४) बताया है। इनके पिता का नाम लाला टीकाराम था। ये कालान्तर में तिलहर (जिला शाहजहांपुर) में रहने लगे थे। मुन्शीजी ने आर्यसमाज के साहित्य की महती सेवा की है।

ले. का.—१. नारायणी शिक्षा—अर्थात् गृहस्थ धर्म। भारतीय नारी को शिक्षित तथा सुसंस्कृत बनाने की दृष्टि से इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना लेखक ने विगत शताब्दी के नवम दशक के उत्तरार्द्ध में की थी। इसका प्रथम प्रकाशन १८८९ में हुआ। इसमें गृहस्थ धर्मोपयोगी ५०० से अधिक विषयों का विवेचन हुआ है। पुस्तक की लोकप्रियता का पता इसी बात से चलता है कि इसके अनेक संस्करण छपे। आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने सरस्वती पत्रिका (भाग १० संख्या ७) में पुस्तक की समालोचना करते हुए इसकी उपयोगिता स्वीकार की थी। १२१वाँ संस्करण चिम्मनलाल एण्ड संस अलीगढ़ से १९५८ में प्रकाशित हुआ। २. पुत्रीउपदेश, ३. मित्रानन्द–(१८८३), ४. अनमोल रत्न (१८९१), ५. रत्नजोड़ी–(हकीम लुकमान की शिक्षाओं का संग्रह), ६. रत्न भण्डार, (रामायण से उद्धृत विभिन्न विषयों के श्लोकों का सरलार्थ सहित संग्रह), ७. मौत का डर, ८. मूर्तिपूजाविचार, ९. पुराणतत्त्व-प्रकाश–तीन भागों में प्रकाशित यह बृहत् ग्रन्थ अठारह पुराणों के व्यास रचित होने तथा उनके वेदानुकूल होने का खण्डन करता है। प्रथम भाग १९०९ में, द्वितीय १९१० में तथा तृतीय १९११ में आर्य भास्कर यन्त्रालय आगरा से मुद्रित हुए, १०. सरस्वतीन्द्र जीवन अर्थात् १०८ श्री महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी का जीवनचरित्र—पं. लेखराम रचित स्वामी दयानन्द के उर्दू जीवनचरित का आधार लेकर हिन्दी में यह जीवनी लिखी गई है, ११. नीति शिरोमणि—(विदुर नीति का भाषानुवाद १८९४), १२. वीर्यरक्षा, १३. संध्या-दर्पण, १४. गर्भाधान विधि, १५. ऋषि प्रसाद, (महात्मा शौनक का सत्योपदेश), १६. मौत का डर, १७. भरतोपदेश—(राम का भरत के प्रति उपदेश), १८. शिष्टाचार

१८९३, १९. पत्रप्रकाश, २०. ब्रह्म विचार, २१. रचनाबोधनी, २२. प्रेमधारा—(उपन्यास शैली में लिखित स्त्री शिक्षा विषयक ग्रन्थ)। इसका अन्य नाम 'नारीभूषण' भी है। श्री वैश्य ने विभिन्न ऐतिहासिक महापुरुषों के जीवन चरित भी लिखे थे, निम्न जीवन चरित प्रकाशित हुए। दशरथ, राम, लक्ष्मण, भरत, महात्मा विदुर, युधिष्ठिर, भीमसेन, अर्जुन, द्रोणाचार्य, दुर्योधन, धृतराष्ट्र, महात्मा पूरणभक्त, महारानी मंदालसा तथा पं. गुरुदत्त।

श्री चिरंजीलाल

पंजाबी भाषा के लोक कवि श्री चिरंजीलाल का जन्म १८५३ में जालन्धर जिले के राहों नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री राजाराम चोपड़ा था। चिरंजीलाल की शिक्षा मामूली उर्दू तक सीमित रही। १२ वर्ष की अल्पायु में इनका विवाह कर दिया गया। व्यापार के सिलसिले में चिरंजीलाल के पिता लुधियाना आ गये। १९७७ में स्वामी दयानन्द का पंजाब में आगमन हुआ तो उनका पहला मुकाम लुधियाने में ही रहा। चिरंजीलाल को स्वामीजी के व्याख्यान सुनने का अवसर मिला। अब तक उनका जीवन निरुद्देश्य भाव से इधर-उधर भटकने तथा आवारगर्दी तक ही सीमित था। किन्तु स्वामी दयानन्द के उपदेशों ने उनकी कायापलट कर दी। अब वे आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रचार में समय व्यतीत करने लगे। यद्यपि अधिक शिक्षित न होने के कारण वे कोई उच्च कोटि के साहित्य का निर्माण नहीं कर सके, किन्तु धार्मिक पाखण्डों, अंधविश्वासों तथा सामाजिक बुराइयों का उन्होंने अपनी कविताओं के द्वारा तीव्र खण्डन किया। उनके कृतित्व और व्यक्तित्व का उल्लेख स्वामी श्रद्धानन्द ने अपनी आत्मकथा 'कल्याण-मार्ग का पथिक' में आदर पूर्वक किया है।

श्री चिरंजीलाल का काव्य पंजाबी के बैंतों की शैली में लिखा गया है। उनके ग्रन्थों की संख्या ३० के लगभग है। इनकी भाषा पंजाबी तथा कहीं-कहीं उर्दू बहुल व खड़ी बोली है। ये रचनायें फारसी तथा गुरमुखी लिपि में छपी थीं। श्री चिरंजीलाल को उसके विरोधियों ने विष दे दिया, जिससे २६ जुलाई १८९३ को उनकी मृत्यु हो गई। इनके छोटे भाई घसीटाराम ने इनकी पुस्तकों को प्रकाशित व प्रचारित किया। उन्हें स्वयं भी देश की आजादी की लड़ाई में जेल यात्रा करने का अवसर मिला था।

ले. का.—१. नशों की सिठ—दो भाग (मादक द्रव्यों का खण्डन), २. वफातनामा वाल्दा चिरंजीलाल (अपनी माता की मृत्यु पर कवि ने यह कविता लिखी थी), ३. ब्रह्म चलित्तर—(मृतक श्राद्ध खाने वाले ब्राह्मणों पर व्यंग्य), ४. सच्ची कुर्बानी—(गुरु गोविन्द-सिंह के पुत्रों के बलिदान का इतिहास), ५. हकीकतराय-धर्मी—(वीर हकीकतराय के बलिदान का इतिहास), ६. हाफिज व मुल्ला—(मुसलमानों के धर्माधिकारियों पर व्यंग्य), ७. कलजुग के नवीन वेदान्ती (नवीन वेदान्त का खण्डन), ८. सहहरफी चिरंजीलाल—(दो भाग), ९. पोप गपूटेशन—(पौराणिक मत का खण्डन), १०. पोप-तमंचा—(पौराणिक विश्वासों का खण्डन), ११. फने-तमाशबीनी—(वेश्यानृत्य का खण्डन), १२. पोपों की चतुराई—(ढोंगी ब्राह्मणों के पाखण्डों का खण्डन, व्यंग्यपूर्ण शैली में), १३. पोप स्यापा—(पौराणिक विचारों का खण्डन), १४. किस्सा कुड़ी वेचां—(कन्या विक्रय की कुरीति का खण्डन), १५. पोप जाल दर्पण—(फलित-ज्योतिष, अनमेल विवाह आदि कुरीतियों का खण्डन), १६. कलजुग के सुथरों की करतूत (पंजाब के सुथरे फकीरों के पाखण्डों का खण्डन), १७. पोपों की सरकोबी—(पाखण्ड खण्डन विषयक कवितायें), १८. कलजुगनामा—(कलियुग के नाम पर प्रचलित अंध-विश्वासों का खण्डन), १९. किस्सा शराबी व उसकी औरत का—(नशा निवारण विषयक गीत), २०. साधु-परीक्षा—(ढोंगी साधुओं का खण्डन), २१. सराधों का मजा—(मृतक श्राद्ध खण्डन), २२. चिरंजीलाल का पोपों से पहला मुकद्दमा—(५ अप्रैल १८८८ को जो अभियोग चिरंजीलाल पर दायर किया गया उसका वर्णन), २३. पोपमुख चपेड़ [२३] पोप कपट दर्पण।

चिरंजीलाल प्रेम

वक्ता, लेखक तथा शास्त्रार्थ कर्ता चिरंजीलाल प्रेम

जालन्धर जिले के करतारपुर नामक कस्बे के निवासी थे। आपने १८९६ में पं. लेखराम से प्रेरणा ग्रहण कर धर्म प्रचार हेतु स्वयं को लगाया। आप कई वर्षों तक उर्दू आर्यमुसाफिर के सम्पादक भी रहे थे।

ले. का.—पुनर्जन्म: मृत्यु के पश्चात् (उर्दू से अनूदित, १९८९)।

डा. चिरंजीव भारद्वाज

सत्यार्थप्रकाश के प्रथम अंग्रेज अनुवादक डा. चिरंजीव भारद्वाज शाम चौरासी (जिला होशियारपुर) के निवासी थे। इनके पिता का नाम लाला काशीराम था, जो अध्यापक थे। डा. भारद्वाज का जन्म १८७४ में हुआ। इन्होंने इंग्लैण्ड में रहकर चिकित्सा-शास्त्र का अध्ययन किया और एफ. आर. सी. एस., एम. आर. सी. पी. तथा डी. पी-एच. जैसी उपाधियां प्राप्त कीं। अपने इंग्लैण्ड प्रवास काल में ही इन्होंने सत्यार्थप्रकाश के अंग्रेजी अनुवाद का कार्य प्रारम्भ किया और वहाँ रहकर सात समुल्लासों का अनुवाद पूरा कर डाला। १९०४ में ये स्वदेश लौटे। इसी वर्ष इन्हें आर्यसमाज लाहौर का प्रधान चुन लिया गया। सत्यार्थप्रकाश के अवशिष्ट समुल्लासों का अनुवाद पूरा कर १९०६ में प्रकाशित कर दिया गया। १९०८ में ये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री चुने गये। कुछ समय पश्चात् ये गुरुकुल कांगड़ी चले गये तथा अवैतनिक-रूप से वहाँ चिकित्सक का कार्य करने लगे। १९१० में ये वर्मा चले गये और वहाँ से मॉरिशस के लिये प्रस्थान किया। वहाँ 'आर्य परोपकारिणी सभा' के नाम से आर्यसमाजों का संगठन बनाया। यहाँ से इन्होंने आर्य-पत्रिका नामक एक पत्र भी निकाला। १९१४ के अन्त में डा. भारद्वाज भारत लौटे तथा ८ मई १९१५ को इनका निधन हो गया।

डा. भारद्वाज द्वारा अनूदित सत्यार्थप्रकाश के अंग्रेजी अनुवाद का प्रकाशन प्रथम बार १९०६ में यूनियन प्रिंटिंग वर्क्स लाहौर से हुआ। इसके अन्य संस्करण इस प्रकार निकले—आर्यप्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त द्वारा १९१५ में, राजपाल, लाहौर द्वारा १९२७ में, आर्यसमाज मद्रास द्वारा १९३२ में तथा सार्वदेशिक सभा द्वारा १९७५ में।

श्री चिरंजीवलाल वानप्रस्थ

आपकी निम्न कृतियों का उल्लेख मिलता है—

१. गायत्री महत्त्व, वैदिक लोरियाँ (यजुर्वेद के शिवसंकल्प मन्त्रों की व्याख्या)

स्वामी चेतनानन्द (च्यवन आर्य)

श्री च्यवन आर्य (चिमनलाल आर्य) का जन्म राजस्थान के बाडमेर जिले के भाखरपुर ग्राम में श्री बालाराम के यहाँ हुआ। वैदिक पाठशाला गुरां का तालाब, जोधपुर में कुछ काल तक अध्ययन करने के उपरान्त इन्होंने वकालत की परीक्षा पास की और जोधपुर में ही वकालत करने लगे। आर्यसमाज के साथ इनका जीवन के प्रारंभिक काल से ही संपर्क रहा, अतः अकाल पीड़ित सहायता, नारी उद्धार, शुद्धि आदि लोकोपकारी कार्यों में ये सदा आगे रहे। पंजाब के हिन्दी सत्याग्रह में भाग लेने से पूर्व श्री आर्य ने दिल्ली में स्वामी आत्मानन्द सरस्वती से संन्यास की दीक्षा ग्रहण की और स्वामी चेतनानन्द के नाम से जाने गये। १० जुलाई १९७० को इनका निधन हो गया।

ले. का.—आर्य फाग (होली के त्यौहार पर गाई जाने वाली मारवाड़ी लोक गीतों की धुनों में सुधारवादी गीतों का संग्रह)।

बावा छज्जूसिंह

आर्यसमाज के प्रारम्भिक काल में पंजाब के अनेक सिख आर्य सिद्धान्तों की ओर आकृष्ट हुए थे। इनमें से बहुतों ने आर्यसमाज की सदस्यता भी स्वीकार कर ली थी। ऐसे ही व्यक्तियों में बावा छज्जूसिंह का नाम उल्लेख योग्य है। बावाजी का कार्यक्षेत्र लाहौर था। आर्य-प्रतिनिधि पंजाब की मुखपत्रिका आर्य-पत्रिका के ये सम्पादक भी रहे थे। बावाजी ने अंग्रेजी में आर्यसमाज विषयक उच्चकोटि का साहित्य लिखा है।

ले. का.—The Life and Teachings of Swami

Dayanand Saraswati—दो भागों में समाप्त स्वामी दयानन्द का यह अंग्रेजी जीवनचरित ७३० पृष्ठों में समाप्त हुआ था। इस जीवनचरित का मूल आधार स्वामी दयानन्द की उर्दू में लिखी गई वे जीवनियाँ हैं, जो पंडित लेखराम, लाला लाजपतराय एवं मेहता राधाकृष्ण ने लिखी थीं। इस ग्रन्थ की महत्त्वपूर्ण भूमिका लाला जीवनदास पेंश्नर ने लिखी थी। लेखक के वक्तव्य से यह भी विदित होता है कि उनकी प्रेरणा से उनके छोटे भाई वावा अर्जुनसिंह स्वामी दयानन्द का जीवनचरित लिख रहे थे। उन्होंने इसका पर्याप्त अंश लिखा, तथा उसे प्रकाशनार्थं वैदिक यंत्रालय अजमेर को भेज भी दिया था, परन्तु इसी बीच वावा अर्जुनसिंह की मृत्यु हो गई। फलतः इस गुरुतर कार्य को उन्हें सम्पन्न करना पड़ा। इस ग्रन्थ का द्वितीय संस्करण जनज्ञान प्रकाशन दिल्ली ने १९७१ में प्रकाशित किया।

The Teachings of the Arya Samaj 1903., The Nature and Attributes of God. 1903,, A Few Specialities of the Aryasamaj in relation to other Reforming Bodies of India., What is Aryasamaj or an Explanation of the Principles of the Aryasamaj 1890., The Aryasamaj, An Interpretation., A Word with the Non-Believeds in Revelation., Swamiji on the Vadas—ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के अंश का अनुवाद (१९१२)., Ten Gurus and Their Teaching., (1903)., Hakikat., ईश तथा केन उपनिषदों का अंग्रेजी अनुवाद।

पं. छुट्टनलाल स्वामी

सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं तुलसीराम स्वामी के अनुज पं. छुट्टनलाल का जन्म कार्तिक कृष्णा ३ सं. १९२७ वि. (१८७४) को मेरठ जिले के परीक्षितगढ़ ग्राम में पं. हजारीलाल स्वामी के यहां हुआ। अपने अग्रज की ही भाँति ये भी शास्त्रों के प्रकाण्ड विद्वान्, सुलेखक तथा शास्त्रार्थ-महारथी थे। १९४४ वि. में पं. छुट्टनलाल आर्यसमाज के सभासद बने। १९१२ में इन्होंने स्वामी प्रेस, मेरठ के व्यवस्थापक का कार्य संभाला। अप्रैल १९०७ से प्रकाशित होने वाले 'ब्राह्मण समाचार' नामक पत्र का सम्पादन कार्य पं. छुट्टनलाल ८ वर्ष तक करते रहे। पं. तुलसीराम के निधन के पश्चात् इन्होंने 'वेदप्रकाश' मासिक के सम्पादन तथा स्वामी प्रेस के प्रकाशनों का दायित्व अपने ऊपर लिया और पूर्ण निष्ठा के साथ आर्यसमाज के साहित्य की अभिवृद्धि में लगे रहे। १९५१ में इनका निधन हुआ।

ले. का.—ऐतरेय उपनिषद् भाष्य १९५४ वि. (१८८७), २. तैत्तिरीय उपनिषद् भाष्य, ३. पारस्कर-गृह्यसूत्र भाष्य १९७३ वि. (१९१६), ४. विष्णु स्मृति-टीका, ५. वाल्मीकीय रामायण सार, ६. रामायण का आल्हा (भाग-२), ७. भर्तृहरि कृत नीतिशतक (१९१३), ८. चाणक्य नीति सार।

खण्डनात्मक ग्रन्थ—१. भीम प्रश्नोत्तरी (१९१४), २. प्रश्नोत्तर रत्नमाला, ३. मूर्तिपूजा मीमांसा, ४. नियोग-निर्णय (१०९९), ५. पद्मपुराण—में एक कन्या के २१ विवाह, ६. विवाह वयोदर्पण (१९००), ७. गंगा की पुकार, ८. गंगा का मेला (१९६७ वि.), ९. पुराण परिचय (१९१७), पुराण कलंकाभास मार्जन का उत्तर, १०. भागवत समीक्षा (१९०५), ११. भागवत परीक्षा, १२. भागवत विचार (एक आर्य के नाम से प्रकाशित (१९५७ वि.), ९३. पौराणिक वर्ण व्यवस्था, महाशंकावली १८९७ १४. पंच कन्याचरित्र (१९०३), जीवन-चरित—पं. भोजदत्त का जीवन चरित, पं. तुलसीराम स्वामी का जीवनचरित।

अन्य ग्रन्थ—१. आर्यसमाज ने क्या किया ? (१९१०), २. बाल विवाह नाटक (१८९८), ३. वेद-चतुष्ट्य विचार, ४. वैदिकविज्ञान, ५, वनिता बुद्धि-प्रकाश, ६. राजभक्ति प्रकाश ७. नारद यात्रा, ८. आर्यावर्त का संक्षिप्त इतिहास, ९. बाल रघुवंश (१९७३ वि.), १०. अज्ञान निवारण (पादरी का उत्तर)।

पं. जगत्कुमार शास्त्री

लेखक, वक्ता, प्रचारक तथा कार्यकर्ता के रूप में

अपने जीवन को आर्यसमाज के लिए एकनिष्ठ होकर होम देने वाले पं. जगत्कुमार शास्त्री का जन्म ११ नवम्बर १९१२ को कुरुक्षेत्र के निकटवर्ती थानेसर में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम पं. श्रीराम था। पिता की मृत्यु तभी हो गई जब बालक जगत्कुमार ११ मास के ही थे। विधवा माता ने अपने मायके कैथल जाकर बालक का पालन पोषण किया। पं. जगत्कुमार की प्रारम्भिक शिक्षा कैथल के हाई स्कूल में हुई। तत्पश्चात् वे दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर में अध्ययनार्थ गये। कुछ समय तक ये अमृतसर के संस्कृत विद्यालय (हिन्दू सभा कॉलेज का एक अंग) में भी पढ़े। उपदेशक-विद्यालय के आचार्य स्वामी स्वतन्त्रतानन्द का इनके जीवन पर गहरा असर पड़ा।

शास्त्रीजी ने आर्यसमाज के उपदेशक के रूप में अपना कार्य आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम हैदराबाद से आरम्भ किया। उन दिनों इस सभा के प्रधान पं. केशवराव कोरटकर (पं. विनायकराव विद्यालंकार के पिता) थे। १९३४ में ये दिल्ली आये और अखिल भारतीय श्रद्धानन्द ट्रस्ट के उपदेशक के रूप में कार्य प्रारम्भ किया। ट्रस्ट के अन्तर्गत रहकर आपने रांची, डाल्टनगंज, पलामू, सिंहभूम, मानभूम तथा हजारीबाग के पिछड़े क्षेत्रों में हिन्दू संगठन, अछूतोद्धार तथा शुद्धि का कार्य किया। इस ट्रस्ट में वे ग्यारह वर्षों तक कार्य करते रहे। तत्पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, राजस्थान व हरयाणा में भी कुछ काल तक उपदेशक रहे। उनके द्वारा लिखित ग्रन्थों की संख्या स्वयं उनके ही अनुसार १६० से अधिक है जिनमें मौलिक ग्रन्थों के अतिरिक्त अनूदित तथा सम्पादित रचनायें भी सम्मिलित हैं। इनका निधन २ मार्च १९९० को हो गया।

ले. का.—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद के मंत्रों के अर्थ सहित संग्रह—'मंजरी' शीर्षक से प्रकाशित। ऋग्वेद के प्रसिद्ध इन्द्र सूक्त की व्याख्या—इन्द्रोपनिषद् या ईश्वर-दर्शन, वैदिक प्रार्थना, वैदिक युद्धवाद, आर्य-विनय, श्रुतिसुधा, मातृमंदिर (ऋग्वेद मं. १० सूक्त १५९ की व्याख्या) १९६६, जीवनप्रभात (ऋग्वेद मं. ७ सूक्त १४ की व्याख्या) १९६७, श्रद्धा माता (ऋग्वेद मं. १० सूक्त १५१ की व्याख्या) १९७०, ब्रह्मचर्य प्रदीप, (अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य-सूक्त की व्याख्या), वैदिक प्रवचन माधुरी (वेद मन्त्रों की व्याख्या १९६६), ब्रह्मयज्ञ, श्वेताश्वतर उपनिषद् का भाष्य, ब्रह्मयज्ञ प्रदीप (१९५३), संध्यामाता (१९६७), वेद प्रकाशमाला के अन्तर्गत आपके निम्न ग्रन्थ प्रकाशित हुए। गायत्री माता, पितृश्राद्ध विचार, गोमाता, धरती माता, ऋषिकृत वेदभाष्य का महत्त्व, गोपाल दयानन्द, अन्यग्रन्थ—वैदिक भक्तिवाद, देवयज्ञ प्रदीप, यम नियम प्रदीप, स्वस्ति शान्ति सुधा (स्वस्ति वाचन तथा शान्तिकरण मन्त्रों की भावायुक्त पूर्ण व्याख्या)।

शास्त्रीजी के अधिकांश ग्रन्थ साहित्य मण्डल दिल्ली, गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली तथा मधुर प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित हुए थे। शास्त्रीजी के खुद के कथनानुसार साहित्य मण्डल दिल्ली से ३७, गोविन्दराम हासानन्द से ५२, मधुर प्रकाशन से १८ तथा वैदिक साहित्य सदन से उनके दो ग्रन्थ छपे।

पं. जगत्नारायण शर्मा

आप बनारस के निवासी थे। स्वामी दयानन्द के आद्य शिष्य पं. भीमसेन शर्मा द्वारा स्थापित आर्य धर्म-सभा के सभासदों में आपका नाम उल्लिखित हुआ है।

ले. का.—ईसु परीक्षा (१८८४) आर्य भजनसंग्रह (१८९३), गऊ की नालिश (१८९०), ईसाईमत परीक्षा (१८८४), गाजीमियां की पूजा, गोरक्षा (१८८४), गोविलाप, गोहितकारी भजन (१८८८), गोविनती (१८९६) हिन्दुओं का वर्तमान धर्म (१८८७)।

भाई जगतसिंह

भाईजी जन्मना सिख थे किन्तु आर्यसमाज में दीक्षित होकर वैदिक धर्म के प्रचारक बन गये।

सिख मत के खण्डन विषयक आपकी निम्न पुस्तकें छपी हैं—

१. रिसाला ए सतप्रकाश—रिफा ए श्राम प्रेस लाहौर से १९५५ वि. (१८९८) में प्रकाशित। यह उर्दू की पुस्तक है। २. गुरमतप्रकाश (पंजाबी) एमिनाबाद (गुजरांवाला) से १९१२ में प्रकाशित।

मुन्शी जगदम्बाप्रसाद

मुन्शीजी पुरानी पीढ़ी के लेखक थे।

ले. का.—१. श्री स्वामी विरजानन्द सरस्वती दण्डीजी का जीवन चरित्र—पं. लेखराम रचित दण्डीजी के उर्दू जीवनचरित का यह अनुवाद है। (१८९९), २. पं. लेखराम रचित 'ऐतिहासिक निरीक्षण' शीर्षक उर्दू ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद। (१९००)

श्री जगदीश आर्य

श्री आर्य का जन्म ४ फरवरी १९२२ को विहार के जिला रोहतास के डुमरी नामक ग्राम में हुआ। इन्होंने साहित्य रत्न की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपने १९४१–४२ के सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया और कारावास के कष्टों को सहा। १९५२ में विहार राज्य की सरकारी सेवा में आये और सहकारी समितियों के निरीक्षक पद से कार्य निवृत्त हुए। आर्यसमाज में प्रविष्ट होने के उपरान्त लेखन कार्य में रुचि हुई। फलतः आपके आर्यमित्र, परोपकारी, सार्वदेशिक, वेदवाणी आदि पत्रों में अनेक शोधपूर्ण लेख लिखे। इनका लेखन मुख्यतः ऋषि दयानन्द और आर्य सिद्धान्तों को लेकर ही हुआ है।

व. प.—द्वारा अजय सिन्हा, गृह विभाग (विशेष) मुख्य सचिवालय, पटना।

पं. जगदीशचन्द्र वसु, भारद्वाज

श्री वसु का जन्म श्रावण शुक्ला २, १९९४ वि. (८ अगस्त १९३७) को बुलन्दशहर जिले के कुरली नामक ग्राम में पं. ब्रह्मानन्द शर्मा के यहाँ हुआ। इनकी शिक्षा सर्वदानन्द साधु आश्रम हरदुआगंज, दयानन्द उपदेशक, विद्यालय यमुनानगर तथा दयानन्द ब्राह्म-महाविद्यालय हिसार में हुई। आपने विद्यावाचस्पति, सिद्धान्तालंकार तथा सिद्धान्तभूषण आदि उपाधियां प्राप्त की हैं।

ले. का.—महर्षि दयानन्द तथा स्त्री व शूद्र जाति (१९६२) वैदिक संस्कृति का आधार चरित्र-निर्माण (१९६५), हमारा धर्म, मानवजीवन लक्ष्य, को वेदानुद्धरिष्यति ? ईसाई व इस्लाम के भयंकर षड्यंत्रों से आर्यो, सावधान। सन्तोषी माता का व्रत व कब्र पूजा, राष्ट्रवादी-दयानन्द—(२०४१ वि.), नमस्ते ही क्यों ? नमस्कार क्यों नहीं ? (२०४० वि.), आर्य बनाम हिन्दू, मृत्यु से भय क्यों, संस्कारों के द्वारा मानव निर्माण, महर्षि दयानन्द तथा अन्य मत मतान्तर।

व. प.—श्रुति सदन, ५५, देशराज कालोनी, पानीपत (हरयाणा)।

पं. जगदीशचन्द्र शास्त्री

आप मूलतः जण्डियाला गुरु (अमृतसर) के निवासी थे। देश को आजाद कराने के लिये आरम्भ किये गये क्रान्तिकारी आन्दोलन में आपने सक्रिय रूप से भाग लिया। शहीद भगतसिंह, राजगुरु तथा रामप्रसाद बिस्मिल आदि इनके निकटतम साथी थे। कालान्तर में सशस्त्र क्रान्ति के मार्ग को त्याग कर उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्र में चले गये और दो वर्ष वहाँ तपश्चर्या की। पुनः बैजनाथ (काँगड़ा) सौराष्ट्र, रावटी तथा विलासपुर (मध्यप्रदेश) में रहे। देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात् आर्यसमाज के कार्य में दिलचस्पी दिखाई। ये शास्त्रों के उद्भट पण्डित थे। कुछ समय तक स्वामी आत्मानन्दजी के यमुनानगर स्थित आश्रम में भी रहे।

ले. का.—न्याय कुसुमांजलि की हिन्दी टीका—प्रसिद्ध नैयायिक उदयनाचार्य लिखित ईश्वर सिद्धि विषयक विख्यात ग्रन्थ की हिन्दी टीका। ईश्वर उपासना विज्ञान, १९६४, अध्यात्मविज्ञान १९६७, वैदिक उपासना-विज्ञान, सामवेद भाष्य-यशोवर्धनी व्याख्या (उल्लेख मात्र)।

डा. जगदीशप्रसाद

श्री जगदीशप्रसाद का जन्म ३१ जुलाई १९२८ को मेरठ जिले के पूठड़ी नामक ग्राम में श्री नारायणदास के यहाँ हुआ। ये मूलतः विज्ञान के शिक्षक तथा अध्यापक

हैं। रसायनशास्त्र में एम. एस. सी. १९५२ तथा पी-एच. डी. १९६१ में करने के उपरान्त इन्होंने डी. एस. सी. की उपाधि भी प्राप्त की है। मेरठ कॉलेज मेरठ में १९६१ से रसायन शास्त्र के प्रवक्ता के पद पर कार्यरत डा. प्रसाद ने विज्ञान विषयक अनेक शोध निबन्धों के अतिरिक्त राधा कौन थी ? शीर्षक ग्रन्थ का भी प्रणयन किया है।

व. प.—११५ कृष्णपुरी, मेरठ–२५०००२।

श्री जगदीशमित्र शर्मा

श्री शर्मा का जन्म ३० सितम्बर १९२२ को लायलपुर (पाकिस्तान) में श्री शादीराम के यहाँ हुआ। आपका अध्ययन गुरुकुल कांगड़ी में हुआ, जहाँ से आपने १९४४ में आयुर्वेदालंकार की उपाधि ग्रहण की। १९५१ में आपने अर्थशास्त्र में एम. ए. किया। प्रारम्भ में वे 'आर्य' साप्ताहिक के उपसम्पादक तथा वैदिक पुस्तकालय गुरुदत्त भवन, लाहौर के पुस्तकाध्यक्ष रहे। तत्पश्चात् आपने अंग्रेजी दैनिक ट्रिब्यून के सम्पादकीय विभाग में काम किया और मुख्य सहायक सम्पादक के पद से कार्य-निवृत्त हुए। शर्माजी की आर्यसमाज के इतिहास तथा स्वामी दयानन्द के जीवन में गहरी रुचि है और वे इस विषय पर अंग्रेजी में एक प्रामाणिक ग्रन्थ लिख रहे हैं। उन्होंने अंग्रेजी के प्रसिद्ध पत्र इलस्ट्रेटेड वीकली के आर्यसमाज अंक में महत्त्वपूर्ण लेख लिखे थे।

व. प.—५४, सैक्टर ११ ए, चण्डीगढ़।

डा. जगदीश विद्यालंकार

डा. विद्यालंकार का जन्म १४ दिसम्बर १९५० को बीकानेर (राजस्थान) में श्री प्रह्लादराय के यहाँ हुआ। इनकी शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में हुई जहाँ से आपने १९७२ में विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की। आपने 'अथर्ववेदीय मनोविज्ञान' विषय पर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से १९८९ में पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में विद्यमान वैदिक, संस्कृत और आर्य सामाजिक साहित्य की एक परिपूर्ण ग्रन्थ सूची आपने परिश्रम पूर्वक तैयार की है जो Classical Vedic and Sanskrit Literature शीर्षक से छपी है।

व. प.—पुस्तकालयाध्यक्ष, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

जगदीश विशारद

कवि जगदीश विशारद (मूल नाम जगन्नाथप्रसाद) का जन्म कोटा जिले के ग्राम आटौन (तहसील अटरू) में पौष शुक्ला २ सं. १९७६ वि. (१४ दिसम्बर १९१९) को श्री प्रभुलाल के यहाँ हुआ। मैट्रिक और विशारद तक शिक्षा ग्रहण कर आप शिक्षा विभाग में अध्यापक बने और १९३८ से १९४७ तक शिक्षक रहे। आपने मुख्यतः वीर और शान्तरस को लेकर काव्य रचना की है।

ले. का—दयानन्द दर्शन (काव्य १९६५) अन्य काव्य ग्रन्थ—युग की पुकार १९४६, स्वातन्त्र्य-संग्राम १९४६, वीर वैरागी बंदा १९४७, आत्म मार्ग (केनोपनिषद् पर आधारित) १९५२, इन्द्र का आत्म ज्ञान १९५२, आरुणि-आख्यान १९५३, विराट्दर्शन (गीता पर आधारित) १९६१, चीन की चुनौती १९६२।

व. प.—ग्राम आटौन (जिला कोटा)।

ठा. जगदीशसिंह गहलोत

राजस्थान के विख्यात इतिहासविद् जगदीशसिंह गहलोत का जन्म १८९५ में जोधपुर में हुआ। इनकी शिक्षा जोधपुर तथा हैदराबाद (सिंध) में हुई। पुरातत्त्व, इतिहास तथा लोक-साहित्य के आप मर्मज्ञ विद्वान् थे। राजस्थान के इतिहास से सम्बन्धित आपके अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित हुए जिन्हें विद्वद्जगत् में पूर्ण सम्मान प्राप्त हुआ। आपका निधन २३ सितम्बर १९५८ को हुआ।

ले. का.—आर्यसमाज और हिन्दू संगठन, देश गौरव महाराजाधिराज सर कर्नल प्रतापसिंह का संक्षिप्त जीवन-चरित (१९७५ वि.) ऊमर काव्य—प्रसिद्ध चारण कवि ऊमरदान के काव्य का सम्पादित संस्करण।

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती (जगदीश विद्यार्थी)

स्वामी जगदीश्वरानन्द का जन्म १० जनवरी १९३१ को गुड़गांव जिले की नूह तहसील के एक गांव ग्रलावलपुर में हुग्रा। इनके पिता का नाम लाला ग्यासीराम तथा माता का श्रीमती भगवती देवी था। १९६६ में ग्रापने दिल्ली विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। १६ फरवरी १९७५ को वसन्त-पंचमी के दिन ग्रापने ब्रह्मचर्य ग्राश्रम से सीधे संन्यास की दीक्षा ली। ग्रापने विदेशों में धर्म प्रचार किया ग्रौर सुरिनाम, गायना, ट्रिनिडाड, हालैण्ड, फिजी, श्रीलंका ग्रादि देशों का भ्रमण किया।

ले. का.—वेद विषयक ग्रन्थ—चारों वेदों के शतक, १९६१, चतुर्वेदसूक्तिसंग्रह, प्रार्थनाप्रकाश १९६३, प्रार्थना-लोक १९५७, वेद सौरभ १९६४, वैदिक उदात्त भावनाएँ १९६३, प्रभात वंदन, ऋग्वेद का ग्रक्ष सूक्त।

शास्त्रों के व्याख्या ग्रन्थ—ईशोपनिषद् १९६६, षड्दर्शनम्, वाल्मीकि रामायण तथा महाभारत के संक्षिप्त सम्पादित संस्करण, शुक्रनीति १९८३, चाणक्य-नीति दर्पण १९८५, भर्तृहरिशतकम्, विदुरनीति।

ऋषि दयानन्द विषयक ग्रन्थ—स्वामी दयानन्द सरस्वती (जीवनी) १९७१, दयानन्द सूक्ति ग्रौर सुभाषित, दिव्य दयानन्द, सत्यार्थ सुधा—२ भाग १९७०, बाल संक्षिप्त सत्यार्थप्रकाश २०३३ वि. ग्रार्यसमाज-विषयक साहित्य—स्वर्ण सिद्धान्त (दस नियमों की व्याख्या), महापुरुषों के जीवन चरित—ग्रमर सेनानी स्वामी श्रद्धानन्द १९६७, मर्यादा पुरुषोत्तम राम १९६४, भगवान् श्रीकृष्ण १९६०, जीवन यात्रा (पं. बुद्धदेव मीरपुरी) १९६५, स्वामी वेदानन्द १९८१, खण्डन-मण्डन के ग्रन्थ—राधास्वामीमतदर्पण १९६१, ब्रह्मा-कुमारीमतदर्पण १९६१, विष्णुपुराण की ग्रालोचना।

स्फुट ग्रन्थ—ग्रादर्श परिवार १९७३, वैदिक संस्कृति के दो प्रतीक, ग्रनमोली मोती, स्वर्णपथ १९७१, ब्रह्मचर्य-गौरव, विद्यार्थियों की दिनचर्या, कुछ करो कुछ बनो, कर्मकाण्ड-वैदिक विवाह पद्धति।

व. प.—एच. १—२ माडल टाउन, दिल्ली ११०००९

पं. जगदेवसिंह शास्त्री सिद्धान्ती

स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों के मर्मज्ञ विद्वान् तथा व्याख्याकार श्री जगदेवसिंह शास्त्री का जन्म हरयाणा प्रान्त की झज्जर तहसील के बरहाणा ग्राम में १९०० में हुग्रा। इनके पिता चौधरी प्रीतराम सेना में कार्य करते थे। ग्रापकी प्रारम्भिक शिक्षा गांव में ही हुई। इसके पश्चात् झज्जर के माध्यमिक स्कूल से ग्रापने मिडिल परीक्षा पास की तथा हाई स्कूल की पढ़ाई हेतु रोहतक के जाट हाई स्कूल में प्रवेश लिया। १९१७ में ग्राप सेना में भर्ती हो गये ग्रौर १९२१ तक सक्रिय सैनिक के रूप में कार्य किया। ग्रार्यसमाज की विचारधारा से तो ग्राप बचपन से ही प्रभावित थे। सेना में रहते हुए भी ग्रापने सैनिकों में ग्रार्यसमाज की विचारधारा का प्रचार किया तथा उन्हें मांसभक्षण के विरोध में संगठित किया।

सेना की नौकरी छोड़कर ग्रापने संस्कृत के ग्रध्ययन में मन लगाया। पंजाब विश्वविद्यालय की प्राज्ञ, विशारद तथा शास्त्री परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं ग्रौर दयानन्द उपदेशक-विद्यालय लाहौर से सिद्धान्तभूषण की परीक्षा भी पास की। ग्रब वे ग्रपने नाम के ग्रागे 'सिद्धान्ती' लगाने लगे। १९२९ में मेरठ जिले के गुरुकुल किरठल में ग्रा गये तथा यहाँ वर्षों तक ग्राचार्य के रूप में ग्रपनी सेवाएँ देते रहे। १९४४ में वे दिल्ली ग्राये ग्रौर सम्राट् प्रेस चलाने के साथ-साथ सम्राट् नामक पत्र भी निकालने लगे। ग्रापने ग्रार्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री तथा प्रधान के पदों को भी सुशोभित किया तथा सभा के मुखपत्र 'ग्रार्य-मर्यादा' का परिश्रमपूर्वक सम्पादन किया। जब पंजाब में हिन्दी रक्षा ग्रान्दोलन चलाया गया तो सिद्धान्तीजी ने उसमें प्रमुख रूप से भाग लिया। ग्रार्य विद्वत् परिषद् दिल्ली की ग्रोर से १९७७ में ग्रापका सार्वजनिक ग्रभि-नन्दन किया गया ग्रौर इस ग्रवसर पर उन्हें एक बृहद् ग्रभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया। २७ ग्रगस्त १९७९ को ग्रापका निधन हो गया।

ले. का.—सत्यार्थप्रकाश के स्थूलाक्षरी सटिप्पण संस्करण का सम्पादन (२०१८ वि.), हम संस्कृत क्यों

पढ़े ?, संस्कृत वाङ्मय का संक्षिप्त परिचय, छात्रोपयोगी विचारमाला, वैदिक धर्म परिचय १९५५।

वि. अ.—सिद्धान्ती अभिनन्दन ग्रन्थ—पं. रघुवीरसिंह शास्त्री द्वारा सम्पादित १९७७।

जगन्नाथ भारतीय

आर्यसमाज के प्रारम्भकालीन लेखक जगन्नाथ भारतीय का विशेष जीवनवृत्त उपलब्ध नहीं होता। श्री भारतीय स्वामी दयानन्द के समकालीन थे तथा उन्हें स्वामीजी के दर्शन करने का गौरव प्राप्त हुआ था। वे स्वयं को वैदिक धर्म का अनुयायी मानते थे। उनके अधिकांश ग्रन्थ दिल्ली से प्रकाशित हुए हैं। वे दिल्ली के ही निवासी थे तथा छीपीवाड़ा मुहल्ले में रहते थे।

ले. का.—महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज का जीवनचरित्र—इसका प्रकाशन बाबू रामचन्द्र के प्रबन्ध से रसिक काशी यन्त्रालय देहली से १९४५ वि. (दयानन्दाब्द ५) में हुआ। स्वामीजी के निधन के पांच वर्ष पश्चात् लिखी गई यह उनकी प्रथम जीवनी है। भूमिका के अन्त में लेखक ने पुस्तक लेखन की समाप्ति की तिथि एक अगस्त १८८८ दी है।

जगन्नाथ भारतीय लिखित नाट्य रचनाएँ—

१. वर्ण व्यवस्था नाटक—(१९४४ वि.) यह पुस्तक आर्यसमाज के वर्ण व्यवस्था विषयक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करती है।

२. नवीन वेदान्त नाटक—इस नाट्य कृति में 'प्रबोध चन्द्रोदय' की रूपकात्मक शैली का अनुकरण मिलता है। नाटककार ने इसमें अद्वैतवेदान्त को नवीन बेदान्त कह कर उसकी निस्सारता प्रतिपादित की है। रामचन्द्र वैश्य ने इस नाटक को १९४६ वि. में मेरठ से प्रकाशित किया था।

३. समुद्र यात्रा नाटक—विदेश यात्रा से अधर्म नहीं होता, यही इस नाटक का प्रतिपाद्य है।

जगन्नाथ भारतीय के अन्य सैद्धान्तिक ग्रन्थ—

पोप लीला—(असतमत खण्डन १८८७)। मतप्रकाश—भारत में प्रचलित मत-मतान्तरों का परिचयात्मक तथा आलोचनात्मक निरूपण। (१९४३ वि.) वैश्य यज्ञोपवीत मीमांसा—वैश्यों के यज्ञोपवीत अधिकार का निरूपण। (१८८७) वेद ब्राह्मण विषयक व्याख्यान—(जो मिती ज्येष्ठ बदी ८ रविवार सं. १९४४ वि. को आर्यसमाज देहली में जगन्नाथ भारतीय ने दिया) (१८८७)।

दिन चर्या—(१९४६ वि.), मनुष्य धर्म संहिता—मनुष्य मात्र के लिये निवृत्ति मार्ग का उपदेश १८८७, नित्यकर्मपद्धति १९४४ वि. (१८८७), सतमतपरीक्षा—'वेद और इंजील में कौनसा ग्रन्थ अपौरूषेय है' इसी विषय की मीमांसा की गई है, धर्माधर्म परीक्षा, स्त्री धर्मप्रबोधनी, सत्यमतनिरूपण—मनुष्य मात्र के लिये धर्म पुस्तक, तीर्थ यात्रा।

श्री जगन्नाथ व्यास

श्री व्यास चूरू (राजस्थान) के निवासी पुष्करणा ब्राह्मण थे। इनका जन्म ज्येष्ठ शुक्ला ११ सं. १९१७ वि. को हुआ। इनके पिता का नाम श्री सुन्दरमल था। वैदिक यंत्रालय के प्रबन्धक तथा राजस्थान समाचार के सम्पादक श्री मुन्शी समर्थदान इनके मित्र थे। व्यासजी का निधन ३० वर्ष की आयु में श्रावण कृष्णा ५, १९४७ वि. को हुआ। इनका ग्रन्थ 'वेदान्तप्रदीप' वैदिक यंत्रालय, अजमेर से १९८१ में प्रकाशित हुआ।

श्री जगन्नाथ सिंहल

मुरादाबाद के सक्रिय आर्यसमाजी कार्यकर्ता श्री सिंहल भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् के उत्साही सदस्य थे। उस युग में यह परिषद् किशोरों और युवकों में वैदिक धर्म के प्रति आस्था जागृत करने का कार्य अत्यन्त लगन से करती थी। परिषद् के तत्त्वावधान में सिद्धान्त सरोज, रत्न, भास्कर तथा शास्त्री नाम से धार्मिक परीक्षाओं का संचालन किया जाता था। श्री सिंहल ने पुष्पा सिंहल के सहलेखन में 'देव दयानन्द' शीर्षक एक बालोपयोगी जीवनचरित लिखा। इसे आर्यकुमार परिषद् ने मुरादाबाद से १९५४ में प्रकाशित किया।

श्री जनकधारीलाल

दानापुर विहार निवासी श्री लाल स्वामी दयानन्द के समकालीन थे। इनका जन्म १९०९ वि. में हुआ। ये दानापुर की आर्य ऐंग्लो संस्कृत पाठशाला के प्रथम अध्यापक (हैडमास्टर) थे। इन्होंने सुनीति संग्रह नामक संस्कृत सुभाषितों का एक सुन्दर संग्रह हिन्दी भावार्थ सहित तैयार किया। यह १८९१ में दानापुर से प्रकाशित हुआ।

पं. जनमेजय विद्यालंकार

संस्कृत कवि, विद्वान् तथा लेखक जनमेजय विद्यालंकार का जन्म ३ मार्च १९०३ को कानपुर में हुआ। सं. १९७८ वि. में इन्होंने गुरुकुल कांगड़ी से विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की। कालान्तर में पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री तथा आगरा विश्वविद्यालय से एम. ए. (संस्कृत) परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। आप कानपुर में संस्कृत के प्रवक्ता रहे।

ले. का.—सामाजिक क्रान्ति—(१९२८), भोजन तथा छूतछात(१९२५),अभिनव काव्यम्—संस्कृत की गद्य-पद्यात्मक रचनाओं का संग्रह (१९५९), वैदिक वर्णव्यवस्था, संस्कृत शिक्षाविधि—३ भाग।

जनार्दन जोशी

गढवाल प्रदेश के निवासी श्री जोशी ज्योतिष के विद्वान् थे। आपने फलित-ज्योतिष के खण्डन में 'ज्योतिष चमत्कार' नामक एक ग्रन्थ लिखा, जो वैदिक पुस्तकालय इटावा से प्रकाशित हुआ था। पं. नारायणप्रसाद बेताब ने इसका उर्दू अनुवाद 'करिश्मए नजूम' शीर्षक से किया जो १९०८ में प्रकाशित हुआ।

जनार्दनप्रसाद सिन्हा

श्री सिन्हा बिहार के निवासी हैं। आपने 'सत्यार्थ-प्रकाशभूमिका' शीर्षक एक विचार प्रधान ग्रन्थ लिखकर दयानन्द के चिन्तन एवं सिद्धान्तों को अत्यन्त तर्कपूर्ण तथा सुगम्भीर रूप में प्रस्तुत किया है। आर्य संस्थान पटना ने इस ग्रन्थ को १९७६ में प्रकाशित किया था।

जम्बुनाथन, एम. आर.

तमिल भाषा में सत्यार्थप्रकाश के अनुवादक श्री एम. आर. जम्बुनाथन का जन्म २३ अगस्त १८९६ को तमिलनाडु के तिरुचिरापल्ली जिले के अन्तर्गत मनक्कल गांव में हुआ था। उनका पूरा नाम मनक्कल रामस्वामी जम्बुनाथन था। उनकी शिक्षा संस्कृत, तमिल तथा अंग्रेजी में हुई। तमिल और संस्कृत में उन्होंने विशेष योग्यता प्राप्त की तथा इन भाषाओं के विशिष्ट अध्ययन के लिये उन्हें छात्रवृत्ति भी मिली।

ऋषि दयानन्द की विचारधारा का प्रभाव उनके जीवन में आरम्भ से ही रहा। फलतः मद्रास में उन्होंने १९१८-२० तक दलित जाति संघ का संचालन कर अस्पृश्यता निवारण का कार्य किया। तत्पश्चात् वे बम्बई आ गये और सार्वजनिक सेवा कार्य में लग गये। वैदिक साहित्य के प्रति उनके हृदय में अगाध निष्ठा थी। फलतः उन्होंने अपनी मातृभाषा तमिल में वेदों तथा उपनिषदों के अनुवाद का कार्य किया। उनके द्वारा किया गया यजु, साम तथा अथर्व का तमिल अनुवाद तो इस शती के चतुर्थ दशक में ही प्रकाशित हो गया था। तदनन्तर उन्होंने ऋग्वेद के तमिल अनुवाद का काम आरम्भ किया, जो तीस वर्षों में पूरा हुआ। उन्होंने उपनिषदों का तमिल अनुवाद भी किया है। स्वामी दयानन्द तथा स्वामी श्रद्धानन्द के जीवनचरित भी तमिल भाषा में लिखे। ७८ वर्ष की आयु प्राप्त कर श्री जम्बुनाथन १८ दिसम्बर १९७४ को बम्बई में दिवंगत हुए।

ले. का.—वेदों के तमिल अनुवाद-१. यजुर्वेदम्—शुक्ल एवं कृष्ण यजुर्वेद का अनुवाद (१९३८), २. सामवेदम् (१९३४), ३. अथर्ववेदम् (१९४०), ४. ऋग्वेद (१९७८), ५. वेद चन्द्रिका (१९३४)। अन्य ग्रन्थ-शतपथ ब्राह्मण की कथायें (१९३३), उपनिषद् कथायें (१९३२), कठोपनिषद्-तमिल अनुवाद (१९३२), सत्यार्थप्रकाश का प्रथम तमिल अनुवाद श्री जम्बुनाथन ने किया था जो १९२६ में आर्यसमाज मद्रास से प्रकाशित हुआ। स्वामी दयानन्द चरितम् शीर्षक तमिल जीवनचरित (१९१८) तथा वीर संन्यासी श्रद्धानन्द चरितम् (१९३१), आपने स्वामी श्रद्धा-

नन्द की आत्मकथा—'कल्याण मार्ग का पथिक' का संक्षिप्त अंग्रेजी अनुवाद भी किया, जो भारतीय विद्या भवन बंबई से १९६१ में प्रकाशित हुआ।

वि. अ.—Life Sketch of Shri M. R. Jambunathan 1978.

कविराज जयगोपाल

सत्यार्थप्रकाश का छन्दोबद्ध पद्यानुवाद करने वाले कविराज जयगोपाल का जन्म १८९२ में लाहौर में हुआ। इनके पिता श्री रामदास आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे। इनका महात्मा हंसराज तथा रामभजदत्त चौधरी जैसे वरिष्ठ आर्यसमाजी नेताओं से प्रगाढ सम्पर्क रहा था। जयगोपाल ने हिन्दी तथा संस्कृत का ज्ञान निज अध्यवसाय से ही किया। कालान्तर में आयुर्वेद का अध्ययन कर चिकित्सक के रूप में वे जीविकोपार्जन करने लगे। आपने ऐतिहासिक, पौराणिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय विषयों पर अनेक नाटक, उपन्यास आदि लिखे जिनमें सती सावित्री, प्रह्लाद भक्त, सुदामा भक्त, दुर्गादास राठौर, शिवाजी, हरिसिंह नलुआ, अंजना-हनुमान आदि उल्लेखनीय हैं। आपकी अन्य कृतियों में सूरजकुमारी, पश्चिमी प्रभाव, स्वराज्य-भजनमाला, संगीत पुष्पांजलि आदि प्रमुख हैं। आपने स्वामी दयानन्द के जीवन को काव्यबद्ध किया था जो 'दयानन्द चरितम्' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। यह ग्रन्थ २००१ वि.—२००२ वि. के बीच लिखा गया था। इनका निधन १९५६ में हुआ।

लाला जयचन्द्र

आप आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री पद पद रहे थे।

ले. का.—१. ईसाइयों के हाथ से भाइयों को बचाओ (१८९८), २. ईसा. के गुप्त वृत्तान्त का अंग्रेजी से उर्दू अनुवाद (१८९८-९९), ३. दुःख की कथा—(विधवा समस्या) (१८९९)।

जयचन्द्र विद्यालंकार

सुप्रसिद्ध इतिहासविद् जयचन्द्र विद्यालंकार का जन्म ४ दिसम्बर १८९८ को पंजाब के लायलपुर जिले के किंजकोट नामक स्थान में हुआ था।

आपकी शिक्षा गुरुकुल काँगड़ी में हुई जहां स्वामी श्रद्धानन्दजी के सान्निध्य में रहकर आपने १४ वर्ष तक अध्ययन किया तथा १९१९ में विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की। स्नातक बनने के पश्चात् आपने लाला लाजपतराय द्वारा स्थापित लाहौर के नेशनल कॉलेज में इतिहास का अध्यापन कार्य किया। इस कालेज में शहीद भगतसिंह तथा सुखदेव आपके शिष्य रूप में पढ़ते रहे। बाद में आपने विहार विद्यापीठ पटना, भारतीय विद्या भवन बम्बई तथा काशी विद्यापीठ में अध्यापन किया। आप हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कोटा अधिवेशन के अध्यक्ष भी रहे। २१ फरवरी १९७७ को उनका निधन हो गया। उन्होंने भारतीय इतिहास विषय पर अनेक ग्रन्थ लिखे हैं।

'राष्ट्रीय इतिहास का अनुशीलन' शीर्षक पुस्तक में आपने स्वामी दयानन्द के जीवन के कतिपय ऐसे पक्षों का विवेचन किया है जो प्रायः जीवनी लेखकों की दृष्टि से ओझल ही रहे थे। हिन्दी भवन जालंधर से २०२३ वि. (१९६६) में प्रकाशित इस ग्रन्थ का 'दयानन्द चरित का ऐतिहासिक अनुशीलन' शीर्षक अंश स्वामी दयानन्द के जीवनचरित विषयक महत्त्वपूर्ण सामग्री प्रस्तुत करता है।

डा० जयदत्त शास्त्री, उप्रेती

संस्कृत के विद्वान् तथा लेखक डा. जयदत्त शास्त्री, उप्रेती का जन्म कार्तिक शुक्ला ७ सं. १९९० वि. (२५ अक्टूबर १९३३) को अल्मोडा जिले के पीतोली नामक ग्राम में पं. कृष्णानन्द उप्रेती के यहाँ हुआ। ये कौसल्य गोत्र के ब्राह्मण हैं। आपने व्याकरण तथा दर्शन में आचार्य, संस्कृत में एम. ए. (आगरा विश्वविद्यालय) तथा गढवाल विश्वविद्यालय से 'ऋग्वेद में इन्द्र' विषय लेकर डी. फिल्. की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। आर्यसमाज से आपका सम्वन्ध १९५० से है। वर्तमान में आप कुमाऊं विश्वविद्यालय अल्मोडा में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं।

ले. का.—लघु काशिका भाग १ (२०२६ वि.), पाणिनीयाष्टक विषय-सूची (२०२६ वि.), सिद्धान्तशतक-दर्शन विषयक ग्रन्थ (२०२७ वि.), भगवद्भक्ति (१९७६), पंचतंत्रपद्यामृतम् का सम्पादन। लघु-काशिका भाग २ (१९८९), कठोपनिषद् टीका (द्वितीय अध्याय पर्यन्त), वेद में इन्द्र (शोध प्रबन्ध), बलीप्रथा निवारण (२०४४ वि.) मंदार मंजरी (अनुवाद)।

व. प.—मोहन निवास, हीरा डूंगरी, अल्मोड़ा (उ.प्र.) २६३६०१।

डा० जयदेव

इनका जन्म १० मार्च १९५९ को हिसार जिले के एक ग्राम में महाशय पोलूराम के यहां हुआ। इन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् हरयाणा के विभिन्न महाविद्यालयों में संस्कृत प्रवक्ता के रूप में कार्य किया। वर्तमान में डा. जयदेव राजकीय महाविद्यालय हांसी में कार्यरत हैं। इन्होंने 'आचार्य सायण एवं स्वामी दयानन्द की ऋग्वेद भाष्यभूमिकाओं का तुलनात्मक अध्ययन' शीर्षक शोध-प्रबन्ध लिखकर १९८८ में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की।

व.प.—६२९/१९, एडवोकेट कालोनी, हांसी (हिसार)

श्री जयदेव आर्य

श्री आर्य का जन्म हरयाणा प्रान्त के जिला जींद के ग्राम बेलरखा में हुआ। आपने संस्कृत में एम. ए. किया तथा अपने ही राज्य की कालेज शिक्षा सेवा में प्रविष्ट हुए। आप शोध में रुचि रखने वाले प्रबुद्ध विद्वान् हैं। सम्प्रति गवर्नमेंट कालेज नारनौल में संस्कृत के प्रवक्ता हैं।

ले. का.—महर्षि दयानन्द की देन (१९७२)—वेद और मांस विधान, The Arya Dharma—इस शोध पत्र को लेखक ने विश्व संस्कृत सम्मेलन के वाराणसी अधिवेशन में १९८१ में पढ़ा था। भारतीय स्वाधीनता संग्राम और आर्यसमाज (१९८२)।

व. प.—राजकीय महाविद्यालय, नारनौल (हरयाणा)

डा. जयदेव वेदालंकार

वेदालंकारजी का जन्म ५ दिसम्बर १९४१ को झाड़ौदा कलां (दिल्ली) में हुआ। आपके पिता का नाम श्री जुगलालसिंह था। इनका अध्ययन गुरुकुल कांगड़ी में हुआ। यहां से आपने २०२२ वि. (१९६६) में वेदालंकार तथा दर्शन में एम. ए. की उपाधियां ग्रहण कीं। तत्पश्चात् मेरठ विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। आपका शोध विषय था—'उपनिषदों का तत्वज्ञान'। १९८५ में डा. जयदेव को रांची विश्वविद्यालय ने 'दयानन्द-दर्शन' पर डी. लिट्. की उपाधि प्रदान की।

ले. का.—उपनिषदों का तत्त्वज्ञान (२०३७ वि.), महर्षि दयानन्द की विश्वदर्शन को देन (२०३३ वि.), भारतीय दर्शन की समस्यायें, वैदिक शिक्षा—मानवीय मूल्य और समाज में अंतःसम्बन्ध, महर्षि दयानन्द की साधना और सिद्धान्त (सम्पादित), वैदिक वाङ्मय में गौहत्या या गौरक्षा।

व. प.—दर्शन विभाग, गुरुकुल विश्वविद्यालय-कांगड़ी, हरिद्वार।

चतुर्वेद भाष्यकार पं. जयदेव शर्मा विद्यालंकार, मीमांसातीर्थ

राष्ट्रभाषा हिन्दी में प्रथम बार चारों वेदों का सम्पूर्ण भाष्य लिखने वाले पं. जयदेव शर्मा का जन्म १८९२ में अम्बाला जिले के एक ग्राम में श्री मुन्शीराम के यहाँ हुआ था। उनका अध्ययन गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी में हुआ, जहाँ आचार्य प्रवर स्वामी श्रद्धानन्द जी के चरणों में बैठकर उन्होंने विद्या ग्रहण की। १९७१ वि. में 'विद्यालंकार' की उपाधि ग्रहण करने के अनन्तर पं. जयदेव शर्मा ने जोबनेर, गुरुकुल कांगड़ी तथा गुरुकुल मुल्तान में अध्यापन कार्य किया। कुछ समय तक वे ज्ञानमण्डल काशी तथा कलकत्ता में भी रहे। स्वामी श्रद्धानन्द की प्रेरणा और आदेश से शर्माजी ने मीमांसा-शास्त्र का विशेष अध्ययन कलकत्ते रहकर किया तथा वहाँ से 'मीमांसातीर्थ' की उपाधि ग्रहण की।

आर्य साहित्य मण्डल, अजमेर के संस्थापक एवं संचालक श्री मथुराप्रसाद शिवहरे की प्रेरणा से शर्माजी ने चारों वेदों का हिन्दी भाषा में भाष्य लिखने का संकल्प किया। मई १९२५ में यह कार्य प्रारम्भ हुआ और ११ वर्ष के निरन्तर परिश्रम के पश्चात् १९३६ में चतुर्वेद भाष्य समाप्त हुआ। चारों वेदों पर लिखा गया यह हिन्दी भाष्य न केवल हिन्दी में अपितु किसी भी भारतीय भाषा में लिखा गया प्रथम सम्पूर्ण भाष्य है। भाष्यकार ने स्वामी दयानन्द की वेदार्थ प्रक्रिया का ही अनुसरण किया है। भाष्यारम्भ में विद्वान् भाष्यकार ने महत्त्वपूर्ण भूमिकायें लिखकर चारों वेद-संहिताओं का सविस्तार परिचय दिया है। अब तक इन भाष्यों के अनेक संस्करण हो चुके हैं। १९४९ से १९६० तक शर्माजी वनस्थली विद्यापीठ में संस्कृत के प्राध्यापक रहे। माघ शुक्ला १३ सं. २०१८ वि. दिनांक २९ जनवरी १९६१ रविवार के दिन पं. जयदेव शर्मा का निधन हुआ।

ले. का.—१. ऋग्वेद भाषाभाष्य ७–भाग, २. यजुर्वेद भाषाभाष्य-२–भाग, ३. सामवेद भाषा-भाष्य, १–भाग, ४. अथर्ववेद भाषाभाष्य ४–भाग, ५. माधवानुक्रमणी-ऋग्वेद के भाष्यकार वेंकटमाधव ने ऋग्वेद के आठों अष्टकों के प्रत्येक अध्याय के आरम्भ में स्वर, आख्यात, छन्द आदि आठ विषयों की विवेचना की है। पं. जयदेव शर्मा ने इस ग्रन्थ का भाषानुवाद किया है। ६. ईशोपनिषद् भाषाभाष्य, ७. यमयमी सूक्त व्याख्या, ८. अथर्ववेद और जादू टोना, ९. क्या वेद में इतिहास है ? (श्रीपाद दामोदर सातवलेकर के वेद में इतिहास विषयक विचारों का सप्रमाण खण्डन २०१० वि.), १०. पुराण-मतपर्यालोचन—आचार्य रामदेवजी के सहलेखन में लिखा गया पुराणालोचन विषयक ग्रन्थ (१९७९ वि.—१९२२) ११. हैदराबाद सत्याग्रह का रक्तरंजित इतिहास—सूर्यदेव शर्मा के सहलेखन में १९४७, १२. आर्यसमाज के उज्ज्वल रत्न, १३. स्वामी दयानन्द सरस्वती के यजुर्वेद भाष्य तथा पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के यजुर्वेद भाष्य विवरण की तुलना—(अध्याय १ से १० पर्यन्त) परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा १९५० में प्रकाशित, १४. अप्रकाशित ग्रन्थ—शेक्सपियर के कुछ नाटकों का संस्कृतानुवाद। पं. जयदेव शर्मा के अधिकांश ग्रन्थ आर्य साहित्य मण्डल, अजमेर ने प्रकाशित किये हैं।

सेठ जयनारायण पोद्दार

सेठ पोद्दार का जन्म सीकर (राजस्थान) जिले के रामगढ़ नामक ग्राम में १८५२ में हुआ। १८९८ में ये कलकत्ता आये और व्यवसाय में लग गये। ऋषि दयानन्द के शिष्य महात्मा कालूरामजी के सम्पर्क में आकर सेठजी आर्यसमाजी बने और कलकत्ता के मारवाड़ी समाज में नानाविध सुधारों का सूत्रपात किया। वे आर्यसमाज कलकत्ता के सक्रिय कार्यकर्त्ता थे तथा प्रसिद्ध दानी भी थे। इन्होंने महात्मा कालूरामजी की एक संक्षिप्त जीवनी लिखी है। 'जीवनचरित्र स्वर्गवासी श्री स्वामी कालूरामजी शर्मा' शीर्षक यह पुस्तक १९६८ वि. में श्री राधामोहन गोकुलजी द्वारा कलकत्ता से प्रकाशित हुई थी। सेठजी का निधन वैशाख शुक्ला ११ सं. १९८१ वि. को हुआ।

जानकीशरण वर्मा

आपका जन्म १५ अगस्त १८९३ को दरभंगा (बिहार) जिले के लहेरियासराय में हुआ। आपने चिकित्सा तथा बालचर संस्था में उल्लेखनीय कार्य किया। आपके द्वारा रचित स्वामी दयानन्द का बालोपयोगी जीवनचरित हिन्दी प्रेस प्रयाग की बालचरित माला संख्या १४ के अन्तर्गत छपा। १७ अप्रेल १९५० को श्री वर्मा का निधन हो गया।

प्रो. जॉन्स, केनेथ डब्लू.

आप संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के केनसास विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर हैं। इन्होंने १९वीं शताब्दी के पंजाब में आर्यसमाज की स्थिति और प्रभाव का विशेष अध्ययन किया है। पंजाब विषयक संदर्भ ग्रन्थों की आपको प्रामाणिक जानकारी है। पंजाब में आर्यसमाज की स्थापना एवं गत शताब्दी के अन्त तक की गतिविधियों का प्रामाणिक और वैज्ञानिक विवेचन आपकी शोधपूर्ण पुस्तक Arya Dharma में किया गया है। इसका भार-

तीय संस्करण १९७६ में मनोहर बुक एजेंसी दिल्ली ने प्रकाशित किया है। Sources on Punjab History में आर्यसमाज की ग्रन्थ सम्पदा (Bibliography) पर आपका जानकारी पूर्ण लेख संगृहीत है। आपने इस लेख में इस वात पर विशेष खेद प्रकट किया है कि यदि समय रहते आर्यसमाज से सम्बन्धित पुरानी पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं तथा पुरातात्त्विक महत्व की अन्य मुद्रित सामग्री को सुरक्षित नहीं किया गया, तो आने वाले शोधार्थियों को इसका अभाव महसूस होगा और इतिहासज्ञों के लिये एक बहुत वड़ी क्षति होगी।

ब. प.—इतिहास विभाग, केनसास विश्वविद्यालय, मैनहट्टन (यू. एस. ए.)

प्रो. जॉर्डन्स, जे. टी. एफ.

डा. जॉर्डन्स मूलतः वेल्जियम के निवासी हैं। सम्प्रति वे आस्ट्रेलिया के केनबरा स्थित राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में ऐशियाई इतिहास तथा सभ्यता विभाग के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष हैं। 'गीता में भगवदीय तत्त्व' विषय पर उन्होंने प्रसिद्ध भारत विद्याविद् डा.ए.एल. वाशम के निर्देशन में पी-एच. डी. की उपाधि ली थी। वे अनेक वार भारत की यात्रा कर चुके हैं तथा उन्होंने आर्यसमाज के सम्वन्ध में गम्भीर शोध कार्य किया है।

ले. का.—Dayanand Sarasvati–His Life and Ideas—ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस दिल्ली से १९७८ में प्रकाशित। Swami Shraddhanand : His Life and Causes : उक्त प्रकाशक द्वारा १९८१ में प्रकाशित। उक्त ग्रन्थों के अतिरिक्त आपने अनेक शोध-निबन्ध आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द पर लिखे हैं।

ब. प.—डिपार्टमेंट ऑफ एशियन स्टडीज, नेशनल आस्ट्रेलियन यूनीवर्सिटी, कैनबरा (आस्ट्रेलिया)

श्री जियालाल वर्मा

प्रसिद्ध विद्वान् पं. रामचन्द्र देहलवी के लघु भ्राता श्री जियालाल राजस्थान के कोटा नगर में रहते थे।

ले. का.—१. जैनों के ५० उत्तरों की समीक्षा (१९३३,) २. ईसाई विद्वानों से ५० प्रश्न, ३. वेद-शास्त्रतालिका—वैदिक सिद्धान्तों पर शास्त्रीय वचनों का अपूर्व संग्रह।

लाला जीवनदास पेंशनर

१४ जून १८७७ को आर्यसमाज लाहौर की स्थापना स्वामी दयानन्द की उपस्थिति में ही हुई थी। उस समय लाला जीवनदास को इस समाज के मंत्री पद पर चुना गया। जव स्वामीजी अजमेर में अपनी अन्तिम रुग्णावस्था में लाये गये और उनके अस्वस्थ होने का समाचार आर्यसमाज लाहौर को मिला तो उसने अपने सभासदों को स्वामीजी की परिचर्या हेतु अजमेर भेजने का निश्चय किया। ये सभासद थे पं. गुरुदत्त और लाला जीवनदास। स्वयं लालाजी ने इस तथ्य का उल्लेख करते हुए लिखा है—

"Swami Dayanand lay dying at Ajmere. This intelligence was received at Lahore, on 9th of October. The office bearers of the Lahore Aryasamaj at once deputed L. Jiwandas and Pt. Guru Datta to Ajmere."

—The works of Pt. Guru Datta Vidyarthi : Biographical sketch, p–22.

कालान्तर में लाला जीवनदान आर्यसमाज लाहौर के उपप्रधान भी रहे थे।

ले.का.—१. मसला ए इल्हाम—(उर्दू) १८८४ में प्रकाशित, २. आर्याभिविनय भाषा टीका—वैदिक पुस्तकालय लाहौर द्वारा प्रकाशित, ३. पं. गुरुदत्त के समस्त ग्रन्थों व लेखों का सम्पादित संस्करण—लाला जीवनदास ने The works of Pt. Gurudatta Vidyarthi M. A. शीर्षक से १८९७ में प्रकाशित किया। इस ग्रन्थ के प्रारम्भ में उन्होंने पं. गुरुदत्त का विशद् जीवनचरित भी लिखा था। 'Essays on Swami Dayanand Saraswati and the Papers for the Thoughtful' शीर्षक से प्रकाशित स्वामी दयानन्द तथा आर्यसमाज विषयक

कतिपय विचारोत्तेजक निवन्धों का संग्रह लाला जीवनदास ने १९०२ में सम्पादित किया। इसमें लाला मूलराज लिखित Arya Samaj and Swami Dayanand, लाला मुन्शीराम का एक भाषण The Future of the Arya Samaj, पंजाब की जनगणना के अधीक्षक श्री ई. डी. मैकलेगन की पंजाब जनगणता की रिपोर्ट के आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द विषयक अनुच्छेद (११५-११९), अमेरिका के विचारक श्री ए. जे. डेविस कृत पुस्तक Beyond the Valley का आर्यसमाज विषयक उद्धरण, लाला हंसराज के एक भाषण का The Arya Samaj and Vedic Interpretation शीर्षक उद्धरण तथा स्वामी दयानन्द के वेदभाष्य के सम्वन्ध में आर्यसमाज के तत्कालीन मंत्री लाला जीवनदास द्वारा पंजाव यूनीवर्सिटी कालेज, शिमला के रजिस्ट्रार डा. जी. डब्यू. लाइटनर को २५ अगस्त १८७७ को भेजे गये पत्र को संकलित किया गया है। आपने सत्यार्थप्रकाश के प्रथम ११ समुल्लासों का उर्दू अनुवाद किया। यह अनुवाद आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाव द्वारा १८९९ में प्रकाशित हुआ। आपकी एक अन्य कृति 'सत्यार्थप्रकाश के संशोधन का नमूना-१' शीर्षक से १९११ में प्रकाशित हुई। लाला जीवनदास ने विधवा समस्या पर सदा-ए-हक (विधवा नारी अधिकार) १८८२, तथा दो हिन्दू वेवा औरतों की वातचीत (इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद एच. एल. सक्सेना ने किया था) नामक दो उर्दू पुस्तकों का भी प्रणयन किया था।

जीवनलाल आर्य

आर्यसमाज में प्रविष्ट होने के पूर्व ये सिंध के नवाबशाह जिले के कुण्डीनगर नामक स्थान के एक मठ के महन्त थे। सत्यार्थप्रकाश पढ़ने से आपके विचारों में परिवर्तन हुआ। अव ये दृढ़ आर्यसमाजी बन गये। इन्होंने सिंधी भाषा में सत्यार्थप्रकाश का अनुवाद किया। यह सिंधी सत्यार्थप्रकाश अव तक चार बार प्रकाशित हो चुका है। सर्वप्रथम १९३७ में आर्य प्रतिनिधि सभा सिंध ने इसे छपाया। पुनः १९४२ में गोविन्दराम हासानन्द ने और १९४६ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने इसे प्रकाशित किया। अजमेर के हकीम वीरूमल आर्यप्रेमी ने भी इसे प्रकाशित किया था।

जीवनलाल श्यामजी भाई राठौड़

२ अप्रेल १९१७ को श्री राठौड़ का जन्म गुजरात के नगर भावनगर में हुआ। आपके पिता का नाम श्यामजी भाई तथा माता का नाम श्रीमती नाथीवाई था। आपने आर्य कन्या महाविद्यालय वड़ौदा तथा आर्यकुमार महासभा बड़ौदा में कार्य किया। कवि, लेखक और पत्रकार के रूप में आप गुजरात के आर्यसमाजी क्षेत्र में सम्मानित हैं।

ले. का.—१. महर्षि दयानन्द सरस्वती—(गुजराती जीवनी) १९६७, २. ज्ञान गंगा (पद्य), ३. लाला लाजपतराय (जीवनी)।

श्री जीवानन्द 'आनन्द'

सुजानगढ़ (राजस्थान) निवासी जीवानन्द 'आनन्द' ने राजस्थान में भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् का संगठन किया तथा अनेक स्थानों पर आर्यकुमार सभाओं की प्रवृत्तियों को वढ़ावा दिया। बाद में ये ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम रतनगढ़ में रहने लगे थे।

ले. का.—१. सिंध में सत्यार्थप्रकाश (२००३ वि.), २. हमारे नेता (१९४६), ३. आर्यसमाज के नवरत्न।

व. प.—ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम, रतनगढ़ (राजस्थान)

पं. जीवाराम शर्मा, उपाध्याय

संस्कृत भाषा तथा उसके व्याकरण का सुगम अध्ययन कराने की दृष्टि से उपयोगी पुस्तकें लिखने वाले पं. जीवाराम शर्मा का जन्म १८८० में उत्तरप्रदेश के मैनपुरी नगर में हुआ। आपके विद्या गुरु पं. भवानीदत्त जोशी थे। अध्ययन समाप्त कर ये मुरादाबाद आये और वलदेव आर्य पाठशाला में संस्कृत पढ़ाने लगे। इसी नगर में शर्मा जी ने सरस्वती प्रेस की स्थापना की और अपने ग्रन्थों का प्रकाशन किया। १५ नवम्बर १९३९ को इनका देहान्त हो गया।

ले. का.—संस्कृत शिक्षा-(१९९६ वि.), रघुवंश, कुमारसम्भव, किरातार्जुनीय, शिशुपाल-वध तथा भट्टि काव्य का अनुवाद। अष्टाध्यायी भाष्यवृत्ति, लघुसिद्धान्त-कौमुदी तथा अन्नं भट्ट कृत तर्कसंग्रह की सुबोध व्याख्यायें।

श्री जेठमल सोढा

अजमेर के डाक विभाग के कर्मचारी श्री जेठमल सोढ़ा ही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने जोधपुर में स्वामी दयानन्द के रुग्णावस्था में दर्शन किये और महाराज के इस प्रकार अस्तंगत स्वास्थ्य की सूचना बाह्य संसार को दी। श्री सोढाजी ने कवि हृदय पाया था। उनकी 'युगराजविनय' और 'दिग्विजयी दयानन्द' शीर्षक काव्य-कृतियां उनके पुत्र स्व. ब्रह्मदत्त सोढा ने प्रकाशित की थीं।

पं. जे. पी. चौधरी, काव्यतीर्थ

खण्डनात्मक साहित्य के प्रगल्भ लेखक तथा उत्कृष्ट शास्त्रार्थकर्त्ता जे. पी. चौधरी का जन्म मिर्जापुर जिले के अदलहाट ग्राम में श्री रामगुलाम चौधरी के यहां १ मई १८८१ को हुआ। सत्रह वर्ष की आयु में आपने उर्दू मिडिल परीक्षा उत्तीर्ण की, पुनः १९०० में प्रथम श्रेणी में नार्मल परीक्षा भी उत्तीर्ण कर ली। इसी बीच इन्होंने फारसी विषय लेकर एन्ट्रेंस की परीक्षा भी दे डाली। वे प्रथम मिशन हाई स्कूल मिर्जापुर में अध्यापक बने। तत्पश्चात् मध्यप्रदेश के धार राज्य में शिक्षा विभाग के निरीक्षक का पद इन्हें मिला। कुछ काल बाद ये रांची के सेंट पॉल हाई स्कूल में संस्कृत के अध्यापक नियुक्त हुए। चार वर्ष तक यहां काम करने के पश्चात् जर्मन मिशन हाई स्कूल में संस्कृत के मुख्य पण्डित बना दिये गये।

यहां रहते हुए चौधरीजी ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से ऋग्वेद की मध्यमा तथा काव्यतीर्थ परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं तथा काशी के डी. ए. वी. कालेज में संस्कृताध्यापक नियुक्त हुए। चौधरीजी का संस्कृत तथा शास्त्र ग्रन्थों का स्वाध्याय अत्यन्त विशाल तथा गम्भीर था। वेद, उपनिषद्, दर्शन, निरुक्त आदि के साथ-साथ उन्होंने पुराणों का भी विस्तृत परिशीलन किया था। आर्यसमाज बुलानाला काशी के द्वारा जब एक पाक्षिक पत्र 'सद्धर्म-प्रचारक' निकलने लगा तो चौधरीजी उसके सम्पादक नियुक्त हुए। इस पत्र के बन्द हो जाने के पश्चात् इन्होंने 'पाखण्डखण्डिनी पताका' निकाली। इन पत्रों के माध्यम से चौधरी जी ने पं. कालूराम, पं. अखिलानन्द आदि सनातनी पण्डितों द्वारा आर्यसमाज के सिद्धान्तों पर किये जाने वाले आक्षेपों का सप्रमाण खण्डन किया। धूपचण्डी बनारस में आपने काशी गुरुकुल की स्थापना की और इस संस्था के माध्यम से आपने वर्षों तक छात्रों को शास्त्राध्ययन कराया। चौधरी जी ने कालूराम, अखिलानन्द आदि सनातनी विद्वानों से अनेक शास्त्रार्थ भी किये। १९६३ में चौधरीजी का वाराणसी में निधन हुआ।

ले. का.—सनातन धर्म रहस्य (१९२६), अवतारवाद मीमांसा (पं. कालूराम शास्त्री लिखित अवतार मीमांसा का खण्डन (१९२४), मूर्तिपूजा प्रश्नोत्तरी (१९६४), विधवा विवाह-प्रश्नोत्तरी (१९२७), पौराणिक तीर्थ मीमांसा, पुराण पर्यालोचन, गरुड़पुराणोक्त श्राद्ध वेद विरुद्ध है, गणेश महादेव के पुत्र नहीं हैं, मूर्तिपूजा—वेद विरुद्ध(१९३३),शुद्धि सनातन है(१९३०), शुद्धि-प्रश्नोत्तरी, वैदिक वर्ण व्यवस्था (१९३३), अछूतों का मन्दिर प्रवेश सनातन धर्मानुकूल है, क्या अहिल्या पत्थर की बनी थी?, यज्ञोपवीत शंका समाधान, क्या हनुमानजी वानर थे?, वेद और पशु यज्ञ—(अध्यापक विनोदबिहारी राय नामक ईसाई द्वारा लिखित 'ऋषियों का खानपान' नामक पुस्तक का उत्तर, (१९१८), वर्णव्यवस्था समुच्चय (१९३३), ऋषि दयानन्द का सत्य स्वरूप—(मुन्शी इन्द्रमणि के शिष्य जगन्नाथदास लिखित स्वामी दयानन्द की निन्दा-परक पुस्तकों—दयानन्द की बुद्धि, दयानन्द का हृदय तथा दयानन्द का कच्चा चिट्ठा का सप्रमाण उत्तर १९३०), पूर्णिया शास्त्रार्थ, महाभारत की रहस्यमय कथाएं—(महाभारत में वर्णित सर्पसत्र, तक्षक का उपाख्यान, ययाति, शुक्राचार्य तथा कर्ण का जन्म आदि प्रसंगों का विवेचन) वैदिक धर्म शिक्षा-(१९१७), सरल संस्कृत प्रवेशिका-

(२ भाग), महाराणा प्रताप, अजेय तारा, विश्राम बाग आदि ग्रन्थ।

जोरावरसिंह निगम

आप आर्यसमाज इटावा के प्रधान पद पर रहे थे। आपकी एक अंग्रेजी पुस्तक Vedic Religion and its expounder—Swami Dayanand Saraswati लीडर प्रेस इलाहाबाद से मुद्रित होकर १९१४ में प्रकाशित हुई।

कुं. जोरावरसिंह 'सिंह कवि'

प्रसिद्ध कवि, गायक तथा प्रचारक कुं. जोरावरसिंह 'सिंह कवि' का जन्म मथुरा जिलान्तर्गत बरसाना ग्राम में हुआ। पहले आप अध्यापक रहे। तदनन्तर उत्तरप्रदेश सरकार के सहकारी विभाग में सुपरवाइजर के पद पर कार्य किया। कुछ काल पश्चात् आपने सरकारी सेवा से त्यागपत्र दे दिया और आर्यसमाज के प्रचार में जुट गये। आपने स्वदेश के कोने कोने में जाकर धर्म प्रचार किया। बर्मा, केन्या, युगाण्डा, तंजानिया, दक्षिण अफ्रीका तथा थाईलैण्ड आदि देशों में भी आप प्रचारार्थ जा चुके हैं। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती प्रभावती आर्य कन्या महाविद्यालय वड़ौदा की स्नातिका हैं तथा धर्म प्रचार में अपने पति को सहयोग देती हैं। सिंह कवि के अनेक काव्य-संग्रह प्रकाशित हुए हैं।

ले. का.—अखण्ड भारत पच्चीसी, पाकिस्तान पच्चीसी, आदि १६ पुस्तकें, नारी जागृति गान (प्रभावती आर्योपदेशिक)

व. प.—सिंह निवास, डा. बरसाना (मथुरा)

डा० ज्वलन्तकुमार शास्त्री

आर्यसमाज में उदीयमान विद्वान्, लेखक तथा शोधकर्ता डा. शास्त्री का जन्म फाल्गुन कृष्णा नवमी २०१० वि. (२७ फरवरी १९५४) को विहार के चम्पारण जिले के ग्राम रूपहटी में हुआ। इनकी शिक्षा गुरुकुल रुद्रपुर (उत्तरप्रदेश) तथा वाराणसी में हुई। उन्होंने संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से १९७७ में संस्कृत में एम. ए. किया तथा १९८१ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से 'भट्ट गोविन्द विरचित श्रुति-विकास (ऋग्वेद के स्वल्पांश की टीका) का सम्पादन तथा समीक्षा' विषय लेकर पी-एच. डी. की उपाधि ग्रहण की। ज्ञातव्य है कि भट्ट गोविन्द सायण तथा वेंकटमाधव के पूर्ववर्ती हैं तथा उन्होंने ऋग्वेद के दशम मण्डल के ४६वें सूक्त से लेकर १९१ सूक्त तक का भाष्य किया है। इसकी एक मात्र हस्तलिखित प्रतिलिपि सरस्वती भवन वाराणसी में सुरक्षित है। इस कार्य के लिये शास्त्रीजी को पं. युधिष्ठिर मीमांसक ने प्रेरित किया था। २ मार्च १९८१ से वे अमेठी के रणवीर रणंजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय में संस्कृत प्रवक्ता के पद पर कार्यरत हैं।

ले. का.—राष्ट्रीय एकता और स्वामी दयानन्द (१९८७), सती प्रथा वेद विरुद्ध (१९८७), दयानन्द दर्शन (१९८८), इन ग्रन्थों के अतिरिक्त शास्त्रीजी ने स्वामी दयानन्द के जीवन से सम्बद्ध विभिन्न प्रसंगों पर भी मौलिक शोध की है जो वेदवाणी के विगत वर्षों के दयानन्द अंकों में प्रकाशित उनके लेखों से विदित होती है। काशी शास्त्रार्थ-पर्यालोचन, काशी में ऋषि दयानन्द तथा महर्षि दयानन्द की प्रामाणिक जन्मतिथि उनके ऐसे ही शोधपूर्ण निबन्ध हैं, जो पुस्तकाकार प्रकाशित होंगे।

व. प.—प्राध्यापक निवास, रणवीर रणंजय कालेज, अमेठी (उ. प्र.)—२२७४०५।

पं. ज्वालादत्त शर्मा

स्वामी दयानन्द के आद्य शिष्यों में पं. ज्वालादत्त शर्मा का नाम मुख्य रूप से परिगणित होता है। ये फर्रुखाबाद जिले के निवासी थे। जब स्वामीजी ने फर्रुखाबाद में संस्कृत पाठशाला की स्थापना की, तो उसके प्रारम्भिक छात्रों में पं. ज्वालादत्त भी थे। ये मिश्र आस्पद के कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। स्वामीजी स्वग्रन्थों का लेखन कार्य प्रायः पं. भीमसेन शर्मा और पं. ज्वालादत्त शर्मा से ही कराया करते थे। १६ अक्टूबर १८९० को इन्हें वैदिक यंत्रालय का स्थापनापन्न प्रबन्धकर्ता भी नियुक्त किया गया। इसी पद पर वे एक बार और नियुक्त हुए।

स्वामी दयानन्द के निधन के पश्चात् पं. ज्वालादत्त प्रयाग चले गये और पं. भीमसेन शर्मा द्वारा सम्पादित व प्रकाशित 'आर्य सिद्धान्त' मासिक के सम्पादन में सहयोग करने लगे। आप प्रयाग में स्थापित आर्य धर्म सभा के भी सदस्य एवं कार्यकर्ता थे। इन्होंने प्रयाग में दयानन्द प्रेस की स्थापना की तथा वहां से 'विद्यामार्तण्ड' नामक एक मासिक पत्र भी निकाला।

ले. का.—१. अष्टाध्यायी व्याख्या (१९४८ वि.), २. 'महर्षि वियोग शोक' (संस्कृत पद्य) (१९५५ वि.), ३. दशनियम शिखरिणी-(आर्यसमाज के नियमों का संस्कृत छन्दोबद्ध अनुवाद) (१९५० वि.), ४. प्रायश्चित्तादर्श-भाग १ (१९००)।

मुन्शी ज्वालाप्रसाद

आप कानपुर के निवासी थे और आपने आर्यसमाज कानपुर (मेस्टन रोड) का पचास वर्षीय इतिहास लिखा। यह ग्रन्थ १९२९ में छपा।

लाला ज्वालासहाय

पंजाब के पुराने आर्य नेता लाला ज्वालासहाय पं. गुरुदत्त विद्यार्थी तथा लाला लाजपतराय के साथी थे।

ले. का.—१. वेनती (ट्रैक्ट)—कोहेनूर प्रेस लाहौर से १८९३ में छपी, २. आजकल के साधुओं की करतूत—मूलतः यह पुस्तक उर्दू में लिखी गई थी। मास्टर दुर्गाप्रसाद ने इसका अनुवाद हिन्दी में किया जो विरजानन्द प्रेस लाहौर से १८८८ में प्रकाशित हुआ।

श्री ज्येष्ठ वर्मन

श्री वर्मन का जन्म १२ फरवरी १९४० को कर्नाटक प्रान्त के मंगलूर जिले के वजपे नामक स्थान में हुआ। इनका उच्च शिक्षण बम्बई में हुआ। संस्कृत व्याकरण तथा अर्ध मागधी भाषा पर इनका विशेष अधिकार है। महर्षि दयानन्द सरस्वती कालेज बम्बई में ये अध्यापक भी रहे। आपने आर्य प्रतिनिधि सभा बम्बई के मंत्री पद पर तीन वर्ष तक कार्य किया। कन्नड़ भाषा में प्रकाशित होने वाले आर्यसमाज के एकमात्र पत्र 'वेदप्रकाश' के सम्पादक भी रहे।

ले. का.—श्री गणेश का रहस्य, धर्मो रक्षति रक्षितः, तपः फलोदयम्। आपने कतिपय उच्च कोटि के शोध निबन्ध भी लिखे हैं यथा—Guide Lines for Interpretation of Vedic Hymns, Indian Godheads, Panini and his Ashtadhyayi, Introduction to Rigveda–Darshan. कुछ अन्य रचनायें—सप्त मर्यादा, कृण्वन्तो विश्वमार्यम्, महर्षि दयानन्द सरस्वती, यज्ञेनयज्ञमजयन्त देवाः, ईश्वर का सच्चा स्वरूप और उसकी उपासना।

व. प.—शल्यराज इन्स्ट्रूमेंट्स, एम. एस. १९/६६० चेम्बूर कालोनी, बम्बई ४०००७४.

श्रीमती ज्योत्स्ना

आर्यसमाज के विख्यात लेखक और पत्रकार स्व. पं. भारतेन्द्रनाथ तथा श्रीमती राकेश रानी के यहाँ ज्योत्स्ना का जन्म ३ अप्रेल १९५३ को गाजियाबाद में हुआ। इनकी शिक्षा एम. ए. अंग्रेजी तथा एम. ए. हिन्दी तक हुई है। इनका विवाह डॉ. धर्मवीर के साथ १९७५ में सम्पन्न हुआ। जनज्ञान कार्यालय से प्रकाशित अनेक ग्रन्थों का सम्पादन करने के अतिरिक्त श्रीमती ज्योत्स्ना ने 'महर्षि दयानन्द के जीवन परक महाकाव्य' शीर्षक शोध प्रबन्ध लिखा है, जो दयानन्द संस्थान से २०३५ वि. में प्रकाशित हुआ।

व. प.—२४/२६९ चांदबावड़ी मार्ग, अजमेर-३०५००१।

पं. ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल'

प्रसिद्ध हिन्दी लेखक और पत्रकार पं. ज्योतिप्रसाद मिश्र 'निर्मल' का जन्म १८९५ में इलाहाबाद जनपद के एक ग्राम में हुआ था। आपने मनोरमा, भारतेन्दु तथा देशदूत आदि पत्रों का कई वर्षों तक सम्पादन किया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग से आपका निकट का सम्बन्ध रहा। सितम्बर १९८० में आपका निधन हो

गया। श्री 'निर्मल' द्वारा लिखित 'स्वामी दयानन्द का जीवन चरित' १९५७ में शिवप्रसाद एण्ड सन्स इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ।

मुन्शी ज्योतिस्वरूप वकील

उत्तरप्रदेश में डी. ए. वी. कालेजों की स्थापना करने वालों में मुन्शीजी का नाम अग्रगण्य है।

ले. का.—ईसाई मत परीक्षा १८९८, कपफारा—चार्ल्स ब्रेडला लिखित Christian Theory of Atonement का उर्दू अनुवाद, । पुराणादर्श—नं. १—अक्टूबर १८९०, नं. २—नवम्बर १८९०, नं. ३—जनवरी १८९१.

ज्ञानकुमार आर्य

हिन्दी तथा मराठी में समान रूप से लिखने वाले ज्ञानकुमार आर्य का जन्म लातूर जिले के शिरसी नाम ग्राम में श्री तात्याराव भोसले के यहाँ हुआ। इन्होंने हिन्दी में एम. ए. तथा बी. एड. की परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं तथा सम्प्रति वे उस्मानाबाद जिला परिषद् के शिक्षा विभाग में अध्यापक हैं।

ले. का.—मराठी पत्रों में आर्यसमाज विषयक लेख तथा सार्वदेशिक, आर्योदय, वेदवाणी, परोपकारी, राजधर्म आदि पत्रों में लेखन। असे होते दयानन्द (मराठी पुस्तक-शीघ्र प्रकाश्य)।

व. प.—सीताराम नगर, लातूर—४३१५३१.

लाला ज्ञानचन्द

लालाजी दिल्ली के निवासी थे। ये अच्छे स्वाध्याय-शील, विचारक तथा लेखक थे। इनका जन्म १२ वैशाख १९२३ वि. को हुआ। ये सार्वदेशिक सभा के आजीवन सदस्य थे।

ले. का.—१. आर्यसमाज की स्थिति (१९१७), २. आर्यसमाज और जात-पांत व छुआछूत, ३. सत्य निर्णय—(महात्मा गांधी द्वारा सत्यार्थप्रकाश एवं उसके लेखक की आलोचना में लिखे लेख का उत्तर, १९३३), ४. इज़हारे हक़ीकत—(उक्त पुस्तक का उर्दू अनुवाद), ५. धर्म और उसकी आवश्यकता, (१९३५), ६. वर्ण व्यवस्था का वैदिक रूप, (२००६ वि., १९४९), ७. इण्डिया नहीं भारत, जनगणना (१९४१) में हमें अपने को आर्य ही लिखवाना चाहिए (१९४१)।

श्री ज्ञानप्रकाश

आपका जन्म १५ दिसम्बर १९०४ को दिल्ली के निकट महरौली ग्राम में लाला भोलानाथ के यहां हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा रामजस स्कूल दिल्ली में हुई। डी. ए. वी. कॉलेज लाहौर से आपने संस्कृत में एम. ए. किया। १९४४ में आपने दिल्ली की मॉडल वस्ती में आर्य-समाज की स्थापना की।

ले. का.—भगवद्गीता का पद्यानुवाद, यह गौतम बुक डिपो दिल्ली से १९४९ में प्रकाशित हुआ था।

ज्ञानप्रकाश आर्य

श्री आर्य का जन्म १ मई १९१५ को हिमाचल प्रदेश के जिला कांगड़ा के ग्राम पीर सलूही में श्री जयकृष्णदास के यहाँ हुआ। छात्रावस्था में ही वे आर्यसमाज के सम्पर्क में आये और उन्होंने हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी रक्षा आन्दो-लन व गोरक्षा सत्याग्रह में भाग लिया। वे आर्यसमाज शिमला के सक्रिय कार्यकर्त्ता थे। १९ जून १९८९ को उनका निधन हो गया।

ले. का.—महाशय ज्ञानप्रकाश ने हिमाचल प्रदेश में आर्य पत्रकारिता का सूत्रपात किया तथा १९७२ में ज्ञान-प्रकाश मासिक का आरम्भ किया। १९८० तक यह पत्रिका चलती रही। बाद में आर्थिक कठिनाई के कारण इसे बन्द करना पड़ा।

स्वामी ज्ञानानन्द (जैमिनि मेहता)

विदेश यात्रा विषयक अनेक ग्रन्थ लिखने वाले तथा स्वयं भी अनेक बार विदेश यात्राओं पर जाकर धर्मप्रचार करने वाले जैमिनि मेहता का जन्म ११ अक्टूबर १८७१ को पश्चिमी पंजाब के कमालिया नगर में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री रामदित्तामल था। प्रार-

म्भिक शिक्षा प्राप्त करने के अनन्तर इन्होंने शिक्षा-विभाग में ही नौकरी कर ली। इसी समय आपका आर्य-समाज से परिचय हुआ और अब वे वैदिक धर्म के प्रचारक बनने के लिए कृत-प्रतिज्ञ हुए। आपने धर्म प्रचार हेतु एकाधिक बार विदेशों का भ्रमण किया। व्याख्यान देने के अतिरिक्त आर्यसमाज के कार्य को सुसंगठित करने तथा अन्य देशवासियों पर भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का प्रभाव स्थापित करने में भी योगदान दिया। मेहताजी की प्रचार यात्राओं का विवरण इस प्रकार है—

आपकी प्रथम विदेश यात्रा १९२२-२३ में हुई। इसमें आपने बर्मा में रहकर धर्म-प्रचार किया। द्वितीय यात्रा बर्मा तथा मॉरिशस की १९२५ में की। फरवरी १९२६ में समुद्र मार्ग से उन्होंने बर्मा, सिंगापुर, स्याम, मलाया तथा सुमात्रा (वर्तमान इण्डोनेशिया) आदि देशों का भ्रमण किया। यह यात्रा दिसम्बर १९२६ में समाप्त हुई। इसमें आपने पूर्वी देशों का विस्तृत भ्रमण किया। चतुर्थ यात्रा के दौरान मेहताजी फिजी तथा न्यूजीलैण्ड गये। १६ दिसम्बर १९२८ को पोर्ट ऑफ स्पेन (ट्रिनिडाड) में उतर कर मध्य अमेरिका (ईस्ट इण्डीज) में प्रचार किया। तत्पश्चात् दक्षिण अमेरिका के ब्रिटिश गाइना आदि देशों में गये। इनकी पांचवीं विदेश यात्रा इण्डोनेशिया, चीन तथा जापान की थी। छठी यात्रा में वे अफ्रीका गये और मोम्बासा, दारेस्सलाम, केन्या, युगाण्डा, टैंगानिका आदि स्थानों में प्रचार किया। मेहता जी ने बी. ए. तथा एल. एल. बी. की परीक्षायें उत्तीर्ण कर ली थीं। अतः १९२० के आसपास आपने वकालत भी की। मेहताजी का हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं पर समान अधिकार था। भारत के प्राचीन साहित्य, सभ्यता, संस्कृति तथा इतिहास का आपको व्यापक ज्ञान था। अतः आप अपने व्याख्यानों में भारत के विगतकालीन गौरव को अत्यन्त प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करते थे। उन्होंने लाहौर से प्रकाशित होने वाले 'आर्यधर्म रक्षक पत्र' का सम्पादन भी किया। मुलतान से 'मनुष्य सुधार' नामक एक अन्य पत्र भी निकाला जो १९०० तक प्रकाशित होता रहा। जीवन के अन्तिम भाग में मेहताजी ने संन्यास ग्रहण कर लिया था। अब उनका नाम स्वामी ज्ञानानन्द रक्खा गया। १९५६ में इनकी मृत्यु हुई।

ले. का.—१. यात्रा साहित्य—दक्षिण अफ्रीका की यात्रा तथा वैदिक धर्म प्रचार, अमेरिका की यात्रा तथा वैदिक धर्म प्रचार, दक्षिण अमेरिका की यात्रा, मॉरिशस की यात्रा (१९२६), फिजी यात्रा (१९३०), पाताल देश की यात्रा (१९३०), स्याम देश की यात्रा (१९२७), जापान दर्पण (१९३१), इण्डोनेशिया (१९३१), अफ्रीका यात्रा (१९३३).

२. प्रचार यात्रा से सम्बन्धित आपके अन्य ग्रन्थ— विदेशों में आर्यसमाज के प्रचार का इतिहास और मेरा अपना प्रचार (१९३६), विदेशों में आर्यसमाज के प्रचार का प्रभाव तथा अमेरिका में वैदिक सभ्यता (१९३९), विदेश यात्रा पथ प्रदर्शक (१९३९), Vedic Mission in Central America. यहां यह ज्ञातव्य है कि मेहताजी की अधिकांश यात्रा पुस्तकों का प्रकाशन मेरठ के प्रेमी प्रेस ने किया। कुछ ग्रन्थ आर्य पुस्तकालय आगरा तथा प्रेम पुस्तकालय आगरा ने भी प्रकाशित किये। **जैमिनि मेहता लिखित अन्य ग्रन्थों का विवरण—**अमेरिकन लेडी और भारत माता—(मिस कैथेरिन मेयो लिखित 'मदर इण्डिया' का उत्तर, १९३३), जगद्गुरु भारत, जगद्गुरु दयानन्द का संसार पर जादू, उपनिषदों का महत्त्व (१९२८), जावा में पाषाण चित्र लिपि रामायण (१९३२), संसार का आगामी धर्म क्या होगा?, आर्यसमाज का महत्त्व (काम), वेदों का महत्त्व (१९२४), संस्कृत भाषा का महत्त्व।

जैमिनि मेहता के उर्दू ग्रन्थ—

१. हिन्दू जाति की अवनति के कारण, २. हिन्दू संगठन, ३. पं. लेखराम की शहादत, ४. पं. लेखराम की कुर्बानी के नतायज, ५. मिर्जा कादियानी और उसके इलहामात, ६. मिर्जा साहब की पेशीनगोइयां, ७. मिर्जा साहब और पं. लेखराम का मुकाबिला, ८. मिर्जा साहब की बेजा शेखियां, ९. खुदा और शैतान का मुकाबिला, १०. स्त्री शिक्षा, ११. सच्चा दान, १२. यज्ञ और कुर्बानी, १३. ब्रह्मचर्य की अज़मत, १४. ओम् की माहियत, १५. लड़का या लड़की, १६. दीवाचा-संस्कारविधि, १७. संस्कार दर्पण,

१८. भारत से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?, १९ नवजीवन विद्या (डा. कावन की पुस्तक का अनुवाद), २०. हिन्दू कौम मर रही है, २१. ब्रिटिश राज्य को बरकतें—(१९१९), २२. तालीम व कौमियत (१९२१), २३. महात्मा गांधी का पैग़ाम (१९२२), २४. चर्खे की करामात, २५. चौके की करामात, २६. चक्की की करामात, २७. दरामद बरामद तिजारत हिन्द, २८. मुक्ति या निज़ात, २९. संस्कार महत्त्व, ३०. क्या वृक्षों में जीव है ?, ३१. मांस विरोध, ३२. नामकरण संस्कार, ३३. चूड़ाकर्म संस्कार।

वि.अ.—जैमिनि दर्शन-गुप्तनाथसिंह लिखित (१९३६) तथा मेहता जैमिनि का जीवनचरित्र—श्रीराम भारती १९३३.

ज्ञानेन्द्र प्रभु

ये मूलत: ईसाई थे। तत्पश्चात् आर्य बने।

ले. का.—वैदिक धर्माचरण, मैंने ईसाई मत छोड़ कर क्यों वैदिक धर्म ग्रहण किया ? तथा वैदिक धर्म और मुहम्मदी मत।

पं. ज्ञानेन्द्र सिद्धान्तभूषण

हैदराबाद में किये गये आर्य सत्याग्रह के सातवें सर्वाधिकारी पं. ज्ञानेन्द्रजी का जन्म १९१० में गुजरात प्रान्त में हुआ था। बचपन में ही इनके माता-पिता का देहान्त हो जाने के कारण पालन पोषण के लिये इन्हें फतहसिंह राव अनाथालय वड़ौदा में प्रविष्ट कराया गया। कालान्तर में आप अध्ययनार्थ दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर में प्रविष्ट हुए, जहां से आपने 'सिद्धान्तभूषण' की उपाधि ग्रहण की। आपका विवाह श्रीमती अनिला देवी के साथ सम्पन्न हुआ। अध्ययनोपरान्त पं. ज्ञानेन्द्र ने मरोली (सूरत) नामक स्थान को अपना निवास बनाया और वहाँ से तरणि नामक एक मासिक पत्र भी निकाला। महागुजरात प्रकाशन मण्डल की स्थापना कर आपने अनेक उपयोगी ग्रन्थों का प्रकाशन किया।

हैदराबाद में आर्य सत्याग्रह का आरम्भ जनवरी १९३९ में हुआ। ज्ञानेन्द्रजी को इस सत्याग्रह का ९वां सर्वाधिकारी बनाया गया। २१ जून १९३९ की रात्रि को १७० सत्याग्रहियों के साथ आपने मद्रास से प्रस्थान किया तथा गुलबर्गा में गिरफ्तार हुए। आपको ९ मास का कठोर कारावास का दण्ड दिया गया। इनका निधन १९४८ ई. में हुआ।

पं. ज्ञानेन्द्रजी ने गुजराती भाषा में आर्यसमाज विषयक उत्कृष्ट साहित्य का निर्माण किया है।

ले. का.—वैदिक धर्म नी सार्वभौमता (१९३७), सहशिक्षण : एक रोग, बालोपयोगी धर्म शिक्षा, जगद्गुरु दयानन्द (१९३४), युगावतार स्वामी दयानन्द अने तेमनो आर्यसमाज, ब्राह्मण ग्रन्थ वेद नहीं, मूर्तिपूजा रहस्य, स्तवनाञ्जलि (१९४२)।

ज्ञानेश्वर आर्य

श्री आर्य का जन्म आश्विन शुक्ला ७ सं. २००६ वि. (२७ सितम्बर १९४९) को बीकानेर में श्री द्वारकादास के यहां हुआ। इन्होंने अर्थशास्त्र में एम. ए. किया है। तत्पश्चात् गुरुकुल कालवा में आपने महाभाष्यान्त व्याकरण पढ़ा तथा हरिद्वार में रह निरुक्त तथा साहित्यशास्त्र का विधिवत् अध्ययन किया। वे विगत कई वर्षों से स्वामी सत्यपति के सान्निध्य में दर्शनशास्त्र का अध्ययन तथा योग साधना कर रहे हैं।

ले. का.—विवेक वैराग्य श्लोक संग्रह (गुजराती लिपि में भावार्थ युक्त सुभाषित), योगदर्शन भाष्य।

राष्ट्रकवि झवेरचन्द मेघाणी

गुजराती के राष्ट्रकवि मेघाणी का जन्म १३ अगस्त १८९७ को सौराष्ट्र के पर्वतीय क्षेत्र के नगर चोटीला में कालिदास मेघाणी के यहां हुआ। उन्होंने शामलदास कालेज भावनगर से बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा १९१५ में सनातन धर्म हाई स्कूल भावनगर में शिक्षक बन गये। १९१७ में वे कलकत्ता गये और ऐल्यूमिनियम के एक कारखाने में काम करने लगे। इसी बीच उन्हें कम्पनी के मालिक के साथ इंगलैण्ड जाने का भी अवसर मिला। १९२२ में वे 'सौराष्ट्र' नामक साप्ताहिक पत्र के सम्पादक मण्डल में आ गये। दयानन्द जन्म शताब्दी के

अवसर पर इस पत्र ने अपना प्रसिद्ध दयानन्द शताब्दी विशेषांक निकाला था। उन्होंने गुजरात के प्रसिद्ध पत्र फूलछाब का भी सम्पादन किया। प्रारम्भ से ही वे देश की स्वतन्त्रता के आन्दोलन से जुड़े रहे तथा अहमदाबाद की साबरमती जेल में दो वर्ष का कारावास का दण्ड झेला। यहां सरदार पटेल उनके कारागार के साथी थे। उन्होंने अपनी बहुविध कृतियों के द्वारा गुजराती साहित्य को नूतन दृष्टि दी तथा 'राष्ट्रीय शायर' का सम्मान प्राप्त किया। ९ मार्च १९४७ को उनका निधन हो गया।

ले. का.—झण्डाधारी दयानन्द (दयानन्द के जीवन एवं व्यक्तित्व का भाव स्फूर्त शैली में मूल्यांकन) १९५७, इसी ग्रन्थ को 'दयानन्द सरस्वती' शीर्षक से गुर्जर ग्रन्थ-रत्न कार्यालय अहमदाबाद ने भी प्रकाशित किया था। स्वामी श्रद्धानन्द तथा लाला लाजपतराय का 'नरवीर लालाजी' शीर्षक जीवन चरित।

टाटाचार्य 'शैदा'

ये पारसी शैली के नाटककार थे। श्री शैदा ने स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन को आधार बना कर एक नाटक लिखा था। 'नाटक श्री श्रद्धानन्द' को द्वारका-प्रसाद अत्तार शाहजहांपुर ने ५ फरवरी १९२७ के 'तेज' दिल्ली के शहीद अंक से उद्धृत कर पुस्तक रूप में प्रका-किया था।

प्रो. टीकमदास गाजरा

प्रो. ताराचन्द गाजरा सिंध के विख्यात आर्य नेता तथा यशस्वी लेखक थे। उनके छोटे भाई टीकमदास गाजरा भी अंग्रेजी के सुलेखक थे। गवर्नमेंट हाई स्कूल में सहायक अध्यापक के पद पर कार्य करने से पूर्व टीकमदास गाजरा गुरुकुल कांगड़ी में अंग्रेजी तथा इतिहास के अध्यापक रहे थे।

ले. का.—1. An Interpretation of Dayanand. (स्वामी दयानन्द के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का विवेचन करने वाले निबन्धों का संग्रह), 2. Plato, Aristotle and Dayanand : A comparison of their Metaphysics—प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक अरस्तू तथा प्लेटो के तत्त्वज्ञान के साथ स्वामी दयानन्द के दार्शनिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन विद्वतापूर्ण शैली में प्रस्तुत किया गया है, 3. Present Educational Unrest, 4. Ideals of Education—शिक्षा के आदर्शों की विवेचना (१९३२), 5. The Metaphysical basis of Educational Theory, 6. Love—A Modern Malady मानवीय हृदय को प्रभावित करने वाले प्रणय भाव का मनोवैज्ञानिक विवेचन।

राय ठाकुरदत्त धवन 'सत्यार्थी'

राय ठाकुरदत्त सीमान्त प्रदेश के डेरा इस्माइल खां के निवासी थे। वे महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) के सहयोगी, सहकर्मी तथा गुरुकुल दल के प्रबल पक्षपोषक एवं प्रमुख प्रवक्ता थे। जिला न्यायाधीश के रूप में कार्य करने के पश्चात् उन्होंने राज्य सेवा से अवकाश ग्रहण किया। वे गुजरांवाला गुरुकुल समिति के अध्यक्ष भी रहे। आर्यसमाज के इतिहास लेखक पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति ने इनका उल्लेख करते हुए लिखा है—"धवनजी ने अपना उपनाम 'सत्यार्थी' रखा था। आप स्वाध्यायशील और कर्मठ कार्यकर्त्ता थे।"

ले. का.—वैदिक धर्म प्रचार—यह पुस्तक मूल रूप से उर्दू में छपी थी। पं. चमूपति ने इस पर अपनी सम्मति व्यक्त करते हुए लिखा था—'यह पुस्तक विचार की गम्भीरता, विषय के स्पष्ट विवेचन, भाषा की प्रांजलता के कारण आर्य साहित्य में विशेष महत्त्व रखती है।' इसका हिन्दी अनुवाद १८८६ में छपा था। महर्षि दयानन्द का उपकार—'वैदिक धर्म प्रचार' का ही एक अंश 'आर्यावर्त' के मैनेजर तथा आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल-बिहार के उपमंत्री श्री ब्रह्मानन्द द्वारा हिन्दी में अनूदित किया जाकर आर्यावर्त यंत्रालय, दानापुर से १९५३ वि. (१८९७) में प्रकाशित हुआ। वैदिक धर्म का महत्त्व (उर्दू से अनूदित, १८९७)।

अंग्रेजी ग्रन्थ—

Public Spirit (Vedic Texts New Series No. 1)—

इस पुस्तक में ऋग्वेद दशम मण्डल के अन्तिम संज्ञान सूक्त के प्रसिद्ध मंत्र 'सगच्छध्वं संवदध्वं' की विस्तृत व्याख्या लिखी गई है। लाला जीवनदास ने स्व. सम्पादित Papers for the Thoughtful में इसे सम्मिलित किया था। पुस्तक की लोकप्रियता का अनुमान इसी बात से होता है कि इसका अनुवाद हिन्दी, उर्दू तथा गुजराती भाषाओं में भी हुआ था। Truth and Vedas (Vedic Text No. 2)—दयानन्द जन्म शताब्दी मथुरा के प्रधान महात्मा नारायण स्वामी द्वारा १९२५ में प्रकाशित इस पुस्तक में ऋग्वेद के दशम मण्डल के १७०वें सूक्त की व्याख्या लिखी गई है। सायण, विल्सन तथा ग्रिफिथ के अर्थों को उद्धृत करने के पश्चात् लेखक ने स्वयं मंत्रार्थों को स्पष्ट किया है। Truth—The Bedrock of Aryan Culture (Vedic Text No. 3)—दयानन्द जन्म शताब्दी मथुरा के प्रधान महात्मा नारायण स्वामी द्वारा १९२५ में प्रकाशित।

पं. ठाकुरप्रसाद शास्त्री

आप मूलतः उत्तरप्रदेश के निवासी थे। 'व्याकरणाचार्य' की उपाधि से विभूषित पं. ठाकुरप्रसाद आगरा कालेज में हैड पण्डित के रूप में कार्यरत रहे। तत्पश्चात् उन्हें जोधपुर राज्य में वैदिक धर्म प्रचारक का वैतनिक पद दिया गया।

ले. का.—बाल विवाह विचार, सद्धर्म दर्शक (गायत्री व्याख्या), स्त्री शिक्षा विचार—इलाहाबाद से १९४५ वि. में प्रकाशित। इस विषय पर शर्माजी ने एक व्याख्यान प्रयाग के हिन्दू समाज के अधिवेशन में दिया था। उसी व्याख्यान को उक्त पुस्तक में ग्रन्थाकार प्रकाशित किया गया है।

ठाकुरप्रसाद शाह

आप बिहार के दानापुर नगर के निवासी थे। इनके सभी ग्रन्थ दानापुर से ही छपे।

ले. का.—१. हजरत ईसा का भारत में आगमन (१९५७ वि.), २. एक पुराणपंथी के प्रलाप की प्रत्यालोचना (१९११), ३. एक वेद विरोधी की धृष्टता का मर्दन (१९१२)।

डेविस, एण्ड्रू जैक्सन

अमेरिका के विख्यात दार्शनिक और विचारक एण्ड्रू जैक्सन डेविस ने स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज के सम्बन्ध में अत्यन्त प्रशंसापूर्ण उद्गार अपने ग्रन्थ Beyond-the Valley में लिखे थे। कालान्तर में उनका यह संदर्भ आर्यसमाज में अत्यन्त लोकप्रिय हुआ और इसे अनेकत्र उद्धृत और प्रकाशित किया गया। "Views of the Poughkeepsie Seer and Claivoyant Andrew Jackson Davis on the Aryasamaj and its Founder Swami Dayanand Sarasvati"—चार पृष्ठों की यह लघु पुस्तिका, जिसमें डेविस का उक्त लेख मूल रूप में है, १८८८ में विरजानन्द प्रेस लाहौर से प्रकाशित हुई।

'आर्यसमाज और उसके संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती पर विचार'—उक्त अंग्रेजी लेख का पं. गंगाप्रसाद कृत हिन्दी अनुवाद वैदिक पुस्तक प्रचारक फण्ड, मेरठ द्वारा पुस्तक संख्या १६ के अन्तर्गत १८९७ में छपा। पं. गंगाप्रसाद ने ही इसका उर्दू अनुवाद 'आर्यसमाज और उसके वानी स्वामी दयानन्द सरस्वती के बारे में' शीर्षक से किया। इसे मेरठ के रामचन्द्र वैश्य ने प्रकाशित किया था।

उ. तान ठुन

५८ वर्षीय श्री ठुन श्वेबो (बर्मा) के निवासी हैं। इनकी मातृभाषा बर्मी है और ये इस भाषा के प्रसिद्ध लेखक हैं। आपने पं. नरदेव वेदालंकार की पुस्तक 'आर्यसमाज : आदर्श और उपलब्धियां' का बर्मी भाषा में अनुवाद किया है। यह ग्रन्थ आर्य प्रतिनिधि सभा बर्मा से १९७५ में प्रकाशित हुआ।

प्रो. ताराचन्द डेऊमल गाजरा

अंग्रेजी और सिंधी भाषा में आर्यसमाज विषयक उच्चकोटि का साहित्य लिखने वाले ताराचन्द गाजरा का जन्म

१२ दिसम्बर १८८६ को सिंध के शिकारपुर नगर में एक आर्यसमाजी परिवार में हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा गवर्नमेंट हाईस्कूल शिकारपुर में हुई। तदुपरान्त उन्होंने डी. जे. सिंध कालेज करांची से बम्बई विश्वविद्यालय की बी.ए. तथा एम.ए.(अंग्रेजी) परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। कालान्तर में वे गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी में अंग्रेजी के प्राध्यापक पद पर नियुक्त हुए। १९२१ में गाजराजी ने महात्मा गांधी के आह्वान पर राज्य सेवा से त्यागपत्र दे दिया। उस समय वे गवर्नमेंट हाई स्कूल शिकारपुर में अध्यापक थे। अब वे असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े। कांग्रेस कार्यकर्ता के रूप में उन्होंने देश के स्वाधीनता संग्राम में भाग लिया। वे शिकारपुर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष तथा सिंध प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य रहे। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सभासद के रूप में कार्य करने का अवसर भी उन्हें मिला था।

गाजराजी का आर्यसमाज से सक्रिय सम्बन्ध रहा। वे अनेक वर्षों तक सिंध प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान रहे। देश विभाजन के पश्चात् वे बम्बई रहने लगे थे। यहां रहते हुए उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा सिंध का पुनर्गठन किया तथा देश के विभिन्न भागों में बसे सिंधी आर्य समाजियों से सम्पर्क स्थापित किया। १ अक्टूबर १९६८ को ८२ वर्ष की आयु में गाजराजी का निधन हुआ।

गाजराजी अंग्रेजी के प्रौढ़ लेखक थे। गुरुकुल कांगड़ी की अंग्रेजी पत्रिका "वैदिकमैगजीन" में इनके विद्वतापूर्ण निवन्ध प्राय: प्रकाशित होते रहते थे। कालान्तर में इन्हीं लेखों को पुस्तक रूप दे दिया जाता था।

ले. का.—1. Swami Dayanand on Bhakti—यह व्याख्यान प्रो. ताराचन्द ने साधु टी. एल. वास्वानी के करांची स्थित आश्रम में दिया था, 2. Advent of Rishi Dayanand. (1911), 3. The Feast of Lights—इसमें दीपावली के सांस्कृतिक महत्त्व का उल्लेख करने के साथ-साथ स्वामी दयानन्द के संक्षिप्त जीवनवृत्त को संगृहीत किया गया है, 4. The key of the Day.—इसमें 'प्रातरग्निं' आदि प्रात:काल में पठनीय पांच मन्त्रों की व्याख्या की गई है (१९३२), 5. Animal Sacrifices before Deities—बम्बई की Humanitarian League द्वारा आयोजित अखिल भारतीय प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार प्राप्त निवन्ध (१९३१), 6. Penance and Victory (1932.), 7. Education in Ancient India—प्राचीन भारत की शिक्षा प्रणाली पर लिखित विद्वतापूर्ण निबन्ध, 8. Ancient India (1930), 9. Hindu Mission (1931), 10. Brutal Treatment of Animals—पशुओं के प्रति मनुष्य के अमानवीय एवं क्रूरतापूर्ण व्यवहार का चित्र (१९१८), 11. Lord Krishna :—कृष्ण के आदर्श मानवीय जीवन की व्याख्या, १२. At the Feet of the Master : A Few Flowers of Faith—स्वामी दयानन्द की जन्म शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित (१९२५), 13. Agnihotra (1915), 14. A patriot's Prayer, 15. Hindu Rituals, 16. Swami Dayanand on Consciousness, Race, Culture etc, १७. गाजराजी की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कृति उनके द्वारा लिखित स्वामी दयानन्द का अंग्रेजी जीवनचरित Life of Swami Dayanand Saraswati है। वैदिक मैगजीन में यह ग्रन्थ पहले धारावाही छपता रहा। तत्पश्चात् १९१५ में लेखक ने इसे लाहौर में मुद्रित करा कर प्रकाशित किया। गाजराजी की मातृभाषा सिंधी थी। उन्होंने इस भाषा में अनेक पुस्तकें लिखीं जिनमें से कुछ के अंग्रेजी नाम दिये जा रहे हैं—Hindu Martyrs, Drink Evil, Hindu Heros, Shuddhi, Vedic Marriage, Worship of Vishnu, Ancient India, Deepmala, Aryan Lady, Sikh Gurus 18. Hindu Shastras in Relation to Untouchability. (1932), 19. Theory of Magis. (1933), 20. Ban Banaspati (1953), 21. Man Sins against Animals (१९५३), प्रो. ताराचन्द के ग्रन्थ हरिसुन्दर साहित्य सदन (मन्दिर) शिकारपुर (सिंध) से छपे थे। यहां से सिंधी भाषा का एक मासिक पत्र 'सत्यवादी' भी प्रकाशित होता था। इस प्रकाशन संस्था के संचालक जीवतराम होतचन्द नामक एक सज्जन थे।

डा. तुलसीराम आर्य

श्री आर्य का जन्म झांसी जिले के ग्राम जौरी बुजुर्ग में २९ जून १९६१ को श्री हरीदास आर्य के यहां हुआ। इनकी शिक्षा आर्ष गुरुकुल एटा तथा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में हुई जहां से इन्होंने विद्याभास्कर की परीक्षा उत्तीर्ण की। पंजाब विश्वविद्यालय से १९८१ में संस्कृत में एम. ए. करने के पश्चात् आपने इसी विश्वविद्यालय से 'संस्कृत वाङ्मय में आचार्य शौनक' विषय पर १९८५ में पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। १९८१ में वे गुरुकुल कुरुक्षेत्र में संस्कृत के अध्यापक बने। अब इसी गुरुकुल में आप मुख्याध्यापक हैं।

ब. प.—गुरुकुल कुरुक्षेत्र (हरयाणा)।

पं. तुलसीराम स्वामी

अपने युग के अद्वितीय शास्त्रज्ञ, वाग्मी तथा लेखक पं. तुलसीराम स्वामी का जन्म ज्येष्ठ शुक्ला ३ सं. १९२४ वि. (१८६७) को मेरठ जिले के परीक्षितगढ ग्राम में पं. हजारीलाल स्वामी के यहां हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा पिता के सान्निध्य में हुई। ९ वर्ष की आयु में आपका यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न हुआ। ११ वर्ष की आयु में बालक तुलसीराम पर शीतला रोग का प्रकोप हुआ, फलस्वरूप उनके एक नेत्र की ज्योति नष्ट हो गई। गढमुक्तेश्वर में उन्होंने पं. लज्जाराम से संस्कृत भाषा तथा व्याकरण का अध्ययन किया और अन्य शास्त्र भी पढ़े। १९४० वि. में स्वामी दयानन्द रचित सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका तथा वेदांगप्रकाश आदि ग्रन्थों के पढ़ने से उनका झुकाव आर्यसमाज की ओर हुआ। पुनः १९४१ वि. में देहरादून में उन्होंने पं. युगलकिशोर से अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य का अध्ययन किया। स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों के लिपिकर्ता पं. दिनेशराम से भी पढ़ने का उन्हें अवसर मिला था।

मेरठ के प्रसिद्ध आर्यसमाजी विद्वान् पं. घासीराम के सम्पर्क में आने पर पं. तुलसीराम विधिवत् आर्यसमाज के सभासद बन गये। १८८७ ई. में जब तत्कालीन पश्चिमोत्तर प्रदेश तथा अवध (वर्तमान उत्तरप्रदेश) की आर्य प्रतिनिधि सभा की स्थापना हुई तो पं. तुलसीराम ने उसमें अपना योग दिया। वे कुछ काल तक मेरठ के देवनागरी विद्यालय में अध्यापक भी रहे। जब प्रसिद्ध सनातनधर्मी विद्वान् पं. अम्बिकादत्त व्यास मेरठ आकर पौराणिक मत का प्रचार करने लगे तो पं. तुलसीराम ने प्रबल युक्तियों तथा शास्त्रीय प्रमाणों के बल पर व्यासजी के मन्तव्यों का खण्डन किया। इस पर देवनागरी विद्यालयों के प्रबन्धक उनसे रुष्ट हो गये। स्वामीजी ने भी इस संस्था से त्यागपत्र दे दिया और सर्वात्मना आर्यसमाज के कार्य में लग गये।

आर्यसामाजिक जीवन—पं. तुलसीराम स्वामी ने आर्यसमाज के शास्त्रार्थकर्ता के रूप में कीर्ति अर्जित की तथा कुचेसर, मवाना, परीक्षितगढ, आरा, दानापुर, किराना आदि अनेक स्थानों पर भिन्न मतावलम्बियों को शास्त्रार्थ समर में पराजित किया। १९४८ वि. में वे आर्य प्रतिनिधि सभा पश्चिमोत्तर प्रदेश के उपदेशक नियुक्त हुए तथा प्रान्त में सर्वत्र भ्रमण कर प्रचार कार्य में जुट गये। १९५० वि. में स्वामी दयानन्द के शिष्य पं. भीमसेन शर्मा ने पं. तुलसीराम को प्रयागस्थित अपने सरस्वती यंत्रालय का प्रबन्धक नियुक्त किया। अतः वे प्रयाग आ गये और पं. भीमसेन शर्मा के सहयोगी बन कर लेखन कार्य तथा 'आर्य सिद्धान्त' मासिक के सम्पादन में उनकी सहायता करने लगे।

१९५५ वि. में पं. तुलसीराम ने मेरठ में स्वामी प्रेस की स्थापना की तथा साहित्य लेखन एवं प्रकाशन का महान् सारस्वत यज्ञ आरम्भ किया। जनवरी १८९७ में उन्होंने 'वेदप्रकाश' मासिक पत्र का प्रकाशन किया। यह पत्र अपने युग का अत्यन्त प्रसिद्ध तथा लोकप्रिय मासिक था। इसमें आर्य सिद्धान्तों का मण्डन तथा आर्यसमाज के मन्तव्यों पर किये जाने वाले आक्षेपों का सप्रमाण खण्डन किया जाता था। आर्यसमाज की तत्कालीन गतिविधियों तथा अन्य मतावलम्बियों से होने वाले संघर्षों, शास्त्रार्थों तथा विवादों की जानकारी प्राप्त करने के लिये इस पत्र की फाइलें आवश्यक स्रोत के तुल्य हैं। १८९८ में पं. तुलसीराम ने पं. लेखराम आर्यपथिक की स्मृति में एक

उपदेशक विद्यालय स्थापित किया। इसी विद्यालय में अध्ययन कर पं. सत्यव्रत शर्मा, पं. रुद्रदत्त शर्मा, पं. ज्वालादत्त शर्मा, पं. मणिशंकर, पं. मनुदत्त तथा स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द आदि उपदेशक आर्यसमाज के प्रचारक बने।

१९०९ से १९१३ तक पं. तुलसीराम आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान रहे। उनके कार्यकाल में ही संयुक्त प्रान्त के गवर्नर सर जैम्स मैस्टन ८ अगस्त १९१३ को गुरुकुल वृन्दावन में आये तथा उन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। उस समय पं. तुलसीरामजी गुरुकुल में शिक्षण कार्य भी करते थे। १७ जुलाई १९१५ की विशूचिका रोग से पं. तुलसीराम स्वामी का निधन हो गया।

पं. तुलसीराम स्वामी की साहित्य साधना—स्वामीजी ने अपने लेखन के द्वारा आर्यसमाज को उत्कृष्ट साहित्य प्रदान किया है। विभिन्न शास्त्रों के टीका, भाष्य आदि के अतिरिक्त उन्होंने खण्डनमण्डन से सम्बन्धित अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का प्रणयन किया। वैदिक सिद्धान्तों पर किये जाने वाले आक्षेपों तथा स्वामी दयानन्द की कृतियों पर लगाये जाने वाले आरोपों का उत्तर उन्होंने नितान्त प्रौढ़ता के साथ दिया है।

ले. का.—ऋग्वेद भाष्य—स्वामी दयानन्द ऋग्वेद के सप्तम मण्डल के ६१वें सूक्त के द्वितीय मन्त्र तक ही भाष्य कर सके थे। इसके आगे के मन्त्रों का भाष्य पं. तुलसीराम ने लिखना आरम्भ किया था जो वेदप्रकाश में जुलाई १९१६ से धारावाही छपने लगा। पं. तुलसीराम के निधन के उपरान्त उनके अनुज पं. छुट्टनलाल ने इसे आगे लिखने का उपक्रम किया। खेद है कि ऋग्वेद का यह आंशिक भाष्य पुस्तक रूप में प्रकाशित नहीं हुआ।

सामवेद भाष्य—पं. तुलसीराम कृत सामवेद भाष्य संस्कृत तथा हिन्दी दोनों भाषाओं में लिखा गया है। प्रारम्भ में यह मासिक रूप में ज्येष्ठ १९५५ वि. (२४ मई १८९८) से प्रकाशित होने लगा। पश्चात् दो भागों में स्वामी प्रेस मेरठ से १९५७ वि. में छपा। कालान्तर में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा दयानन्द संस्थान ने इसी भाष्य को चतुर्वेद भाष्य प्रकाशन योजना के अन्तर्गत प्रकाशित किया।

उपनिषद् भाष्य—कई उल्लेखों से पता चलता है कि स्वामीजी ने ईश, केन, कठ तथा मुण्डक इन चार उपनिषदों पर भाष्य लिखा था, किन्तु हमारी जानकारी में उन्होंने श्वेताश्वतरोपनिषद पर ही संस्कृत तथा हिन्दी में प्रौढ़ भाष्य लिखा था जो १८९७ में प्रकाशित हुआ।

मनुस्मृति भाष्य—क्षेपक अंशों के सतर्क विवेचन से युक्त मनुस्मृति की यह पाण्डित्यपूर्ण टीका १९०९ में प्रकाशित हुई। १९७९ वि. तक इसके ९ संस्करण छप चुके थे जो ग्रन्थ की अपार लोकप्रियता सूचित करते हैं।

षड्दर्शन भाष्य—पं. तुलसीराम ने सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, वेदान्त तथा मीमांसा (केवल २५ सूक्त) पर संक्षिप्त किन्तु युक्तिपूर्ण भाष्य लिखा। इन भाष्य ग्रन्थों के अनेक संस्करण निकले। विदुरनीति की टीका १९५५ वि. (१८९८ मई) में प्रकाशित हुई। स्वामीजी द्वारा रचित श्रीमद्भगवद्गीता का वैदिक मन्तव्यानुकूल भाष्य अत्यन्त लोकप्रिय हुआ। रामलाल कपूर ट्रस्ट ने २०३४ वि. (१९७७) में इसका एक सम्पादित संस्करण प्रकाशित किया। वेदारम्भ (प्रथम भाग)

नारदीय शिक्षा—शिक्षा शास्त्र विषयक यह दुर्लभ ग्रन्थ पं. तुलसीराम स्वामी द्वारा सम्पादित होकर फाल्गुन १९६३ वि. में प्रकाशित हुआ। श्लोकबद्ध वैदिक निघण्टु—अनिचित श्री भास्करराय दीक्षित कृत निघण्टु (सम्पादित) १८९८।

आर्य चर्पटपंजरिका—शंकराचार्य कृत चर्पटपंजरिका स्तोत्र को वैदिक सिद्धान्तों के अनुकूल परिवर्तन कर हिन्दी टीका सहित स्वामी जी ने १८९६ में सरस्वती यंत्रालय इटावा से प्रकाशित किया।

खण्डन-मण्डन के ग्रन्थ

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिकेन्दूपराग (द्वितीयोंश:)—बरेली के ब्रह्मकुशल उदासीन ने स्वामी दयानन्द कृत ऋग्वेदादि-

भाष्यभूमिका का खण्डन करते हुए 'ऋगादिभाष्यभूमिकेन्दु' नामक एक ग्रन्थ कई खण्डों में लिखा था। इसके एक अंश का उत्तर स्वामीजी ने उक्त ग्रन्थ लिखकर दिया जो सरस्वती यंत्रालय, इटावा से १९५० वि. (१८९३) में प्रकाशित हुआ।

भास्करप्रकाश—सनातनधर्मी विद्वान् पं. ज्वालाप्रसाद मिश्र ने सत्यार्थप्रकाश के खण्डन में दयानन्दतिमिर-भास्कर ग्रन्थ लिखा, जिसे बम्बई के प्रसिद्ध प्रकाशक क्षेमराज श्रीकृष्णदास ने १९५१ वि. में प्रकाशित किया था। पं. तुलसीराम ने मिश्रजी के इस ग्रन्थ का सप्रमाण खण्डन 'भास्करप्रकाश' लिखकर किया। इसका प्रथम भाग सत्यार्थप्रकाश के प्रथम तीन समुल्लासों के मण्डन रूप में प्रणीत स्वामी ब्रह्मानन्द द्वारा सम्पादित 'भारतोद्धारक' मासिक पत्र में धारावाही छपना प्रारम्भ हुआ। कालान्तर में १८९७ में यह ग्रन्थ प्रथम बार पुस्तकाकार छपा। पुनः सम्पूर्ण ग्रन्थ इसी वर्ष (१८९७) स्वामी प्रेस, मेरठ से प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थ की लोकप्रियता इसके अनेक संस्करणों (द्वितीय संस्करण १९०४, तृतीय संस्करण १९१३) से विदित होती है।

दिवाकरप्रकाश—भास्करप्रकाश के प्रथम तीन अध्यायों के खण्डन में पं. ज्वालाप्रसाद मिश्र के अनुज पं. बलदेवप्रसाद मिश्र ने 'धर्मदिवाकर' नामक ग्रन्थ की रचना की। १८९८ में स्वामीजी ने इसका उत्तर 'दिवाकरप्रकाश' लिखकर दिया।

रामचन्द्र वेदान्ती के प्रश्नों का उत्तर (१८९७). अज्ञान निवारण—(पादरी खड्गसिंह लिखित आर्यतत्त्वप्रकाश का खण्डन- १८९७), पिण्डपितृयज्ञ (१९०६), मूर्तिपूजा प्रकाश (१९५७ वि.), भीम प्रश्नोत्तरी (पं. भीमसेन शर्मा इटावा के आक्षेपों का उत्तर), शास्त्रार्थ हैदराबाद, संध्योपासन (१९९८ वि.), संस्कृत भाषा-४ भाग, तुलसीराम स्वामी के चार व्याख्यान—(१) वैदिक देवपूजा (२) ईश्वर और उसकी प्राप्ति (३) मुक्ति और पुनर्जन्म (४) नमस्ते।

वि. अ.—पं. तुलसीराम स्वामी का जीवनचरितः ले. छुट्टनलाल स्वामी।

ठाकुर तेजसिंह

सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक ठाकुर तेजसिंह का जन्म १८७० में बुलन्दशहर जिले के ग्राम पारसोली में हुआ। आपने आर्यसमाज के प्रचार को ही जीवन का लक्ष्य बनाया तथा उत्तरप्रदेश एवं हरयाणा में दूर-दूर तक घूम घूमकर धर्म प्रचार किया। १९३० में आप राष्ट्रीय आन्दोलन में भी सम्मिलित हुए तथा राष्ट्रीय विषयों पर काव्य रचना की।

ले. का.—भजनभास्कर (१९३३), तेजप्रकाश भजनावली।

तेजूमल मुरलीधर कनल

ये शिकारपुर (सिन्ध) के निवासी आर्यसमाजी थे।

ले. का.—हमारे देश की प्राचीन उन्नति (मातृ श्राद्ध अर्थात् देशसेवा ग्रन्थमाला-२ के अन्तर्गत १९१२ में लाहौर से प्रकाशित), वैदिक पाठ-२ खण्ड (१९४०), The True Religion–Patriotic Series–(1913), Our Country's awakening (1915).

त्रिभुवनदास वर्मा

वर्माजी गुजराती लेखक थे। आपने 'महर्षि विरजानन्द' तथा 'दण्डी विरजानन्द चरित' शीर्षक दो जीवनचरित गुजराती में लिखे, जो स्वामी दयानन्द के विद्यागुरु स्वामी विरजानन्द के जीवन का चित्रण करते हैं। इनका प्रकाशन आर्य सेवा संघ सूरत से हुआ।

त्रिलोकचन्द्र महरूम

उर्दू के विख्यात कवि महरूम का जन्म १ जुलाई १८८७ को गुजरांवाला जिले के मियांवाली कस्बे में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा ईसाखेल में हुई और बन्नू से आपने मैट्रिक किया। पेशे से अध्यापक थे। रावलपिण्डी के गार्डन कालेज में उर्दू, फारसी के प्राध्यापक बने तथा देश के स्वाधीन होने पर दिल्ली से छपने वाले 'तेज' अखबार में काम किया। पुनः आप पंजाब विश्वविद्यालय के कैम्प कालेज दिल्ली में पढ़ाते रहे। ६ जनवरी १९६६ को दिल्ली में ही इनका निधन हो गया। उर्दू के प्रसिद्ध

कवि प्रो. जगन्नाथ 'आजाद' इनके पुत्र हैं। महरूम ने उर्दू में 'महर्षि दर्शन' शीर्षक काव्य स्वामी दयानन्द की प्रशंसा में लिखा है।

त्रिलोकचन्द्र विशारद

ये महानुभाव आर्यसाहित्य प्रकाशक गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली के यहाँ काम करते थे। इन्होंने आर्यसमाज के विशिष्ट महापुरुषों के बालोपयोगी जीवनचरित लिखे जो बहुत लोकप्रिय हुए। इनके कई संस्करण निकल चुके हैं। ये सभी जीवनचरित आर्य चरितमाला के अन्तर्गत गोविन्दराम हासानन्द ने ही प्रकाशित किये हैं।

ले. का.—१. गुरु विरजानन्द, २. स्वामी दयानन्द, ३. मुनिवर पं. गुरुदत्त, ४. धर्मवीर पं. लेखराम, ५. स्वामी श्रद्धानन्द, ६. महात्मा हंसराज, ७. महात्मा नारायण स्वामी।

पं. त्रिलोकचन्द्र शास्त्री

शास्त्रीजी का जन्म पश्चिमी पंजाब के दायरा दीनपनाह नामक ग्राम में श्री कल्याणदास के यहाँ हुआ। इन्होंने मैट्रिक करने के पश्चात् गुरुकुल बेट सोहनी (जिला मुलतान) में प्रवेश लिया। कुछ समय तक आप अमृतसर में भी पढ़े। तत्पश्चात् आपने पंजाब विश्वविद्यालय से बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। शास्त्रीजी प्रारम्भ से ही आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता तथा उपदेशक रहे। हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह में आपने भाग लिया तथा आर्य प्रादेशिक सभा के मुखपत्र आर्यजगत् का कई वर्षों तक सम्पादन किया। २९ दिसम्बर १९८१ को उनका निधन हुआ।

ले. का.—हमारा राष्ट्र, हमारी राष्ट्रीयता और हमारी राष्ट्रभाषा-(आर्यसमाज अनारकली लाहौर के वार्षिकोत्सव पर दिया गया व्याख्यान), जीवन और मृत्यु। उक्त पुस्तकों के अतिरिक्त पं. त्रिलोकचन्द्र शास्त्री ने संस्कृत में कतिपय सुन्दर कविताओं की रचना की थी। उनकी ये पद्यात्मक रचनायें आर्यजगत् के विशेषांकों में प्रकाशित हुई हैं। इन्हें 'महर्षि दयानन्द प्रशस्ति काव्य' में संकलित किया गया है।

वि. अ.—त्रिलोकचन्द्र शास्त्री स्मृति ग्रन्थ: राजेन्द्र जिज्ञासु द्वारा सम्पादित, (१९८४)।

त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी

महान् स्वाध्यायशील तथा आदर्श प्रशासक श्री चतुर्वेदी का जन्म १८ जनवरी १९२८ को फर्रुखाबाद जिले के एक ग्राम में हुआ। आपकी शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हुई जहां से आपने एम. ए. (अर्थशास्त्र) तथा बी. एल. की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। १९५० में वे भारतीय प्रशासनिक सेवा में प्रविष्ट हुए तथा राजस्थान में जिलाधीश तथा सचिव जैसे महत्वपूर्ण पदों पर रहे। तत्पश्चात् उन्हें दिल्ली प्रशासन के सचिव, चण्डीगढ़ के मुख्य आयुक्त, भारत सरकार के शिक्षा तथा गृह सचिव जैसे उच्च पदों पर कार्य करने का अवसर मिला। वे भारत सरकार के नियन्त्रक तथा महालेखा परीक्षक के संवैधानिक पद पर कार्य करने के पश्चात् २६ मार्च १९९० को सेवा निवृत्त हुए। चतुर्वेदीजी को आर्यसमाज की विचारधारा की प्रेरणा अपने चाचा श्री जगदीशचन्द्र चतुर्वेदी से मिली। उन्होंने ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज के महापुरुषों के जीवन चरितों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया है। उनका अध्ययन विशाल तथा बहुआयामी है। आपने 'परोपकारी' में स्वामी दयानन्द के राजस्थान प्रवास पर शोधपूर्ण लेख लिखे हैं। उन्हें लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ का कुलपति नियुक्त किया गया है।

व. प.—९. अशोक रोड, नई दिल्ली ११०००१.

डा० दण्डेश्वरदास

डा. दास का जन्म १९५० में उड़ीसा प्रान्त के गंजाम जिले में हुआ। आपने राजनीति शास्त्र में एम. ए. किया तथा आर. सी. एम. कालेज खालीकोटी (जिला गंजाम) में राजनीतिशास्त्र के प्रवक्ता पद पर कार्यरत रहे। आपने बरहामपुर विश्वविद्यालय से 'स्वामी दयानंद

सरस्वती की भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन को देन' विषय पर १९८० में पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की।

व. प.—प्रवक्ता राजनीतिशास्त्र, आर. सी. एम. कालेज, खाली कोटी (गंजाम)

प्रा. दत्तात्रेय वाब्ले

अजमेर के प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री श्री दत्तात्रेय वाब्ले का जन्म १९ जून १९०९ को बम्बई में हुआ। इनकी शिक्षा एम. ए. तथा एल. एल. बी. तक हुई है। श्री वाब्ले दयानन्द कालेज अजमेर के कई वर्षों तक प्रिंसिपल रहे तथा १९७० में वहां से अवकाश ग्रहण किया। वे एक अच्छे विचारक, लेखक तथा वक्ता हैं। विगत कई दशाब्दों से वे अजमेर आर्यसमाज के प्रधान हैं तथा यहां की आर्य शिक्षण संस्थाओं का सफलता पूर्वक संचालन कर रहे हैं।

ले. का.—1. The Arya Samaj : Hindu without Hinduism (1983), २. सत्य का अर्थ और प्रकाश, (सत्यार्थप्रकाश भूमिका की व्याख्या, १९८२), 3. The Arya Samaj : The Most Revolutionary Freedom Movement. (1987), ४. आर्य समाज : हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नहीं, ५. देश, धर्म और हिन्दू समाज को आर्यसमाज की देन, 6. Modern India and Hinduism, 7. The Two Way Traffic (अमेरिका यात्रा का वर्णन) ८. राष्ट्रीय निर्माण और एकता, ९. हैदराबाद की समस्या।

व. प.—आर्यसमाज, अजमेर—३०५००१.

श्री दयाआश्रित

दिल्ली निवासी श्री आश्रित नैतिक शिक्षा धर्मार्थ ट्रस्ट के अध्यक्ष हैं।

ले. का.—१. आर्यसमाज क्या चाहता है, २. आर्यसमाज के नियम (२०३६ वि.), ३. जीवन ज्योति—(स्वामी दयानन्द का जीवनचरित), ४. उपनिषद् शिक्षा, ५. गुरुमंत्र शिक्षा, ६. बाल सत्यार्थप्रकाश, ७. आर्यसमाज के नियम (२०३६. वि.).

दलपतराय विद्यार्थी

श्री विद्यार्थी लाला लाजपतराय के अनुज थे।

ले. का.—१. खुदनविशत स्वानेह ऊमरी दयानन्द सरस्वती यह स्वामी दयानन्द की आत्मकथा का उर्दू अनुवाद है। इस्लामी प्रेस लाहौर से १९४५ वि. में मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ। २. वेदभाष्यभूमिका संग्रह—डी. ए. वी. कालेज पाठ्य-पुस्तक समिति लाहौर द्वारा १८९५ में प्रकाशित। इसमें 'भूमिका' के छात्रोपयोगी अंश संकलित हैं।

दयाराम वैश्य, तहसीलदार

श्री दयाराम का जन्म १९०९ वि. में हुआ। ये जालौन (उत्तरप्रदेश) में तहसीलदार थे। स्वामी दयानन्द के आत्म-वृतान्त को सर्वप्रथम हिन्दी में अनूदित कर प्रकाशित करने का श्रेय इन्हीं को है। पं० लेखराम द्वारा संगृहीत स्वामीजी के उर्दू जीवनचरित के प्रारम्भ में निबद्ध 'स्वामी दयानन्द की आत्मकथा' का यह हिन्दी अनुवाद पं. वजीरचन्द्र शर्मा द्वारा आर्य पुस्तकालय, लाहौर से १९०४ में प्रथम बार प्रकाशित हुआ।

ले. का.—वैदिक धर्म विजय (१९५८ वि.)—इसमें कलकत्ता में पौराणिक विद्वानों द्वारा आयोजित सन्मार्ग संदर्शिनी सभा द्वारा उठाई गई आपत्तियों का उत्तर दिया गया है। मनुस्मृति (आल्हा), विवाहपद्धति (१९५८ वि., १९०१)।

दयाराम शर्मा

शर्माजी उत्तरप्रदेश के निवासी थे।

ले. का.—कुमारी भूषण (स्त्री शिक्षा विषयक), महर्षि दयानन्द चरितामृत (१९०४)।

वैद्य दयाल परमार

गुजराती में आर्य साहित्य के प्रणेता तथा अनुवादक श्री दयालजी परमार का जन्म २८ दिसम्बर १९३४ को स्वामी दयानन्द की जन्मभूमि टंकारा में श्री मावजी भाई के यहां हुआ। इनका प्रारम्भिक शिक्षण साधारण

स्तर का ही हुआ किन्तु बहुत बाद में आपने आयुर्वेद का अध्ययन किया और आयुर्वेदाचार्य की उपाधि प्राप्त की। आप आजकल जामनगर के आयुर्वेद विश्वविद्यालय में प्राध्यापक हैं।

ले. का.—दैनिक आर्य वीर गीत संग्रह (१९६०), महात्मा आनन्द स्वामी के ग्रन्थों का गुजराती अनुवाद—एकज मार्ग (एक ही रास्ता का अनुवाद), उपनिषदो नो संदेश (१९६९), सुखी गृहस्थ (१९६९), वैदिक धर्म अने विश्वशान्ति (म. आर्य भिक्षु के ग्रन्थ का गुजराती अनुवाद, २०४१ वि.), क्रान्ति ना मार्गे कदम थयेलुं (१९७२), धर्म नुं मूल—वेद (१९७२), महाभारत थी महर्षि दयानन्द (१९८३), हिन्दू एकात्मता (हिन्दू संगठन) (१९८४), आर्यसमाज नो संदेश (१९८४), सत्यार्थ-प्रकाश नी तेजधाराओ (२०४४ वि.), स्वामी दयानन्द के १५ व्याख्यानों (उपदेश मंजरी) तथा आत्मकथा का गुजराती अनुवाद (१९८६)।

स्वामी दयानन्द के जीवन विषयक अन्वेषण में श्री दयालजी की विशेष अभिरुचि है। आपने महर्षि के टंकारा त्याग और उसके पश्चात् की घटनाओं का पूर्वापर विचार करके एक लेखमाला वेदवाणी (जनवरी १९८६) तथा आर्यजगत् में प्रकाशिन की थी। इसमें पं. श्रीकृष्ण शर्मा तथा मेधारथी स्वामी द्वारा स्थापित कतिपय उपपत्तियों का सप्रमाण निराकरण किया गया है।

व.प.—ए-५, आयुर्वेद कालोनी, जामनगर ३६१००८, (गुजरात)।

स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

वर्षों तक नित्य प्रति एक ट्रैक्ट लिखने का व्रत लेकर आर्य साहित्य की अभिवृद्धि करने वाले स्वामी दर्शनानन्द का जन्म माघ कृष्णा १० सं. १९१८ वि. को लुधियाना जिले के जगरांव कस्बे में पं. रामप्रताप शर्मा के यहां हुआ। इनका पूर्वाश्रम का नाम पं. कृपाराम था। इनकी पैतृक जीविका वाणिज्य व्यवसाय की थी, किन्तु इसमें मन न लगने के कारण पं. कृपाराम ने शीघ्र ही घर का त्याग कर दिया और काशी चले गये। यहां उन्हें संस्कृत पढने की धुन सवार हुई और वे अपने युग के प्रसिद्ध विद्वान् पं. हरिनाथ (संन्यास का नाम स्वामी मनीष्यानन्द) के शिष्य बन गये। काशी निवास के समय पं. कृपाराम ने अनुभव किया कि इस विद्याक्षेत्र में रहकर अध्ययन में प्रवृत्त होने वाले छात्रों को शास्त्र ग्रन्थ सुलभरीत्या उपलब्ध नहीं होते। छात्रों की इस कठिनाई को हल करने के लिए उन्होंने काशी में ही स्व व्यय से 'तिमिरनाशक प्रेस' की स्थापना की और सहस्रों रुपये व्यय कर संस्कृत शास्त्र ग्रन्थों को स्वल्प मूल्य पर सुलभ बनाया। इस अवधि में उन्होंने निम्न ग्रन्थ प्रकाशित किये—सामवेद मूल, अष्टाध्यायी, महाभाष्य तथा काशिका वृत्ति, वैशेषिक उपस्कार, न्याय दर्शन पर वात्स्यायन भाष्य, सांख्य दर्शन पर विज्ञानभिक्षु का प्रवचन भाष्य और अनिरुद्ध वृत्ति, कात्यायन श्रौतसूत्र, मूल ईशादिद-शोपनिषत्संग्रह (१८८९), श्रीमद्भगवद्गीता मूल (१९४५ वि.), अन्नंभट्ट का तर्क-संग्रह मूल (१९४५ वि.), तर्क-संग्रह की न्यायबोधिनी टीका (१९४५ वि.), अन्नपूर्णाष्टक स्तोत्र (१९४५ वि.), शब्द-रूपावली (१९४५ वि.) मीमांसादर्शन मूल, बादरायण कृत शारीरक सूत्र-शंकरानन्द कृत वृत्ति सहित (१९४५ वि.)।

अब तक वे आर्यसमाज के सम्पर्क में आकर उसके सिद्धान्तों को स्वीकार कर चुके थे। १८९३ से १९०१ तक उन्होंने उत्तर भारत के विभिन्न प्रान्तों में वैदिक धर्म का प्रचार किया। १९०१ में शान्त स्वामी अनुभवा-नन्द से संन्यास की दीक्षा लेकर पं. कृपाराम ने स्वामी दर्शनानन्द का नाम धारण किया। उन्होंने अपने जीवन काल में पौराणिक, जैन, ईसाई तथा मुसलमान धर्माचार्यों से अनेक शास्त्रार्थ किये, अनेक स्थानों पर गुरुकुलों की स्थापना की तथा अनेक पत्र निकाले। उनके द्वारा प्रकाशित एवं सम्पादित पत्रों का विवरण इस प्रकार है—

१. 'तिमिरनाशक' साप्ताहिक काशी से ३० जून १८८९ को प्रकाशित किया २. 'वेद प्रचारक' मासिक तथा 'भारत उद्धार' साप्ताहिक १८९४ में जगरांव से, ३. 'वैदिकधर्म' साप्ताहिक १८९७ में मुरादाबद से, ४.

'वैदिक धर्म' तथा 'वैदिक मैगजीन' क्रमशः १८९८ तथा १८९९ में दिल्ली से, ५. 'तालिबे इल्म' उर्दू साप्ताहिक १९०० में आगरा से, ६. 'गुरुकुल समाचार' सिकंदराबाद से, ७. 'आर्य सिद्धान्त' मासिक तथा साप्ताहिक उर्दू 'मुबाहिसा' १९०३ में बदायूं से, ८. 'ऋषि दयानन्द' मासिक १९०८ में हरिज्ञान मन्दिर लाहौर से, ९. 'वैदिक फिलासफी' उर्दू मासिक, गुरुकुल रावलपिण्डी (चोहा भक्ता) से १९०९ में। इस प्रकार लगभग एक दर्जन पत्र स्वामी दर्शनानन्द ने निकाले। उन्होंने इस बात की तनिक भी चिन्ता नहीं की कि ये पत्र अल्पजीवी होते हैं या दीर्घजीवी। गुरुकुलों की स्थापना करने का भी स्वामी दर्शनानन्द को व्यसन ही था। उन्होंने सिकन्दराबाद (१८९८), बदायूं (१९०३), बिरालसी (जिला मुजफ्फरनगर) १९०५, ज्वालापुर (१९०७) तथा रावलपिण्डी आदि स्थानों में ये गुरुकुल स्थापित किये। स्वामीजी का निधन ११ मई १९१३ को हाथरस में हुआ।

ले. का.—स्वामी दर्शनानन्द ने १८९६ में ही यह नियम बना लिया था कि वे प्रतिदिन एक ट्रैक्ट लिखा करेंगे। उनका यह नियम वर्षों तक जारी रहा। पं. नरदेव शास्त्री के अनुसार उनके समस्त ट्रैक्टों की संख्या २५० है। ये सभी ट्रैक्ट 'दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह' शीर्षक से अनेक प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित किये गये हैं। मूलतः ये ट्रैक्ट उर्दू में लिखे गये और बाद में हिन्दी में अनूदित हुए।

स्वामी दर्शनानन्द के अन्य ग्रंथों का विवरण इस प्रकार है—न्याय, वैशेषिक, सांख्य तथा वेदान्त (अपूर्ण) दर्शन का भाष्य। इन भाष्यों को हिन्दी में पं. गोकुलचन्द्र दीक्षित ने अनूदित किया।

ईश से लेकर माण्डूक्य पर्यन्त ६ उपनिषदों का प्रश्नोत्तर पूर्वक शंका समाधान शैली में भाष्य। मनुस्मृति तथा गीता की टीका।

स्वामी दर्शनानन्द द्वारा लिखित खण्डनात्मक साहित्य—(१) जैनमत समीक्षा के ग्रन्थ—जैनियों का जीव, जैनियों की मुक्ति, स्याद्वाद-समीक्षा, जैन भ्रान्तिनिवारण, जैनी पण्डितों के प्रश्नोत्तरों की समीक्षा, ईश्वर कर्तृत्व समीक्षा, जैनी पण्डितों से प्रश्न, भूमण्डल के समस्त आर्यों के समक्ष कमण्डल समान सरावगियों के प्रति प्रश्नोत्तर, आत्माराम जैनी की पोल, जैन मत समीक्षा, **(२) ईसाई मत विषयक आलोचनात्मक ग्रन्थ**—ईसाई मत के विद्वानों से प्रश्न, ईसाई मत खण्डन, पादरी साहब और रामदास, ईसाई-मत परीक्षा, पादरियों को चुनौती, मसीही मज़हब के नियमों पर अक़्ली नजर, भोंदू जाट और पादरी साहब का शास्त्रार्थ, ईसाई मत में मुक्ति असम्भव है।

(३) इस्लाम विषयक समीक्षा के ग्रन्थ—कुरान की छानबीन, अकायद इस्लाम पर अक़्ली नजर (८ भाग) वैदिक धर्म और अहले इस्लाम के अक़ायद का मुकाबला, अहले इस्लाम के वेदों पर नाजायज हमले, कुरान की जान वेद का एक मन्त्र है, शैतान, मयारे सदाक़त, जवाब रद्दे तनासुख, प्रश्नोत्तर अहले इस्लाम, नियोग और उसके दुश्मन, प्रश्नोत्तर मौलवी नवन्दअली, इस्लाम में नजात की वाकफियत, इस्लाम नजात मुमतने उल्वावजूद।

(४) स्वामी दर्शनानन्द के अल्प प्रसिद्ध अथवा अल्प ज्ञात ग्रन्थ

१. गंजे आजादी (१८७९) उर्दू में लिखी प्रथम पद्यात्मक पुस्तक, २. मूर्खता (१८८७), ३. नौजवानों उठो (१८९२), ४. उन्नीसवीं सदी का सच्चा बलिदान—पं. लेखराम की शहादत को लेकर लिखा गया ट्रैक्ट, ५. हम निर्बल क्यों हैं ? (१९००), ६. क्या धर्मसभा आर्यसमाज से शास्त्रार्थ कर सकती है, ७. धर्म सभा से ६४ प्रश्न, ८. बेसमझों के स्वामी दयानन्द पर झूठे इल्जाम, ९. अंग्रेजी तालीम याफ्ताओं में वैदिक धर्म के प्रचार का आसान तरीका, १०. आर्य धर्म सभा (१८८९), ११. क्या संस्कृत मृत भाषा है ? (१९०४), १२. भारत का दुर्भाग्य, १३. 'प्रकाश' के नाम खुली चिट्ठी, १४. अक़्ल का अजीरण, १५. समय का प्रवाह तथा सफलता, १६. मुन्शीरामजी की आखिरी भेंट (१९१०), १७. आर्यसमाज क्यों कमजोर है, १८. निःशुल्क शिक्षा (मुफ्त तालीम), १९. प्राचीन और नवीन शिक्षा प्रणाली की तुलना, २०. जगन्नाथ लीला, २१. जगन्नाथ का बेसुरा प्रलाप—मुरादाबाद निवासी आर्यसमाज के कटु आलोचक मुन्शी

जगन्नाथदास के मन्तव्यों का खण्डन, २२. देवसमाज से प्रश्न, २३. गुरुकुल, गुरु शिक्षा।

(५) स्वामी दर्शनानन्द की कथात्मक कृतियां

१. सत्यव्रती महानन्द, २. धर्मवीर (उपन्यास), ३. क्षमाचन्द्रोदय (उपन्यास), ४. कथा पच्चीसी (लघु कथाओं का संग्रह १९६९), ५. चाण्डाल चौकड़ी (आर्यसमाज के आन्तरिक कलह—गुरुकुल और कालेज दल के पारस्परिक विवाद पर लिखा गया उपन्यास), ६. विचित्र ब्रह्मचारी।

स्वामी दर्शनानन्द के ग्रन्थों को प्रमुखतः निम्न प्रकाशकों ने छापा—१. वजीरचन्द्र शर्मा द्वारा संचालित वैदिक पुस्तकालय लाहौर, २. पं. शंकरदत्त शर्मा द्वारा संचालित वैदिक पुस्तकालय मुरादाबाद, ३. स्वामीजी के अनुज स्वामी ब्रह्मानन्द द्वारा संचालित दर्शनानन्द ट्रैक्ट सोसाइटी, ४. प्रेम पुस्तकालय बरेली, ५. गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, ६. दयानन्द वेद प्रचारक मिशन लाहौर, ७. भास्कर पुस्तकालय कनखल, ८. राजपाल एण्ड संस दिल्ली, ९. दर्शनानन्द ग्रन्थागार मथुरा, १०. आर्यप्रकाश पुस्तकालय आगरा, ११. गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली, १२. देहाती पुस्तक भण्डार दिल्ली, १३. मधुर प्रकाशन दिल्ली आदि।

वि. अ.—दर्शनानन्द दर्शन (जीवनी) श्रीराम शर्मा लिखित, १९५९।

दामोदरप्रसाद शर्मा

ये सम्पादकाचार्य रुद्रदत्त शर्मा के अनुज थे। आपने काशी के पं. दुखभंजन से शिक्षा प्राप्त की। पं. दामोदर प्रसाद किसी राज्य में दानाध्यक्ष के पद पर भी रहे थे। कहीं-कहीं इनका नाम दामोदरदत्त भी उल्लिखित हुआ है।

ले. का.—उपनिषद् तत्त्वम् (१९६३ वि.), २. भोजन-विचार (१९०७), ३. तीर्थ दर्पण : पण्डा अर्पण (१९०९), ४. आर्यमतमार्तण्ड नाटक (उत्तरार्द्ध) पूर्वार्द्ध पं. रुद्रदत्त शर्मा ने लिखा था, ५. कृष्ण वाक्य।

सेठ दामोदर सुन्दरदास

आर्यसमाज बम्बई के आरम्भिक युग के सभासद श्री सुन्दरदास के पुत्र श्री दामोदर ने गुजराती भाषा में 'मुम्बई आर्यसमाज नो इतिहास' लिखा जो १९८९ वि. में छपा। इसमें आर्यसमाज की स्थापना और उस काल की बम्बई की आर्यसामाजिक गतिविधियों पर भरपूर सामग्री दी गई है। यही वह पुस्तक है जिसमें आर्यसमाज की स्थापना के पूर्व स्वामी दयानन्द द्वारा व्यक्त उद्गार उन्हीं की भाषा में दिये गये हैं तथा आर्यसमाज बम्बई के प्रारम्भिक सभासदों के नाम, जाति, शिक्षा तथा व्यवसाय का भी उल्लेख है। इसी सभासद सूची में स्वयं स्वामी दयानन्द का नाम भी संख्या ३१ पर उल्लिखित है।

पं. दिनेश नर्मदाशंकर त्रिवेदी

गुजराती भाषा में स्वामी श्रद्धानन्द का उत्कृष्ट जीवनचरित लिखने वाले श्री दिनेश त्रिवेदी का जन्म २ मार्च १९०१ को सूरत में हुआ। इनके पिता श्री नर्मदाशंकर त्रिवेदी आर्यसमाज विचारों के अनुयायी थे। इनकी माता का नाम श्रीमती मणिगौरी था। ७ वर्ष की आयु में आपको गुरुकुल कांगड़ी में प्रविष्ट कराया गया। गुजरात प्रान्त के ये प्रथम छात्र थे, जिन्होंने गुरुकुल कांगड़ी में अध्ययनार्थ प्रवेश मिला, परन्तु आपकी शिक्षा गुरुकुल में अधिक दिनों तक नहीं चल सकी। आपने इण्टरमीजियेट तक अध्ययन करने के अनन्तर रॉयल सेनेटरी इन्स्टीट्यूट लंदन का डिप्लोमा प्राप्त किया। पहले इन्होंने बम्बई नगरपालिका में मलेरिया विभाग में कार्य किया। पश्चात् सूरत नगरपालिका में भी आप कार्यरत रहे। २ मार्च १९५८ को आपने शासकीय सेवा से अवकाश ग्रहण किया।

ले. का.—१. हुतात्मा श्रद्धानन्दनी पुण्यकथा (१९२८), २. उपनयन संस्कार नुं रहस्य (१९३६), ३. लग्ननो वैदिक आदर्श (१९४३), ४. रामभक्ति नु रहस्य, ५. गुरुकुलों पर उतरतो अंधार पट—गुरुकुल शिक्षा पर लिखी गई इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद भी हुआ था, जिसकी भूमिका पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति ने लिखी थी।

पं. दिलीपदत्त शर्मोपाध्याय

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के अध्यापक पं. दिलीपदत्त शर्मा का जन्म बुलन्दशहर जिले के किशनपुर नामक ग्राम में हुआ। आपकी शिक्षा दीक्षा पं. भीमसेन

शर्मा (आगरा) के द्वारा हुई। वे कई वर्षों तक गुरुकुल में अध्यापक रहे तथा मुख्याध्यापक का भी कार्य किया। जीवन के अन्तिम वर्षों में नौकरी से अवकाश लेकर वे कृषि कर्म में लग गये। २८ नवम्बर १९५२ को उनका निधन हो गया।

पं. दिलीपदत्त ने स्वामी दयानन्द के जीवन को आधार बना कर 'मुनिचरितामृत' काव्य १९७१ वि. में लिखा। इसका पूर्वार्द्ध ही छप सका। आपका प्रताप-चम्पू (१९९० वि.) प्रसिद्ध है, जिसमें चम्पू शैली में महाराणा प्रताप का वीरचरित्र वर्णित हुआ है। आपके अन्य ग्रन्थ हैं—संस्कृतालोक (१९७२ वि.), ऋतुवर्णन काव्य तथा योगरत्न काव्य।

डा० दिलीप वेदालंकार

डा. वेदालंकार का जन्म ११ जुलाई १९३६ को गुजरात के आणंद जिले के ग्राम मोगर में श्री आशाभाई के यहाँ हुआ। १९६० में इन्होंने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से वेदालंकार की उपाधि प्राप्त की। दिल्ली विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए. (१९६२) करने के पश्चात् आपने गुरुकुल कांगड़ी से 'वेदों में मानववाद' विषय लेकर १९७५ में पी-एच. डी. की उपाधि ग्रहण की। आपने अफ्रीका, इंग्लैण्ड आदि देशों में धर्म प्रचारार्थ व्यापक भ्रमण किया है। आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा में आपने संस्कृत का अध्यापन किया। ये गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री पद पर भी रहे हैं।

ले. का.—वेदों में मानववाद (१९८२), गायत्री रहस्य (१९६५), महर्षि दयानन्द (गुजराती जीवनी, १९८२), महर्षि दयानन्द वाणी (१९७९), सत्यार्थप्रकाश के गुजराती अनुवाद का संशोधन तथा परिष्कार (१९७५)।

व. प.—इन्दिरालयम्, ३२-गुलमोहरपार्क, अकोटा बड़ोदरा-३९००२०.

सत्यार्थप्रकाश के नेपाली अनुवादक—पं. दिलूसिंग राई

पड़ोसी देश नेपाल की भाषा नेपाली (गोरखाली) में स्वामी दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश तथा संस्कार-विधि के अनुवादक पं. दिलूसिंग राई का जन्म आषाढ़ शुक्ला १० सं. १९२२ वि. को एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। स्वाध्याय के बल पर उन्होंने संस्कृत तथा अंग्रेजी में विशेष योग्यता अर्जित की तथा वेद, उपनिषद्, व्याकरण तथा दर्शन का विशेष अध्ययन किया। सत्यार्थ-प्रकाश पढ़ने के पश्चात् उनके जीवन की दिशा बदल गई। उन्होंने इस ग्रन्थ के एकादश समुल्लास पर्यन्त भाग का नेपाली भाषा में अनुवाद किया और अपने खर्चे से १९३१ में प्रकाशित किया। उनकी दो अन्य मौलिक कृतियों—'शुद्धार्थ' तथा 'बाल शिक्षा' का भी पता चलता है। उन्होंने वैशेषिक दर्शन का भी नेपाली अनुवाद किया था। स्वामी दयानन्द रचित संस्कारविधि का नेपाली अनुवाद आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह समिति कलकत्ता द्वारा २०३४ वि. (१९७८) में वैदिक यंत्रालय अजमेर में मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थ को दार्जिलिंग आर्यसमाज के प्रधान स्व. श्री कृष्ण प्रधान ने स्वपुरुषार्थ से मुद्रित कराया था। श्री राई एक सफल शिक्षक भी थे। उन्होंने दार्जिलिंग की आर्यसमाज स्थित पाठशाला में अध्यापन किया तथा समीपवर्ती स्थानों में पाठशालायें स्थापित कीं। उन्होंने ९० वर्ष की आयु प्राप्त की। २०११ वि. की आषाढ़ शुक्ला एकादशी को उनका निधन हुआ।

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती (डा. योगेन्द्र पुरुषार्थी)

इनका जन्म १९३९ में हुआ। इनके पिता का नाम श्री नाथूराम आर्य था जो देवनगर (जिला मैनपुरी) के निवासी थे। श्री पुरुषार्थी का अध्ययन गुरुकुल झज्जर तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में हुआ, जहां से आपने वेद तथा दर्शन विषयक लेकर एम. ए. तथा व्याकरणाचार्य की उपाधियां प्राप्त कीं। डा. पुरुषार्थी का ग्रन्थ 'वेदों में योगविद्या' पी-एच.डी. उपाधि के लिए स्वीकृत शोध प्रवन्ध है जो यौगिक शोध संस्थान, ज्वालापुर से १९८३ में प्रकाशित हुआ। 'गीत कुसुमांजलि' शीर्षक से विभिन्न आर्य कवियों की संस्कृत गीतिकाओं का एक संग्रह श्री पुरुषार्थी ने सम्पादित कर १९६९ में प्रकाशित किया था। १९८३ में संन्यास ग्रहण कर लेने के पश्चात् डा. पुरुषार्थी स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती के

नाम से जाने जाते हैं तथा योगधाम ज्वालापुर के संचालक हैं।

व. प.—योगधाम, आर्यनगर ज्वालापुर (हरिद्वार)।

स्वामी दीक्षानन्द (आचार्य कृष्ण)

स्वामी दीक्षानन्द मूलतः उत्तरप्रदेश के निवासी हैं। आपका जन्म १९१८ में हुआ। विभाजन के पूर्व आप दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर में रहे। तत्पश्चात् गुरुकुल भटिण्डा में आपने आचार्य पद पर काम किया। संन्यास ग्रहण करने से पूर्व वे आचार्य कृष्ण के नाम से जाने जाते थे। उनके गुरु पं. बुद्धदेव विद्यालंकार थे। आचार्य कृष्ण ने १९७५ में संन्यास ग्रहण किया। सम्प्रति वे समर्पण शोधसंस्थान के द्वारा उत्तम ग्रन्थों का प्रकाशन विगत कई वर्षों से कर रहे हैं। आप विभिन्न देशों में धर्म प्रचारार्थ जा चुके हैं।

ले. का.—१. मृत्युंजय सर्वस्व—(यजुर्वेद के प्रसिद्ध मंत्र 'त्रयम्बकं यजामहे' की व्याख्या (२०२८ वि.) २. उपनयन सर्वस्व (यज्ञोपवीत की व्याख्या) (१९६८), ३, उपहार सर्वस्व, ४. अग्निहोत्रसर्वस्व (२०४० वि.), स्वाध्याय सर्वस्व (१९८५)।

व. प.—समर्पण शोध संस्थान, ४/४२ राजेन्द्रनगर, सै. ५-साहिबाबाद (उ. प्र.)।

दीनदयाल भार्गव

आप हरयाणा के रेवाड़ी नगर के निवासी थे। इन्होंने गुटका आकार में आर्याभिविनय का उर्दू अनुवाद प्रकाशित किया था।

दीनदयालु सोनी

दिल्ली निवासी श्री सोनी विज्ञान के विद्वान् थे। उनका अध्ययन एम. एस.सी. तक हुआ था। उन्होंने संध्या का वैज्ञानिक रहस्य स्पष्ट करने के लिये 'संध्या-रहस्य' शीर्षक ग्रन्थ लिखा, जो आर्षस्वाध्याय सदन दिल्ली से १९४२ में छपा।

पं. दीनबंधु वेदशास्त्री

पं. दीनबंधु का जन्म ७ मार्च १९०१ को पूर्वी बंगाल के पबना जिले के एक ग्राम सागरकान्दी में पं. विपिन-विहारी आचार्य तथा श्रीमती विनोदिनी देवी के यहां हुआ। साधारण शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् ये देश के स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े और कारावास की यात्रा भी की। कालान्तर में आर्यसमाज के सम्पर्क में आये और आर्यसमाज कलकत्ता के माध्यम से आपने कलकत्ता तथा बंग प्रान्त में सर्वत्र धर्मप्रचार किया। २१ अप्रैल १९७९ को कलकत्ता में ही इनका निधन हुआ। पं. दीनबंधु का लिखा साहित्य प्रायः बंगला में है। आपने बंगला में आर्य गौरव तथा शास्त्र सिंधु मासिक पत्रों का सम्पादन किया था।

ले. का.—१. ब्राह्मण शूद्रेर संघर्ष, २. सिंधु सभ्यता, ३. बंगे दयानन्द, ४. भारते आर्यसमाज. ५. दिग्विजयी दयानन्द, ६. वैदिक शतनाम व उपासना, ७. वेद परिचय, ८. हिन्दू जाति तत्त्व, ९. पति-पत्नी धर्म, १०. वैदिक संध्या व उपासना, ११. धर्म शिक्षा, १२. अस्पृश्यता समस्या, १३. वैदिक संध्याविधि, १४. आर्य गौरव १५. बंगे नारी हरन, १६. आन्तरजातिक विवाह, १७. समाज विप्लव, १८. आर्य संगीत, १९. वैदिकउपासना-पद्धति, २०. धर्म परिचय, २१. गुरु गिरि, २२. वेदप्रचार प्रतिष्ठान, २३. वेद व वैष्णव धर्म, २४. जातिर बडाई, २५. वेद-सार, २६. चतुर्वर्ण, २७. जाति व विजाति, २८. हिन्दी शिक्षक, २९. भाटपाड़ावध-महाकाव्य (शास्त्रार्थ), ३०. शुद्धि, ३१. विधवाविवाहेर आपत्ति खण्डन, ३२. वैदिक अग्निहोत्र, ३३. असवर्ण विवाह, ३४. संध्या व यज्ञोपवीत, ३५. श्राद्ध व परलोक, ३६. व्यभिचारी वल्लाल, ३७. अशौच रहस्य, ३८. वेदसकलेर अधिकार, ३९. गोत्रविचार, ४०. मुक्तिर आलो (अप्रकाशित)।

इसके अतिरिक्त आपने ऋग्वेद मण्डल १ तथा सामवेद (पूर्वार्चिक और महानाम्नी ऋचायें) का बंगला अनुवाद किया। आपने सत्यार्थप्रकाश तथा संस्कारविधि का बंगला अनुवाद भी किया।

पं. दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

प्रसिद्ध लेखक तथा पत्रकार पं. दीनानाथ सिद्धान्तालंकार का जन्म २३ अप्रैल १८९४ को गुजरांवाला

जिले के पिण्डी भट्टियां ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम श्री हीरानन्द था। आपने गुरुकुल कांगड़ी में विद्याध्ययन किया और १९७६ वि. (१९२०) में यहां से 'सिद्धान्तालंकार' की उपाधि ग्रहण की। आपने एक दर्जन से अधिक पत्र-पत्रिकाओं का समय-समय पर सम्पादन किया। आपने कांग्रेस द्वारा संचालित सत्याग्रह आन्दोलन में भी भाग लिया तथा ६ मास का कारावास दण्ड भोगा। इनका निधन ३१ मई १९८६ को हो गया।

ले. का.—अमृत पथ की ओर (१९५९), पुरुषोत्तम राम(१९७२), उपनिषद् वचनामृत(२०१७ वि.), उपनिषद्-वचन सुधा, अध्यात्म योग, यज्ञ प्रसाद, ज्वलन्त जीवन, वेद और बाइविल, आर्यसमाज की उपलब्धियां, भारत की प्राचीन नीतियां, श्री मूलराज बी. ए. बी. टी. स्मृति ग्रन्थ (सम्पादन), आर्यसमाज के ज्योति-स्तम्भ, हिन्दू जाति के पतन के कारण, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, प्रेरक जीवन कहानियां, आर्यसमाज के आदर्श पुरुष-२ भाग।

प्रो. दीवानचन्द

प्रसिद्ध दार्शनिक, शिक्षाशास्त्री तथा लेखक प्रो. दीवानचन्द का जन्म १ जुलाई १८७७ को पंजाब के जेहलम जिले के संघोई नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री नानकचन्द तथा माता का नाम वज़ीर देवी था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गांव के स्कूल में ही हुई जहां से दिसम्बर १८८८ में इन्होंने प्राइमरी परीक्षा पास की। मिडिल की पढाई के लिये इन्हें निकटवर्ती ग्राम रोहतास भेजा गया। १८९३ में इन्होंने गुजरांवाला के मिशन स्कूल में प्रवेश लिया। इसी समय से ये आर्य-समाज के सम्पर्क में आये। मार्च १८९७ में इन्होंने लाहौर जाकर हाई स्कूल की परीक्षा दी तथा छात्रवृत्ति सहित उत्तीर्ण हुए। इसी वर्ष ये डी. ए. वी. कालेज लाहौर में प्रविष्ट हो गये। इस समय महात्मा हंसराज कालेज के प्रिंसिपल थे। एफ. ए. के उनके सहपाठियों में प्रो. रामदेव तथा राधास्वामी सम्प्रदाय के गुरु आनन्दस्वरूप (साहब जी महाराज) के नाम उल्लेखनीय हैं। एक सत्र पर्यन्त इन्होंने गवर्नमेंट कालेज, लाहौर में भी अध्ययन किया था। अध्ययन समाप्त करने के उपरान्त दीवानचन्द ने डी. ए. वी. शिक्षा सेवा में आजीवन सदस्य के रूप में प्रवेश किया तथा आर्यसमाज के शिक्षा कार्य में अपना समस्त जीवन होम दिया। उन दिनों इस प्रकार के जीवनदानियों को निर्वाह मात्र के लिये ७५ रु. मासिक कालेज कमेटी की ओर से मिला करते थे।

नवम्बर १९०५ में दीवानचन्द ने कलकत्ता विश्व-विद्यालय की एम. ए. परीक्षा दर्शनशास्त्र विषय के साथ उत्तीर्ण की। अब उन्हें डी. ए. वी. कालेज लाहौर में दर्शन-शास्त्र के प्राध्यापक के पद पर नियुक्त किया गया। इस पद पर वे १९१९ पर्यन्त रहे। इसी अवधि में वे आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्त्ता के रूप में उभरे। कुछ समय तक उन्होंने आर्य प्रादेशिक सभा के मुखपत्र 'आर्य गज़ट' का सम्पादन भी किया। यदा कदा प्रचार कार्य में भी उन्हें जाना पड़ता था।

१९१९ में ही जव डी. ए. वी. कालेज, कानपुर की स्थापना हुई तो प्रो. दीवानचन्द को वहां का प्रिंसिपल बनाया गया। इस पद पर वे इक्कीस वर्ष तक कार्य करते रहे। उनके कार्य काल में कालेज का बहुमुखी विकास हुआ तथा प्रदेश के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण महा-विद्यालयों में उसकी गणना होने लगी। कुछ समय तक प्रो. दीवानचन्द को आगरा विश्वविद्यालय के कुलपति पद पर कार्य करना पड़ा। १२ जुलाई १९४० को डी. ए. वी. कालेज, कानपुर के प्राचार्य पद से निवृत्त होकर प्रो. दीवानचन्द लाहौर चले गये। इसी वर्ष के प्रारम्भ में उन्हें डी. ए. वी. शिक्षण संस्थाओं की प्रवन्ध समिति का प्रधान चुन लिया गया था। लगभग साढे तीन वर्ष तक वे लाहौर में रहकर डी. ए. वी. संस्थाओं का संचालन करते रहे। १९४४ के प्रारम्भ में वे पुनः कानपुर आ गये। उनका अवशिष्ट जीवन कानपुर में ही व्यतीत हुआ। १९७४ में उनका निधन हो गया।

प्रो. दीवानचन्द दर्शनशास्त्र के उच्च कोटि के विद्वान्, विख्यात लेखक तथा अनुभवी शिक्षा-मर्मज्ञ थे। उन्होंने अपने माता और पिता के नाम पर नानकचन्द-वजीरदेवी ट्रस्ट स्थापित किया तथा इसी ट्रस्ट से स्वग्रन्थों का प्रकाशन किया।

ले. का.—१. वेदोपदेश (२०१२), २. जीवन ज्योति, ३. स्वाध्याय-संग्रह ४. कर्मयोग, ५. महर्षि दर्शन, ६. दयानन्द शतक, (२००० वि.), ७. वेद उपदेश (१९७७), ८. दीपक, ९. कठ उपनिषद् (२०१० वि.), १०. प्रश्न उपनिषद् (२०१९ वि.), ११. मुण्डक उपनिषद् (२०१४ वि.), १२. उपनिषद् दिग्दर्शन (१९५९), १३. उपनिषद् प्रवचन माला (२०२० वि.), १४. मानसिक चित्रावली (कुछ संस्मरण) (१९६०), महात्मा हंसराज (१९६४)।

उर्दू ग्रन्थ

१. जीवन रहस्य, २. दुनिया के नौ महापुरुष, ३. आर्य सिद्धान्त, ४. सांख्यदर्शन, ५. विचारमाला, ६. तोहफा शिवरात्रि।

अंग्रेजी ग्रन्थ

1. The Arya Samaj : Its Teachings and an Estimate of it.

2. The Arya Samaj : What it is and what it stands for ?

3. Life Everlasting (1925).

4. Short Studies in the Upanishads (1938).

5. Short Studies in the Bhagvat Gita (1950).

6. Fundamentals of Religion.

प्रो. दीवानचन्द ने तर्कशास्त्र, आचार-शास्त्र, तत्त्व-ज्ञान आदि दर्शनशास्त्र के विभिन्न अंगों पर उपयोगी पाठ्यपुस्तकें भी लिखीं, जिनके नाम निम्न हैं—

1. Logic : Deduction and Induction.

नीति विवेचन, तत्त्वज्ञान, पश्चिमी दर्शन, दर्शन-संग्रह।

लाला दीवानचन्द

आपका जन्म गुजरांवाला (पाकिस्तान) जिले के एक ग्राम में हुआ। इनकी शिक्षा मिशन हाई स्कूल गुजरांवाला तथा डी. ए. वी. कालेज, लाहौर में हुई। महात्मा हंसराज तथा प्रिंसिपल दीवानचन्द के व्यक्तित्व एवं विचारों से आप अत्यधिक प्रभावित हुए। बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण कर अपने ठेकेदारी का कार्य किया। कालान्तर में दिल्ली आ गये और पटेल नगर दिल्ली की आर्यसमाज के माध्यम से सामाजिक सेवाकार्य में सक्रिय सहयोग दिया। आपका निधन १८७५ में हुआ। इनका लेखन अंग्रेजी में हुआ है।

ले. का.—The Vedic Way of Life, Light of Truth (सत्यार्थप्रकाश का सार-1975), Swami Dayanand.

प्रो. दीवानचन्द शर्मा

प्रो. दीवानचन्द शर्मा का जन्म मार्च १८९७ में दौलताबाद (पाकिस्तान) में हुआ। डी. ए. वी. कालेज लाहौर में इन्होंने शिक्षा प्राप्त की। पंजाब विश्वविद्यालय में आप (१९४७-६०) अंग्रेजी के प्रोफेसर थे। वे भारत की संसद के सदस्य भी रहे। इनका संसद का सदस्यता काल १९५२-७७ तक था। इनका निधन १९७७ में हुआ।

ले. का.—1. Makers of the Arya Samaj—भाग १-स्वामी श्रद्धानन्द तथा महात्मा हंसराज। मैकमिलन कम्पनी लंदन (१९३५)।

2. Makers of the Arya Samaj—भाग-२—पं. गुरुदत्त तथा पं. लेखराम (१९३५)।

3. Makers of the Arya Samaj—भाग-३.

मास्टर दुर्गाप्रसाद

आर्यसमाज के प्रारम्भिक युग में जिन लेखकों ने अंग्रेजी में उच्च कोटि का साहित्य लिखा, उनमें पं. गुरुदत्त के वाद मास्टर दुर्गाप्रसाद का नाम प्रमुख है। खेद है कि उनके जीवन तथा कार्यों के विषय में हमारी जानकारी बहुत सीमित है।

यद्यपि मास्टर दुर्गाप्रसाद का कार्यक्षेत्र पंजाब रहा, किन्तु उनका जन्म मध्यप्रदेश के सागर नगर में हुआ।

उनके पिता का नाम लाला उमरावसिंह तथा माता का नाम धनाबाई था। दुर्गाप्रसाद जब आठ अर्ष के ही थे, उनकी माता का निधन हो गया और इनके पिता ने दूसरा विवाह कर लिया। तब ये अपने मामा के पास भोपाल चले गये। तीन वर्ष पश्चात् नानी का देहान्त हो जाने पर पिता इन्हें अपने पास ले आये। सौतेली माता के कारण इन्हें बाल्यावस्था में बहुत कष्ट उठाना पड़ा। पढ़ने-लिखने की कोई व्यवस्था नहीं हुई और ये इधर-उधर मारे-मारे फिरते रहे। दो वर्ष नागोद में कमसरियट के गुमाश्ते रहे। इस कार्य के समाप्त हो जाने पर फिर पढ़ने लगे। एम. ए. की परीक्षा में पहुंचे ही थे कि पिता का देहान्त हो गया। प्रचलित प्रथा के अनुसार इनका विवाह भी बचपन में ही हो गया था। एक दो वर्ष जबलपुर में पढ़ते रहे, वहां से म्योर सेण्ट्रल कालेज इलाहाबाद में पढ़ने के लिये आये। प्रयाग में ही उन्हें स्वामी दयानन्द के व्याख्यान सुनने का अवसर मिला। बरेली में जब स्वामीजी का शास्त्रार्थ पादरी टी. जे. स्कॉट से हुआ था, उस समय भी ये उनसे मिलने बरेली गये। अब इनके विचार पूर्णतया स्वामीजी की शिक्षाओं के अनुकूल हो गये।

मास्टर दुर्गाप्रसाद ने लगभग दस वर्ष तक सेना के नार्मल स्कूल में अध्यापक पद पर कार्य किया। इसी बीच इनकी पत्नी का निधन हो गया। अब ये पूर्ण विरक्त भाव से समाजसेवा और आत्मचिन्तन में लग गये। मास्टरजी लाहौर आये तथा दयानन्द हाई स्कूल की स्थापना कर उसके मुख्याध्यापक पद पर रहे। ११ वर्ष पश्चात् यह स्कूल बन्द हो गया। १८९० में जब आर्य-समाज में गुरुकुल दल और कालेज दल के नाम पर विभाजन की दरार पड़ी तो मास्टरजी गुरुकुल दल के नेता लाला मुन्शीराम के समर्थक और साथी बने। वे इस विभाग के मुख्य नेता एवं प्रवक्ता माने जाते थे। लाहौर में मास्टरजी ने विरजानन्द प्रेस की स्थापना की जिसके द्वारा अनेक उपयोगी ग्रन्थों का प्रकाशन हुआ। शाकाहार के समर्थन में इन्होंने 'हारबिंजर ऑफ हेल्थ' नामक पाक्षिकपत्र निकाला, जो १९१५ तक प्रकाशित होता रहा।

मास्टर दुर्गाप्रसाद ने मुख्यतया अपने ग्रन्थ अंग्रेजी में लिखे। इनके द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या ३७ बताई गई है।

ले. का.—सत्यार्थप्रकाश का अंग्रेजी अनुवाद—स्वामी दयानन्द की अमर कृति सत्यार्थप्रकाश के अंग्रेजी अनुवाद का विचार तो मास्टरजी के मस्तिष्क में १८८५ में ही अंकुरित हो गया था, किन्तु इस ग्रन्थ के प्रकाशनाधिकार परोपकारिणी सभा के पास थे और अनुवाद के लिये भी इस सभा से आज्ञा लेना आवश्यक था। अनुवाद का कुछ अंश उन्होंने सम्मति के लिये पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा के पास भेजा तथा उनकी संस्तुति एवं अभिशंसा पाकर वे इसे पूरा करने में लग गये। १९०० में उन्होंने इस ग्रन्थ के ११वें समुल्लास का अंग्रेजी भाषान्तर 'Maharshi Swami Dayanand on Indian Religions' शीर्षक से प्रकाशित किया। इसमें स्वामीजी की जीवनी के साथ-साथ स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश का अंग्रेजी अनुवाद भी दिया गया था। तदनन्तर १९०३ में इस ग्रन्थ के ७, ८, ९, व १०वें समुल्लासों का अनुवाद 'Swami Dayanand's Exposition of Vedic Religion' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। इसमें उक्त समुल्लासों के साथ साथ स्वामीजी के बनारस, जालंधर, लखनऊ तथा बरेली में हुए विभिन्न विद्वानों से शास्त्रार्थों का विवरण भी प्रस्तुत किया गया था। सत्यार्थप्रकाश का समग्र अनुवाद १९०८ में 'An English Translation of the Satyaratha Prakash Literally : Expose of Right Sense (of Vedic Religion) of Maharshi Swami Dayanand Saraswati—The Luther of India, being a guide to Vedic Hermencutics.' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। यह ग्रन्थ राय रौशनलाल बैरिस्टर एट ला को समर्पित किया गया था तथा इसके प्रकाशन में उक्त सज्जन ने आर्थिक सहायता भी दी थी।

ग्रन्थ के आरम्भ में स्वामी दयानन्द की आत्मकथा तथा उनकी यात्राओं का विस्तृत वर्णन संकलित किया गया है। जनज्ञान प्रकाशन नई दिल्ली ने इसका द्वितीय संस्करण १९७० में प्रकाशित किया, किन्तु स्वामीजी की

आत्मकथा तथा उनके पर्यटन का विवरण, जो प्रथम संस्करण में था, इसमें नहीं दिया। इन पंक्तियों के लेखक ने द्वितीय संस्करण के अन्त में अनुवादक की जीवनी की संक्षिप्त रूपरेखा प्रस्तुत की है। गोकरुणानिधि का अनुवाद—The Ocean of Mercy (1889), पंचमहायज्ञविधि का अंग्रेजी अनुवाद—The Five Great Duties of the Aryans. इसमें पंचमहायज्ञों के विधायक मंत्रों का नागरी तथा रोमन लिपियों में पाठ देकर उनका अनुवाद हिन्दी तथा अंग्रेजी में किया गया है।

A Triumph of Truth—being an English Translation of Satya Dharma Vichar or a Discussion upon True Religions among Maharshi Swami Dayanand Saraswati, Rev. G. T. (T. J.) Scott, Moulvie Mahomed Kasam and other Christian and Mahomedan Priests of Chandapur with the Autobiography and Travels our Swami.

यह पुस्तक १८८९ में विरजानन्द प्रेस लाहौर से प्रकाशित हुई थी। ग्रन्थ के आरम्भ में स्वामी दयानन्द की आत्मकथा के अंग्रेजी अनुवाद को देकर लेखक ने जीवन चरित के अवशिष्ट अंश को स्वयं लिखकर पूरा किया है। तत्पश्चात् सत्यधर्मविचार (मेला चांदापुर) शीर्षक पुस्तक का अनुवाद 'A Dissertation upon the Fundamental Principles' शीर्षक से दिया गया है। पुस्तक के परिशिष्टि में लेखक ने अपने कुछ निबन्धों को भी संगृहीत किया है। Maharshi Dayanand Saraswati (लघु जीवनी, १८९२)। इसमें संक्षिप्त जीवन चरित के अतिरिक्त 'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश' का अंग्रेजी अनुवाद, अमेरिकन विचारक ए. जे. डेविस के स्वामीजी विषयक उद्गार तथा रामदास छबीलदास बैरिस्टर द्वारा स्वामीजी की प्रशस्ति में लिखे गये २० संस्कृत छन्दों को भी अनुवाद सहित संकलित किया गया है।

Meeting of Dayanand and T.J. Scott at Bareilly—

इस पुस्तक में स्वामीजी की बरेली के पादरी डा. स्कॉट से भेंट का विवरण है।

मास्टर दुर्गाप्रसाद का वेद विषयक कार्य—

दयानन्द हाई स्कूल, लाहौर के छात्रों के उपयोगार्थ इन्होंने सात भागों में वैदिक रीडर्स का संग्रह तथा सम्पादन किया। इनका विवरण इस प्रकार है—

1. First Vedic Reader—'दयानन्द पाठशाला पुस्तकावल्यां प्रथमं वेद पुस्तकम्' वेद मंत्रों का सरल हिन्दी एवं अंग्रेजी में अनुवाद।
2. Second Vedic Reader—चारों वेदों के कुछ मंत्रों का द्विभाषी अनुवाद देने के पश्चात् संस्कृत नीतिकारों की सूक्तियों का अनुवाद भी दे दिया गया है।
3. Third Vedic Reader—ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के ९७वें सूक्त तथा यजुर्वेद के ४०वें अध्याय का द्विभाषी अनुवाद देकर मनुस्मृति के कुछ श्लोकों का अनुवाद भी दिया गया है।
4. Fourth Vedic Reader—मुख्यतया ऋग्वेद एवं यजुर्वेद के मंत्रार्थ दोनों भाषाओं में दिये गये हैं।
5. Fifth Vedic Reader—यजुर्वेद के ३२ तथा ३६वें अध्यायों का दोनों भाषाओं में अनुवाद दिया है (१९५६ वि.)।
6. Sixth Vedic Reader—यजुर्वेद के ३१वें अध्याय के अतिरिक्त ऋग्वेद के मण्डल १० सूक्त ८१, म. १. सूक्त ६५, तथा मण्डल-१ सूक्त ८९ का हिन्दी एवं अंग्रेजी में अनुवाद। (१९००).
7. Seventh Vedic Reader—यजुर्वेद के ३४ व ३९वें अध्यायों के अतिरिक्त संस्कृत के कुछ स्तोत्रों का भी इसमें अनुवाद दिया गया है (१९०१)।

उपर्युक्त ग्रन्थमाला बहुत लोकप्रिय हुई। इसके अनेक संस्करण छपे। दयानन्द हाई स्कूल, लाहौर के मुख्याध्यापक पद को स्वीकार करने से पूर्व मास्टरजी डी.ए.वी. कालेज, लाहौर के माध्यमिक विभाग (Middle Section) के मुख्याध्यापक भी रहे थे। उस समय उन्होंने छात्रोपयोगी धर्मशिक्षा पाठावली का संग्रह एवं सम्पादन किया। जिसमें सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास को उद्धृत किया गया था। इसका प्रकाशन विद्यालय पाठ्यपुस्तक उपसभा द्वारा १८९१ में किया गया।

अंग्रेजी माध्यम से वेदाध्ययन करने वालों के लिये मास्टरजी ने एक और काम किया। १९११ में इन्होंने 'Introduction to the Vedas made Easy or a Literal English Translation of the Four Vedas' (The gospels of India) शीर्षक पुस्तक प्रकाशित की। स्वामी दयानन्द कृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के अनुकरण पर लिखी गई इस पुस्तक में वैदिक ज्ञान विषयक गम्भीर ऊहापोह किया गया है। इसके पश्चात् उन्होंने विधिवत् वेदानुवाद का कार्य अपने हाथों में लिया।

'The Vedas made Easy' शीर्षक ग्रन्थमाला के अन्तर्गत ऋग्वेद का सरल अंग्रेजी भाषानुवाद छापना आरम्भ किया। इस पुस्तकमाला के भाग ४, ५, ६ और ७ में ऋग्वेद के चार मण्डलों के मंत्रों का अर्थ दिया गया है। ये ग्रन्थ १९१५ में छपे। इसके आगे के मण्डलों का अनुवाद कहां तक हुआ, यह अभी अज्ञात है।

मास्टर दुर्गाप्रसाद रचित अन्य ग्रन्थ—

The Light of Religion or Dharm Prakash—यह वैदिक रीडर्स, सेक्रेड सांग्स, प्रिंसिपल्स ऑफ रिलीजन तथा संध्या शीर्षक ४ पुस्तकों का एक ही जिल्द में संग्रहात्मक ग्रन्थ है।

Prayer Book or Sandhya—नागरी तथा रोमन लिपि में संध्या का मूल पाठ तथा हिन्दी एवं अंग्रेजी में संध्या के मंत्रों का शब्दार्थ तथा अनुवाद।

Principles of Religion,—Morality, Health and Happiness—वेद, बाइबिल तथा कुरान की कुछ शिक्षाओं का संग्रह।

Sacred Songs—'वैदिक पाठशाला सिरीज' के अन्तर्गत यह पुस्तक प्रथम बार १९०३ में विरजानन्द प्रेस, लाहौर से प्रकाशित हुई थी। इसमें नानक, सुन्दरदास, तुलसीदास आदि भक्त कवियों की कुछ कविताओं के अंग्रेजी अनुवाद के साथ वेद तथा गीता के कुछ अंशों का अंग्रेजी में भावार्थ दिया गया था।

खण्डनात्मक ग्रन्थ—

The Shraddha—मृतक श्राद्ध के खण्डन में लिखी गई यह पुस्तक हिन्दी तथा अंग्रेजी में पृथकशः प्रकाशित हुई थी।

Who wrote the Puranas ?—पं. लेखराम रचित पुस्तक 'पुराण किसने बनाए' का अंग्रेजी अनुवाद।

The Dogmas of Christianity—ईसाई मत की आलोचना में लिखी गई पुस्तक। Caste System : Its Social Evils and their Reminders (1900)—

मास्टर दुर्गाप्रसाद मांसाहार तथा मदिरापान के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने एतद्विषयक अनेक पुस्तकें स्वयं भी लिखीं तथा अन्यों द्वारा लिखित ग्रन्थों को प्रकाशित किया। इनका विवरण इस प्रकार है—१. Manu and Vegetarianism—मनुस्मृति के मांसाहार विधायक प्रक्षिप्त श्लोकों का विवेचन, 2. The Defance of Manu—मद्रास क्रिश्चियन सोसायटी द्वारा प्रकाशित 'Code of Manu' का उत्तर, 3. Reason and Instinct—पशुओं में मन की सत्ता वैज्ञानिक प्रमाणों के आधार पर सिद्ध की गई है (१८८९), 4. Vegetarianism—शाकाहार के समर्थन में यूरोपीय विद्वानों की युक्तियों का संग्रह (१८९२), 5. Spiritual Advantages of Vegetarianism—डा. एल. सालाजार का शाकाहार के समर्थन में दिया गया भाषण—(१८८९), 6. Physical Evils of Flesh Eating—डा. एस. सी. खास्तगीर एम. डी. के मांसाहार निषेध विषयक व्याख्यान का प्रकाशन, 7. Intemper-ance—मदिरापान की हानियों का विवेचन, 8. Dan-gers of Moderate Drinking, 9. Drunkenness and its Cure. इनके निम्न ग्रन्थों का भी उल्लेख मिलता है—Devotion to God, The Way to God, Faith and Culture, The Idea and Existence of God, Has animal no Soul ? Our Duties and work, The Formation of Character, The Transmigration of Soul, The Doctrine of Reincarnations (1891). The Rights and Position of Women, The Immortality of Soul, देवसमाज के संस्थापक सत्यानन्द अग्निहोत्री के आक्षेपों का उत्तर 'A Reply

to Mr. Agnihotri's 'Pt. Dayanand Saraswati unveiled.' शीर्षक पुस्तक में दिया गया है ।

दुर्गाप्रसाद ने संस्कृत के अनेक ग्रन्थों का अंग्रेजी में अनुवाद किया है। यथा, १. भर्तृहरि कृत नीति तथा वैराग्य शतक का अनुवाद 'Morals and Renunciation of Bhartrihari'. २. चाणक्य-नीति का अंग्रेजी अनुवाद (Chanakya Morals : English translation with Sanskrit Text) इनके द्वारा किये गये ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक तथा तैत्तिरीय उपनिषदों के अंग्रेजी अनुवाद का भी उल्लेख मिलता है।

मास्टरजी ने अपना अधिकांश साहित्य अंग्रेजी में लिखा था। उनकी कुछ हिन्दी कृतियों की जानकारी भी मिली है जो निम्न प्रकार है—

स्वाध्याय मंजरी—वेद मन्त्रों का पद्यानुवाद तथा भजनों का संग्रह (१९१६), अप्रतिम प्रतिमा की परीक्षा—मूर्तिपूजा के समर्थन में पं. बालादत्त द्वारा लिखी गई पुस्तक का खण्डन (१८९६), जीवन उद्देश्य, आजकल के साधुओं की करतूत—लाला ज्वालासहाय लिखित उर्दू पुस्तक का हिन्दी में अनुवाद (१९४५ वि., १८८८), स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी का जीवनचरित (१९१३) (यह ग्रन्थ ब्रिटिश म्यूजियम पुस्तकालय में है)।

दुलेराय काराणी

गुजरात के कच्छ प्रान्त में जन्मे श्री काराणी ने ब्रज और खड़ी बोली में स्वामी दयानन्द की प्रशस्ति में उत्कृष्ट काव्य रचना की है। श्री दुलेराय काराणी का जन्म माघ कृष्णा ७ सं. १९५२ वि. तदनुसार २६ फरवरी १८९६ को भूतपूर्व कच्छ राज्य के मुन्द्रा नामक नगर में हुआ। इनके पिता का नाम लाखाभाई तथा माता का नाम माला बेन था। इनकी शिक्षा मैट्रिक तक हुई। तत्पश्चात् आपने स्वाध्याय से ही अंग्रेजी, उर्दू, फारसी तथा सिंधी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर लिया। आपने कच्छ राज्य के शिक्षा विभाग में शिक्षक तथा उपनिरीक्षक का कार्य किया। कच्छ के ही एक आर्य पुरुष श्री वल्लभदास रतनसिंह मेहता की प्रेरणा से आपने स्वामी दयानन्द की प्रशंसा में काव्य रचना की। 'दयानन्द बावनी' शीर्षक से यह काव्य संग्रह गुरुकुल सोनगढ़ से २०११ वि. में प्रकाशित हुआ। इसका एक अन्य संस्करण गुजराती लिपि में लेखक ने स्वयं २०३३ वि. में अहमदाबाद से प्रकाशित किया। इनका निधन २६ फरवरी १९८९ को हुआ।

प्रो. देवकीनन्दन शर्मा

प्रो. शर्मा का जन्म बिजनौर जिले के जलालाबाद ग्राम में १८९९ में हुआ। डी. ए. वी. कानपुर से एम. ए. और सेंट जॉन्स कालेज आगरा से एल. एल. बी. करने के पश्चात् ये गवर्नमेंट कालेज, अजमेर में दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक नियुक्त हुए। इनका निधन १९५२ में अजमेर में ही हुआ। स्वामी दयानन्द की जन्मशताब्दी के अवसर पर सी. एफ. एण्ड्रूज ने जो लेख ऋषि दयानन्द के सम्बन्ध में लिखा, आपने उसका अनुवाद 'दयानन्द शताब्दी का महत्व : श्री एण्ड्रूज की दृष्टि में' शीर्षक से किया। इसे सूर्य प्रकाशनालय खुर्जा ने प्रकाशित किया था।

पं. देवदत्त टेंपरेंस प्रीचर

नशा निवारण समिति के कार्यकर्ता देवदत्त स्वयं को टेंपरेंस प्रीचर कहते थे।

ले. का.—१. भारत की वर्ण व्यवस्था और स्वराज्य।

पं. देवदत्त शर्मा

शर्माजी म. म. आर्यमुनि के अधिकांश ग्रन्थों के प्रकाशक थे।

ले. का.—कर्मकाण्डचन्द्रिका—जयनारायण रामचन्द्र पोद्दार बनारस द्वारा प्रकाशित।

पं. देवदत्त शर्मोपाध्याय

संस्कृत के उद्भट विद्वान् तथा मीमांसा दर्शन के भाष्यकार पं. देवदत्त शर्मा का जन्म अलीगढ़ जिले के भमसोई नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम पं. चुन्नीलाल शर्मा तथा माता का नाम रेवती देवी था। आप भारद्वाज गोत्रोत्पन्न माध्यन्दिन यजुर्वेद को मानने वाले ब्राह्मण थे। विभिन्न स्थानों पर शिक्षा ग्रहण करने

के उपरान्त आपने गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में प्रवेश लिया और आचार्य शुद्धबोधतीर्थ के सान्निध्य में १२ वर्ष पर्यन्त अध्ययन करते रहे। महाविद्यालय की स्नातक परीक्षा 'विद्याभास्कर' उत्तीर्ण करने के साथ-साथ आपने आचार्य, तीर्थ तथा एम. ए. की परीक्षायें भी उत्तीर्ण कीं। अध्ययन समाप्ति के पश्चात् आपने गुरुकुल बिरालसी तथा महाविद्यालय ज्वालापुर में अध्यापन किया।

१९३९ में काशी आये तथा डा. मंगलदेव शास्त्री के साथ रहकर आपने राजकीय संस्कृत कालेज बनारस के सरस्वती पुस्तक भण्डार में विद्यमान तीन हजार हस्तलिखित ग्रन्थों की सूची तैयार की। १९४३ में वे इसी कालेज में वेदान्त के प्राध्यापक नियुक्त हुए। काशी का संस्कृत कालेज सदा से ही पौराणिक पण्डितों का दुर्भेद्य दुर्ग रहा है। वहां एक आर्यसमाजी विद्वान् की नियुक्ति ने पौराणिक शिविर में हलचल मचा दी। अनेक क्षेत्रों से विरोध के स्वर भी उभरे, किन्तु अन्ततः स्थिति शान्त हो गई। पं. देवदत्त आर्यसमाज बुलानाला वाराणसी के प्रधान भी रहे। १९४९ में वे इस कालेज के दर्शन विभाग के अध्यक्ष पद पर आसीन हुए तथा १९५८ पर्यन्त इस पद पर रहे। जब काशी संस्कृत कालेज का वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय में विलीनीकरण हो गया तो आप संस्कृत संकाय के डीन पद पर रहे। 'तत्त्वपरिशुद्धि' नामक ग्रन्थ का सम्पादन करने पर काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से आपको पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त हुई। आपने मीमांसादर्शन के प्रथम तीन अध्यायों का सुबोध भाष्य लिखा है। इसका प्रथम संस्करण प्रेम पुस्तक भण्डार बरेली से १९५७ में प्रकाशित हुआ। आपने 'संधिविषय' तथा 'धातुपाठ' का सम्पादन किया जो गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी से प्रकाशित हुए। इनके अतिरिक्त अष्टाध्यायी की हिन्दी टीका तथा मनुस्मृति की हिन्दी टीका भी लिखी जो अपूर्ण अथ च अप्रकाशित है।

पं देवदत्त शास्त्री

इनका जन्म १९०९ वि. में कानपुर में हुआ। कुछ काल तक आपने गुरुकुल मथुरा में अध्यापन कार्य किया।

ले. का— १. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिकेन्दुपराग-प्रथम अंश—महन्त ब्रह्मकुशल उदासीन द्वारा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के खण्डन में लिखित एक पुस्तक 'ऋगादिभाष्यभूमिकेन्दु' के प्रथम अंश वेदोत्पत्ति विषय का सटीक उत्तर (१९५० वि.), २. वैशेषिक दर्शन-विवृत्ति टीका, (१९५० वि.), ३. भीमहृदयांधकारमार्तण्ड भाग-१ (पं. भीमसेन शर्मा इटावा के मत का खण्डन (१९५७ वि.), आर्यमनरंजन—(१८९१) भजनसंग्रह।

देवनारायण भारद्वाज

श्री देवनारायण भारद्वाज का जन्म श्रावण शुक्ला ९ सं. १९९४ वि. को शाहजहांपुर जिले के कोल्हापुर नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम श्री प्रभुदयाल तथा माता का मुन्नी देवी था। इनकी शिक्षा बी. एस. सी. (कृषि) तक हुई और ये उत्तर प्रदेश के कृषि विभाग में नियुक्त हो गये। आज वे वहां राजपत्रित अधिकारी हैं। श्री भारद्वाज कवि हैं और इनकी अनेक काव्य कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।

ले. का—१. स्वामी स्वराज्य संग्रामी, २. प्रवर्त्तक, ३. मुक्तायन (कठोपनिषद् का पद्यानुवाद), ४. श्रुतिशाला, ५. यज्ञ-अर्चना, ६. गीत-स्तुति (आर्याभिविनय के चुने हुए मन्त्रों का काव्यानुवाद) ७. बिन्दु-बिन्दु बोध, ८. बोध यामिनी, ९. गीताहुति।

व. प.—एफ. ४२ मानसरोवर कालोनी, राम घाट मार्ग, अलीगढ़ (उ. प्र.) २०२००१।

पं. वेदप्रकाश

इस्लाम धर्म के मर्मज्ञ पं. देवप्रकाश का जन्म १९४६ वि. (१८८९) में गुरदासपुर जिले के धर्मकोट बग्गा नामक ग्राम में हुआ। आपका अध्ययन फारसी और अरबी का हुआ, जिनमें आपने व्युत्पन्नता प्राप्त की। १९१२ में आपका आर्यसमाज से सम्बन्ध हुआ और आप पूर्ण उत्साह के साथ सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने लग गये। अमृतसर में आपने आर्य युवक समाज की स्थापना की और उसके द्वारा अनेक सुधारवादी प्रवृत्तियों का सूत्रपात किया। १९२३ में जब स्वामी श्रद्धानन्द तथा महात्मा हंसराज द्वारा शुद्धि आन्दोलन का प्रवर्तन किया गया

तो पं. देवप्रकाश ने उसमें सक्रिय भाग लिया। इसी प्रकार मालाबार प्रदेश में मोपला मुसलमानों द्वारा जब हिन्दुओं पर अत्याचार किये गये तो आप वहां सेवा और सहायता हेतु गये। आपने अमृतसर के निकट गण्डासिंह वाला में श्रीमद्दयानन्द संस्कृत अरबी महाविद्यालय की स्थापना की तथा अनेक वर्षों तक उसका संचालन किया। कालान्तर में आप मध्यप्रदेश के रतलाम नगर में आ गये। यहां आप भीलों तथा अन्य आदिवासी जातियों के कल्याण कार्य में लगे रहे। इस पिछड़े क्षेत्र के अशिक्षित वनवासियों को ईसाई प्रचारकों के जाल से मुक्त करने के लिये आपने प्रयास किये। २९ अक्टूबर १९७२ को आपको अमृतसर में अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया जिसका सम्पादन आपके निकटतम मित्र तथा सहयोगी श्री पिण्डीदास ज्ञानी ने किया था। २९ दिसम्बर १९८० को पं. देवप्रकाश का दयानन्द मठ, दीनानगर में निधन हो गया।

ले. का.—इस्लाम की समीक्षा विषयक ग्रन्थ— मैदाने महशर, ख्वाजा हुसन निजामी का वास्तविक रूप, दाफाउल ओहाम, मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी की भविष्यवाणियों का भण्डाफोड़, कुरान परिचय खण्ड-१ (१९७०), कुरान परिचय खण्ड-२ (१९७१), कुरान परिचय खण्ड-३ (१९७३), कयामत, जन्नत, दोजख-(१९७३) यथार्थ दर्पण, बहाई मत दर्पण।

घोर आक्रमण, ईसाई प्रचारकों के षड्यंत्रों का भण्डाफोड़, इंजीलों में परस्पर विरोधी कल्पनायें, ईसाई मत का वास्तविक रूप।

अन्य ग्रन्थ

आस्तिक विचार (१९४०)—पं. जगदीशचन्द्र शास्त्री के कथनानुसार यह पुस्तक उन्हीं के द्वारा लिखी गई थी किन्तु उन्होंने इसे अपने मित्र पं. देवप्रकाश के नाम से प्रकाशित किये जाने की अनुमति दे दी थी।

आर्यसमाज के महापुरुषों के जीवन तथा कार्य (प्रथम भाग—आर्यसमाज के नेताओं, विद्वानों, लेखकों तथा उपदेशकों का इतिवृत्त) आर्यसमाज के इतिहास ज्ञान में इस पुस्तक की उपयोगिता निर्विवाद है।

वि. अ.—पं. देवप्रकाश अभिनन्दन ग्रन्थ—सम्पादक पिण्डीदास ज्ञानी (१९७२)।

डा० देवप्रकाश पातंजल

डा. देवप्रकाश पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु की शिष्य परम्परा में थे। इन्होंने एम. ए. (संस्कृत) के साथ-साथ व्याकरणाचार्य तथा निरुक्ताचार्य की उपाधियां प्राप्त कीं। आप आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष पद पर रहे। तत्पश्चात् डा. पातंजल ने दयालसिंह कालेज, दिल्ली में संस्कृत के प्रवक्ता पद पर कार्य किया।

ले. का.—अष्टाध्यायी प्रकाशिका (१९५५), ऋग्वेद (मण्डल १ सूक्त १३७-१६२) का व्याकरण शास्त्रीय अध्ययन (शोध प्रबन्ध)।

मुनि देवराज विद्यावाचस्पति

गुरुकुल कांगड़ी के लब्ध प्रतिष्ठ स्नातक तथा विद्वान् देवराज का जन्म २१ जुलाई १८९३ को गाजीवाला ग्राम तहसील नजीबाबाद (उत्तरप्रदेश) में हुआ। इनके पिता का नाम श्री ज्वालाप्रसाद था। गुरुकुल कांगड़ी में अध्ययन करने के पश्चात् १९७२ वि. (१९१६) में ये स्नातक बने और 'विद्यावाचस्पति' की उपाधि ग्रहण की। आपने गुरुकुल कांगड़ी के अतिरिक्त गुरुकुल सोनगढ व सूपा में अध्यापन किया। आप बहुत वर्षों तक गुरुकुल झज्जर में रहे। आपने जयपुर के पं. मधुसूदन ओझा से वेद तथा ज्योतिष का अध्ययन किया था। २५ नवम्बर १९६८ को आपका गुरुकुल झज्जर में ही निधन हो गया।

ले. का.—अग्निहोत्र-(२००७ वि.), वैदिक भारत में यज्ञ और उसका आध्यात्मिक स्वरूप—(१९६०), वैदिक संध्या (१९३३), माया का खेल (आत्मकथा, १९६८)।

लाला देवराज

भारत में कन्या शिक्षण के अग्रदूत तथा बालोपयोगी साहित्य के रचयिता लाला देवराज का जन्म ३ मार्च, १८६० (चैत्र ३, १९१७ वि.) को जालंधर के सम्माननीय रईस लाला शालिग्राम के यहां इसी नगर के कोट किशनचन्द मुहल्ले में हुआ। इनकी माता का नाम काहन देवी थी। इनकी बहिन शिव देवी लाला मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धा-

नन्द) को ब्याही गई थीं। देवराज का प्रारम्भिक शिक्षण मदरसे में हुआ। इसके पश्चात् वे मिशन स्कूल में पढ़े। पुनः होशियारपुर के सरकारी विद्यालय में पढ़ते रहे।

अपने बहनोई लाला मुन्शीराम के सम्पर्क में आने के कारण लाला देवराज की रुचि भी आर्यसमाज में जागृत हुई और वे उनके निकट सहयोगी वन गये। कन्याओं की शिक्षा का समुचित प्रबन्ध न देख कर लाला देवराज ने १८९० में कन्या महाविद्यालय की स्थापना की और इस संस्था के माध्यम से आर्य संस्कृति के अनुकूल नारी शिक्षा का प्रारम्भ किया गया। पंजाब जैसे प्रान्त में महिला वर्ग में हिन्दी के प्रचार का श्रेय लाला देवराज तथा उनके कन्या महाविद्यालय को है। महाविद्यालय से आपने 'पांचाल पण्डिता' तथा 'जलविद सखा' नामक पत्रिकाएं निकालीं। १९३३ में आप पंजाब प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। १७ अप्रैल १९३५ को ७५ वर्ष की आयु में लालाजी का निधन हो गया। लाला-जी ने कन्या शिक्षण की दृष्टि से सरल, सुबोध तथा रोचक शैली में शिक्षाप्रद पुस्तकें लिखी हैं।

ले. का.—वर्ण परिचय, अक्षर दीपिका, पाठावली २ भाग, शब्दावली, कथा विधि, पत्र-कौमुदी, बाला-विनय, बालोद्यान संगीत, गणित भूषण, गृह प्रबन्ध, पाठ-शाला की कन्या, सुबोध कन्या, सावित्री नाटक (१९००), एक अनपढ़ स्त्री की यात्रा (१९५९. वि.), सप्तअंकी प्रार्थना पुस्तक (१८९१)।

वि. अ.—लाला देवराज (जीवनी) : पं. सत्यदेव विद्यालंकार लिखित।

पं. देवव्रत धर्मेन्दु

युवक वर्ग में आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रचार हेतु समस्त जीवन को अर्पित कर देने वाले पं. देवव्रत धर्मेन्दु का जन्म १३ अप्रैल १९०४ को जेहलम (पाकिस्तान) जिले के जलालपुर कीकना ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री मानकचन्द तथा माता का नाम श्रीमती रुक्मणी देवी था। आपकी शिक्षा मिशन हाई स्कूल जेहलम में हुई। इसके पश्चात् दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय लाहौर में भी आपने अध्ययन किया। आपने १९२० में असहयोग आ-न्दोलन में भाग लिया। १९२३-२४ में स्वामी श्रद्धानन्द तथा महात्मा हंसराज के द्वारा संचालित शुद्धि आन्दोलन में धर्मेन्दुजी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। १९२६ से १९३१ तक आपने हिमाचल प्रदेश की डी.ए.वी. संस्थाओं में अध्यापन किया तथा इसी क्षेत्र में धर्म प्रचार भी करते रहे। १९३३ में वे दिल्ली आ गये और डी. ए. वी. हाई स्कूल नई दिल्ली में धर्म शिक्षक के पद पर कार्य आरम्भ किया। १९६४ में आपने इस कार्य से अवकाश लिया। इसके पश्चात् आपने आर्य युवक परिषद् का संग-ठन किया और उसके माध्यम से छात्रों तथा युवकों में धार्मिक भावों का प्रचार करने में संलग्न रहे। इनका निधन १६ सितम्बर १९८५ को दिल्ली में हुआ।

ले. का.—रेणुका माई का प्रसाद, दयानन्द गुणपंचक, ऋषि दयानन्द वचनामृत (१९६३), ऋषि की सुनो, महर्षि दयानन्द और उनका कार्य, वेद संदेश (१९८१ वि.), वैदिक सूक्तिसुधा (१३९ द.), सत्यार्थप्रकाश शताब्दो-वर्ष स्मृति ग्रन्थ (१९८२), दैनिकयज्ञ-प्रकाश (कुल २० लाख छपी), ऋषि की न सुनने का फल (१९५९)।

वि. अ.—चलती फिरती संस्था: देवव्रत धर्मेन्दु—(अभि-नन्दन ग्रन्थ) श्री मूलचन्द गुप्त द्वारा सम्पादित (१९७९)।

लाला देवीचन्द एम. ए.

यजुर्वेद तथा सामवेद के अंग्रेजी अनुवादक लाला देवीचन्द का जन्म १९ नवम्बर १८८० को गुरुदासपुर जिले के बहरामपुर ग्राम में हुआ। इनके पिता लाला प्रभुदयाल राजस्व विभाग में नौकरी करते थे। देवीचन्द ने १९०२ में डी. ए. वी. कालेज लाहौर से बी. ए. तथा गवर्नमेंट कालेज लाहौर से १९०४ में एम. ए. (अंग्रेजी) की परीक्षा उत्तीर्ण की। १९०५ से १९१५ तक वे डी. ए. वी. हाई स्कूल होशियारपुर में मुख्याध्यापक के पद पर रहे। १९१५ में वे डी. ए. वी. कालेज होशियारपुर के प्रिंसिपल पद पर नियुक्त हुए। १९३३ में उन्होंने दयानन्द साल्वेशन मिशन की स्थापना की तथा १९६३ तक इसके

अध्यक्ष रहे। ४ जुलाई १९६५ को लालाजी का निधन हुआ।

ले. का.—१. स्वामी दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य का अंग्रेजी अनुवाद। २. सामवेद का अंग्रेजी अनुवाद (१९६३), दयानन्द जन्म शताब्दी के अवसर पर १९२५ में आपने आर्य शिक्षण संस्थाओं की एक विवरणिका प्रकाशित की थी, ३. स्वतन्त्र भारत में शुद्धि तथा भारत में ईसाइयत (दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर द्वारा प्रकाशित)।

पं. देवीचन्द्र शास्त्री

विगत शताब्दी के अन्तिम दशक में जब जोधपुर के महाराज प्रतापसिंह ने नगर के बाहर 'गुरां के तालाब' नामक स्थान में वैदिक पाठशाला की स्थापना की तो शास्त्रीजी को वहां अध्यापक के रूप में रक्खा। इन्होंने पुष्पदन्ताचार्य निर्मित शिवमहिम्न स्तोत्र की शैली में 'अभिनव महिम्न स्तोत्र' लिखा जिसमें निराकार परमात्मा का सुन्दर शिखरणी छन्दों में स्तवन किया गया है। इसका प्रकाशन १९५३ वि. में हुआ। इस पुस्तक की अनेक प्रतियाँ जसवन्त कालेज जोधपुर के रसायन विभाग के स्टोर में वर्षों से पड़ी थीं। इस पुस्तक का उद्धार इन पंक्तियों के लेखक ने अपने अनुज डा. नवलकिशोर माथुर (प्रवक्ता : रसायन) के सहयोग से किया तथा अपने शोध प्रबन्ध (ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज की संस्कृत साहित्य को देन) में उसका विस्तृत विवेचन किया।

पं. देवीदत्त मिश्र

आप उत्तरप्रदेश के उन्नाव जिले के अन्तर्गत रावतपुर ग्राम के निवासी थे। आपके पिता का नाम पं. अमृतलाल शाण्डिल्य था। आपने 'श्रीमद्दयानन्द चरितामृतम्' शीर्षक एक संस्कृत काव्य लिखा। ३४९ छन्दों में समाप्त हुए इस काव्य का हिन्दी अनुवाद इनके पुत्र पं. लक्ष्मीशंकर शर्मा ने किया। यद्यपि मूल ग्रन्थ तथा उसका अनुवाद ४ अगस्त १९१६ को ही समाप्त हो चुका था, किन्तु इसका प्रकाशन १९९२ वि. में राजस्थान मुद्रणालय हैदराबाद दक्षिण में मुद्रित कराकर किया गया। श्री लक्ष्मीशंकर शर्मा का जन्म १८६५ में रावतपुर टिकोली (जिला उन्नाव) में हुआ। आप आर्यसमाज सुलतान बाजार हैदराबाद में पुरोहित रहे। अपने पिता द्वारा लिखित 'श्रीमद्दयानन्द चरितामृतम्' की हिन्दी टीका के अतिरिक्त आपने 'यज्ञे पशुबलि वेद विरुद्ध' तथा स्वामी दयानन्द लिखित आर्योद्देश्यरत्नमाला की एक व्याख्या भी लिखी। आपका निधन ४ अप्रैल १९५७ को हुआ। पं नरेन्द्र के अनुसार आपकी एक पुस्तक 'वेद में इतिहास नहीं' शीर्षक भी प्रकाशित हुई थी।

लाला देवीदयाल

पंजाब के प्रारम्भिक युग के आर्यसमाजी थे। इनकी एक उर्दू पुस्तक 'रिसाला ए तरदीद बुतपरस्ती' १८९० में अमृतसर से प्रकाशित हुई।

देवीदास आर्य

मेरठ निवासी श्री आर्य ने प्रचार की दृष्टि से अनेक उपयोगी पुस्तकें लिखी हैं।

ले. का.—१. सर्वगुणसम्पन्न ऋषि (१९७१), २. अमर हुतात्मा पं. लेखराम (१९७३), ३. अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द (१९७३), ४. महान् धार्मिक महात्मा भगवान् कृष्ण (१९७३), ५. हमारे शास्त्रार्थ-महारथी (१९७३), ६. हमारे तपस्वी महात्मा (१९७४), ७. मांस भक्षण (१९७४), ८. वैदिक धर्म (१९७४), ९. ईश्वर का अस्तित्व (१९७५), १०. महान् धार्मिक महात्मा राम, ११. गृहस्थाश्रम किस प्रकार स्वर्गधाम बन सकता है?, १२. अवतारवाद तथा राम एवं कृष्ण लीलायें, १३. महर्षि के उपकार, १४. पितृयज्ञ, १५. गृहस्थ आश्रम तथा जीवन और मृत्यु, १६. आर्यसमाज स्थापना शताब्दी और हमारा कर्त्तव्य, १७. भगवती जागरण (१९७८)।

देवीदास डस्कवी

आप ग्राम डस्का जिला स्यालकोट के निवासी थे। इन्होंने स्वामी दयानन्द कृत संस्कारविधि का उर्दू अनुवाद 'संस्कारदीपक' नाम से किया। इसे लाला पिण्डीदास ने १९१५ में लाहौर से प्रकाशित किया। ये पिण्डीदास

अमृतसर के ज्ञानी पिण्डीदास से भिन्न और लाला लाजपतराय के साथी थे। इस ग्रन्थ की दो भूमिकायें महात्मा मुन्शीराम तथा प्रो. ताराचन्द गाजरा ने लिखी थीं। इसका द्वितीय संस्करण १९२४ में आर्य बुक डिपो लाहौर से छपा था। इन्होंने पं. तुलसीराम स्वामी लिखित भास्कर प्रकाश का भी उर्दू में अनुवाद किया जो १९१३ में छपा।

श्री देवेन्द्रकुमार कपूर

वैदिक चिन्तक तथा साधक श्री कपूर का जन्म ५ फरवरी १९१२ को अमृतसर में हुआ। इनके पिता का नाम श्री रूपलाल कपूर था जिन्होंने अपने पिता श्री रामलाल कपूर की स्मृति में १९२८ में एक ट्रस्ट की स्थापना वैदिक साहित्य के प्रकाशन, संरक्षण एवं प्रचार हेतु की थी। १९३१ में श्री देवेन्द्र कपूर ने पंजाब विश्वविद्यालय से संस्कृत (आनर्स) विषय लेकर बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। स्वामी योगेश्वरानन्द सरस्वती के सान्निध्य में रहकर इन्होंने योग का अध्ययन एवं साधना की है।

ले.का.—१. वैदिक पीयूषधारा (२०२६ वि., १९७९), 2. Vedic Concept of Yoga Meditation. (१९८३), 3. Lectures on Yoga Meditation as revealed in the Holy Vedas (1983), 4. Success Motivating Vedic Lores.

व.प.—३०२ कैप्टन विला, माउन्ट मेरी रोड, बांदरा-बम्बई—४०००५०.

डा० देवेन्द्रकुमार सत्यार्थी

सत्यार्थीजी का जन्म कार्तिक पूर्णिमा १९९३ वि. को बिहार के नालंदा जिले के ग्राम बजिदपुर में हुआ। इन्होंने आयुर्वेद तथा होमियोपैथी का अध्ययन किया है। स्वामी अभेदानन्दजी के सान्निध्य में रहकर इन्होंने वैदिक साहित्य का परिशीलन किया। आपने भारतीय स्वाधीनता संग्राम का खोजपूर्ण इतिहास लिखा है जो अभी अप्रकाशित है। आपके अनेक शोधपूर्ण लेख आर्य पत्रों में छपते रहते हैं।

व. प.—डा. मुसाढी (जिला नालंदा)।

देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय

स्वामी दयानन्द के जीवन के सम्बन्ध में गम्भीर अन्वेषण करने तथा उनके व्यक्तित्व को विराट् फलक पर प्रस्तुत करने का अनन्य प्रयास करने वाले देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय के स्वयं के जीवन के बारे में हमारी जानकारी नगण्य ही है। वे जीवन के आरम्भ में ब्रह्मसमाज के अनुयायी रहे, किन्तु दयानन्द के वैचारिक सम्पर्क में आकर वैदिक धर्मानुयायी कहलाने में गौरव का अनुभव करते थे। तथापि वे सक्रिय या पंजीकृत आर्यसमाजी कभी नहीं रहे। उन्होंने प्रसिद्ध बंगाली लेखक तथा राजनीतिज्ञ रमेशचन्द्रदत्त के अनुरोध पर दयानन्द जीवन विषयक शोध कार्य किया। अपने जीवन के बहुमूल्य १० वर्षों को उन्होंने स्वामी दयानन्द के जीवन विषयक तथ्यों के अन्वेषण तथा संग्रह में लगा दिया। एतदर्थ उन्होंने देश के विभिन्न भागों में भ्रमण किया। आर्यसमाज कलकत्ता के प्रधान राजा तेजनारायण सिंह ने इस कार्य में उनकी आर्थिक सहायता की थी। उन्होंने दयानन्दीय जीवन विषयक तथ्यों एवं सामग्री संकलन करने के लिये दयानन्द के समकालीन लोगों से भेंट की, सैकड़ों से पत्र व्यवहार किया तथा तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में छपे दयानन्द विषयक तथ्यों, समाचारों तथा संदर्भों का संग्रह किया। १७ जनवरी १९१६ को वाराणसी में उनका उस समय निधन हुआ, जब वे जीवनचरित विषयक सामग्री का संग्रह कर चुके थे। तब तक स्वामीजी का यह विशद जीवन चरित भूमिका तथा चार अध्याय पर्यन्त ही लिखा गया था।

ले. का.—बंगला में मूल ग्रन्थ—

१. दयानन्द चरित (१३०४ बंगाब्द, १८९६), २. दयानन्द हिन्दुर आदर्श संस्कारक (१८९९), ३. दयानन्द सरस्वती का स्वलिखित जीवनवृत्तान्त (थियोसोफिस्ट तथा पूना प्रवचन में प्रकाशित), ४. महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित-भूमिका तथा चार अध्याय (अपूर्ण तथा अप्रकाशित), ५. स्वामी दयानन्द जन्मस्थानादि निर्णय (१९१६), ६. विरजानन्द चरित (अप्रकाशित)।

उक्त ग्रन्थों के हिन्दी अनुवाद—दयानन्द चरित (१९१२),

आदर्श सुधारक दयानन्द (१९३२), विरजानन्द चरित (१९१९), महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवनचरित २ भाग, (१९३३), देवेन्द्रबाबू के इस अपूर्ण ग्रन्थ को पं. घासीराम ने पूरा किया।

उक्त ग्रन्थों के गुजराती अनुवाद—आदर्श सुधारक दयानन्द अनु. कृष्णलाल मोहनलाल झवेरी (२००५ वि.), दयानन्द सरस्वती नुं स्वरचित जीवनवृत्तान्त अनु. बलवन्तराय कल्याणराय ठाकुर (१९१४), स्वामी दयानन्द नां जन्मस्थानादि नो निर्णय—अनु. त्रिभुवनदास दामोदरदास गढ़िया—१९२० में नान्हालाल दलपतराय कवि की भूमिका के साथ प्रकाशित।

डा० देवेन्द्रनाथ शास्त्री

आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् तथा शास्त्रार्थ महारथी पं. मुरारीलाल शर्मा के सबसे बड़े पुत्र पं. देवेन्द्रनाथ शास्त्री भी अपने पिता के ही तुल्य विख्यात वाग्मी तथा शास्त्रार्थी थे। इनका जन्म १८९२ में बुलन्दशहर जिले के सिकन्दराबाद कस्बे में हुआ। आपकी शिक्षा गुरुकुल सिकन्दराबाद में हुई। तत्पश्चात् आपने गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर तथा काशी में रहकर अध्ययन किया। पंजाब विश्वविद्यालय से 'शास्त्री' तथा कलकत्ता विश्वविद्यालय से 'सांख्यतीर्थ' की परीक्षायें उत्तीर्ण करने के पश्चात् आप प्रचार कार्य में अवतीर्ण हुए। आपने सफल व्याख्याता तथा शास्त्रार्थकर्त्ता के रूप में पर्याप्त ख्याति अर्जित की। विशेषतः जैन विद्वानों से शास्त्रार्थ करने में शास्त्रीजी को नैपुण्य प्राप्त था। आपने जैन धर्म तथा दर्शन का विशद् अध्ययन भी किया था। इनका निधन १५, अक्टूबर १९४२ को लखनऊ में हुआ।

ले. का.—नव उपनिषद् संग्रह संक्षिप्तभाष्य (१९९० वि.) नास्तिकवाद, सिकन्दराबाद का शास्त्रार्थ, देहली का शास्त्रार्थ, श्री ऋषभदेवजी की उत्पत्ति असम्भव है (१९३०)।

डा. देवेन्द्रनाथ शास्त्री

शास्त्रीजी का जन्म ११ अक्टूबर १९१३ को जिला जेहलम (पाकिस्तान) की तहसील पिण्डदादन खां के ग्राम आडा में पं. मालिकचन्द आर्य के यहां हुआ। इनका आरम्भिक अध्ययन गुरुकुल रायकोट (लुधियाना) में हुआ। तत्पश्चात् इन्होंने शास्त्री (पंजाब) तथा हिन्दी एवं संस्कृत एम. ए. की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। आर्य, आर्योदय, आर्य मर्यादा, अलंकार आदि आर्यसामाजिक पत्रों में आपके लेख तथा हिन्दी एवं संस्कृत कवितायें प्रकाशित हुई हैं। आपने दयानन्द शोधपीठ, पंजाब विश्वविद्यालय से 'शुक्ल याजुष सूक्ति विमर्शः' विषय लेकर १९९० में पी-एच. डी. की उपाधि ग्रहण की। यह शोध प्रबन्ध संस्कृत भाषा में लिखा गया है। आप नरेला (दिल्ली) के निवासी हैं तथा कन्या गुरुकुल में शिक्षण कार्य करते हैं।

व. प.—१६. आर्यकुटीर, न्यू कालोनी नरेला—(दिल्ली) ११००४०.

श्री देवेश भिक्षु

श्री देवेश का जन्म ११ जनवरी १९२४ को गाजियाबाद जिले के दौंसा बंजारपुर नामक ग्राम में हुआ। इन्होंने अंग्रेजी में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की है। कालान्तर में ये भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय में नियुक्त हुए और प्रथम श्रेणी के अधिकारी के रूप में सेवा निवृत्त हुए।

ले. का.—वेद पारायण यज्ञों का विधि विधान, कठोपनिषद् अथवा आत्मा परमात्मा संवाद पद्यानुवाद सहित (१९८४), ईशोपनिषद् व्याख्या, वेद और मनु, आर्याभिविनय (अंग्रेजी व्याख्या) प्रार्थना मन्त्रों की व्याख्या, पंचयज्ञ काव्य, अलंकार रहस्य, भजन कवितावली शतक दो भाग तथा मोक्ष की सीढ़ियाँ दो भाग।

श्री देवेश भिक्षु ने अंग्रेजी भाषी पाठकों के लिये कुछ उपयोगी ग्रन्थों की रचना की है। इनमें से निम्न उल्लेखनीय हैं—Gems from Vedas, Gita for Students, Brahmacharya, Might of mind, Gate to Glory, House of Honour, Know Theyself, Education, How to be Happy ?

व. प.—२६ नर्मदा एपार्टमेंट्स, अलकनंदा, नई दिल्ली ११००१९.

देवेश्वर सिद्धान्तालंकार

पेशावर के श्री शिवराम के यहां इनका जन्म हुआ। आपने गुरुकुल कांगड़ी से १९७५ वि. (१९१९) में सिद्धांतालंकार की उपाधि ग्रहण की। प्रारम्भ में ये बीमा व्यवसाय में उतरे। तत्पश्चात् आप बर्मा चले गये। आपकी एक कृति 'स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या और इस्लाम की शिक्षा' वैदिक पुस्तकालय कलकत्ता से १९२७ में प्रकाशित हुई थी।

डा० दौलतराम देव

मियांवाली जिले (पाकिस्तान) के ग्राम बोरीखेल के निवासी डा. देव ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आदेश तथा लाहौर निवासी डा. खानचन्द देव की प्रेरणा से १० समुल्लास पर्यन्त सत्यार्थप्रकाश का जर्मन भाषा में अनुवाद किया था। यह अनुवाद जर्मनी के लिपजिग नगर में १९३० में मुद्रित होकर प्रकाशित हुआ।

पं. दौलतराम शास्त्री

शास्त्रीजी का जन्म होशियारपुर जिले के ग्राम हर्दो खानपुर में पं. बसन्तराम के यहां ७ मई १८८४ को हुआ। आपने शास्त्री तक अध्ययन किया और आजीविका के लिये डी. ए. वी. हाई स्कूल अमृतसर में संस्कृत के अध्यापक नियुक्त हुए। १९४२ में सेवा निवृत्त होने के पश्चात् धर्म प्रचार में सर्वात्मना लग गये और राजस्थान तथा चण्डीगढ में अपने पुत्रों के पास रहकर आर्यसमाज के प्रचार में दत्तचित रहे। २० फरवरी १९७८ को इनका निधन हुआ। शास्त्रीजी ने आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक तथा कवि श्री अमीचन्द मेहता के पद्य एवं भजनों का संग्रह एवं सम्पादन किया जो रामलाल कपूर ट्रस्ट से अमीर सुधा नाम से छपा।

लाला द्वारकादास

लाहौर निवासी लाला द्वारकादास ने एम. ए. करने के बाद कुछ समय तक पटियाला के सरकारी कॉलेज में प्रिंसिपल का कार्य किया। तत्पश्चात् वे अम्बाला में रह कर वकालत करते रहे। पुन: लाहौर आ गये और पंजाब की चीफ कोर्ट में वकालत की। राजनीति में वे लाला लाजपतराय के साथी रहे। अंग्रेजी ट्रिब्यून में उनके नियमित रूप से लेख छपते थे। वे डी. ए. वी. कॉलेज प्रबन्धक समिति के प्रधान (१९०६-०९) भी रहे। लाला लाजपतराय ने अपनी पुस्तक 'यंग इण्डिया' उन्हें ही समर्पित की है। उनकी मृत्यु अक्टूबर १९१२ में हुई। उनकी स्मृति में लाहौर में द्वारकादास पुस्तकालय स्थापित हुआ, जो आजकल चण्डीगढ़ के लाजपतराय भवन में चल रहा है।

ले. का.—Atheism and Agnosticism (or a few Stray Thoughts about the Indifferentism of our Youngmen) यह विरजानन्द प्रेस लाहौर से १८८८ में छपी थी। इसमें अनीश्वरवाद तथा अज्ञेयवाद की आलोचना है।

द्वारकाप्रसाद अत्तार

ये शाहजहाँपुर (उत्तरप्रदेश) के निवासी थे। इनके द्वारा संगृहीत संगीतरत्नप्रकाश एक लोकप्रिय भजन संकलन था जिसकी दशाधिक आवृत्तियाँ निकली थीं। यह पांच भागों में छपा तथा इसमें ६२३ भजनों का संग्रह था। अत्तार महाशय ने आर्यसामज विषयक अनेक ग्रन्थ प्रकाशित किये।

द्वारकाप्रसाद सेवक

प्रसिद्ध पत्रकार तथा विचारक द्वारकाप्रसाद सेवक का जन्म १४ फरवरी १८८८ को फिरोजाबाद (उ. प्र.) में हुआ। आपके पिता आर्यसमाज शाहजहाँपुर के सक्रिय सदस्य थे अत: आपको आर्यसमाज के विचारों से परिचित एवं प्रभावित होने में कोई कठिनाई नहीं हुई। आपने डॉ. केशवदेव शास्त्री द्वारा संचालित 'नवजीवन' पत्र का सम्पादन उस समय किया जब शास्त्रीजी अमेरिका चले गये। आपने आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मुखपत्र आर्यमार्तण्ड तथा वैदिक-संदेश साप्ताहिक का भी अजमेर से कुछ काल तक सम्पादन किया था।

आपने इन्दौर में 'सरस्वती सदन' नामक प्रकाशन संस्था स्थापित की जिसके द्वारा हिन्दी की अनेक महत्त्व-

पूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हुईं। आपके जीवन का अन्तिम समय बम्बई में व्यतीत हुआ जहां ३० अक्टूबर १९८० को आपका निधन हुआ।

ले. का.—आनन्दोपदेश सेवा, आर्यसमाज मर रहा है, भारत की भाषा, पतन के कगार पर।

पं. द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री

संस्कृत के प्रगल्भ विद्वान् पं. द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री का जन्म १८९२ (१९४८ वि.) में मेरठ जिले के पारसोली ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम पं. जानकीनाथ तथा माता का नाम श्रीमती गंगादेवी था। पिता आर्यसमाजी विचारों के अनुयायी थे अतः उन्होंने द्विजेन्द्रनाथ को गुरुकुल वृन्दावन में प्रविष्ट कराया। जिन गुरुओं से आपने विभिन्न शास्त्रों का अध्ययन किया उनमें पं. देवदत्त शास्त्री, पं. हरनामदत्त भाष्याचार्य, स्वामी कृष्णानन्द, पं. देवीदत्त आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। व्याकरण, साहित्य तथा वेदादि का अध्ययन करने के साथ आपने आयुर्वेद का भी विशद अध्ययन किया। १९१८ में इन्होंने गुरुकुल वृन्दावन की 'वेदशिरोमणि' उपाधि प्राप्त की। ये इस गुरुकुल के प्रथम स्नातक थे।

बम्बई के प्रसिद्ध आर्य विद्वान् पं. बालकृष्ण शास्त्री की सुपुत्री गार्गीदेवी से इनका विवाह १९२१ में हुआ। विवाह के पश्चात् इन्होंने अपना कार्यक्षेत्र बम्बई को ही बनाया। यहां ये आर्यसमाज बम्बई के महोपदेशक के रूप में कार्य करने के साथ-साथ आयुर्वेदिक चिकित्सा भी करने लगे। कालान्तर में बम्बई के नेशनल मेडिकल कॉलेज में इन्हें आयुर्वेद के प्रोफेसर पद पर नियुक्त किया गया। १९३६ में ये बम्बई से उत्तरप्रदेश आ गये और गुरुकुल वृन्दावन के तत्त्वावधान में यजुर्वेदभाष्य का कार्य अपने हाथों में लिया। गुरुकुल वृन्दावन में वैदिक संस्थान की स्थापना एक धनाढ्य व्यक्ति द्वारा प्रदत्त दान राशि से हुई थी और इसी संस्थान के द्वारा वेदभाष्य कराने के लिये अनेक पण्डितों का सम्पादक मण्डल गठित किया गया था। इस सम्पादक मण्डल में पं. रामदत्त शुक्ल, डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल, पं. बृहस्पति शास्त्री, पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय आदि थे। शास्त्रीजी को सम्पादक मण्डल के अध्यक्ष तथा प्रधान सम्पादक का पद दिया गया। आपके निरीक्षण तथा मार्गदर्शन में ही यजुर्वेद का यह भाष्य दो खण्डों में प्रकाशित हुआ। शास्त्रीजी १९३९ में मेरठ आ गये तथा वेद संस्थान की स्थापना कर लेखन कार्य करने लगे। अनेक वर्षों तक आप गुरुकुल वृन्दावन के कुलपति भी रहे। १९६३ में आपका निधन हुआ।

ले. का.—१. भूमिका प्रकाश—आगरा निवासी पं. घनश्याम ने स्वामी दयानन्द कृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का खण्डन 'भूमिकाभास' नामक पुस्तक लिखकर किया था। संस्कृत में लिखी गई यह पुस्तक स्वामी दयानन्द की वेदभाष्य प्रणाली को एक चुनौती थी। शास्त्रीजी ने 'भूमिकाप्रकाश' लिखकर उक्त ग्रन्थ का प्रमाण पुरस्सर खण्डन किया तथा स्वामी दयानन्द के वेद विषयक मन्तव्यों की पुष्टि की। (१९८१ वि.)

२. संस्कृत साहित्य विमर्श— संस्कृत साहित्य का इतिहास सुगम संस्कृत गद्य में लिखा गया है। उत्तरप्रदेश सरकार ने इसे १५०० रु. के पुरस्कार से पुरस्कृत किया। (२०१६ वि.)

३. वेदतत्त्वालोचन—शास्त्रीजी के कुछ लेखों का संग्रह उनके निधन के पश्चात् 'पं. द्विजेन्द्रनाथ स्मृति लेख संग्रह' शीर्षक से पं. इन्द्रराज ने सम्पादित कर प्रकाशित किया। 'स्वराज्य विजय' महाकाव्य तथा 'द्वैताद्वैतविमर्श' उनकी अप्रकाशित कृतियाँ हैं।

डा. धनपति पाण्डेय

डॉ. पाण्डेय का जन्म एक फरवरी १९३८ को हुआ। इन्होंने इतिहास में १९६१ में एम. ए. किया। तत्पश्चात् आपने 'भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में आर्यसमाज की भूमिका' विषय लेकर १९७० में पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। डॉ. पाण्डेय भागलपुर विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर हैं। विभिन्न शोध पत्रिकाओं में आपके आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द विषयक अनेक शोध निबन्ध छप चुके हैं।

ले. का.—The Arya Samaj and the Indian Nationalism (1875-1920), (१९७१)। स्वामी दयानन्द का अंग्रेजी जीवनचरित—भारत के प्रकाशन विभाग द्वारा १९८५ में प्रकाशित।

व. प.—भिखनपुर, भट्टा रोड, भागलपुर (विहार) -८१२००७.

धनवन्त ओझा

गुजराती भाषा के लेखक तथा गम्भीर चिन्तक श्री ओझा ने स्वामी दयानन्द की एक विचारोत्तेजक गुजराती जीवनी १९६२ में लिखी जो रवाणी प्रकाशन गृह अहमदाबाद से छपी।

धनेश्वर बेहरा

श्री बेहरा उड़ीसा प्रान्त के निवासी हैं। इनकी शिक्षा एम. ए. तक हुई है और ये गुरुकुल वैदिक आश्रम वेदव्यास के प्रचार-संयोजक हैं।

ले. का.—Bhagvan Veda, The Aryasamaj and our Duty., The Only Way of Life. A Vedic look at Life.

धर्मदत्त विद्यालंकार

आपका जन्म २० दिसम्बर १८९४ को मुलतान जिले के बेहल नामक ग्राम में महाशय खुशावीराम के यहां हुआ। आपने गुरुकुल कांगड़ी से स्नातक बन कर १९७३ वि. में विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की। कालान्तर में इसी गुरुकुल के अन्तर्गत आयुर्वेद महाविद्यालय में चिकित्सक, उपाध्याय तथा प्रधानाचार्य पद पर रहे। आपकी कृति 'संध्या-गीत' तथा 'संध्या-स्वाध्याय' गुरुकुल कांगड़ी से ही छपी हैं।

पं. धर्मदेव निरुक्ताचार्य

निरुक्ताचार्य पं. धर्मदेव महापण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के शिष्य हैं। इन्होंने कई वर्षों तक वैदिक यंत्रालय अजमेर में ग्रन्थ संशोधन का कार्य किया। आपने दयानन्द जन्म स्थान टंकारा तथा विरजानन्द संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर में भी शोध एवं अध्यापन कार्य किया। आपकी एक कृति 'त्वाष्ट्री सरण्यू के आख्यान का वास्तविक रूप' रामलाल कपूर ट्रस्ट से २००३ वि. में प्रकाशित हुई है।

पं. धर्मदेव मनीषी

मनीषीजी का जन्म महाराष्ट्र के उद्गीर नगर में श्री शंकरराव पंढरीनाथ के यहां १९४९ में हुआ। आपकी शिक्षा गुरुकुल झज्जर में हुई, जहां से आपने व्याकरणाचार्य (१९६५), राजशास्त्राचार्य (१९७०) तथा वेदाचार्य (१९७१) की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। १९६७ से १९७१ तक आपने गुरुकुल झज्जर में अध्यापन किया। १९७१ से अद्यपर्यन्त गुरुकुल कालवा में सहायक आचार्य के पद पर कार्यरत हैं।

ले. का.—आपका अधिकांश लेखन आर्य पत्रों के विशेषांकों के रूप में प्रकाशित हुआ है।

सुधारक में प्रकाशित—षड्दर्शनसार (१९८२), वेद शिक्षा (१९८४), महर्षि दयानन्द संदेश (१९८५)।

राजधर्म में प्रकाशित—प्राचीन राजनीतिक दर्शन (१९८३)।

वेद प्रकाश में प्रकाशित—वेद में ईशोपनिषद्, वैदिक संध्या पद्धति, वेद ज्योति (१९८६), षड्दर्शन परिचय (१९८७), नीतिशास्त्र के प्रसंग, वेद माता, वेद और ऋषि दयानन्द (१९८८), वेद की शिक्षायें (१९८९), कौटिलीय राजनीति तत्त्व (१९९०), वैदिक स्वराज्य दर्शन, वैदिक गर्जना (१९८५), संक्षिप्त परिचय गुरुकुल कालवा।

व. प.—आर्य महाविद्यालय गुरुकुल कालवा (जींद-हरयाणा)।

डा. धर्मदेव शर्मा

इनका जन्म १३ अक्टूबर १९५३ को पं. मूलशंकर तथा श्रीमती चन्द्रवती के यहां गदपुरी जिला फरीदाबाद में हुआ। इनकी शिक्षा विद्याभास्कर तथा संस्कृत में एम. ए. की हुई। आपने दयानन्द शोधपीठ पंजाव विश्वविद्यालय से 'गृह्यसूत्रों के संदर्भ में महर्षि दयानन्द रचित

संस्कारविधि का अध्ययन' विषय लेकर पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की ।

व. प.—शास्त्री निवास, गुरुकुल गदपुरी (फरीदाबाद) ।

पं. धर्मदेव सिद्धान्तालंकार, वेदवाचस्पति

आपका जन्म ३० नवम्बर १९०५ को पाकिस्तान के मुजफ्फरगढ़ जिले के वस्ती गुजरात नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम श्री लोकूराम था। इन्होंने १९८२ वि. में गुरुकुल कांगड़ी से स्नातक बन कर 'सिद्धान्तालंकार' की उपाधि प्राप्त की। तदनन्तर गुरुकुल से ही 'वेदवाचस्पति' तथा आगरा विश्वविद्यालय से एम. ए. की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। आपने आरम्भ में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा पं. चमूपति के सम्पादन में तैयार किये जाने वाले वेदार्षकोष में सहायक का कार्य किया। आप गुरुकुल कांगड़ी के विद्यालय विभाग में संस्कृताध्यापक, सहायक मुख्याध्यापक, पुन: विश्वविद्यालय विभाग में वेदोपाध्याय एवं पुस्तकालयाध्यक्ष आदि पदों पर भी रहे। यहाँ से आपने १९६७ में अवकाश लिया। तत्पश्चात् १९६७ से १९७६ तक आर्य गर्ल्स कालेज अम्बाला छावनी में अध्यापन कार्य किया।

ले. का.—सरल धातु रूपावली और सरल शब्द रूपावली (१९६०).

डा. धर्मपाल

डा. धर्मपाल का जन्म १९ मार्च १९४२ को मेरठ जिले के बड़ौत कस्बे में श्री ओम्प्रकाश के यहां हुआ। इन्होंने अंग्रेजी तथा हिन्दी में एम. ए. तथा हिन्दी में पी-एच. डी. उपाधि प्राप्त की। सम्प्रति ये जाकिरहुसैन कालेज दिल्ली में हिन्दी के वरिष्ठ प्राध्यापक हैं। डा. धर्मपाल आरम्भ से ही आर्यसमाज की गतिविधियों से जुड़े रहे। वे आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली, दिल्ली प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा के विभिन्न पदों पर रहे हैं। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की विद्यापरिषद् तथा शिष्ट परिषद् के भी वे सदस्य हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में वे प्राय: लिखते रहते हैं। उनकी सम्पादित पुस्तक 'आर्यसमाज : आज के संदर्भ में' वैदिक प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुई है।

व. प.—ए-एच. १६, शालीमार बाग-दिल्ली-५२ ।

धर्मपाल आर्य

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली के संस्थापक तथा आर्यसमाज के प्रति अनन्य निष्ठा रखने वाले स्व. दीपचन्दजी आर्य के पुत्र श्री धर्मपाल आर्य का जन्म ६ अप्रैल १९५३ को हुआ। आपका विशिष्ट अध्ययन गुरुकुल सिंहपुरा तथा गुरुकुल झज्जर में हुआ। आपने व्याकरणाचार्य की उपाधि प्राप्त की। आपने ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य तथा अन्य ग्रन्थों, उनके जीवन चरितों तथा पूना प्रवचनादि में प्रदत्त शास्त्रीय प्रमाणों का पता सहित संग्रह किया है। 'प्रमाण सूची' नामक इस विशिष्ट संदर्भ ग्रन्थ का प्रकाशन आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली ने २०३१ वि. (१९७४) में किया है। आप ट्रस्ट के मंत्री भी हैं।

व. प.—४५५, खारी बावली, दिल्ली-११०००६.

महाशय धर्मपाल (मौलवी अब्दुलगफूर)

१९०३ में पंजाब के गुजरांवाला नगर में एक मुसलमान की शुद्धि की गई जो मौलवी अब्दुलगफूर बी. ए. के नाम से जाना जाता था और आर्यसमाज में दीक्षित होने से पूर्व इस्लामिया हाई स्कूल का हैडमास्टर भी था। इस व्यक्ति का विगत विवरण अधिक विश्वसनीय नहीं था, क्योंकि आर्यसमाजी बनने से पहले वह ईसाई, ब्रह्मसमाजी तथा देवसमाज का सदस्य भी रह चुका था। परन्तु चूंकि वह शिक्षित तथा युवक था इसलिये आर्यसमाज ने बड़े उत्साह के साथ उसका स्वागत किया और उसे "धर्मपाल" का नवीन नाम प्रदान किया।

कालान्तर में महाशय धर्मपाल ने आर्यसमाज की ही जड़ उखाड़नी शुरू की। उसने मासिक 'इन्दर' तथा साप्ताहिक 'पतन्दर' नामक पत्र निकाले जिनमें वह आर्यसमाज की निंदा करने लगा। थोड़े समय पश्चात् धर्मपाल

पुनः मियां अब्दुलगफूर बन कर वहां चले गये जहां से आये थे, किन्तु आर्यसमाज में रहते समय उन्होंने इस्लाम की आलोचना में कुछ ग्रन्थ लिखे ।

ले. का.—१. तर्क इस्लाम (१९०३), यह ग्रन्थ महाशय धर्मपाल के उस भाषण का पुस्तक संस्करण था जो उन्होंने १४ जून १९०३ को आर्यसमाज गुजरांवाला में वैदिक धर्म ग्रहण करते समय दिया था । इसकी लोकप्रियता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसे विभिन्न प्रकाशकों ने एकाधिक बार प्रकाशित किया था), २. यवनमत परीक्षा—(तहज़ीबुल इस्लाम), ३. यवन मतादर्श (तहजीबुल इस्लाम) कर्ण कवि द्वारा अनूदित (१९०४)., ४. विषलता भाग-१ इस्लाम का फोटो या 'नक्ले इस्लाम' का हिन्दी अनुवाद । सत्यार्थप्रकाश के प्रथम संस्करण (१८७५ में प्रकाशित) का उर्दू अनुवाद भी महाशय धर्मपाल ने किया था जो लाहौर से प्रकाशित हुआ ।

पं. धर्मभिक्षु लखनवी

शास्त्रार्थ कला में निष्णात तथा इस्लाम के मर्मज्ञ पं. धर्मभिक्षु का जन्म भाद्रपद कृष्णा ६ सं. १९५८ वि. (१८९८) को लखनऊ के एक श्रीवास्तव कायस्थ परिवार में हुआ । इनके पिता का नाम श्री दीनदयाल तथा माता का नाम श्रीमती जगत्प्यारी था । इनका बचपन का नाम ईश्वरीदयाल था । आर्यसमाज से इनका सम्पर्क श्री बनारसीदास के माध्यम से हुआ जो रिश्ते में पं. धर्मभिक्षु के चाचा थे । बाद में वे संन्यास लेकर स्वामी निर्भयानन्द बन गये । पं. धर्मभिक्षु ने स्वामी दयानन्द कृत ग्रन्थों को तो पढ़ा ही, संस्कृतज्ञ पण्डित से संस्कृत सीखी तथा एक आलिम फाजिल मौलवी से अरबी और फारसी का अध्ययन किया । किशोरावस्था में ही ये आर्यसमाज में जाकर व्याख्यान देते थे तथा अन्य धर्मावलम्बियों से शास्त्रार्थ करते । जब ये विधिवत् धर्मप्रचार में लगे तो इन्होंने अपना नाम धर्मभिक्षु रख लिया ।

पर्याप्त काल तक स्वतन्त्र रूप से प्रचार करने के पश्चात् पं. धर्मभिक्षु आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में उपदेशक नियुक्त हुए । इस काल में उन्होंने देश में सर्वत्र भ्रमण किया । दिल्ली में इन्होंने श्रीमद्दयानन्द प्रेस की स्थापना की और पं. लेखराम की स्मृति में 'आर्य मुसाफिर' नामक एक पत्र का प्रकाशन करने लगे । २५ फरवरी १९२६ में इनका विवाह इलाहाबाद के निकट मोहम्मदपुर ग्राम की एक कायस्थ कन्या सुभद्रादेवी से हुआ । इनके यहां एक पुत्री का जन्म हुआ जिसका नाम लक्ष्मी था । १९०० के सत्याग्रह आन्दोलन में पं. धर्मभिक्षु ने सक्रिय रूप से भाग लिया था । २० जून १९३० को विषूचिका रोग से पं. धर्मभिक्षु का निधन हो गया ।

ले. का.—१. असली कुरान जो लाहौर में नाजिल हुई (इसमें पं. धर्मभिक्षु रचित ४८ आयतें हैं, १९२४), २. कलामुर्रहमान वेद है या कुरान ? (४०० पृष्ठों की इस पुस्तक में वेद को ईश्वरीय ज्ञान तथा कुरान का मनुष्यकृत होना सिद्ध किया है (१९२९) । ३. चश्मए कुरान, ४. मिर्जा कायिदानी को हमल, ५. आस्मानी दुलहिन, ६. अजाला ओहाम याने तहकीकाते इस्लाम ।

आपने 'धर्मवीर लेखराम' तथा 'मूलशंकर दिग्विजय' शीर्षक दो नाटक भी लिखे जो अप्रकाशित हैं ।

वि. अ.—पं. धर्मभिक्षु लखनवी का जीवनचरित—ले. सुभद्रादेवी, १९८१ ।

धर्ममित्र

श्री धर्ममित्र गवर्नमेंट हाई स्कूल करनाल में अध्यापक थे । बाद में वे ग्राम मनीमाजरा (चण्डीगढ़) में रहने लगे । स्वामी दयानन्द की जन्म शताब्दी के अवसर पर इन्होंने 'दयानन्द दिग्विजय' शीर्षक एक ग्रन्थ की रचना की । यह उर्दू तथा हिन्दी दोनों भाषाओं में छपा । प्रथम संस्करण १९८१ वि. में आर्य उप प्रतिनिधि सभा पानीपत मण्डल (करनाल) ने प्रकाशित किया । इस कृति में महर्षि दयानन्द विषयक अनेक रोचक प्रसंगों का उल्लेख हुआ है ।

डा. धर्मवीर

इनका जन्म २० अगस्त १९४६ को महाराष्ट्र के उद्गीर नगर में श्री भीमसेन के यहां हुआ । इनकी शिक्षा

गुरुकुल झज्जर तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में हुई। यहां से इन्होंने एम.ए. तथा आयुर्वेदाचार्य की उपाधियां प्राप्त कीं। १९७४ से ये दयानन्द कॉलेज, अजमेर में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं। इन्होंने १९९० में पंजाब विश्वविद्यालय की दयानन्द शोध पीठ से 'स्वामी दयानन्द के जीवनपरक संस्कृत काव्यों का अध्ययन' विषय पर पी-एच.डी की उपाधि ग्रहण की है। परोपकारिणी सभा के पुस्तकाध्यक्ष डॉ. धर्मवीर 'परोपकारी' के सम्पादक भी हैं।

ले. का.—सत्यार्थप्रकाश में क्या है ? सम्पादित ग्रन्थ—आर्यसमाज और शोध (१९८५), महर्षि दयानन्द सरस्वती के पत्र (१९८७), ऋषि दयानन्द की वेदभाष्य-शैली (१९८९), वेद और कर्मकाण्डीय विनियोग (१९९०).

व. प.—२४/२६९, चांदबावड़ी मार्ग, केसरगंज अजमेर-३०५००१.

पं. धर्मवीरकुमार शास्त्री

शास्त्रीजी का जन्म २७ जुलाई १९२६ को विजनौर (उत्तरप्रदेश) जिले के एक ग्राम में हुआ। आपका अध्ययन गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में हुआ। तत्पश्चात् आपने शिक्षक के रूप में कार्य किया। वर्तमान में आप डी. ए. वी. प्रबन्धक समिति के अन्तर्गत नैतिक शिक्षा संस्थान में अध्ययन कर रहे हैं। शास्त्रीजी ने हिन्दी तथा संस्कृत में उत्कृष्ट काव्य का सृजन किया है।

ले. का.—जय बांग्ला (१९७१) तथा पथ की खोज त्रेता के प्रवासी, ऊर्जा के स्वर (काव्य) शतपर्णा (१०० कविताओं का संग्रह जिसकी प्रारम्भ की २६ कवितायें महर्षि दयानन्द के जीवन को लेकर रची गई हैं) प्रकाश्यमान—महर्षि माल्यार्पणम् (श्लोकवद्ध ग्रन्थ)।

व. प.—वी. १/५१, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-६३.

पं. धर्मवीर वेदालंकार

आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् पं. धर्मदेव विद्यावाचस्पति के अनुज पं. धर्मवीर वेदालंकार का जन्म ८ अप्रैल १९०५ को मुलतान जिले के दुनियापुर नामक ग्राम में श्री नन्दलाल के यहां हुआ था। आपने १९८२ वि. (१९२६) में गुरुकुल कांगड़ी से वेदालंकार की उपाधि ग्रहण की। तत्पश्चात् आपने अखिल भारतीय श्रद्धानन्द ट्रस्ट के मंत्री पद पर कार्य किया। ये गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के आचार्य एवं मुख्याधिष्ठाता पद पर भी रहे। अपने जीवन के अन्तिम वर्ष आपने अरविन्द आश्रम पाण्डिचेरी में व्यतीत किये। आपने श्री अरविन्द के वेदरहस्य (उत्तरार्द्ध) का हिन्दी अनुवाद किया तथा उनके अंग्रेजी साहित्य को हिन्दी में प्रस्तुत किया। आपने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में सक्रिय रूप से भाग लिया था। १९३० तथा १९४२ में आपने नमक सत्याग्रह तथा भारत छोड़ो आन्दोलनों में भाग लेकर कारावास दण्ड भी स्वीकार किया। आपने दिल्ली, पंजाब, बिहार, बम्बई, मद्रास, गुजरात आदि विभिन्न प्रान्तों में रहकर आर्यसमाज के कार्यों में सक्रिय भाग लिया। इनका निधन २६ जनवरी १९८३ को हुआ।

ले. का.—श्रद्धानन्द दर्शन, वेद अपौरुषेय हैं, वेद में गोपालन, वैदिक विवाह संस्कार, आर्यसमाज और विश्व-शान्ति।

(पं. धर्मदेव सिद्धान्तालंकार, विद्यावाचस्पति, विद्यामार्तण्ड) स्वामी धर्मानन्द सरस्वती

वेदों के अप्रतिम विद्वान्, लेखक, चिन्तक तथा विचारक पं. धर्मदेव विद्यावाचस्पति का जन्म १२ फरवरी १९०१ को मुलतान (पाकिस्तान) जिले के दुनियापुर ग्राम में हुआ था। उनके पिता का नाम श्री नंदलाल था। गुरुकुल कांगड़ी के प्रारम्भिक स्नातकों में पंडित धर्मदेव का नाम उल्लेखनीय है। इनकी शिक्षा का आरम्भ गुरुकुल मुलतान में हुआ जहां आपने १९०९ से १९१६ तक प्रारम्भिक शिक्षा ग्रहण की। तदुपरान्त १९१७ से १९२१ तक गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी में स्वामी श्रद्धानन्द तथा प्रो. रामदेव के चरणों में बैठकर आपने विद्याध्ययन किया। २३ मार्च १९२१ को आपने 'सिद्धान्तालंकार' की उपाधि ग्रहण की तथा कुछ काल पश्चात् 'भारतीय समाजशास्त्र' विषय पर शोध प्रबन्ध लिखकर विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त की। गुरुकुल

विश्वविद्यालय कांगड़ी ने इनके विशिष्ट वैदिक अध्ययन, पाण्डित्य तथा लेखन प्रतिभा से प्रभावित होकर 'विद्या-मार्तण्ड' की मानद उपाधि से विभूषित किया।

प्रारम्भ में पं. धर्मदेव गुरुकुल मुलतान के आचार्य पद पर रहे। तत्पश्चात् आप स्वामी श्रद्धानन्द के आदेशानुसार दक्षिण भारत में वैदिक धर्म प्रचारक के रूप में १९२१ से १९४१ तक रहे। इस बीच आपने कन्नड़, तेलुगु, तमिल तथा मलयालम भाषाओं का अध्ययन किया तथा कन्नड़ में अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया। १९४२ से १९५३ तक आपने सार्वदेशिक सभा के सहायक मन्त्री के रूप में कार्य करते हुए सभा के मासिक मुखपत्र 'सार्वदेशिक' का सम्पादन किया। १९५४ से १९६३ तक पं. धर्मदेव ने श्री श्रद्धानन्द प्रतिष्ठान (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के अन्तर्गत) वेदाध्यापन किया और 'संस्कृत-हिन्दी-अंग्रेजी कोश' के निर्माण का कार्य किया। इसी समय आपने 'गुरुकुल पत्रिका' का भी सम्पादन किया। २८ फरवरी १९७६ को म. आनन्द स्वामी से संन्यास ग्रहण कर वे स्वामी धर्मानन्द सरस्वती बने। ८ नवम्बर १९७८ को आपका निधन हो गया।

पं. धर्मदेव का लेखन विविध विषयों तथा विविध भाषाओं से सम्बन्धित है। उन्होंने संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी तथा कन्नड़ में लेखन कार्य किया है। वेदों पर भाष्य रचना, वेद विवेचन, संस्कृत में काव्य प्रणयन तथा विभिन्न शास्त्रीय एवं सैद्धान्तिक विषयों पर आपने विपुल साहित्य का निर्माण किया है।

ले. का.—अंग्रेजी में वेद भाष्य—

1. Hymns of the SamVeda (English Translation or SamVeda with notes and comments (1967),2.Some Psalms of the SamVeda Samhita सामवेद के कतिपय सूक्तों का अंग्रेजी अनुवाद (१९६६), 3. The RigVeda : An English Translation of the Commentary of Swami Dayanand Sarasvati. Vol. 1 2, 3. & 4.

वेद विषयक अन्य विवेचनात्मक ग्रन्थ—

१. वैदिक कर्त्तव्य शास्त्र—वेद मन्त्रों के आधार पर आचारशास्त्र निरूपक ग्रन्थ (१९२८), २. स्त्रियों का वेदाध्ययन और वैदिक कर्मकाण्ड में अधिकार (२००४ वि. १९४८), ३. वेदों का महत्त्व (१९६२), ४. वेदों का यथार्थ स्वरूप—भारतीय विद्या भवन बम्बई द्वारा प्रकाशित 'दि वैदिकएज' की आलोचना (२०१४ वि.), ६. वेद मूलक आर्य राजनीति, ६. वेदभाष्यों का तुलनात्मक अनुशीलन : भूमिका, ७. एक मन्त्र के अनेक अर्थ, ८. सामसंगीत सुधा ९. वेदों का सर्वभौम सन्देश : भाषण (१९५४).

स्वामी दयानन्द विषयक ग्रन्थ—

१. महर्षि दयानन्द और महात्मा गांधी (१९५१), २. ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों पर तुलनात्मक विचार (१९८१ वि.), ३. उदारतम आचार्य महर्षि दयानन्द, ४. महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य की विशेषतायें (२०१२ वि.), ५. महर्षि दयानन्द और अन्य वेदभाष्यकार, ६. महर्षि दयानन्द के आदर्श का आर्यसमाज (१९७६), 7. Maharishi Dayanand and Satyarthprakash. (1945), 8. The Mission and Message of Maharishi Dayanand.

स्फुट ग्रन्थ—

१. भारतीय समाजशास्त्र (१९३२), २. हमारी राष्ट्रभाषा (१९४६), ३. हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि (१९४८), ४. वैदिकधर्म आर्यसमाज प्रश्नोत्तरी (१९३९), ५. आर्य धर्म निवन्ध माला, ६. गोरक्षा परम कर्त्तव्य और गोहत्या महापाप, ७. बौद्ध मत और वैदिक धर्म, ८. ब्रह्मपारायण यज्ञ की शास्त्रीयता (१९५२), ९. भक्ति कुसुमांजलि भाग-१, १०. भक्ति कुसुमांजलि भाग-२, ११. धर्मशिक्षा (९वीं तथा १०वीं श्रेणी के लिए), १२. वैदिक ईश्वरवाद और वर्तमान विज्ञान, १३. श्रद्धा-माता, १४. अमर धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द।

संस्कृत ग्रन्थ—

१. महापुरुष कीर्तनम् (२०१६ वि.), २. महिलामणि कीर्तनम् (२०२० वि.—१९६३).

अंग्रेजी ग्रन्थ—

1. A Catechism of Vedic Dharma and Aryasamaj (1915), 2. The Glory of the Vedas 3. Christianity and the Vedic Dharma, 4. What is Arya Samaj ?, 5. Concept of God in Christianity and Vedic Dharma, 6. The Sublimity of the Vedas 7. The Significance of the Vedic Sanskaras, 8. The Mission and Message of the Martyr., 9. Papers on the Vedic Teachings on World peace and Synthesis of Religion and Science., 10. Child Marriage Bill (published by Civil and Social Programme Association Bangalore.), 11. Vedic Sanskrit : Mother of All Languages, 12. Mahatma Buddha : An Arya Reformer.

कन्नड़ भाषा ग्रन्थ-आर्यसमाज मंगलोर द्वारा प्रकाशित—

१. जाति भेदविचार, २. वैदिक ईश्वर कल्पने, ३. ऋषि दयानन्द सरस्वतीवरू श्री मन्माधवाचार्यरू हतर सिद्धान्तगल तुलनात्मक विचार, ४. पशुबलि निषेध, ५. अस्पृश्यता निवारण, ६. आर्यसमाज वेन्दरेनू ?, ७. वैदिक संध्याग्निहोत्र (आर्यसमाज बैंगलोर द्वारा प्रकाशित) ।

डॉ. धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री

इनके पिता का नाम डॉ. केदारनाथ था जो स्वयं आर्यसमाज के अच्छे कार्यकर्ता थे। इनका अध्ययन गुरुकुल वृन्दावन में हुआ जहां से १९१८ में इन्होंने स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की। आपने कुछ वर्षों तक गुरुकुल वृन्दावन में अध्यापन कार्य किया। तत्पश्चात् १९२४ से १९५६ तक मेरठ कॉलेज, मेरठ में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष रहे।

ले. का.—टी. एल. वासवानी की पुस्तक The Torch Bearer का हिन्दी अनुवाद 'पथ प्रदीप' (१९२५), सदाचार संध्या और दिव्य दर्शन (योग विषयक ग्रन्थ) (१९८३ वि.).

धर्मेन्द्रवीर शिवहरे

आर्य साहित्य मण्डल अजमेर के संस्थापक श्री मथुराप्रसाद शिवहरे के पुत्र श्री धर्मेन्द्रवीर शिवहरे का जन्म २३ अक्टूबर १९११ को उत्तरप्रदेश के फतहपुर नामक नगर में हुआ। शिक्षा समाप्त होने पर आपने १९३० तथा १९४२ के राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लिया। आपने राजस्थान के मुद्रण तथा लेखन सामग्री विभाग में उपनिदेशक तथा निदेशक के पदों पर भी कार्य किया। ९ अप्रैल १९६३ को आपका निधन हो गया। जोधपुर में अपने सेवाकाल में श्री शिवहरे ने पारिवारिक सत्संगों का क्रम चलाया और इसी कार्य हेतु 'सत्संग यज्ञ विधि' की रचना की जो आर्य साहित्य मण्डल अजमेर से १९५३ में छपी।

डॉ. बी. डी. धवन

श्री धवन का जन्म ९ फरवरी १९२५ को अमृतसर जिले के सराय अमानतखाँ नामक ग्राम में श्री ज्ञानचन्द के यहां हुआ। इन्होंने १९४९ में गवर्नमेंट कॉलेज होशियारपुर से एम. ए. (अर्थशास्त्र) की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् पंजाब सरकार की प्रशासनिक सेवा में रहते हुए १९७५ में पंजाब विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। दयानन्द अनुसंधान पीठ पंजाब विश्वविद्यालय से इन्होंने १९८१ में Mysticism and Symbolism in Aitareya and Taittiriya Aranyakas विषय पर पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। डॉ. धवन का यह विद्वतापूर्ण शोधप्रबन्ध १९८७ में दिल्ली से प्रकाशित हो चुका है। इनके अन्य अनेक शोधपूर्ण निवन्ध विश्वज्योति, वैदिक पाथ, वेदोद्धारिणी तथा विश्ववेश्वरानन्द इण्डोलोजिकल जर्नल आदि पत्रों में छप चुके हैं।

व. प.—३५९, सैक्टर १५ ए. चंडीगढ़ १६००१५।

स्वामी धीरानन्द संन्यासी (कृष्ण आर्योपदेशक)

स्वामी धीरानन्द का वास्तविक नाम कृष्ण था। इनका जन्म १९२४ वि. (१८६७) में अमृतसर जिले के महिलांवाला ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम लाला दयालराम तथा माता का श्रीमती नारायणी देवी

था । इन्होंने स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी से संन्यास ग्रहण किया । अब इनका नाम स्वामी धीरानन्द हुआ । स्वामीजी ने देहातों के अनेक स्थानों पर आर्यसमाजों की स्थापना की तथा ग्रामों में सर्वत्र घूम-घूमकर वैदिक धर्म का प्रचार किया । इनकी पुत्री श्रीमती विद्यावती ने भी धर्म प्रचार में अपने पिता को पूर्ण सहयोग दिया । ६ जून १९४१ को लाहौर में इनका निधन हुआ ।

ले. का.—श्री स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी का जीवन चरित्र भाषा कविता में—प्रथम भाग (१९२४) तथा द्वितीय भाग (१९२५), ऋषि दयानन्द पर नालिश और धर्मराज के दरबार में ऋषि की विजय (१९२५), भगवद्गीता सार (कविता में अनुवाद, १९३६), संध्या (कविता में), उत्तम भक्ति रस गुटका, संख्या ज्ञान प्रकाश (१९३६), कर्म मीमांसा, (१९९१ वि.) पितृभक्ति अर्थात् सच्चा श्राद्ध, महान् आत्माओं के प्रसंग-दो भाग (१९९१ वि.), गृहस्थ सुधार (१९९१ वि.), विधवा विवाह पद्धति (कृष्ण आर्योपदेशक, १९८२ वि.) ।

स्वामी ध्रुवानन्द (धुरेन्द्र शास्त्री, राजगुरु)

शास्त्रीजी का जन्म मथुरा जिले के पानी नामक ग्राम में हुआ । इनकी शिक्षा प्रमुख रूप से स्वामी सर्वदानन्द द्वारा स्थापित साधु आश्रम हरदुआगंज (अलीगढ़) में हुई । शाहपुरा नरेश श्री उम्मेदसिंह ने १९३९ में उन्हें राजगुरु की उपाधि प्रदान की । आप आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त तथा सार्वदेशिक सभा के वर्षों तक प्रधान रहे । शास्त्रीजी ने हैदराबाद में आर्य सत्यग्रह का नेतृत्व भी किया । संन्यास ग्रहण करने पर आप स्वामी ध्रुवानन्द के नाम से जाने गये । २९ जून १९६५ को आपका निधन हो गया । आपने विवाह-संस्कार के अन्तर्गत 'वरवधू के बोलने योग्य मंत्र' शीर्षक पुस्तक का सम्पादन किया जो शाहपुरा से १९३८ में प्रकाशित हुई ।

श्री नगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय

बंगला भाषा में स्वामी दयानन्द की प्रथम जीवनी के लेखक नगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय ब्रह्मसमाज के आचार्य तथा उपदेशक थे । ऋषि के प्रति उनके हृदय में अत्यन्त श्रद्धाभाव था । उन्होंने स्वामीजी के दर्शन कलकत्ता, बम्बई और लाहौर में किये थे । इनके द्वारा लिखा 'महात्मा दयानन्द का संक्षिप्त जीवनचरित' १८८६ में कलकत्ता से छपा । इसकी एक दुर्लभ प्रति नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता में है । वहीं से इस पुस्तक की फोटोस्टेट प्रति प्राप्त कर तथा कु. निरोत्तमा शर्मा से उसे अनूदित करवाकर इन पंक्तियों के लेखक ने उसे वेदवाणी के दयानन्द अंक १९८८ में प्रकाशित कराया ।

नटवरलाल दवे

गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा बड़ौदा के प्रबन्धक ट्रस्टी श्री दवे ने स्वामी दयानन्द की आत्मकथा (पूना प्रवचन ४ अगस्त १८७५) का गुजराती अनुवाद 'महर्षि दयानन्द सरस्वती स्वयं कथित जीवनचरित्र' शीर्षक से किया है । १९८२ में इसे गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा बड़ौदा ने प्रकाशित किया । सत्यार्थप्रकाश का एक संक्षिप्त गुजराती अनुवाद भी आपने तैयार किया जो इसी सभा से छपा ।

मास्टर नत्थनलाल आर्य

मास्टरजी जगाधरी (जिला अम्बाला) के निवासी थे तथा शिमला के किसी विद्यालय में अध्यापक रहे । इन्होंने संध्या तथा अग्निहोत्र की व्याख्या में दो उत्तम ग्रन्थ लिखे हैं ।

ले. का.—हवन यज्ञ प्रदीपिका—(१९२७), संध्या प्रदीपिका (१९९३ वि.) ।

श्री नन्दकिशोर

आप दिल्ली में आर्य कुमार सभा की गतिविधियों के प्राण थे । आपने 'देहली शास्त्रार्थ-जैन विद्वानों से' का सम्पादन कर १९१७ में दिल्ली से प्रकाशित किया ।

नन्दकिशोर ब्रह्मचारी

ब्रह्मचारीजी का जन्म श्री शिवदयालुजी के यहां १९५६ में हुआ । इनकी शिक्षा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर तथा गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी में हुई ।

इन्होंने विद्याभास्कर, व्याकरणाचार्य, एम. ए. वैदिक साहित्य (१९८०) तथा एम. ए. हिन्दी (१९८२) की परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं। ब्रह्मचारीजी महाविद्यालय ज्वालापुर के दिवंगत आचार्य नारायण मुनि को अपना गुरु मानते हैं। उन्होंने डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार द्वारा सम्पादित सप्त खण्डात्मक आर्यसमाज के इतिहास विषयक आधारभूत सामग्री को एकत्रित करने का अभूतपूर्व प्रयास किया और नाना स्थानों पर जाकर दुर्लभ पुस्तकों, संस्थाओं के विवरणों तथा अन्य दस्तावेजों को इतिहास लेखक के लिये सुलभ कराया। उनके प्रयास से नेपाली भाषा में आर्योद्देश्यरत्नमाला, वैदिक धर्म-आर्यसमाज प्रश्नोत्तरी, स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश तथा नित्यकर्मविधि जैसे ग्रन्थ अनूदित होकर छपे। स्व. पं. विश्वबन्धु शास्त्री तथा नारायण मुनि चतुर्वेद के ग्रन्थों को प्रकाशित करने का श्रेय भी उन्हें ही है। पानीपत के श्री आदित्यप्रकाश आर्य को प्रेरणा देकर आपने अन्य भी अनेक उपयोगी ग्रन्थों का प्रकाशन किया है।

ले. का.—अष्टाध्यायी सूत्रपाठः पं. शंकरदेव पाठक के वार्तिक, गणपाठ सहित संस्करण का सम्पादन (१९९०) आनन्द बहार शायरी (संग्रह)।

व. प.—वेद मन्दिर-गीता आश्रम, हरिद्वार रोड, ज्वालापुर (उ. प्र.)।

नन्दकिशोर विद्यालंकार

आप बिजनौर जिले के मण्डावर कस्बे के निवासी थे। इनके पिता का नाम श्री मथुराप्रसाद था। इनकी शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी में हुई जहाँ से आपने १९७४ वि. (१९१८) में विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की। आप अनेक वर्षों तक रामजस कॉलेज दिल्ली में संस्कृत पढ़ाते रहे। पुनः कलकत्ता चले गये और व्यवसाय में लग गये। २३ जून १९६५ को कलकत्ता में इनका निधन हुआ।

ले. का.—पुनर्जन्म (१९२५), २. विवाह का वैदिक आदर्श।

ठाकुर नन्दकिशोरसिंह

जयपुर की राज्य कौन्सिल के सदस्य तथा स्वामी दयानन्द के प्रीतिभाजन ठाकुर नन्दकिशोरसिंह का जन्म भाद्रपद शुक्ला प्रतिपदा १९१३ वि. तदनुसार ३१ अगस्त १८५६ रविवार को कासगंज (एटा) में एक प्रतिष्ठित गौड़ राजपूत परिवार में हुआ। इनके पिता जयपुर राज्य में कार्य करते थे। नन्दकिशोरसिंह की शिक्षा महाराजा कालेज जयपुर में हुई। आपके पुरुषार्थ से ही जयपुर में ३१ मार्च १८८१ (चैत्र शुक्ला २, सं. १९३८ वि.) को आर्यसमाज (वैदिक धर्म सभा) की स्थापना हुई। अनेक उच्च पदों पर रहने के उपरान्त १९०५ ई. में आप जयपुर राज्य कौन्सिल के न्याय मंत्री नियुक्त हुए। १९२२ तक वे कौन्सिल के सदस्य रहे। मार्गशीर्ष कृष्ण ४, १९९१ वि. (२५ नवम्बर १९३४) को इनका निधन हुआ।

अमेरिका से प्रकाशित पुस्तक Self Contradictions of the Bible का हिन्दी अनुवाद करने का आग्रह स्वामीजी ने ठाकुर महाशय से किया था, तदनुसार 'बाइबिल के परस्पर विरोध' शीर्षक अनुवाद डॉ. नन्दकिशोरसिंह ने तैयार किया। इसका प्रथम संस्करण १८९७ में वैदिक धर्म सभा जयपुर द्वारा प्रकाशित किया गया।

पं नन्दकुमारदेव शर्मा

पत्रकार, लेखक तथा साहित्यकार पं. नन्दकुमार देव शर्मा का जन्म कार्तिक शुक्ला त्रयोदशी १९३९ वि. (२३ नवम्बर १८८२) को मथुरा में हुआ। इनके पितामह पं. छोटेलाल स्वामी विरजानन्द के शिष्य थे तथा पिता पं. जगन्नाथ अपने युग के अच्छे विद्वान तथा व्यवसाय से अध्यापक थे। इनका प्रारम्भिक संस्कृत अध्ययन घर पर ही हुआ। तत्पश्चात् आप राजकीय स्कूल में पढ़े। स्वल्प काल में ही इन्होंने संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती तथा मराठी भाषाओं पर अधिकार प्राप्त कर लिया। इतिहास आपका प्रिय विषय था।

शीघ्र ही पं. नन्दकिशोरदेव शर्मा ने पत्रकारिता को व्यवसाय के रूप में चुना। इससे पूर्व वे आर्यमित्र सभा मथुरा द्वारा आर्यसमाज के प्रचार में अपना योगदान कर चुके थे। १९६० वि. में बम्बई से प्रकाशित होने वाले ज्ञानसागर नामक पत्र के सम्पादक पद पर इनकी नियुक्त

हुई। शर्मन् समाचार नामक एक अन्य पत्र के सम्पादन में भी इन्होंने बम्बई रहते हुए अपना योग दिया। १९६३ वि. में लाहौर से प्रकाशित होने वाले स्वदेश बन्धु के सम्पादक बने और १९६४ वि. में आर्य मित्र आगरा के सम्पादक बने। इस काम को वे दो वर्षों तक करते रहे। १९६६ वि. में पटना के 'बिहारबन्धु' का सम्पादन कार्य संभाला। स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा प्रकाशित किये जाने वाले पत्र 'सद्धर्म प्रचारक' में हरिशचन्द्र विद्यालंकार के साथ सहकारी सम्पादक के रूप इन्हें नियुक्त किया गया। १९२१ ई. में लक्ष्मणनारायण गर्दे की अनुपस्थिति में इन्होंने कलकत्ता के प्रसिद्ध पत्र भारतमित्र का सम्पादन कार्य भी किया। नागपुर से प्रकाशित होने वाले मारवाड़ी तथा राजा महेन्द्रप्रताप के पत्र प्रेम का सम्पादन भी किया। ८ नवम्बर १९२६ को इनका निधन हो गया।

ले. का.—जीवन चरित—बालवीर चित्रावली, पंजाब केसरी महाराजा रणजीतसिंह, वीर केसरी शिवाजी, महाराणा प्रताप, लोकमान्य तिलक, महात्मा गोखले, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानन्द, प्रेमपुजारी राजा महेन्द्रप्रताप तथा स्वामी दयानन्द (ओंकार प्रेस, प्रयाग)। इतिहास ग्रन्थ—इटली की स्वाधीनता, सिखों का उत्थान और पतन, पंजाब हरण और दिलीपसिंह।

अन्य ग्रन्थ—युवक शिक्षा, पत्र सम्पादन कला, लाला लाजपतराय के लेख और व्याख्यान।

प्रो. नन्दलाल खन्ना

दर्शनशास्त्र के महान् विद्वान् प्रो. नंदलाल खन्ना का जन्म १८९६ में हुआ। वे गुरुकुल कांगड़ी में दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक थे। १७ फरवरी १९६७ को उनका निधन हुआ।

ले.का.—१. पुनर्जन्म मीमांसा, (१९३७), २. आत्म-मीमांसा (१९९७ वि.)।

पं. नन्दलाल वानप्रस्थी

श्री वानप्रस्थी का जन्म १९०५ में स्यालकोट (पाकिस्तान) जिले के एक ग्राम काडगोवी में हुआ। इनकी शिक्षा मिडिल तक ही हुई। आप शीघ्र ही स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े और कारागार की यातनायें उठाईं। पुनः आर्यसमाज के उपदेशक के रूप में जीवनपर्यन्त कार्यरत रहे। आपने पंजाब के हिन्दी रक्षा आन्दोलन तथा गौरक्षा में भी भाग लिया। तत्पश्चात् धर्म प्रचारार्थ अन्य आन्दोलन देशों की यात्रायें कीं तथा इन यात्राओं के संस्मरण लिखे। १९६५ में वानप्रस्थ की दीक्षा ली और १३ जुलाई १९८० को ७५ वर्ष की आयु में इनका देहान्त हुआ।

ले. का.—भारत के पड़ोसी देश, तथा समुद्र पार देशों में (यात्रा विवरण), गीत सागर (सम्पादन), लाल-गीतांजलि, गीत गंगा।

पं. नरदेव वेदालंकार

दक्षिण अफ्रीका में आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता तथा प्रचारक पं. नरदेव वेदालंकार का जन्म १९ सितम्बर १९१५ को सूरत जिले के तुंडी नामक ग्राम में हुआ। आपके पिता का नाम श्री नरोत्तम शंकर देसाई था। आपका अध्ययन गुरुकुल कांगड़ी में हुआ, जहां से आपने १९९४ वि. (१९३८) में वेदालंकार की उपाधि ग्रहण की। प्रारम्भ में आप राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के तत्त्वावधान में सूरत में हिन्दी प्रचारक का कार्य करते रहे। तत्पश्चात् आप दक्षिण अफ्रीका चले गये। यहां आपने हिन्दी तथा गुजराती भाषाओं के प्राध्यापक का कार्य किया तथा वहां की आर्यसमाज की गतिविधियों के कर्णधार बने। अभी भी उनका कार्यक्षेत्र दक्षिण अफ्रीका ही है तथा वेद निकेतन के माध्यम से वे साहित्य प्रचार कर रहे हैं।

ले. का.—१. राष्ट्रभाषा का सरल व्याकरण-२ भाग, २. धर्म शिक्षा-पाठावली (गुजराती भाषा में,) ३. दक्षिण अफ्रीका में धर्मोदय, (१९५०), ४. उपर्युक्त पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद Religious Awakening in South Africa शीर्षक से श्री सुखराज छोटई ने किया था। ५. Aryasamaj and Indians Abroad (मनोहर सूमरा के सह लेखन में (१९७५), शास्त्र नवनीतम् (वेद, उपनिषद् दर्शन, रामायण, महाभारत के वचनों का अर्थ सहित संग्रह)।

व. प.—३५ क्रास स्ट्रीट डर्बन ४००१ (दक्षिण अफ्रीका)।

डा० नरदेव शास्त्री

संस्कृत व्याकरण के धुरन्धर विद्वान् डा. नरदेव शास्त्री का जन्म २ जनवरी १९४४ को बिहार के मुजफ्फरपुर जिलान्तर्गत सरैया बाजार नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम श्री पंचानन्द शर्मा तथा माता का श्रीमती सरस्वती था।

इनकी शिक्षा सर्वदानन्द साधु आश्रम (अलीगढ़), राधाकृष्ण संस्कृत महाविद्यालय खुर्जा तथा मेरठ एवं दिल्ली के विश्वविद्यालयों में हुई। ये आर्ष गुरुकुल टटेसर (दिल्ली) के आचार्य रहे। सम्प्रति हिमाचलप्रदेश विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग में प्रवक्ता हैं। संस्कृत प्रचारकम् नामक मासिक पत्र का आप सम्पादन भी करते हैं। आपके ग्रन्थ 'पाणिनीय शब्दार्थ सम्बन्ध सिद्धान्त' पर वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय ने आपको 'विद्यावारिधि' की उपाधि से विभूषित किया। यह ग्रन्थ पिपिठिषु प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान दिल्ली से २०४४ वि. (१९८७) में प्रकाशित हुआ है।

व. प.—१०५ अध्यापक निवास, हिमाचलप्रदेश विश्वविद्यालय समरहिल शिमला ५।

पं. नरदेव शास्त्री, वेदतीर्थ

शिक्षा, साहित्य तथा राजनीति में समान रूप से रुचि लेने वाले आर्यसमाजियों में आचार्य नरदेव शास्त्री का नाम अग्रगण्य है। इनका जन्म २१ अक्टूबर १८८० को हैदराबाद राज्य के शेडम नामक ग्राम में हुआ। महाराष्ट्र ब्राह्मण कुलोत्पन्न नरदेवजी के पिता का नाम श्रीनिवासराव तथा माता का कृष्णाबाई था। इनका बचपन का नाम नरसिंहराव था। कालान्तर में आर्यसमाज के सम्पर्क में आने पर उन्होंने अपना नाम 'नरदेव' रख लिया। मित्र मण्डली इन्हें 'रावजी' के नाम से पुकारती थी। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा पुणे में हुई। पश्चात् संस्कृत के विशद अध्ययन के लिये ये लाहौर चले आये। यहां रह कर उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय की शास्त्री परीक्षा १९०३ में उत्तीर्ण की। इसी समय ये आर्यसमाज के सम्पर्क में आये। तत्कालीन आर्य नेताओं से इनका परिचय बढ़ा और ये सामाजिक गतिविधियों में रुचि-पूर्वक भाग लेने लगे।

कालान्तर में इनके मन में वेदों का विस्तृत अध्ययन करने का विचार आया। फलतः ये कलकत्ता चले गये और प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् सत्यव्रत सामश्रमी से ऋग्वेद का अध्ययन करने लगे। १९०६ में इन्होंने ऋग्वेद लेकर कलकत्ता विश्वविद्यालय की 'वेदतीर्थ' परीक्षा उत्तीर्ण की तथा अन्य विद्वानों से व्याकरण, दर्शन एवं साहित्य का भी अध्ययन किया।

शिक्षा समाप्त कर पं. नरदेव शास्त्री गुरुकुल कांगड़ी में निरुक्त के अध्यापक नियुक्त हुए। १९०६-०७ की अवधि में ही वे यहां रहे। इससे अगले वर्ष १९०७-०८ में वे आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्तप्रान्त द्वारा संचालित गुरुकुल फर्रुखाबाद के आचार्य रहे। १९०८ में वे गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में आ गये और १९५७ तक इस महाविद्यालय में मुख्याध्यापक, मुख्याधिष्ठता, मंत्री, उपप्रधान, आचार्य तथा कुलपति आदि पदों पर रहे।

पं. नरदेव की राजनीति में भी पर्याप्त रुचि रही। वे देश के स्वातन्त्र्य आन्दोलनों में बराबर भाग लेते रहे तथा कारावास का दण्ड झेला। देश के स्वाधीन हो जाने के पश्चात् १९५२ से १९५७ तक वे उत्तरप्रदेश की विधान सभा के सदस्य भी रहे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कार्यों में भी उनकी सदा रुचि रही। सम्मेलन के देहरादून अधिवेशन (१९२४) में वे स्वागताध्यक्ष थे। भरतपुर अधिवेशन में आयोजित पत्रकार सम्मेलन की उन्होंने अध्यक्षता की तथा १९३६ में सम्पन्न हुए नागपुर अधिवेशन के अवसर पर दर्शन सम्मेलन का सभापतित्व किया।

वे एक कुशल पत्रकार भी थे। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के मासिक मुखपत्र भारतोदय का सह सम्पादन उन्होंने १९६६ वि. में किया जबकि प्रसिद्ध पत्रकार तथा लेखक पं. पद्मसिंह शर्मा इसके सम्पादक थे। मुरादाबाद से प्रकाशित होने वाले 'शंकर' नामक एक अन्य मासिक

के भी ये सम्पादक रहे। २४ सितम्बर १९६२ को पं. नरदेव शास्त्री का निधन हो गया।

ले. का.—ऋग्वेदालोचन—नरदेव शास्त्री ने ऋग्वेद का विशिष्ट अध्ययन किया था, इसलिये इसी वेद की विवेचना में उन्होंने ऋग्वेदालोचन लिखा। लेखक ने इसे स्वतन्त्र दृष्टिकोण से लिखा है। वे आर्यसमाज की विचारधारा से पूर्णतया बंध कर नहीं लिखते थे। (१९८५ वि.), गीता विमर्श—गीता के सिद्धान्तों का विवेचन और भाष्य (१९८१ वि.) आर्यसमाज का इतिहास-भाग-१ (१९७५ वि. आर्यसमाज का इतिहास भाग-२, (१९७६ वि.), इस पुस्तक में लेखक ने जाने अनजाने कतिपय ऐसे विषयों को प्रविष्ट कर दिया था, जिसके कारण आर्यसमाज में उसे कटु आलोचना का पात्र बनना पड़ा। पत्र पुष्प—१०० निबन्धों का संग्रह (१९९२ वि.), यज्ञे पशुबधो वेदविरुद्धः। संस्कृत में लिखा यह निबंध हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित हुआ। सचित्र शुद्धबोध—(स्वामी शुद्धबोध तीर्थ का जीवन चरित्र (१९३४). गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का ५० वर्षीय सचित्र इतिहास (१९५९), शास्त्रीजी इस पुस्तक के सम्पादक मण्डल के वरिष्ठ सदस्य थे। स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती का संक्षिप्त जीवनचरित (१९५९)। अन्य ग्रन्थ—याज्ञावल्क्य चरित्र, कारावास की राम कहानी (१९२१ की धकापेल). अछूत मीमांसा तथा कालगति (अप्रकाशित)।

वि.अ.—आप बीती-जगबीती (आत्मकथा) १९५७.

नरसिंह चरण पण्डा

श्री पण्डा जन्म २१ जनवरी १९६३ को उड़ीसा प्रान्त के बालेश्वर जिले के अन्तर्गत बेंताल (भद्रक) ग्राम में श्री दीनबन्धु पण्डा के यहां हुआ। बी. ए. तक इनकी शिक्षा भद्रक में हुई जहां से उन्होंने संस्कृत में आनर्स किया। तत्पश्चात् वे कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में आ गये और यहां से १९८५ में संस्कृत में एम. ए. तक १९८६ में एम. फिल. किया। १९८६ में ही इनकी नियुक्ति दयानन्द शोध पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय में शोध-सहायक के पद पर हुई। यहां रहकर उन्होंने १९९० में The Contribution of Maharshi Dayanand and Arya Samaj to Vedang Literature विषय पर शोध कार्य सम्पन्न किया और पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। श्री पण्डा के अब तक अनेक शोध निबन्ध गुरुकुल पत्रिका, विश्वसंस्कृतम्, वेदोद्धारिणी, परोपकारी, आर्यसंसार आदि पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। विभिन्न संगोष्ठियों में भी वे भाग लेते रहे हैं।

व. प.—दयानन्द शोध पीठ पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़-१६००१४.

श्री नरेन्द्र दवे

स्वामी दयानन्द के व्यक्तित्व एवं विचारों का स्वतन्त्र एवं क्रान्तिकारी मूल्यांकन करने वाले श्री नरेन्द्र दवे गुजराती भाषा के विश्रुत साहित्यकार, प्रखर चिन्तक तथा सक्रिय समाजसेवी हैं। इनका जन्म ६ जनवरी १९२९ को राजकोट में हुआ। इनके पिता स्व. छेल भाई 'सौराष्ट्र के सिंह' कहलाते थे। श्री दवे स्वामी दयानन्द, कार्ल मार्क्स तथा लेनिन के विचारों से समान रूप से प्रभावित हुए। वे समाजवादी जीवन दर्शनके परिप्रेक्ष्य में दयानन्द की विचारधारा के अध्ययन के पक्षपाती हैं। गुजराती के कथाकारों और कवियों में तो वे एक जाने माने हस्ताक्षर हैं ही आर्यसमाजी विचारकों में भी वे अपना पृथक् स्थान रखते हैं। आपकी कृतियां स्वामी दयानन्द के समाजवादी मूल्यांकन की दृष्टि से लिखी गई हैं।

ले. का.—मार्क्स अने दयानन्द, क्रान्तिगुरु दयानन्द (१९८३), Dayanand: A Pointer Towards Reassessment. (1983), Dayanand: A Re-assessment. अहमदाबाद के हेराल्ड लास्की इन्स्टीट्यूट आफ पोलिटिकल साइन्स में ७ जनवरी १९८४ को प्रदत्त व्याख्यान का मुद्रण (१९८५)। इनके अतिरिक्त आपने हिन्दी, अंग्रेजी तथा गुजराती में स्वामी दयानन्द के विचारों पर अनेक लेख भी लिखे हैं।

वि. अ.—इन्किलाब नो आतश—अभिनन्दन ग्रन्थ: सं. कन्हैयालाल जोशी (१९८२),

व. प.—बी. २ ओरियंटल एपार्टमेंट्स उस्मानपुरा, अहमदाबाद-३८००१३.

आचार्य नरेन्द्रभूषण

मलयालम भाषा में स्वामी दयानन्द के अनेक ग्रन्थों के अनुवादक तथा साहित्यकार. नरेन्द्रभूषण का जन्म २२ मई १९३७ को केरल प्रान्त के चेंगनूर नामक स्थान में हुआ। इनके पिता का नाम सि. एन. कृष्ण पिल्लई तथा माता का नाम तंकम्वा पुल्लुरंपिल था। इनकी शिक्षा दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में हुई। आपने बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप आर्यसमाज के प्रसिद्ध कार्य-कर्त्ता हैं तथा केरल में आर्यधर्म के प्रचार में विगत अनेक वर्षों से लगे हुए हैं। मलयालम में आप आर्षनादम् पत्र का भी सम्पादन करते हैं।

ले. का.—मलयालम भाषा में उपनिषद् भाष्य—केनोपनिषद, (१९६९), ईशोपनिषद् (१९७०), माण्डूक्योपनिषद् (१९७२), मुण्डकोपनिषद् (१९७२), ऐतरेयोपनिषद् (१९७३), प्रश्नोपनिषद् (१९७६), तैत्तिरीयोपनिषद्(१९८२), स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों के मलयालम अनुवाद— वेद पर्यटनम् (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका १९७३)। केरल साहित्य अकादमी ने आपके द्वारा किये गये ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के मलयालम अनुवाद को पुरस्कृत किया है।

वेदाधिकार निरुपणम् की टीका (परम भट्टार श्री विधाधिराज चट्टम्पी स्वामी लिखित मलयालम ग्रन्थ) सत्यार्थप्रकाशम्—(पंचम समुल्लास पर्यन्त, १९७७), सत्यार्थप्रकाश सम्पूर्ण। वेदगीतामृतम् (आर्याभिविनय, १९७६), आचारभानु (व्यवहारभानु), गोकरुणानिधि तथा आर्य निर्वचन माला (आर्योद्देश्य रत्नमाला)—तीनों ग्रन्थ एक जिल्द में (१९७५), स्वामी दयानन्द की आत्मकथा का मलयालम अनुवाद, विग्रहाराधना—(मूर्तिपूजा निषेध), योगेश्वरनाय श्रीकृष्णन् (महाभारत पर आधारित कृष्ण का जीवनचरित (१९७५), प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु कृत पुस्तक मौलिक भेद का अंग्रेजी अनुवाद Radical Variations शीर्षक से किया।

पं. गंगाप्रसाद जज लिखित Fountain Head of Religion का मलयालम अनुवाद।

व. प.—महर्षि दयानन्द भवन, चेंगनूर (केरल)—६८९१२१.

नवन्दाप्रसाद गुप्त

इन्होंने स्वामी दयानन्द के यजुर्वेदभाष्य का आधार लेकर उर्दू में यजुर्वेद का अनुवाद किया। यह विद्यासागर प्रेस बरोठा (जिला अलीगढ़) से प्रकाशित हुआ था।

चौधरी नवलसिंह

प्रसिद्ध भजनोपदेशक चौधरी नवलसिंह सहारनपुर जिले के ग्राम मुजफ्फराबाद के निवासी थे। उनका जन्म एक सम्पन्न क्षत्रिय परिवार में हुआ। उन्होंने पुलिस तथा सेना में सेवा की। १८७९ में देहरादून में आपको स्वामी दयानन्द के दर्शन करने तथा उनके व्याख्यान सुनने का अवसर मिला। वे आर्यसमाज के सम्पर्क में आये और १८८६ में आर्यसमाज मुजफ्फराबाद के प्रधान भी रहे।

ले. का.—सभा प्रसन्न भजन (१८८४), ज्योतिष दर्शन (१८९४), श्राद्ध विवेक (उर्दू से अनूदित, १८८८)।

श्री नाथूराम

इनका जन्म हैदराबाद सिंध में ९ अप्रैल १९०८ को हुआ। इनके पिता श्री कीमतराम सारस्वत ब्राह्मण थे। १९२९ में ये आर्य युवक समाज हैदराबाद के सक्रिय कार्यकर्त्ता बने। किसी ईसाई लेखक द्वारा लिखी एक उर्दू पुस्तक 'तवारीखे इस्लाम' का इन्होंने सिंधी भाषा में अनुवाद किया। इस पुस्तक के प्रकाशन से सिंध के मुसलमानों में उत्तेजना की लहर फैल गई जिसके फलस्वरूप नाथूराम पर अदालत में अभियोग चलाया गया। सत्र न्यायाधीश ने उन्हें दण्डित किया किन्तु मामला आगे सिंध की चीफ कोर्ट में गया। यहां २० सितम्बर १९३४ को अदालत में निर्णय सुनाये जाने के पहले ही धर्मान्ध पठान अब्दुलकयूम ने छुरा मार कर उनकी हत्या कर दी।

श्री नाथूरामशंकर शर्मा 'शंकर'

हिन्दी के महाकवि पं. नाथूराम शंकर का जन्म चैत्र शुक्ला ५ सं. १९१६ वि. (१८५९) को अलीगढ़ जिले के हरदुआगंज नामक ग्राम में हुआ। आपकी शिक्षा हिन्दी, उर्दू तथा फारसी में हुई, किन्तु आपने स्वाध्याय से संस्कृत

का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। इनके पिता का नाम रूपराम शर्मा तथा माता का जीवनी देवी था। १३ वर्ष की अल्पायु में ही इन्होंने काव्य रचना आरम्भ कर दी थी। पहले यह उर्दू में काव्य रचना करते थे। नाथूरामशंकर शर्मा ने जीविकोपार्जन के लिये नहर विभाग में नक्शानवीसी और पैमाइश का कार्य आरम्भ किया। धीरे-धीरे ये सब ओवरसियर के पद पर पहुंच गये। लगभग साढ़े सात वर्ष तक नौकरी करने के पश्चात् आपने त्यागपत्र दे दिया और आयुर्वेद चिकित्सा का कार्य करने लगे। पहले आप अनूपशहर में चिकित्सक के रूप में रहे, तत्पश्चात् हरदुआगंज आ गये। आपको इस कार्य में बड़ी सफलता मिली और शीघ्र ही 'पीयूषपाणि' वैद्यराज के रूप में ख्याति प्राप्त की।

श्री शंकर को ऋषि दयानन्द का दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। उन्होंने कानपुर में ऋषि के व्याख्यान भी सुने थे। महाकवि शंकर की कविताओं को 'सरस्वती' में सम्मानपूर्वक पं. महावीरप्रसाद द्विवेदी ने प्रकाशित किया। १९२५ में ऋषि दयानन्द की जन्म-शताब्दी के अवसर पर आयोजित विराट् कवि सम्मेलन की अध्यक्षता शंकरजी ने की थी। शंकर की कविता में अनेक रसों की अभिव्यक्ति मिलती है। वे अपनी कविताओं में आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों को रुचिर शैली में अभिव्यक्त करते थे। उनके काव्य में कवि का सुधारवादी स्वर सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। आपका निधन १९३२ में हुआ।

ले. का.—अनुराग रत्न, शंकर सरोज, गर्भरण्डा रहस्य, शंकर सर्वस्व-(पं. हरिशंकर शर्मा द्वारा सम्पादित तथा २००८ वि. में प्रकाशित) वायसविजय-पंचतन्त्र के 'काकोलूकीय' प्रकरण का काव्यनुवाद (१९७६)।

महाकवि शंकर के काव्य कृतित्व पर श्रीमती शान्ति शर्मा (पं. हरिशंकर शर्मा की पुत्रवधू) ने आगरा विश्वविद्यालय से शोधकार्य कर पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की है।

वि. अ.—महाकवि शंकर स्मृति ग्रन्थ : सम्पादक देशराजसिंह, १९८६.

पं. नानकचन्द

पं. नानकचन्द का जन्म १८८६ में नालागढ़ (हि. प्र.) में हुआ। इनकी शिक्षा डी. ए. वी. कालेज लाहौर में हुई जहां महात्मा हंसराज से उन्होंने इतिहास का अध्ययन किया। १९०६ में बी. ए. करने के पश्चात् वे उच्च अध्ययन के लिये इंग्लैण्ड चले गये। वहां से लौटने पर पं. नानकचन्द ने १९११ में हिसार में वकालत आरम्भ की। पश्चात् वे लाहौर चले गये। वे पंजाब विधान परिषद् के सदस्य रहे तथा पंजाब विश्वविद्यालय की सिनेट के सभ्य भी रहे। १९३२ की तीसरी गोल मेज परिषद् में वे प्रतिनिधि बन कर गये तथा साम्प्रदायिक आधार पर चुनाव कराने का घोर विरोध किया। पं. नानकचन्द का १९६६ में निधन हुआ।

ले. का.—भारत के चुनाव कानून तथा Wisdom of India.

नानकचन्द 'नाज'

आपकी उर्दू कृति 'संन्यासी का खून' लाहौर से १९२७ में प्रकाशित हुई। इसमें स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान का मार्मिक वर्णन है।

मुन्शी नारायणकृष्ण

आप गुजरांवाला (पाकिस्तान) निवासी मुन्शी केवलकृष्ण के भाई थे। आपकी 'अहिंसा प्रचार' नामक उर्दू पुस्तक (१८९५) मांसाहार निषेध में लिखी गई।

पं. नारायण गोस्वामी

आर्यमित्र साप्ताहिक के प्रबन्ध सम्पादक पद पर दीर्घ-काल तक रहने वाले पं. नारायण गोस्वामी का जन्म १९०० में आगरा जिले के कोटला ग्राम में हुआ। इनके पिता पौरोहित्य तथा वैद्यक का कार्य करते थे। पं. हरिशंकर शर्मा के सम्पादन काल में गोस्वामीजी आर्यमित्र कार्यालय में आ गये और प्रबन्ध संबंधी कार्य करते रहे। १ अक्टूबर १९८५ को उन्होंने इस कार्य से अवकाश ग्रहण किया। उनका निधन ८ मार्च १९८८ को हुआ।

ले. का.—१. दिव्य दयानन्द—श्री पूर्णचन्द्र एडवोकेट के सह सम्पादन में (१९९० वि.), २. ब्रह्म विज्ञान (सम्पादित) (१९९० वि.)।

नारायणदत्त सिद्धान्तालंकार

श्री नारायणदत्त का जन्म सिंध प्रान्त के रोहड़ी नामक स्थान में अगस्त १९०३ (१९६० वि.) में हुआ। इनके पिता की दर्यानामल आर्यसमाजी विचारों के थे अतः उन्होंने अपने पुत्र को गुरुकुल कांगड़ी में प्रविष्ट कराया। १९२५ ई. में आप स्नातक बने। तत्पश्चात् १९२५ से १९२७ तक आपने दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर में संस्कृत तथा दर्शनशास्त्र का अध्यापन कार्य किया। कालान्तर में आपने कलकत्ता तथा जयपुर रहकर आयुर्वेद का अध्ययन किया और बिड़ला जूट मिल कलकत्ता तथा बिड़ला क्लॉथ मिल दिल्ली में चिकित्सक के पद पर कार्य किया। मिल की सेवा से निवृत्त होकर आपने समाज सेवा के क्षेत्र में प्रवेश किया। इनका निधन ११ जनवरी १९८० को हुआ।

ले. का.—१. शंकराचार्य-जीवन और दर्शन, २. गुरुनानक—जीवन और दर्शन ३. महर्षि दयानन्द-जीवन और दर्शन (१९६७), ४. वैदिक साम्यवाद-(यजुर्वेद के ४०वें अध्याय की व्याख्या), ५. ओंकार उपासना (माण्डूक्य उपनिषद् का भाष्य) ६. संध्या—हिन्दी व्याख्या (१९७४), ७. जपुजी—हिन्दी व्याख्या।

लाला नारायणदास

आप पुरानी पीढ़ी के आर्यसमाजी थे। मांस-भोजन के खण्डन में आपने एक पुस्तक लिखी जिसका शीर्षक था—हम, हमारे कार्य और बकरे। यह चश्म ए नूर प्रेस, लाहौर से १८९३ में छपी।

पं. नारायणदेव केरलीय

पं. नारायणदेव का जन्म १६ नवम्बर १९०९ को केरल राज्य के कोट्टायम जिले के कुटमालूर नामक स्थान में हुआ। १९२७ से १९३२ तक आपने दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर में अध्ययन किया और १९३३ में 'सिद्धान्त भूषण' की उपाधि प्राप्त की। इसी वर्ष गुरुकुल कांगड़ी में रहकर आपने वेदों का अध्ययन किया। पं. नारायणदेव ने देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया तथा दक्षिण भारत, विशेषतः केरल में हिन्दी प्रचार को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। १९३४ में अपने प्रान्त केरल के कोट्टायम नगर में आपने श्रद्धानन्द हिन्दी महाविद्यालय की स्थापना की। तब से लेकर वे आज तक आर्य भाषा के प्रचार प्रसार के कार्य में संलग्न हैं। आपकी हिन्दी सेवाओं के कारण केरल की हिन्दी साहित्य अकादमी तथा उत्तरप्रदेश शासन ने आपको सम्मानित एवं पुरस्कृत किया है।

ले. का.— हिन्दी की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में शताधिक लेख तथा कविताओं के अतिरिक्त आपने मलयालम के कुछ प्रसिद्ध काव्यों का हिन्दी में अनुवाद किया है। दक्षिण भारत के हिन्दी छात्रों के उपयोगार्थ आपने अनेक पाठ्यपुस्तकें भी लिखी हैं।

व. प.—हिन्दी विद्याभवन, कोट्टायम (केरल)—६८६००४.

पं. नारायणप्रसाद बेताब

प्रसिद्ध नाटककार, कवि तथा लेखक पं. नारायणप्रसाद बेताब का जन्म मार्गशीर्ष कृष्णा प्रतिपदा सं. १९२९ वि. (१७ नवम्बर १८७२ ई.) को बुलन्दशहर जिले के औरंगाबाद नामक कस्बे में श्री दुल्लाराय के यहां हुआ था। इनके पिता हलवाई का काम करते थे और चाहते थे कि पुत्र भी उनके व्यवसाय में सहायक हो, किन्तु नारायणप्रसाद पढ़ने के इच्छुक थे। जब उनकी शिक्षा की कोई व्यवस्था नहीं हो सकी तो वे चुपचाप दिल्ली चले गये और केसरेहिंद प्रेस में कम्पोजीटर का कार्य करने लगे। उन्हें तुकबंदी करने का शौक बचपन में ही लग गया था, इसलिये जब उनका पारसी नाटक कम्पनियों से परिचय हुआ तो वे इन कम्पनियों के लिये नाटक लिखने लगे। धीरे धीरे इन्हें नाटक लिखने में अच्छी सफलता मिली। आपने पौराणिक, सामाजिक, ऐतिहासिक आदि विभिन्न विषयों पर २६ नाटक लिखे। १९२१ में उन्होंने

दिल्ली में बेताब प्रिंटिंग वर्क्स नामक प्रेस की स्थापना की और अनेक ग्रन्थ प्रकाशित किये। बेताबजी दृढ़ आर्यसमाजी थे तथा अपने नाटकों में भी आर्यसमाजी विचारधारा को प्रस्तुत करने का कोई अवसर नहीं खोते थे। वे डी. ए. वी. कालेज बुलन्दशहर में धर्म शिक्षा के अध्यापन भी रहे थे। १५ सितम्बर १९४५ को बम्बई में उनका निधन हो गया।

ले. का.—पिंगलसार—उर्दू तथा हिन्दी में कविता लिखने वालों के लिये छन्दोविधान का उपयोगी ग्रन्थ (१९२०) प्रास पुंज—समस्या पूर्ति तथा तुकान्त काव्य लिखने वालों के लिये अभ्यास में सहायक ग्रन्थ (१९२०), पद्य परीक्षा, हिन्दी के प्रसिद्ध कवियों की कविता पर पिंगलशास्त्र के आधार पर लिखी गई समालोचना तथा आलोच्य कवियों की छन्द-शास्त्र विषयक त्रुटियों का दिग्दर्शन। बेताब के काव्य ग्रन्थ—नारायण शतक—नीति विषयक सौ दोहों का संग्रह, संस्कार संगीत— षोडश संस्कारों के अवसरों पर गाये जाने वाले सुन्दर भजन।

महर्षि दयानन्द दिग्दर्शन—लाहौर से प्रकाशित होने वाले 'प्रकाश' उर्दू पत्र के ऋष्यंकों में प्रकाशित चार उर्दू मुसद्दसों का नागरी में भूमिका सहित संकलन। इसमें बुतपरस्ती का शुक्रिया, स्वामी दयानन्द का समावर्तन संस्कार, ऋषि की जिन्दगीबख्श मौत तथा शास्त्र और शस्त्र दोनों बस में है, शीर्षक मुसद्दसों को प्रकाशित किया गया है। द्वितीय संस्करण डा. भवानीलाल भारतीय द्वारा सम्पादित (१९७४)।

बेताबजी के अन्य ग्रन्थ

१. राधाकृष्ण का नाता—ब्रह्मवैवर्तपुराण में वर्णित तथ्यों के आधार पर राधा एवं कृष्ण के सम्बन्धों का विवेचन, २. अमृतांजलि—पंचमहायज्ञों की विधि, टीका तथा शंका समाधान, ३. वृक्ष निर्जीव हैं—स्वामी मंगलानन्दपुरी लिखित पुस्तक वृक्षों में जीव- (१९२४) का उत्तर (१९२६), ४. करिश्मए नजूम—फलित ज्योतिष, जन्मपत्र आदि का खण्डन-जनार्दन जोशी की पुस्तक का अनुवाद (१९०८), ५. बेताब चरित्र—बेताब की आत्मकथा (१९३७), ६. रामायण नाटक—(१९२३), ७. सम्पूर्ण महाभारत नाटक।

वि. अ.—हिन्दी रंगमंच और बेताब—डा. विद्यावती नम्र।

नारायण मुनि चतुर्वेद (लक्ष्मीनारायण शास्त्री)

संस्कृत के प्रख्यात विद्वान् पं. लक्ष्मीनारायण शास्त्री का जन्म चैत्र शुक्ला प्रतिपदा १९६६ वि. (अप्रैल १९०९) को रुड़की में हुआ। इनके पिता का नाम श्री हरध्यानजी तथा माता का नाम श्रीमती साधना देवी था। इनका पालन पोषण श्री दौलतराम तथा उनकी पत्नी श्रीमती वसन्ती देवी ने किया। आप का अध्ययन गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में हुआ जहां से आपने विद्याभास्कर की उपाधि प्राप्त की। तदनन्तर साहित्याचार्य (बनारस) तथा एम. ए. (आगरा) की उपाधियाँ भी प्राप्त कीं। कई वर्षों तक आप आर्यसमाज (नगर) जोधपुर में पुरोहित के पद पर रहे। कालान्तर में गुरुकुल महेश्वर (मध्यप्रदेश) में आचार्य पद पर कार्य किया। तत्पश्चात आपने डी.ए.-वी. कालेज रुड़की में संस्कृत का अध्यापन किया। गुरुकुल ज्वालापुर ने अपनी हीरक जयन्ती के अवसर पर आपको 'वेदवाचस्पति' की उपाधि प्रदान की। आपका निधन ५ मई १९८६ को हो गया।

ले. का.—सांस्कृतिक विचार, मुक्तक शतक, स्तुतिशतक, श्री प्रकाशवीर शास्त्री की विश्रुत यशः प्रशस्ति, काश्मीर यात्रा, यज्ञप्रसाद।

महात्मा नारायण स्वामी

आर्यसमाज के महान् नेता, तपस्वी सन्त, विद्वान् तथा गम्भीर लेखक नारायण स्वामीजी का जन्म अलीगढ़ जिले के सिकन्दराराऊ कस्बे में १९२२ वि. (१८६५) वसन्तपंचमी के दिन एक कायस्थ परिवार में हुआ। आपके पिता का नाम मुन्शी सूर्यप्रसाद था। संन्यास लेने से पूर्व ये नारायणप्रसाद के नाम से जाने जाते थे। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा अरबी और फारसी की ही हुई। कालान्तर में आपने स्वाध्याय से ही हिन्दी एवं संस्कृत का भी ज्ञान प्राप्त कर लिया। जब आप विद्यार्थी ही थे, मुरादाबाद में आपको स्वामी दयानन्द के दर्शन करने का अवसर मिला, किन्तु पौराणिक विचारधारा के अध्यापकों के कहने में

आकर आप उनके व्याख्यान सुनने नहीं जा सके। इसका आपको जीवन भर पश्चाताप रहा। आपने युवावस्था में मुरादाबाद की कचहरी में नौकरी कर ली तथा अत्यन्त ईमानदारी के साथ सरकारी सेवा को कर्त्तव्य समझकर निभाया। कालान्तर में पत्नी के निधन और एकमात्र सन्तान (पुत्र) की मृत्यु के पश्चात् कम आयु होने पर भी आपने पुनः विवाह करने का विचार तक नहीं किया और आर्यसमाज के माध्यम से देश तथा समाज की सेवा में जुट गये।

आपने आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के अन्तरंग सभासद, गुरुकुल वृन्दावन के मुख्याधिष्ठाता, सार्वदेशिक सभा के प्रधान तथा आर्यसत्याग्रह हैदराबाद के प्रथम सर्वाधिकारी के रूप में आर्यसमाज की जो सेवा की, वह अपने आप में एक उदाहरण है। सिंध में सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास पर प्रतिबंध लगाया गया, तब भी आपने करांची जाकर सत्याग्रह किया था। १९२० में आपने वानप्रस्थ की दीक्षा ली और महात्मा नारायणप्रसाद के नाम से प्रसिद्ध हुए। तदनन्तर १९२२ में स्वामी सर्वदानन्द से आपने संन्यास की दीक्षा ली और महात्मा नारायण स्वामी के नाम से विख्यात हुए। १९२५ में ऋषि दयानन्द की जन्म शताब्दी मथुरा में मनाई गई। उस समारोह की समग्र व्यवस्था का दायित्व आप पर ही था। इसी प्रकार १९३३ में अजमेर में आयोजित ऋषि दयानन्द निर्वाण अर्द्ध शताब्दी उत्सव भी आपके नेतृत्व में ही सम्पन्न हुआ। १५ अक्टूबर १९४७ को आपका बरेली में निधन हुआ।

महात्मा नारायण स्वामी लिखित साहित्य गुण एवं परिमाण, दोनों दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है।

ले. का.—उपनिषद् रहस्य शीर्षक उपनिषद् भाष्य—

१. इशोपनिषद् (२००३), २. केनोपनिषद् (१९८६ वि.), ३. कठोपनिषद् (१९९० वि.), ४. प्रश्नोपनिषद् (१९९२ वि.), ५. मुण्डकोपनिषद् (१९९२ वि.), ६. माण्डूक्योपनिषद्, ७. ऐतरेयोपनिषद् (१९९५ वि.), ८. तैत्तिरीयोपनिषद्—(१९९५ वि.), ९. छान्दोग्योपनिषद् भाष्य (१९९६ वि.), १०. बृहदारण्यकोपनिषद् भाष्य (२००६ वि.), ११. उपनिषद् कथामाला। १२. उपनिषद् रहस्य-आठ उपनिषदों का भाष्य एक जिल्द में, १३. ईशोपनिषद् भाष्य अंग्रेजी अनुवाद A Comnentary of Ishopishat. शीर्षक से पं. घासीराम ने किया। योग रहस्य-योगदर्शन का भाष्य—(१९३२), वेद रहस्य (२००१ वि.), विद्यार्थी-जीवन रहस्य, गृहस्थ जीवन रहस्य (१९३३), आत्म-दर्शन-(१९७९ वि.), मृत्यु रहस्य (१९८२ वि.), मृत्यु और परलोक (१९८५ वि.)

म. नारायण स्वामी द्वारा सम्पादित ग्रन्थ—

वैदिक सिद्धान्त—(१९८१ वि.), आर्यसिद्धान्त विमर्श-(१९९० वि.), विदेशों में आर्यसमाज (१९३३)।

स्फुट ग्रन्थ व निबन्धों के संग्रह—आर्यसमाज क्या है ? (१९२५), संन्यासी कर्त्तव्य दर्पण (१९३०), अमृत वर्षा भाग—१ (१९३१), अमृत वर्षा भाग—२ (१९४६), नारायणोपदेश (१९८५ वि.), पाप-पुण्य, वैदिक धर्म क्यों ग्रहण करना चाहिये ? (१९२९), कर्म रहस्य (१९३८), ब्रह्म विज्ञान, धर्म रहस्य, कर्त्तव्य दर्पण (१९३०), वैदिक-संध्या रहस्य, कर्त्तव्य दर्पण, यज्ञ रहस्य (२००९ वि.), प्राणायाम विधि (१९७१ वि.), नवीन और प्राचीन समाजवाद, वैदिक साम्यवाद (१९३७), वर्णव्यवस्था के सम्बन्ध में कुछ आक्षेप और उनके उत्तर (१९७९ वि.) आत्मकथा (२००० वि.), ईसा का जीवन वृत्तान्त (महात्मा नारायणप्रसाद लिखित) वेद और प्रजातन्त्र की राज व्यवस्था (महात्मा नारायणप्रसाद द्वारा सम्पादित तथा गुरुकुल वृन्दावन द्वारा प्रकाशित) ये ग्रन्थ महात्माजी के वानप्रस्थ काल के हैं।

वि. अ.—महात्मा नारायण स्वामीजी की धर्म और समाज के प्रति अद्वितीय सेवाओं को देखते हुए सार्वदेशिक सभा की ओर से इन्हें एक अभिनन्दन ग्रन्थ उनकी ८० वीं वर्षगांठ के अवसर पर २००२ वि. में अर्पित किया गया। इसका सम्पादन पं. महेन्द्रप्रताप शास्त्री, पं. धर्मदेव विद्या वाचस्पति तथा पं. विश्वम्भरसहाय प्रेमी ने किया था।

नित्यानन्द पटेल, वेदालंकार

गुजरात प्रान्त के नवसारी नगर के निकटवर्ती सातेम् नामक गांव में नित्यानन्द पटेल का जन्म १९१३ में हुआ। इनके पिता श्री हीराभाई आर्यसमाजी थे अतः उन्होंने अपने पुत्र को गुरुकुल कांगड़ी में प्रविष्ट कराया, जहां से आपने १९३३ में वेदालंकार की उपाधि ग्रहण की। इसके उपरान्त आपने हिन्दी तथा संस्कृत में एम. ए. की परीक्षायें भी उत्तीर्ण कीं। मोगा (पंजाब) तथा नवसारी (गुजरात) में अध्यापन कार्य करने के अतिरिक्त आपने महिला कालेज, पोरबन्दर में आचार्य का कार्य भी किया। आपका विवाह आर्यसमाज के प्रसिद्ध प्रकाशक स्व. गोविन्दराम हासानन्द की पुत्री से हुआ था। आपका निधन १९७८ में हुआ।

ले. का.—संध्या सुमन (१९३९), संध्या विनय (१९४०), प्रार्थना दीप। ये तीनों ग्रन्थ गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली ने प्रकाशित किये हैं।

स्वामी नित्यानन्द ब्रह्मचारी

वेदों की अनुक्रमणिकायें तैयार कर वैदिक अध्ययन एवं शोध कार्य को नवीन दिशा प्रदान करने वाले स्वामी नित्यानन्द का जन्म राजस्थान के जालोर नामक कस्बे में भाद्रपद शुक्ला १४ सं. १९१७ वि. (१८६०) को एक श्रीमाली ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम पुरुषोत्तमजी माता का नाम कृष्णा बाई था। इनका जन्म का नाम रामदत्त था। श्रीमाली ब्राह्मणों में प्रचलित परम्परानुसार ब्रह्मचारी रामदत्त ने यजुर्वेदीय पुरुषाध्याय और रुद्राध्याय का अध्ययन किया। किशोर अवस्था में इन्होंने विद्याध्ययन के लिये अपने गृह का त्याग कर दिया। काशी में आपकी भेंट स्वामी दयानन्द के शिष्य स्वामी गोपालगिरि से हुई। ब्रह्मचारीजी का आर्यसमाज से प्रथम परिचय इन्हीं से हुआ। संयुक्त प्रान्त (वर्तमान उत्तरप्रदेश) के अनेक नगरों का भ्रमण करते हुए आप बरेली पहुंचे और एक आर्यसमाजी विद्वान् पं. यज्ञदत्त से वेदान्त का अध्ययन करने लगे। इन्हीं पण्डितजी से आपको सत्यार्थप्रकाश एवं ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पढ़ने के लिये मिली। इसी बीच आर्यसमाज के प्रसिद्ध लेखक श्री चिम्मनलाल वैश्य (तिलहर-शाहजहांपुर) से भी आपका परिचय हुआ, जिनसे इन्हें आर्यसमाज विषयक अधिक जानकारी मिली।

इस प्रकार भ्रमण करते हुए ब्रह्मचारी नित्यानन्द की भेंट गाज़ियाबाद स्टेशन पर एक अन्य संन्यासी स्वामी विश्वेश्वरानन्द से हुई। दोनों एक दूसरे के प्रेम-सूत्र में बंध गये और भविष्य में इन दोनों महात्माओं को एक युगल के रूप में ही पहचाना जाने लगा। अब स्वामी नित्यानन्द अपने साथी व सहयोगी स्वामी विश्वेश्वरानन्द के साथ धर्म-प्रचार के क्षेत्र में उतर पड़े। उनका प्रचार कार्य का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत था। उन्होंने देश के सभी भागों में प्रचारार्थ भ्रमण किया। ब्रिटिश भारत के अतिरिक्त राजपूताना की रियासतों, बड़ौदा, हैदराबाद, मैसूर तथा मध्यभारत के देशी राज्यों में भी वे सर्वत्र गये तथा विभिन्न नरेशों को उपदेश देकर स्वशिष्य बनाया। उन्होंने अन्य मतावलम्बियों से अनेक शास्त्रार्थ किये तथा अनेक ग्रन्थों की भी रचना की। स्वामी नित्यानन्द का निधन ८ जनवरी १९१४ को बम्बई में हुआ।

ले. का.—मूर्ति पूजा (१९०५), चतुर्वेद पदानां अकारादिक्रमानुक्रमणिका—निर्णयसागर प्रेस में मुद्रित होकर १९६४-६५ वि. (१९०७-०८) में प्रकाशित हुई। पुरुषार्थप्रकाश-शाहपुराधीश नाहरसिंह की प्रेरणा से लिखा गया यह ग्रन्थ प्रथम बार १९५० वि. में अजमेर से प्रकाशित हुआ। बूंदी शास्त्रार्थ—वेद संज्ञा विषय पर यह शास्त्रार्थ बूंदी के राज पण्डितों से हुआ था। आर्यसमाज शाहपुरा ने १९४६ वि. में तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने २०३३ वि. में प्रकाशित किया। सनातनधर्म प्रकाश-प्रथम भाग (१९५५ वि.), नित्यानन्द ग्रंथमाला (गोविन्दराम दयानन्द, कलकत्ता), जीवात्मा (गुजराती व्याख्यान का अनुवाद १९२५), मनुष्य जन्म की सफलता (१८९७),

वि. अ.—स्वामी नित्यानन्द ब्रह्मचारी ले. ब्रह्मदत्त सोढ़ा (रणछोड़दास भवान द्वारा १९१८ में बम्बई से प्रकाशित)

पं. निरंजनदेव इतिहास केसरी

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक पं. निरंजन-देव का जन्म ३ फरवरी १९२३ को पंजाब के जिला होशियारपुर के एक ग्राम में हुआ। आपके पिता का नाम श्री अतरचन्द था। पं. निरंजनदेव भारतीय तथा आर्य-समाज के इतिहास के मर्मज्ञ हैं। आपने दण्डी विरजानन्द का एक संक्षिप्त जीवनचरित लिखा है। इसमें दण्डीजी के पूर्वजों तथा परिजनों के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण जानकारी दी गई है।

व. प.—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन, चौक कृष्णपुरा जालंधर नगर

श्री निरंजनलाल गौतम

श्री गौतम शाहदरा दिल्ली के निवासी एक कर्मठ आर्यसमाजी कार्यकर्त्ता थे। वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सदस्य भी रहे। उनका निधन १० अगस्त १९६० को हुआ। 'ऋषि दयानन्द की हिन्दी को देन' शीर्षक इनकी एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक विज्ञानकला मंदिर शाहदरा दिल्ली से प्रकाशित हुई है।

श्रीमती निर्मल शर्मा

श्रीमती शर्मा का जन्म १९४८ ई. में अम्बाला छावनी में हुआ। इनका प्रारम्भिक अध्ययन सनातन धर्म कन्या विद्यालय में हुआ। तत्पश्चात पंजाब विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए. १९८६ में किया। आपने दयानन्द शोध पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय से 'सायण एवं दयानन्द कृत वेद भाष्यभूमिका का तुलनात्मक अध्ययन' शीर्षक शोध-प्रबन्ध लिख कर १९९० में पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त की।

व. प.—द्वारा भीमसेन शर्मा, खरड़ (रोपड़)

डा. निरूपण विद्यालंकार

आपका जन्म १० जून १९२४ को मैनपुरी जिले के गुढा नामक ग्राम में चौधरी बाबूसिंह के यहां हुआ। इनकी शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी में हुई जहां से १९४५ में आपने विद्यालंकार की उपाधि ग्रहण की। तदनन्तर आगरा विश्वविद्यालय से 'प्राचीन भारतीय धर्म शास्त्र साहित्य में शूद्रों की स्थिति' विषय पर आपने पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। आप अजमेर, जालंधर, गुरुकुल कांगड़ी तथा मेरठ में संस्कृत के प्राध्यापक रहे।

ले. का.—सत्यार्थप्रकाश में उद्धृत मंत्र (१९८४) अभिज्ञान शाकुन्तल तथा मुद्राराक्षस (टीका), काव्य दीपिका तथा साहित्य दर्पण (सम्पादन)

वि. अ.—डा. निरूपण विद्यालंकार अभिनन्दन ग्रन्थ सं. उमाकान्त शुक्ल (१९८४).

व. प.—७० पर्णकुटी, नेहरू रोड़, मेरठ।

कु. निरोत्तमा शर्मा

इनका जन्म पंजाब के रोपड़ जिले के कस्बा खरड़ में २८ दिसम्बर १९६४ को श्री जयकृष्ण शर्मा तथा सुशीला देवी के यहां हुआ। इनकी शिक्षा पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला से एम. ए. (हिन्दी) तक हुई। कु. निरोत्तमा ने नगेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय लिखित बंगला दयानन्द-चरित का हिन्दी में अनुवाद किया। यह लघु कृति १८८६ में बंगला में लिखा गया स्वामीजी का प्रथम जीवन-चरित है। 'महर्षि दयानन्द प्रणीत ग्रन्थ, शास्त्रार्थ एवं प्रवचन : एक समीक्षात्मक अध्ययन' विषय पर ये दयानन्द शोध पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. के लिये शोध प्रबन्ध लिख रही हैं।

व. प.—द्वारा जयकृष्ण शर्मा, पंजाब बिजली बोर्ड, मोहाली (रोपड़).

निहालचंद भण्डारी

आपकी उर्दू कृति 'उन्नीसवीं सदी का सच्चा शहीद' शीर्षक पं. गुरुदत्त विद्यार्थी का जीवन चरित फिरोजपुर से १८९१ में छपा था।

भाई निहालसिंह

आर्यसमाज लाहौर के प्रारम्भिक सदस्यों में भाई निहालसिंह का नाम उल्लेखनीय है। ये जन्मना सिख थे,

किन्तु स्वामी दयानन्द के विचारों से प्रभावित होकर आपने आर्यसमाज की सदस्यता स्वीकार की थी। आपने स्वामीजी के निम्न ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद किया था—मुस्तनिक उर्दू सत्यार्थप्रकाश—जब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा सत्यार्थप्रकाश का उर्दू अनुवाद कराया गया तो इस कार्य के लिये अनेक महानुभावों की सेवायें ली गईं। यह अनुवाद १८९८ में छपा था। मुख्य अनुवादक पं. आत्माराम अमृतसरी थे, किन्तु इसमें भाई निहालसिंह का भी प्रमुख योगदान रहा। सत्यार्थप्रकाश के नवें समुल्लास का उर्दू अनुवाद,—यह विद्याधर प्रेस मेरठ द्वारा १८९७ में छापा गया। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का उर्दू अनुवाद—द्वितीय संस्करण (१९०२).

इस शताब्दी के आरम्भ में ही इनका निधन हो गया था, क्योंकि १९०३ में बावा छज्जूसिंह द्वारा लिखित स्वामी दयानन्द की अंग्रेजी जीवनी में इन्हें स्वर्गवासी कहा गया है।

डा. नूतन महेश्वरी

श्रीमती महेश्वरी का जन्म १७ जुलाई १९५३ को उन्नाव (उ. प्र.) में हुआ। इनके पिता श्री धनप्रकाश गुप्त उत्तरप्रदेश की प्रशासनिक सेवा में रहे। श्रीमती नूतन ने एम. ए. करने के पश्चात् आर्यसमाज विषयक शोध कार्य को हाथ में लिया। 'पंजाब व पश्चिमी उत्तरप्रदेश में आर्यसमाज का राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदान' विषय पर १९८९ में आपको मेरठ विश्वविद्यालय से पी-एच. डी की उपाधि प्राप्त हुई।

व. प.—द्वारा डी. पी. गुप्ता ५६ रेस्ट कैम्प, देहरादून (उ. प्र.)

नेविनसन, हेनरी डब्लू.

इंग्लैण्ड के पत्र मैन्चेस्टर गार्जियन के संवाददाता नेविनसन अक्टूबर १९०७ में भारत आये थे। उन्होंने देश की तत्कालीन सामाजिक तथा राजनैतिक स्थिति का अध्ययन करने के पश्चात् *The New Spirit in India* शीर्षक एक ग्रन्थ लिखा। इस पुस्तक का सोलहवां अध्याय आर्यसमाज विषयक विवेचना का है।

नौबहारसिंह 'साबिर' टोहानवी

उर्दू शायर नौबहारसिंह का जन्म ११ नवम्बर १९०७ को टोहाना जिला हिसार में एक राजपूत परिवार में हुआ। इनके पिता रघुवीरसिंह पटियाला रियासत में पुलिस के अधिकारी थे। आपने राष्ट्रीय आन्दोलनों में बढ़-चढ़ कर भाग लिया तथा देशभक्ति का काव्य लिखा। उनकी ऐसी ही कविताओं का संग्रह 'पयामेबेदारी' शीर्षक से १९३२ में छपा, जिसे अंग्रेजी सरकार ने जब्त कर लिया था। स्वामी दयानन्द पर आपका उर्दू काव्य 'महर्षि दर्शन' हिन्दी तथा उर्दू दोनों लिपियों में छपा था। १० नवम्बर १९८४ को 'साबिर' का पटियाला में निधन हुआ।

पं. पद्मसिंह शर्मा

सुप्रसिद्ध लेखक, सम्पादक तथा समालोचक पं. पद्मसिंह शर्मा का जन्म बिजनौर जिले के नायक नगला ग्राम में (फाल्गुन शुक्ला १२ सं. १९३३ वि.) (१८७७) को हुआ। इनके पिता का नाम चौधरी उमरावसिंह था जो गांव के मुखिया होने के साथ एक सम्पन्न किसान भी थे। बाल्यकाल में विद्याध्ययन के लिये शर्माजी को कहीं जाना नहीं पड़ा। घर पर ही एक मौलवी तथा पण्डित को नियुक्त कर आपको उर्दू, हिन्दी तथा संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा दी गई। इसके पश्चात् आपने इटावा जाकर स्वामी दयानन्द के प्रमुख शिष्य पं. भीमसेन शर्मा से अष्टाध्यायी का अध्ययन किया। कुछ समय तक पं. जीवाराम शर्मा से लघुकौमुदी आदि ग्रन्थ पढ़े। पुनः उच्च शिक्षा के लिये लाहौर चले गये तथा ओरियंटल कालेज में प्रवेश ले लिया। यहां आपका सम्पर्क सुप्रसिद्ध आर्यसमाजी विद्वान् पं. नरदेव शास्त्री से हुआ। लाहौर में दो वर्ष अध्ययन करने के पश्चात् आप जालंधर चले आये और प्रसिद्ध विद्वान् पं. गंगादत्त शास्त्री से व्याकरण का विशेष अध्ययन किया। तत्पश्चात् काशी गये और शास्त्रों के अप्रतिम विद्वान पं. काशीनाथ शास्त्री से दर्शन आदि शास्त्रों का गहन अध्ययन किया।

१९०४ में महात्मा मुंशीराम के अनुरोध पर गुरुकुल कांगड़ी में शिक्षक बनकर आये। इन्हीं दिनों महात्माजी ने 'सत्यवादी' नामक एक साप्ताहिक पत्र हरिद्वार से निकालना आरम्भ किया। पं. रुद्रदत्त शर्मा के साथ पं. पद्मसिंह शर्मा को भी इस पत्र का सम्पादक का भार सौंपा गया। इस प्रकार पत्रकारिता के क्षेत्र में आपका पदार्पण हुआ। १९५८ वि. में परोपकारिणी सभा के मुखपत्र मासिक 'परोपकारी' के सम्पादक बन कर आप अजमेर चले गये। परोपकारी के साथ-साथ आपने एक अन्य मासिक 'अनाथ-रक्षक' का भी सम्पादन अजमेर से किया। १९०९ से १९१७ तक शर्माजी गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से सम्बद्ध रहे तथा महाविद्यालय के मुखपत्र मासिक 'भारतोदय' का सम्पादन किया। १९१८ में काशी के प्रख्यात हिन्दी प्रेमी रईस बाबू शिवप्रसाद गुप्त के अनुरोध से आपने ज्ञानमण्डल काशी द्वारा प्रकाशित होने वाले हिन्दी ग्रन्थों का सम्पादन किया। इसी समय उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'बिहारी सतसई की भूमिका' ज्ञानमण्डल से ही छपी। १९२० में आप संयुक्त प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष बने और उसके मुरादाबाद अधिवेशन का सभापतित्व किया। १९२२ में बिहारी सतसई के 'संजीवन भाष्य' पर आपको मंगलाप्रसाद पुरस्कार मिला। १९२८ में आप हिन्दी साहित्य सम्मेलन के मुजफ्फरपुर अधिवेशन के सभापति बने। १९३२ में हिन्दुस्तानी एकेडेमी प्रयोग के तत्वावधान में आपने 'हिन्दी, उर्दू, हिन्दुस्तानी' शीर्षक विद्वतापूर्ण भाषण दिया जो उक्त एकेडेमी द्वारा पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ। आपने पं. हृषीकेश भट्टाचार्य लिखित संस्कृत निबन्धों का एक संकलन स्वयं सम्पादित कर 'प्रबन्ध मंजरी' के नाम से छपाया। आपके संस्मरणात्मक तथा समीक्षात्मक लेखों का संग्रह 'पद्म-पराग' नाम से प्रकाशित हुआ है। इसमें स्वामी दयानन्द, पं. भीमसेन शर्मा आगरा, पं. गणपति शर्मा आदि आर्यसमाज के विख्यात् विद्वानों के रोचक संस्मरण प्रस्तुत किये गये हैं। आपके पत्रों का संग्रह 'पद्मसिंह शर्मा के पत्र' शीर्षक से पं. हरिशंकर शर्मा द्वारा सम्पादित होकर प्रकाशित हो चुका है। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में स्वामी दर्शनानन्द तथा पं. गणपति शर्मा के बीच वृक्षों में जीव विषय पर जो प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ था, उसका विवरण आपने भारतोदय कार्यालय ज्वालापुर में प्रकाशित किया। ७ अप्रैल १९३२ को प्लेग से आपका निधन हो गया।

पं. पन्नालाल परिहार

वेदविषयक विभिन्न पक्षों पर महत्वपूर्ण ग्रन्थों की अंग्रेजी में रचना करने वाले पं. पन्नालाल परिहार का जन्म १८९६ में पाली (राजस्थान) के एक कृषक परिवार में हुआ। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी. ए. और एल. एल. बी. की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। कुछ समय तक दरबार हाई स्कूल, जोधपुर में अध्यापन करने के पश्चात् वे जोधपुर राज्य सचिवालय में वरिष्ठ अधिकारी के रूप में नियुक्त हुए। सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ तथा पुरातत्वज्ञ म. म. पं. विश्वेश्वरनाथ रेऊ के अवकाश ग्रहण करने पर आप जोधपुर राज्य के पुरातत्त्व विभाग के निदेशक, सरदार अद्भुतालय के अधीक्षक तथा सुमेर सार्वजनिक पुस्तकालय के अध्यक्ष नियुक्त हुए।

आप आर्यसमाज जोधपुर के सक्रिय कार्यकर्ता एवं प्रधान भी रहे। वैदिक अध्ययन के प्रति आपकी रुचि प्रारम्भ से ही रही। फलतः आपने वेद विषयक ग्रन्थों की रचना हिन्दी तथा अंग्रेजी में की। आपका निधन १८ जून १९७५ को हुआ।

ले. का.—1. Material Sciences in the Vedas (1959)—वेदों में भौतिक विद्याओं के अस्तित्व को सिद्ध करने का प्रशंसनीय प्रयत्न इस पुस्तक में किया गया है।

2. What is Soul ? (1959)—जीवात्मा विषयक प्राचीन, अर्वाचीन, भारतीय तथा पाश्चात्य धारणाओं का दार्शनिक विवेचन।

3. Matter and Life (1959)—जड़ प्रकृति तथा चेतन तत्त्व का विवेचन।

4. Inside the Vedas—भारतीय विद्या भवन द्वारा प्रकाशित The Vedic Age में व्यक्त वेद विषयक विचारों की समीक्षा में लिखा गया।

श्री पन्नालाल पीयूष

संगीतज्ञ, गायक तथा प्रचारक श्री पीयूष का जन्म पौष कृष्णा ७, १९६८ वि. (९ जनवरी १९१२) को उदयपुर राज्य के सलूंबर ग्राम में श्री कल्याणजी के यहां हुआ। १६ जून १९२९ को इन्होंने वैदिक धर्म प्रचार का कार्य आरम्भ किया। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान में वर्षों तक उपदेशक रहने के पश्चात् आप स्वतन्त्र रूप से सर्वत्र भ्रमण कर वेद प्रचार में संलग्न रहे। ६० वर्ष की इस दीर्घ अवधि में आपने समस्त देश में आर्यसमाज की विचारधारा को अपने भजनोपदेशों के द्वारा प्रसारित किया है।

आर्यसमाज के प्रसिद्ध गायक और कवि स्व. पं. प्रकाशचन्द्र कविरत्न पीयूषजी के गुरु थे। आपने गुरु ऋण होने के लिये कविरत्नजी का अभिनन्दन समारोह १९७१ में आयोजित किया। उनके समस्त साहित्य को समय-समय पर प्रकाशित करने का श्रेय भी उन्हें ही है। स्वामी दयानन्द विषयक प्रशस्तिपरक हिन्दी, संस्कृत तथा उर्दू की सरल कविताओं का एक उत्तम संग्रह 'दयानन्द गुण गान' शीर्षक आपके द्वारा ही सम्पादित होकर १९९० वि. में तथा पुनः संशोधित और परिवर्धित होकर २०१४ वि. में प्रकाशित हुआ है। आर्यसमाज सान्ताक्रूज बम्बई ने श्री पीयूषजी की सेवाओं का सम्मान करते हुए उन्हें १९८९ के जनवरी मास में पुरस्कृत किया।

व. प.—२४३, अशोक नगर, उदयपुर ३१३००१.

डॉ. परमानन्द

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के अंग्रेजी अनुवादक डा. परमानन्द का जन्म २० सितम्बर १९१६ को अमृतसर के प्रसिद्ध आर्यसमाजी कार्यकर्ता पं. परशुराम के यहां हुआ। इन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से संस्कृत विषय लेकर एम. ए. परीक्षा उत्तीर्ण की। इस परीक्षा के लिये इन्होंने 'Concordance of Sutra Literature' नामक शोध निवन्ध प्रस्तुत किया था। १९३७ में इन्होंने दयानन्द ब्राह्म-महाविद्यालय लाहौर के आचार्य के रूप में कार्य आरम्भ किया। कुछ काल पश्चात् वे फॉरमेन क्रिश्चियन कालेज, लाहौर के हिन्दी एवं संस्कृत विभाग के अध्यक्ष पद पर नियुक्त हुए। १९५७ में पेप्सू लोक सेवा आयोग द्वारा हिन्दी एवं संस्कृत के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष पद के लिये चुने गये। कालान्तर में ये हरयाणा के शिक्षा विभाग में आ गये तथा इस राज्य के भाषा निदेशक के पद से १९६८ में अवकाश ग्रहण किया। १९५४ में इन्हें पंजाब विश्व-विद्यालय से 'स्वामी दयानन्द कृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के सटिप्पण अंग्रेजी अनुवाद' पर पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त हुई। २६ जुलाई १९७८ को फरीदाबाद में इनका निधन हो गया। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का आलोचनात्मक प्राक्कथन तथा विशद टिप्पणियों सहित यह अंग्रेजी अनुवाद मेहरचन्द लक्ष्मणदास, नई दिल्ली ने १९८१ में प्रकाशित किया। इस ग्रन्थ का शीर्षक है—Swami Dayanand Sarasvati's Rigvedadi Bhashya-Bhumika, being an Introduction to the Commentary on the Four Vedas.

स्वामी परमानन्द आर्य मुसाफिर

ये आगरा (माईथान) में रहते थे। देश में धर्म प्रचारार्थ सर्वत्र जाते थे। इन्होंने १९२३ से १९२५ तक भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा में कार्य किया।

ले. का—१. ताजिये का इतिहास, २. पंचमहायज्ञ-विधि (१९६८ वि.)।

भाई परमानन्द

सुप्रसिद्ध नेता, विचारक एवं लेखक भाई परमानन्द का जन्म ४ नवम्बर १८७६ को जेहलम जिले के करि-याला नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम भाई ताराचन्द था। १९०३ में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करके आप डी. ए. वी. कालेज लाहौर में अर्थशास्त्र पढ़ाने लगे और कालेज कमेटी के आजीवन सदस्य बन गये।

महात्मा हंसराज की प्रेरणा से आप १९०६ में दक्षिण अफ्रीका में धर्म प्रचारार्थ गये। अफ्रीका से अमेरिका और इसके बाद वे इंग्लैण्ड गये। विदेशों में रहते समय आप श्यामजी कृष्ण वर्मा, लाला हरदयाल तथा विनायक दामोदर सावरकर आदि देश-भक्तों के सम्पर्क में आये। स्वदेश लौटने के पश्चात् आपने क्रान्तिकारी गतिविधियों में भाग लिया जिसके लिये आपको कालापानी की सजा दी गई। १९१९ में इन्हें रिहा किया गया। बाद में आप हिन्दू महासभा में सम्मिलित हो गये और देश में हिन्दुत्व का प्रचार करने लगे। ८ दिसम्बर १९४७ को जालंधर में आपका निधन हुआ।

ले. का.—हिन्दू संगठन (१९२३), आर्यसमाज और कांग्रेस (१९२५), गीतामृत (१९२५), हिन्दू जीवन रहस्य, भारतवर्ष का इतिहास (ब्रिटिश सरकार द्वारा जब्त), कालेपानी की कारावास कहानी—(१९२१), भारत माता का संदेश।

वि. अ.—क्रान्तिकारी भाई परमानन्द—धर्मवीर एम. ए.।

परमेश्वरन सी.

आप दक्षिण भारत के निवासी थे, किन्तु इनका कार्यक्षेत्र उत्तर भारत ही रहा।

ले. का.—1. Dayanand and the Indian Problem. स्वामी दयानन्द के जीवन तथा विचारों का भारत की तत्कालीन स्थिति (१९४२-४३) के संदर्भ में विश्लेषण इस पुस्तक का कथ्य है। इसका प्रथम संस्करण १९३७ में मद्रास से प्रकाशित हुआ। 2. The League assults on Satyarthaprakash. (1946)—सिंध में सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाने के समय लिखित पुस्तक, 3. The Sind Ban on Satyartha-Prakash (1945).

परशुराम रामजी दूधात

आप आर्यसमाज काकड़वाड़ी बम्बई के सभासद तथा पदाधिकारी रहे। इन्होंने गुजराती भाषा में साहित्य लिखा है। १९८२ में इनका निधन हुआ।

ले. का.—१. स्वराज्य ना मंत्रदाता—महर्षि दयानन्द (१९६९), २. महर्षि दयानन्द अने मूर्तिपूजा (१९६९). आपने कुछ समय तक 'धर्मदूत' नामक मासिक पत्र भी निकाला था।

पानीपती आर्य

इनका वास्तविक नाम लाला योगध्यान था। वे पानीपत के एक सम्पन्न परिवार के सदस्य थे। आपने पानीपती आर्य के नाम से लिखा है।

ले. का.—१. कप्तान डाकू—(१९०८), २. फलसफा विवाह या नियोग।

पिण्डीदास ज्ञानी

२२ अगस्त १८९५ को ज्ञानी पिण्डीदास का जन्म रावलपिण्डी में हुआ। इनके पिता का नाम पं. सोहनलाल भारद्वाज तथा माता का नाम श्रीमती परमेश्वरी देवी था। रावलपिण्डी में जन्म होने के कारण प्रचलित प्रथा के अनुसार उन्हें 'पिण्डीदास' नाम दिया गया। ये आंगिरस गौत्र के ब्राह्मण थे। इनक प्रारम्भिक शिक्षण गुरुद्वारे में गुरमुखी माध्यम से हुआ। १९०१ से इन्हें रावलपिण्डी के एक स्कूल में प्रविष्ट कराया गया। यू. पी. मिशन स्कूल से इन्होंने सातवीं श्रेणी उत्तीर्ण की, उसके पश्चात् डी. ए. वी. स्कूल में नवीं श्रेणी तक अध्ययन किया। खालसा हाई स्कूल अमृतसर से मैट्रिक की परीक्षा पास की। पंजाबी की 'ज्ञानी' और संस्कृत की 'प्राज्ञ' परीक्षायें प्राइवेट छात्र के रूप में उत्तीर्ण कीं। असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के कारण ये बी. ए. की परीक्षा नहीं दे सके।

१९१२ से १९२२ तक ज्ञानीजी ने रेलवे में पार्सल क्लर्क का काम किया। १९२२ में नौकरी से त्यागपत्र देकर अमृतसर में आर्य प्रेस की स्थापना की और १९६० पर्यन्त मुद्रक का व्यवसाय करते रहे। आपने १५-२० वर्षों तक आर्य युवक समाज अमृतसर का संचालन किया। आप आर्यसमाज लौहगढ़ अमृतसर के कई वर्ष मंत्री तथा प्रधान भी रहे। ज्ञानीजी आर्य प्रादेशिक सभा, डी. ए. वी. कालेज

प्रबन्ध समिति तथा सार्वदेशिक सभा के सदस्य भी रहे। इनका निधन ८ सितम्बर १९७७ को अमृतसर में हुआ।

ले. का.—महर्षि दयानन्द सरस्वती दी संक्षिप्त जीवन साखी (पंजाबी-१९७५)।

हिन्दी ग्रन्थ—पुराणों और वाममार्ग का घनिष्ठ संबंध-महा निर्वाण तंत्र क्या है?, इस्लाम कैसे फैला?, महर्षि दर्शन (काव्य), गो:विश्व की माँ, विविध वैदिक यज्ञ विधान (१८६७), १९५७ के स्वातन्त्र्य संग्राम में महर्षि दयानन्द का क्रियात्मक योगदान (१९७१), हमारी भाषा।

आर्य प्रकाशन ट्रैक्ट माला—मूर्तिपूजा मत खण्डन (१९७३), अष्टोत्तर शतवचनमालिका, नवीन वेदान्त खण्डन, वेद विरोधी अंग्रेजों के पंचमकार, महर्षि के अमृतसर में १२७ दिन, हमारी गिरावट के कारण और समाधान, अपने प्रभु से (आर्याभिविनय की टीका) श्रीकृष्णाचरितामृत, नास्तिकमत खण्डन। आपने अपने सहयोगी मित्र पं. देवप्रकाश के अभिनन्दन ग्रन्थ का सम्पादन भी किया।

पिशोरीलाल प्रेम

श्री प्रेम का जन्म पाकिस्तान के मरदान जिले के एक ग्राम में एक जनवरी १९२० को हुआ। ये अपने युवाकाल से ही आर्यसमाज में सक्रिय रहे और देश विभाजन से पूर्व अपने क्षेत्र में धर्म प्रचार करते रहे। वर्तमान में आप हिमाचल प्रदेश के जिला सिरमौर के ददाहू नामक कस्बे में निवास करते हैं। श्री प्रेम १९३५ से ही आर्यपत्रों में लिखते आ रहे हैं। उनके अनेक लेख आर्यवीर, आर्यजगत्, आर्यमर्यादा, आर्यमित्र आदि पत्रों में छपे हैं।

ले. का.—ईश्वर प्रार्थना, प्रेम गीतांजलि, भूतप्रेत, चरित्र निर्माण में रुकावटें, राम, कृष्ण, दयानन्द, देवीदेवता, विष्णु भगवान् के चौबीस अवतार, पूजा किसकी?

व. प.—पिशोरीलाल विनयकुमार डा. ददाहू (जिला सिरमौर हि. प्र.)।

पीस. एम. एल.

ये जालंधर के बस्तीगुजां मोहल्ले के निवासी थे। इनकी एक अंग्रेजी पुस्तक Life Sketch of Swami Dayanandji प्रकाशित हुई है। इसमें स्वामी दयानन्द तथा गुरु नानक की शिक्षाओं की समानता दिखाई गई है।

पुरुषोत्तमदास

श्री पुरुषोत्तमदास का जन्म १९०१ में हुआ। ये दृढ़ आर्यसमाजी थे। मथुरा इनका कार्यक्षेत्र रहा। इनके सुपुत्र श्री ईश्वरीप्रसाद प्रेम (प्रेमभिक्षु वानप्रस्थ) ने सत्य प्रकाशन और तपोभूमि पत्रिका के माध्यम से आर्यसाहित्य की प्रशंसनीय सेवा की है। इनका निधन २१ अप्रैल १९८७ को हुआ।

ले. का.—दयानन्दायन—मथुरा प्रसंग तक का स्वामी दयानन्द का पद्यात्मक जीवनचरित (१९८४)।

डॉ. पुष्पावती

वाराणसी जैसे विद्या केन्द्र में आर्यसामाजिक शिक्षा-पद्धति का अनुसरण करते हुए कन्या गुरुकुल की संचालिका डा. पुष्पावती का जन्म १५ अक्टूबर १९२५ को पटियाला (पंजाब) के एक सम्पन्न परिवार में हुआ। बाल्यकाल में ही इनकी आर्यसमाज के प्रति रुचि उत्पन्न हुई। पुनः आजीवन अविवाहित रहकर वेद प्रचार का संकल्प ले लिया। प्राइवेट रूप में बी. ए. की परीक्षा दी। तत्पश्चात् पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु से अष्टाध्यायी एवं महाभाष्य का अध्ययन किया। १९६० से वाराणासी में रहकर मातृ-मन्दिर कन्या गुरुकुल का संचालन कर रही है। डा. पुष्पावती ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से The Methods of Interpretation of the Vedas. विषय लेकर पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय से भी आपने 'विद्या-वारिधि' की उपाधि ली है। दिल्ली की वेदार्थ गोष्ठियों में आपने निरुक्त और वेदार्थ, वेदार्थ और ब्राह्मण ग्रन्थ आदि विद्वतापूर्ण निबन्ध पढ़े हैं।

व. प.—मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल डी. ४५/१२९ नई बस्ती रामापुरा, वाराणासी २२१००१।

पूर्णचन्द्र आर्य

अमृतसर जिले के कैरों ग्राम के निवासी थे। इन्होंने संस्कारविधि का उर्दू में अनुवाद किया है।

पूर्णचन्द्र एडवोकेट

आर्यसमाज के विख्यात नेता एवं कार्यकर्त्ता श्री पूर्णचन्द्र एडवोकेट का जन्म ७ मई १८८८ को नैनीताल (उत्तरप्रदेश) में हुआ था। इनके पिता श्री जवाहरलाल मूलतः आगरा के निवासी थे तथा प्रान्तीय गवर्नर के कार्यालय में काम करते थे। उन दिनों गवर्नर का कार्यालय ग्रीष्मकाल में नैनीताल में आ जाता था। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा इलाहाबाद में हुई। १९०४ में आपने मेरठ से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। कालान्तर में आपने आगरा रहकर बी. ए. तथा एल. एल. बी. की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं तथा वकालत के व्यवसाय में प्रवेश किया। इसी बीच आपका आर्यसमाज से सम्पर्क हुआ तथा वे सक्रिय रूप से आर्यसमाज का कार्य करने लगे। आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त (वर्तमान उत्तरप्रदेश) के मंत्री, प्रधान आदि उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर कार्य करने के उपरान्त आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान भी रहे। ८ जून १९७९ को आपका निधन हो गया।

ले. का.—१. कर्म व्यवस्था (१९४८), २. मनमंन्दिर, (१९४१), ३. विश्व की पहेली-(१९३७), ४. कहाँ छिपोगे-कहाँ बचोगे, ५. शान्ति कैसे ?, ६. दिव्यदयानन्द-नारायण गोस्वामी के सहलेखन में (१९९० वि.), ७. दयानन्द दीक्षा-शताब्दी का संदेश (१९५९), ८. चरित्र-निर्माण, ९. हमारा राष्ट्र, १०. युग निर्माण (१९६९), ११. दौलत की मार, १२. खेल तमाशा, १३. भ्रष्टाचार निरोध का मनोविज्ञान, १४. हमें क्या चाहिए ?, १५. अनुशासन का विधान, १६. चरित्र निर्माण, १७. ईश्वर उपासना, १८. धर्म और धन, १९. भ्रष्टाचार क्यों ?, २०. यज्ञ और पूर्णता, २१. नशाबंदी की सफलता, २२. सेवा के लिये पंचशील, २३. भ्रष्टाचार निरोध की योजना, २४. ईश्वर-प्राप्ति और उसके साधन, २५. ज्ञान की उत्पत्ति, 26. Path of Perfection, 27. The Code of Moral Hygiene, 28. Panchsheel for Service, 29. The Ten Principles of the Arya Samaj, ३०. जीवन के अनुभव : आत्मकथा (१९७२), ३१. भावनात्मक एकता, ३२. छुआछूत का कलंक।

पूर्णचन्द्र शर्मा

आपने स्वामी दयानन्द रचित यजुर्वेदभाष्य का सार लेकर 'यजुर्वेद भाषा-भाष्य' लिखा जो वेदप्रकाश यंत्रालय इटावा से १९०४ में प्रकाशित हुआ।

पं. पूर्णानन्द

शास्त्रार्थ महारथी पं. पूर्णानन्द सिंध प्रान्त के निवासी थे। ये बचपन में ही घर से निकल गये और साधु के वेश में यत्र तत्र भ्रमण करते हुए विद्याध्ययन करते रहे। इसी बीच एक आर्य संन्यासी स्वामी रामानन्द से आपकी भेंट हुई और उनके विचारों से प्रभावित होकर ये आर्यसमाजी बन गये। पंजाब के द्वाबा क्षेत्र में इन्होंने आर्यसमाज का प्रचार किया और पौराणिकों से अनेक शास्त्रार्थ किये। आपने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्त्वावधान में भी प्रचार कार्य किया। स्वामी रामानन्द के सम्पर्क में आने पर आपने भावावेश में संन्यास ले लिया था, किन्तु कालान्तर में बहुत सोच विचार के पश्चात् आपने गृहस्थ में प्रवेश करना उचित समझा और एक धर्मशीला नारी जानकी देवी से विवाह कर लिया। आपने ठाकुर प्रवीणसिंह के साथ धर्म प्रचारार्थ अफ्रीका महाद्वीप की भी यात्रा की थी। १९२३ में आपका निधन हुआ। आपकी एक ही प्रकाशित कृति 'ब्रह्म विचार व्याख्यान' का पता चलता है।

स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती

आपका जन्म सम्भल (जिला मुरादाबाद) में हुआ।

ले. का.—१. अध्यात्म विषय—मैं क्या हूं ? २. अधिदैव विषय—तू क्या है ? (२०१० वि.)।

स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती

आपका जन्म १९०० में मेरठ जिले के बूढपुर नामक ग्राम में हुआ। हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के अनन्तर आपने पुलिस विभाग में नौकरी की, किन्तु महात्मा

गाँधी के आह्वान पर सरकारी सेवा को त्याग दिया और आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। उस समय इनका नाम पं. पूर्णचन्द्र था। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में आपने २५ वर्ष तक प्रचार का कार्य किया। १८ जुलाई १९७१ को ये संन्यासाश्रम में प्रविष्ट हुए और स्वामी पूर्णानन्द का नाम ग्रहण किया। आर्यसमाज में प्रचलित ब्रह्मचारी कृष्णदत्त के प्रवचनों तथा ऋषि दयानन्द की अज्ञात जीवनी जैसे पाखण्डों के विरोध में आपने अपनी लेखनी चलाई और इस प्रकार की धूर्ततापूर्ण कार्यवाहियों का पर्दाफाश किया।

ले. का.—१. ब्रह्मचारी कृष्णदत्त बनाम शृंगी ऋषि पोलप्रकाश—२. योगी का आत्मचरित एक षड्यन्त्र है। (२०३८ वि.), ३. मानव शरीर और जीवात्मा (२०४१ वि.)।

वि. अ.—पं. पूर्णचन्द आर्य-ले. बलजीतसिंह आर्य बड़ौत

पं. प्रकाशचन्द्र कविरत्न

आर्यसमाज के उत्कृष्ट कवि, गायक तथा प्रचारक पं. प्रकाशचन्द्र कविरत्न का जन्म आश्विन शुक्ला ९ सं. १९६० वि. (१९०३) को अजमेर में हुआ। इनके पिता पं. बिहारीलाल कट्टर पौराणिक थे। इनका प्रारम्भिक शिक्षण डी. ए. वी. हाई स्कूल अजमेर में हुआ। आर्यसमाज में प्रविष्ट होने की प्रेरणा उन्हें राजस्थान के प्रसिद्ध धर्म प्रचारक पं. रामसहाय शर्मा ने दी थी। जीविका निर्वाह हेतु वे भड़ौच की एक मिल में लिपिक का कार्य करने लगे। उन्हीं दिनों अमृतसर में जलियांवाला-बाग हत्याकाण्ड हुआ जिसमें सैंकड़ों निर्दोष व्यक्ति मारे गये। इस भीषण घटना ने कविरत्नजी को विचलित कर दिया और वे नौकरी से त्यागपत्र देकर राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में जुट गये। जहां यह स्मरणीय है कि उनका मूल नाम 'दुर्गाप्रसाद' था। आर्यसमाज में प्रविष्ट होने पर उन्होंने अपना नाम 'प्रकाशचन्द्र' रख लिया। जब उन्होंने शुक्लतीर्थ (गुजरात) के मेले में ईसाई पादरियों द्वारा ग्रामीण, भोले भाले हिन्दुओं को ईसाई बनाते देखा, तो आर्यसमाज के प्रति उनकी श्रद्धा और अधिक बढ गई क्योंकि उन्हें आर्यसमाज के उपदेशक एवं प्रचारक ही ईसाई पादरियों का मुकाबिला करने में सन्नद्ध दीख पड़े। अब उन्होंने विधिवत् आर्यसमाज के उपदेशक के रूप में धर्म प्रचार आरम्भ किया। अजमेर में उन्हें कुं. चाँदकरण शारदा तथा पं. जियालाल आदि आर्य नेताओं का सान्निध्य तथा सहयोग प्राप्त हुआ।

१९२५ में कविरत्नजी ऋषि दयानन्द की जन्म-शताब्दी में भाग लेने मथुरा गये। वहां उनके गीत 'वेदों का डंका आलम में बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने' ने धूम मचा दी और प्रकाशजी को शीघ्र ही लोकप्रियता प्राप्त हो गई। कविता कामिनी कान्त पं. नाथूरामशंकर शर्मा को आप अपना काव्य गुरु मानते थे। १९३० के सत्याग्रह आन्दोलन में भी आपने भाग लिया और कारावास का दण्ड स्वीकार किया। कालान्तर में आप वात रोग से ग्रस्त होकर प्रायः अपंग से हो गये और अजमेर के पहाड़गंज मोहल्ले में रहने लगे। यहां पर ही ११ दिसम्बर १९७७ को उनका निधन हुआ। आनासागर तट पर उनका सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया था, जिसकी अध्यक्षता राजाधिराज सुदर्शनदेवजी शाहपुराधीश ने की थी।

ले. का.—१. प्रकाश भजनावली भाग-५, २. प्रकाश भजन सत्संग, ३. प्रकाशगीत ४ भाग, ४. प्रकाश तरंगिणी ५. कहावत कवितावली (२०२१ वि.), ६. गोगीत प्रकाश, (१९४५ ई.) ७. दयानन्द प्रकाश खंड १ महाकाव्य(१९७१), ८. राष्ट्रजागरण (चीन के आक्रमण के समय लिखी गई कविताएँ) ९. स्वामी श्रद्धानन्द गुणगान (२०३३ वि.)।

वि. अ.—प्रकाश अभिनन्दन ग्रन्थ—सं. भवानीलाल भारतीय (१९७१)।

श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा

श्रीमती प्रकाशवती का जन्म लाहौर (पाकिस्तान) में श्री अनन्तराम के यहां हुआ। इन्होंने शास्त्री, प्रभाकर तथा एम. ए. (हिन्दी) तक अध्ययन किया। दिल्ली के रघुमल आर्य कन्या विद्यालय में बहुत काल तक प्रधानाध्यापिका

के पद पर कार्य करने के पश्चात् आप सेवा निवृत्त हुईं। सम्प्रति दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में अवैतनिक उपदेशिका के रूप में कार्य करती हैं।

ले. का.—१. भक्ति संगीत सुधा, २. सामवेद संहिता का काव्यानुवाद (१९८८)।

व. प.—१४, जैन मंदिर राजावाजार, नई दिल्ली ११०००१.

प्रकाशवीर व्याकुल

कवि व्याकुल का जन्म १९३० में बुलन्दशहर जिले के वरहाना ग्राम में श्री सोहनसिंह के यहां हुआ। इनकी शिक्षा प्राथमिक स्तर की ही हुई किन्तु नैसर्गिक प्रतिभा ने इनमें काव्य रचना की शक्ति उत्पन्न की। अव तक इनके अनेक काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।

ले. का.—प्रकाश की किरणें, गीता ज्ञान प्रकाश (श्रीमद् भगवद्गीता का काव्यानुवाद १९७४), सत्यार्थप्रकाश का संक्षिप्त कवितानुवाद (२०४४ वि.), भव्य भारती प्रथम खण्ड (२०४५ वि.) उद्वोधन प्रकाश, भक्तिप्रकाश।

व. प.—ग्राम वरहाना (बुलन्दशहर).

पं. प्रकाशवीर शास्त्री

आर्यसमाज के अद्वितीय वक्ता, कुशल राजनीतिज्ञ तथा नेता पं. प्रकाशवीर शास्त्री का जन्म ३० दिसम्बर १९२३ को मुरादाबाद जिले के रहरा नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता श्री दिलीपसिंह त्यागी आर्यसमाजी विचारों के थे अतः उन्होंने अपने पुत्र को विद्याध्ययनार्थ गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर में प्रविष्ट कराया। आपका नाम 'प्रकाशचन्द्र' था। उस समय गुरुकुल में इसी नाम का एक अन्य छात्र अध्ययनरत था, अतः आपका नाम वदल कर 'प्रकाशवीर' कर दिया गया। आपने महाविद्यालय में रहकर 'विद्याभास्कर' तथा 'शास्त्री' की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। कालान्तर में आपने संस्कृत विषय लेकर आगरा विश्वविद्यालय से एम. ए. की परीक्षा भी प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

पं. प्रकाशवीर की आर्यसमाज तथा ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों में प्रगाढ़ आस्था थी। आपने १९३९ में हैदराबाद (दक्षिण) में आर्यसमाज द्वारा प्रारम्भ किये गये सत्याग्रह में भाग लिया, यद्यपि उस समय आपकी आयु मात्र १६ वर्ष की ही थी। अध्ययन समाप्त करने के उपरान्त आप आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के अन्तर्गत उपदेशक बन गये। आपके व्याख्यानों की धूम शीघ्र ही देश भर में फैल गई और आपकी सर्वत्र मांग रहने लगी। १९५७ के पंजाव हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भी आपने निष्ठापूर्वक भाग लिया। फलस्वरूप आप आर्यसमाज के सर्वमान्य नेता के रूप में उभरे। आर्यसमाज के उपदेशकों की स्थिति को सुधारने के लिये आपने अखिल भारतीय आर्य उपदेशक सम्मेलन का गठन किया तथा उसके दो अधिवेशन लखनऊ तथा हैदराबाद में आयोजित किये। १९५८ में आप लोकसभा के लिये गुड़गांव से खड़े हुए और सफल रहे। इस प्रकार आपका राजनीति में प्रवेश हुआ। इसके पश्चात् १९६२ और १९६७ के लोकसभा चुनावों में भी आप स्वतन्त्र प्रत्याशी के रूप में विजयी हुए। आपने अनेक देशों का भ्रमण किया था तथा आर्यसमाज के गौरव की वृद्धि के लिये सदा प्रयत्नशील रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के अध्यक्ष पद पर आप पर्याप्त काल तक रहे तथा मेरठ, कानपुर एवं वाराणसी में आर्यसमाज स्थापना शताब्दी के सफल समारोह आयोजित किये। १९७४ में आप परोपकारिणी सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। २३ नवम्बर १९७७ को एक रेल दुर्घटना में आपका निधन हो गया।

ले. का.—१. गोहत्या या राष्ट्रहत्या (२०११ वि.), २. वैदिक संध्या सार, ३. मेरे सपनों का भारत (२००९ वि.), ४. धधकता काश्मीर। प्रकाशवीर शास्त्री : (रचनात्मक भूमिका में (लेखों, पत्रों तथा भाषणों का संग्रह)।

वि. अ.—योगमंदिर का प्रकाशवीर शास्त्री श्रद्धांजलि अंक (मई १९७८) तथा आचार्य भगवानदेव द्वारा सम्पादित : सरस्वती पुत्र पं. प्रकाशवीर शास्त्री।

स्वामी प्रकाशानन्द सरस्वती

आर्यसमाज के प्रारम्भकाल में जिन संन्यासियों ने धर्म प्रचार में अपना योगदान दिया, उनमें स्वामी

प्रकाशानन्द सरस्वती का नाम उल्लेखनीय है। इनका जन्म १९१८ वि. में हुआ था। सुप्रसिद्ध संन्यासी स्वामी अच्युतानन्द इनके गुरु थे। स्वामी प्रकाशानन्द ने देश के विभिन्न स्थानों पर भ्रमण कर आर्यसमाज का प्रचार किया। उनके प्रचार कार्य का विवरण फर्रुखाबाद आर्यसमाज के मुखपत्र 'भारत सुदशा-प्रवर्तक' में प्रकाशित होता था। कालान्तर में वे जोधपुर को अपना केन्द्र बना कर रहने लगे थे। पंजाब में भी प्रायः जाते थे तथा कालेज विभाग के नेता महात्मा हंसराज से इनका स्नेह सम्बन्ध था।

जब आर्यसमाज में मांसाहार के औचित्यानौचित्य को लेकर विवाद चला तथा विघटन जैसी स्थिति उत्पन्न हुई तो स्वामी प्रकाशानन्द ने मांसाहार का ही समर्थन किया। उनकी इस मांस-पोषक नीति के कारण वे जोधपुर के महाराजा सर प्रतापसिंह के अत्यन्त निकट आ गये तथा इस राज्य से उन्हें विभिन्न प्रकार की सहायता एवं संरक्षण मिलने लगा। जब स्वामी प्रकाशानन्द खुले तौर पर मांसाहार का प्रचार करने लगे तो १८९५ में आर्य प्रतिनिधि सभा पश्चिमोत्तर प्रदेश (उ. प्र.) ने एक विज्ञप्ति प्रकाशित कर आर्यसमाजों को सूचित किया कि वे स्वामी प्रकाशानन्द को प्रोत्साहन न दें।

ले. का.—प्रार्थना प्रस्रवण—ईश्वर प्रार्थना से सम्बन्धित यह ग्रन्थ वेदमन्त्रों की विस्तृत व्याख्या के रूप में लिखा गया है। यत्र तत्र लेखक ने भक्ति भाव से पूर्ण अपनी कुछ पद्यात्मक रचनाओं को भी इसमें सम्मिलित किया है। ग्रन्थ का प्रकाशन महाराजा प्रतापसिंह की आर्थिक सहायता से ही हुआ था। उपदेश प्रस्रवण—विभिन्न आध्यात्मिक प्रसंगों को लेकर यह ग्रन्थ लिखा गया है। मारवाड़ के राजकीय मुद्रणालय में महाराजा प्रतापसिंह की अनुज्ञा और सहायता से यह ग्रन्थ १९५५ वि. में प्रकाशित हुआ था। अग्निहोत्र व्याख्या—१७ फरवरी १८९६ को कर्नल प्रतापसिंह के जोधपुर की वैदिक पाठशाला में आगमन पर यज्ञ के उपरान्त स्वामी प्रकाशानन्द ने जो प्रवचन किया, उसे ही इस पुस्तक में प्रकाशित किया गया है। विशेषतः महात्मा हंसराज के त्यागमय जीवन को व्याख्याकार ने अग्निहोत्र से उपमित किया है। अमृतवर्षा (१९०७), आया सो सुनाया (१९०९), ईसाई मत ढोल का पोल, गो माहात्म्य (१८८६), प्रार्थना स्रोत (१८९२)। ईसाई मत ढोल का पोल—स्वामी प्रकाशानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के ईसाई मत समीक्षा विषयक त्रयोदश समुल्लास को उपर्युक्त शीर्षक देकर प्रकाशित कराया। ग्रन्थान्त में कुछ भजन संग्रहीत हैं।

शिशु वर्ण बोध—धर्म शिक्षा की पुस्तक। श्री रामजी का दर्शन। ध्यातव्य है कि स्वामी प्रकाशानन्द की उपर्युक्त कृतियाँ कई वर्षों तक जसवन्त कॉलेज जोधपुर के रसायन-विभाग व स्टोर रूम में पड़ी रहीं। इस कोश के लेखक ने अपने अनुज डॉ. नवलकिशोर माथुर (अध्यक्ष- रसायन विभाग, जोधपुर विश्वविद्यालय) के सहयोग से इन पुस्तकों को अधिकृत कर उनकी आर्य पत्रों में चर्चा की तथा इनका उद्धार किया।

डा० प्रज्ञा देवी

आर्य विदुषी डॉ. प्रज्ञा देवी का जन्म ५ मार्च १९३७ को मध्यप्रदेश के सतना जिले के कोलगवां नामक ग्राम में श्री माताप्रसाद आर्य के यहां हुआ। प्रज्ञाजी का अध्ययन काशी में महापण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के निकट हुआ जहां रहकर इन्होंने वेद, वेदांग, दर्शन आदि ग्रन्थों का विशद् अध्ययन किया। १९६९ ई. में इन्होंने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से 'विद्यावारिधि' की उपाधि प्राप्त की। १२ जुलाई १९७१ को आपने काशी में जिज्ञासु स्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय की स्थापना की। १९७२ में इस विद्यालय का विधिवत् उद्घाटन हुआ। यहां कन्याओं के संस्कृत अध्ययन की सुचारु व्यवस्था की गई है। वेद, व्याकरण, दर्शन तथा अन्य प्राचीन वैदिक शास्त्रों की उच्चस्तरीय शिक्षा का यह एक प्रमुख केन्द्र है।

ले. का.—मंत्र मालिका (१९८३), देवसभा (१९८३), उरुधारा नारी (१९८५), स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश व्याख्यानमाला-(१९८७), नवग्रहों का शुभागमन (१९८८), उपर्युक्त के अतिरिक्त डॉ. प्रज्ञा ने पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु-कृत अष्टाध्यायी भाष्य के अवशिष्टांश को १९६८ में पूरा

किया है। पं. क्षेमकरणदास त्रिवेदी कृत अथर्ववेद भाष्य (१-४ काण्ड पर्यन्त) तथा उन्हीं के द्वारा गोपथ ब्राह्मण पर निर्मित भाष्य को आपने सम्पादित कर पुनःप्रकाशित किया।

व. प.—पाणिनि कन्या महाविद्यालय, बजरडीहा, तुलसीपुर, वाराणसी (उ. प्र.)।

प्रतापचन्द्र पण्डित

श्री प्रतापचन्द्र पण्डित का जन्म १९०३ में हुआ। आप पं. आत्माराम अमृतसरी के तृतीय पुत्र थे। आर्यसमाज माटुंगा बम्बई तथा बड़ौदा में रहकर आपने सामाजिक सेवा की।

इनकी लिखी 'कारेलीबाग ना ऋषि' शीर्षक गुजराती पुस्तक में पं. आत्मारामजी का जीवनचरित निबद्ध किया गया है। २१ मई १९७८ को आपका निधन हो गया।

प्रतापसिंह शास्त्री

इनका जन्म ७ अप्रैल १९४७ को हिसार जिले के ग्राम मतलौढा में श्री श्रीचन्द आर्य के यहां हुआ। इनकी शिक्षा गुरुकुल भैंसवाल तथा गुरुकुल कांगड़ी में हुई। तत्पश्चात् इन्होंने संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की। १९६८ से ये जाट व. मा. विद्यालय हिसार में संस्कृत का अध्यापन कर रहे हैं।

ले. का.—१. अलखपुरा से कलकत्ता—दानवीर सेठ छाजूराम की जीवनी, २. डॉ. रामजीलाल का जीवनचरित। इसके अतिरिक्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपके धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक विषयों पर अनेक लेख छपे हैं।

व. प.—आर्यसमाज नागौरी गेट, हिसार (हरियाणा)

प्रभाकरदेव आर्य

श्री आर्य का जन्म राजस्थान के हिन्डौन कस्बे में श्री प्रह्लादकुमार के यहां हुआ। आप आर्यवीर दल तथा आर्यसमाज की गतिविधियों में प्रारम्भ से ही रुचि लेते रहे हैं। वे स्थानीय आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता हैं।

ले. का.—स्वतन्त्रता तथा विद्रोही (काव्य संग्रह, १९७१)।

व. प.—आर्य स्टोर, कटरा बाजार, हिन्डौन सिटी-३२२२३० (राजस्थान)।

श्री प्रभाकर शामराव बोरकर

श्री बोरकर का जन्म २८ नवम्बर १९५० को विदर्भ प्रांत के उमरी गांव में हुआ। इनकी शिक्षा बी. कॉम. तथा एम. ए. (हिन्दी) तक हुई है। विश्ववेद परिषद् की 'वेदरत्न' तथा आर्य युवक परिषद् की 'सत्यार्थ शास्त्री' उपाधियां भी इन्होंने प्राप्त की हैं। दस वर्ष तक इन्होंने महाराष्ट्र राज्य के जलपूर्ति योजना विभाग में कार्य किया। तत्पश्चात् १९७८ से सामान्य बीमा निगम आकोला में कार्य कर रहे हैं। आप आर्यसमाज आकोला के अन्तरंग सभासद हैं। इन्होंने डॉ. कृष्णवल्लभ पालीवाल लिखित ग्रंथ 'वेदों में क्या है?' का मराठी भाषा में अनुवाद 'वेदां मध्ये काय आहे?' शीर्षक से किया है जो १९८४ में प्रकाशित हुआ।

महात्मा प्रभुआश्रित

महात्मा प्रभुआश्रित का जन्म १३ फरवरी १८८७ को जिला मुजफ्फरगढ (पाकिस्तान) के जतोई नामक ग्राम में श्री दौलतराम के यहां हुआ। इनका मूल नाम टेका या टेकचन्द था। बाद में वानप्रस्थ ग्रहण कर श्री टेकचन्द महात्मा प्रभुआश्रित के नाम से विख्यात हुए। यज्ञ और वैदिक भक्तिवाद के प्रति आपकी अपार श्रद्धा थी। आपने वैदिक भक्ति साधन आश्रम रोहतक की स्थापना की तथा आर्यसमाज में वैदिक कर्मकाण्ड तथा ईश्वरोपासना का प्रचार किया। १६ मार्च १९६७ को आपका निधन हुआ।

ले. का.—आपकी रचनाओं की संख्या बहुत है, जिनमें से कुछ प्रमुख निम्न हैं—संध्या सोपान, यज्ञ रहस्य, अध्यात्मसुधा, आध्यात्मिक अनुभूतियां (१९६०), अध्यात्म-जिज्ञासा, हवनमंत्र, गायत्री रहस्य (१९६९), गायत्री कुसुमांजलि, कर्म भोगचक्र, पथप्रदर्शक, पृथ्वी का स्वर्ग, सप्तरत्न (१९५८), सप्त सरोवर (१९६०), दुर्लभ वस्तु,

दिव्यपथ, दृष्टान्त मुक्तावली, जीवन यज्ञ, बिखरे सुमन, गृहस्थ आश्रम प्रवेशिका, पावनयज्ञ प्रसाद, प्रभु का स्वरूप, प्रगतिपथ, व्रत अनुष्ठान प्रवचन (१९६३), भाग्यवान गृहस्थी, मनोबल, मर्यादा का महत्त्व, सेवाधर्म, सत्यमणि गीता, उत्तम शिक्षा, उत्तम जीवन, अमृत के तीन घूंट, अमृत प्रसाद, अन्तः साधना, अद्भुत किरण, ईश्वर आराधना, गृहस्थ सुधार, चमकते अंगारे, डरो, वह बड़ा जबरदस्त है, योग युक्ति, सौम्य सन्त, व्रत अनुष्ठान, घर वर की खोज (१९५३), सम्भलो, स्वप्न गुरु तथा देवों का शाप (१९५९), निर्गुण-सगुण उपासना, निराकार साकार पूजा, राष्ट्रभृत यज्ञ, आत्मचरित्र, कल्याणपथ, राष्ट्र रक्षा के आधार, (१९६३), जीवन सुधार (१९६९), मंत्र योग (तीन भाग)।

वि. अ.—महात्मा प्रभुआश्रितजी का जीवनचरित (३ खण्डों में) ले.—स्वामी विज्ञानानन्द सरस्वती।

डा. प्रभुदयाल मीतल

ब्रजभाषा और ब्रज संस्कृति के मर्मज्ञ डा. मीतल का जन्म १९०२ में मथुरा में हुआ। ब्रजभाषा और कृष्ण भक्ति शाखा के हिन्दी कवियों के सम्बन्ध में डा. मीतल का विशेष अध्ययन था। आपने ब्रजमण्डल का विस्तृत एवं खोजपूर्ण इतिहास लिखा था। इसमें स्वामी दयानन्द के विद्यागुरु दण्डी विरजानन्द के मथुरा आगमन और प्रवास का प्रामाणिक इतिवृत्त निबद्ध किया गया था। ऋषि दयानन्द की दीक्षा शताब्दी के अवसर पर १९५९ में आपकी शोधपूर्ण कृति 'मथुरा में स्वामी विरजानन्द का विद्यालय' शीर्षक छपी। इसे आर्यसमाज मथुरा ने प्रकाशित किया था। इसमें दण्डीजी की पाठशाला, उसका छात्र समुदाय तथा स्वामी दयानन्द के मथुरा में रहकर विद्याध्ययन के सम्बन्ध में नवीन जानकारियां उपलब्ध कराई गई थीं।

९ दिसम्बर १९८८ को डा. मीतल का निधन हो गया।

स्वामी प्रभूतानन्द (पं. प्रभुदयाल)

पं. प्रभुदयाल उत्तरप्रदेश के बांदा जिले के ग्राम तेरही के निवासी थे। स्वामी दयानन्द से इनकी भेंट १९३३ वि. में लखनऊ में हुई थी। स्वामीजी से इनका पत्र व्यवहार भी हुआ था। पं. प्रभुदयाल ने मीमांसा को छोड़कर अवशिष्ट पांच आस्तिक दर्शनों पर भाष्य लिखा है। इनकी एक अन्य कृति 'समीक्षाकर' शीर्षक है जो षड्दर्शनों में अविरोध सिद्ध करने की दृष्टि से लिखी गई है। यह पुस्तक मूलतः संस्कृत में है किन्तु साथ में हिन्दी अनुवाद भी दिया गया है। १ फरवरी १८९८ को वैदिक पुस्तक प्रचारक फण्ड मेरठ द्वारा यह स्वामी प्रेस मेरठ में मुद्रित होकर प्रकाशित हुई थी। कालान्तर में पं. प्रभुदयाल संन्यासी बन गये और स्वामी प्रभूतानन्द नाम ग्रहण कर लिया। ऐसा अनुमान होता है कि ऋषि दयानन्द की विचारधारा से प्रभावित होने पर भी आप आर्यसमाज के औपचारिक सदस्य नहीं थे और न इन्होंने आर्यसमाज के सभी सिद्धान्तों को ही यथातथ रूप में स्वीकार किया था। १९०५ में वे वैदिक-यन्त्रालय अजमेर में संशोधक के पद पर रहे। उनकी भेंट पं. तुलसीराम स्वामी से गुरुकुल वृन्दावन में हुई थी। स्वामी प्रभूतानन्द स्वामी सर्वदानन्दजी द्वारा स्थापित साधु-आश्रम (काली नदी का पुल-हरदुआगंज) में रहे थे।

ले. का.—तत्त्वमार्तण्ड (१९७४ वि.) समीक्षाकर तथा दर्शनभाष्य।

पं. प्रयागदत्त अवस्थी

अवस्थीजी हरदोई (उत्तरप्रदेश) के निवासी थे। आप पुरानी पीढ़ी के आर्य लेखक तथा उपदेशक थे।

ले. का.—१. यज्ञोपवीत (१९४५ वि.), २. भजन-भास्कर।

डा. प्रशस्यमित्र शास्त्री

श्री शास्त्री का जन्म १ जुलाई १९४७ को बिहार प्रांत के सीवान जिलान्तर्गत दोन नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता पं. जगन्नाथप्रसाद आर्य आर्यसमाज कानपुर के प्रमुख कार्यकर्त्ता तथा पुरोहित थे। पं. प्रशस्यमित्र ने संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से १९७० में शास्त्री परीक्षा प्रथम स्थान प्राप्त कर उत्तीर्ण की। १९७२ में इन्होंने कानपुर विश्वविद्यालय से एम. ए. परीक्षा संस्कृत लेकर उत्तीर्ण की। यहां भी उनका स्थान सर्वप्रथम रहा।

१९७३ से ये फिरोज गांधी कॉलेज रायबरेली में संस्कृत के प्राध्यापक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

ले. का.—संस्कृत गीतमाला (१९७६), हास्य विलास (१९८४) (संस्कृत व्यंग्य काव्य) संस्कृत व्यंग्य विलास, आचार्य महीधर और स्वामी दयानन्द का माध्यन्दिन भाष्य: तुलनात्मक अध्ययन (काशी विद्यापीठ से स्वीकृत पी-एच.डी. शोध प्रबन्ध, १९८४)। डा. मित्र संस्कृत में हास्य व्यंग्य की रचनाएँ लिखने के कारण विशेष ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। आपकी ऐसी पद्य कृतियां संस्कृत के प्रमुख पत्रों में प्रायः छपती हैं।

व. प.—बी. २९ आनन्दनगर, जेलरोड, रायबरेली (उ. प्र.)।

डा. प्रशान्तकुमार वेदालंकार

सुयोग्य लेखक तथा वक्ता डा. प्रशान्त वेदालंकार का जन्म २१ दिसम्बर १९३७ को मुजफ्फरगढ़ जिले (पाकिस्तान) के सीतापुर गांव में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री वासुदेव विद्यालंकार तथा माता का नाम सीता देवी था। गुरुकुल कांगड़ी से आपने २०१५ वि. (१९५९) में वेदालंकार की उपाधि ग्रहण की। दिल्ली विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. की परीक्षा देने के पश्चात् आपने 'वैदिक साहित्य में नारी' विषय लेकर पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। हंसराज कालेज दिल्ली में आप हिन्दी के प्राध्यापक हैं। आपातकालीन स्थिति में आपको कारावास की यातनाएं सहन करनी पड़ीं। जेल से मुक्त होने पर आपने दिल्ली नगर परिषद् का चुनाव लड़ा और सदस्य निर्वाचित हुए।

ले. का.—वैदिक साहित्य में नारी (शोध प्रबन्ध), महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित राजव्यवस्था, (१९७५), धर्म का स्वरूप (स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों में) (१९८३), जीवन के पाँच स्तम्भ (१९८३), आर्यसमाज की भावी रूपरेखा।

व. प.—७/२ रूपनगर, दिल्ली-११०००७

डा. प्रह्लादकुमार

सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डा. प्रह्लादकुमार का जन्म पश्चिमी पाकिस्तान के मुजफ्फरगढ़ जिले की अलीपुर तहसील के सीतापुर नामक ग्राम में ११ सितम्बर १९४४ को हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी में हुई। तत्पश्चात् आपने कालेजीय शिक्षा ग्रहण की और १९६७ में हंसराज कालेज दिल्ली से संस्कृत में एम. ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। १९७३ में दिल्ली विश्वविद्यालय से आपने 'ऋग्वेद में अलंकार' विषय लेकर पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। इसके अनन्तर आप पी.जी. डी.ए.वी. कालेज, नई दिल्ली में संस्कृत के प्राध्यापक बन गये। आपका मधुमेह की बीमारी से १५ जून १९७७ के दिन निधन हो गया।

ले. का.—१. ऋग्वेदे अलंकारा: (पी-एच. डी. का शोध प्रबन्ध) २. वैदिक उदात्त भावनाएं (१९७५)।

श्री प्रह्लाद रामशरण

फ्रेंच भाषा में स्वामी दयानन्द के जीवन चरित के लेखक श्री प्रह्लाद रामशरण का जन्म ४ अक्टूबर १९३७ को मॉरिशस देश के आमोरी नामक ग्राम में हुआ। प्रारम्भ में ये अपने देश के शिक्षा विभाग में अध्यापक बने और कुछ समय पश्चात् उच्चतर शिक्षा के लिये भारत आये। १९७०-७३ की अवधि में दिल्ली रहकर इन्होंने भारत में आर्यसमाज की गतिविधियों का अध्ययन किया। १९७३ में ये बी.ए. की डिग्री लेकर स्वदेश लौटे तथा मॉरिशस की आर्यसामाजिक गतिविधियों में भाग लेने लगे। आजकल ये अपने देश के रायल कालेज के प्राच्य विद्या विभाग के अध्यक्ष हैं।

ले.का.—Arya Samaj in Mauritius (मॉरिशस में आर्यसमाज आंदोलन का इतिहास, १९७०), स्वामी दयानन्द सरस्वती की फ्रेंच भाषा में जीवनी (१९८३), डा. शिवसागर रामगुलाम की राजस्थान यात्रा, मॉरिशस आर्यसमाज के चमकते सितारे (१९८८), Mauritius Arya-Samaj in a Nutshell (1984), इनके अतिरिक्त आपने मॉरिशस देश के इतिहास, लोक साहित्य और संस्कृति पर भी अनेक ग्रन्थ लिखे हैं।

व. प.—३९, महर्षि दयानन्द मार्ग बो बांसा (Beau Bassin—(मॉरिशस).

पं. प्रियदर्शन सिद्धान्तभूषण

बंगला भाषा में आर्य साहित्य के प्रणेता पं. प्रियदर्शन का जन्म १९१० (ज्येष्ठ १३१६ बंगाब्द) में बंगाल के वर्धमान जिले के केन्दुआ ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम श्री नवलकुमार तथा माता का गिरिबाला देवी था। प्रारम्भिक शिक्षा के पश्चात् बंगला, अंग्रेजी और संस्कृत का ज्ञान अर्जित किया। राजनैतिक क्षेत्र में भी आपकी रुचि रही और स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान कारावास भी सहा। आर्यसमाज से इनका परिचय पं. शंकरनाथ तथा पं. दीनबन्धु के द्वारा हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल ने इन्हें दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर में अध्ययनार्थ भेजा। यहां स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी के सान्निध्य में आपने शास्त्रीय एवं सैद्धान्तिक अध्ययन किया। इसी विद्यालय से 'सिद्धान्तभूषण' की उपाधि ग्रहण कर पण्डित प्रियदर्शन प्रचार क्षेत्र में उतरे और बंगाल को अपनी कार्यस्थली बनाया। इन दिनों कलकत्ता से आप 'वेदमाता' नामक एक बंगला मासिक का सम्पादन कर रहे हैं। यह मासिक पत्रिका वैदिक साहित्य पीठ नामक संस्था से छपती है।

ले. का.—ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का बंगानुवाद—सत्यार्थप्रकाश (२०३६ वि.), आर्याभिविनय (१९८५), व्यवहारभानु, आर्योद्देश्यरत्नमाला (१३८१ बंगाब्द), पूना प्रवचन (१९८५), काशी-हुगली शास्त्रार्थ, यजुर्वेद भाष्य (सम्पूर्ण)—आर्यसमाज कलकत्ता द्वारा पुरस्कृत।

हिन्दी ग्रन्थों के बंगला अनुवाद—अयोध्याप्रसाद वैदिकमिशनरी कृत ओंकार माहात्म्य, नारायण स्वामी कृत प्राणायाम रहस्य, सिद्धगोपाल कविरत्न कृत बहनों की बातें का बंगला अनुवाद–वैदिक धर्मधारा, उमाकान्त उपाध्याय लिखित आर्यसमाज कलकत्ता का इतिहास।

कर्मकाण्ड विषयक ग्रन्थ—संध्योपासनम्, भक्तिज्ञान-भजनावली, सत्संग प्रकाश, देवयज्ञ, विवाहसंस्कार-विधि (१३६० बंगाब्द)।

अन्य ग्रन्थ—आमरा आर्य, यथार्थता, कामात्मा संघर्ष, मानव धर्मेर स्वरूप (राजशाही कॉलेज में प्रदत्त व्याख्यान) पुरीर जगन्नाथ (काव्य)

व. प.—८३/१-विवेकानन्द रोड, कलकत्ता-७००००६.

श्री प्रियव्रत दास

उड़िया भाषा में वैदिक साहित्य का प्रणयन करने वाले श्री प्रियव्रत दास का जन्म १ जुलाई १९३२ को उत्कल प्रान्त के गंजाम जिले के अन्तर्गत पोलसरा गांव में हुआ। इनके पिता पं. लिंगराज शर्मा अग्निहोत्री प्रसिद्ध आर्यसमाजी तथा समाज सुधारक थे। १९४८ में मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् श्री दास ने पटना इंजीनियरिंग कालेज में प्रवेश किया और इंजीनियरिंग की स्नातक उपाधि प्राप्त की। पटना में निवास करते हुए ही वे आर्यसमाज के कतिपय विद्वानों के सम्पर्क में आये जिनमें पं. वेदव्रत वानप्रस्थी (स्वामी अभेदानन्द) तथा पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के नाम उल्लेखनीय हैं। इस समय आर्यसमाज के प्रति उनकी रुचि और अधिक बढ़ी। अध्ययन समाप्त करने के पश्चात् वे अपने उड़ीसा राज्य के जन कार्य विभाग में सहायक अभियंता के पद पर नियुक्त हुए। स्नातकोत्तर अध्ययन के लिये वे १९६६-६८ की अवधि में इंग्लैण्ड में रहे। १९६१ में वे अधिशासी-अभियन्ता बनाये गये। १९८२ में वे अपने विभाग में अधीक्षण अभियंता के पद पर नियत किये गये। तत्पश्चात् अपने राज्य के मुख्य अभियन्ता पद से उन्होंने अवकाश ग्रहण किया। अब वे एक समर्पित उपदेशक के रूप में धर्म प्रचार करते हैं।

पेशे से इन्जीनियर होने पर भी श्री दास की रुचि साहित्य लेखन की ओर है।

ले. का.—AryaSamaj and Indian Freedom Movement (1980). वेदमनुष्य कृत कि ?—वेद विषयक यह विवेचनात्मक ग्रन्थ श्री दास की सर्वोत्कृष्ट रचना है। उड़ीसा साहित्य अकादमी ने इसे १९६० में पुरस्कृत किया था। ऋग्वेद सौरभ, (१९७२) यजुर्वेद सौरभ, सामवेद सौरभ (१९७५), चतुर्वेद सूक्ति सहस्रिका (१९७६), अथर्ववेद सौरभ, वैदिक नित्यकर्म विधि, वैदिक विवाह-

पद्धति (१९८४), वैदिक अन्त्येष्टि संस्कार और श्राद्ध-निर्णय (१९८३)। वैदिक धर्म प्रश्नोत्तरी, आर्यसमाज-परिचय (१९८४), आपने प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार लिखित 'आर्य संस्कृति के मूल तत्त्व' शीर्षक महत्त्वपूर्ण-ग्रन्थ का उड़िया भाषा में अनुवाद भी किया है। पं. राजेन्द्र कृत भारत में मूर्तिपूजा का उड़िया अनुवाद।

प्रियव्रतदास आर्य प्रतिनिधि सभा उड़ीसा के मंत्री हैं। आपका उपर्युक्त साहित्य वैदिक अनुसंधान प्रतिष्ठान भुवनेश्वर द्वारा प्रकाशित हुआ है।

व. प.—१३९-शहीदनगर, भुवनेश्वर (उड़ीसा).

आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति

वेदों के विख्यात विद्वान् तथा व्याख्याता पं. प्रियव्रत का जन्म १ आश्विन १९६३ वि. (१९०६) को पानीपत तहसील के अन्तर्गत भाऊपुर ग्राम में हुआ। यह तिथि हमने गुरुकुल कांगड़ी से प्रकाशित स्नातक परिचायिका से ली है। आचार्य प्रियव्रत द्वारा प्रेषित विवरण में उनकी जन्मतिथि प्रथम भाद्रपद १९५८ वि. अंकित है। इनके पिता का नाम श्री विजयसिंह था। १९८२ वि. (१९२५) में इन्होंने गुरुकुल कांगड़ी से 'वेदवाचस्पति' की उपाधि प्राप्त की और स्नातक बने। प्रारम्भ में आपने आर्य-प्रतिनिधि सभा पंजाब में कार्य किया तथा सभा के मुखपत्र 'आर्य' के सम्पादक रहे। १९३५ से १९४३ तक आर्य-उपदेशक विद्यालय लाहौर के आचार्य पद पर कार्य किया। १९४३ में गुरुकुल कांगड़ी में वेद विभाग में नियुक्त हुए और विभागाध्यक्ष, आचार्य तथा उपकुलपति के पदों पर १९६७ पर्यन्त रहे। पुनः १९७१ तक कुलपति के पद पर भी कार्य किया। १९७६ में इन्हें विद्यामार्तण्ड की मानद उपाधि गुरुकुल कांगड़ी द्वारा प्रदान की गई। सम्प्रति ज्वालापुर में अवकाश का जीवन व्यतीत करते हुए लेखन कार्य में संलग्न हैं। आर्यसमाज सान्ताक्रूज बम्बई ने उन्हें १९८७ में वेद वेदांग पुरस्कार से सम्मानित किया था।

ले. का.—वरुण की नौका—(ऋग्वेद के वरुण सूक्तों की भावपूर्ण व्याख्या २ भाग, १९४६), वेदोद्यान के चुने हुए फूल—वेद मन्त्रों की व्याख्या (१९५४), वेद का राष्ट्रीय-गीत—अथर्ववेद के पृथिवीसूक्त की व्याख्या (२०१२ वि.), मेरा धर्म (निबन्ध संग्रह-१९५७), वैदिक अर्थ व्यवस्था (१९७०), समाज का कायाकल्प (१९८३), वेदों के राजनीतिक सिद्धान्त ३ भाग (१९८३)—इस वृहद् ग्रन्थ में वेद मंत्रों पर आधारित, वेद प्रतिपादित राजनीतिक सिद्धान्तों का व्यापक समीक्षण किया गया है। १९८४ में इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ का विमोचन तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने किया था।

व. प.—यशनिवास, आर्यनगर, ज्वालापुर (हरिद्वार)।

श्रीमती प्रियंवदा गुप्ता

आर्यसमाज के प्रसिद्ध लेखक तथा प्रकाशक श्री चिम्मन लाल वैश्य की पुत्री श्रीमती प्रियंवदा देवी का जन्म शाहजहांपुर के तिलहर कस्बे में १८९६ में हुआ। आपका विवाह अलीगढ़ के श्री विश्वम्भरसहाय एडवोकेट के साथ हुआ था। आपने अपने पिता के आर्यसमाजी विचारों एवं संस्कारों को पूरी निष्ठा के साथ ग्रहण किया।

श्रीमती गुप्ता अपने नगर के समाज कल्याण बोर्ड की अध्यक्षा रहीं तथा उन्होंने अलीगढ़ जिले की प्रथम महिला आनरेरी मजिस्ट्रेट का भी कार्य किया। आपने अनेक उपन्यास लिखे जिनमें आपके आर्यसमाजी विचारों की झलक मिलती है। १९७२ ई. में आपका निधन हुआ।

ले. का.—कलियुगी परिवार का एक दृश्य (१९१६), आनन्दमयी रात्रि का स्वप्न (१९१७), धर्मात्मा चाची और अभागा भतीजा (१९१८), हमारी दशा।

प्रीतम अमृतसरी

नाम से ही विदित होता है कि ये अमृतसर के निवासी थे।

ले. का.—माँस भक्षण पर महर्षि दयानन्द की सम्मति (१९३५).

प्रेमचन्द शास्त्री

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के स्नातक थे तथा विद्याभास्कर एवं काव्यतीर्थ उपाधियाँ आपने प्राप्त की

थीं। पर्याप्त समय दिल्ली में व्यतीत हुआ और आर्यसामाजिक लेखन से जुड़े रहे।

इनका निधन २९ जनवरी १९८५ को दिल्ली में हुआ।

ले. का.—वेद और विज्ञान (१९९४ वि.), कर्मयोगी कृष्ण, महर्षि दयानन्द सरस्वती, संक्षिप्त रामायण, बालमहाभारत।

आपने वीर सावरकर तथा डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी के जीवनचरित भी लिखे हैं।

प्रेमप्रकाश आर्य

राजस्थान के नागौर जनपदान्तर्गत लाडनूं कस्बे के निवासी श्री आर्य का जन्म श्री श्रीचंदजी के यहां कार्तिक अमावस्या २०१२ वि. को हुआ। आपकी शिक्षा एम. ए. (इतिहास) तक हुई है। ये अपने नगर की आर्य युवकपरिषद् के सक्रिय संचालक हैं। 'आर्य आभा' और 'युवाज्योति' का सम्पादन करने के अतिरिक्त अपने 'वैदिक धर्मप्रवेशिका' नामक एक उत्तम धर्मशिक्षा विषयक पुस्तक लिखी है जो उक्त परिषद् से २०३९ वि. में छपी।

व. प.—आर्यसमाज लाडनूं (नागौर).

महात्मा प्रेमप्रकाश वानप्रस्थी

इनका जन्म आश्विन शुक्ला २ सं. १९८५ (वि. १९२८) को हुआ। इनका जन्मस्थान पंजाब के संगरूर जिले के अन्तर्गत धूरी नामक कस्बा है। इनके पिता का नाम श्री कुंदनलाल तथा माता का नाम श्रीमती लाजवन्ती था। आर्यसमाज में दीक्षित होने के कारण इन्होंने हिन्दी एवं संस्कृत का पर्याप्त ज्ञान अर्जित किया। व्यवसाय की दृष्टि से ये व्यापार करते रहे। १० अप्रैल १९८३ को इन्होंने स्वामी सर्वानन्दजी से वानप्रस्थ की दीक्षा ग्रहण की।

ले. का.—वीर तरंग, जीवनामृत, रचयिता की अद्भुत रचना, आत्मध्वनि। इनके अतिरिक्त विभिन्न पत्रों में आपके अनेक उल्लेखनीय निबंध छपे हैं।

व. प.—आर्य कुटिया, डा. धूरी (संगरूर) १४८०२४.

म. प्रेमभिक्षु (ईश्वरीप्रसाद प्रेम)

निष्ठावान प्रचारक, कार्यकर्ता, लेखक व पत्रकार श्री ईश्वरीप्रसाद प्रेम का जन्म मथुरा जिले के करवै (देवनगर) में श्रावण कृष्णा ९, सं. १९८१ वि. को हुआ। इनके पिता श्री पुरुषोत्तमदासजी निष्ठावान आर्यसमाजी तथा कर्मकाण्डी थे। श्री प्रेम की शिक्षा एम. ए., साहित्यरत्न तथा सिद्धान्तशास्त्री तक की है।

आप मथुरा के सक्रिय आर्यसमाजी हैं। १९४२ में आप आर्यसमाज तिलकद्वार मथुरा के सदस्य बने। १९४९ से १९५८ तक मथुरा जिला आर्य उपप्रतिनिधि सभा के मंत्री रहे। १९५४ में आपने तपोभूमि मासिक का प्रकाशन आरम्भ किया, जो निरन्तर प्रकाशित हो रही है। १९६० में आपने विरजानन्द वैदिक साधनाश्रम की स्थापना की तथा इसके माध्यम से वैदिक परिवार निर्माण तथा वैदिक प्रचारक निर्माण का कार्य कर रहे हैं। १९७८ में आपने वानप्रस्थ आश्रम की दीक्षा ग्रहण की और प्रेमभिक्षु के नाम से प्रसिद्ध हुए।

ले. का.—१. शुद्ध रामायण का सम्पादन-मूल लेखक पं. सन्तराम, २. शुद्ध कृष्णायन, शुद्ध महाभारत, ३. मानसपीयूष (रामचरित मानस का संक्षिप्त सम्पादित संस्करण), ४. सुमंगली (वैदिक विवाह पद्धति), ५. रामायण-एक सरल अध्ययन, ६. नित्यकर्मविधि (सम्पादित ग्रन्थ), ७. दादी-पोती की बातें, ८. गायत्री गौरव, ९. विषपान-अमृतदान, १०. वैदिक स्वर्ग की झांकियां, ११. योगदर्शन (सम्पादित), १२. पारिवारिक कहानियां, १३. संगीत रत्नाकर (सम्पादित), १४. राष्ट्र निर्माण गीतांजलि (सम्पादित), १५. अध्यात्म गीतांजलि (सम्पादित), १६. शिव गीतांजलि (सम्पादित), १७. पर्वचन्द्रिका (पूर्वार्द्ध व उत्तरार्द्ध, सम्पादित), १८. शुद्ध हनुमच्चरित, १९. शुद्ध सत्यनारायण कथा, २०. महाभारत—एक सरल अध्ययन, २१. शुद्ध मनुस्मृति, २२. भारतवर्ष का शुद्ध इतिहास, २३. चार मित्रों की बातें, २४. बोध कथायें (सम्पादित), २५. आर्यसमाज और मानव निर्माण, २६. श्रीकृष्ण संदेश, २७. रामायण काल, २८. रामभक्ति रहस्य, २९. बाल शिक्षा, ३०. यज्ञमय जीवन (सात मंत्रों की व्याख्या), ३१. आचार्य श्रीराम शर्मा: एक सरल चिंतन (गायत्री परिवार के संस्थापक श्रीराम शर्मा के पाखण्डों का खण्डन), ३२. दयानन्द स्मृति ग्रन्थ सम्पादन १९८३).

बालोपयोगी साहित्य—मील के पत्थर, बाल धर्म-शास्त्र, बाल मनुस्मृति, बाल गीतांजलि।

व. प.—सत्यप्रकाशन, वृन्दावन मार्ग मथुरा, (उ.प्र.)

पं. प्रेमशरण 'प्रणत'

इस्लाम विषयक अनेक महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक ग्रन्थों के प्रणेता तथा 'कुलियात आर्य मुसाफिर' के अनुवादक श्री प्रेमशरण प्रणत का जन्म आगरा जिले के पैंतखेड़ा नामक ग्राम में १५ अगस्त १८९१ को हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा गांव में ही हुई। तदुपरान्त आपने आगरा के एक हाई स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। पश्चात् वे आर्य मुसाफिर विद्यालय आगरा में प्रविष्ट हुए और यहां रहते हुए आपने अरबी तथा फारसी का अध्ययन किया। मुसाफिर विद्यालय के अध्ययन की समाप्ति के उपरान्त आप सर्वात्मना आर्यसमाज की सेवा में लग गए। आप में राष्ट्र भावना कूट कूट कर भरी थी, फलतः आपने १९२१ में सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और महात्मा गाँधी द्वारा संचालित असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े। १९४२ में आपने भारत छोडो आन्दोलन में भाग लिया तथा कई बार जेल की यातनायें सहीं।

श्री प्रणतजी का कार्यक्षेत्र आगरा था। यहाँ आपने एक प्रेस तथा उसके साथ-साथ 'प्रेम पुस्तकालय' नामक प्रकाशन संस्था प्रारम्भ की। इसी संस्था से आपके अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ छपे। १९५६ में आप दिल्ली आ गए और एक शिक्षा संस्था का संचालन करते हुए समाजसेवा में संलग्न रहे। २५ अगस्त १९८० को आपका निधन हो गया।

ले. का.—आर्य पथिक ग्रन्थावली—दो भाग, कुरान का हिन्दी अनुवाद—सूरए वकर (१९८२ वि.), विदुर-नीति, चाणक्यनीति तथा शुक्रनीति के हिन्दी अनुवाद, देवदूत दर्पण—(सामी मज़हबों के पैगम्बरों की विचित्र दास्तान), मोहम्मद साहब का विचित्र जीवन चरित, यह पुस्तक यद्यपि प्रणतजी ने ही लिखी थी परन्तु इसे पं. कालीचरण शर्मा आर्य मुसाफिर के नाम से प्रकाशित किया गया।

आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद

श्री आजाद का जन्म पंजाब के एक तथाकथित अन्त्यज परिवार में हुआ। आर्यसमाज और महात्मा गांधी की शिक्षाओं के सम्पर्क में आकर वे देश के स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े। पंजाब के कैरों मंत्रिमण्डल में वे मंत्री पद पर रहे। पंजाब विश्वविद्यालय की सिनेट के सदस्य, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति तथा आर्य-प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान के पद पर कार्य करने का अवसर भी उन्हें मिला। उनका निधन १९८५ में हो गया।

ले. का.—आर्यसमाज दा दिग्दर्शन (पंजाबी), सत्यार्थ-प्रकाश की शिक्षाएँ (१९८१), गुरु रविदास का जीवन-चरित।

फतहकरण उज्ज्वल

डिंगल भाषा के रससिद्ध कवि श्री फतहकरण उज्ज्वल का जन्म जोधपुर राज्य के ऊजलां ग्राम में १८५२ में हुआ। आपने अपने अध्ययनकाल में काव्य, व्याकरण, ज्योतिष, धर्मशास्त्र आदि का विस्तृत अनुशीलन विविध गुरुओं से किया। अपने गुणों के कारण इन्हें जोधपुर के महाराजा जसवन्तसिंह के दरबार में सम्मान मिला। जीवन के उत्तरकाल में आप उदयपुर चले गये तथा महा-राणा सज्जनसिंह के कृपा पात्र बने। स्वामी दयानन्द के आप भक्त एवं प्रशंसक थे। उन्हीं की प्रेरणा से आपने अपना नाम 'फतहकरण' से बदल कर 'जयकरण' रख लिया था। आप डिंगल भाषा के उच्च श्रेणी के कवि थे। महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण के प्रसिद्ध ग्रंथ वंश भास्कर पर आपने एक टीका लिखी थी, जो प्रकाशित नहीं हो सकी। आपने स्वामी दयानन्द प्रशस्ति में अनेक सुन्दर पद्य डिंगल में लिखे थे। उनके ये पद्य 'देशहितैषी' अजमेर तथा 'भारत सुदशा प्रवर्त्तक' फर्रुखाबाद में प्रकाशित हुए थे। स्वामीजी के परलोक गमन पर कवि फतहकरण ने काव्य-पूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपना शोक व्यक्त किया था। इनका निधन १९२१ में हुआ।

डॉ. फतहसिंह

वेदों के मर्मज्ञ विद्वान् तथा व्याख्याकार डॉ. फतहसिंह का जन्म आषाढ़ पूर्णिमा सं. १९७० वि. (१९१३) को पीलीभीत जिले के ग्राम भदेंग कज्जा में हुआ। आपने १९३२ में पीलीभीत के गवर्नमेंट हाई स्कूल से हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया और १९३८ में एम. ए. परीक्षा उत्तीर्ण की। १९४४ ई. में आपने डी. लिट. की उपाधि प्राप्त की। प्रारम्भ में उत्तरप्रदेश में हिन्दी तथा संस्कृत के प्राध्यापक पद पर कार्य करने के पश्चात् आप १९४५ में हरबर्ट कालेज कोटा में इन्हीं विषयों के प्राध्यापक नियुक्त हुए। कालान्तर में आप श्रीगंगानगर, ब्यावर, कालाडेरा आदि अनेक स्थानों पर राजकीय कालेजों में प्राचार्य के पद पर रहे। तत्पश्चात् राजस्थान पुरातत्त्वमंदिर जोधपुर के निदेशक पद पर तीन वर्ष तक कार्य करने के उपरान्त १९७० में आपने राज्य सेवा से अवकाश ग्रहण किया। सम्प्रति वेद संस्थान, नई दिल्ली में रहकर आप वैदिक शोध कार्य कर रहे हैं। आपने सिंधु घाटी लिपि के सम्बन्ध में क्रांतिकारी शोध कार्य किया है तथा सिंधु सभ्यता को वैदिक सभ्यता सिद्ध किया।

ले. का.—Vedic Etymology, The Ribhus: (A Thesis). The Vedic Quest into the Mystries of Vak. वैदिक दर्शन, पुरुष सूक्त की समीक्षात्मक व्याख्या, मानवता को वेदों की देन (१९८१), भावी वेदभाष्य के संदर्भ सूत्र (१९८३), दयानन्द और उनका वेदभाष्य (१९८३)।

व. प.—वेद संस्थान सी-२२ राजौरी गार्डन, नई दिल्ली—११००२७।

डॉ. फुन्दनलाल अग्निहोत्री

यज्ञ चिकित्सा के विशेषज्ञ डा. फुन्दनलाल अग्निहोत्री का जन्म ७ अगस्त १९८२ को पीलीभीत (उत्तरप्रदेश) में हुआ। एम.डी. (लन्दन) की उपाधि प्राप्त करने के अनन्तर ये उत्तरप्रदेश सरकार के चिकित्सा विभाग में कार्यरत रहे। इन्होंने भुवाली (जिला नैनीताल) के क्षय चिकित्सालय के अधीक्षक के रूप में भी वर्षों तक कार्य किया। आर्यसमाज से आपका घनिष्ट सम्बन्ध था। आपने यज्ञों द्वारा विभिन्न रोगों की चिकित्सा के सम्बन्ध में अनेक अनुसंधान किये। आपका अधिकांश साहित्य चिकित्सा विषयक है। १४ दिसम्बर १९६२ को आपका निधन हुआ।

ले. का.—ईश प्रार्थना (१९०१), यज्ञ चिकित्सा (१९४९), हवन यज्ञ द्वारा क्षयरोग की चिकित्सा, वैदिकपंचशील (१९५६).

पं. फूलचन्द शर्मा निडर

श्री निडर का जन्म भाद्रपद शुक्ला १० सं. १९५९ वि. को भिवानी जिले के दीनोद नामक ग्राम में हुआ। इनकी शिक्षा गांव के मदरसे में पांचवें दर्जे तक हुई किन्तु कालान्तर में आपने हिन्दी और संस्कृत का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। अजमेर में आपने पं. जयदेव शर्मा विद्यालंकार से स्वामी दयानन्द कृत वेदांगप्रकाश का विधिवत् अध्ययन किया। सम्प्रति आप आर्यसमाज भिवानी में रह कर समाज सेवा में रत हैं।

ले.का.—१. आर्य विवाह रीति निर्णय (२०१८ वि.), २. आर्य कन्या विद्यालयों के लिये प्रारम्भिक प्रार्थना, (२०३१ वि.), ३. सफल प्रार्थना (२०२६ वि.), ४. नामकरण का महत्त्व (२०३१ वि.), ५. आर्य सत्संग रीतिनिर्णय (२०३५ वि.), ६. आर्य मृतक रीति निर्णय (२०२१ वि.), ७. महिलाओं के लिये (२०३५ वि.), ८. यज्ञोपवीतसंख्या निर्णय (२०३५ वि.), ९. आर्यसमाज को जीवित करने का उपाय (२०३५), वि. १०. बालान्त्य कर्म, ११. सत्यार्थप्रकाश क्या है ? (२०३९ वि.).

व. प.—हँसरामदास भोड़ूका धर्मशाला, लोहड़ बाजार, भिवानी (हरयाणा) १२५०२१.

बखतावरसिंह बी. (B. Bucktowor Singh)

आप मॉरिशस देश के निवासी आर्य हैं।

आपकी पुस्तक 'हिन्दुओं का ईसाईकरण' पोर्ट लुई (मॉरिशस) से प्रकाशित हुई है। मारिशस देश की राजधानी पोर्ट लुई से आपने अंग्रेजी में संस्कारविधि का एक संक्षिप्त संस्करण भी प्रकाशित कराया था।

मुंशी बख्तावरसिंह

स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित वैदिक यंत्रालय के प्रथम प्रबन्धक मुन्शी बख्तावरसिंह ने ११ फरवरी १८८० से दिसम्बर १८८० तक इस पद पर कार्य किया। पुनः आर्थिक अशुचिता के कारण इन्हें इस पद से पृथक् होना पड़ा। मुन्शीजी का निवास स्थान शाहजहांपुर था और ये अग्रवाल वैश्य थे। उनके द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित आर्यदर्पण की गणना आर्यसमाज के प्रथम मासिक पत्र के रूप में होती है।

ले. का.—१. विवाह पद्धति—१९९४ वि. में संस्कारविधि से पृथक् कर छापी, २. विधवा विवाह-विचार।

पं. बद्रीदत्त शर्मा, जोशी

जोशीजी का जन्म १९२४ वि. में काशीपुर जिला नैनीताल में हुआ। इनके पिता का नाम पं. पुरुषोत्तम था, जो स्वयं संस्कृत के विद्वान् थे। इनका संस्कृत अध्ययन मुरादाबाद में हुआ। इसी नगर के साहू श्यामसुन्दर की प्रेरणा से आपने आर्यसमाज में प्रवेश किया तथा मुरादाबाद, मेरठ, अजमेर, कानपुर आदि स्थानों में रहकर सामाजिक कार्य तथा धर्म प्रचार किया। मुरादाबाद तथा ज्वालापुर में आपने अध्यापन भी किया। जोशीजी विख्यात पत्रकार भी रहे। आपने 'आर्यविनय' तथा 'शंकर' का सम्पादन किया। उन्होंने अनेक विपक्षी विद्वानों से शास्त्रार्थ भी किये थे। १९४९ ई. में आपका निधन हुआ।

ले. का.—१. वाजसनेयोपनिषद् टीका (१९५८ वि.), २. तलवकारोपनिषद् टीका, ३. कठोपनिषद् टीका (१९६० वि.), ४. प्रश्नोपनिषद् टीका (१९६१ वि.), ५. मुण्डकोपनिषद् टीका, (१९६१ वि.), ६. माण्डूक्योपनिषद् टीका (१९६४ वि.).

उपर्युक्त सभी उपनिषद् टीकायें सम्मिलित रूप से भी प्रकाशित हुईं।

षड्उपनिषद् (१९६९ वि.), अवशिष्ट चार उपनिषदों के भी अनुवाद आपके द्वारा किये गये। अष्टोपनिषद् (१९९१ वि.)

अन्य ग्रन्थ— १. संस्कृत प्रबोध–४ भाग, २. अबला-संताप, ३. विधवोद्वाह मीमांसा, ४. कर्मयोग, ५. मनुष्य का धर्म, ६. चरित्र-शिक्षा, ७. विचार कुसुमांजलि, ८. प्रवन्धार्कोदय, ९. विवेकानन्द के व्याख्यान, १०. उपदेश-मंजरी (स्वामी दयानन्द के पुणे में प्रदत्त १५ व्याख्यान) का अनुवाद तथा सम्पादन।

बनवारीलाल आजाद

श्री आजाद हिसार (हरयाणा) के निवासी थे। इनका जन्म १९६२ वि. में हुआ था। साहित्य की ओर इनकी प्रारम्भ से ही रुचि रही। वे उर्दू तथा हिन्दी दोनों में कविता करते थे। इनके द्वारा रचित काव्यकृति 'दयानन्द-लहरी' का प्रकाशन २००४ वि. में हुआ। इसकी कुल पद्य संख्या ५० है।

लाला बनवारीलाल

आप करनाल के निवासी थे। आपने 'पं. लेखराम का धर्म पर सच्चा बलिदान' शीर्षक एक पुस्तक उर्दू में लिखी जिसे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने १८९७ में प्रकाशित किया।

बनवारीलाल सेवक

श्री सेवक ने 'आर्य सत्याग्रह के सप्त महारथी' शीर्षक से हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के सातों सर्वाधिकारियों का जीवन परिचय लिखा। ये सर्वाधिकारी थे महात्मा नारायण स्वामी, कुं. चांदकरण शारदा, महाशय कृष्ण, राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री, महाशय खुशहालचन्द, पं. वेदव्रत वानप्रस्थी तथा पं. ज्ञानेन्द्र। आपने 'हैदराबाद सत्याग्रह का ख़ूनी इतिहास' (१९३९) भी लिखा था।

आचार्य बलदेव नैष्ठिक

हरयाणा प्रान्त वासी श्री नैष्ठिक पंजाब सरकार की विद्युत विभाग की सेवा का परित्याग कर गुरुकुल झज्जर में प्रविष्ट हुए और वहां रहकर आपने संस्कृत का गम्भीर अध्ययन किया। तत्पश्चात् नैष्ठिक ब्रह्मचर्य का व्रत लेकर १९६४ में गुरुकुल झज्जर में मुख्याध्यापक बने। सम्प्रति आर्य महाविद्यालय, गुरुकुल कालवा के आचार्य हैं। आपने

'अष्टाध्यायी प्रवेश' (२०४१ वि.) शीर्षक ग्रन्थ लिखा जो सुगम रीति से व्याकरण में प्रवेश करने में सहायक है।

व. प.—आर्य महाविद्यालय, गुरुकुल कालवा (जींद).

बलभद्रकुमार हूजा

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति श्री बलभद्रकुमार इसी गुरुकुल के भूतपूर्व मुख्याध्यापक गोवर्धन शास्त्री के पुत्र हैं। १९३६ में आपने पंजाब विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम. ए. किया। एक वर्ष तक डी. ए. वी. कालेज रावलपिण्डी में अर्थशास्त्र के अध्यापक रहने के पश्चात् आप पंजाब की प्रशासनिक सेवा में प्रविष्ट हुए। देश विभाजन के पश्चात् आप भारतीय प्रशासन-सेवा में आ गये और राजस्थान, जम्मू-काश्मीर, मध्यप्रदेश तथा मणिपुर में उच्च पदों पर कार्य किया। आप लगभग दस वर्ष तक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति रहे।

ले. का.—सर्वोदय की ओर, फांसी की रात, आरती, आहुति तथा शीशपुष्प (काव्य संग्रह).

व. प.—ए-१५-ए. विजयपथ, तिलकनगर, जयपुर.

पं. बलभद्र मिश्र

लखनऊ निवासी पं. वलभद्र मिश्र स्वामी दयानन्द के समकालीन थे। लखनऊ में आर्यसमाज की स्थापना के साथ ही ये इस संस्था के सभासद बने थे। आर्यसमाज गणेशगंज लखनऊ के इतिहास में इनका नाम आर्यसमाज लखनऊ में प्रविष्ट सभासदों की सूची में वर्ष १८८०-८१ संख्या ४० पर अंकित है। ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। मई १८८२ से अप्रैल १८८६ तक ये आर्यसमाज लखनऊ के उपमंत्री भी रहे। पं. वलभद्र मिश्र अच्छे कवि थे। इन्होंने स्वामी दयानन्द का पद्य बद्ध जीवन चरित लिखा था जो 'देशोपकारक स्वामी दयानन्द का पद्यमय जीवनचरित' शीर्षक से १८८३ में शुभचिंतक प्रेस शाहजहांपुर से छपा। इसका द्वितीय संस्करण वैदिक पुस्तक प्रचारक फण्ड सं. २३ के अन्तर्गत १८९७ में प्रकाशित हुआ।

ले. का.—देशोपकारक व्याख्यान पद्य, सत्य सिंधु-पद्य, भाषा दीपिका (हिन्दी उर्दू विवाद विषयक पुस्तक १८८३), संस्कारविधि।

बलराज शर्मा

श्री शर्मा का जन्म २ अप्रैल १९६१ को हरयाणा के जिला हिसार के ग्राम मतलोढा में श्री आत्माराम शर्मा के यहां हुआ। इन्होंने शास्त्री तथा एम. ए. संस्कृत तक शिक्षा प्राप्त की। इन्होंने अपने शोध कार्य के लिये 'मनुस्मृति में विवेचित व्यवहार पदों का अन्य स्मृतियों से तुलनात्मक अध्ययन' विषय चुना और दयानन्द शोधपीठ पंजाब विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान में इसे सम्पन्न किया। इन्होंने विविध छन्दों में 'भारतशतकम्' नामक काव्य की रचना की है।

व. प.—७४४ अर्बन एस्टेट II, हिसार (हरयाणा).

श्री बलवन्तराय कल्याणराय ठाकोर

राजकुमार कालेज राजकोट में प्रोफेसर थे। आप बी. ए. उत्तीर्ण तो थे ही, मराठी तथा गुजराती भाषा पर भी आपका पूर्ण अधिकार था। स्वामी दयानन्द के जीवनीलेखक पं. देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय ने पूना प्रवचन में से अन्तिम स्वामी दयानन्द के आत्म-वृत्तान्तपरक व्याख्यान का मराठी से गुजराती अनुवाद इन्हीं ठाकोर महाशय से करवाया था। यह आत्म वृत्त 'दयानन्द स्वामी नुं स्वरचित जीवन वृत्तान्त' शार्षक से मकनलाल मथुर भाई गुप्त द्वारा १९१४ में बड़ौदा से प्रकाशित हुआ। इसकी भूमिका स्वयं देवेन्द्रनाथ ने लिखी थी तथा उन्होंने ठाकोर महाशय को अपना श्रद्धास्पद मित्र वताया था।

बलाईचन्द्र मलिक

बंग भाषी प्रसिद्ध आर्य विद्वान् तथा लेखक थे। थियोसोफिकल सोसायटी के संस्थापक कर्नल ऑल्काट के ग्रन्थ Old Diary Leaves से पता चलता है कि कर्नल की कलकत्ता यात्रा के समय श्री मलिक उनके सम्पर्क में आये और थियोसोफिकल सोसायटी के सदस्य भी वने।

ले. का.—स्वामी दयानन्द कृत पंचमहायज्ञविधि का वंगला अनुवाद, संक्षिप्त आर्यमतप्रकाश (बंगला, १९२४.), संध्या उपासना।

लोककवि पं. बस्तीराम

हरयाणा प्रांत के लोक कवि और लोक गायक पं. बस्तीराम का जन्म आश्विन कृ. चतुर्थी १८९८ वि. को हरयाणा राज्यान्तर्गत झज्जर तहसील के खेड़ी सुलतान नामक ग्राम में पंडित रामलाल के घर हुआ। ६ वर्ष की आयु में महरौली निवासी पं. हरसुख से आपने अध्ययन आरम्भ किया। तत्पश्चात् बस्तीराम अपने चाचा जीवनराम के साथ बनारस चले गये और वहां कुछ काल तक पढ़ते रहे। १९१४ वि. में सिपाही विद्रोह आरम्भ होने पर ये अपने घर चले आये। गांव के मंदिर के पुजारी बलदेवशाह से भी कुछ समय तक पढ़ने का इन्हें अवसर मिला। तीव्र वैराग्य भावना के कारण बस्तीराम ने विवाह नहीं किया।

१९२४ वि. में कुम्भ के अवसर पर पं. बस्तीराम हरिद्वार पहुंचे। उस समय स्वामी दयानन्द भी कुम्भ में आये हुए थे। स्वामीजी की धर्म चर्चा गोसाइयों के गुरु लालगिरि से हुई। पं. वस्तीराम स्वामीजी के निर्भीक विचारों से अत्यन्त प्रभावित हुए तथा मन ही मन उनके अनुयायी वन गये। संवत् १९३३ में दिल्ली दरबार के अवसर पर स्वासी दयानन्द ने धर्मप्रचार शिविर लगाया तथा प्रतिदिन अढ़ाई घण्टे धर्मोपदेश देने लगे। इस अवसर पर पं. वस्तीराम ने स्पष्ट रूप से वैदिक धर्म स्वीकार कर लेने की घोषणा की। इससे पूर्व वे 'रुक्मिणी मंगल' गाते थे और पौराणिक पंडित की भांति यजमान वृत्ति से आजीविका चलाते थे। अब इन्होंने अपने यजमानों को स्पष्ट कह दिया कि मैं आर्य हूं अतः मेरे यजमान भी आर्य बनें। जिन्हें आर्य धर्म में आस्था नहीं है वे मेरे चाचा राधाकृष्ण के यजमान वन जायें। १९३४ वि. के माघ मास में पं. बस्तीराम शीतला के भयंकर रोग से आक्रान्त हुये। नेत्रों की ज्योति प्रायः चली गई। वि. सं १९३५ में जब स्वामी दयानन्द रेवाड़ी आए, तो पण्डित बस्तीराम भी वहां गये। यहां रानी के तालाब पर जब स्वामीजी के प्रवचन होते थे तो पं. बस्तीराम प्रवचनों के पहले और पीछे भजन गाते थे। पण्डित बस्तीराम के पौराणिक मत खण्डन के भजनों को सुनकर पौराणिक मण्डली नाराज हुई और रेवाड़ी के राव युधिष्ठिरसिंह से उनकी शिकायत की, परन्तु राव साहब तो स्वामीजी की क्रांतिकारी विचारधारा से पहले ही प्रभावित हो चुके थे। उन्हें वस्तुस्थिति का पूर्ण ज्ञान था। स्वामीजी की प्रेरणा से रेवाड़ी में प्रथम गौशाला की स्थापना हुई। इस कार्य में पण्डित बस्तीराम का पूर्ण सहयोग रहा।

अपने अवशिष्ट जीवन में पं. बस्तीराम आर्यसमाज के कवि, प्रचारक और गायक के रूप में पंजाब, हरयाणा, राजस्थान एवं उत्तरप्रदेश में भ्रमण कर वैदिक धर्म का प्रचार करते रहे। जब स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल की स्थापना का निश्चय किया, तो पं. बस्तीराम ने हरयाणा के ग्रामों में भ्रमण कर धन संग्रह के कार्य में योग दिया। पं. बस्तीराम यद्यपि संस्कृत के उच्च ज्ञाता अथवा शास्त्रज्ञ विद्वान् नहीं थे परन्तु आर्यसमाज के सिद्धांतों से सुपरिचित होने के कारण उनके काव्य में किसी प्रकार का सैद्धान्तिक स्खलन नहीं आया है। वे अपनी विशिष्ट शैली में इकतारे पर लोक धुनों में आर्यसमाज के सुधारवादी विचारों को गीतों के माध्यम से प्रस्तुत करते, जिसे सुन कर साधारण ग्रामीण जनता अत्यधिक प्रभावित होती थी। अपनी सहज तर्क शैली के बल पर वे सुपठित विद्वानों को शास्त्रार्थों में पराजित भी कर देते थे। इस प्रकार नेत्र-ज्योतिहीन किन्तु सूर की भांति काव्य प्रतिभा सम्पन्न, कबीर की भांति अलमस्त एवं फक्कड़ स्वभाव के धनी पं. बस्तीराम ११६ वर्ष १० मास २३ दिन की परिपक्व आयु भोग कर श्रावण शुक्ला १२ सं. २०१५ वि. (२६ अगस्त १९५८) को दिवंगत हुए। पं. बस्तीराम के भजनों और कविताओं का आर्यसमाज में सर्वत्र प्रचार है। 'धन धन तेरी कारीगरी करतार' जैसे गीत प्रायः पुरानी पीढ़ी के आर्यों की जबान से आज भी सुने जा सकते हैं।

ले. का.—१. पाखण्ड खण्डनी, २. मानस दीपिका, ३. अग्निबाण, ४. क्षत्री भजनसंग्रह, ५. भजन मनोरंजनी, ६. ऋषि दयानन्द जीवन कथा २०१६ वि. (१९६०), ७. असली अमृतगीता-दो भाग, ८. अमृतकला-दो भाग, ९. बस्तीराम रहस्य (असली शोक-भंजनी), १०. गो-भजन-संग्रह, ११. अघमर्षण प्रार्थना, १२. पीप की नाखर।

पं. बस्तीराम के ग्रन्थों को हरयाणा साहित्य संस्थान ने पुनः प्रकाशित किया है।

प्रिंसिपल बहादुरमल्ल

अंग्रेजी के सुयोग्य लेखक तथा शिक्षाविद् श्री बहादुरमल्ल का जन्म मई १८९७ में राजस्थान के नागौर नगर में हुआ। इनकी उच्च शिक्षा डी.ए.वी. कॉलेज लाहौर में हुई जहां से इन्होंने अंग्रेजी में एम.ए. किया। पुनः डी.ए.वी. कॉलेज के आजीवन सदस्य बन कर ये इसी संस्था की सेवा में प्रविष्ट हुए। इन्होंने १९२३ में दर्शनशास्त्र में एम. ए. किया। कई वर्षों तक दर्शनशास्त्र के अध्यापक के रूप में कार्य करने के पश्चात् श्री बहादुरमल्ल की नियुक्ति डी.ए.वी. कालेज मुलतान के प्रिंसिपल के पद पर हुई। देश विभाजन के पश्चात् ये श्रीनगर तथा अम्बाला के डी.ए.वी. कालेजों के प्रिंसिपल पद पर रहे। १९५३ में इन्होंने इस कार्य से अवकाश ग्रहण किया। इनका निधन २५ अप्रैल १९९० को हो गया।

ले. का.—शोलापुर में रहते समय आपने स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं पर उक्त कालेज में तीन व्याख्यान दिये थे। इन व्याख्यानों को डी.ए.वी. कालेज शोलापुर द्वारा १९४६ में प्रकाशित किया गया था। कालान्तर में यही व्याख्यान 'Dayanand : 'A Study in Hinduism' शीर्षक से विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर से १९६२ में पुनः प्रकाशित हुये। पूर्व प्रकाशित व्याख्यानों का शीर्षक Swami Dayanand and his Teachings था।

श्री बाबूराम गुप्त

स्वामी दयानन्द के जीवन विषयक संस्मरणों का सुबोध भाषा तथा रोचक शैली में निबद्ध करने वाले श्री बाबूराम गुप्त का जन्म वैशाख शुक्ला ८ सं. १९४२ वि. तदनुसार २२ अप्रैल १८८५ बुधवार को हुआ। इस शताब्दी के प्रारम्भ में उन्होंने आर्यसमाज में सक्रियरूप से भाग लिया। आर्यसमाज लुधियाना के वे वर्षों तक मंत्री तथा प्रधान रहे। इस नगर की आर्य शिक्षण संस्थाओं के संचालन में भी आपका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। १९४२ के आन्दोलन में गुप्तजी को कारावास का दण्ड भी मिला। महात्मा गांधी के प्रति उनका अपार श्रद्धाभाव था तथा उनका महात्माजी से वर्षों तक पत्र व्यवहार भी रहा। यह एक विडम्बना ही थी कि महात्माजी के प्रियपात्र श्री गुप्त को गांधीजी की हत्या के पश्चात् राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी के सिलसिले में एक अन्य बाबूराम नामक व्यक्ति के बदले गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। प्रथम उन्हें लुधियाना की जेल में रक्खा गया, फिर फिरोजपुर जेल ले जाया गया। कारावास के दौरान गुप्तजी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'अमृतवाणी' लिखी, जिसमें ऋषि दयानन्द के मार्मिक जीवन प्रसंगों को चित्तकर्षक शैली में प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक की भूमिका स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी ने लिखी थी। १९५२ में इसका प्रथम संस्करण निकला। आपने आर्यसमाज लुधियाना का सचित्र ५० वर्षीय इतिहास भी लिखा, जो १९३२ में प्रकाशित हुआ था। ७ अगस्त १९६३ को श्री बाबूराम गुप्त का निधन हो गया।

पं. बाबूराम शर्मा

ग्राम इन्द्रावखी जिला इटावा निवासी पं. बाबूराम शर्मा अपने युग के अच्छे लेखक तथा कवि थे।

ले. का.—१. धर्म बलिदान अर्थात् पथिक वियोग—(पं॰ लेखराम के बलिदान को विषय बनाकर आल्हाशैली में लिखा गया काव्य), १८९८ में यह दो खण्डों में प्रकाशित हुआ, २. मूर्तिपूजा विचार, ३. भारतवर्ष का प्राचीन इतिहास और उसकी सभ्यता अथवा भाषा रामायण का उपोद्घात (१९०७), ४. वेश्या दोष दर्पण भजनावली—प्रथम भाग (१९०८) इन भजनों के संग्रहकर्ता पं. बाबूराम शर्मा थे, ५. संगीत सुधार सार—(१८९७), ६. संजीवनीबूटी अर्थात् वीर्यवर्णन-आल्हाशैली में लिखित (१८९६), ७. अन्त्येष्टि कर्म पद्धति—(१९०३), ८. ईसाई लीला भाग—१ (१८९५), ९. कन्यासुधार—१९५३ वि. (१८९७), १०. किरानीलीला - वेश्यालीला (१८९३), ११. मांस भक्षण निषेध, १२. मृतक श्राद्ध, १३. शिवलिंग पूजा, १४. पुराणशिक्षा।

पं. बालकृष्ण शर्मा

मुम्बई प्रदेश में आर्यसमाज के कार्य को गति देने वाले विद्वानों में पं. बालकृष्ण शर्मा का नाम उल्लेखनीय है। आपका जन्म १८६९ में खानदेश जिले के अरुण्डेल नामक ग्राम में हुआ था। आपने स्वामी दयानन्द के आद्य-शिष्य पं. भीमसेन शर्मा के निकट रह कर विभिन्न शास्त्रों का अभ्यास किया। तत्पश्चात् आप बम्बई आये और आर्यसमाज के उपदेशक के रूप में कार्य करने लगे। इसी समय आर्यसमाज बम्बई द्वारा संचालित श्रीमती मीठाबाई संस्कृत पाठशाला में अध्यापन कार्य भी किया। जब सान्ताक्रूज में गुरुकुल की स्थापना हुई तो शर्माजी ने गुरुकुल का आचार्य पद संभाला। आपने अपने जीवन में सैकड़ों शास्त्रार्थ किये। जब यह गुरुकुल सान्ताक्रूज से शुक्लतीर्थ ले जाया गया तो शर्माजी ने उसके कुलपति पद को ग्रहण किया। गुरुकुल की सहायता हेतु आपने अफ्रीका महाद्वीप का भ्रमण किया और वहां से लगभग ५० हजार रुपया एकत्र कर के लाये। ऋषि दयानन्द की जन्म-शताब्दी समारोह के अवसर पर मथुरा में आयोजित विद्वत्-सम्मेलन का अध्यक्ष पद पं. बालकृष्ण शर्मा ने ही सुशोभित किया था। २८ मई १९२९ को शर्माजी का निधन उनके ग्राम अरुण्डेल में हुआ।

ले. का.—स्वामी दयानन्द कृत ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका का गुजराती अनुवाद—(पं. इच्छाशंकर प्रभाशंकर शर्मा के सहयोग से) यह अनुवाद सर्वप्रथम १९०५ में सेठ रणछोड़दास भवान द्वारा प्रकाशित किया गया। जन्म-शताब्दी समारोह की विद्वत्परिषद् में दिया गया अध्यक्षीय भाषण—श्रीमद्दयानन्द शत संवतसरीय जन्म महोत्सवान्तर्गत विद्वत् परिषद् सभापते, पं. बालकृष्ण शास्त्रिणो-भाषणम्—(१९२५) यह भाषण १५ फरवरी १९२५ को दिया गया था। मार्तण्ड प्रकाश (स्वामी बालराम उदासीन कृत अवोधध्वान्तमार्तण्ड का उत्तर) इसका गुजराती अनुवाद श्री मणिलाल दामोदरदास मोदी ने किया (१९६५-६६ वि., १९०९-१०)।

श्री बालकृष्णसहाय

रांची के विख्यात आर्यसमाजी कार्यकर्त्ता श्री बालकृष्ण-सहाय मुन्शी भगवन्तसहाय के पुत्र थे। इनका पैतृक निवास-स्थान बिहार के साहाबाद (आरा) जिले के अन्तर्गत सासाराम उपखण्ड का वेरकप नामक ग्राम था। १८९४ में बालकृष्णसहाय के घर पर ही रांची आर्यसमाज की स्थापना की गई। व्यवसाय से श्री सहाय वकील थे। वे बंगाल धारा सभा के सदस्य भी रहे थे। मिश्रबंधु विनोद के अनुसार इनका जन्म १९१९ वि. (१९८२) में हुआ था। १९१३ में इनका निधन हो गया।

ले. का.—पं. आर्यमुनिकृत वेदान्त दर्शन भाष्य का अंग्रेजी अनुवाद (१८९७), The Vedic Devas (वैदिक-देवता), Sea Voyage (समुद्र यात्रा), संगीत सुधाकर (संकलन) १९८७ वि.।

श्री बालमुकुन्द मिश्र

पत्रकार एवं लेखक श्री बालमुकुन्द मिश्र का जन्म अलवर राज्य के ततारपुर ग्राम में १३ दिसम्बर १९२१ को श्री ओंकारनाथ के यहां हुआ। आपके पिता दिल्ली के एक मन्दिर के पुजारी थे अतः श्री मिश्र की शिक्षा भी राजधानी में ही हुई। आपने हिन्दी, संस्कृत, उर्दू आदि भाषाओं का स्वाध्याय के बल पर ही अध्ययन किया। प्रारम्भ में आपने पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति के निजी सहायक के रूप में कार्य किया। तदनन्तर अनेक पत्रों में सहायक के रूप में रहे। ६ जनवरी १९८२ को आपका निधन हुआ।

ले. का.—आर्यसमाज पर संसार क्यों झुका? (१९४१), आर्यसमाजी संस्कार विधि दिग्दर्शन, आर्यसमाज की ओर। आपने 'तथ्य' नामक एक त्रैमासिक पत्र का सम्पादन भी किया था।

बाला भाई जमनादास वैश्य

गुजराती के प्रसिद्ध आर्य लेखक श्री वैश्य ने 'स्वामी दयानन्द सरस्वती नुं जीवनचरित्र' लिखा। इसका प्रकाशन आर्योत्कर्ष मण्डली अहमदाबाद ने १८९७ में किया। इनकी लिखी 'गुरुचरित्र' शीर्षक दण्डी विरजानन्द की गुजराती जीवनी १९०५ में छपी थी।

बिहारीलाल शास्त्री

आप जबलपुर (मध्यप्रदेश) के निवासी थे। आपने अंग्रेजी में एक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखा। जिसमें वेदों तथा

उनके अंगों एवं उपांगों की विस्तृत विवेचना उपलब्ध होती है। यह ग्रन्थ The Vedas and their Angas and Upangas. Vol. I–The Tretise and Treasure of Knowledge-Divine and Temporal शीर्षक से १९१० में जवलपुर से प्रकाशित हुआ। आपकी कुछ अन्य कृतियां हैं—कर्म वर्णन, ब्रह्म कीर्तन और फलित ज्योतिष-परीक्षा।

पं. बिहारीलाल शास्त्री

अद्भुत शास्त्रार्थी, तार्किक, प्रबल वक्ता तथा उपदेशक पं. बिहारीलाल शास्त्री का जन्म फाल्गुन शुक्ला तृतीया सं. १९४७ वि. को मुरादाबाद जिले के पागवड़ा ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम पंडित अयोध्याप्रसाद था, जो भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण थे। परिवार में खेती तथा लेनदेन का काम होता था। बिहारीलालजी का संस्कृत अध्ययन पंडित लोकनारायण तथा उनके पुत्र पं. केदारलाल से हुआ। इनके निकट रहकर उन्होंने अमरकोश, लघु कौमुदी आदि ग्रन्थ पढ़े। प्रथमा परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् इन्हें सम्भल की संस्कृत पाठशाला में अध्यापक का कार्य मिला। पं. वंशीधर पाठक तथा पं. शिवशर्मा के सान्निध्य से ये आर्यसमाजी बने। कुछ समय तक मुरादाबाद के इस्लामिया स्कूल में शिक्षण कार्य किया। पुनः रतनपुर की जैन पाठशाला में भी शिक्षक रहे। जब पं. भोजदत्त शर्मा ने आगरा में आर्य मुसाफिर विद्यालय की स्थापना की, तो बिहारीलालजी वहां उपदेशक कक्षा को पढ़ाते रहे। १९२० से १९२४ तक आर्य उपप्रतिनिधि सभा जिला बिजनौर के अन्तर्गत प्रचार कार्य किया।

कालान्तर में बरेली के सरस्वती विद्यालय में अध्यापन कार्य किया। अन्ततः जिला बदायूं के उंझानी कस्बे में म्युनीसिपल इण्टर कालेज में संस्कृत के प्रवक्ता पद पर कार्य करते हुए १९५६ में अवकाश ग्रहण किया। पण्डित बिहारीलाल शास्त्री ने अपने जीवनकाल में विभिन्न मतानुयायी विद्वानों से अनेक शास्त्रार्थ किए जिनमें आपको सदा विजयश्री प्राप्त होती रही। वे जीवन के अन्तिम वर्षों में बरेली में रहे। ३ जनवरी १९८६ को इनका निधन हुआ।

ले. का.—ऋग्वेद के दशम मण्डल का रहस्य, यजुर्वेद का रहस्य, साकार निराकार निर्णय, वेदवाणी (वेद विषयक निबन्ध का संग्रह), पशुबलि और वेद, योगिराज श्रीकृष्ण, इस्लाम का स्वरूप, चुने हुए, फूल, धर्म तुला (१९७६), चार शास्त्रार्थ, वैदिक पताका, दम्भ दमन (२०२१ वि.), अंगद चरण, मूर्तिपूजा पर प्रामाणिक शास्त्रार्थ, क्या मूर्तिपूजा वेदोक्त है? (२०२० वि.), सत्यार्थप्रकाश का महत्त्व (२०३६ वि.), शिव का यथार्थ स्वरूप तथा गोस्वामी तुलसीदास।

उपर्युक्त मौलिक ग्रन्थों के अतिरिक्त शास्त्रीजी ने स्वामी दर्शनानन्द कृत वेदान्त दर्शन के उर्दू भाष्य (अपूर्ण) का हिन्दी अनुवाद किया। उनका चाणक्य नीति का भाषानुवाद तथा दृष्टान्तसागर भी प्रकाशित हुए हैं।

वि. अ.—पं. बिहारीलाल शास्त्री अभिनन्दन ग्रन्थ, सं. जगदीश विद्यार्थी १९७३.

डा. बीरेन्द्रकुमार सिंह (बी. के. सिंह)

डा. सिंह का जन्म मुरादाबाद (उत्तरप्रदेश) में ११ अप्रैल १९१८ को हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा काशी विद्यापीठ में हुई जहाँ से १९८० में आप स्नातक बने। १९५२ में आपने लखनऊ विश्वविद्यालय से एम. ए. किया।

हमीदिया कालेज भोपाल के इतिहास विभाग के अवकाश प्राप्त प्राध्यापक डा. बी. के. सिंह ने नेशनल बुक ट्रस्ट के अनुरोध पर स्वामी दयानन्द का अंग्रेजी जीवनचरित लिखा। ट्रस्ट के नियमानुसार इस पुस्तक का भारत की विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हुआ है। पुस्तक का प्रथम संस्करण १९७० में तथा द्वितीय १९८५ में छपा। कुछ प्रान्तीय भाषाओं में हुए इसके अनुवादों का विवरण इस प्रकार है —

हिन्दी अनुवादक - सुमंगलप्रकाश - १९७०
मराठी अनुवादक - अनन्त काणेकर - १९७१
गुजराती अनुवादक - दिगम्बर स्वादिया - १९७१.

पं. बुद्धदेव उपाध्याय

आप धार (मध्यप्रदेश) के निवासी थे। आपका जन्म श्री कन्हैयालाल के यहाँ १८९५ में धार जिले के तालछा गाम में हुआ। आपने वैदिक शास्त्रों का अच्छा अभ्यास किया था। आप उच्चकोटि के शास्त्रार्थकर्ता तथा लेखक थे। आपका निधन १९५७ में हुआ।

ले. का.—पौराणिक धर्म में गोमांस भक्षण तथा महापुरुषों की दृष्टि में ऋषि दयानन्द।

पं. बुद्धदेव मीरपुरी

उच्च कोटि के विद्वान्, व्याख्याता, शास्त्रार्थी तथा लेखक पं. बुद्धदेव मीरपुरी का जन्म सं. १९५६ वि. में फिरोजपुर जिले के अमरपुर नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम श्रीरामशरणदास था। बुद्धदेव के पिता कट्टर मूर्तिपूजक तथा व्यवसाय से भी मंदिर के पुजारी थे। इनके पिता की प्रबल इच्छा थी कि पुत्र भी उन्हीं का अनुसरण करते हुए पौराणिक मत का अनुयायी बने। परन्तु बुद्धदेवजी विद्याध्ययन के इच्छुक थे। उनके नाना पं. हरिदत्तजी संस्कृत के धुरन्धर विद्वान् थे। उनके पास संस्कृत के शास्त्र-ग्रन्थों का एक विशाल संग्रह था। नाना की प्रेरणा से बालक बुद्धदेव ने भी पुराणों के अध्याय के अध्याय कण्ठस्थ कर लिये। उन्हें देवी-देवताओं के भक्तिपरक स्तोत्र भी सैकड़ों की संख्या में याद थे। वे पूर्ण श्रद्धा के साथ व्रत आदि रखते तथा पौराणिक आस्थाओं का पालन करते।

बुद्धदेव के चाचा अवश्य आर्यसमाजी थे, उनकी यह इच्छा भी थी कि बुद्धदेव भी आर्यसमाजी बने। वे उन्हें पढ़ने के लिये आर्यसमाजी साहित्य देते और धार्मिक विषयों पर उनसे वार्तालाप तथा वादविवाद भी करते। धीरे-धीरे बुद्धदेव आर्यसमाज की ओर झुकने लगे। स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं की ओर आकृष्ट करने में उनके गुरु पं. चमननाथजी का हाथ था। ये गुरु भी संस्कृत के अद्वितीय विद्वान् तथा सारस्वत, चन्द्रिका आदि व्याकरण ग्रन्थों के अच्छे ज्ञाता थे। पं. बुद्धदेव ने संस्कृत व्याकरण का प्रारम्भिक अध्ययन इन्हीं से किया। पं. चमननाथ को अपने जीवनकाल में स्वामी दयानन्द के दर्शन करने का सौभाग्य उस समय प्राप्त हुआ था, जब वे अमृतसर पधारे थे। स्वामीजी के कतिपय शिक्षाप्रद संस्मरण सुनाकर पं. चमननाथ ने पं. बुद्धदेव के मन में भी स्वामीजी के प्रति तीव्र श्रद्धाभाव भर दिया। उनके हृदय में यह धारणा भी बद्धमूल हो गई कि आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन ही मनुष्य के लिए लाभप्रद है। आर्ष व्याकरण पढ़ने की तीव्र लालसा पं. बुद्धदेव को मथुरा खींच लाई, जहां आकर उन्होंने स्वामी विरजानन्द के शिष्य और महर्षि दयानन्द के सहाध्यायी पं. बनमाली चौबे से अष्टाध्यायी पढ़ना आरम्भ किया। चौबेजी पंण्डित बुद्धदेव को स्वामी दयानन्द के जीवनकाल के अनेक रोचक प्रसंग सुनाया करते थे। अष्टाध्यायी का अध्ययन अभी चल ही रहा था कि बनमाली चौबे का निधन हो गया। अब पं. बुद्धदेव को अष्टाध्यायी पूरा करने की चिन्ता हुई और वे स्वामी दयानन्द के एक अन्य गुरुभाई के शिष्य पं. बदरीदत्तजी के पास पहुंचे। यहां रहकर उन्होंने अष्टाध्यायी का अध्ययन पूरा किया तथा आर्यसमाज के सिद्धान्तों को भी समग्र दृष्टि से समझा।

अष्टाध्यायी समाप्त करने के पश्चात् महाभाष्य तथा दर्शन शास्त्रों का अध्ययन करने के लिये पं. बुद्धदेव वाराणसी चले गये। यहां रहकर उन्होंने व्याकरण महाभाष्य के अतिरिक्त दर्शन-शास्त्रों का विशद् अध्ययन किया। शंकराचार्य कृत वेदान्त सूत्र का भाष्य तथा उपनिषद् ग्रन्थ भी पढ़े। इस अवधि में पं. बुद्धदेव को संस्कृत में भाषण एवं वार्तालाप करने तथा शास्त्रार्थ करने का भी चस्का लगा और वे दोनों कलाओं में पूर्ण व्युत्पन्न हो गये। शिक्षा समाप्त होने पर स्वामी दर्शनानन्द की प्रेरणा प्राप्त कर वे धर्मप्रचार के क्षेत्र में उतर पड़े। कालान्तर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपदेशक बनकर कार्य करने लगे। भाई परमानन्द की प्रेरणा से पं. बुद्धदेव ने असहयोग आन्दोलन में भी भाग लिया और खद्दर पहनने का व्रत धारण किया। स्वल्पकाल के लिये आप जलालपुर जट्टां की हाई स्कूल में अध्यापक भी रहे। परन्तु शीघ्र ही आर्यसमाज रावलपिण्डी में पुरोहित बन गए। आर्यसमाज मीरपुर में भी आपने पौराहित्य कार्य किया था।

पं. बुद्धदेवजी के 'मीरपुरी' नाम से विख्यात होने की भी विचित्र कथा है। जिस समय ये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में उपदेशक थे, उस समय प्रसिद्ध विद्वान् तथा वक्ता पं. बुद्धदेव विद्यालंकार भी सभा के उपदेशक थे। एक ही नाम के दो उपदेशकों में अन्तर करने के लिये आप 'पण्डित बुद्धदेव मीरपुरी' कहलाने लगे क्योंकि सभा में काम करते हुए भी महीने के १५ दिन आप आर्यसमाज मीरपुर को पौरोहित्य कर्म के लिये देते थे। इस प्रकार अमरपुर ग्रामवासी होने पर भी वे मीरपुरी कहलाये।

अब पं. बुद्धदेव मीरपुरी आर्यसमाज के विख्यात उपदेशक, वक्ता, कथा वाचक तथा शास्त्रार्थ महारथी के रूप में प्रसिद्ध हुए। उन्होंने अपने जीवनकाल में सैकड़ों शास्त्रार्थ किये। प्रायः सभी प्रसिद्ध पौराणिक पण्डितों को शास्त्रार्थ में पराजित करने का उन्हें अवसर मिला था। पं. माधवाचार्य, पं. अखिलानन्द, पं. श्रीकृष्ण शास्त्री, पं. कालूराम शास्त्री आदि सभी पौराणिक शास्त्रार्थकर्त्ता उनके सम्मुख आकर पराभूत हुए। अम्बाले के जैन विद्वानों से भी उनका शास्त्रार्थ हुआ था। कालान्तर में आपने धर्म प्रचारार्थ पूर्वी अफ्रीका की भी यात्रा की। नैरोबी में भी उनका पं. माधवाचार्य से शास्त्रार्थ हुआ, जो उन दिनों सनातन धर्म के प्रचार हेतु उस महाद्वीप में आये हुए थे। विजयश्री मीरपुरीजी को ही मिली। हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह में भी वे सत्याग्राही के रूप में गये। उन्हें नौ मास का कारावास दण्ड मिला और वे गुलबर्गा जेल में रहे। यहां जेल में रहते हुए भी उन्होंने रामायण, महाभारत आदि आर्ष ग्रन्थों की कथा का क्रम जारी रखा।

पं. बुद्धदेव की स्मरण शक्ति अगाध थी। उन्हें सहस्रों की संख्या में वेदमन्त्र, उपनिषद् वाक्य, रामायण, महाभारत के श्लोक, पुराणों के श्लोक, दर्शनों के सूत्र आदि याद थे। २८ अक्टूबर १९६३ को दिल्ली में आपकी मृत्यु हुई।

ले. का.—१. षड्दर्शन समन्वय, २. संस्कारविधि-व्याख्या, ३. मूर्तिपूजा मीमांसा (१९९४ वि.), ४. अवतारवाद मीमांसा, ५. राधास्वामीमतालोचन—(१९३६), ६. यथार्थप्रकाश की हक़ीक्त (उर्दू)—(राधास्वामी मत के आचार्य श्री आनन्दस्वरूपजी लिखित पुस्तक यथार्थप्रकाश का उत्तर)।

पं. बुद्धदेव ने अनेक उपयोगी ट्रैक्ट भी लिखे। ये दयानन्द स्वाध्याय मण्डल लाहौर से प्रकाशित हुए—१. विवाह संस्कार, २. गर्भाधान और योनि संकोच, ३. धाया का दूध, ४. मृतक श्राद्ध-खण्डन, ५, वेदभाष्य, ६. पुत्र परिवर्तन वैदिक हैं, ७. नियोग और पौराणिक धर्मी (उर्दू), ८. पौराणिक ईश्वर की पड़ताल (उर्दू)।

वि. अ.—जीवनयात्रा : बुद्धदेव मीरपुरी (जीवन-चरित) जगदीश विद्यार्थी, १९६५.

प्रो. बुद्धिप्रकाश आर्य

श्री आर्य का जन्म १५ जनवरी १९३२ को वदायूं जिले के धनौरा ग्राम में श्री रामचन्द्र के यहां हुआ। आपने हिन्दी, संस्कृत तथा समाजशास्त्र में एम. ए. किया है। वे विगत कई वर्षों से दयानन्द कालेज, अजमेर में समाजशास्त्र विभाग में प्राध्यापक के पद पर कार्य कर रहे हैं। आप आर्य विद्या परिषद् की धार्मिक परीक्षाओं का विगत अनेक वर्षों से संचालन कर रहे हैं।

ले. का.—वैदिक संध्योपासना (पद्यात्मक भाष्य), मूर्तिपूजा : एक अभिशाप, धर्म शिक्षा, ईश्वर एक : नाम अनेक (सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास की व्याख्या).

व. प.—रामपुरा हाउस, रामगंज अजमेर ३०५००१

श्रीमती बुद्धिमती

काशीपुर जिला नैनीताल के नायब तहसीलदार श्री बांकेलाल की पत्नी श्रीमती बुद्धिमती ने चार भागों में 'नारी सुदशा प्रवर्त्तक' नामक ग्रन्थ की रचना की। इसमें स्त्री शिक्षा और नारी धर्म का सुन्दर विवेचन हुआ है। इसका छठा संस्करण १९५८ वि. में वैदिक यंत्रालय में मुद्रित हुआ। इस ग्रन्थ को लेखिका ने तराई जिले के अंग्रेज सुपरिन्टेन्डेन्ट जे. सी. मैकडानल्ड को समर्पित किया था।

ब्रजनन्दनसिंह

आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के भूतपूर्व प्रधान श्री सिंह का जन्म कार्तिक कृष्णा ८, सं. १९३८ (१४ अक्टूबर

१८८१) को दानापुर में श्री बलदेवसिंह के यहां हुआ। उनकी शिक्षा बी. ए. और बी. एल. तक हुई। कुछ वर्ष वकालत करने के पश्चात् ये राज्य सेवा में चले गये और विहार राज्य के आबकारी विभाग के आयुक्त पद से अवकाश ग्रहण किया। आप गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथ धाम के मंत्री भी रहे।

११ नवम्बर १९५० को पटना में उनका निधन हुआ। आपने 'संध्याप्रकाश' नामक पुस्तक की रचना की है।

बाबू ब्रजनाथ

मुरादाबाद निवासी बाबू ब्रजनाथ का जन्म १९३९ वि. में हुआ। इनकी शिक्षा बी.ए., एल.एल.बी. तक हुई। इनकी एक पुस्तक 'आर्यसमाज क्या है ?' आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त द्वारा १९०३ में प्रकाशित हुई। इसी सभा ने इनकी एक अन्य पुस्तक Beliefs of Swami Dayanand भी प्रकाशित की।

पं. ब्रजमोहन झा

सिद्धान्त निष्ठ विद्वान् पं. ब्रजमोहन झा का जन्म माघ कृष्णा तृतीया सं. १९४५ वि. को मथुरा जिले के खामनी नामक ग्राम में पं. रूपचन्द झा के यहां हुआ। आप हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू आदि के अच्छे ज्ञाता थे। आपने युवावस्था में ही आर्यसमाज में प्रवेश किया तथा आर्यसमाज रेल बाजार कानपुर के प्रधान चुने गये। ७ अप्रैल १९१८ को कानपुर में आपने सनातन धर्म के प्रसिद्ध पण्डित गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी तथा पं. कालूराम शास्त्री से लेखबद्ध शास्त्रार्थ किया, जिसमें आपकी विजय हुई। वे आगरा की महालक्ष्मी मिल के महाप्रवन्धक थे। २९ मार्च १९५६ को उनका निधन हुआ।

ले.का.—जीवनचरित—भीष्म पितामह, धनुर्धर अर्जुन, समर्थ गुरु रामदास, नरशार्दूल अभिमन्यु, शाहजी, पं. भगवानदीन मिश्र का जीवनचरित, चन्द्रवती। **इस्लाम विषयक ग्रन्थ**—कुरानशरीफ का फोटो, सैयद सालार मसउद, ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती, सैयद क़माल खाँ, **पौराणिक मत खण्डन**—सनातन धर्म सभा की पोल, कालूराम-मुखमर्दन, कानपुर शास्त्रार्थ, **स्फुट ग्रन्थ**—धर्म विचार, हिन्दुओ जागो, नवसस्येष्टि–होली, पतित पावनी गंगा, भूतलीला, सामान्यकर्म पद्धति, भयंकर विश्वासघात, स्वास्थ रक्षक।

डा. ब्रजमोहन शर्मा

डॉ. शर्मा लखनऊ के निवासी थे। आपने स्वामी दयानन्द का एक अंग्रेजी जीवन चरित Swami Dayanand, his Life and Teachings शीर्षक लिखा है। १९३३ में यह अपर इण्डिया पब्लिशिंग हाउस लखनऊ से छपा था। इनकी एक अन्य हिन्दी पुस्तक 'महर्षि दयानन्द और नवयुवक' हिन्दी पुस्तक भंडार लखनऊ से १९२३ में छपी।

ब्रह्मदत्त जिज्ञासु

वेदों के तलस्पर्शी विद्वान् तथा पाणिनीय पद्धति से संस्कृत व्याकरण की शिक्षा देने के प्रबल समर्थक पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु का जन्म जालंधर जिले के मल्लूपोता ग्राम में १४ अक्टूबर १८९२ को हुआ। इनके पिता का नाम रामदास तथा माता का नाम परमेश्वरी देवी था। जिज्ञासुजी ने संस्कृत का अध्ययन अष्टाध्यायी के प्रकाण्ड विद्वान् स्वामी पूर्णानन्द से किया। व्याकरण में व्युत्पन्न होने के पश्चात् स्वामी सर्वदानन्द द्वारा स्थापित साधु-आश्रम हरदुआगंज में उन्होंने आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन १९२० से प्रारम्भ किया। १९२१ में यह आश्रम गंडा सिंहनाला अमृतसर में विरजानन्दाश्रम के नाम से स्थानान्तरित हो गया।

जनवरी १९३२ में मीमांसादर्शन का विशिष्ट अध्ययन करने की दृष्टि से जिज्ञासुजी काशी आये। यहां उन्होंने महामहोपाध्याय पं. चिन्न स्वामी शास्त्री से उक्त दर्शन का गम्भीर अध्ययन किया। १९३५ में वे काशी से लाहौर चले आये और रावी के तट पर शाहदरे में छात्रों को अष्टाध्यायी, महाभारत, निरुक्त, वेद, दर्शन आदि का अध्ययन कराने लगे। देश विभाजन के पश्चात् जिज्ञासुजी काशी आये और मोतीझील अजमतगढ पैलेस में पाणिनीय महाविद्यालय की स्थापना की। पूर्ववत् यहां पर संस्कृत व्याकरण तथा अन्य शास्त्रों का शिक्षण करने लगे। भारत

के राष्ट्रपति ने संस्कृत विद्वान् के रूप में उन्हें सम्मानित किया। २१ दिसम्बर १९६४ में वाराणसी में उनका निधन हुआ।

ले. का.—यजुर्वेदभाष्य विवरण—स्वामी दयानन्द कृत यजुर्वेदभाष्य के प्रथम १५ अध्यायों पर जिज्ञासुजी ने विस्तृत विवरण लिखा। विवरणकार ने दयानन्द भाष्य पर विस्तृत टिप्पणियाँ लिखीं तथा भाष्य में प्रयुक्त संस्कृत भाषा के व्याकरण विषयक तथाकथित अपप्रयोगों की साधुता सिद्ध की है। विवरण की विस्तृत भूमिका में वेद ज्ञान के स्वरूप, वेद और उसकी शाखाएं, देवतावाद, छन्दोमीमांसा, धातुओं का अनेकार्थत्व तथा यौगिकवाद, वेदार्थ की विविध प्रक्रिया आदि महत्त्वपूर्ण विषयों का विवेचन किया गया है। इस विवरण का प्रथम १० अध्यायात्मक भाग रामलाल कपूर ट्रस्ट अमृतसर द्वारा २००३ वि. में प्रकाशित किया गया। अवशिष्ट पांच अध्यायों का विवरण जिज्ञासुजी के निधन के पश्चात् २०२८ वि. में प्रकाशित हुआ।

वेदार्थ प्रक्रिया के मूलभूत सिद्धांत (१९४५), वेद और निरुक्त—प्रथम आर्य विद्वत् सम्मेलन (१९३२) में पठित यह निबन्ध सर्वप्रथम ओरियंटल कालेज लाहौर की शोध-पत्रिका में १९३३ में प्रकाशित हुआ। निरुक्तकार और वेद में इतिहास—यह निबन्ध भी आर्य विद्वत् सम्मेलन में पढ़े जाने के पश्चात् ओरियंटल कालेज लाहौर की शोध-पत्रिका में छपा (१९४५), देवापि और शन्तनु के वैदिक आख्यान का वास्तविक स्वरूप (२००३ वि.), अष्टाध्यायी भाष्य प्रथमावृत्ति—अष्टाध्यायी के प्रत्येक सूत्र का पदच्छेद, विभक्ति, समास, अर्थ, उदाहरण और उसकी सिद्धिपूर्वक यह भाष्य संस्कृत तथा हिन्दी दोनों भाषाओं में लिखा था। अवशिष्ट ३ अध्यायों पर भाष्य उनकी अन्तेवासिनी कु. प्रज्ञादेवी ने लिखा। प्रथम भाग रामलाल कपूर ट्रस्ट २०२१ वि. (१९६४), द्वितीय भाग द्वितीय संस्करण २०३१ वि. (१९७४), तृतीय भाग (प्रज्ञादेवी लिखित) २०२४ वि. (१९६८) में छपा। संस्कृत पठनपाठन कीअनुभूत सरलतम विधि-अष्टाध्यायी के माध्यम संस्कृत सीखने की सरल विधि को लेखक ने अनेक पाठों में निबद्ध किया है। (१९५५)। अन्य ग्रन्थ—भारत के समस्त रोगों की अचूक औषधि—ऋषि प्रणाली (१९५९), गोरखपुर तथा मेरठ में आयोजित वेद सम्मेलनों के अध्यक्षीय भाषण (१९५९ तथा (१९५१)।

श्री ब्रह्मदत्त तिवारी 'नागर'

श्री नागर लखनऊ के निवासी थे। आपने स्वामी दयानन्द के जीवन की शिवरात्रि से संबन्धित मूर्तिपूजा से विरक्त होने की घटना का काव्यात्मक चित्रण अपनी 'शिवरात्रि व्रत' शीर्षक काव्यकृति में किया है। इसमें पद्यों की कुल संख्या १३८ है।

श्री ब्रह्मदत्त भारती

आप दिल्ली के निवासी हैं। आपने ईसाईमत की समीक्षा में अनेक ग्रन्थ लिखे हैं। ये ग्रन्थ भूतपूर्व पोप की भारत-यात्रा के अवसर पर १९६४ में प्रकाशित हुए थे।

ले. का.—Christianity Unmasked (1964), The Christian Love (1964), The Truth behind the Resurrection of Christ, The Vedas and The Bible(1964), The Conflict Between Science and Christiantiy (1964). इन्हें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (दिल्ली) ने प्रकाशित किया था।

पं. ब्रह्मदत्त विद्यालंकार

आपका जन्म जालंधर (पंजाब) में श्री चेतराम के यहां हुआ। गुरुकुल कांगड़ी में अध्ययन के लिये प्रविष्ट हुए और १९७० वि. (१९१४) में विद्यालंकार की उपाधि ग्रहण की। आर्यसमाज के वक्ता एवं प्रचारक के रूप में आपने वर्षों तक कार्य किया। १९२४ में इनका निधन हो गया।

ले. का.—१. मांस मीमांसा, २. वैदिक धर्म शिक्षावली।

श्री ब्रह्मदत्त सोढा

अजमेर के श्री जेठमल सोढा की स्वामी दयानन्द से उस समय भेंट हुई थी, जब वे जोधपुर में अपने ज़ीवन की

अन्तिम रुग्णावस्था झेल रहे थे। इन्हीं जेठमलजी के पुत्र ब्रह्मदत्त सोढा आर्यसमाज के इतिहास तथा पुरावृत्त के जानकर, कुशल लेखक तथा कार्यकर्त्ता थे। इन्होंने स्वामी नित्यानन्द ब्रह्मचारी का विस्तृत जीवनचरित लिखा जो बम्बई के सेठ रणछोड़दास भवान ने १९७५ वि. में प्रकाशित किया। अपनी ख्याति के प्रति सर्वथा अनासक्त श्री सोढा ने इस पुस्तक पर अपना नाम भी नहीं दिया। उनका निधन ११ मार्च १९७४ को हुआ।

ले. का.—राष्ट्रनिर्माण की वेदोक्त योजना (अथर्ववेद के भूमि सूक्त की व्याख्या), अजमेर और ऋषि दयानन्द–२०१५ वि. (१९५८). ऋषि उद्यान प्रसून के अन्तर्गत प्रभातवंदन (प्रातरग्निं आदि ५ मंत्र) तथा शिवसंकल्प मंत्र अर्थ सहित।

सोढाजी परोपकारी में नियमित रूप से आर्य विद्यार्थी के नाम से लिखते थे। पुस्तक समालोचना लिखते समय वे अपना नाम 'कश्चित् अल्पज्ञ' के रूप में देते थे।

पं. ब्रह्मदत्त स्नातक

स्नातकजी का जन्म १५ नवम्बर १९१८ को पंजाब के अबोहर नगर में हुआ। इनके पिता पं. गंगादत्त शर्मा आर्यसमाज के उपदेशक थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा डी. ए. वी. हाई स्कूल अजमेर में हुई। तदनन्तर ये गुरुकुल वृन्दावन में प्रविष्ट हुए। आपने पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री तथा आगरा विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए. भी किया। स्नातकजी ने भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण विभाग में वरिष्ठ पत्रकार एवं सम्पादक के रूप में कार्य किया तथा वहीं से सेवानिवृत्त हुए। कालान्तर में आपने सार्वदेशिक सभा में जन सम्पर्क अधिकारी के पद पर अवैतनिक रूप से कार्य किया। स्वामी धर्मानन्द कृत स्वामी दयानन्द के ऋग्वेदभाष्य के अंग्रेजी अनुवाद का आपने सम्पादन किया है। १९५० में आपने पुण्यभूमि साप्ताहिक का सम्पादन भी किया था।

ले. का.—द्विराष्ट्र सिद्धान्त और राष्ट्रीय मुसलमान (१९४९).

व.प.—सी. ४ बी. ३३२ जनकपुरी, दिल्ली-११००५८

पं. ब्रह्मप्रकाश विद्यावाचस्पति

पं. ब्रह्मप्रकाश का जन्म श्रावण पूर्णिमा १९७० वि. (१९१३) को मेरठ के छपरौली कस्बे में पं. मेघराज आर्य के यहां हुआ। आपकी शिक्षा गुरुकुल किरठल (मेरठ) तथा दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय लाहौर में हुई। आपने उत्तरप्रदेश तथा राजस्थान में पर्याप्त समय तक वेद-प्रचार किया। सम्प्रति उपदेशक विद्यालय ब्रजघाट गढ़-मुक्तेश्वर के आचार्य हैं।

ले.का.—मानवजीवन दर्शन (१९७७) अहा, यह कैसा स्वराज्य है? (१९८०), भगवानों का देश (१९८२), भगवतियों के चमत्कार (१९८६), गौरव गीत-महाकाव्य (१९८८).

व. प.—शास्त्री सदन, ११/१२४ पश्चिमी आजाद-नगर, दिल्ली ११००५१,

डा. ब्रह्ममित्र अवस्थी

संस्कृत के प्रखर विद्वान् डा. अवस्थी का जन्म १९२९ में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल अयोध्या में हुई। १९६१ में इन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से एम. ए. तथा १९६४ में पी-एच.डी. परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। सम्प्रति लाल-बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत संस्थान में विभागाध्यक्ष हैं। आपके द्वारा लिखित ग्रन्थों में 'भारतीय न्यायशास्त्र का अध्ययन' तथा 'पातंजल योगशास्त्र : एक अध्ययन' उल्लेखनीय हैं। स्वामी दयानन्द के पुणे में प्रदत्त व्याख्यानों का सम्पादन आपने 'उपदेश-मंजरी' शीर्षक से किया है जिसे आर्यकुमार सभा किंग्स वे, दिल्ली ने १९६३ में प्रकाशित किया था।

व. प.—डा. गंगानाथ झा शोध संस्थान, इलाहा-बाद (उ. प्र.)

स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक (प्रियरत्न आर्ष)

सहारनपुर जिले के लखनौती ग्राम के एक जमींदार परिवार में श्री राजाराम के यहां श्री प्यारेलाल (प्रियरत्न) का जन्म फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी १९५० वि. (१८९४) को हुआ। बाल्यकाल में तो इनकी शिक्षा मात्र उर्दू की ही हुई किन्तु बाद में सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन ने इन्हें आर्य-

समाज के सिद्धान्तों की ओर आकर्षित किया। फलतः संस्कृत पढ़ने की रुचि उत्पन्न हुई। अष्टाध्यायी प्रणाली से संस्कृत का अध्ययन करने के लिये ये स्वामी पूर्णानन्द के निकट रहे। वहां पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु इसके सहपाठी थे। कालान्तर में काशी रहकर पं. देवनारायण तिवारी से महाभाष्य का अध्ययन किया और अन्य विद्वानों से विविध शास्त्र पढ़े। कुछ काल तक काशी विद्यापीठ में अध्यापन भी किया। प्रथम ये पं. प्रियरत्न आर्ष नाम से जाने गये, तत्पश्चात् २००१ वि. में स्वामी वेदानन्द तीर्थ से संन्यास की दीक्षा ग्रहण की और ब्रह्ममुनि कहलाये। १६ दिसम्बर १९७७ को स्वामीजी का निधन हुआ। गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी ने उनकी विद्वता का सम्मान करते हुए १९५८ में उन्हें विद्यामार्तण्ड की उपाधि से सम्मानित किया था।

ले.का.—वेदभाष्य व्याख्या—ऋग्वेदभाष्य (मं. ७ सू. ६१ मंत्र ३ से सूक्त ६८ पर्यन्त) १९७२, ऋग्वेद दशम मण्डल का भाष्य—दो खण्ड (२०३१ वि. तथा २०४५ वि.), यजुर्वेदान्वयार्थ (दस अध्यायों के मंत्रों का पदार्थ और अन्वय, १९६८), सामवेद भाष्य (पूर्वार्चिक) मुनिभाष्य (२०२६ वि.), अथर्ववेद मुनिभाष्य (प्रथम तीन काण्ड १९७४), वेदाध्ययन प्रवेशिका।

वेदार्थ और वैदिक विवेचन— वैदिक ईशवंदना (१९५०), मित्रावरुण की शिक्षा (ऋ. मं. ७ सूक्त ६१, ६२)(१९३५), वैदिक सूर्यविज्ञान (१९९४ वि.), सामसुधा (१९६३), यमपितृ परिचय—(वेदान्तर्गत यम एवं पितर विषयक मंत्रों का विवेचन, (१९९० वि.), ब्रह्मवेद का रहस्य (१९४०), विश्वविज्ञान और परमात्मबोध—(मनसा परिक्रमा के मंत्रों की व्याख्या) (१९४१), वैदिक ब्रह्मचर्य-विज्ञान (१९६४), वैदिकवंदन (१९५८), वेद में 'असित' शब्द पर एक दृष्टि (१९३३), वेद में देवृकामा या देवकामा (१९९९ वि.), अथर्ववेदीय चिकित्सा-शास्त्र, अथर्ववेदीय मंत्र विद्या, मंत्रों के ऋषि (१९७४), अथर्ववेदीय-अतिथि-सत्कार और मांस शब्द (१९६२), ब्रह्मपारायण यज्ञ की शास्त्रीयता (१९६६), वैदिक ज्योतिष शास्त्र, वेद में इतिहास नहीं, सोम सरोवर का स्नान, वैदिक मनोविज्ञान, वेद में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां, यमयमी संवाद सूक्त, वैदिक अध्यात्मसुधा, वैदिक योगामृत, वेदाध्ययन प्रवेशिका, वेद के एक संदिग्ध प्रकरण का विवेचन।

उपनिषद् साहित्य—ईशोपनिषत् का स्वरूप (१९२३), माण्डूक्योपनिषद् का स्वरूप, उपनिषद् सुधासार, बृहदारण्यकोपनिषद् कथामाला, छान्दोग्योपनिषद् कथामाला, उपनिषदों का वेदान्त।

स्वामी दयानन्द विषयक—दयानन्द दिग्दर्शन। **कर्मकाण्ड विषयक ग्रन्थ**—ब्रह्मपारायण यज्ञ की शास्त्रीयता एवं वैदिकता का विवेचन। **आर्ष इतिहास विषयक ग्रन्थ**—रामायण दर्पण, १९४७ महाभारत शिक्षा सुधा।

वेदांग विषयक ग्रन्थ—याज्ञवल्क्य शिक्षा (१९६७), अव्ययार्थ निबन्धनम् (१९६७), निरुक्त सम्मर्शः (निरुक्त की संस्कृत टीका)।

दर्शन विषयक ग्रन्थ—सांख्यदर्शन संस्कृत भाष्य(१९५५), न्यायदर्शन वात्स्यायन भाष्य (आंशिक) (१९६८), वैशेषिक-दर्शन संस्कृत भाष्य (१९६२), वेदान्तदर्शन संस्कृत भाष्य (१९५४).

स्फुट ग्रन्थ—विमान शास्त्र, आर्ष योग प्रदीपिका (१९४३), बृहदविमान शास्त्र (१९५९), योगमार्ग, वैदिक राष्ट्रीयता (१९४४), बालजीवन सोपान(१९६२), युग धर्म, राजनीति और विश्वशांति (२०३३ वि.)। जीवनपथ क्रियात्मक मनोविज्ञान, मानवीय शक्तियों का परिचय और उनका विकास, भ्रमनिवारण (ब्रह्मचारी कृष्णदत्त के पाखण्ड का खण्डन) स्वामी ब्रह्ममुनि के संन्यास पूर्व के ग्रन्थ प्रिय ग्रन्थमाला तथा पश्चात् के ग्रन्थ ब्रह्ममुनि ग्रन्थमाला के अन्तर्गत छपे। उनके कुछ ग्रन्थों को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य साहित्य मण्डल अजमेर ने भी प्रकाशित किया। उनके समस्त ग्रंथों की संख्या ७७ बताई गई है।

वि.अ.—निज जीवनवृत्तवनिका (आत्मकथा) १९६१.

पं. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी

मूलतः इटावा जिले के निवासी पं. ब्रह्मानन्द का जन्म १९०८ में हुआ। इनके पितामह पं. बैजनाथ त्रिपाठी

बाड़मेर (राजस्थान) में वकील थे। इनके पिता का नाम पं. अनन्तराम त्रिपाठी था। १९१६ में पं. ब्रह्मानन्द गुरुकुल वृन्दावन में प्रविष्ट हुए और १९३० में स्नातक बन कर 'आयुर्वेद-शिरोमणि' की उपाधि प्राप्त की। कई वर्षों से ये अजमेर में आयुर्वेद की चिकित्सा कर रहे हैं। प्रथम आर्य विद्वत् सम्मेलन के अवसर पर आपने 'वैदिक साहित्य और भौतिक विज्ञान' शीर्षक निबन्ध पढ़ा था जो बाद में आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त द्वारा १९९२ में प्रकाशित हुआ। स्वामी नित्यानन्द ब्रह्मचारी तथा बूंदी के राजपण्डितों के बीच हुए एक पुराने शास्त्रार्थ का भी आपने सम्पादन किया जो आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान द्वारा २०३३ वि. में प्रकाशित हुआ। 'भूपाल प्रशस्ति' नामक एक संस्कृत काव्य भी आपने लिखा था।

व. प.—आनन्द चिकित्सा सदन, केसरगंज अजमेर ३०५००१

श्री ब्रह्मानन्द बन्धु

आपकी स्वामी दयानन्द विषयक एक काव्यकृति 'ऋषि अर्चन' सार्वदेशिक प्रकाशन दिल्ली से २०१३ वि. में प्रकाशित हुई। 'धूम्रपान या सर्वनाश' शीर्षक एक अन्य पद्यात्मक रचना को दर्शनानन्द ग्रन्थागार मथुरा ने समाज सुधार ट्रैक्ट माला के अन्तर्गत प्रकाशित किया था।

ब्रह्मानन्द शर्मा

श्री शर्मा डी.ए.वी. स्कूल देवबंद (जिला सहारनपुर) में अध्यापक थे। आपने सत्यार्थप्रकाश में प्रयुक्त शब्दों का एक कोश बनाया था जो 'सत्यार्थप्रकाशस्य शब्दार्थभानु कोष' शीर्षक से १९७५ वि. में अमृतसर से छपा था।

डा. ब्रह्मानन्द शर्मा

डा. शर्मा का जन्म ११ फरवरी १९२३ को अबोहर (पंजाब) के निकट के एक ग्राम दुतारांवाली में पं. लादूरामजी के यहां हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा संगरिया में स्वामी केशवानन्दजी के द्वारा स्थापित विद्यालय में हुई। इनका उच्च शिक्षण बीकानेर के डूंगर कालेज में हुआ जहां से आपने १९४६ में संस्कृत में एम.ए. किया और इसी कालेज में संस्कृत के प्रवक्ता बन गये। कालान्तर में आप भरतपुर, अलवर, जोधपुर तथा अजमेर के राजकीय कालेजों में संस्कृत विभाग के प्रवक्ता एवं अध्यक्ष के रूप में रहे तथा १९७८ में राज्य सेवा से अवकाश ग्रहण किया। आप साहित्य और अलंकार शास्त्र के विश्रुत विद्वान् हैं।

ले. का.—डा. शर्मा ने स्वामी हरिहरानन्द करपात्री के द्वारा लिखित वेदार्थ पारिजात शीर्षक महाग्रन्थ के कतिपय अंशों का सटीक उत्तर 'वेदार्थ-विमर्श' शीर्षक से दिया है। परोपकारी में उनका यह विवेचन धारावाही छपता रहा। तत्पश्चात् १९८८ में परोपकारिणी सभा अजमेर ने उसे पुस्तकाकार प्रकाशित किया। डा. शर्मा के ही निर्देशन में इस ग्रन्थ के लेखक ने १९६८ में आर्यसमाज का संस्कृत भाषा और साहित्य को योगदान विषय लेकर पी-एच. डी. की उपाधि ली।

ले. का.—संस्कृत साहित्य में सादृश्यमूलक अलंकारों का विकास (शोध-प्रबंध, १९७४), वस्त्वलंकारदर्शनम् १९६९, अभिनव रस मीमांसा १९७५, A Critical Study of Sanskrit Poetics (1978), काव्य सत्यालोक (१९८०), तत्त्व-शतकम् (१९८०), रसालोचनम् (१९८५), जम्भेश्वर दर्शन (१९८६), गंगोदय १९८७.

व.प.—७ क. १५ जवाहर नगर, जयपुर ३०२००४.

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती

स्वामी दर्शनानन्द के छोटे भाई कर्त्ताराम, संन्यास लेकर स्वामी ब्रह्मानन्द के नाम से विख्यात हुए। इन्होंने लखनऊ के दिग्विजयगंज मुहल्ले में मार्च १८९३ में 'वैदिक पुस्तक प्रचारक फण्ड' की स्थापना की जिसके माध्यम से धार्मिक पुस्तकों को प्रकाशित कर सस्ते मूल्य में उपलब्ध कराया जाता था। इस योजना के अन्तर्गत अनेक पुस्तकें छपीं।

ले. का.—स्वामी ब्रह्मानन्द कृतनीति विषयक ५० उपदेशों का संग्रह 'नीति शिक्षावली' भाग—१, अगस्त १८९३ (१९५० वि.) में प्रकाशित हुआ। आर्यावर्त्त का चक्रवर्ती राज्य, (१९९३ वि.) ईसाई मत खण्डन, आपने मेरठ से भारतोद्धार नामक मासिक पत्र प्रकाशित किया।

स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती

इनका पूर्वाश्रम का नाम बद्रीप्रसाद वर्मा था। १९२५ में उन्होंने आर्यसमाज वाराणसी की सदस्यता ग्रहण की। १९२८ में वे कांग्रेस के सदस्य बने और स्वाधीनता संग्राम में भाग लिया। १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लेने के कारण इन्हें कारावास का दण्ड मिला। संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् ये टंकारा स्थित स्वामी दयानन्द स्मारक भवन में निवास करते रहे। हरिगीतिका छन्द में लिखी गई दयानन्ददिग्विजय शीर्षक इनकी काव्य कृति १९६५ में प्रकाशित हुई। एक अन्य पुस्तक 'प्राणायाम की सरल विधि' वाराणसी से छपी।

बेचाराम चटर्जी

चटर्जी महाशय बंगाली थे किन्तु इन्होंने पंजाब तथा सिंध में रहकर आर्यसमाज का कार्य किया था। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम दशक में इन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की तथा प्रचार का कार्य भी किया। १८९३ में ये आर्यसमाज सक्खर (सिंध) के प्रधान थे। पंजाब की आर्य-समाजों के वार्षिकोत्सवों पर उनके विद्वतापूर्ण प्रवचन कराये जाते थे। इनका लेखन अंग्रेजी में है।

ले. का.—The Anthology of Wisdom from All Nations—इस ग्रन्थ में उपनिषद्, गीता, स्मृति-ग्रन्थ तथा महाभारत के शान्तिपर्व में उल्लिखित नैतिक तथा आचारमूलक वचनों का अंग्रेजी अनुवाद प्रस्तुत किया गया है। साथ ही जेंदावस्ता, बौद्ध साहित्य एवं यूनानी दार्शनिकों की कृतियों के उद्धरण भी संगृहीत हैं। लेखक के दृष्टिकोण की व्यापकता इस बात से सिद्ध होती है कि उसने रोमन, ईसाई (पुराना तथा नया धर्म नियम) तथा इस्लाम की नैतिक शिक्षाओं को भी प्रस्तुत करने में संकोच नहीं किया है (१८९३)। Lectures and Notes—दो भाग, लेखक द्वारा लिखे गये विविध लेखकों तथा उसके द्वारा प्रदत्त भाषणों का संग्रह। आर्यपत्रिका (३१ फरवरी १८९३), तथा बलूचिस्तान गजट (२३ जनवरी १८९३) ने इस पुस्तक की प्रशंसा-पूर्ण समालोचना प्रकाशित की थी (१८९३)। The Sacred Thoughts—दार्शनिक, धार्मिक तथा नैतिक विषयों पर लिखे गये का संग्रह। A Wreath of Prayers, Hymns, Holy Gems and Proverbs—प्रार्थना, भजन तथा नीति वाक्यों का संग्रह, Life of Shreeman Dayanand Saraswati आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से प्रकाशित।

चटर्जी महाशय द्वारा लिखित कतिपय अन्य ग्रन्थ—On Aryan Wisdom. Ideal Aryan Life. Bhakti or Love of God. Philosophy of Prayer, Life-Its Aim and Method. Pauranic Religion. On Drunkenness : Its (moral) Effect and Cure (1893). On Vegetarianism and its advantages—(Lecture). Dangers of Moderate Drinking. Faith and Culture (शारदाप्रसाद चटर्जी द्वारा १९८४ में प्रकाशित), The Soul or Ego, The Dangers in the AryaSamaj—आर्यसमाज सक्खर से १९९३ में प्रकाशित।

पं. बृहद्‌बल शास्त्री

इनकी निम्न कृतियों का विवरण मिलता है।

ले. का.—१. दयानन्द चरित १९३३, २. श्रद्धानन्द-चित्र काव्य, ३. आराध्य देवता (गोरक्षा विषयक), ४. वीरेन्द्र शतकम्।

पं. भंवरलाल शर्मा

राजस्थान के फुलेरा नगर निवासी श्री भंवरलाल शर्मा का जन्म पं. जानकीलाल शर्मा के यहाँ हुआ। ये विगत कई वर्षों से आर्यसमाज फुलेरा जयपुर के मंत्री हैं। आप राजस्थान शिक्षा सेवा में रहे। १९८१ में राजस्थान सरकार की ओर से आपको पुरस्कृत व सम्मानित किया गया। नवम्बर १९८२ में आप अवकाश ग्रहण कर अपना समग्र जीवन समाज सेवा में लगा रहे हैं। आपके पुरुषार्थ से ही गत ६ वर्षों से महर्षि दयानन्द पुरस्कार आर्यसमाज के गण्यमान्य लेखकों, साहित्यकारों और उपदेशकों को दिया जा रहा है। इस योजना के अन्तर्गत अब तक सर्व श्री श्रीराम आर्य (१९८५), पं. शान्तिप्रकाश (१९८६), प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु (१९८७), डा. भवानीलाल भारतीय

(१९८८), पं. शिवपूजनसिंह कुशवाहा (१९८९), तथा आचार्या निर्मला मिश्र (१९९०) को सम्मानित किया जा चुका है। आपने हिन्दी में सन्त सतसई, शकुन्तला, दमयन्ती, भारतीय वीरांगनाएं तथा विश्वकर्मा गौरव-गाथा आदि अनेक पुस्तकों का प्रणयन किया है। संस्कृत के प्रसिद्ध नाटककार भवभूति के उत्तररामचरित का आपने सुन्दर पद्यानुवाद किया है।

व. प.—आर्यसमाज फुलेरा (राजस्थान)

पं. भक्तराम

कई दशाब्दियों पूर्व वैदिक यंत्रालय के प्रबन्धक पद पर कार्य करने वाले पं. भक्तराम पंजाब के निवासी थे। १९०७ से नवम्बर १९०९ पर्यन्त वे इस पद पर कार्यरत रहे। परोपकारिणी सभा के मासिक मुखपत्र परोपकारी का सम्पादन भी उन्होंने पौष १९६५ वि. से लेकर भाद्रपद १९६६ वि. तक किया था।

ले. का.—आर्ष पितृयज्ञ तथा वेद प्रतिपादित नियोग-विधि।

डा. भक्तराम शर्मा

डॉ. शर्मा का जन्म ५ नवम्बर १९४१ को हुआ। इनकी शिक्षा एम. ए. (हिन्दी) तथा पी-एच. डी. तक की है। आप दिल्ली की पी. जी. डी. ए. वी. कालेज में हिन्दी के प्राध्यापक हैं।

ले. का.—द्विवेदी युगीन काव्य पर आर्यसमाज का प्रभाव (१९७३), उपनिषद् : प्राचीन कथायें, महात्मा हंसराज : महान् शिक्षा शास्त्री, (Mahatma Hans Raj: The Great Educationist). हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में आपके शताधिक शोध निबन्ध छप चुके हैं।

व. प.—१३/२३६ गीता कॉलोनी दिल्ली ११००३१.

माई भगवती

माई भगवती होशियारपुर जिले के हरयाणा कस्बे की निवासिनी थी। ये स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में आकर वैदिक धर्म का उपदेश करने लगीं। उनके भजनों का एक संग्रह अबलामति वेग रोधक संगीत विरजानन्द यंत्रालय लाहौर से १८९३ में छपा था।

पं. भगवद्दत्त बी. ए. रिसर्चस्कालर

आर्यसमाज में वैदिक शोध के प्रवर्तक पं. भगवद्दत्त का जन्म २७ अक्टूबर १८९३ को अमृतसर में हुआ। इनके पिता का नाम लाला चंदनलाल तथा माता का नाम हरदेवी था। इण्टरमीडियेट तक आपकी शिक्षा विज्ञान में हुई, तत्पश्चात् १९१३ में बी. ए. की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए और वेदाध्यायन को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। इनके गुरु स्वामी लक्ष्मणानन्द थे, जिनके विचारों का पं. भगवद्दत्त पर प्रगाढ़ प्रभाव पड़ा। स्वामी लक्ष्मणानन्द ने स्वामी दयानन्द से योगाभ्यास की विधि सीखी थी। पण्डित भगवद्दत्त ने बी. ए. की परीक्षा डी. ए. वी. कालेज लाहौर से उत्तीर्ण की थी। लगभग ६ वर्ष तक अवैतनिक रूप में वे डी. ए. वी. कालेज में कार्य करते रहे। तत्पश्चात् महात्मा हंसराज की प्रेरणा से मई १९२१ में वे डी. ए. वी. कालेज लाहौर के अनुसंधान विभाग के अध्यक्ष बने। इस अवधि में पण्डितजी ने इस विभाग के पुस्तकालय के लिये लगभग ७००० हस्त-लिखित ग्रन्थ एकत्र किये। १ जून १९३४ में पं. भगवद्दत्त ने डी. ए. वी. कालेज की सेवा से मुक्ति प्राप्त की तथा स्वतन्त्र रूप से अध्ययन तथा अनुसंधान कार्य में लग गए। देश विभाजन के पश्चात् पंजाबी बाग दिल्ली में अपना मकान बनाकर लेखन, मनन तथा अध्ययन में जुट गए। पं. भगवद्दत्त ४ मार्च १९२३ को परोपकारिणी सभा के सदस्य निर्वाचित हुए। आपने समय-समय पर सभा को स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों के मुद्रण, सम्पादन तथा प्रकाशन के सम्बन्ध में उपयोगी सुझाव दिये। वे इस सभा की विद्वत्समिति के सदस्य भी रहे। २२ नवम्बर १९६८ को पण्डितजी का ७५ वर्ष की आयु में दिल्ली में ही निधन हो गया।

ले. का.—वैदिक वाङ्मय का इतिहास—यह पं. भगवद्दत्त की शीर्षस्थ तथा प्रौढ़ शोध कृति है। तीन खण्डों में वैदिक वाङ्मय का व्यवस्थित इतिहास लिखने का श्लाघनीय एवं सफल प्रयास किया गया है। प्रथम खण्ड

में वेद की शाखाओं का खोज पूर्ण इतिहास है। इसका प्रथम संस्करण चैत्र १९९१ वि. में लाहौर से छपा था। इस इतिहास का द्वितीय भाग, जिसमें ब्राह्मण एवं आरण्यक साहित्य का विवेचन हुआ है, श्रीमद्दयानन्द महाविद्यालय संस्कृत ग्रन्थमाला सं. १० के अन्तर्गत १९५४ वि. (१९२७) में डी. ए. वी. कालेज लाहौर के शोध विभाग द्वारा प्रकाशित हुआ। तृतीय भाग में वेदों के भाष्यकारों का विवरण उपस्थित किया गया। यह दयानन्द म. ग्र. मा. के १३वें पुष्प के रूप में १९८८ वि. (१९३१) में प्रकाशित हुआ।

पं. भगवद्दत्त के दिवंगत होने पर इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ का एक और संस्करण पण्डितजी के सुपुत्र पं. सत्यश्रवा ने प्रकाशित किया। तदनुसार वैदिक वाङ्मय का इतिहास प्रथम भाग 'अपौरुषेय वेद तथा शाखा' शीर्षक से प्रणव प्रकाशन नई दिल्ली से नवम्बर १९७८ में प्रकाशित हुआ। इससे पूर्व फरवरी १९७४ में द्वितीय भाग 'ब्राह्मण एवं आरण्यक' तथा जनवरी १९७६ में तृतीय भाग 'वेदों के भाष्यकार' शीर्षक पुनः प्रकाशित हुए। तीनों भागों के सम्पादक पं. सत्यश्रवा ही हैं।

ऋग्वेद पर व्याख्यान—

यह ग्रन्थ श्रीमद्दयानन्द महाविद्यालय संस्कृत ग्रंथमाला संख्या २ के अन्तर्गत १९७७ वि. (१९२०) में प्रकाशित हुआ।

ऋङ्मंत्र व्याख्या—इसमें स्वामी दयानन्द ने वेदभाष्य से भिन्न अपने ग्रन्थों में जिन विभिन्न मंत्रों की व्याख्यायें लिखी हैं, उनका संकलन तथा सम्पादन किया गया है।

वेदविद्या निदर्शन—वेद मन्त्रों में निहित प्राकृतिक एवं भौतिक तथ्यों का उद्घाटन करने वाला यह अपूर्व ग्रन्थ है। (१९५९)।

निरुक्त भाषाभाष्य—यास्कीय निरुक्त की प्रथम बार लिखी गई आधिदैविक प्रक्रियापरक व्याख्या (२०२१ वि.)

अन्य सम्पादित ग्रन्थ—

अथर्ववेदीया पंचपटलिका—श्रीमद्दयानन्द महाविद्यालय, संस्कृत ग्रन्थमाला संख्या १ के अन्तर्गत प्रकाशित १९७७ वि. (१९२०) अथर्ववेद का तृतीय शिक्षण गन्थ।

अथर्ववेदीया माण्डूकी शिक्षा—उक्त ग्रन्थमाला संख्या ५ के अन्तर्गत (१९७८ वि.)।

वाल्मीकि रामायण के बाल, अयोध्या तथा अरण्यकाण्डों के पश्चिमोत्तर काश्मीरी संस्करण का सम्पादन, द. म. ग्रन्थमाला संख्या ७ के अन्तर्गत।

चारायणीय शाखा मंत्रार्षाध्याय, आथर्वण ज्योतिष, धनुर्वेद का इतिहास, आचार्य बृहस्पति के राजनीति सूत्रों की भूमिका।

पं. भगवद्दत्त ने अंग्रेजी में दो लघु किन्तु महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे, जो इस प्रकार हैं—1. Extraordinary Scientific Knowledge in Vedic works. अन्तर्राष्ट्रीय प्राच्य विद्यापरिषद् के दिल्ली अधिवेशन में पठित शोधपूर्ण निवन्ध, 2. Western Indologists : A study in Motives. पश्चिमी भारततत्त्वविदों की पूर्वाग्रहपूर्ण धारणाओं का सप्रमाण खण्डन (२०११ वि.)।

इतिहास एवं भाषाविज्ञान विषयक ग्रन्थ—

भारतीय राजनीति के मूल तत्त्व—आर्य महासम्मेलन के मेरठ अधिवेशन (१९५१) के अवसर पर आयोजित राजनीति परिषद् के अध्यक्ष पद से दिया गया शोधपूर्ण भाषण। भारतवर्ष का इतिहास—(१९४०)।

भारतवर्ष का बृहद् इतिहास दो भाग—(२०१७ वि.), भाषा का इतिहास, भारतीय संस्कृति का इतिहास, ऋषि दयानन्द का स्वरचित (लिखित वा कथित) जन्म चरित, ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन—खतौली निवासी श्री मामराजसिंह के सहयोग से स्वामी दयानन्द के पत्रों और विज्ञापनों का सम्पादित संस्करण-प्रथम भाग १९१८ में, द्वितीय १९१९ में तथा तृतीय १९२७ में प्रकाशित। पुनः समग्र रूप में (२००२ वि.) तथा (२०१२ वि.) में, सत्यार्थप्रकाश का पं. भगवद्दत्त द्वारा सम्पादित संस्करण १९६३ में गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली ने प्रकाशित किया।

पं. गुरुदत्त ग्रन्थावली—पं. सन्तराम बी. ए. के सहयोग से महामनीषी पं. भगवदत्त के समस्त अंग्रेजी वाङ्मय का पं. भगवद्दत्त ने हिन्दी में अनुवाद किया तथा राजपाल एण्ड संस लाहौर से १९७५ वि. में प्रकाशित कराया।

पं. भगवद्दत्त का अन्तिम ग्रन्थ Story of Creation उनके निधन के दो मास पूर्व प्रकाशित हुआ।

पं. भगवद्दत्त वेदालंकार

वैदिक शोध को एक नवीन आयाम देने वाले पं. भगवद्दत्त का जन्म १० आश्विन (१९६९ वि.) (१९१२) को मेरठ जिले के नेक नामक ग्राम में हकीम रिसालसिंह के यहां हुआ। गुरुकुल कांगड़ी में अध्ययन करने के पश्चात् आपने १९९१ वि. (१९३५) में वेदालंकार की उपाधि प्राप्त की। आगरा विश्वविद्यालय से आपने एम. ए. की परीक्षा संस्कृत विषय लेकर उत्तीर्ण की। गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के वैदिक अनुसंधान विभाग में आपने वर्षों तक निष्ठापूर्वक विभिन्न वैदिक विषयों पर शोधकार्य किया। गुरुकुल की मुख्य पत्रिका गुरुकुल-पत्रिका के सम्पादक भी रहे। आपकी विद्वता के उपलक्ष्य में गुरुकुल कांगड़ी ने १९७६ में आपको विद्यामार्तण्ड की उपाधि प्रदान की। आपका निधन १९८८ में हुआ।

ले. का.—वैदिक स्वप्न विज्ञान (२००६ वि.), वैदिकस्वप्न विज्ञानम्—गुरुकुल पत्रिका के विशेषांक के रूप में प्रकाशित संस्कृत ग्रन्थ, वैदिक अध्यात्म विद्या' आत्मसमर्पण (२०१० वि.), ऋषि रहस्य (२०१९ वि.) वेदविमर्श, (१९६६), ऋषि-देव विवेचन (१९६७), देवता विवेचन विषयक ग्रन्थ—ऋभु देवता, विष्णु देवता (२०१८ वि.), सविता देवता, वृहस्पति देवता।

ठाकुर भगवन्तसिंह

आर्यसमाज लोहारू (हरयाणा) के संस्थापक ठाकुर भगवन्तसिंह का जन्म १९०१ में हुआ था। वे भूतपूर्व मुसलमानी रियासत लोहारू के जमींदार तथा नवाब लोहारू के अभिन्न मित्र थे। आर्यसमाज में ठाकुर साहब को गहरी रुचि थी, इसलिये नवाब ने इन्हें सरकारी सेवा से निकाल दिया तथा जमींदारी भी छीन ली। जिस समय स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी के नेतृत्व में आर्यसमाज लोहारू के वार्षिकोत्सव पर नगर कीर्तन निकल रहा था, उस समय नवाब की पुलिस ने आर्य नेताओं पर सांघातिक हथियारों से आक्रमण किया जिससे स्वामी स्वतन्त्रानन्द के साथ ठाकुर भगवन्तसिंह भी घायल हो गये। वे आर्य सत्याग्रह हैदराबाद, हिन्दी सत्याग्रह तथा गोरक्षा सत्याग्रह में अनेक बार जेल गये। उनका निधन २६ जून १९८९ को लोहारू में हो गया। आपने आर्यसमाज लोहारू का रोमांचक इतिहास लिखा है।

भगवान चैतन्य

श्री चैतन्य का जन्म १५ जुलाई १९४८ को जिला मण्डी (हिमाचलप्रदेश) के रिवालसर ग्राम में पं. रामशरण शर्मा के यहाँ हुआ। इनकी शिक्षा एम.ए. तक हुई। आर्यसमाज में इनकी रुचि प्रारम्भ से ही रही। सम्प्रति वे आर्यप्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के मंत्री पद पर कार्यरत हैं। श्री चैतन्य ने कविता, कहानी, निबन्ध आदि साहित्य की विभिन्न विधाओं में पर्याप्त लिखा है। वे आर्यप्रतिनिधि सभा हिमाचलप्रदेश की मासिक मुख पत्रिका 'आर्य वन्दना' का सम्पादन विगत ग्यारह वर्षों से कर रहे हैं। बंदा बैरागी की जीवनी उनकी प्रतिनिधि रचना है।

व. प.—१९०/एस. ३ सुन्दरनगर-४ (मण्डी, हि.प्र.)

पं. भगवानदीन मिश्र

आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त (उत्तरप्रदेश) के पुराने नेता और यशस्वी कार्यकर्ता पं. भगवानदीन का जन्म १९१७ वि. की चैत्र शुक्ला नवमी को हरदोई जिले के मलिहामऊ नामक ग्राम में पं. जगन्नाथ मिश्र के यहां हुआ। १८७९ में एन्ट्रेंस की परीक्षा पास कर ये हरदोई के जिलाधीश के कार्यालय में नियुक्त हुए। १८९८ में सरकारी सेवा से पृथक हो गये और उत्तरप्रदेश की बिजुआ स्टेट के प्रबन्धक पद पर नियुक्त किये गये। आपने १८८३ ई. में आर्यसमाज हरदोई की स्थापना की तथा प्रांतीय सभा के उपमंत्री (१८८०-९०), मंत्री (१८९०-९६), उपप्रधान (१८९७-९८) एवं प्रधान (१८९८-९९-१९०१-१९०७) के पदों पर रहे। पं. लोकेश्वर एवं उनके पुत्र पं. शम्भुरत्न ने सम्मिलित रूप से आर्यसमाज के सिद्धांतों के खण्डन में 'संदर्शनीय' नामक एक पुस्तक लिखी। पं. भगवानदीन ने पं. देवदत्त की सहायता से इसका उत्तर 'संदर्शनीयादर्श' लिखकर प्रकाशित किया। उनका वेद विषयक एक उत्तम

व्याख्यान पं. ब्रजमोहन झा लिखित पं. भगवानदीन मिश्र के जीवन चरित (आर्यसमाज हरदोई द्वारा १९७६ वि. में प्रकाशित) में उद्धृत हुआ। ४ जून १९१२ (५ आषाढ १९६८ वि.) को आपका निधन हुआ।

आचार्य भगवानदेव शर्मा

सिंध प्रान्त के जिला नवाबशाह के ग्राम बोरानी में श्री भगवानदेव का जन्म ३ फरवरी १९३५ को श्री गोपालदास के यहाँ हुआ। देश विभाजन के पश्चात् इनका परिवार ब्यावर (राजस्थान) में आ गया। शास्त्रीय अध्ययन के लिए वे गुरुकुल वृन्दावन में प्रविष्ट हुए और कुछ काल तक वहाँ रहे। १९५७ में उन्होंने पंजाब के हिन्दी सत्याग्रह में भाग लिया और कारावास का दण्ड झेला। १९६१ में वे महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के व्यवस्थापक पद पर नियुक्त हुए। इस बीच उनका आर्यसामाजिक जीवन विस्तृत होता गया। वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री चुने गये और मॉरिशस तथा लंदन में आयोजित आर्यमहासम्मेलनों में भाग लिया। आचार्य भगवानदेव का योग विषयक शास्त्रीय और व्यावहारिक ज्ञान प्रामाणिक कोटि का है। १९८० में वे अजमेर से संसद सदस्य चुने गये। उन्होंने १९६८ में दिल्ली से जनज्ञान मासिक प्रकाशित किया और १९७५ में योग विषयक मासिक योग मन्दिर निकाला।

ले. का.—आर्य महापुरुषों के जीवन चरित—विश्व-वंदनीय दयानन्द (श्रद्धांजलि संग्रह) १९६६, महर्षि दया-नन्द (जीवनी), महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायी, क्रान्तिकारियों के अग्रदूत श्यामजी कृष्ण वर्मा, अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द, देवता स्वरूप भाई परमानन्द, महात्मा नारायण स्वामी, पंजाब केसरी लाला लाजपतराय, महात्मा आनन्द स्वामी, पं. प्रकाशवीर शास्त्री, कर्मवीर की कहानी, सेठ नानजी भाई कालिदास मेहता, आर्य नेता, आर्य शहीद, आर्य संन्यासी।

क्रान्तिकारियों के जीवनचरित

भारत के अमर क्रान्तिकारी, प्रथम चिन्गारी—मंगल पाण्डे, शहीद सम्राट् रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाकउल्ला खां, शहीद रोशनसिंह, शहीदाने वतन, स्वतन्त्रता की वेदी पर। अन्य ग्रन्थ—ज्योतिर्मय जीवन, संस्कार चन्द्रिका, भक्ति गीत, आर्यों, दीक्षा लो, स्वाध्याय किसका और क्यों ? अमर वाणी, दैनिक यज्ञ, कच्छ की धधकती धरती, होली का शुद्ध स्वरूप, सार्वभौम संगठन आर्यसमाज, योग विषयक ग्रन्थ—अष्टांग प्रकाश, योग और स्वास्थ्य, स्वास्थ्य और योगासन, अष्टांग योग प्रकाश (अंग्रेजी संस्करण)।

वि. अ.—कर्म योगी आचार्य भगवानदेव सम्पादक-नवीन सूरी।

व. प.—२, पार्क एवेन्यू महारानी बाग, नई दिल्ली ११००६५.

भगवानस्वरूप न्यायभूषण

पं. भगवानस्वरूप का जन्म १९४५ वि. में उत्तर-प्रदेश के बस्ती जिले के करमा नामक एक ग्राम में कान्य-कुब्ज ब्राह्मण परिवार में हुआ। वे कुछ काल तक ज्वाला-पुर के गुरुकुल महाविद्यालय में अध्यापन करते रहे। तत्-पश्चात् शाहपुरा नरेश श्री नाहरसिंह ने उन्हें अपने राज्य में उच्च पद पर प्रतिष्ठित किया। १९३३ में वे ऋषि दयानन्द के निर्वाण की अर्ध शताब्दी के अवसर पर अजमेर आये और शताब्दी समारोह की समाप्ति के पश्चात् वैदिक यंत्रालय अजमेर के प्रबन्धक नियुक्त हुए। इस पद से मुक्त होने पर १९६५ में उन्हें परोपकारिणी सभा का सदस्य चुन लिया गया और मृत्यु पर्यन्त वे सभा के पुस्तकाध्यक्ष रहे। न्यायभूषणजी कुशल लेखक तथा आर्य सिद्धान्तों के मर्मज्ञ थे। 'परोपकारी' मासिक के प्रारम्भ काल (नवम्बर १९५९) से ही वे उसका सम्पादन करते रहे। महत्त्वपूर्ण सम्पादकीय लेख तथा पुस्तक समीक्षा आदि के स्तम्भ वे नियमित रूप से लिखते थे। १२ दिसम्बर १९७३ को उनका निधन हो गया।

भद्रदत्त पाठक, तर्करत्न

पाठकजी बिजनौर जिले के ग्राम महमूदपुर के निवासी थे। इनका जन्म १८९१ में हुआ था। स्वामी श्रद्धानन्द

तथा महात्मा नारायण स्वामी के सान्निध्य में पाठकजी ने धर्म प्रचार किया। आप आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश और गुरुकुल वृन्दावन में भी रहे। आपने दानवीर सेठ तनसुखराय पोद्दार का जीवनचरित लिखा जो भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा मुरादाबाद से १९३३ में प्रकाशित हुआ। ९३ वर्ष की आयु में इनका निधन १३ अक्टूबर १९८४ को हुआ।

आचार्य भद्रसेन

आर्ष पाठविधि से संस्कृत का गम्भीर अध्ययन करने वाले तथा अपने समस्त जीवन को आर्य धर्म के प्रचार में समर्पित कर देने वाले आचार्य भद्रसेन का जन्म १९०० में पश्चिमी पंजाब के एक गांव में हुआ था। प्रारम्भ में आपकी शिक्षा उर्दू में ही हुई। कालान्तर में आप लाहौर आ गये और दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय में अध्ययन करने लगे। जब आपके हृदय में आर्ष विधि से संस्कृत व्याकरण पढ़ने की इच्छा जागृत हुई तो आप कानपुर आये। वहां से सर्वदानन्द साधु आश्रम जिला अलीगढ़ में पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु तथा पं. शंकरदेवजी से अध्ययन किया। जिज्ञासुजी के साथ आप अमृतसर चले गये और वहां विरजानन्दाश्रम में रहकर पढ़े। तत्पश्चात् काशी में रह कर महाभाष्य, दर्शन तथा साहित्य का अध्ययन किया। योगाभ्यास सीखने के लिये आप स्वामी कुवलयानन्दजी के पास गये और विधिवत् योग की शिक्षा ग्रहण की।

आपने कुछ वर्षों तक चित्तौड़गढ़ के गुरुकुल में अध्यापन किया। तत्पश्चात् अजमेर आ गये और विरजानन्द वेद विद्यालय का संचालन किया। कई वर्षों तक आप परोपकारिणी सभा के ग्रन्थ संशोधन विभाग में भी कार्यरत रहे। आपका निधन २७ जनवरी १९७५ को अजमेर में हुआ।

ले. का.—१. योग और स्वास्थ्य, २. प्राणायाम, ३. आदर्श गार्हस्थ्य जीवन, ४. आदर्श की ओर, ५, हम आर्य हैं, ६. योगासन, ७. प्रभु भक्त दयानन्द और उनके आध्यात्मिक उपदेश—(२०१३ वि.), ८. इस पुस्तक का प्रथम संस्करण १९३३ में 'प्रभुभक्त दयानन्द' शीर्षक से चित्तौड़ से प्रकाशित हुआ था, ९. आर्य कर्त्तव्यादर्श, १०. कठिन तथा असाध्य रोगों की यौगिक तथा प्राकृतिक चिकित्सा।

प्राध्यापक भद्रसेन

आपका जन्म पश्चिमी पंजाब की झंग तहसील के वुधुआना ग्राम में १५ नवम्बर १९३६ को हुआ। आपकी शिक्षा गुरुकुल कमालिया (लायलपुर) में १९४५ से १९४७ तक हुई। आपने देश विभाजन के पश्चात गुरुकुल घरौण्डा (जिला करनाल) में १९४८ से १९५४ तक अध्ययन किया। तत्पश्चात् दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर में १९५४ से १९५९ तक शिक्षा ग्रहण की। १९६० में शास्त्री, १९६२ में दर्शनाचार्य तथा १९६७ में वेदाचार्य की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। प्रारम्भ में कुछ समय तक प्रचार एवं विभिन्न आर्यसमाजों में पौरोहित्य कार्य किया। १९७२ से आप विश्वेश्वरानन्द विश्वबंधु संस्कृत एवं प्राच्य विद्या संस्थान होशियारपुर में अनुसंधान एवं अध्यापन कार्य कर रहे हैं।

ले. का.—१. विश्व साहित्य की अनमोल निधि : वेद (१९७०), २. मनुस्मृति में जीवन दर्शन (१९७२), ३. सुख की खोज में (१९७२), ४. सुखी कैसे रहें ? (१९७४), ५. वेद का जीवन दर्शन (१९७५), ६. महर्षि दयानन्द की एक अपूर्व देन (१९७७), ६. ओम् शब्द का एक विवेचन, ७. महर्षि दयानन्द का अविस्मरणीय स्मारक, ८. वियोग वेदना (१९८१), ९. वेदोद्यान—एक परिचय, १०. आर्यसमाज के नियमों का एक अनुशीलन, ११. आर्यसमाज के मूल मन्तव्य १२. अमृत की खोज, १३. सुसंगत पथ प्रदर्शक, १४. महर्षि दयानन्द, (१९८२), १५. महर्षि दयानन्द के भव्य भवन की एक योजना।

व. प.—साधु आश्रम, होशियारपुर (पंजाब)

स्वामी भवानीदयाल संन्यासी

दक्षिण अफ्रीका में आर्यसमाज और हिन्दी का प्रचार करने वाले स्वामी भवानीदयाल संन्यासी का जन्म दक्षिण अफ्रीका के जोहानसबर्ग नगर में १० सितम्बर १८९२ को हुआ। आपके पिता श्रीजयरामसिंह बिहार के शाहाबाद जिले के निवासी थे। किन्तु शर्तबन्द कुली के रूप में

दक्षिण अफ्रीका चले गये थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा जोहानसबर्ग में ही हुई। १९०४ में ये पहली बार भारत आये। उन दिनों बंग भंग आन्दोलन जोरों पर था। आपने अपने गांव में आकर एक राष्ट्रीय विद्यालय खोला और ग्रामीण बच्चों को विद्यादान करने लगे। १९०९ में आर्य-समाज के सम्पर्क में आये और अपने गांव में वैदिक पाठशाला की स्थापना की। १९११ में आर्य प्रतिनिधि-सभा बिहार-बंगाल के अवैतनिक उपदेशक बन गये और सभा के मुख पत्र 'आर्यावर्त' का सम्पादन भी किया।

१९०८ में इनका विवाह श्रीमती जगरानी देवी के साथ हो गया। १९१२ में ये पुनः दक्षिण अफ्रीका आये। महात्मा गाँधी के सम्पर्क में आने का अवसर भी इन्हें दक्षिण अफ्रीका में ही मिला। १९१५ में आपने इस देश में हिन्दी प्रचार का कार्य प्रारम्भ किया तथा अनेक स्थानों पर हिन्दी पाठशालायें तथा सभायें स्थापित कीं। आपने यहां से 'धर्मवीर' और 'हिन्दी' नामक पत्र भी निकाले। १९२७ को रामनवमी के दिन आपने संन्यास धारण किया और भवानीदयाल संन्यासी के नाम से जाने गये। इससे पूर्व १९२५ में आपने दक्षिण अफ्रीका में ऋषि दयानन्द जन्म शताब्दी समारोह आयोजित किया तथा नेटाल आर्य-प्रतिनिधि सभा की स्थापना की। १९२९ में आप पुनः भारत आये तथा १९३० में सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया। तब से राष्ट्रीय आन्दोलनों में आप निरन्तर भाग लेते रहे। १९४४ में काशी नागरी प्रचारिणी सभा के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव की अध्यक्षता भी आपने ही की। इसके पश्चात् आप अजमेर के आदर्शनगर मोहल्ले में प्रवासी भवन स्थापित कर रहने लगे। ९ मई १९५० को आपका निधन अजमेर में ही हुआ।

ले. का.—दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास (१९१६), दक्षिण अफ्रीका के मेरे अनुभव, सत्याग्रही महात्मा गांधी, हमारी कारावास कहानी, ट्रांसवाल के भारतवासी, नेटाली हिन्दू, शिक्षित और किसान।

आर्यसमाज विषयक साहित्य—

वैदिक धर्म और आर्य सभ्यता, वैदिक प्रार्थना, भजन-प्रकाश, वर्ण व्यवस्था, स्वामी शंकरानन्द संदर्शन (१९४२) प्रवासी की आत्मकथा (१९४७)।

वि. अ.—स्वामी भवानीदयाल संन्यासी ले. प्रेमनारायण अग्रवाल १९३९, स्वामी भवानीदयाल संन्यासी ले. ठा. राजबहादुरसिंह १९४०.

पं. भवानीप्रसाद

आर्यों के विविध पर्वों की पद्धति का निर्माण करने वाले पं. भवानीप्रसाद का जन्म ४ जनवरी १८७८ को हल्दौर (जिला बिजनौर) में हुआ। मुन्शी अलखधारी के ग्रन्थों का अध्ययन करने के कारण इनकी रुचि स्वामी दयानन्द एवं आर्यसमाज की ओर हुई। कालान्तर में इन्होंने गुरुकुल कांगड़ी में अध्यापन कार्य भी किया। ३० नवम्बर १९४८ को इनका निधन हो गया।

ले. का.—आर्य पर्वपद्धति—ऋषि दयानन्द जन्म-शताब्दी समिति के प्रधान महात्मा नारायण स्वामी की प्रेरणा से लिखा गया यह ग्रन्थ आर्यसमाजों में मनाये जाने वाले विभिन्न पर्वों के इतिहास, महत्त्व तथा विधान का निरूपण करता है। इसका प्रथम संस्करण १९८१ वि. (१९२५) में दयानन्द जन्म शताब्दी के अवसर पर आर्य-समाज बगदाद (इराक) के आर्थिक सहयोग से सार्वदेशिक-आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित किया गया था। अब तक इसके अनेक संस्करण सार्वदेशिक सभा, तथा आर्य-साहित्य मण्डल, अजमेर द्वारा छप चुके हैं। साहित्य सुधा-गुरुकुल कांगड़ी की विभिन्न श्रेणियों में संस्कृत शिक्षण की दृष्टि से चार भागों में लिखी गई यह पाठ्य पुस्तक पं. वागीश्वर विद्यालंकार के सहयोग से लिखी गई। आर्य-भाषा पाठावली प्रथम भाग—१९६६ वि., १९२४ में आपने 'आर्य पर्वावली' भी लिखी था। बिजनौर मण्डल आर्यसमाज का इतिहास—१९८६ वि. आर्य पर्वावली—इसका संशोधन पं. सिद्धगोपाल ने किया था तथा वैदिक पुस्तकालय, मुरादाबाद से प्रकाशित हुई थी।

भानुचरण आर्षेय

काशी निवासी श्री आर्षेय ने सत्यार्थप्रकाश के दार्शनिक विचार शीर्षक ग्रन्थ लिखा जो आर्ष ग्रन्थ प्रकाशन मण्डल,

काशी से छपा। वेदवाणी मासिका का जब नवम्बर १९४८ में प्रकाशन आरम्भ हुआ तो ये उसके प्रथम सम्पादक-मण्डल में थे।

भानुमति कोटेचा

आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा की स्नातिका श्रीमती कोटेचा का प्रमुख कार्यक्षेत्र पूर्वी अफ्रीका रहा। यहां आपने शिक्षा तथा समाज के क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किया। डा. सरस्वती पंडित के शोध ग्रन्थ—Contribution of AryaSamaj to Indian Education. का परिवर्द्धित हिन्दी अनुवाद श्रीमती भानुमति ने किया जो 'देश विदेश में भारतीय संस्कृति का शिक्षा द्वारा प्रचार : आर्यसमाज का योगदान' शीर्षक से १९७९ में प्रकाशित हुआ।

भारतभूषण

आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् पं. धर्मदेव विद्या मार्तण्ड के पुत्र भारतभूषण ने दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में एम. ए. किया। उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से पत्रकारिता में डिप्लोमा भी प्राप्त किया है। विगत कई वर्षों से वे प्रेस ट्रस्ट आफ इण्डिया में कार्यरत हैं।

उन्होंने पं. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार रचित 'आर्य संस्कृति के मूल तत्त्व' तथा 'वैदिक संस्कृति के वैज्ञानिक आधार' का अंग्रेजी अनुवाद किया। स्वामी दयानन्द के पत्रव्यवहार का आंशिक अंग्रेजी अनुवाद भी उन्होंने किया, जिसे स्व. राय साहब प्रतापसिंह चौधरी ने १९६९ में प्रकाशित किया था। पं. धर्मदेव विद्यामार्तण्ड की प्रसिद्ध पुस्तक 'वेदों का यथार्थ स्वरूप' का उनके द्वारा किया गया संक्षिप्त अंग्रेजी अनुवाद Veda : The Right Approach शीर्षक से समर्पणानन्द शोध संस्थान से प्रकाशित हुआ है।

डा. भारतभूषण विद्यालंकार

डा. भारतभूषण का जन्म ६ जनवरी १९४३ को बरेली में श्री तुंगलसिंह के यहां हुआ। इनकी शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में हुई जहां से इन्होंने संस्कृत तथा मनोविज्ञान में एम. ए. की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। गुरुकुल से ही (२०१९ वि.) में इन्हें विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त हुई। 'आथर्वण राजनीति' (अथर्ववेद में राजनीति) विषय लेकर आपने पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की है।

व. प.—वेद विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

स्वामी भास्करानन्द

इनका जन्म ग्वालियर राज्य के एक ग्राम में हुआ। संन्यास लेने से पूर्व ये भागीरथ शर्मा के नाम से जाने जाते थे। कुछ काल तक सरकारी नौकरी करने के पश्चात् आपने स्वामी गणेशानन्द परमहंस से १९७९ वि. में संन्यास धारण किया। आपने बीकानेर के निकटवर्ती कोलायत नामक तीर्थ स्थान में रहकर धर्म प्रचार किया। कालान्तर में नागौर जिले के रेण नामक ग्राम में भी रहे। आपकी एक कृति 'वामपंथ का दिग्दर्शन' आर्यसमाज डांगावास (जिला-नागौर) से १९९३ वि. में छपी थी।

स्वामी भास्करानन्द सरस्वती

स्वामी भास्करानन्द पहले आर्य संन्यासी थे जो धर्मप्रचार तथा विभिन्न शिल्प विद्याओं को सीखने के लिये राजकीय सहायता से विदेश भेजे गये। इनकी विदेश यात्रा का सम्पूर्ण व्यय जोधपुर राज्य की ओर से वहन किया गया क्योंकि उक्त राज्य के महाराज प्रतापसिंह इन्हें अपना गुरु मानते थे। ३ नवम्बर १८८८ को ये समुद्र मार्ग से लंदन पहुंचे। वहां से चलकर १८९० में फिलेडेफिया गये। आप जर्मनी भी गये। किन्तु उससे पहले फ़िलेडेफिया में आर्यसमाज की स्थापना की और जी. डब्लू. स्टुअर्ट तथा एच. एम. डंकन नामक दो अमरीकी व्यक्ति क्रमशः समाज के प्रधान और मंत्री चुने गये। १९०६ में इनका निधन हुआ। इनकी यात्रा का विवरण 'श्री स्वामी भास्करानन्द सरस्वतीजी की विलायत यात्रा' शीर्षक से रसिककाशी प्रेस दिल्ली से १८९० में प्रकाशित हुआ। इन्होंने विदेश में ही संस्कृत भाषा के महत्त्व पर एक भाषण भी दिया था। यह Lecture delivered on the Sansksit Language. शीर्षक से मर्चेन्ट प्रेस कानपुर से मुद्रित होकर १८८८ में प्रकाशित हुआ।

स्वामी भास्करानन्द सरस्वती (भीमसेन शर्मा आगरा)

संस्कृत के उत्कृष्ट विद्वान् तथा काव्य प्रतिभा से सम्पन्न पं. भीमसेन शर्मा का जन्म जयपुर राज्य के भगवाना नामक ग्राम में १९३४ वि. (१८७७) में हुआ। इनके पिता का नाम पं. नंदराम शर्मा था। जब भीमसेन की आयु आठ वर्ष की ही थी, उनके पिता की मृत्यु हो गई। १६ वर्ष की आयु में ये संस्कृत पढ़ने के लिये काशी आये और पं. कृपाराम (दर्शनानन्द सरस्वती) द्वारा स्थापित एक संस्कृत पाठशाला में पढ़ने लगे। यहां पण्डित काशीनाथ शास्त्री जैसे अपने युग के उद्भट विद्वान् अध्यापन कार्य करते थे। यहां रह कर इन्होंने सिद्धांत कौमुदी तथा अष्टाध्यायी का अध्ययन किया। पुनः बनारस संस्कृत कॉलेज में महामहोपाध्याय पं. भगवदाचार्य से पढ़ते रहे। यहा उनका अध्ययन लगभग सात वर्ष तक चला और इस समय उन्होंने व्याकरण, साहित्य और दर्शन में व्युत्पन्नता प्राप्त की।

अध्ययन समाप्त कर लेने के उपरान्त पं. भीमसेन शर्मा आर्यसमाज दिल्ली द्वारा काशी में संचालित संस्कृत पाठशाला के अध्यापक नियुक्त हुए। लगभग डेढ़ वर्ष तक इस पद पर कार्य करने के पश्चात् वे वैदिक यंत्रालय अजमेर में संशोधक के पद पर आ गये। उस समय यंत्रालय में चारों वेद संहिताएं मूल रूप से छप रहीं थीं। यह कार्य शर्माजी की देखरेख में ही सम्पन्न हुआ। अजमेर से वे गुरुकुल सिकन्दराबाद में आ गये तथा कई वर्षों तक अध्यापन कार्य करते रहे। यहां के पश्चात् वे कुछ समय तक गुरुकुल तिलहर (जिला शाहजहांपुर) में रह, पुनः महात्मा मुन्शीराम के आग्रह को स्वीकार कर गुरुकुल कांगड़ी आ गये। इस समय पं. गंगादत्त शास्त्री, पं. नरदेव शास्त्री तथा पं. पद्मसिंह शर्मा जैसे उच्च कोटि के विद्वान् इस गुरुकुल के तत्कालीन आचार्य और मुख्याधिष्ठाता प्रो. रामदेव से उत्पन्न हुए मतभेदों के कारण गुरुकुल कांगड़ी को छोड़कर गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में आ गये थे। अतः शर्माजी भी ज्वालापुर महाविद्यलय में आ गये।

पं. भीमसेन शर्मा महाविद्यालय में १९०८ से १९२५ तक मुख्याध्यापक के रूप में कार्य करते रहे। १९२५ में शर्माजी ने अध्यापन कार्य छोड़ दिया। अब वे संन्यासी बन गये और 'भास्करानन्द सरस्वती' के नाम से प्रसिद्ध हुए। श्रावण शुक्ला ६, १९८५ वि. (९ जुलाई १९२८) सोमवार को संस्कृत के इस प्रौढ विद्वान् का निधन हुआ। पं. भीमसेन शर्मा के पुत्र पं. हरिदत्त शास्त्री संस्कृत के प्रख्यात विद्वान् थे। पं. भीमसेन शर्मा उच्च कोटि के संस्कृत कवि, लेखक तथा साहित्यकार थे।

ले. का.—संस्कार चन्द्रिका—पं. आत्माराम अमृतसरी के सहलेखन में लिखी गई यह पुस्तक स्वामी दयानन्द कृत 'संस्कारविधि' की विस्तृत व्याख्या है। इसमें आयुर्वेद, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शरीर विज्ञान की दृष्टि से संस्कारों की व्याख्या लिखी गई है। इसका प्रथम संस्करण (१९७० वि.) १९१३ में स्वामी यन्त्रालय, मेरठ से प्रकाशित हुआ था। द्वितीय संस्करण (१९१६) में जयदेव ब्रदर्स बड़ौदा ने प्रकाशित किया। पं. हरिदत्त शास्त्री द्वारा सम्पादित एक अन्य संस्करण (१९८२ वि.) महाविद्यालय ज्वालापुर से प्रकाशित हुआ। सत्य प्रकाशन मथुरा ने 'अभिनव संस्कार चन्द्रिका' नाम देकर पं. हरिदत्त शास्त्री द्वारा सम्पादित एक अन्य संस्करण (२०२० वि.) में दो भागों में प्रकाशित किया।

गुरुकुल कांगड़ी के लिये आपने निम्न पाठ्यग्रन्थ तैयार किये—आर्यसूक्ति सुधा (सुभाषितों का संग्रह) (१८९९ वि.)। काव्य लतिका-संस्कृत के उत्कृष्ट काव्यों-किरात, शिशुपालवध तथा भट्टि काव्य के अंशों का पाठ्यपयोगी ग्रन्थ। संस्कृतांकुर—संस्कृत भाषा की पाठ्यपुस्तक। आपने दर्शन विषयक निम्न ग्रन्थों की रचना की—योगदर्शन—व्यास भाष्य और भोजवृत्ति का भाषानुवाद-(१९६३ वि.), द्वैतप्रकाश-शंकर मिश्र रचित 'भेदरत्न' के आधार पर लिखा गया जीवेश्वर भेद का प्रतिपादक ग्रन्थ (१९०१), सर्व दर्शन संग्रह टीका—अप्रकाशित, पाण्डुलिपि भी गुम हो गई। भारतोदय (गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर का मासिक मुखपत्र) में शर्माजी की अनेक संस्कृत काव्य कृतियां प्रकाशित हुई हैं, जिनमें कृषकस्तव:, प्रकृतिस्तव: आषाढ़ (१९६६ वि.) के अंक में प्रकाशित) आदि उल्लेखनीय हैं। उर्दू के प्रसिद्ध कवि

मौलाना अल्ताफ हुसैन हाली की उर्दू काव्यकृति 'मुनाजाते वेवा' का आपने संस्कृत काव्य में विधवाभिविनय नाम से अनुवाद किया जो परोपकारी (श्रावण-मार्गशीर्ष १९६५ वि.) में प्रकाशित हुआ।

भीमसेन यशवन्तराव चाकूरकर

महाराष्ट्र वासी श्री चाकूरकर की एक पद्यात्मक कृति 'दयानन्द गीत गान' प्रकाशित हुई थी।

दीवान भीमसेन

श्री भीमसेन का जन्म २८ जुलाई १९११ को पाकिस्तान के जिला डेरा गाजी खां के जामपुर कस्बे में दीवान धर्मचन्द के यहाँ हुआ। देश विभाजन के पश्चात् आपका निवास और कार्यक्षेत्र गुड़गाँव रहा। यहाँ रहकर आपने आर्यसमाज की विभिन्न प्रवृत्तियों में भाग लिया तथा गुड़गाँव की केन्द्रीय आर्य सभा के अध्यक्ष भी रहे।

ले. का.—अनुपम, मंगलम् अद्भुतम्, हिरण्यम् (वेद व्याख्यायें) गायत्र्म् (गायत्री व्याख्या)।

व. प.—शान्ता कुंज, न्यू कॉलोनी, गुड़गांव (हरयाणा)।

भीमसेन बहल

प्रिन्सिपल बहल का जन्म १६ अक्टूबर १९१२ को कालाबाग (पाकिस्तान) में हुआ। इन्होंने रसायन शास्त्र में एम. एस. सी. की परीक्षा पास की तथा रावलपिण्डी, जालंधर तथा अमृतसर के डी. ए. वी. कालेजों में अध्यापन एवं प्राचार्य के पद पर कार्य किया। इन्होंने रसायन-शास्त्र पर अनेक पुस्तकें लिखी हैं। डी. ए. वी. संस्थाओं की शताब्दी के अवसर पर आपने डी. ए. वी. संस्थाओं से सम्बद्ध व्यक्तियों की डाइरेक्टरी का दो खण्डों में सम्पादन किया। डी. ए. वी. प्रवन्ध समिति द्वारा १९८७ में इसे प्रकाशित किया गया। इसमें डी. ए. वी. से संबद्ध सैकड़ों व्यक्तियों के जीवन वृत्त संगृहीत हैं।

व. प.—५९० सैक्टर १८ बी. चंडीगढ़-१६००१८.

भीमसेन विद्यालंकार

लेखक और पत्रकार श्री भीमसेन विद्यालंकार का जन्म २० नवम्बर १९०० को जम्मू में श्री विशनदास के यहाँ हुआ। गुरुकुल कांगड़ी में शिक्षा ग्रहण करने के अनन्तर आपने (१९७७ वि.) (१९२१) में विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की। शिक्षा समाप्ति के पश्चात् आपने मद्रास में आर्यसमाज का प्रचार कार्य किया। दो वर्ष तक गुरुकुल कांगड़ी में ही इतिहास व अर्थशास्त्र का अध्यापन भी किया। तत्पश्चात् लाला लाजपतराय द्वारा स्थापित लाहौर के नेशनल कालेज में भी अध्यापन किया। यहाँ आपका सम्पर्क सरदार भगतसिंह, राजगुरु तथा सुखदेव जैसे क्रान्तिकारियों से हुआ। १९२४ में आपने दिल्ली से वीर अर्जुन दैनिक का सम्पादन किया। एक वर्ष के पश्चात् आप पुनः पंजाव चले आये। १९२६ में लाहौर से 'सत्यवादी' नामक पत्र निकालना आरम्भ किया किन्तु यह आर्थिक कठिनाइयों के कारण अधिक समय तक चल नहीं सका। श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन की प्रेरणा से आपने पंजाब हिन्दी साहित्य सम्मेलन का गठन किया तथा लाहौर के 'पंजाब केसरी' एवं 'वंदेमातरम्' नामक पत्रों का सम्पादन भी किया।

आप कई वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री रहे। १९३३ से १९३७ तक 'अलंकार' नामक मासिक पत्र का सम्पादन किया। देश विभाजन के पश्चात् आप स्थायी रूप से अम्वाला छावनी के रहकर निज के आर्य प्रेस का संचालन करते रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का साप्ताहिक मुखपत्र 'आर्य' भी आपके सम्पादन में ही निकलता रहा। १८ जुलाई १९६२ को दिल्ली में आपका निधन हुआ।

ले. का.—इतिहास से सम्बन्धित ग्रन्थ—वीर मराठे, वीर शिवाजी, वीर पूरविये, वीर पंजाबी, दयानन्दोपनिषद् (१९४६)

पण्डित भीमसेन शर्मा, इटावा

स्वामी दयानन्द सरस्वती के प्रमुख शिष्य पं. भीमसेन शर्मा का जन्म कार्तिक शुक्ला पंचमी १९११ वि. को ग्राम लालपुर जिला एटा में हुआ था। इनके पिता का नाम पं. नेकराम शर्मा था। प्रारम्भ में इनका अध्ययन उर्दू, हिन्दी तक सीमित रहा। १२वें वर्ष में यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न हुआ। १९२९ वि. में स्वामी दयानन्द

द्वारा स्थापित फर्रूखाबाद की संस्कृत पाठशाला में शास्त्रीय अध्ययन के लिए प्रविष्ट कराया गया। लगभग सवा चार वर्ष तक पं. भीमसेन इस पाठशाला में अन्तेवासी के रूप में रहे। स्वामी दयानन्द के सहपाठी पं. युगलकिशोर तथा पं. उदयप्रकाश, जो उक्त पाठशाला में अध्यापन करते थे, से उन्होंने अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य का अध्ययन किया।

अध्ययन समाप्ति के उपरान्त पं. भीमसेन को स्वामीजी ने पुस्तक लेखक के कार्य पर नियुक्त किया। अब उन्हें स्वामीजी के साथ साथ नगर नगर, प्रान्त प्रान्त भ्रमणार्थ जाना पड़ता था। दयानन्द सरस्वती उनसे ग्रन्थ लिखवाते जिसका क्रम यह होता था कि स्वामीजी बोलते और शर्माजी उसे लिखते जाते। अयोध्या निवास काल में स्वामीजी ने उनसे ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका लिखवाई, वेदांग-प्रकाश के संधि विषय, आख्यातिक, सौवर आदि भाग भी पं. भीमसेन ने स्वामी दयानन्द के निर्देशानुसार तैयार किए। इस प्रकार लगभग साढे तीन वर्ष तक स्वामीजी के सहचर पण्डित के रूप में भीमसेन शर्मा ने शाहजहांपुर, बरेली, बदायूं, मेरठ, सहारनपुर, लुधियाना, लाहौर आदि नगरों का भ्रमण किया। पं. भीमसेन का लेखन कार्य (ग्रन्थों की पाण्डुलिपि तैयार करना) बहुत सन्तोषप्रद नहीं था। अपने अज्ञान तथा प्रमाद के कारण वे लेखन, प्रूफशोधन आदि में भयंकर त्रुटियां कर जाते थे, यह बात स्वामी दयानन्द के पत्र व्यवहार से ज्ञात होती है। जब स्वामीजी ने अपने ग्रन्थों के प्रकाशन तथा अन्य वैदिक एवं आर्ष ग्रन्थों के मुद्रण को सुविधाजनक बनाने के लिए वैदिक-यंत्रालय की स्थापना की, तो पं. भीमसेन शर्मा वहाँ ग्रन्थ संशोधक के रूप में नियुक्त हुए। स्वामीजी के अन्तिम राजस्थान भ्रमण के समय पंडित भीमसेन उनके साथ थे और अजमेर में उनके महाप्रस्थान के कारुणिक दृश्य को भी उन्होंने अपनी आंखों से देखा था। स्वामी दयानन्द ने मृत्यु से कुछ समय पूर्व ही अपने शिष्य को अत्यन्त स्नेह एवं करुणा भरी दृष्टि से देखा तथा उन्हें १०० रु. तथा एक शाल पुरस्कार स्वरूप देना चाहा, परन्तु शर्माजी ने उसे स्वीकार नहीं किया।

स्वामी दयानन्द के निधन के पश्चात् भी पं. भीमसेन ग्रन्थ संशोधन का कार्य यथापूर्व करते रहे। परोपकारिणी-सभा ने अपने प्रथम अधिवेशन में उन्हें स्वामी कृत ऋग्वेद-भाष्य का आर्य भाषानुवाद करने तथा प्रूफशोधने के लिए २५ रु. मासिक वेतन पर नियुक्त किया। १९८६-८७ में वे वैदिक यंत्रालय के प्रवन्धक पद पर रहे। इसी पद पर दुवारा उनकी नियुक्ति तब हुई जब पं. यज्ञदत्त शास्त्री प्रबन्धक पद से पृथक् हुए। उस समय वैदिक यंत्रालय प्रयाग में था। प्रयाग निवास काल में पं. भीमसेन ने १९४४ वि. (१८८७) में 'आर्यसिद्धान्त' नामक मासिक पत्र का सम्पादन आरम्भ किया। शीघ्र ही यह पत्र आर्य-समाज का प्रमुख सैद्धान्तिक पत्र बन गया। आर्यसमाज के विरोध में लिखे जाने वाले लेखों और ग्रन्थों का उत्तर देने में पं. भीमसेन ने 'आर्य सिद्धान्त' को प्रमुख अस्त्र के रूप में प्रयुक्त किया। 'आर्यसिद्धान्त' की फाइलें शर्माजी के प्रकाण्ड पाण्डित्य तथा उनकी विलक्षण लेखन क्षमता की परिचायक हैं।

पंडित भीमसेन शर्मा का आर्यसमाज त्याग

चूरू (राजस्थान) के एक सेठ माधवप्रसाद खेमका ५००० रु. व्यय करके अग्निष्टोम यज्ञ कराना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने शर्माजी से परामर्श किया। पं. भीमसेन जिस विधि से यज्ञ कराना चाहते थे, उससे आर्यसमाज के सिद्धान्तों का प्रत्यक्ष विरोध था। शर्माजी का यह कहना था कि जब उन्होंने अग्निष्टोम की विधि के लिए कर्म-काण्ड ग्रन्थों का अनुशीलन किया, तो देखा कि आर्यसमाज के यज्ञ विषयक मन्तव्य इन श्रौत ग्रन्थों के प्रतिकूल हैं। वस्तुतः वे यज्ञों में पशुवध को प्रतीक रूप में स्वीकार करने लगे थे और इसी कारण सेठ खेमका द्वारा किराये गये यज्ञ में उन्होंने आटे की पिष्टी के मेष मेषी बनवा कर उनका काठ की तलवार से बलिदान कराया। शर्माजी के इस अवैदिक कृत्य की आर्यसामाजिक क्षेत्रों में तीव्र प्रति-क्रिया हुई। उनसे अपने विचार एवं आचरण का स्पष्टी-करण करने के लिए कहा गया। आर्यसमाज से उनके मतभेद के कुछ अन्य कारण भी बन गए। अब पं भीमसेन वर्णव्यवस्था को गुण, कर्म पर आधारित न मानकर जन्माश्रित मानने

लगे। परवर्ती कर्मकाण्ड के ग्रन्थों को देखने से उनकी यह धारणा बनी कि श्राद्ध कर्म तो मृतकों का ही होता है न कि जीवितों का, जैसा स्वामी दयानन्द ने माना है। अब वे वेद संहिताओं से मृतक श्राद्ध की पुष्टि भी करने लगे।

महात्मा मुन्शीराम उस समय आर्यसमाज के सर्वमान्य नेता थे। वे चाहते थे कि पं. भीमसेन सैद्धान्तिक मतभेदों को स्पष्ट करें और अपनी विचारधारा को वैदिक मन्तव्यों के अनुकूल बनायें। प्रारम्भ में तो ऐसा प्रतीत हुआ मानो शर्माजी आर्यनेताओं के कड़े रुख को देखकर मृतक श्राद्ध, यज्ञ में पशुबलिदान, वर्णव्यवस्था जैसे विषयों पर अपने विचारों को संयत कर लेंगे, तथा आर्यसमाज के सैद्धान्तिक अनुशासन को सर्वात्मना स्वीकार करेंगे, किन्तु शर्माजी ने सनातन-धर्मी शिविर में चले जाना ही अपने लिए अधिक लाभप्रद समझा। फलतः १९०१ में उन्होंने आर्यसमाज से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। आर्यसमाज को पूर्णतया उन्होंने तब छोड़ा, जब १९०१ में ही उन्हें आगरा में आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वानों के साथ मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ करना पड़ा। इस शास्त्रार्थ में आर्यसमाज के प्रमुख प्रवक्ता पं. तुलसीराम स्वामी तथा पं. कृपाराम (स्वामी दर्शनानन्द) थे। शास्त्रार्थ के पश्चात् तो भीमसेन ने आर्यसमाजी चोला उतार दिया और पुराणों के प्रवक्ता के रूप में आर्यसमाज के प्रतिद्वन्द्वी बन गये।

मत परिवर्तन के पश्चात् शर्माजी ने आर्यसमाजी काल में लिखे गए अपने सम्पूर्ण साहित्य को, जो लगभग १६ हजार रुपये मूल्य था, रद्दी के भाव बेच डाला। १९०२ में इटावा से 'ब्राह्मण सर्वस्व' पत्र निकाल कर आर्य-समाज के सिद्धान्तों का प्रतिपद खण्डन करने में प्रवृत्त हुए। उपनिषद्, गीता, मनुस्मृति आदि ग्रन्थों पर लिखे गए आर्यसमाजी दृष्टिकोण के अपने भाष्यों को स्वयं ही निरस्त कर डाला और नवीन (अद्वैत) वेदांत के दृष्टिकोण से उपनिषदों पर दुबारा भाष्य लिखा। इसी प्रकार आर्यसमाज के खण्डन तथा पौराणिक मत के मण्डन में अनेक छोटे बड़े ग्रन्थ लिखे।

सुप्रसिद्ध वेदज्ञ पं. सत्यव्रत सामश्रमी के निधन पर पं. भीमसेन शर्मा को १९१२ में कलकत्ता विश्वविद्यालय में वेद व्याख्याता के पद पर नियुक्त किया गया। पांच वर्ष इस पद पर रहकर वे १९१७ में निवृत्त हुए। चैत्र कृष्णा-द्वादशी १९७४ वि. को पं. भीमसेन शर्मा का ६३ वर्ष की आयु में निधन हो गया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती का शिष्य कहलाने में गौरव अनुभव करने वाले पं. भीमसेन शर्मा का सनातन धर्म के शिविर में चले जाना एक विडम्बना ही थी, क्योंकि जिस व्यक्ति ने स्वामीजी के श्रीचरणों में रहकर विद्याभ्यास किया, उनके सान्निध्य में रहकर शास्त्रानुशीलन किया तथा जो दीर्घकाल तक आर्यसमाज के सिद्धान्तों का प्रचण्ड पक्ष-पोषक रहा, उसी का तुच्छ आर्थिक प्रलोभन में पड़कर मत परिवर्तन कर लेना मनुष्य चरित्र के दौर्बल्य का ही परिचायक है। जो हो, पं. भीमसेन शर्मा आर्यसमाज के आद्य पण्डित, समर्थ लेखक तथा शक्तिशाली शास्त्रार्थकर्त्ता थे। उन्होंने आर्यसमाज को उच्चकोटि का साहित्य प्रदान किया है। उन्होंने शास्त्र ग्रन्थों का भाष्य किया, कर्म-काण्डपरक ग्रन्थों की टीकायें लिखीं, विभिन्न मत सम्प्रदायों के द्वारा आर्यसमाज के सिद्धान्तों और दयानन्द सरस्वती के मंतव्यों पर किए गए आक्षेपों का सटीक उत्तर दिया। शर्माजी संस्कृत और तदनुसार हिन्दी में अपने ग्रन्थ प्रस्तुत करते थे। दोनों भाषाओं पर उनका निर्बाध अधिकार था। यहां उनके द्वारा लिखे हुए ग्रन्थों का किंचित विस्तार से परिचय दिया जा रहा है।

ले. का.—अनुभ्रमोच्छेदन—

काशी निवासी राजा शिवप्रसाद से ब्राह्मण ग्रन्थों के वेदत्व को लेकर स्वामी दयानन्द का लिखित शास्त्रार्थ हुआ था। राजा साहब के 'निवेदन' का उत्तर स्वामीजी ने 'भ्रमोच्छेदन' के रूप में दिया। इस पर राजा शिव-प्रसाद ने दूसरा निवेदन लिखा। इसका उत्तर स्वामीजी ने देना उचित नहीं समझा और दूसरे 'निवेदन' का उत्तर 'अनुभ्रमोच्छेदन' के नाम से पं. भीमसेन शर्मा ने दिया। ग्रन्थ का प्रकाशन वैदिक यंत्रालय काशी से १८८०(१९३७ वि.) में हुआ। अब तक इसके कई संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं।

शास्त्रार्थ फीरोज़ाबाद—

आर्यसमाज फीरोज़ाबाद के तत्त्वावधान में जैनमतानुयायी पं. छेदालाल और पं. पन्नालाल से आर्यसमाजी पं. भीमसेन शर्मा एवं देवदत्त शर्मा का संस्कृत में लेखबद्ध शास्त्रार्थ चैत्र (१९४५ वि.) मार्च १८८८ में हुआ था। इस शास्त्रार्थ का विवरण उक्त आर्यसमाज के मंत्री श्री गंगाराम वर्मा द्वारा सम्पादित होकर १८८८ में प्रकाशित हुआ। अब तक इसके कई संस्करण प्रकाशित हुए हैं।

उपनिषद्भाष्य—

पं. भीमसेन शर्मा ने ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय और श्वेताश्वतर—इन ९ उपनिषदों पर संस्कृत तथा हिन्दी के भाष्य लिखा। यह उपनिषद् भाष्य प्रारम्भ में मासिक पत्र के रूप में पुनः पुस्तकाकार छपा। यह भाष्य १९४५ वि. से १९५० वि. के बीच प्रकाशित हुआ।

मानवधर्म शास्त्रम्—मनुस्मृति का यह बृहत् संस्कृत-हिन्दी भाष्य मासिक पत्र के रूप में सरस्वती यंत्रालय से छपता रहा। पुनः ग्रन्थाकार प्रकाशित हुआ। ग्रन्थारम्भ में मानवधर्म शास्त्रस्य उपोद्धातः (मानव धर्म मीमांसा-भूमिका) शीर्षक एक विस्तृत भूमिका शर्माजी ने लिखी, जो सरस्वती यंत्रालय, प्रयाग से ज्येष्ठ (१९४९ वि.) में प्रकाशित हुई। मानवधर्म शास्त्र भाष्य मनुस्मृति के षष्ठ अध्याय पर्यन्त ही लिखा गया और दो खण्डों में (प्रथम भाग १९५४ वि.) १८९७ तथा द्वितीय भाग १९५५ (वि. १८९८) में प्रकाशित हुआ।

पं. भीमसेन ने संस्कृत व्याकरण विषयक निम्न ग्रन्थ लिखे और प्रकाशित किए। १. अष्टाध्यायी मूल—१८९२, २. पाणिनीयाष्टकम् अष्टाध्यायी की प्रथमावृत्ति। इसका क्रम इस प्रकार है—मूल, सूत्र, पदच्छेद, विभक्ति, पदार्थ, समास और अनुवृत्ति। पुनः संस्कृत में सरल वृत्ति, सूत्र का अन्वितार्थ, उदाहरण, प्रत्युदाहरण, वार्तिक, परिभाषा और शंका समाधान (१९५४ वि.) १८९८, ३. गण-रत्न महोदधि—वर्धमान रचित स्वीय वृत्ति सहित। यह गण-पाठ की व्याख्या है जो मूल श्लोक तथा अकारादि शब्द सूची सहित छपी। (१९५० वि.), ४. धातुपाठ—इसमें शब्द सिद्धि के सूत्र भी छपे थे (१९५३ वि.) १८९९, ५. भगवद्गीता भाष्यम्—गीता का यह संस्कृत-हिन्दी भाष्य प्रक्षिप्त अंश को (अध्याय ७, ९, १०, ११, १२ तथा प्रथम तीन अध्यायों के अतिरिक्त अन्य सभी अध्यायों में से अनेक श्लोक) छोड़कर अवशिष्ट भाग पर लिखा गया है। इस प्रकार यह गीता भाष्य १३ अध्यायों में ही समाप्त हुआ है। ६. गीता संग्रह—इसमें महाभारतोक्त पितापुत्र संवाद, मंकि गीता, बोध्य गीता, पिंगला-गीता, शम्पाक गीता, अजगर गीता, शृंगाल गीता तथा विचाव्यु गीता नामक प्रकरणों का संग्रह है। १८९९, पं भीमसेन ने महाभारत के धर्म लक्षण वर्णन, तुलाधार-जाजलिसंवाद तथा पतिव्रता माहात्म्य (वनपर्वान्तर्गत सावित्री उपाख्यान) शीर्षक प्रकरणों को (१९५५ वि.) १८९९ में पुस्तकाकार प्रकाशित किया।

पं. भीमसेन शर्मा द्वारा व्याख्यात गृह्य सूत्रों तथा कर्मकाण्ड ग्रन्थों के टीका, भाष्यादि—१. मानव गृह्यसूत्र भाषा टीका, (१९६१ वि.), २. आपस्तम्बीय गृह्यसूत्रम्—भाषा टीका (१९६१ वि.) १९०५, ३. आपस्तम्बीय यज्ञपरिभाषा सूत्र—आर्य सिद्धान्त के मई १८९८ के अंक से धारावाही प्रकाशित। पुनः पुस्तकाकार १९०८, ४. अथ स्मार्त कर्म पद्धति— इसमें स्वस्तिपुण्याहवाचन, मणिकावधान, आवसथ्याधान, (गृह्याग्नि के स्थापन का विधान), औपासन होम, (स्मार्त अग्निहोत्र), पक्षादि कर्म, (स्मार्त दर्श पौर्णमास विधि) और पंच महायज्ञ नित्य कर्म वर्णित हैं। यह पद्धति पारस्कर गृह्यसूत्र के आधार पर बनाई गई है (१९०० वि.), ५. स्वस्ति पुण्याहवाचनम्—१९००, ६. दर्श पौर्णमासेष्टि पद्धति—इसमें श्रौत कर्मों का विधान है (१८९९), ७. इष्टि संग्रह—इसमें दाक्षायण यज्ञ, अन्वारम्भणीयेष्टि, वैमृध्येष्टि, आदित्येष्टि, आग्रभणेष्टि, (नवान्नेष्टि) वैश्वानर पार्जन्येष्टि, चातुर्मास्येषु वैश्वदेव पर्व का संग्रह १८९९, ८. हवन मंत्राः, ९. उपनयन पद्धति—(१९००), १०. पुत्रकामेष्टि पद्धति—(१८९७), ११. पंच महायज्ञ।

पंण्डित भीमसेन शर्मा ने आर्य सिद्धान्तों तथा स्वामी

दयानन्द के मन्तव्यों पर लिखे गए आक्षेपपरक लेखों एवं ग्रथों के उत्तर में विभिन्न पुस्तकें लिखीं—१. यमयमी सूक्त—रेवाड़ी के पादरी टी. विलियम्स ने लुधियाना से प्रकाशित होने वाले 'नूर अफ़शां' नामक उर्दू पत्र में स्वामी दयानन्द प्रतिपादित नियोग सिद्धान्त की आलोचना लिखी थी। शर्माजी ने इसकी समीक्षा करते हुए ऋग्वेद के यमयमी सूक्त (ऋ. मण्डल १० सूक्त १९) की विस्तृत व्याख्या संस्कृत तथा हिन्दी में लिखी। यह व्याख्या प्रथम आर्यासिद्धान्त में छपी। पुनः पुस्तक रूप में १८९५ में छपी। २. सद्विचार निर्णय—महाराजा वेंकटिगिरि के प्रश्नों के उत्तर (१९४७ वि.) १९८१, ३. गंगादितीर्थत्व-विचार—यह लेखमाला प्रथम 'आर्यासिद्धान्त' में प्रकाशित हुई, पश्चात् पृथक् पुस्तकाकार छपी। संस्कृत तथा हिन्दी में लिखा गया यह ग्रन्थ गंगादि नदियों में तीर्थ बुद्धि रखने का खण्डन करता है, ४. जीव सान्त विवेक—मुन्शी इन्द्रमणि मुरादाबादी लिखित अनन्तत्वप्रकाश, जिसमें जीवात्माओं के अनन्त होने का प्रतिपादन है, का खण्डन वैशाख (१९४७ वि.) के 'आर्य सिद्धान्त' से धारावाही प्रकाशित होना आरम्भ हुआ। पुनः पुस्तकाकार छपा। ५. जैनास्तिकत्व विचार—जैन मतानुयायी पं. आत्माराम (आनन्द विजय) रचित 'अज्ञान तिमिर भास्कर' (जैन धर्मी हितेच्छु सभा भावनगर से प्रकाशित) का खण्डन 'आर्य सिद्धान्त' के आश्विन (१९४६ वि.) के अंक से धारावाही छपने लगा। पुनः पुस्तकाकार छपा, ६. मांस-भोजन विचार का उत्तर ३ भाग—जोधपुर के पण्डित लालचन्द शर्मा विद्या भास्कर ने 'आमिष समीक्षा' नामक एक पुस्तक लिखी थी, जिसमें मांसाहार और पशुवलि का समर्थन किया गया था। इसी प्रकार अरोडवंश प्रेस लाहौर से 'मांस विचार' भाग १ पुस्तक छपी। पं. भीमसेन शर्मा ने इन पुस्तकों का उत्तर प्रथम आर्य सिद्धान्त मार्च १८९७ में दिया। बाद में तीन भागों में यह पुस्तक (१९५३ वि.) १८९६ में छपी। ७. तीर्थ विषय—पं. राजाराम शास्त्री के संस्कृत लेख का संस्कृत में उत्तर। ८. स्थावर में जीव विचार—आर्य सिद्धान्त भाग-६ अंक ३, ४ में छपा। पुनः पुस्तक रूप में १८९७ में छपा। ९. द्वैताद्वैतसंवाद—इसमें द्वैअतवाद का खण्डन तथा द्वैतवाद (ईश्वर तथा जीव का भेद) की पुष्टि की गई है। १०. विवाह-व्यवस्था—(१९४५ वि.) इस पुस्तक में बालविवाह का खण्डन तथा युवावस्था में विवाह करने का प्रतिपादन किया गया है। ११. ब्राह्ममत समीक्षा—(ब्रह्मसमाज के सिद्धान्तों का खण्डन परक ग्रन्थ) (१९४८ वि.) १८९१, १२. 'पुनर्जन्म' शीर्षक व्याख्यान (१९५४ वि.) में छपा। १३. यज्ञोपवीत शंका समाधि—(१९४९ वि.) १७९२।

स्फुट ग्रन्थ

आयुर्वेदशब्दार्णव—(आयुर्वेद का ग्रन्थ), संसारफल, वैराग्य शतक—भर्तृहरि कृत इस शतक का अनुवाद पं. भीमसेन ने तथा सम्पादन पं. श्यामलाल शर्मा ने किया। नीतिशतक।

प्रो. भीमसेन शास्त्री

दण्डी गुरु विरजानन्द का शोधपूर्ण जीवन चरित लिखने तथा स्वामी दयान्द की जन्मतिथि का निर्धारण करने के कारण पं. भीमसेन शास्त्री को आर्यसमाज में विशेष ख्याति मिली। ये मूलतः कोटा के निवासी थे। इनका प्रारम्भिक अध्ययन गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में हुआ जहां से आपने विद्याभास्कर की उपाधि ग्रहण की। तत्पश्चात् आपने एम. ए. किया और सेवा निवृत्ति पर्यन्त राजस्थान के कालेजों में संस्कृत का अध्यापन किया।

ले. का.—१. महर्षि की जयन्ती तिथि (२०१२ वि.), २. विरजानन्द प्रकाश (१९५९)।

स्वामी भीष्म

स्वरचित भजनों में दीर्घकाल तक वैदिक धर्म का प्रचार करने वाले स्वामी भीष्म का जन्म कुरुक्षेत्र जिले के तेवड़ा ग्राम में श्री बारूराम के यहां हुआ। कालान्तर में उन्होंने संन्यास की दीक्षा ली और विचार सागर, वृत्तिप्रभाकर एवं पंचदशी आदि नव्य वेदान्त के ग्रन्थों का अध्ययन किया। कुछ काल बाद वे आर्यसमाज

के सम्पर्क में आये और धर्म प्रचार ही उनके जीवन का लक्ष्य बन गया। उन्होंने पंजाब, हरयाणा, उत्तरप्रदेश, राजस्थान आदि प्रदेशों में सर्वत्र घूम-घूम कर वैदिक सिद्धांतों का प्रचार किया। २४ मई १९८१ को कुरुक्षेत्र में उनका सार्वजनिक अभिनन्दन भारत के तत्कालीन गृहमन्त्री ज्ञानी जैलसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इनका निधन १९८४ में हो गया।

ले. का.—स्वामी भीष्म रचित ग्रन्थों की सूची पर्याप्त लम्बी है। इनके ५८ काव्य (भजन ग्रन्थ) तथा १५ भजन-इतिहासों की सूची भीष्म अभिनन्दन ग्रन्थ में दी गई है। इनकी अधिकांश पुस्तकें अग्रवाल बुक डिपो दिल्ली तथा देहाती पुस्तक भण्डार दिल्ली ने प्रकाशित कीं।

वि. अ.—*स्वामी भीष्म अभिनन्दन ग्रन्थ—सम्पादक-भवानीलाल भारतीय १९८१।*

भूदेव शास्त्री

शिक्षा शास्त्री, वक्ता एवं लेखक पं. भूदेव शास्त्री का जन्म १ सितम्बर १९१७ को मैनपुरी में हुआ। इनकी शिक्षा गुरुकुल वृन्दावन में हुई जहां से इन्होंने 'सिद्धांत शिरोमणि' की उपाधि प्राप्त की। तदनन्तर हिन्दी तथा संस्कृत में एम.ए. तथा एम. एड. की परीक्षायें आगरा विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण कीं। अनेक शिक्षण संस्थाओं तथा शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों में अध्यापन करने के पश्चात् उन्होंने जियालाल शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालय अजमेर से अवकाश ग्रहण किया। ये महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक ट्रस्ट अजमेर के मंत्री रहे। इनका निधन १३ अप्रैल १९८५ को हुआ।

ले. का.—१. महर्षि दयानन्द—जीवन और सन्देश-(१९७४), २. आर्योद्देश्यरत्नमाला का आधुनिक हिन्दी अनुवाद (१९७४), ३. सत्यार्थप्रकाश का आधुनिक हिन्दी अनुवाद (प्रथम समुल्लास) (१९७४), ४. शिक्षा और चरित्र निर्माण—सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय समुल्लास की व्याख्या (१९८१), ५. भारतीय शिष्टाचार ६. धर्म-शिक्षा।

स्वामी भूमानन्द सरस्वती

आर्यसमाज के साहित्यिक क्षेत्र में जिन महानुभावों ने अंग्रेजी भाषा में उच्च कोटि के साहित्य का प्रणयन किया, उनमें स्वामी भूमानन्द का नाम उल्लेखनीय है। ये मूलत: दक्षिण भारत के निवासी थे। आर्यसमाज में प्रविष्ट होने से पूर्व स्वामी भूमानन्द रोमन कैथलिक ईसाई थे तथा पादरी के रूप में प्रचार करते थे। कहते हैं कि इनकी माता का झुकाव हिन्दू धर्म की ओर था, यद्यपि जन्मना वे ईसाई थीं। आपने प्रसिद्ध पं. कुप्पूस्वामी शास्त्री से संस्कृत का अध्ययन किया। आर्यसमाज के ग्रन्थों को पढ़ने से आपका झुकाव वैदिक धर्म की ओर हुआ। कालान्तर में आपने स्वामी सर्वदानन्दजी से संन्यास की दीक्षा ली।

ले. का.—1. Anthology of the Vedic Hymns. १३० वेदमन्त्रों की भावपूर्ण व्याख्या (१९३५), 2. Ecclesia Divina. वेदों के विभिन्न सूक्तों की व्याख्या (१९९२ वि. १९३६), 3. The Divine Book of Work and Worship-यजुर्वेद के प्रथम अध्याय के १६ मंत्रों की व्याख्या (१९३७), जयपुर के श्री गणेशनारायण सोमानी स्वामीजी से यजुर्वेद का अंग्रेजी में इसी शैली पर विस्तृत भाष्य लिखवाना चाहते थे। तदनुसार ही यह नमूने की व्याख्या प्रकाशित की गई थी। 4. English Translation of the Yajur Veda with critical and Explanatory Notes. 5. Scientific Gleanings from Vedic Mythology. 6. Eugenics in the Vedas. 7. Anatomy in the Vedas.

स्वामी भूमानन्द ने स्वामी दयानन्द के निम्न ग्रन्थों का अंग्रेजी अनुवाद किया था—

1. The Aryabhivinaya आर्याभिविनय का अंग्रेजी अनुवाद १९४२, ग्रन्थ के परिशिष्ट में स्वामी दयानन्द का जीवन चरित के साथ-साथ संध्या व यज्ञ की विधि का अंग्रेजी अनुवाद भी दिया गया है। 2. Cow Protection गोकरुणानिधि का अंग्रेजी अनुवाद १९३९।

पं. भूमित्र शर्मा

शर्माजी का जन्म १८५५ में कर्णवास (जिला बुलन्दशहर) में हुआ। आप स्वामी दयानन्द के समकालीन तो

थे ही, आपने स्वामीजी से ही दैनिक संध्योपासना की दीक्षा ली थी तथा इनका यज्ञोपवीत भी स्वामीजी के समक्ष हुआ था। पं भूमित्र शर्मा आर्यसमाज के अनथक प्रचारक रहे। इनका निधन २९ अक्टूबर १९३३ को हुआ।

ले. का.—गीता भाष्य—प्रक्षिप्त समझे जाने वाले श्लोकों को हटा कर गीता की व्याख्या वैदिक सिद्धान्तानुसार की गई है। इस भाष्य का नाम 'वेदानुग रत्न-संग्रह' था। शर्माजी ने स्वामी दयानन्द के कथनानुसार गीता के अध्याय संख्या ७, १०, ११ और १२ को प्रक्षिप्त माना है। वाजसनेयोपरिषद्—वेदानुगामी टीका—१९२०, तलवकारोपनिषद्—वेदानुगामी टीका १९२०। वास्तविक वैदिक वर्ण व्यवस्था—(२ भाग) पं. अखिलानन्द शर्मा ने 'वैदिक वर्ण व्यवस्था' शीर्षक एक पुस्तक लिखी थी जिसमें येन केन प्रकारेण, अनेक हेत्वाभासों का सहारा लेकर वर्ण-व्यवस्था को जन्माधारित सिद्ध किया था। इसी पुस्तक के खण्डन में पं. भूमित्र शर्मा ने यह ग्रन्थ लिखा। नियोग—मर्दन का विमर्दन–(पं. कालूराम शास्त्री की पुस्तक 'नियोग-मर्दन' के खण्डन में लिखा गया)। पितृयज्ञ समीक्षा—हरिद्वारीलाल चौखानी भिवानी निवासी ने एक पुस्तक 'पितृयज्ञ की संहति' मृतक श्राद्ध की पुष्टि में लिखी थी। इसका विस्तृत उत्तर पं. भूमित्र ने उपर्युक्त ग्रन्थ में दिया है। (१९७४ वि.), मूर्तिपूजा-समीक्षा (१९७४ वि.), पुराण-कलंक प्रकाश—पं. कालूराम शास्त्री की पुस्तक 'पुराण-कलंकाभास मार्जन' का उत्तर। (१९१७) त्रिशूली त्रिशूलोच्छेदन-पौराणिक लेखक त्रिशूली के मत का खण्डन (१९२७)।

पं. भूरालाल कथाव्यास

व्यासजी का जन्म १९३९ वि. (१८८२) में शाहपुरा (राजस्थान) में श्री रामपाल व्यास के यहां हुआ। इन्होंने सुधारवादी स्वर में काव्य रचना की तथा 'दुर्व्यसन दमन' शीर्षक एक नाटक भी लिखा। व्यासजी ने आर्य प्रतिनिधि-सभा राजस्थान के अन्तर्गत धर्मप्रचार किया। वे शाहपुरा राज्य में कथावाचक के पद पर भी रहे। इनकी स्फुट कवितायें आर्यमार्तण्ड, महिला, सुकवि आदि पत्रों में प्रकाशित होती थीं। सन्तान न होने से इन्होंने अपने एक पारिवारिक व्यक्ति नरेन्द्र को दत्तक पुत्र के रूप में स्वीकार किया। श्री कथा व्यास का निधन आषाढ कृष्णा २ सं. १९९७ वि. को हुआ।

ले का.—भारतीय गीत (काव्य संग्रह), काव्य कुंज अथवा व्यासजी की बांसुरी (१९८५ वि.), दुर्व्यसन दमन नाटक (१९७३ वि.), कन्या विक्रय निषेध गद्य, निर्भय-रामाष्टक पद्य, भारतीय गीता।

भैरवदत्त शुक्ल

शुक्लजी का जन्म १५ जुलाई १९३५ को उत्तरप्रदेश में खीरी जिले के कटकुसुमा नामक ग्राम में पं. भगवानदीन शुक्ल के यहां हुआ। इनकी शिक्षा संस्कृत में एम. ए. तक हुई तथा व्यवसाय से ये अध्यापक हैं। आर्यसमाज के पत्रों में इनके विचारपूर्ण निबन्ध विगत कई वर्षों से छप रहे हैं।

ले. का.—महर्षि, सुभाष तथा इन्द्र शीर्षक काव्य, ऋक्सुधा, यजुर्वेद का यज्ञ, महाभारत के पात्र आदि।

व. प.—जाबालि आश्रम, डॉ. तिकुनिया, (जिला खीरी—उ.प्र.)२६२९०६.

पं. भोजदत्त शर्मा, आर्य मुसाफिर

ईसाई तथा इस्लाम धर्म के मर्मज्ञ, अप्रतिम वक्ता तथा शास्त्रार्थकर्त्ता पं. भोजदत्त शर्मा का जन्म मुजफ्फर-नगर जिले के थाना भवन नामक ग्राम में हुआ। उर्दू एवं फारसी का अध्ययन समाप्त करने के पश्चात् आप पंजाब के जिला मौण्टगुमरी में सिंचाई विभाग में कार्य करने लगे परन्तु सरकारी नौकरी करने पर भी आर्यसमाज के प्रचार में सर्वदा लगे रहते थे। मुसलमानों द्वारा शिकायत किये जाने पर इनके अंग्रेज अधिकारी ने नौकरी अथवा धर्म-प्रचार में से एक कार्य को करने का सुझाव दिया। फलतः आपने राज्य सेवा से त्यागपत्र दे दिया। आगरा में आपने पं. लेखराम की स्मृति में आर्य मुसाफिर मिशन की स्थापना की, आर्य मुसाफिर विद्यालय नाम से उपदेशक-विद्यालय चलाया तथा 'आर्य मुसाफिर' साप्ताहिक पत्र भी निकाला। इनके विद्यालय में पढ़ कर उपदेशक का प्रशिक्षण प्राप्त करने वालों में महात्मा अमर स्वामी, कुं.

सुखलाल, मौलवी महेशप्रसाद, पं. रामसहाय शर्मा, पं. रामचन्द्र आर्य मुसाफिर, राहुल सांकृत्यायन आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। आपने शुद्धि का कार्य भी तत्परतापूर्वक किया। १९१६ में आर्यसमाज लोअर बाजार, शिमला में उनका निधन हुआ।

ले. का.—ईसाई मत का जनाजा, मुबाहसा जबलपुर, मुबाहसा मक्खनपुर, अदम का लादुम, नारा ए हैदरी, पयामे जिन्दगानी, इस्मे आजम, तस्बीह मुहम्मदी, पंचये फौलाद, धर्मपाल का इन्द्रजाल, मुबाहसा नाहन, अफसा ए राज, रेआजे तनासुख, निकाह-नियोग, आसमानी किताब, बहादुर, इस्लाम की असली तसवीर, मुस्तकबिल हमारे हाथ में है, हैयात इस्लाम, दीवाने आर्य (उर्दू काव्य संग्रह)

वि. अ.—पं. भोजदत्त आर्य मुसाफिर का जीवन-चरित—पं. छुट्टनलाल स्वामी।

भोलानाथ दिलावरी

श्री दिलावरी का जन्म जम्मू में १२ दिसम्बर १९०९ को श्री नानकचन्द के यहां हुआ। सम्प्रति ये अमृतसर में निवास करते हैं। आप वर्षों तक आर्य केन्द्रीय सभा अमृतसर के प्रधान रहे तथा स्व. पं. पिण्डीदास ज्ञानी तथा पं. देवप्रकाश जैसे आर्य विद्वानों के साथ रहकर समाज सेवा में अपना योगदान किया। आपने पं. देवप्रकाश का एक संक्षिप्त जीवनचरित लिखा है।

व. प.—दिलावरी स्ट्रीट, पुतलीघर, अमृतसर।

डा. मंगलदेव शास्त्री

डा. मंगलदेव शास्त्री का जन्म बदायूं जिले में १८९० में हुआ। इनका अध्ययन प्रारम्भ में गुरुकुल बदायूं में ही हुआ। तदनन्तर इन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से बी. ए. किया और पंजाब विश्वविद्यालय में डा. बुलनर के शिष्य रूप में रह कर संस्कृत में एम. ए. पास किया तथा सरकारी छात्रवृत्ति लेकर अनुसंधानार्थ ऑक्सफोर्ड चले गये। वहां से 'ऋक् प्रातिशाख्य' पर शोध कार्य सम्पन्न किया और डी. फिल. की उपाधि ग्रहण की। स्वदेश लौट के ये बनारस संस्कृत कालेज में परीक्षाधिकारी (रजिस्ट्रार) बने। काशी संस्कृत कालेज के प्रसिद्ध पुस्तकालय सरस्वती भवन के ये अध्यक्ष भी रहे। पं. गोपीनाथ कविरत्न के उक्त कालेज के प्रिंसिपल पद से अवकाश ले लेने पर १९३७ में ये इस पद पर नियुक्त हुए। कालान्तर में वाराणसेय-संस्कृत विश्वविद्यालय के रूप में उपर्युक्त कालेज के परिणत हो जाने पर ये कुछ काल तक वहां कुलपति भी रहे। डा. मंगलदेव शास्त्री परोपकारिणी सभा के सदस्य २४ फरवरी १९५२ को मनोनीत हुए। शास्त्रीजी का निधन २८ अक्टूबर १९७६ को हुआ।

ले. का.—सम्पादन—सामवेद उपनिदान सूत्र, आश्वलायन श्रौत सूत्र (सम्पादन), ऋग्वेद प्रातिशाख्य (अंग्रेजी अनुवाद सहित आलोचनात्मक संस्करण ३ भाग, १९३१, मौलिक ग्रन्थ–भाषा विज्ञान १९२६, भारतीय संस्कृति का विकास : वैदिक धारा—१९५६, रश्मिमाला १९५४, अमृतमंथन (संस्कृत काव्य), सूक्ति सप्तशती, जीवन ज्योति (जीवन संदेश गीतांजलि)।

स्वामी मंगलदेव संन्यासी

ये आगरा के निवासी थे। मिश्रबन्धुविनोद में इनका जन्म १८९९ वि. अंकित है। इनका निधन १९६३ में हुआ।

ले. का.—१. कुनीति निवारण, २. विधवा सन्ताप, ३. मानव धर्म, ४. मनुस्मृति का प्रयोजनीय भाग, ५. ईश्वर स्तुति विचार, ६. आर्य जाति की पुकार (१९२५)।

स्वामी मंगलानन्द पुरी

स्वामी मंगलानन्द पुरी इलाहाबाद नगर के अतरसूया मुहल्ले के निवासी थे। धर्म प्रचारार्थ उन्होंने मॉरिशस तथा अफ्रीका आदि देशों का भ्रमण किया। उनके ग्रन्थ मंगल ग्रन्थमाला के अन्तर्गत छपे।

ले. का.—१. ब्रह्मयज्ञ (भाषार्थ तथा अंग्रेजी अनुवाद), २. गोरक्षा का मुख्य उपाय, ३. अफ्रीका यात्रा (१९२८), ४. क्या इस्लाम शान्तिदायक है? (१९२५), ५. वृक्षों में जीव है (१९२४), ६. वज्रसूची उपनिषद् (ब्राह्मण कौन

हैं ?), ७. प्राचीन भगवद्गीता (१९८१ वि.), ८. सप्त-श्लोकी गीता (१९८२ वि.) Vedic Tenets according to Dayanand. (1926), Idolatory : Non Vedic.

मंछाशंकर जयशंकर द्विवेदी

सत्यार्थप्रकाश तथा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का गुजराती भाषा में अनुवाद करने वाले मंछाशंकर द्विवेदी बम्बई निवासी थे। आर्यसमाज बम्बई के प्रारम्भिक सभासदों में इनका नाम संख्या ५७ पर अंकित है। ये अध्यापक थे। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का गुर्जर अनुवाद १९६० वि. (१९०४) में प्रकाशित हुआ था। इस अनुवाद की भूमिका रूप में लिखे गये 'ब शब्दो' के अन्त में श्रावण शुक्ला १ शुक्रवार १९६० वि. तिथि अंकित है।

सत्यार्थप्रकाश का गुजराती अनुवाद द्विवेदीजी ने वैदिक-यंत्रालय अजमेर की प्रेरणा से किया था। इसे १९६१ वि. में जगदीश्वर प्रेस मुम्बई से मुद्रित कर प्रकाशित किया गया। यद्यपि इसके प्रकाशन का अधिकार वैदिक यंत्रालय अजमेर ने अपने अधिकार में रक्खा था किन्तु इसका प्रकाशन व्यय जेठाभाई प्रेमजी ट्रस्ट ने वहन किया था। द्विवेदी जी स्वामी दयानन्द के समकालीन थे। उन्होंने बम्बई में उनके दर्शन भी किये थे, यह उल्लेख 'ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका' के गुजराती अनुवाद की भूमिका में मिलता है।

पं. मंजुनाथ शास्त्री

कन्नड़ भाषा में आर्य साहित्य के लेखक पं. मंजुनाथ का जन्म कर्नाटक राज्य की ककिल तहसील के ग्राम सागुरु में १९२० में श्री शेषगिरि के यहां हुआ। बड़े होने पर उन्हें दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर में प्रविष्ट कराया गया। यहां उन्होंने स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी के चरणों में बैठकर अध्ययन किया और सिद्धान्तभूषण की उपाधि ग्रहण की। वे पुनः कर्नाटक लौटे और पं. सुधाकर के सहयोग से वेद संदेश नामक पत्र निकाला। उनका विवाह प्रसिद्ध आर्य नेता भाई बंसीलालजी की सुपुत्री सुनीति से हुआ। कालान्तर में आप डी. ए. वी. हायर सैकण्डरी स्कूल अजमेर में प्रधानाचार्य बने और कई वर्ष कार्य करने के पश्चात् १९८१ में वहां से अवकाश लिया। १७ अगस्त १९८७ को कैंसर से उनका निधन हो गया।

ले. का.—भास्कर पन्त सुब्बरनसिंह शास्त्री के सहयोग में सत्यार्थप्रकाश का कन्नड़ अनुवाद (१९५५), आर्याभिविनय का कन्नड़ अनुवाद (१९८४), ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका का कन्नड़ अनुवाद (अप्रकाशित)।

डॉ. (श्रीमती) मंजुलता ज्वलन्त

श्रीमती मंजुलता का जन्म एक अक्टूबर १९५७ को वाराणसी जिले के ग्राम ज्ञानपुर में हुआ। इन्होंने काशी-विद्यापीठ से १९७७ में एम. ए. तथा यहीं से १९८३ में 'संस्कृत साहित्य में सामान्य जनजीवन' विषय पर शोध कर पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। विभिन्न शोध-पूर्ण निबन्धों के अतिरिक्त श्रीमती ज्वलन्त की पुस्तक 'महर्षि दयानन्द और उनकी आस्तिक आख्या' १९८३ में प्रकाशित हो चुकी है।

व. प.—द्वारा डॉ. ज्वलन्तकुमार शास्त्री प्राध्यापक-निवास र. र. कालेज अमेठी (उ. प्र.)।

डॉ. मंजुलता विद्यार्थी

डॉ. मंजुलता का जन्म २ जनवरी १९८४ को राजस्थान के बीकानेर नगर में एक मध्यवित्त आर्य परिवार में हुआ। इनकी शिक्षा एम. ए. (हिन्दी) तक हुई है। इन्हें लेखन से विशेष प्रेम रहा तथा संस्कृति-संदेश, राजधर्म एवं सार्वदेशिक आदि पत्रों में प्रायः इनके लेख प्रकाशित होते रहे। सम्प्रति आप राधादेवी गोयनका महिला महाविद्यालय में हिन्दी की प्रवक्ता हैं। डॉ. विद्यार्थी ने 'ऋषि दयानन्द की हिन्दी भाषा और साहित्य को देन' विषय लेकर अमरावती विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की है।

व. प.—द्वारा बसन्तकुमार मदनसुरे, श्रुति सौरभ, इंजीनियर्स कालोनी, धनवन्तरि नगर, बड़ी ऊमरी, आकोला ४४४००१ (महाराष्ट्र)

मगनलाल बी. जोशी

जामनगर के निवासी श्री जोशी ने देश की आजादी के संग्राम में भाग लिया तथा स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात्

सौराष्ट्र विधान सभा के अध्यक्ष रहे । आपका जन्म १८९९ में तथा निधन २० सितम्बर १९८६ को बड़ौदा में हुआ । यजुर्वेद के ३१ और ३२वें अध्याय की अंग्रेजी व्याख्या इन्होंने 'The Vedic Concept of God and Creation' शीर्षक से लिखी जिसे इनके पुत्र प्रबोधचन्द्र जोशी ने १९७१ में जामनगर से प्रकाशित किया । मगन-लाल भाई ने गुजराती में सामवेद का अनुवाद भी किया था ।

महाशय मथुरादास

आर्यसमाज के प्रारम्भिक युग के लेखक तथा कार्यकर्त्ता महाशय मथुरादास सहारनपुर जिले के किसी ग्राम के निवासी थे । इनका जन्म १८९९ वि. में हुआ था । ये सेना में सुपरवाइजर के पद पर रहे । सेवा के दौरान इन्हें फीरोजपुर, अमृतसर, मियांमीर, लाहौर आदि स्थानों पर रहना पड़ा । इन्होंने ही आर्य अनाथालय फीरोजपुर की स्थापना की थी । यह अनाथालय स्वामी दयानन्द के आशीर्वाद एवं प्रेरणा से स्थापित हुआ था ।

ले. का.—महाशय मथुरादास ने स्वामी दयानन्द कृत 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' का खुलासा (सार) उर्दू भाषा में लिखा, जो १८८२ में प्रकाशित हुआ । यह भूमिका का पूर्ण अनुवाद न होकर उसका सार संक्षेप ही है । महाशयजी आर्यसमाज अमृतसर के मंत्री भी रहे थे । इस नगर में उनके एक विशाल पुस्तकालय होने की सूचना भी मिली है । लीथो में छपी उनकी कुछ अन्य कृतियाँ—

१. रिसाला जगत्पुरुषार्थ—भाग १ (कन्या शिक्षा विषयक ग्रन्थ), इसी पुस्तक के ८ भाग छपे थे, २. तत्त्व-बोध (हिन्दी भाषा की पुस्तक), ३. सभाप्रसन्न (भजन-संग्रह) ३ भाग, ४. लावनी प्रथम समुल्लास (सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास का लावनी में उलथा) । ५. आर्य दर्शन (१८६९) रिसाला जगत्पुरुषार्थ के निम्न ८ या ९ भाग छपे थे—

१. जगत्पुरुषार्थ प्रथम भाग—अनाथरक्षा विषयक, २. जगत्पुरुषार्थ द्वितीय भाग—पंगु एवं असहाय जनों की रक्षा विषयक, ३. जगत्पुरुषार्थ तृतीय भाग—गोरक्षा विषयक, ४. जगत्पुरुषार्थ चतुर्थ भाग—गृहस्थ के आचार विषयक, ५. जगत्पुरुषार्थ पंचम भाग—विधवा विवाह विषयक, ६. जगत्पुरुषार्थ षष्ठ भाग—वेद विरुद्धमत खण्डन विषयक, ७. जगत्पुरुषार्थ सप्तम भाग—(जानकारी नहीं है), ८. जगत्पुरुपार्थ अष्टम भाग—स्त्री शिक्षा विषयक, ९. जगत्-पुरुषार्थ नवम भाग—कृषि विषयक ।

डा. मथुराप्रसाद मानव

मानवजी के पूर्वज मैनपुरी जिले के देवीनगर ग्राम के निवासी थे किन्तु उनका जन्म १७ सितम्बर १९१६ को मथुरा में हुआ । उनके पिता मुन्शी रामस्वरूप एक मध्य-वित्त गृहस्थ थे । कालान्तर में उन्होंने स्वाध्याय से ही हाई स्कूल से लेकर एम. ए. तक का अध्ययन किया और आगरा विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. भी की । अपने लम्बे अध्यापकीय जीवन के पश्चात् १९७१ में उन्होंने अवकाश ग्रहण किया । मानवजी उच्च कोटि के कवि हैं । उन्हें वर्षों तक पत्रकार प्रवर पं. बनारसीदास चतुर्वेदी के सान्निध्य में रहने का अवसर प्राप्त हुआ । वे चतुर्वेदीजी के सचिव, सखा, सहयोगी तथा सहायक के तुल्य थे ।

ले. का.—साधना शतक (१९७३), जीवन के गीत (१९७४), आलोकनाद (१९७७), ओज की गंगा (१९८७) ।

व. प.—८५ महावीरनगर फीरोजाबाद (उ. प्र.) ।

श्री मथुराप्रसाद माहेश्वरी

अजमेर में आर्यसमाज के पुराने कार्यकर्ता तथा स्वामी दयानन्द के समकालीन श्री मथुराप्रसाद माहेश्वरी के पिता श्री छोटेलाल थे जो मूलतः जैसलमेर के निवासी थे । श्री मथुराप्रसाद का विवाह श्रीमती गुलाबदेवी से हुआ जो कालान्तर में अजमेर नगर में 'चाचीजी' के नाम से विख्यात हुई तथा जिन्होंने अपने पति द्वारा स्थापित कन्या-विद्यालय 'मथुराप्रसाद गुलाबदेवी कन्या पाठशाला' का संचालन पूर्ण लगन तथा त्याग की भावना से किया । अजमेर में आर्यसमाज के विविध भवनों—दयानन्द आश्रम, वैदिक यन्त्रालय, अनाथालय आदि के निर्माण में श्री मथु-राप्रसाद का उल्लेखनीय योगदान रहा । वे आर्यसमाज

अजमेर के १८९३ से १९०८ तक मंत्री रहे। इनका निधन आषाढ़ कृष्णा ४ सं. १९६६ को हुआ।

ले. का.—धर्म शिक्षा-२ भाग, आर्यसमाज अजमेर द्वारा प्रकाशित।

मुन्शी मथुराप्रसाद

उत्तरप्रदेश के जिला सीतापुर के वाड़ी नामक ग्राम के निवासी मुन्शी मथुराप्रसाद के पिता का नाम मुन्शी गंगादीन था। ये भारद्वाज गोत्रीय कायस्थ थे। इन्होंने पांच अध्यायों में 'सत्यदर्पण' शीर्षक काव्य की रचना की, जो १८९९ में प्रकाशित हुआ। दोहा, चौपाई, मनहरण कवित्त तथा मालती सवैया छन्दों में निबद्ध यह काव्य वैदिक धर्म की शिक्षाओं को वर्णित करता है।

श्री मथुराप्रसाद शिवहरे

आर्यसमाज के साहित्य के शीर्षस्थ प्रकाशकों में श्री मथुराप्रसाद शिवहरे का नाम प्रमुख है। इनका जन्म पौष कृष्णा अमावस्या १९४२ वि. (५ जनवरी १८८६) मंगलवार को फतहपुर (उत्तरप्रदेश) में श्री मातादीन के यहां हुआ। शिक्षा के नाम पर उन्हें तत्कालीन परिपाटी के अनुसार फारसी पढ़ने का अवसर मिला। १९०८ में वे आर्यसमाज के सम्पर्क में आये। आपने शुद्धि आन्दोलन में भी भाग लिया। भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् के मुख-पत्र 'आर्यकुमार' को आपने १९१९ में फतहपुर से साप्ताहिक रूप देकर निकाला।

१९१९ में वे वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धक पद पर नियुक्त हुए। आपने यन्त्रालय के द्वारा स्वामी दयानन्द कृत ग्रन्थों को उत्तम रीति से मुद्रित तथा प्रकाशित किया। १९३१ में आपने वैदिक यन्त्रालय के प्रबन्धक पद से त्याग-पत्र दे दिया और 'आर्य साहित्य मण्डल' नामक एक स्वतन्त्र प्रकाशन संस्थान का प्रारम्भ किया। इसी संस्थान से पं. जयदेव शर्मा विद्यालंकार कृत चतुर्वेद हिन्दी भाष्य प्रकाशित हुआ। स्वामी दयानन्द कृत ग्रन्थों के सस्ते संस्करण छापने में भी मण्डल ने नवीन कीर्तिमान स्थापित किया। इसके अतिरिक्त आर्यसमाज के गणमान्य लेखकों के सैकड़ों ग्रन्थों को प्रकाशित करने का श्रेय भी आर्य-साहित्य मण्डल को ही है। ख्वाजा हसन निजामी कृत 'दाइये इस्लाम' नामक षड्यंत्रकारी पुस्तक का अनुवाद स्वयं शिवहरेजी ने 'खतरे का घण्टा या अलार्मबेल' शीर्षक से किया और उसकी सहस्रों प्रतियां प्रकाशित कर मुसलमानी प्रचार साधनों से हिन्दू जाति को अवगत कराया। इस पुस्तक का प्रथम प्रकाशन १९२३ में हुआ था। 'खतरे का घण्टा' इतना लोकप्रिय हुआ कि बंगला, मराठी, गुजराती तथा उर्दू में उसके अनुवाद छपे तथा लाखों की संख्या में वह प्रचारित हुआ। स्वामी सदानन्द परिव्राजक ने 'सतर्कीकरण घण्टा' शीर्षक से इसी पुस्तक का बंगला अनुवाद किया था। शिवहरेजी ने अपनी आत्मकथा 'मेरा परिवार' शीर्षक से लिखी जो २००१ वि. में प्रकाशित हुई। इसमें शिवहरेजी के आत्मवृत्तान्त के साथ-साथ आर्यसमाज के इतिहास तथा आर्य साहित्य के लेखन-प्रकाशन विषयक अनेक तथ्य भी लिपिबद्ध किये गये हैं। १९ अप्रैल १९५६ को श्री मथुराप्रसाद शिवहरे का निधन हुआ।

वि. अ.—मेरा परिवार—प्रकाशक : फाइन आर्ट्स प्रेस, अजमेर।

डा. मथुरालाल शर्मा

ओजस्वी वक्ता तथा भारतीय नवजागरण में आर्यसमाज की भूमिका के ऐतिहासिक व्याख्याकार डॉ. मथुरालाल शर्मा का जन्म १८९६ में कोटा नगर के एक ब्राह्मण परिवार में श्री कन्हैयालाल के यहां हुआ। उनकी शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हुई जहां से उन्होंने इतिहास में एम. ए. तथा डी. लिट. किया। वे हरबर्ट-कॉलेज कोटा तथा महाराजा कालेज जयपुर के प्रिंसिपल, राजस्थान शिक्षा विभाग के निदेशक, राजस्थान विश्वविद्यालय में इतिहास विभाग के अध्यक्ष तथा कुछ काल के लिए विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। वे आर्य प्रतिनिधि-सभा राजस्थान के दीर्घकाल तक प्रधान रहे। वे परोपकारिणी सभा के सदस्य मनोनीत हुए और इस सभा की विद्वत् परिषद् के सदस्य भी रहे। १९८२ में डा. शर्मा का निधन हो गया।

ले. का.—इतिहास तथा राजनीति विषयक २८ ग्रन्थ तथा अनेक प्रामाणिक ऐतिहासिक कृतियों का हिन्दी अनुवाद ।

मदनजित् आर्य

फिरोजपुर (पंजाब) के निवासी श्री आर्य परम स्वाध्यायशील तथा निष्ठावान् आर्यसमाजी थे । आपने 'सामाजिक पद्धतियाँ' शीर्षक एक उपयोगी पुस्तक लिखी । इसके कई संस्करण छपे । आपका निधन १० नवम्बर १९७८ को हुआ ।

डा. मदनमोहन जावलिया

डा. जावलिया का जन्म पौष कृष्णा ७ संवत् १९८७ वि. (१२ दिसम्बर १९३०) को शाहपुरा (राजस्थान) में श्री कल्याणमल जावलिया के यहां हुआ । इनकी प्रारम्भिक शिक्षा शाहपुरा में हुई । तदनन्तर आपने महाराणा भूपाल कालेज उदयपुर में उच्च शिक्षा ग्रहण की । आपने राजस्थान विश्वविद्यालय से 'हिन्दी पत्रकारिता को आर्यसमाज की देन' विषय पर शोध प्रवन्ध लिख कर १९७४ में 'डाक्टर ऑफ फिलासफी की उपाधि' प्राप्त की । आप राजस्थान की कालेज शिक्षा सेवा में प्राध्यापक रहे । आपने राजकीय सेवा से १९८८ में अवकाश ग्रहण किया ।

ले. का.—मृत्युंजय दयानन्द महाकाव्य (१९८३) (स्वामी दयानन्द के जीवन पर आधारित काव्य), आर्यसमाज और हिन्दू धर्म (१९८३), इन प्रकाशित ग्रन्थों के अतिरिक्त डा. जावलिया की अनेक स्फुट काव्य रचनायें तथा अन्य ज्ञानवर्धक लेख यदा कदा पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं ।

व. प.—धर्म कांटा के पीछे, आजाद नगर, भीलवाड़ा (राजस्थान) ।

मदनमोहनलाल शर्मा

शर्माजी रामायण की राधेश्याम तर्ज के प्रवर्त्तक तथा प्रसिद्ध कथावाचक एवं नाटककार पं. राधेश्याम के छोटे भाई थे । इन्होंने स्वामी 'दयानन्द जीवन गाथा' को राधेश्याम रामायण तर्ज पर पद्यबद्ध किया है । 'महर्षिचरित' शीर्षक यह पुस्तक राधेश्याम पुस्तकालय बरेली से १९५१ में छपी । चार भागों में विभक्त यह महर्षि चरित्र ऋषिबोध, गुरुकुल, शास्त्रार्थ तथा आर्यसमाज शीर्षकों में पूरा हुआ है ।

पं. मदनमोहन विद्यासागर

प्रसिद्ध विद्वान्, लेखक तथा वक्ता पं. मदनमोहन विद्यासागर का जन्म २१ फरवरी १९१५ को काश्मीर की राजधानी श्रीनगर में हुआ । आपके पिता का नाम लाला नन्दलाल था जो लुधियाना के निवासी थे । माता का नाम श्रीमती यमुना देवी था । आपकी शिक्षा गुरुकुलकांगड़ी में हुई जहां से आपने १९९३ वि. (१९३७) में वेदालंकार की उपाधि प्राप्त की । उस समय आप सूर्यप्रकाश के नाम से जाने जाते थे । आपने विदेशों में जाकर वैदिक धर्म का प्रचार किया तथा विगत अनेक दशकों से आंध्रप्रदेश को अपना कार्यक्षेत्र बनाकर धर्म प्रचार का कार्य कर रहे हैं ।

ले. का.—१. वेदों की अन्तःसाक्षी का महत्त्व (२००८वि.), २. जन कल्याण का मूल मंत्र-गायत्री (२००३ वि.), ३. आर्य स्तोत्र (१९५१), ४. आर्यसिद्धान्त (२०११ वि.), ५. आर्य सिद्धान्त मुक्तावली (२०१३ वि.), ६. मुक्ति और उसके साधन, ७. आर्यसमाज क्या मानता है ?, ८. आर्यसमाज का सैद्धान्तिक दृष्टिकोण (१९५१), ९. संस्कार महत्त्व (१९५१), १०. संस्कार समुच्चय, सरस्वती भाष्य सहित (स्वामी दयानन्दकृत संस्कारविधि की व्याख्या के साथ कुछ नवीन कर्मपद्धतियों सहित, १९७०), ११. पंचमहायज्ञप्रदीप (२०२४ वि.), १२. सत्यार्थ सरस्वती (सत्यार्थप्रकाश की स्वोपज्ञ व्याख्या, २०३५ वि.), १४. आर्यन मेनिफेस्टो, १५. ईश्वर प्रत्यक्ष ।

आपकी कुछ पुस्तकों का गुजराती एवं मराठी में अनुवाद हो चुका है, यथा-गुजराती में आर्यसमाज क्या मानता है (अनुवादक श्रीकान्त भगतजी) 'आर्यसमाज

काय मानतो' (मराठी) अनुवादक सत्यवीर शास्त्री। आपकी तेलुगु कृतियों का विवरण—आर्यसमाजमु, आर्यनमेतिमेनिफेस्टो, आर्य गृहणि, वैदिक संध्या, शुद्धि-संस्कारविधि, वैदिकविवाहपद्धति, संस्कार समुच्चयमु-दो भाग, अन्त्येष्टि विधि।

व. प.—प्रेम मन्दिर, नारायण गुड़ा महर्षि दयानन्द-मार्ग, हैदराबाद ५०००२९.

मदनमोहन सेठ

आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता तथा अंग्रेजी में अनेक ग्रन्थों के प्रणेता मदनमोहन सेठ का जन्म श्रावण शुक्लपक्ष १९४१ वि. (१८८४) में बुलन्दशहर से हुआ। अपनी छात्रावस्था में सेठजी अत्यन्त मेधावी तथा प्रतिभाशाली थे। बी. ए. में आपको रिपन छात्रवृत्ति मिली। १९०९ में एम. ए. तथा एल. एल. बी. की परीक्षाएं उत्तीर्ण करने के पश्चात् ये बुलन्दशहर में वकालत करने लगे। इसी वर्ष सेठजी आर्यसमाज बुलन्दशहर के मंत्री पद पर निर्वाचित हुए और १९११ में आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त-प्रान्त के मंत्री बने। कुछ काल वकालत करने के पश्चात् सेठजी ने सरकारी सेवा स्वीकार कर ली तथा मुन्सिफ पद पर नियुक्त हुए। अदालती निर्णयों को हिन्दी में लिख कर आपने एक अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया। कालान्तर में ये सत्र न्यायाधीश के पद तक पहुंचे। सेठजी सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद पर भी रहे। १० मार्च १९५६ को आपका निधन हुआ।

ले. का.—The Arya Samaj : A Political Body–Being an Open letter to Viscount Morley of Blackburn–His Majesty's Secretary of State for India. जिस समय विदेशी सरकार ने आर्यसमाज को एक राजद्रोही संस्था मानकर उसके अनुयायियों को नाना प्रकार से पीड़ित करना प्रारम्भ कर दिया था, उस समय प्रो. रामदेव की प्रेरणा से यह पुस्तक लिखकर श्री मदनमोहन सेठ ने गुरुकुल कांगड़ी के मासिक अंग्रेजी मुख पत्र 'वैदिक मैगजीन' में धारावाही प्रकाशित कराई। पुनः महात्मा मुन्शीराम लिखित प्रस्तावना और परिशिष्ट सहित यह पुस्तक सद्धर्मप्रचारक प्रेस कांगड़ी से प्रकाशित हुई। Sayings and Precepts of Swami Dayanand. स्वामी दयानन्द के उपदेशों और मन्तव्यों का संग्रह, Vegeatarianism Versus Flesh Eating, High Government officials on the Arya Samaj and its work. 1917. वैदिक वैजयन्ती—आर्य प्रतिनिधि-सभा संयुक्तप्रान्त की रजतजयन्ती के अवसर प्रकाशित इस सभा का २५ वर्षीय इतिहास (१९१२), आर्यसमाज क्या है ?

पं. मनसाराम वैदिक तोप

तथाकथित सनातन धर्मी विद्वानों के हठ एवं दुराग्रह-पूर्ण दृष्टिकोण से लिखे गए वैदिक सिद्धान्तों के खण्डनपरक ग्रन्थों का समुचित उत्तर देने की कला में प्रवीण पण्डित मनसाराम का जन्म १८९० में हिसार जिले के हट्टावाला नंगल ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम लाला शंकरदास था जो अग्रवाल वैश्य थे तथा व्यापार करते थे। मनसाराम की प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम बामनवाला की प्राथमिक पाठशाला में हुई। इस काल में इन पर एक मुसलमान अध्यापक मुन्शी शमसुद्दीन का बड़ा भारी प्रभाव था। प्राइमरी शिक्षा को समाप्त करने के पश्चात् वे १९०७ में वे टोहाना के माध्यमिक स्कूल में प्रविष्ट हुए परन्तु इसी समय पिता की मृत्यु हो जाने के कारण वे आगे नहीं पढ़ सके। आर्यसमाज के प्रति उनका आकर्षण पटवारी रामप्रसाद नामक एक व्यक्ति के कारण हुआ, जो इनके घर पर रहते थे तथा स्वयं सदाचारी, मृदुभाषी एवं लगनशील आर्यसमाजी थे। पं. मनसाराम ने यह स्वीकार किया था कि उन्हें आर्यसमाज की ओर प्रेरित करने वाले व्यक्ति श्री रामप्रसाद ही थे। उन्होंने अपना प्रसिद्ध ग्रन्थ 'पौराणिक पोप पर वैदिक तोप' इन्हीं महाशय राम-प्रसाद को समर्पित किया था।

जब वे अपने अध्ययन के प्रसंग में टोहाना रहते थे, तभी से उनका सामाजिक गतिविधियों से सम्पर्क बढ़ने लगा। १९०८ में इसी कस्बे में आर्यसमाज तथा सनातन-धर्म के बीच एक प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ। इसमें आर्यसमाज का प्रतिनिधित्व डी. ए. वी. कालेज लाहौर के प्रो. राजा-

राम ने किया था तथा सनातन धर्म के प्रवक्ता पण्डित लक्ष्मीनारायण थे। पं. मनसाराम ने अपने मित्रों सहित इस शास्त्रार्थ को तत्परतापूर्वक सुना और वे आर्यसमाज के विद्वान् द्वारा प्रस्तुत की गयी युक्तियों से अत्यधिक प्रभावित हुए।

मिडिल की परीक्षा देने के उपरान्त मनसाराम को संस्कृत पढ़ने की धुन सवार हुई। इस संकल्प को पूरा करने के लिये वे हिसार की सनातन धर्म संस्कृत पाठशाला में प्रविष्ट हुए तथा वहां कुछ वर्षों तक रह कर अध्ययन किया। हिसार से वे कनखल चले गये और भागीरथी पाठशाला में तीन चार वर्ष पढ़ते रहे। यहां भोजन की अव्यवस्था के कारण अध्ययन में कुछ अधिक प्रगति नहीं हुई। गुरुकुल कांगड़ी में चपरासी का कार्य भी उन्होंने कुछ काल तय किया। प्रयोजन यही था कि चपरासी के रूप में जीविका निर्वाह भी होता रहेगा और संस्कृत पढ़ने का सुयोग भी गुरुकुलीय वातावरण में मिल जाएगा। पं. बुद्धदेव विद्यालंकार उन दिनों गुरुकुल में अध्यापन करते थे। यह दुर्भाग्य ही था कि मनसाराम को आर्यसमाज के विख्यात गुरुकुल में भी पढ़ने की सुविधा उपलब्ध नहीं हो सकी। अब वे गुरुकुल से निराश होकर काशी के लिए चले।

अध्ययन समाप्त कर पं. मनसाराम प्रचार के क्षेत्र में अवतीर्ण हुए। प्रारम्भ में आर्यसमाज सिरसा के माध्यम से धर्म प्रचार करते रहे। पुन: स्वामी स्वतन्त्रानन्द की प्रेरणा से आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के उपदेशक बन गए। अब वे सर्वतोभावेन प्रचार कार्य में कूद पड़े। अपने उपदेशक जीवन में पं. मनसाराम ने अनेक शास्त्रार्थ किए तथा विरोधियों को पराजित किया। उनकी युक्तियों, प्रमाणों तथा तर्कप्रणाली से बड़े-बड़े शास्त्रार्थ महारथियों के छक्के छूट जाते थे। पं. मनसाराम आर्यसमाज के प्रचारक, शास्त्रार्थकर्त्ता तथा विद्वान् तो थे ही, उन्होंने देश के स्वाधीनता संग्राम में भी सक्रिय रूप से भाग लिया। १९२२ में कांग्रेस द्वारा चलाये गए आन्दोलन में भाग लेने के कारण उन्हें कारावास का दण्ड झेलना पड़ा था। वे स्वदेशी वस्त्रों और स्वदेशी वस्तुओं का ही उपयोग करते थे। जून १९४१ को बुडलाढा मण्डी (पंजाब) में उनका निधन हो गया। व्याख्यान और शास्त्रार्थों के अतिरिक्त पं. मनसाराम ने साहित्य के माध्यम से भी वैदिक विचारधारा का प्रचार किया। उनका खण्डनात्मक साहित्य सशक्त तथा प्राणवान है।

ले. का.—**प्रारम्भिक लघु ग्रन्थ**—एक ट्रैक्ट गुमराही के समुद्र में रास्ती की किश्त (असत्य सिंधु में सत्यनौका), सत्यार्थप्रकाश का सार (उर्दू)।

पौराणिक पोप पर वैदिक तोप—अथवा सनातन धर्म की मौत–पौराणिक पं. कालूराम ने 'आर्यसमाज की मौत' नामक एक पुस्तक लिखी थी। इसी के उत्तर में पण्डित मनसाराम ने उपर्युक्त ग्रंथ लिखा जो १२०० पृष्ठों में समाप्त हुआ है। इसमें मूर्तिपूजा, अवतारवाद, साकारवाद, मृतक श्राद्ध, पुराण, तीर्थ यात्रा, जन्माधारित वर्णव्यवस्था आदि सनातनी विचारधारा की आलोचना तीखी खण्डनात्मक शैली में की गई है।

चेतावनी प्रकाश (उर्दू)—पं. राजनारायण ने 'चेतावनी' शीर्षक एक पुस्तक लिखी थी जिसमें उन्होंने कलियुग के समाप्त होने और सतयुग के प्रारम्भ होने की भविष्यवाणी की थी। इसी भ्रान्तियुक्त धारणा का खण्डन उक्त पुस्तक में किया गया है।

पौराणिक पोल प्रकाश—२ भाग। 'पौराणिक पोप पर वैदिक तोप' की ही शैली में लिखी गई १३०० पृष्ठों की यह पुस्तक आर्य साहित्य मन्दिर लाहौर से १९३६ में प्रकाशित हुई। पंजाब सरकार ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया था।

पौराणिक दम्भ का वैदिक बम्ब—तथाकथित सनातन धर्मियों ने स्वामी दयानन्द के अमल धवल चरित्र को लांछित करने की दृष्टि से समय समय पर अनेक भद्दी और आपत्तिजनक पुस्तकें लिखी थीं। इनमें लायलपुर निवासी पण्डित शम्भुदयाल 'त्रिशूली' लिखित तथा १९२६ में प्रकाशित 'दयानन्द भाव चित्रावली', पं. माधवाचार्य रचित 'दयानन्द के सिर पर बुद्धदेव का जूता' पं. गोपालमिश्र हरयाणवी लिखित 'कलियुग-इन्सान के लिबास में'

अर्थात् 'असलो संगीत दयानन्द', 'शिवपूजा और दयानन्द की तालीम' 'रामपूजा और शैतान की तालीम' आदि मुख्य थीं। पं. मनसाराम ने इन सभी पुस्तकों का सम्मिलित उत्तर लिखकर पं. धर्मनारायण शर्मा के प्रच्छन्न नाम से छपाया। इस बात की पूरी सम्भावना थी कि लेखक और प्रकाशक पर सरकार की ओर से अभियोग चलाया जाता। इसीलिये पुस्तक के लेखक, प्रकाशक और मुद्रक का नाम नहीं दिया गया। पंजाब सरकार ने यहां महर्षि दयानन्द को कलंकित करने वाली उपर्युक्त पुस्तकों को जब्त कर लिया, वहां इस पुस्तक पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया।

शास्त्रार्थ विवरण—मेरे पच्चीस मिनट- (संगरूर शास्त्रार्थ का विवरण), शास्त्रार्थ जाखल मण्डी (उर्दू में प्रकाशित) १९३९, रावण जोगी के भेष में (१९२४), सनातन धर्म सभा भटिण्डा के वार्षिकोत्सव पर हुए शास्त्रार्थ का विवरण-उर्दू) १९२५, फलित ज्योतिष मीमाँसा—('चेतावनीप्रकाश' का ही एक अंश) (२०२४ वि.), आर्यसमाज क्या है?—(यह भी 'चेतावनीप्रकाश' का ही एक अंश है) (२०३२ वि.), शिवपुराण (१९२६) तथा भविष्य पुराण की आलोचना के दो ग्रन्थ स्वामी वेदानन्द तीर्थ सम्पादित पुराणालोचन ग्रन्थमाला के अन्तर्गत लाहौर से प्रकाशित हुए।

अप्रकाशित ग्रन्थ—१. आर्यसमाज के बगुले भगत। २. ब्रह्मवैवर्तपुराण की आलोचना (पाण्डुलिपि गुम हो गई।)

वि. अ.—एक मनस्वी जीवन (पं. मनसाराम का जीवनचरित) ले. राजेन्द्र जिज्ञासु।

मनुदेव अभय

अभयजी का जन्म वैशाख शुक्ला ७ सं. १९८३ वि. (जुलाई १९२७) को मध्यप्रदेश के इन्दौर नगर में पण्डित राजाराम शुक्ल के यहां हुआ। इनकी शिक्षा एम. ए. तथा बी. एड. की हुई। विद्यावाचस्पति तथा सिद्धान्त-शास्त्री उत्तीर्ण कर अभयजी ने शास्त्रीय ज्ञान अर्जित किया। व्यवसाय की दृष्टि से अभय ने अध्यापन को चुना तथा ३० जून १९८७ को प्रधानाचार्य के पद से कार्यनिवृत्त हुए। पत्रकारिता में उनकी गहरी रुचि है।

ले. का.—बौद्धमत प्रवेश क्यों?, धर्म के नाम पर, आर्यसमाज और साम्यवाद (१९५२), स्वाध्याय किरण, मृत्यु के पश्चात् क्या?, स्वर्गाश्रम, वैदिक किरण, वैदिक-पाथेय, सुपथा, वैदिक संस्कार अनुशीलन।

व. प.—सुकिरण अ. १३ सुदामानगर, इन्दौर ९.

डा. मनुदेव बंधु

श्री बंधु का जन्म ५ अप्रैल १९५८ को बिहार के भागलपुर जिले के ग्राम पथरगामा में श्री हीरालाल आर्य के यहाँ हुआ। इनका प्रारम्भिक अध्ययन गुरुकुल इज्जर में हुआ। आपने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से हिन्दी, संस्कृत, दर्शन तथा वैदिक साहित्य में एम. ए. की परीक्षाएं उत्तीर्ण की हैं। १९८६ से आप इसी विश्वविद्यालय के वेद विभाग में प्रवक्ता के पद पर कार्यरत हैं। गुरुकुल-कांगड़ी विश्वविद्यालय से ही आपने 'बृहदारण्यक उपनिषद् : एक अध्ययन' विषय लेकर पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की है।

ले. का.—भाष्यकार दयानन्द (१९८८), वेद मंथन (१९८८) चरित्र निर्माण, मानवता की ओर, वेदोऽखिलो-धर्ममूलम्।

व. प.—वेद विभाग, गुरुकुल कांगड़ी, विश्वविद्यालय हरिद्वार-२४९४०४.

मनोहरलाल गुप्त

वेदों की वैज्ञानिक व्याख्या करने वाले डा. मनोहर-लाल गुप्त का जन्म ३० जनवरी १९२५ को भरतपुर जिले के उच्चैन ग्राम में लाला कन्हैयालाल के यहाँ हुआ। उन्होंने भौतिक विज्ञान में एम. एस. सी. की परीक्षा १९४५ में उत्तीर्ण की तथा इंग्लैण्ड में रहकर १९६० में लन्दन विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि ग्रहण की। राजस्थान के कालेज शिक्षा विभाग में प्राध्यापक, विभागाध्यक्ष तथा प्राचार्य के पदों पर कार्य करने के पश्चात् वे १९७९ में सरकारी सेवा से निवृत्त हुए। डा.

गुप्त ने वेद मंत्रों के आधार पर सौर मण्डल, सृष्टि-रचना-प्रक्रिया तथा खगोल विज्ञान के अनेक रहस्यों का उद्घाटन किया है।

ले. का.—भारती शोध सार संग्रह, वेद सविता एवं वेदोद्धारिणी में उच्च कोटि के शोध निबंध। भरतपुर में १९८८ में आयोजित वेदोपनिषद् में पठित निबंधों का संग्रह-वेद विज्ञान मंजूषा (१९९०)

व. प.—३१४, कृष्णा नगर भरतपुर (राजस्थान) ३२१००१.

मनोहर विद्यालंकार

श्री मनोहर विद्यालंकार के पिता श्री श्यामसुन्दर दिल्ली निवासी थे। आप गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक हैं। इन्होंने १९९४ वि. (१९३८) में स्नातक बनकर अपने गुरुकुलीय अध्ययन को समाप्त किया। श्री मनोहर ने अनेक देशों की यात्रा की है। वे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा सार्वदेशिक सभा के अन्तरंग सदस्य रहे हैं। आप गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक मण्डल के भी सक्रिय सदस्य हैं।

ले. का.—दुर्गा विजय-(वेद मंत्रों का व्याख्या ग्रन्थ), श्री : लक्ष्मी, जीवनमरण २०२७.

व. प.—ईश्वर भवन, खारी बावली दिल्ली-११०००६.

मनोहरसिंह कुमार

स्वामी श्रद्धानन्द की मृत्यु पर श्री कुमार ने आल्हा की शैली में 'अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्दजी का शाखा' शीर्षक पद्य ग्रन्थ लिखा। यह स्वाधीनता कार्यालय अजमेर से १९२७ में छपा।

पं. मयाशंकर शर्मा, दर्शनाचार्य

गुजराती भाषा में षड्दर्शनों के अनुवादक पं. मयाशंकर का जन्म १८८७ में हुआ। मूलतः ये सौराष्ट्र के लाठी कस्बे के निवासी थे। इनके पिता पालीतना राज्य के पांच पीपला ग्राम में आकर बस गये। यहां पर ही उनका गुजराती भाषा में प्रारम्भिक शिक्षण हुआ। १५ वर्ष की आयु में विवाह भी हो गया। तत्पश्चात् जीविका-निर्वाहार्थ ये बम्बई चले गये। बाल्यकाल में ब्राह्मणोचित संस्कारवश स्तोत्र-पाठ, संध्या आदि कर्मकाण्डों का ज्ञान तो था ही, अब वे गोकुलदास तेजपाल संस्कृत पाठशाला में रसोइये के रूप में कार्य करने लगे तथा साथ ही अध्ययन भी करते रहे। पाठशाला के आचार्य ने मयाशंकर की प्रतिभा को ताड़ लिया, तथा रसोई बनाने के कार्य से मुक्ति दिला कर अध्ययन करने की प्रेरणा दी। इसी समय आपका आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् पं. बालकृष्ण शर्मा से परिचय हुआ। इनसे आपने अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य का अध्ययन किया।

स्वामी नित्यानन्द ने पं. मयाशंकर को काशी में अध्ययनार्थ भेजा। यहां ये पं. अम्बादत्त शर्मा नैयायिक के समीप पढ़ने लगे। काशी में रहते हुए किसी विद्यार्थी को हैजे का शिकार होकर मरते देख पं. मयाशंकर भयभीत हो गये और कलकत्ता चले आये। यहां उन्होंने सत्यव्रत सामश्रमी से अध्ययन किया। इससे पूर्व काशी में रहकर वे काव्यप्रकाश, तथा साहित्यदर्पण के अतिरिक्त संस्कृत के प्रसिद्ध महाकाव्यों का अध्ययन कर चुके थे। जैन मुनि विजय धर्म सूरि से भी कुछ काल तक पढ़ने का उन्हें अवसर मिला। १९१२ में मुम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा ने देवलाली में गुरुकुल की स्थापना की तथा पं. मयाशंकर को आचार्य नियुक्त किया। इसके पश्चात् वे नासिक, मलाड़, सान्ताक्रूज, वरसोवा, अंधेरी तथा शुक्लतीर्थ आदि स्थानों में रहकर गुरुकुल के आचार्य पद पर कार्य करते रहे क्योंकि देवलाली में स्थापित गुरुकुल ही इन स्थानों पर क्रमशः संचालित होता रहा। अन्ततः गुरुकुल को आनन्द तथा उसके पश्चात् घाटकोपर लाया गया। आनन्द में गुरुकुल के आचार्य पद से इन्होंने १९४२ में अवकाश ग्रहण किया। विद्या दान में ही समस्त जीवन अर्पित करने वाले ब्रह्मनिष्ठ आचार्य की भांति, बिना इस बात की चिन्ता किये कि वेतन में वृद्धि होती है या न्यूनता, पं. मयाशंकर समर्पित भाव में कार्य करते रहे। एक बार जब कि इनका वेतन १२५ रुपये था इन्हें राज पीपला राज्य में राजगुरु के पद पर २५० रुपये मासिक वेतन पर नियुक्त

किये जाने का प्रस्ताव आया, किन्तु सच्ची ब्राह्मण वृत्ति को धारण करने वाले पं. मयाशंकर ने इसे अस्वीकार कर दिया। १९४२ में शिक्षण कार्य से निवृत्त होने पर आर्य-विद्या सभा बम्बई ने इन्हें दर्शनाचार्य की उपाधि प्रदान की। अध्यापन कार्य के अतिरिक्त पण्डितजी लेखन कार्य में भी जुटे रहे। २१ दिसम्बर १९६९ को इनका निधन हुआ।

ले. का.—१. सत्यार्थप्रकाश का गुजराती अनुवाद, २. संस्कार-विधि का गुजराती अनुवाद (१९२४), ३. गोकरुणानिधि का गुजराती अनुवाद (२०१० वि.)।

उपर्युक्त अनूदित ग्रंथों के अतिरिक्त पं. मयाशंकर ने षड्दर्शनों का गुजराती अनुवाद भी किया। इनका विवरण इस प्रकार है—१. सांख्यदर्शन, २. योगदर्शन (२०९४), ३. न्यायदर्शन, ४. वैशेषिक दर्शन ५. वेदान्त दर्शन (२०१६ वि.), ६. मीमांसादर्शन गुजराती टीका (२००८), आर्यस्मृति (अप्रकाशित) इनकी अधिकांश कृतियों को जेठा भाई प्रेम जी ट्रस्ट ने प्रकाशित किया था।

महादेवशरण

बिहार के आर्य नेता श्री महादेवशरण का जन्म कार्तिक शुक्ला ११ सं. १९५४ वि. (५ नवम्बर १८९७) को सारण जिले के खुशहाल छपरा ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम श्री रामशरण था। विद्यार्थी काल में ही ये आर्यसमाज के सम्पर्क में आये तथा दयानन्द विद्यालय दानापुर में धर्म शिक्षा के अध्यापक रहे। आपने बिहार-प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मुख पत्र 'आर्यावर्त' का सम्पादन किया और हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह में भी भाग लिया। आप बिहार सभा के मंत्री तथा गुरुकुल वैद्यनाथ धाम के अधिष्ठाता भी रहे।

ले. का.—१. स्वामी रामानन्द सरस्वती का जीवन-चरित (१९३५), २. साधु ब्रजनन्दन वानप्रस्थी—बिहार के आर्य नेता बाबू ब्रजनन्दनसिंह का जीवन चरित (१९६६) आपने धर्म शिक्षा सम्बन्धी कुछ पुस्तकें भी लिखीं।

महानन्द शर्मा

'बच्चों का प्यारा ऋषि' नामक एक बालोपयोगी जीवनचरित इन्होंने लिखा था जो राजपाल लाहौर ने १९२५ में प्रकाशित किया। उर्दू में आपकी कृति 'दयानन्द चित्रावली मय मुकम्मल जीवन चरित्र' छपी थी। आपने महात्मा नारायण स्वामी के निबंध संग्रह 'अमृत वर्षा भाग-१' का सम्पादन भी किया था।

महामुनि विद्यालंकार

इनका जन्म अमृतसर में हुआ। १९७६ वि. (१९२०) में इन्होंने गुरुकुल कांगड़ी से स्नातक होकर विद्यालंकार की उपाधि ग्रहण की। तत्पश्चात् आपने गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ और गुरुकुल कुरुक्षेत्र में अध्यापन किया। कुछ काल तक गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के ये कार्यालयाध्यक्ष भी रहे। इनकी एक पुस्तक 'ऋषि दयानन्द के जीवन का मनन' का उल्लेख मिलता है।

पं. महाराणीशंकर शर्मा

गुजराती में आर्यसमाज विषयक साहित्य के प्रणेता पं. महाराणीशंकर शर्मा का जन्म माघ कृष्णा १ मंगलवार १९४३ वि. (८ फरवरी १८८७) को सौराष्ट्र के जूनागढ़ नगर में हुआ। इनके पिता का नाम अम्बाशंकर वल्लभजी तथा माता का नाम गिरिजाबेन था। मैट्रिक तक इनकी शिक्षा जूनागढ में ही हुई। तत्पश्चात् ये बम्बई चले गये। १६ वर्ष की आयु में इनका विवाह श्रीमती इच्छा देवी के साथ हो गया। बम्बई में आकर ये नाटक-मण्डलियों के लिये गीत लिखने लगे, फलतः इनकी गणना कवियों में होने लगी। इसी बीच इन्होंने सत्यार्थप्रकाश पढ़ा और आर्यसमाजी बन गये। बंग भंग के समय पं. महाराणीशंकर ने राजनैतिक आन्दोलन में रुचि लेना आरम्भ किया। इसी समय इन्होंने 'भारतोद्धार भजनामृत' नामक एक पुस्तक लिखी जिसे ब्रिटिश सरकार ने जब्त कर लिया। सूरत में जब कांग्रेस का अधिवेशन हुआ तो इनकी भेंट लाला लाजपतराय से हुई। डा. कल्याणदास देसाई के आग्रह से पं. महाराणीशंकर गुरुकुल कांगड़ी गये तथा १९११ तक वहां रहे।

आप १९११ में पुनः अपने प्रान्त में लौटे और आर्यसमाज का प्रचार करने लगे। कन्या गुरुकुल मलवाड़ा (बाद में यह गुरुकुल ईटोला चला गया) हेतु चंदा एक-

त्रित करने के लिये इन्होंने अफ्रीका की यात्रा भी की। विभिन्न स्थानों पर प्रचार हेतु जाने के कारण शर्माजी का शरीर दुर्बल हो गया। आषाढ अमावस्या १९८५ वि. (१६ जुलाई १९२९) को उनका निधन हो गया। गुजराती नाटक कम्पनियों से जुड़े रहने के कारण पं. महाराणीशंकर ने चन्द्रगुप्त, बुद्धाख्यान, रुक्मिणी-हरण, सम्राट अशोक, वीर दुर्गादास आदि नाटक लिखे जो पर्याप्त लोकप्रिय हुए। आपने महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर लिखित 'समाज' शीर्षक ग्रन्थ का गुजराती अनुवाद भी किया था।

ले. का.—सती संगीतावली (नारी जाति विषयक गीतों का संग्रह), नवयुग के युवान स्त्री पुरुष, दयानन्द-आख्यान (स्वामी दयानन्द की जीवन घटनाओं का गद्य-पद्यात्मक वर्णन), कन्योपनयन विधि—पं. वीरभानु शर्मा मिश्र रचित 'कन्योपनयन निषेध' शीर्षक पुस्तक का उत्तर (१९७१ वि., १९१५)।

डा. महावीर

डा. महावीर का जन्म महाराष्ट्र प्रान्त के भंडारा जिले के ग्राम पलसगांव (सोनकी) में श्री ताराचन्द आर्य के यहां ९ अक्टूबर १९५१ को हुआ। इनकी शिक्षा गुरुकुल झज्जर तथा गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी में हुई जहां से इन्होंने संस्कृत में एम. ए. किया। मेरठ विश्वविद्यालय से 'वाल्मीकीय रामायण में रस विमर्श' शीर्षक विषय पर शोध कार्य करने के उपरान्त आपको पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त हुई। वर्तमान में ये गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में रीडर के पद पर कार्य कर रहे हैं। इन्होंने वैदिक साहित्य में भी एम. ए. किया है। ऋषि दयानन्द तथा वेद विषयक आपके अनेक शोध-पूर्ण निबन्ध विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। 'संस्कृत गद्य लतिका' शीर्षक पुस्तक का आपने सम्पादन किया है।

व. प.—संस्कृत विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

डा. महावीर मीमांसक

गुरुकुल झज्जर के स्नातक श्री महावीर ने काशी में रहकर मीमांसा दर्शन का अध्ययन किया। १९६२ में वे विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर में अध्यापक बने। कालान्तर में एम. ए. और पी-एच. डी. भी की। सम्प्रति वे दिल्ली के शिवाजी कालेज में संस्कृत के प्रवक्ता हैं।

ले.का.—१. अमर शहीद रामप्रसाद विस्मिल का जीवन-चरित, २. महाकवि मेधाव्रताचार्य कृत दयानन्द दिग्विजय महाकाव्य की विजय मंगला टीका—यह टीका सात अध्यायों पर लिखी गई थी किन्तु इसके तीन अध्याय (विस्तृत भूमिका एवं कवि परिचय सहित) चौखम्बा संस्कृत ग्रन्थ-माला (गोकुलदास ग्रन्थमाला ३८) के अन्तर्गत १९७९ में प्रकाशित हुए।

व.प.—ए-३-११, पश्चिम विहार दिल्ली ११००६३.

डा. महाश्वेता चतुर्वेदी

डा. महाश्वेता का जन्म २ फरवरी १९४८ को इटावा में पं. रमेशचन्द्र पाठक के यहां हुआ। इनकी माता का नाम डा. शारदा पाठक था जो स्वयं संस्कृत की विदुषी थीं। डा. महाश्वेता ने हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी में एम. ए. की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं तथा 'छायावाद के मौलिक आधार' विषय पर पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। ये राजेन्द्रप्रसाद डिग्री कालेज वरेली में हिन्दी प्रवक्ता के पद पर कार्यरत हैं।

ले. का.—यजुर्वेद का रहस्य (१९८४), वेदायन—(चारों वेदों के चार शतक—ऋचा गान के रूप में) महाश्वेताजी हिन्दी की रससिद्ध कवयित्री हैं। इनके दो काव्य संग्रह—'मेरे गीत तुम्हारे मीत' तथा 'ज्योतिकलश' प्रकाशित हो चुके हैं। एक कहानी संग्रह 'टूटते स्वप्न' भी छपा है तथा 'विवेक विजय' महाकाव्य प्रकाशनाधीन है। ये हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी तीनों भाषाओं में सतत लिख रही हैं। इनके शताधिक लेख आर्य पत्रों में छप चुके हैं।

व. प.—प्रोफेसर्स कालोनी, श्यामगंज, वरेली (उत्तर प्रदेश)।

महेन्द्र आर्य

श्री महेन्द्र का जन्म श्री गजानन्द आर्य के यहां १९५६ में हुआ। आजकल ये बम्बई में निज के व्यवसाय को देख रहे हैं। काव्य, निबन्ध तथा कहानियां लिखने में इनकी विशेष रुचि है। इन्होंने अपने पितामह स्व. लालमनजी आर्य की स्मृति में 'यादें' शीर्षक एक उत्तम स्मृति ग्रन्थ का सम्पादन किया है।

व. प.—सागर सुक्षिति, प्लाट नं. २, ५ वीं सड़क, जे. वी. पी. डी. स्कीम, बम्बई ४०००५६.

पं. महेन्द्रकुमार वेदशिरोमणि

पं. महेन्द्रकुमार गुरुकुल वृन्दावन के प्रतिभाशाली स्नातक थे। उन्होंने गुरुकुल की १४वीं श्रेणी में पढ़ते समय 'पौरस्त्य धनुर्वेद की उपक्रमणिका' शीर्षक एक शोधपूर्ण निवन्ध लिखा था। इस निबन्ध के परीक्षक सर्वश्री वासुदेवशरण अग्रवाल, विष्णुभास्कर केलकर तथा पं. विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि थे। उनकी संस्तुति के आधार पर इन निवन्धों के लिए पं महेन्द्रकुमार को १९३१ में पं. शंकरदेव काव्यतीर्थ प्रदत्त शंकर पदक से पुरस्कृत किया गया। यही निबंध कालान्तर में 'पौरस्त्य धनुर्वेद' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। पं. महेन्द्रकुमार अल्पायु में ही दिवंगत हो गये थे।

महेन्द्रकुमार शास्त्री

दिल्ली के आर्य अनाथालय के विगत अध्यक्ष शास्त्रीजी की पितृशतकम् तथा वैदिक-विवाह-संस्कारविधि प्रकाशित हुई है।

महेन्द्रचन्द्र

मास्टर आत्माराम अमृतसरी के चतुर्थ पुत्र श्री महेन्द्रचन्द्र बम्बई में रहकर आर्यसमाज की प्रवृत्तियों में अपना योगदान करते रहे। वे कुछ समय के लिये अफीका भी गये थे। इनकी शिक्षा बी. ए. तक हुई थी। इनका निधन १९४८ में हुआ। आपने राव साहब रामविलास शारदा और पं आत्माराम अमृतसरी का जीवनचरित लिखा है। ये दोनों पुस्तकें महेश पुस्तकालय अजमेर से १९९० वि. में प्रकाशित हुई थीं।

पं. महेन्द्रदेव शास्त्री

सुप्रसिद्ध विद्वान् तथा शास्त्रार्थ महारथी पं. मुरारीलाल शर्मा के द्वितीय पुत्र पं. महेन्द्रदेव शास्त्री का जन्म १ अक्टूबर १८९८ को सिकन्दराबाद (जिला बुलन्दशहर) में हुआ। १९१६ में आपने पंजाब विश्वविद्यालय की शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की। १९१८ में इन्होंने गुरुकुल सिकन्दराबाद से स्नातक बन कर विद्याभूषण की उपाधि ग्रहण की। आपने कुछ समय तक इसी गुरुकुल में अध्यापन कार्य भी किया। तत्पश्चात् दिल्ली में मुरारी फाइन-आर्ट वर्क्स की स्थापना कर ब्लाक बनाने का व्यवसाय किया। १४ अक्टूबर १९८१ को आपका निधन हो गया।

ले. का.—दोषदर्शन, सूक्ति शतक, सूक्ति रत्नावली, कल्याण का मार्ग, आर्यसमाज का स्वरूप।

पं. महेन्द्रनाथ वेदालंकार

आपका जन्म गुजरात के जिला भड़ौंच के हांसोट नामक ग्राम में श्री कालिदास दयाराम के यहां हुआ। आपने १९३७ में गुरुकुल कांगड़ी से वेदालंकार की उपाधि प्राप्त की। आपका प्रमुख कार्यक्षेत्र गुजरात ही रहा, जहां आपने विभिन्न स्थानों में धर्म प्रचार किया।

ले. का.—स्वामी सर्वदानन्द कृत कर्मकाण्ड तथा प. कृष्णगोपाल आर्यसेवक कृत सत्यार्थप्रकाश का गुजराती अनुवाद। हिन्दुस्तानी पाठमाला का सम्पादन।

व. प.—१५७/१८७३ प्रतीक्षा एपार्टमेंट्स, सोलारोड़, नारणपुरा-अहमदाबाद ३८००१३.

महेन्द्रनाथ सरकार

सरकार महाशय कलकत्ते की प्रेसिडेन्सी कालेज में दर्शन शास्त्र के प्राध्यापक थे। आपने The Mission Of Swami Dayanand शीर्षक एक विचार प्रधान लेख लिखा था। इसे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने १९६६ में प्रकाशित किया।

पं. महेन्द्रप्रताप शास्त्री

आर्यसमाज के प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री तथा विद्वान् पं. महेन्द्रप्रताप शास्त्री का जन्म सुप्रसिद्ध आर्य नेता और कार्यकर्त्ता ठा. माधवसिंह के यहाँ आगरा में सन् १९०० में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल वृन्दावन में हुई। तत्पश्चात् आपने पंजाब विश्वविद्यालय से एम. ए. (संस्कृत) तथा शास्त्री की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। आपका विवाह जातिबंधन को तोड़कर कन्या गुरुकुल सासनी (हाथरस) की संस्थापिका श्रीमती लक्ष्मीदेवी की पुत्री श्रीमती अक्षयकुमारी के साथ हुआ। अध्ययन समाप्त कर आपने राजाराम कालेज कोल्हापुर तथा डी. ए. वी. कालेज देहरादून में संस्कृत के प्राध्यापक के रूप में कार्य किया। बाद में आप डी. ए. वी. कालेज लखनऊ, जनता वैदिक डिग्री कालेज बडौदा के प्रिन्सिपल तथा गुरुकुल कांगड़ी के कुलपति भी रहे। सम्प्रति वे कन्या गुरुकुल हाथरस का संचालन कर रहे हैं। शास्त्रीजी ने आर्य जगत् के सुयोग्य नेताओं तथा कार्यकर्त्ताओं को अर्पित किये गये अभिनन्दन ग्रन्थों का कुशल सम्पादन किया है। ऐसे ग्रंथ हैं—महात्मा नारायण स्वामी अभिनन्दन ग्रन्थ (१९४५), श्रीमती लक्ष्मी-देवी अभिनन्दन ग्रन्थ (१९५५), पं. गंगाप्रसाद जज अभिनन्द ग्रन्थ (१९५९), पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय अभिनन्दन ग्रन्थ (१९५९), अन्य ग्रन्थ—आर्यसमाज परिचय (२०१८ वि.)।

वि. अ.—महेन्द्रप्रताप शास्त्री अभिनन्दन ग्रंथ—सं.—विजयेन्द्र स्नातक (१९८०).

व. प.—कन्या गुरुकुल सासनी (अलीगढ़)।

महेशचरण सिंह

श्री सिंह लखनऊ के निवासी थे। इनका जन्म १९६५ वि. में हुआ। बाद में ये गुरुकुल कांगड़ी में रसायन शास्त्र के अध्यापक बने। हिन्दी माध्यम से रसायन की शिक्षा देने की दृष्टि से आपने 'हिन्दी केमिस्ट्री' पुस्तक लिखी जो हिन्दी में अपने विषय की प्रथम पुस्तक थी।

प्रो. महेशप्रसाद मौलवी

आर्यसमाज के अरबी एवं फारसी के मर्मज्ञ विद्वानों में प्रो. महेशप्रसाद मौलवी, आलिम फाजिल का अन्यतम स्थान है। पं. महेशप्रसाद का जन्म १७ नवम्बर १८९१ को इलाहाबाद जिले के फतहपुर ग्राम में एक कायस्थ परिवार में हुआ। मैट्रिक पास करने के पश्चात् उनका विचार पुलिस विभाग में थानेदार बनने का था, किन्तु इसी बीच उन्हें ज्ञात हुआ कि आगरा में पं. भोजदत्त शर्मा ने धर्मवीर पं. लेखराम की स्मृति में आर्य मुसाफिर विद्यालय की स्थापना की है। अब वे पुलिस विभाग में जाने का विचार छोड़कर १ दिसम्बर १९१३ को मुसाफिर विद्यालय में प्रविष्ट हुए। दो वर्ष तक अध्ययन करने के पश्चात् १९१५ में वे इसी विद्यालय में अध्यापक बन गये। इसी वर्ष हिन्दी के प्रमुख विद्वान् महापण्डित राहुल सांकृत्यायन (जो उस समय केदारनाथ पाण्डेय के नाम से जाने जाते थे) ने भी इसी विद्यालय में प्रवेश लिया। राहुलजी तथा महेशप्रसादजी की मैत्री आजीवन बनी रही। इन्हीं की प्रेरणा से महेशप्रसाद अरबी के उच्च अध्ययन के लिये लाहौर गये और ओरियंटल कालेज की मौलवी फाजिल कक्षा में प्रवेश लिया। इस कक्षा में प्रविष्ट होने वाले वे प्रथम हिन्दू विद्यार्थी थे तथा पंजाब विश्वविद्यालय की अरबी की सर्वोच्च परीक्षा 'मौलवी फाजिल' उत्तीर्ण करने वाले भी वे प्रथम हिन्दू थे। राहुलजी के शब्दों में "मोटी चुटिया नंगे सिर पर धारण किये और खादी का मोटा कुर्त्ता और धोती पहने महेशप्रसादजी मुसलमानी वातावरण से प्रभावित आलिम कक्षा में कभी उपहास और अनादर के पात्र नहीं बने। शायद धार्मिक मतभेद होने पर भी धार्मिक सहिष्णुता उस युग में आज की अपेक्षा कहीं अधिक थी जबकि आज धर्म निरपेक्षता का ढोल सबसे अधिक पीटा जाता है।"

मौलवी फाज़िल उत्तीर्ण करने के पश्चात् वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में अरबी, फारसी विभाग के अध्यक्ष नियुक्त हुए। उन्होंने अपना अवशिष्ट जीवन इसी विश्वविद्यालय में अध्यापन तथा आर्यसमाज के प्रचार में लगाया। स्वामी दयानन्द के जीवन से सम्बन्धित इनका अनुसंधान बहुत महत्त्वपूर्ण था। स्वामी दयानन्द के देश-भ्रमण, विभिन्न स्थानों पर उनके आगमन तथा प्रस्थान

की तिथियों के निर्धारण तथा सत्यार्थप्रकाश विषयक उनका शोधकार्य मौलवीजी की अनुसंधान प्रवृत्ति का परिचायक है। प्रो. महेशप्रसाद की पुत्री कल्याणी देवी ने काशी विश्वविद्यालय के वेद तथा पौराहित्य पाठ्यक्रम की कक्षा में प्रवेश लेने हेतु आवेदन किया। उस समय इस विभाग के रूढिवादी अध्यक्ष ने एक अब्राह्मण कन्या को वेद विभाग में प्रवेश देने में आनाकानी की। इस पर आर्यसमाज में आन्दोलन छिड़ गया। आर्यसमाज के विद्वानों ने विश्वविद्यालय के संस्थापक पं. मदनमोहन मालवीय से भेंट कर उनसे निवेदन किया कि कन्याओं के वेदाध्ययन के अधिकार को शास्त्रों से सिद्ध किया जा सकता है। अन्ततः मालवीयजी के हस्तक्षेप से कल्याणी देवी को वेद की कक्षा में प्रवेश मिल गया। २९ अगस्त १९५१ को इलाहाबाद के रसूलाबाद मुहल्ले में प्रो. महेशप्रसाद का निधन हुआ।

ले. का.—१. महर्षि दयानन्द सरस्वती (१९९८ वि.), २. महर्षि दयानन्द कहां और कब? (२००० वि.), १९४३), ३. महर्षि जीवन दर्शक (२००१ वि.), ४. दयानन्द काल में रेलमार्ग, ५. महर्षि का अपूर्व भ्रमण, ६. सर सैयद अहमद और स्वामी दयानन्द (१९४४), ७. सत्यार्थप्रकाश की व्यापकता (१९३८), ८. सत्यार्थप्रकाश पर विचार, ९. सत्यार्थप्रकाश विषयक भ्रम, १९. अमर सत्यार्थप्रकाश, The Immortal Satyartha Parkash., ११. स्वामी दयानन्द और कुरान (१९४३), १२. बकर ईद, १३. गाय और कुरान, १४. इस्लामी त्यौहार और उत्सव। उपर्युक्त सभी ग्रन्थ मौलवीजी ने अपनी आलिम-फाज़िल बुक डिपो द्वारा प्रकाशित किये। उन्होंने अपनी ईरान यात्रा का विवरण भी पुस्तक रूप में प्रकाशित कराया था। पं. देवप्रकाश के अनुसार उन्होंने सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास पर कोई टीका भी लिखी थी। सम्भवतः यह प्रकाशित नहीं हुई। मौलवीजी की इच्छा थी कि नवीनतम अनुसंधानों के आधार पर ऋषि दयानन्द का सर्वांगीण जीवनचरित लिखा जाना चाहिए। किन्तु उनके जीवनकाल में यह नहीं हो सका।

डा. मानकरण शारदा

सुयोग्य लेखक डा. मानकरण शारदा का जन्म अजमेर के विख्यात आर्य नेता रामविलास शारदा के यहां मार्गशीर्ष कृष्णा ६, सं. १९४७ वि. (२२ नवम्बर १८९१) को हुआ। एम. बी. बी. एस. की परीक्षा देकर वे चिकित्सा व्यवसाय में आये और १९३० में आपको परोपकारिणी सभा का सदस्य निर्वाचित किया गया। १९५३ में वे इस सभा के मंत्री बने और १९६४ से १९८२ तक उपप्रधान पद पर रहे। डा. शारदा की लेखन में प्रारम्भ से ही रुचि रही। जब आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने अपना मुखपत्र 'आर्यमार्तण्ड' निकाला तो कई वर्षों तक शारदाजी उसके अधिष्ठाता तथा सम्पादक रहे। वे मा. क. शा. के संक्षिप्त नाम से इस पत्र में नियमित रूप से लिखते थे। परोपकारी मासिक के प्रकाशन से लेकर १९८२ में मृत्यु पर्यन्त, वे सम्पादक रहे। इस पत्र में भी वे यदा कदा सामाजिक, धार्मिक तथा सामयिक प्रश्नों पर विचारोत्तेजक लेख लिखते थे। १८ नवम्बर १९८२ को उनका निधन हुआ।

डा. मानसिंह

डा. मानसिंह का जन्म २ फरवरी १९४० को हरिद्वार जिले के ग्राम टोडा कल्याणपुर में हुआ। इनकी उच्च शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हुई जहां से आपने एम. ए. (संस्कृत), वेदाचार्य तथा पी-एच. डी. की उपाधियां ग्रहण कीं। २६ अक्टूबर १९७१ में आप हिमाचल-प्रदेश विश्वविद्यालय शिमला के संस्कृत विभाग में आये। आजकल आप कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष हैं।

ले. का.—अंग्रेजी, हिन्दी तथा संस्कृत में उच्चकोटि के लगभग ४५ शोध निबन्धों के अतिरिक्त आपने The Etymologies in Dayanand's SatyarthPrakash शीर्षक शोध निबन्ध लिखा है जो डा. धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री स्मृति ग्रंथ 'धर्म नीराजना' में १९८९ में प्रकाशित हुआ है। एम. मोनियर विलियम्स की पुस्तक हिन्दुइज्म का

हिन्दी रूपान्तर हिन्दू धर्म (१९८४) भी आपके द्वारा सम्पन्न हुआ है।

व. प.—संस्कृत विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र।

मामचन्द रिवारिया

इनका जन्म १७ जुलाई १९३६ को दिल्ली में श्री भूण्डेराम के यहां हुआ। मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त कर ये रेलवे बोर्ड में लिपिक बन गये। १९७७ में नौकरी से पृथक् होकर स्वतन्त्र रूप से व्यवसाय करने लगे। विद्यार्थी-काल में ही वे आर्यसमाज के सम्पर्क में आये और आर्य-समाज सीताराम बाजार दिल्ली के मंत्री चुने गये। आप आर्य प्रादेशिक सभा के उपमंत्री पद पर भी रहे। मॉरि-शस, केन्या तथा लन्दन में हुए आर्य महासम्मेलनों में इन्होंने भाग लिया और अपने यात्रा संस्मरणों को पुस्तक रूप में निबद्ध किया।

ले. का.—मेरी विदेशी यात्रायें (१९८१)। इसी पुस्तक को 'विदेशों में आर्यसमाज' शीर्षक से भी छापा गया। Arya Samaj Abroad (1983).

व. प.—जी. ४१, डी. डी. ए. फ्लेट्स, अजमेरी गेट दिल्ली ११०००६.

सेठ मांगीलाल गुप्त कविकिंकर

कवि, लेखक तथा पत्रकार सेठ मांगीलाल गुप्त का जन्म १ मई १८५८ को नीमच (मध्यप्रदेश) के एक अग्रवाल वैश्य परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम श्री लादूराम था। आपका प्रारम्भिक शिक्षण आठवीं श्रेणी तक नीमच में हुआ। तत्पश्चात् स्वाध्याय से आपने हिन्दी, उर्दू, संस्कृत तथा अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। आर्यसमाज की ओर जब आप आकर्षित हुए तो आपने आर्य साहित्य का गहन अध्ययन किया। उस समय अध्ययन के प्रति रुचि इतनी बढ़ी कि रात्रि के दो बजे तक आप विभिन्न ग्रंथों के अध्ययन में डूबे रहते थे।

आर्यसमाज की विचारधारा ने गुप्तजी को स्वाधीनचेता तथा राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण बना दिया था। फलतः १९१२ में आपको राजद्रोह का अपराधी घोषित कर विभिन्न प्रकार से परेशान किया गया। १९०६ में गुप्त जी के प्रयत्न से नीमच में वेद धर्म प्रचारिणी सभा की स्थापना हुई। १९१० में आपने अपने मित्रों के सहयोग से इस नगर में आर्यसमाज की स्थापना की। गुप्तजी की अध्ययनशीलता का परिचायक उनका विशाल पुस्तकालय था, जिसे उन्होंने अपनी मृत्यु से पूर्व आर्यसमाज नीमच को दान दे दिया था। दयानन्द-अनाथालय अजमेर के मुख पत्र 'अनाथरक्षक' के ये प्रथम सम्पादक थे। नवम्बर १९०३ में, पत्र के प्रारम्भ होने से लेकर मई १९०८ पर्यन्त इन्होंने अनाथरक्षक का सम्पादन किया। कविकिंकर के नाम से उनकी अनेक काव्य रच-नायें तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं में छपती रहीं। १ अप्रैल १९१८ को कविकिंकर का देहान्त हो गया।

ले. का.—१. ऋषि चरित्र (१९५५ वि. १८९८), २. आर्यसमाज के दस नियमों पर व्याख्यान, ३. आर्यसमाज क्या मानता है और क्या नहीं मानता ?, ४. भक्तमन रंजन (भजन संग्रह १८९९), ५. कलामे किंकर (काव्य संग्रह), ६. भाषा श्रुतबोध (छन्दों के लक्षण बताने वाला काव्य १९७० वि.), ७. गाने की चंद चीजें अर्थात् लावनी संग्रह, ४ भाग, वीरता विषयक व्याख्यान, ८. काव्योपवन, सुमन-पुष्पांजलि (संस्कृत तथा हिन्दी के कुछ रससिक्त पद्यों का अनुवाद संग्रह)।

मित्रमहेश आर्य

श्री आर्य का जन्म १९ जनवरी १९५७ को अहमदा-बाद में हुआ। इनका सम्बन्ध शाहपुर अहमदाबाद की आर्यसमाज से है। आप विचारशील तथा प्रबुद्ध युवक तथा गुजराती के प्रगल्भ लेखक हैं। आपने १९८२ में आर्य-समाज शीर्षक पत्रिका का प्रकाशन भी आरम्भ किया।

ले. का.—वैष्णव सम्प्रदाय प्रारम्भ अने परम्परा (१९८८)। वल्लभ सम्प्रदाय में व्याप्त अनाचारों एवं दुराचारों का भण्डाफोड़ करने वाला यह ग्रन्थ अनेक प्रामाणिक सूचनाओं से परिपूर्ण है। कच्छ के कवि

स्व. दुलेराय काराणी कृत दयानन्द बावनी का सम्पादन (१९९०)।

व. प.—आर्यसमाज श्रद्धानन्द भवन, शाहपुर, अहमदाबाद।

आचार्य मित्रसेन

अलीगढ़ निवासी श्री मित्रसेन ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से वैदिक साहित्य में एम.ए. किया। वर्षों पूर्व आपने 'भारतवर्षीय वैदिक सिद्धान्त परिषद' का संगठन किया जिसके द्वारा धार्मिक परीक्षाओं का आयोजन किया जाता था। परिषद् का अपना प्रकाशन विभाग भी था। आचार्य मित्रसेन ने कुछ काल तक राष्ट्रधर्म नामक साप्ताहिक पत्र भी निकाला।

ले. का.—१. आर्यसमाज के लोकापकारी कार्य (१९६४), २. सुमंगली (विवाह पद्धति), ३. उन्नति के पथ पर।

व. प.—सेवासदन, कटरा, अलीगढ़ (उ. प्र.)।

आर्या मीरा यति

आपका जन्म अगस्त १९२८ में जालंधर जिले के महतपुर में हुआ। १९६४ में आप आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर आईं तथा दर्शन, उपनिषद् तथा ऋषि दयानन्द के ग्रंथों का अध्ययन किया। तत्पश्चात् आप वेदप्रचार में जुट गईं। आप भारत में सर्वत्र भ्रमण कर धर्म प्रचार करती हैं। ७ अप्रैल १९६४ को इन्होंने संन्यास की दीक्षा ग्रहण की। पूर्वाश्रम में आपका नाम कमला आर्या था।

ले. का.—१. उपदेश कथा मंजरी, २. वैदिक वचनामृत, ३. देव दयानन्द, ४. यज्ञ महिमा, ५. याज्ञिक जीवन, ६. रत्नमाला, ७. मणिमाला, ८. दीपमाला, ९. पारसमणि, १०. कष्टमोचन, ११. पुष्पमाला, १२. ईशमाला, १३. प्रेरणाप्रद कथायें, १४. स्वर्णमाला, १५. नकली भगवान्, १६. नकली असली माता रानी, १७. मधुरगीत, १८. संगीत सुधा, १९. भजन माला, २०. गीतमंजरी, २१. श्रुति सुधा।

व. प.—आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर (हरिद्वार)।

ठाकुर मुकुन्दसिंह वर्मा

छलेसर (जिला अलीगढ़) के ठाकुर मुकुन्दसिंह स्वामी दयानन्द के भक्त एवं अनुयायी थे। स्वामीजी उनके गांव में एकाधिक बार गये तथा उनका आतिथ्य स्वीकार किया। इन्हीं ठाकुर मुकुन्दसिंह ने 'तहकीकुल हक' तथा 'इलाजुल औहाम' नामक दो ग्रन्थ लिखे थें। तहकीकुलहक का तो अंग्रेजी अनुवाद भी छपा था।

पं. मुन्नालाल मिश्र

श्री मिश्र का जन्म चैत्र शुक्ला ९ सं. १९६४ वि. (२२ अप्रैल १९०७) को हैदराबाद दक्षिण में पं. जगन्नाथ मिश्र के यहां हुआ। पं. रामचन्द्र देहलवी के व्याख्यानों को सुन कर मिश्रजी की आर्यसमाज में रुचि उत्पन्न हुई। उन्होंने हैदराबाद के सत्याग्रह में भाग लिया और जेलयात्रा की। उन्होंने पंजाब हिन्दी सत्याग्रह और गोरक्षा-आन्दोलन में भी भाग लिया।

ले. का.—मिश्र पद्याञ्जलि भाग १ (काव्य ग्रंथ) (१९७८), शाश्वत सत्य सिद्धान्त दर्पण (१९८७).

व. प.—१२-१-३३, प्राचीन मल्ले पल्ली, हैदराबाद ५०००१.

पं. मुन्नालाल शर्मा

आर्यसमाज के प्रारम्भिक लेखकों और पत्रकारों में पं. मुन्नालाल शर्मा का नाम उल्लेखनीय है। ये मूलतः आगरा निवासी थे। राजपुताना मालवा रेलवे के अजमेर स्थित कार्यालय में ड्राफ्ट्समैन के पद पर कार्यरत रहे। १८८१ में जब अजमेर में आर्यसमाज की स्थापना हुई तो पं. मुन्नालाल को मंत्री नियुक्त किया गया। इस आर्यसमाज के मासिक मुखपत्र 'देशहितैषी' के आप सम्पादक भी रहे। आप स्वामी दयानन्द के विश्वासभाजन व्यक्तियों में प्रमुख थे तथा इनसे स्वामीजी का विस्तृत पत्र-व्यवहार भी हुआ था। जब भारत सरकार ने विलियम हण्टर की अध्यक्षता में शिक्षा आयोग का गठन किया तो शर्माजी ने हिन्दी भाषा और नागरी लिपि के समर्थन में एक स्मरण पत्र तैयार किया जो आर्यसमाज अजमेर की

ओर से उक्त आयोग को दिया गया। कालान्तर में पं. मुन्नालाल का स्थानान्तरण लाहौर हो गया। २० नवम्बर १८८९ को लाहौर में ही उनका निधन हो गया। जब देवसमाज के संस्थापक और आर्यसमाज के घोर विद्वेषी शिवनारायण अग्निहोत्री उर्फ सत्यानन्द अग्निहोत्री ने संन्यास लेने के पश्चात् अपनी एक शिष्या से विवाह कर लिया, तो पं. मुन्नालाल ने इस कार्य की तीखी समीक्षा करते हुए एक पुस्तक लिखी 'नवीनचन्द्री अग्निहोत्री का गृहस्थ संन्यास'। यह पुस्तक १९४५ वि. (१८८८) में लाहौर से प्रकाशित हुई थी।

डा. मुन्शीराम शर्मा 'सोम'

प्रसिद्ध विद्वान् तथा हिन्दी के मर्मज्ञ समालोचक डा. मुन्शीराम शर्मा का जन्म मार्गशीर्ष कृष्णा ५ सं. १९५८ वि. (३० नवम्बर १९०१) को आगरा जिले के ग्रोखरा नामक ग्राम में श्री तालेश्वरसिंह के यहाँ हुआ। आपने संस्कृत तथा हिन्दी में एम. ए. की परीक्षायें क्रमशः १९२६ तथा १९२९ में ससम्मान उत्तीर्ण कीं। तत्पश्चात् १९५१ में पी-एच. डी. तथा १९५६ में डी. लिट्. की उपाधियाँ आगरा विश्वविद्यालय से प्राप्त कीं। आप १९२६ से १९६२ तक डी. ए. वी. कालेज कानपुर में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे। अध्यापन से अवकाश ग्रहण कर लेने पर आपने वैदिक विषयों पर विशिष्ट अनुसंधान और लेखन किया। आपका निधन १२ जनवरी १९९० को हुआ।

ले. का.—१. आर्य धर्म (१९३७), २. प्रथमजा (स्फुट निबन्धों का संग्रह), ३. वैदिक संस्कृति और सभ्यता, ४. वैदिकी, ५. वैदिक विकास पद्धति, ६. वैदिक निबंधावली, ७. वेदार्थ चन्द्रिका, ८. संध्या चिन्तन (२०१५ वि.), ९. गायत्री महामंत्र, १०. पुरुष सूक्त (२०२१ वि.), ११. चतुर्वेद मीमांसा (२०३५), १२. जीवन दर्शन, १३. तत्त्व-दर्शन, डा. सोम ने निम्न काव्यकृतियों का प्रणयन किया है—१४. सोम सुधा, १५. संध्या संगीत, १६. यज्ञ संगीत, १७. श्रुति संगीतिका (२०१८ वि.), १८. भक्ति तरंगिणी वेद मंत्रों का काव्यानुवाद, १९. A Comparative Study or Vedic Hymns. डी. ए. वी. कालेज कानपुर के अन्तर्गत वैदिकशोध संस्थान की स्थापना १९६२ में हुई और डा. शर्मा इसके निदेशक के रूप में कार्य करते रहे।

मुनिदेव उपाध्याय

धार (मध्यप्रदेश) के प्रसिद्ध आर्यसमाजी विद्वान् पं. बुद्धदेव उपाध्याय के पुत्र मुनिदेव का जन्म २७ जनवरी १९३६ में हुआ। ये राजस्थान के आयुर्वेद विभाग में प्रधान चिकित्सक के पद पर कार्यरत हैं। आपने 'संस्कृत सुभाषित सौरभ' शीर्षक सुभाषित संग्रह सम्पादित किया है।

व. प.—डी. १/२ बनी पार्क जयपुर ३०२०१६.

पं. मुनीश्वरदेव सिद्धान्त शिरोमणि

पं. मुनीश्वरदेव ने दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर में प्रशिक्षण प्राप्त किया। तत्पश्चात् वे आर्यप्रतिनिधि-सभा पंजाब के उपदेशक के रूप में कार्यरत रहे।

ले. का.—१. ऋषि प्रवचनामृत, वैदिक धर्म की जय (१९१४), २. हमारा जीवन लक्ष्य (ईश्वर दर्शन) १९५५, ३. वेद में इतिहास नहीं १९५५, ४. श्रीमद्दयानन्दोपदेश-माला (२०१२ वि.), ५. हमारा सच्चा सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती, १९६१, ६. हमारा नित्य कर्म ७ महर्षि दयानन्द और मूर्तिपूजा।

स्वामी मुनीश्वरानन्द

स्वामी मुनीश्वरानन्द वैदिक कर्मकाण्ड के मर्मज्ञ विद्वान् हैं। आपका मुख्य निवास संन्यास आश्रम गाजियाबाद है।

ले. का.—नमस्ते प्रकाशिका (२०११ वि.), शंका-समाधान लेखमाला भाग—१

मास्टर मुरलीधर

देवसमाज के संस्थापक सत्यानन्द अग्निहोत्री की आक्षेपजनक पुस्तक 'पं. दयानन्द का संन्यास' का उत्तर मास्टरजी ने 'सत असत प्रकाश' लिख कर दिया। यह पुस्तक अहमदी प्रेस लाहौर से १८९० में छपी।

मुरारिदत्त शर्मा (एम. जे. शर्मा)

बिजनौर जिले के नगीना नामक कस्बे में इनका जन्म हुआ। आप १९०८ में देश भ्रमण के लिये निकले और तमिलनाडु में आर्यसमाज का प्रचार किया। स्वयं ने तमिल भाषा सीखी और आर्यसमाज विषयक अनेक ग्रन्थों का तमिल अनुवाद भी किया। १९३८ में नगीना में ही इनका निधन हो गया।

ले. का.—१. आर्यधर्म प्रकाश भाग–१, २. हवन-मंत्र (अर्थ सहित), ३. आर्य संध्या, ४. आर्योद्देश्य रत्न-माला (तमिल अनुवाद), ५. सत्यार्थप्रकाश का १३वां समुल्लास—तमिल अनुवाद, ६. पादरी साहब और भोंदू जाट (तमिल अनुवाद), ७. मूर्तिपूजा पर विचार।

पं. मुरारिलाल शर्मा

आर्यसमाज के महान् शास्त्रार्थी विद्वान् तथा अथक प्रचारक पं मुरारिलाल शर्मा का जन्म १८६२ में गाजिया-बाद में हुआ। इनके पिता का नाम पं. रामशरण था। सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन से शर्माजी आर्यसमाज की ओर आकृष्ट हुए। बुलन्दशहर जिले के सिकन्दराबाद कस्बे में जब गुरुकुल की स्थापना हुई तो पं. मुरारिलाल शर्मा को इसका मंत्री नियुक्त किया गया। शर्माजी ने अपने जीवन में पादरियों, मौलवियों और पण्डितों से सैकड़ों शास्त्रार्थ किये तथा सर्वत्र विजय पाई। उनका निधन २२ जनवरी १९२७ को दिल्ली में हुआ।

ले. का.—१. इस्लामी तौहीद का नमूना, २. मुसल-मानी के बानी की कहानी, ३. तहारत-मजहबे इस्लाम में पवित्रता की गड़बड़, ४. मजहबे इस्लाम में साइन्स की गड़बड़ (१९२५), ५. रूह की माहियत में उलेमाए इस्लाम की गड़बड़, ६. मजहबे इस्लाम में सभ्यता की गड़बड़ (१९२४), ७. फलसफा मुहम्मदी, ८. इस्लामी दर्पण, ९. इस्लाम की दुर्गति, १०. आइना ए इस्लाम, ११. इस्लामी ढोल की पोल, १२. इस्लामी तौहीद का नमूना, १३. इस्लामी मजहब की छानबीन, १४. कुरान की पोल (१९१४).

उपर्युक्त ग्रन्थ इस्लाम की समालोचना में लिखे गये थे।

अन्य ग्रन्थ—भजन पचासा-४ भाग, बारहखड़ी नं. १, गांधी बारहखड़ी, बारहमासा विधवा विलाप, इनकी अधि-कांश पुस्तकें मुरारि ट्रैक्ट सोसायटी के द्वारा छपीं।

वि. अ.—पं. मुरारिलाल शर्मा का जीवनचरित—ले. हरिशंकर शर्मा तथा श्रीराम शर्मा।

मुल्कराज भल्ला

मुल्कराज भल्ला के पिता लाला चूनीलाल बजवाड़ा (जिला होशियारपुर) के निवासी थे। महात्मा हंसराज के बड़े भाई लाला मुल्कराज डाक विभाग के कर्मचारी थे। जब हंसराज ने डी. ए. वी. कालेज में निःशुल्क सेवा करने का व्रत लिया तो मुल्कराज ने उन्हें अपने परिवार पालन के लिये स्ववेतन का आधा भाग प्रति मास देने का वचन दिया और इस प्रकार अपने भाई के व्रतपालन में सहायक बने। जब आर्यसमाज में मांस भक्षण के औचित्यानौचित्य को लेकर वाद-विवाद उत्पन्न हुआ तो लाला मुल्कराज मांस भक्षण के समर्थक बनकर आये। इन्होंने मांस भक्षण के समर्थन में कुछ पुस्तिकायें लिखी थीं।

ले. का.—१. क्या स्वामी दयानन्द मक्कार था? मूल पुस्तक उर्दू में लिखी गई थी। इसका हिन्दी अनुवाद रामविलास शर्मा ने किया (१८९७), २. गंगा की नींद, ३. महात्मा सुकरात की मृत्यु—पं. सूर्यप्रसाद मिश्र द्वारा उर्दू से अनूदित (१८९६), ४. श्री रामजी का दर्शन।

पं. मुसद्दीराम शर्मा, गौड

आपका जन्म मेरठ जिले के एक ग्राम में १९२७ वि. में हुआ। आपका अध्ययन स्वामी दयानन्द के सहपाठी पं. युगलकिशोर से हुआ। आप आर्यसमाज के अपने समय के प्रसिद्ध विद्वान् और उपदेशक थे।

ले. का.—यथार्थ शान्ति निरूपणम् (१९७२ वि.), सुभाषित रत्नमाला (१९६२ वि. १९०५), व्याख्यानपंचक (इनमें निम्न समाविष्ट हैं—वैदिक धर्म निरूपण, यथार्थ-शान्ति निरूपण, यथार्थ सुखाप्ति निरूपण, ब्रह्माप्त-निरूपण तथा संध्योपासन मीमांसा), मनुष्य जीवन की सफलता, सच्चा सुख, सुभाषित रत्न।

इनके द्वारा सत्यार्थप्रकाश का संस्कृत में अनुवाद किये जाने का भी उल्लेख मिलता है। यह प्रकाशित नहीं हुआ। व्याख्यान पंचक में संगृहीत संध्योपासन मीमांसा पृथक् पुस्तक रूप में १९०० में वैदिक यन्त्रालय अजमेर से छपी थी। मूर्तिपूजा विचार, श्री गौड ने संस्कृत कवि शिल्हण के शान्तिशतक का 'श्लोक रत्नमाला' शीर्षक से अनुवाद किया।

मूलचन्द गौतम

श्री गौतम का जन्म ७ नवम्बर १९१६ को नरेला (दिल्ली) में हुआ। १९३३ में आपने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा दिल्ली नगर निगम में कार्य आरम्भ किया। यहां से १९७५ में वे सेवा निवृत्त हुए। वे स्थानीय आर्यसमाज के विभिन्न पदों पर रहे हैं।

ले.का.—पुनर्जन्मसिद्धान्त, धर्म का स्वरूप, नासदीय-सूक्त आदि।

व. प.—१२२२ पापोसियान, नरेला (दिल्ली) ११००४०.

राय मूलराज एम. ए.

आर्यसमाज लाहौर के प्रथम प्रधान तथा परोपकारिणी सभा के प्रथम उपप्रधान राय मूलराज स्वामी दयानन्द के अत्यन्त निकट के तथा विश्वासपात्र व्यक्ति थे। यह दूसरी बात है कि उन्होंने स्वामीजी से प्राप्त इस विश्वास का सदुपयोग नहीं किया। राय मूलराज का जन्म २६ जुलाई १८५५ को लुधियाना में हुआ। उनके पिता लाला महेशदास कचहरी में पेशकार का कार्य करते थे। प्रारम्भिक अध्ययन के लिये लाला मूलराज को मिशन स्कूल लुधियाना में प्रविष्ट कराया गया। मैट्रिक की परीक्षा उन्होंने मिशन हाई स्कूल लाहौर से उत्तीर्ण की तथा आगे के अध्ययन के लिये गवर्नमेंट कालेज लाहौर में प्रवेश लिया। १८७२ में उन्होंने एम. ए. की परीक्षा पास की। अब उन्हें छात्रवृत्ति मिलने लगी थी। उन दिनों पंजाब विश्वविद्यालय की स्थापना नहीं हुई थी, अतः पंजाब के विद्यार्थियों को कलकत्ता विश्वविद्यालय की बी. ए. तथा एम. ए. परीक्षाओं में बैठना पड़ता था। राय मूलराज ने भी इसी विश्वविद्यालय से स्नातक (बी. ए.) तथा स्नातकोत्तर (एम. ए.) परीक्षायें ससम्मान उत्तीर्ण कीं। लार्ड नार्थब्रुक (तत्कालीन वायसराय) ने १८७५ के वसन्त में मूलराज को दिल्ली में आयोजित 'शिक्षा दरबार' में सम्मानित किया।

अब वे ओरियंटल कालेज लाहौर में अध्यापक बन गये तथा प्रेमचन्द रायचन्द छात्रवृत्ति लेकर वकालत की पढ़ाई करने लगे। १८७७ में स्वामी दयानन्द के लाहौर आगमन पर मूलराज को उनके दर्शन करने तथा उपदेश श्रवण करने का अवसर मिला। जब आर्यसमाज लाहौर की स्थापना हुई तो राय मूलराज उसके प्रथम प्रधान निर्वाचित हुए। वे प्रायः कहते थे कि स्वामी दयानन्द ने आर्यसमाज के दस नियमों का निर्धारण करने में उनसे परामर्श लिया था, किन्तु स्वामी श्रद्धानन्द ने इसका प्रतिवाद करते हुए कहा था कि राय मूलराज को दस नियमों में निहित गूढ अभिप्राय को समझने की भी योग्यता नहीं थी। १९७९ में वे आर्यसमाज लाहौर के दूसरी बार अध्यक्ष (प्रधान) चुने गये। स्वामी दयानन्द ने अपने ग्रन्थ, वस्त्र, यंत्रालय आदि की व्यवस्था हेतु निर्मित परोपकारिणी सभा में उपप्रधान का पद राय मूलराज को प्रदान किया।

अध्ययन समाप्त करने के पश्चात् राय मूलराज राजकीय सेवा में प्रविष्ट हुए। एक्स्ट्रा एसिस्टेण्ट कमिश्नर के पद पर १८८० में उनकी प्रथम नियुक्ति हुई। जनवरी १९०७ को उन्हें ब्रिटिश सरकार से 'रायबहादुर' का पद प्राप्त हुआ। ३२ वर्षों के दीर्घकालीन सेवा कार्य को समाप्त कर १६ अक्टूबर १९१२ को उन्होंने जिला एवं सत्र न्यायाधीश के पद से अवकाश ग्रहण किया।

राय मूलराज आर्यसमाज के उस वर्ग के नेता थे जो मांसाहार का पोषक था। वे यह भी मानते थे कि आर्यसमाज का सभासद बनने के लिये दस नियमों में आस्था प्रकट करना ही पर्याप्त है, स्वामी दयानन्द के सभी विचारों और मन्तव्यों को यथावत् स्वीकार करना आवश्यक नहीं है। अपने इन्हीं विचारों को वे यदाकदा अपने लेखों और भाषणों में व्यक्त भी करते रहे। १९४५ में राय मूलराज का निधन हुआ।

ले. का.—A Lecture on the AryaSamaj (1894)—यह पुस्तक आर्यसमाज लाहौर के वार्षिकोत्सव पर दिये गये एक व्याख्यान का प्रकाशित रूप है। 2. The AryaSamaj and Swami Dayanand (1902), 3. A memo on the Foundation of the AryaSamaj (1933), 4. AryaSamaj and Dogmas, 5. The Veda and the AryaSamaj (1933), 6. दशप्रश्नी की इश्यात की असल हकीकत (जनवरी १९३४)।

वि. अ.—Beginning of Punjabi Nationalism, (Autobiography or R. B. MulRaj) 1975.

स्वामी मेधानन्द (गणपति आर्योपदेशक)

ये दिल्ली निवासी थे। इन्होंने संन्यास लेकर स्वामी मेधानन्द का नाम धारण किया।

ले. का.—१. उन्नति माला-सं. १ (१९९४ वि.), २. चारफल (पुरुषार्थ चतुष्टय विषयक स्वामी दयानन्द के वाक्यों का संग्रह), ३. विधवा विवाह आपद्धर्म है (१९९५ वि.)।

मेधार्थी स्वामी (ईश्वरदत्त विद्यालंकार)

मेधार्थीजी का जन्म आषाढ़ शुक्ला १३ सं. १९५७ (२५ जून १९००) को कानपुर में डा. फकीरेराम के यहां हुआ। गुरुकुल कांगड़ी में प्रविष्ट होकर १९७८ वि. (१९२२) में इन्होंने 'विद्यालंकार' की उपाधि प्राप्त की। इन्होंने वैद्यक का अध्ययन किया तथा कुछ काल तक चिकित्सा करते रहे। मेधार्थीजी दयानन्द की भांति बुद्ध और कबीर की शिक्षाओं से भी प्रभावित थे। इन्होंने संन्यास लेकर अपना नाम मेधार्थी स्वामी रक्खा। इनका निधन २३ मार्च १९७१ को हुआ।

ले. का.—आर्यकुमार स्मृति-मनुस्मृति के चुने हुए १०० श्लोकों की टीका (१९८३ वि.), आर्यकुमार गीता-मेधार्थी मणिमाला-१ (१९९० वि.), आर्यकुमार श्रुति (आर्य मन्तव्य दर्पण) स्वामी दयानन्द रचित आर्योद्देश्य-रत्नमाला की व्याख्या (१९८८ वि.), स्वस्तिवाचनादि सुभाष्यम, श्रद्धापुरी व श्रद्धानन्द, ऋग्वेदीय द्विशतकम्-ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के १९ सूक्तों का संग्रह (१९६३), श्वेताश्वतरशतक (१९६२), संक्षिप्त नीतिशतक भर्तृहरि कृत, वर्ण व्यवस्था का भण्डाफोड़, महर्षि हवन मंत्र, ईशोपनिषद् (पद्यात्मक)।

महाकवि मेधाव्रताचार्य

संस्कृत भाषा में दयानन्द दिग्विजय तथा अन्य अनेक उत्कृष्ट काव्यों की रचना करने वाले महाकवि मेधाव्रत का जन्म नासिक जिले के येवला नामक कस्बे में ७ जनवरी १८९३ में श्री जगजीवन नामक एक गृहस्थ के यहां हुआ। उनकी माता का नाम सरस्वती देवी था। मेधाव्रत के अध्ययन का आरम्भ उत्तरप्रदेश के सिकन्दरावाद गुरुकुल में हुआ। कालान्तर में यही गुरुकुल पहले फर्रुखाबाद और उसके पश्चात् वृन्दावन में स्थानान्तरित हुआ। संस्कृत भाषा और साहित्य पर मेधाव्रतजी का असाधारण अधिकार था। अतः वे अपने छात्र जीवन में ही संस्कृत में सुन्दर काव्य रचना करने लगे थे। प्रयाग से प्रकाशित होने वाली संस्कृत की पत्रिका 'शारदा' में आपकी कृतियाँ प्रकाशित होती रहीं। गुरुकुल की विद्यापरिषद् ने आपकी दो कृतियाँ—'प्रकृति सौन्दर्यम्' नाटक तथा 'ब्रह्मचर्य शतकम्' को उसी समय प्रकाशित किया जब वह अभी गुरुकुलीय विद्यार्थी ही थे। स्वास्थ्य विगड़ जाने के कारण मेधाव्रत को गुरुकुल की शिक्षा को अधूरा छोड़ कर अपने ग्राम लौटना पड़ा।

स्वास्थ्य में सुधार होने के अनन्तर मेधाव्रत गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट हुए। इसी समय उन्होंने संस्कृत में 'कुमुदिनीचन्द्र' जैसा उत्कृष्ट उपन्यास लिखकर गद्य पर अपने असाधारण अधिकार को सिद्ध किया। मेधाव्रत को कोल्हापुर स्थित वैदिक विद्यालय में मुख्याध्यापक नियुक्त किया गया। वे इस कार्य को सफलतापूर्वक कर रहे थे कि उन्हें इन्फ्लुऐंजा का शिकार होना पड़ा। अतः वे कोल्हापुर छोड़कर येवला चले गये। जब असहयोग आंदोलन के दौरान स्थान-स्थान पर नेशनल कालेजों की स्थापना हुई तो पं. मेधाव्रत को सूरत नेशनल कालेज में हिन्दी तथा संस्कृत के प्राध्यापक पद पर नियुक्त किया

गया। कुछ वर्ष यहां सफलतापूर्वक शिक्षण करने के उपरान्त पं. मेधाव्रत कन्या गुरुकुल ईटोला में आचार्य पद पर १९२६ में नियुक्त हुए। जब १९२९ में यह गुरुकुल बड़ौदा ले आया गया और आर्य कन्या महाविद्यालय के रूप में संचालित होने लगा तो आचार्य मेधाव्रत कन्या-शिक्षण के इस प्रमुख- केन्द्र के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किये गये। १९४० पर्यन्त वे यहां रहे। तत्पश्चात् स्वतन्त्र रूप से साहित्य और काव्य रचना में ही अपना समय लगाने लगे। जीवन के अन्तिम वर्षों में मेधाव्रतजी गुरुकुल झज्जर तथा गुरुकुल चित्तौड़गढ के छात्रों को विभिन्न शास्त्रों की शिक्षा दिया करते थे। २१ नवम्बर १९६४ को उनका चित्तौड़ गुरुकुल में निधन हो गया।

ले. का.—संस्कृत काव्य—दयानन्द दिग्विजय महाकाव्य पूर्वार्द्ध-१२ सर्गों में समाप्त महाकाव्य का यह प्रारम्भिक अंश १९९४ वि. (१९३८) में भाणा भाई वैद्य ग्रंथमाला प्रथम पुष्प के रूप में प्रकाशित हुआ। संस्कृत महाकाव्य का हिन्दी अनुवाद श्रुतबन्धु शास्त्री ने किया था।

दयानन्द दिग्विजय महाकाव्य उत्तरार्द्ध—१५ सर्गों में समाप्त महाकाव्य का यह उत्तरार्द्ध कवि के अनुज सत्यव्रत तीर्थ द्वारा हिन्दी में अनूदित हुआ। (२००३ वि., १९४७)।

दयानन्द लहरी—गंगालहरी की शैली में लिखा गया काव्य, दयानन्द जन्म शताब्दी के अवसर पर १९२५ में प्रकाशित, वेदव्रत भाष्याचार्य लिखित हिन्दी टीका सहित विश्वम्भर वैदिक पुस्तकालय गुरुकुल झज्जर द्वारा २०१२ वि. में प्रकाशित, ब्रह्मर्षि विरजानन्द चरितम्-वेदव्रत भाष्याचार्य लिखित टीका सहित (२०१२ वि.)।

महात्ममहिममणिमंजूषा—महात्मा नारायण स्वामी के चरित को लेकर लिखा गया (२०१४ वि.), ब्रह्मचर्य शतक-विरजानन्द वेद वागीश ने इस काव्य की अन्वय-पूर्वक हिन्दी टीका लिखी है (२०१० वि.)। गुरुकुल शतक—गुरुकुल शतक की रचना महाकवि ने चित्तौड़गढ गुरुकुल में रहते समय की थी। वेदव्रत शास्त्री की हिन्दी टीका के साथ इसका प्रकाशन २०१७ वि. में। ब्रह्मचर्य महत्त्वम्—अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य सूक्त के २६ मंत्रों की यह छंदोबद्ध व्याख्या है। इसके हिन्दी टीकाकार स्वामी वेदानन्द वेदवागीश थे (२०१२ वि.)। ईशोपनिषत्काव्यम्-ईशोपनिषद् के मंत्रों का यह संस्कृत काव्यानुवाद है। दिव्यानन्द लहरी—लहरी शैली में लिखा गया यह काव्य सत्यव्रत शास्त्री लिखित शर्मदा टीका सहित गुरुकुल चित्तौड़गढ से २०१५ वि. में प्रकाशित।

मेधाव्रताचार्य के अन्य ग्रन्थ—कुमुदिनीचन्द्र—उपन्यास की शैली पर लिखा गया यह संस्कृत का कथा ग्रन्थ प्रथम बार १९७६ वि. में प्रकाशित हुआ। शुद्धिगंगावतार—संस्कृत उपन्यास अपूर्ण व अप्रकाशित। प्रकृति सौन्दर्यम्—(नाटक) संस्कृत के इस प्रकृति सौन्दर्य वर्णन परक नाटक की रचना मेधाव्रत ने छात्रकाल में की थी। कालान्तर में पं. श्रुतबंधु शास्त्री लिखित भावसंदीपिनी भाषा टीका सहित यह नाटक श्री सत्यव्रत द्वारा १९३४ में प्रकाशित हुआ। संस्कृत सुधा—संस्कृत शिक्षा के लिये पाठ्यग्रन्थ के रूप में संकलित। छन्दःशास्त्रम्—पिंगलाचार्य रचित छंदशास्त्र का व्याख्या परक ग्रन्थ (२०२४ वि.), काव्यालंकार सूत्र—वामनाचार्य के काव्यालंकार सूत्रों पर मेधाव्रत ने व्रतिमंगला नामक संस्कृत टीका लिखी। (२०१८ वि.), चारुचरितामृतम्—आर्यसमाज के अनेक महापुरुषों का संस्कृत गद्य में जीवनचरित। स्फुट ग्रन्थ—गिरिराज-गौरव—हिमालय पर्वत की महिमा का प्रकाशक हिन्दी काव्य १९८९ वि., दिव्य संगीतामृत—संगीत विषयक ग्रन्थ।

मेलाराम बर्क

श्री बर्क का जन्म २ नवम्बर १८९८ को डिंगा (पाकिस्तान) में हुआ। इन्होंने डी. ए. वी. कालेज लाहौर से बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। देश विभाजन के पश्चात् ये करनाल आ गये और यहां रहकर डी. ए. वी. संस्थाओं की स्थापना एवं विकास में अपना योगदान दिया। श्री बर्क उर्दू के अच्छे कवि थे। आपका निधन ८ मई १९९० को हो गया।

ले. का.—पं. लेखराम का जीवनचरित (उर्दू), कुर्बानी मुजस्सम-महात्मा हंसराज का मुख्तसर जीवन-चरित (१९३३)।

श्री बर्क ने करनाल से आर्य केसरी नामक उर्दू-हिन्दी का एक मासिक पत्र निकाला। इसके अनेक उपयोगी विशेषांक छपे।

मेलाराम वेदी

आर्यसमाज देवनगर दिल्ली के भूतपूर्व प्रधान मेलाराम वेदी स्वाध्यायशील तथा कर्मकाण्डी महानुभाव हैं।

ले. का.—ब्रह्मप्रसाद, (२०२० वि.), वैदिक मुक्ति-पथ, सागवेदप्रकाश (सामवेद के मंत्रों का सरल हिन्दी भावार्थ), यजुर्वेद प्रकाश (यजुर्वेद के मंत्रों का सरल हिन्दी भावार्थ), सत्यार्थ सुमन—सत्यार्थप्रकाश में उद्धृत वेद मंत्रों का पदच्छेद, पदार्थ एवं भावार्थ।

न्यायमूर्ति मेहरचन्द महाजन

विख्यात न्यायाधीश तथा प्रशासक श्री महाजन का जन्म २१ दिसम्बर १८८९ को हिमाचल प्रदेश के टीका नगरोटा नामक स्थान में हुआ। गुरदासपुर से इन्होंने वकालत आरम्भ की और आगे चल कर लाहौर के प्रतिष्ठित कानून व्यवसायी बने। कालान्तर में इन्हें लाहौर हाई कोर्ट का न्यायाधीश बनाया गया। ये काश्मीर के प्रधानमन्त्री पद पर भी रहे तथा स्वतन्त्र भारत के सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भी रहे। डी. ए. वी. कालेज प्रबन्ध समिति के अध्यक्ष पद पर भी रहने का अवसर श्री महाजन को तब मिला जब वे न्यायिक सेवा से मुक्त हो गये। टंकारा में महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट की स्थापना भी इनके पुरुषार्थ से ही हुई और ये ही इस ट्रस्ट के प्रथम अध्यक्ष भी रहे। १९६७ में इनका निधन हो गया। Looking Back शीर्षक आपकी अंग्रेजी में लिखी आत्मकथा आर्यसमाज के तत्कालीन संस्मरणों से परिपूर्ण है।

महाशय मेहरसिंह यमतोल

उत्तर पश्चिमी रेलवे के वरिष्ठ लेखा परीक्षक थे। स्वाध्यायशील होने के साथ-साथ आप अच्छे लेखक भी थे।

ले. का.—१. मेहर स्वाध्याय सार—२ भाग, २. सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी, ३. संस्कारविधि प्रश्नोत्तरी, ४. मानव जीवन के उद्देश्य, ५. सिखपंथ तथा वैदिक-धर्म में एकता (१९७०).

श्रीमती मृदुलकीर्ति

सामवेद की पद्यानुवादिका श्रीमती मृदुलकीर्ति का जन्म ७ अक्टूबर १९५३ की पीलीभीत जिले के पूरनपुर कस्बे में डा. सुरेन्द्रनाथ के यहां हुआ। इनकी शिक्षा एम. ए. तक हुई। 'वेदों में राजनैतिक व्यवस्था' विषय लेकर इन्होंने वैदिक शोध कार्य भी किया है। श्रीमती मृदुलकीर्ति ने सम्पूर्ण सामवेद का काव्यानुवाद किया जो जन ज्ञान के एक विशेषांक में प्रकाशित हो चुका है।

ब. प.—ह्वाइट हाउस, निगार सिनेमा के पास, मेरठ।

मोक्षानन्द सरस्वती

श्री रामनारायण पाण्डेय (संन्यासाश्रम में मोक्षानन्द सरस्वती) का जन्म उत्तरप्रदेश के जिला बांदा में पं. परमानन्द पाण्डेय के यहां १७ मार्च १९४१ को हुआ। १९६४ में आगरा विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र में अपने एम. ए. किया और एक वर्ष पश्चात् १९६५ में संन्यास आश्रम की दीक्षा ले ली। आपने मथुरा जिले के बरमाई नामक स्थान में वैदिक संन्यास आश्रम की स्थापना की है।

ले. का.—राष्ट्रद्रोही कौन ?, इतिहास के कलंकित पृष्ठ, भारत में ईसा के एजेंट, भारतीय कम्युनिस्टों के विदेशी गुरु, इस्लाम का आधार, हिन्दुत्व, राष्ट्रभाषा हिन्दी पर विदेशी षड्यंत्र, वैदिक संस्कृति गौरव, ईश्वर एवं विज्ञान, वैदिक राष्ट्रवाद एवं भारतीयता का प्रश्न, भारतीय राष्ट्रीयता की हत्या।

ब. प.—डा. बाजना (मथुरा) २८१२०१.

मोतीलाल भट्टाचार्य

आप सत्यार्थप्रकाश के प्रथम बंगला अनुवादक थे। यह अनुवाद परोपकारिणी सभा ने तैयार करवाया और १९०१ में इसे वैदिक यन्त्रालय अजमेर से प्रकाशित किया गया।

श्री मोहनलाल मोहित

मॉरिशस के विख्यात आर्य नेता मोहनलाल मोहित का जन्म उसी देश के लावेनिर ग्राम में २२ सितम्बर १९०२ को श्री रामावतार के यहां हुआ। आपकी वैदिक धर्म में आरम्भ से ही रुचि रही और वे मॉरिशस देश में आर्यसमाज आन्दोलन के प्रमुख सूत्रधार रहे। मॉरिशस के आर्य पत्रों में उनके लेख प्रमुखता से प्रकाशित होते रहे और १९६२ से वे आर्योदय पाक्षिक का सम्पादन कर रहे हैं। अपने देश की आर्य सभा के प्रधान हैं। १९७३ में मॉरिशस में सम्पन्न आर्य महा सम्मेलन के वे स्वागताध्यक्ष थे। उन्होंने एक बहुत बड़ी धनराशि देकर अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद पीठ की स्थापना की है जो समय समय पर वैदिक गोष्ठियों का आयोजन करने के साथ-साथ एक उच्च स्तरीय शोधपत्रिका भी प्रकाशित करती है।

ले. का.—आर्य सभा मारिशस का इतिहास (१९७३).

व. प.—लावेनिर सेंप्येर (मॉरिशस)।

प. मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या

स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा के प्रथम उपमंत्री तथा उनके विश्वासभाजन पं. मोहनलाल विष्णुलाल पण्ड्या का जन्म मार्गशीर्ष कृष्णा ३ सं. १९०७ वि. (१८५०) को मथुरा में हुआ। उनके पूर्वज गुजरात के निवासी थे। उनके पिता श्री विष्णुलाल पण्ड्या मथुरा के सेठ लक्ष्मीचन्द के यहां मुनीमी का कार्य करते थे। सात वर्ष की अवस्था में उनका यज्ञोपवीत सम्पन्न हुआ और इन्हें हिन्दी तथा संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा मिली। पुन: वे आगरे के सेंट जॉन्स कालेज में पढ़े। बनारस की क्वीन्स कालेज तथा जयनारायण कालेज में भी उनकी शिक्षा हुई। काशी में रहते समय हिन्दी के प्रख्यात लेखक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र से आपका परिचय हुआ जो धीरे-धीरे घनिष्ठ होता गया। १८७७ में ये उदयपुर (मेवाड़) राज्य की सेवा में आये। यहां वे स्टेट कौंसिल के सदस्य तथा मंत्री भी रहे। १३ वर्षों तक राज्य की सेवा के पश्चात् ये प्रतापगढ़ राज्य में दीवान पद नियुक्त हुए।

स्वामी दयानन्द जब चित्तौड़गढ़ और उदयपुर आये तब पण्ड्या जी से उनका परिचय हुआ। धीरे-धीरे ये स्वामीजी के निकटवर्ती विश्वसनीय व्यक्ति बन गये। अपनी स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का गठन करते समय स्वामीजी ने इन्हें सभा का उपमंत्री तथा सदस्य मनोनीत किया। जब ३० अक्टूबर १८८३ को स्वामी दयानन्द का अजमेर में निधन हो गया तो उनके वस्त्र, पुस्तक, द्रव्य आदि का अधिकार पण्ड्याजी ने ही परोपकारिणी सभा के उपमंत्री के रूप में ग्रहण किया था। १८८५ में वे सभा के मंत्री बनाये गये क्योंकि उनके पूर्ववर्ती मंत्री श्री कविराजा श्यामलदास ने अपने नेत्र रोग के कारण इस पद पर रहने में असमर्थता व्यक्त की थी। फलत: प्रारम्भिक वर्षों में पण्ड्याजी ही परोपकारिणी सभा तथा उसके द्वारा संचालित वैदिक यंत्रालय के कार्यों की देख-रेख करते थे। कालान्तर में पण्ड्याजी ने स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों के प्रति उपेक्षा सी धारण कर ली और वे आर्यसमाज से भी उपराम हो गये। १९१२ में उनका निधन हुआ।

ले.का.—१. आर्यावर्तान्तर्गत आर्यसमाजों के दस नियम-The Ten Commandments of the Arya Samaj of Aryavarta with English Transtation and Arya Bhasha Commentary. आर्य सिद्धान्त मार्तण्ड ग्रन्थमाला तृतीय भाग (१८९७), २. आर्य सिद्धान्त-मार्तण्ड—भाग १ ओंकार व्याख्यान (१८९०), ३. आर्य-सिद्धान्त मार्तण्ड—भाग २ आर्यसमाज का परिचय (१८९२), ४. आर्य सिद्धान्त मार्तण्ड—भाग ४ (स्वामी दयानन्द के स्वमन्तव्यामन्तव्यों की व्याख्या), ५. आर्यों के संवत् की गणना, ६. आर्य शिक्षा ४ भाग, ७. स्वामीजी श्री १०८ श्री दयानन्दजी सरस्वती का गुरुत्व या आचार्यत्व (१९०१)।

पं. यतीन्द्रनाथ मल्लिक

चौधरीजी हावड़ा जिले के ग्राम आन्दुल के निवासी थे। आप आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल-आसाम के महोपदेशक थे। उन्होंने सांख्य दर्शन का बंगला में भाष्य लिखा जो उनकी मृत्यु के उपरान्त इनके शिष्य-द्वय पं. मनोरंजन काव्यतीर्थ तथा पं. प्रभाषचन्द्र विद्याविनोद ने प्रकाशित किया।

यदुवंशसहाय वानप्रस्थ

श्री वानप्रस्थ का जन्म मार्गशीर्ष शुक्ला १२ सं. १९६२ वि. (नवम्बर १९०५) को हरदोई जिले के गोपामऊ नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम मुन्शी रामसहाय तथा माता का सुखदेई था। १९२४ में इन्होंने विक्टोरिया हाई स्कूल, आगरा से मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की। राजकीय सेवा में वर्षों तक कार्य करने के पश्चात् १९६२ की पहली जनवरी को आपने सेवा से अवकाश लिया। आर्यसमाज में इनका प्रवेश १९२४ में ही हो गया था। १९६३ में वानप्रस्थ की दीक्षा लेकर ये विरक्त आश्रम ज्वालापुर में रहने लगे तथा अब भी वहां रह रहे हैं।

ले. का.—महर्षि दयानन्द—भावनाप्रधान शैली में लिखा गया जीवनचरित (१९७२), २. महान् हिन्दू जाति-विनाश के कगार पर।

व. प.—६७१, लालबाड़ा, फ़ैज़ाबाद (उ. प्र.)।

यज्ञदत्त त्यागी

श्री त्यागी ने स्वामी दयानन्द के जीवन चरित को काव्यबद्ध करते हुए २९७ छन्दों में दयानन्द काव्य की रचना की। दिसम्बर १९३७ में प्रकाशित इस काव्य की भूमिका महात्मा नारायण स्वामी ने लिखी थी।

यज्ञप्रकाश दास

उड़ीसा के प्रसिद्ध आर्य नेता श्री प्रियव्रत दास के पुत्र श्री यज्ञप्रकाश दास का जन्म ३ फरवरी १९६१ को हुआ। आपने मैकेनिकल इंजीनियरिंग में स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त की है। वर्तमान में श्री दास राउरकेला (उड़ीसा) के इस्पात कारखाने में कार्यरत हैं। आपका लेखन उड़िया भाषा में हुआ।

ले. का.—उड़िया भाषा में स्वामी दयानन्द का जीवनचरित (१९७७), आर्यमाने भारतरे विदेशी नुहन्ति, भारतरे मूर्तिपूजार उत्पत्ति तथा परिणाम।

व. प.—१३९ शहीदनगर, भुवनेश्वर (उड़ीसा)।

डा. यज्ञवीर

व्याकरण के प्रकाण्ड विद्वान् डा. यज्ञवीर का जन्म १९४९ में सोनीपत (हरयाणा) जिले के रोहणा ग्राम में एक कृषक परिवार में हुआ। १६ वर्ष की अल्पायु में आपने व्याकरणाचार्य की परीक्षा गुरुकुल झज्जर में रह कर उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् पंजाब विश्वविद्यालय में १९७३ में संस्कृत में एम. ए., १९७७ में पी-एच. डी. तथा गढ़वाल विश्वविद्यालय से १९८९ में डी. लिट्. की उपाधियाँ ग्रहण कीं। महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में अनेक वर्षों तक संस्कृत प्रवक्ता एवं प्रवाचक रहने के पश्चात् आप १९९० में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में दयानन्द प्रोफ़ेसर के पद पर नियुक्त हुए हैं। आपने अखिल भारतीय प्राच्य विद्या परिषद् के विभिन्न अधिवेशनों में अनेक शोधनिबंधों का पाठ किया है।

ले. का.—The Language of the Atharva-Veda, संस्कृत व्याकरण की रूपरेखा, Vision and Design in Panini (डी. लिट्. का शोधप्रबंध)।

पं. यमुनादत्त षट्शास्त्री

शाहपुरा राज्य के राजगुरु पं. यमुनादत्त का जन्म ज्येष्ठ शुक्ला ८ सं. १९१९ वि. को शाहपुरा (जिला भीलवाड़ा) में पं. रामनारायण शास्त्री के यहां हुआ। इनका शास्त्राध्ययन काशी में हुआ जहां आपने पं. हरिनाथ (स्वामी मनीष्यानन्द-स्वामी दर्शनानन्द के शास्त्र गुरु) से वैदिक दर्शनों का अध्ययन कर षट्शास्त्री की उपाधि प्राप्त की। तदनन्तर आपको शाहपुरा राज्य की प्रशासनिक सेवा में ले लिया गया जहां से आपने १९९२ वि. में अवकाश ग्रहण किया। १९९० में आपने शाहपुरा नरेश

राजाधिराज उम्मेदसिंह को शास्त्र विधि से आहिताग्नि बनाकर अग्न्याधान की दीक्षा दी। चैत्र शुक्ला ५ वि. सं. २००० को इनका निधन हो गया।

ले. का.—१९५५ वि. में पं. यमुनादत्त का करौली राज्य के राजपण्डित चन्द्रशेखर शर्मा से वेद संज्ञा विचार (वेद निर्णय) विषय पर लेखबद्ध शास्त्रार्थ संस्कृत पत्रों के माध्यम से हुआ। इस शास्त्रार्थ को राजाधिराज नाहरसिंह ने १९५६ वि. में प्रकाशित किया था। वीर तरंग-रंग—शाहपुरा राज्य के इतिहास तथा वहां के शासकों का काव्यबद्ध वर्णन इस ग्रन्थ में किया गया है। प्रसंगोपात्त स्वामी दयानन्द के शाहपुरा आगमन विषयक संदर्भ भी कतिपय श्लोकों में निबद्ध हुआ है। इसके दो संस्करण क्रमशः १९७६ वि. तथा १९८१ वि. में छपे।

यशपाल आर्य

आर्यसमाज देहरादून के विख्यात कार्यकर्त्ता यशपाल आर्य का जन्म १९२४ में हिमाचल प्रदेश के सोलन नगर में लाला कालूराम के यहां हुआ। उनका आरम्भिक अध्ययन डी. ए. वी. कालेज लाहौर में हुआ। उन्होंने देहरादून में जड़ी बूटियों का व्यवसाय आरम्भ किया जो आर्य वस्तु भण्डार फर्म के रूप में सफलतापूर्वक चल रहा है। वे आर्यसमाज देहरादून के प्रधान तथा आर्य-प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के कोषाध्यक्ष हैं।

ले. का.—आर्यसमाज देहरादून की स्मारिका (स्वामी दयानन्द के देहरादून आगमन का प्रामाणिक वृत्तान्त इसमें संकलित किया गया है), प्रश्नोत्तरी (सत्यार्थप्रकाश के ७ व ८ वें समुल्लास की व्याख्या), महर्षि दयानन्द की मान्यताएं।

व. प.—४६, आर्यवस्तुभण्डार, डिस्पेंसरी रोड़, देहरादून।

श्री यशपाल आर्य बंधु

आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता, लेखक, विचारक तथा चिन्तक श्री यशपाल का जन्म १४ सितम्बर १९३१ को पश्चिमी पाकिस्तान के झंग नामक नगर में हुआ। इनके पिता का नाम श्री कर्मवीर साधक था जो स्वयं निष्ठावान् आर्यसमाजी थे। इनकी स्कूली शिक्षा तो मैट्रिक तक ही हुई किन्तु स्वाध्याय से श्री यशपाल ने विस्तृत ज्ञानोपार्जन कर लिया। आप मुरादाबाद में उत्तरी रेलवे के कार्यालय में प्रधान टंकक (टाइपिस्ट) के पद पर कार्य करते रहे। अब सेवामुक्त हो चुके हैं।

ले. का.—१. मृत्यु और उसका भय (१९७४), २. कर्मफल प्रश्नोत्तरी, ३. प्रार्थना विज्ञान, ४. आर्यसमाज ही क्यों ?, ५. मुझे आर्यसमाज क्यों प्रिय है ? (१९७७), ६. मानव निर्माण और आर्यसमाज (१९७७), ७. विश्व को आर्यसमाज की देन (१९७५), ८. सत्यार्थप्रकाश दिग्दर्शन (१९७९), ९. क्रान्तिदूत दयानन्द (१९८१), १०. ऋषि का जादू (१९८१), ११. वेदों वाला ऋषि, १२. जीवन-पथ (१९८१), १३. मृत्यु और उस पर विजय (१९८२), १४. सुमन संचय, १५. आर्यसमाज क्या चाहता है ? (१९८६), १६. स्वर्ग-नरक कहां है ?, १७. प्रखर राष्ट्रवाद के आदि प्रवक्ता (१९८३), १८. महामानव दयानन्द (१९८३), १९. ओंकार महिमा, २०. विश्व आर्य कैसे बने ? (१९८४), २१. धर्म और विज्ञान (१९८५), २२. पाप पुण्य मीमांसा (१९९६), २३. सदाचार सुधा, २४. विवाह की मर्यादा, २५. हवन यज्ञ की वैज्ञानिकता (१९८४), २६. धर्म निरपेक्षता और राष्ट्रवाद (१९८७), २७. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य पर आर्यसमाज का प्रभाव (१९८८), २८. महर्षि दयानन्द और यज्ञ (१९८८), २९. जीवन मृत्यु-मीमांसा (१९८९), राष्ट्र पुरुष दयानन्द (१९८८) ३१. प्रभु भक्ति का वैदिक रूप (१९८९), ३२. चेतावनी (१९८९), ३३. विश्व को आर्य कैसे बनावें ?, ३४. स्वर्ग-नरक कहाँ ? (सत्यार्थप्रकाश पर आधारित), ३५. प्रभु-दर्शन (१९८७)।

व. प.—आर्य निवास, चन्द्रनगर मुरादाबाद (उ.प्र.)

पं. यशपाल सिद्धान्तालंकार

आचार्य रामदेव के पुत्र श्री यशपाल का जन्म होशियारपुर जिले के बजवाड़ा ग्राम में १९०२ में हुआ। इनकी शिक्षा दीक्षा गुरुकुल कांगड़ी में हुई जहां से आपने १९७९ वि. (१९२३) में सिद्धान्तालंकार की उपाधि प्राप्त की।

आपका समस्त जीवन ही आर्यसमाज के प्रचार के लिये समर्पित रहा। धर्म प्रचारार्थ आप बर्मा भी गये। आप आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वेद प्रचार के अधिष्ठाता, कन्या गुरुकुल देहरादून के प्रबन्धक तथा गुरुकुल कांगड़ी की विद्या सभा के सदस्य भी रहे। १ जून १९६३ को आपका निधन हो गया।

ले. का.—वैदिक सिद्धान्त दर्पण (१९३३), शक्ति-रहस्य अर्थात् मांस भोजन मीमांसा (१९३३)।

यशपाल सुधांशु

श्री सुधांशु का जन्म २ मई १९५५ को सहारनपुर जिले के हरिपुर ग्राम में हुआ। आपका अध्ययन दयानन्द—ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में हुआ। आप आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के अन्तरंग सभासद हैं तथा आर्य प्रतिनिधि-सभा दिल्ली के मुख पत्र आर्य-संदेश के सम्पादक रह चुके हैं। कुछ काल तक आपने सार्वदेशिक साप्ताहिक का भी सम्पादन किया था।

व. प.—आर्यसमाज, दीवान हाल, दिल्ली ११०००६

यशवन्तसिंह वर्मा टोहानवी

सरल भाषा में लिखे गये नाटकों के माध्यम से वैदिक सिद्धान्तों तथा प्राचीन इतिहास के गौरवपूर्ण प्रसंगों को जन-समाज के समक्ष प्रस्तुत करने वाले यशवन्तसिंह टोहानवी सच्चे अर्थों में लोक साहित्यकार थे। इनका जन्म टोहाना (जिला हिसार), में १८८१ में सरदार कपूरसिंह के यहां हुआ। यद्यपि इनकी शिक्षा साधारण उर्दू, हिन्दी तक ही सीमित थी, किन्तु सहज प्रतिभा के धनी होने के कारण नाटक रचना करने और इसी माध्यम से आर्यसमाज के विचारों का प्रचार करने में इन्हें पर्याप्त सफलता मिली। संगीत तथा सितार-वादन में इनकी विशेष रुचि थी। अपने अग्रज जयसिंह वर्मा तथा टोहाना निवासी श्री देवी-दयाल गुप्त के सहयोग से इन्होंने इस कस्बे में आर्यसमाज की स्थापना की। समय समय पर आर्यसमाज के उत्सवों में गीत प्रस्तुत करने तथा संगीत के द्वारा धर्म प्रचार के कारण वर्माजी को पद्यात्मक नाटक लिखने की प्रेरणा मिली। इनका निधन १९५७ में हुआ।

ले. का.—'आर्य भजन दीपिका' तथा 'आर्य भजन—सागर' इनकी प्रारम्भिक कृतियां हैं। इनमें ईश्वरभक्ति, समाज सुधार, देश प्रेम, कुरीति निवारण आदि विषयों से सम्बन्धित भजन संगृहीत हुए हैं। कालान्तर में आपने जो संगीतमय नाटक लिखे वे अत्यधिक लोकप्रिय हुए। ये नाटक पाठ्योपयोगी तो हैं ही, अभिनेय भी हैं। इन नाटकों की लोकप्रियता का पता इसी बात से चलता है कि प्रत्येक नाटक अब तक सहस्रों की संख्या के अनेक संस्करणों में प्रकाशित हो चुका है। साधारण शिक्षित पाठकों में इनका बड़ा प्रचार है। इन नाटकों के नाम तथा प्रकाशित संस्करण निम्न हैं—१. आर्य संगीत रामायण ४६ संस्करण, २. आर्य संगीत महाभारत २० संस्करण, ३. संगीत-हकीकतराय २९ संस्करण, ४. संगीत हरिश्चन्द्र १९ संस्करण, ५. संगीत पृथ्वीराज ८ संस्करण, ६. संगीत-बाल शहीद ६ संस्करण, ७. संगीत ऋषि दयानन्द ५ संस्करण।

डा. सुशीला आर्या के अनुसार ये नाटक मूलतः उर्दू में लिखे गये थे, पुनः इन्हें हिन्दी में रूपान्तरित किया गया। कई नाटक पंजाबी में भी अनूदित हुए।

पं. युगलकिशोर चतुर्वेदी

राजस्थान के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी, देशभक्त तथा कुशल पत्रकार पं. युगलकिशोर चतुर्वेदी का जन्म कार्तिक शुक्ला १ सं. १९६१ वि. (९ नवम्बर १९०४) मथुरा जिले के सोंख नामक ग्राम में श्री मक्खनलाल चौबे के यहाँ हुआ। इनकी शिक्षा भरतपुर तथा जयपुर में हुई। प्रारम्भ में ये कुछ काल तक शिक्षक भी रहे। चतुर्वेदीजी का सार्वजनिक जीवन भरतपुर राज्य में प्रजामण्डल के माध्यम से हुआ। आपने स्वाधीनता आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया और कारावास की यातनायें सहीं। देश के स्वतन्त्र हो जाने पर आप स्व. जयनारायण व्यास के मुख्य-मंत्रित्व काल में राजस्थान की मंत्रिपरिषद् में भी रहे। श्री चतुर्वेदी अपनी छात्रावस्था से ही आर्यसमाज के प्रति आस्थावान रहे हैं। विगत अनेक वर्षों से वे पाक्षिक 'लोक-शिक्षक' का सम्पादन कर जन जागरण कर रहे हैं।

ले. का.—धार्मिक जीवन—आर्यों के नित्य कृत्यों से सम्बन्धित ग्रन्थ (१९४०), वैदिक पारिवारिक जीवन (१९७५), मेरे बिखरे विचार (स्फुट लेखों का संग्रह)।

वि. अ.—पं. युगलकिशोर अभिनन्दन ग्रन्थ—सं. वृन्दावनदास (१९७३)।

व. प.—प्रियंवदा सदन, अशोक मार्ग, जयपुर ३०२००१.

पं. युधिष्ठिर मीमांसक

सुप्रसिद्ध विद्वान् तथा वैदिक वाङ्मय के निष्ठावान् समीक्षक पं. युधिष्ठिर मीमांसक का जन्म राजस्थान के अजमेर जिलान्तर्गत विड़कच्यावास नामक ग्राम में भाद्रपद शुक्ला नवमी सं. १९६६ वि. तदनुसार २२ सितम्बर १९०९ को पं. गौरीलाल आचार्य के यहाँ हुआ। पं. गौरीलाल सारस्वत ब्राह्मण थे तथा आर्यसमाज के मौन प्रचारक के रूप में आजीवन कार्य करते रहे। मीमांसकजी की माता का नाम श्रीमती यमुना देवी था। माता के मन में इस बात की बड़ी आकांक्षा थी कि उसका पुत्र गुरुकुल में अध्ययन कर सच्चा वेदपाठी ब्राह्मण बने। माता की मृत्यु उसी समय हो गई जब युधिष्ठिर केवल ८ वर्ष का ही था, परन्तु निधन के पूर्व ही उसने अपने पतिदेव से यह वचन ले लिया था कि वे इस बालक को गुरुकुल में अवश्य प्रविष्ट करायेंगे। तदनुसार १२ वर्ष की अवस्था में युधिष्ठिर को स्वामी सर्वदानन्द द्वारा स्थापित साधु आश्रम पुल काली नदी (जिला-अलीगढ़) में ३ अगस्त १९२१ को प्रविष्ट करा दिया गया। उस समय पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, पं. शंकरदेव तथा पं. बुद्धदेव उपाध्याय, धार निवासी उस आश्रम में अध्यापन कार्य करते थे। कुछ समय पश्चात् यह आश्रम गण्डासिंहवाला (अमृतसर) चला गया। यहाँ उसका नाम विरजानन्दाश्रम रक्खा गया।

परिस्थितिवश दिसम्बर १९२५ में पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु तथा पं. शंकरदेव १२-१३ विद्यार्थियों को लेकर काशी चले गए। यहाँ एक किराये के मकान में इन विद्यार्थियों का अध्ययन चलता रहा। लगभग अढ़ाई वर्ष के पश्चात् घटनाओं में कुछ परिवर्तन आया जिसके कारण जिज्ञासुजी इनमें से ८-९ छात्रों को लेकर पुनः अमृतसर आ गए। कागज के सुप्रसिद्ध व्यापारी अमृतसर निवासी श्री रामलाल कपूर के सुपुत्रों ने अपने स्वर्गीय पिता की स्मृति में वैदिक साहित्य के प्रकाशन एवं प्रसार की दृष्टि से श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट की स्थापना की थी, और इसी महत्त्वपूर्ण कार्य के संचालन हेतु उन्होंने श्री जिज्ञासु को अमृतसर बुलाया था। लगभग साढ़े तीन वर्ष अमृतसर में युधिष्ठिरजी का अध्ययन चलता रहा। कुछ समय बाद जिज्ञासुजी कुछ छात्रों को लेकर पुनः काशी लौटे। उनका इस बार के काशी आगमन का प्रयोजन मीमांसा दर्शन का स्वयं अध्ययन करने तथा अपने छात्रों को भी इस दर्शन के गम्भीर अध्ययन का अवसर प्रदान कराना था। फलतः युधिष्ठिरजी ने काशी रहकर महामहोपाध्याय पं. चिन्न स्वामी शास्त्री तथा पं. पट्टाभिराम शास्त्री जैसे मीमांसकों से इस शास्त्र का गहन अनुशीलन किया तथा गुरुजनों के कृपा प्रसाद से इस शुष्क तथा दुरूह विषय पर अधिकार प्राप्त करने में सफल रहे।

मीमांसा का अध्ययन करने के पश्चात् युधिष्ठिरजी अपने गुरु पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के साथ १९३५ में लाहौर लौटे और रावी नदी के पार बारहदरी के निकट रामलाल कपूर के परिवार में आश्रम का संचालन करने लगे। देश-विभाजन तक विरजानन्दाश्रम यहीं पर रहा। १९४७ में जब लाहौर पाकिस्तान में रह गया, तो जिज्ञासुजी भारत आ गए। १९५० में उन्होंने काशी में पुनः पाणिनि महाविद्यालय की स्थापना की और रामलाल कपूर ट्रस्ट के कार्य को व्यवस्थित किया। पं. युधिष्ठिर भी कभी काशी, तो कभी दिल्ली अथवा अजमेर में रहते हुए ट्रस्ट के कामों में अपना सहयोग देते रहे। उनका सारस्वत सत्र निरन्तर चलता रहा। दिल्ली तथा अजमेर में रहकर उन्होंने "भारतीय प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान" के माध्यम से स्व ग्रन्थों का लेखन व प्रकाशन किया। इस बीच वे १९५९-१९६० में टंकारा स्थित दयानन्द जन्मस्थान स्मारक ट्रस्ट के अन्तर्गत अनुसंधान विभाग के अध्यक्ष भी रहे। १९६७ से अब तक वे बहालगढ़ (सोनीपत) स्थित रामलाल कपूर ट्रस्ट के कार्यों को सम्भाल रहे हैं। भारत के राष्ट्रपति ने इन्हें १९७६ में संस्कृत के उच्च विद्वान् के

रूप में सम्मानित किया तथा सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी ने १९८९ में उन्हें महामहोपाध्याय उपाधि प्रदान की। १९८५ में आर्यसमाज सान्ताक्रुज वम्बई ने मीमांसकजी को ७५००० रु. की राशि भेंटकर उनकी विद्वता का सम्मान किया।

पं. युधिष्ठिर मीमांसक ने प्राचीन शास्त्र ग्रन्थों के सम्पादन के अतिरिक्त ऋषि दयानन्द कृत ग्रन्थों को आलोचनात्मक ढ़ंग से सम्पादित करने का कार्य किया है। इसके अतिरिक्त उनके मौलिक ग्रन्थों की संख्या भी पर्याप्त है।

ले. का.—महर्षि दयानन्द कृत ग्रन्थों का सम्पादन— १. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका—इस ग्रन्थ का सम्पादन करते समय विद्वान् सम्पादन ने भूमिका के प्रायः सभी प्रकाशित संस्करणों का निरीक्षण एवं परीक्षण किया। विस्तृत तथा अनेक महत्त्वपूर्ण पाद टिप्पणियों से युक्त (२०२४ वि.)। २. संस्कार विधि—वैदिक यन्त्रालय से प्रकाशित विभिन्न संस्करणों की पूरी छानवीन करने के पश्चात् संस्कारविधि का सम्पादित संस्करण (२०२३ वि.)। सत्यार्थप्रकाश—अद्यतन प्रकाशित संस्करणों का तुलनात्मक परिशीलन करने के पश्चात् सहस्रों पाद-टिप्पणियों तथा अनेक उपयोगी अनुक्रमणिकाओं सहित (२०२९ वि.), दयानन्दीय-लघु ग्रन्थ संग्रह—इसमें स्वामीजी के अन्य लघु ग्रन्थों के अतिरिक्त चतुर्वेद विषयसूची भी सम्मिलित की गई है। (२०३०), संस्कृत वाक्य प्रवोध—इस ग्रन्थ के प्रथम संस्करण की मुद्रणजन्य त्रुटियों के कारण पं. अम्बिकादत्त व्यास ने 'अवोध निवारण' पुस्तक लिखकर संस्कृतवाक्यप्रवोध पर आक्षेप किये थे। मीमांसकजी के इस संस्करण में व्यासजी के कतिपय निरर्थक आक्षेपों का समुचित उत्तर देते हुए ग्रन्थ की ऐतिहासिक विवेचना की गई है। (२०२६ वि.)।

वेदांग प्रकाश—मीमांसकजी द्वारा सम्पादित वेदांगप्रकाश के इन संस्करणों को आर्य साहित्य मण्डल अजमेर ने प्रकाशित किया था। पूना प्रवचन—पूना के व्याख्यानों के उपलब्ध पाठों का तुलनात्मक अनुशीलन तथा प्रामाणिक पाठ निर्धारण (२०२६ वि.)। कालान्तर में इन प्रवचनों के मूल मराठी पाठ उपलब्ध होने पर मीमांसकजी ने सीधे मराठी से इन्हें अनूदित कर १९८३ में प्रकाशित किया। भागवत-खण्डनम्—वर्षों से अनुपलब्ध स्वामी दयानन्द की इस मूल संस्कृत कृति का उद्धार तथा सानुवाद सम्पादन। ऋग्वेद भाष्यम्—तीन खण्डों में दयानन्द कृत ऋग्वेद भाष्य (मंडल १, १०५ सूक्त पर्यन्त) का सम्पादन। यजुर्वेदभाष्य संग्रह—पंजाव विश्वविद्यालय की शास्त्री परीक्षा में नियत दयानन्दीय यजुर्वेद भाष्य के प्रासंगिक अंश का सम्पादन। ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास (२००६ वि.), परिवर्द्धित संस्करण (२०४० वि.), दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर। **सम्पादित शास्त्र ग्रन्थ**—यजुर्वेद संहिता (२०१७ वि.), माध्यन्दिन संहितायाः पदपाठ (२०२८ वि.)। **वेदांग शास्त्रों पर लेखन कार्य**—शिक्षा सूत्राणि—आपिशलि, पाणिनि तथा चन्द्रगोमिन विचरित शिक्षा सूत्र (२००५ वि.), वैदिक स्वर मीमांसा (२०१४ वि.), वैदिक वाङ्मय में प्रयुक्त स्वरांकन प्रकार—(२०२१ वि.) सामवेद स्वरांकन प्रकार (२०२१ वि.), वैदिक छन्दोमीमांसा (२०१६ वि.), निरुक्त समुच्चय (वररुचि प्रणीत) इस ग्रन्थ का सम्पादन मीमांसकजी ने लाहौर निवास के समय किया था।

संस्कृत व्याकरण विषयक मौलिक तथा सम्पादित ग्रन्थ—

संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास—३ खण्ड (२००७-२०३० वि.), क्षीर तरंगिणी—पाणिनीय धातुपाठ के औदीच्य पाठ पर प्रणीत टीका का सम्पादन। दशपादी उणादि वृत्ति (१०४३), देवपुरुषकार वार्तिकोपेत (पाणिनीय-धातुपाठ के लिए उपयोगी ग्रन्थ)। भागवृत्ति संकलनम्—अष्टाध्यायी की प्राचीन भागवृत्ति के उपलब्ध उद्धरणों का संकलन एवं सम्पादन। काशकृत्स्न धातु व्याख्यानम्—आचार्य काशकृत्स्न के धातु व्याख्यान का कन्नड़ लिपि में उपलब्ध संस्करण तथा इस पर कन्नड़ भाषा में लिखित चन्नवीर कवि कृत टीका का संस्कृत भाषान्तर (२०२२ वि.), काशकृत्स्न व्याकरण—इस व्याकरण के उपलब्ध १३८ सूत्रों का संग्रह, व्याख्या सहित। उणादि कोण-(सम्पादन), संस्कृत धातुकोष—विस्तृत भाषार्थ सहित (२०२३ वि.)। पातंजल महाभाष्यम्—हिन्दी व्याख्या दो भाग (१-२-४) (२०२९ वि.)। द्वितीय भाग [द्वितीयाध्याय] (२०३१ वि.)

शब्द रूपावली, धातुपाठ (२०२६ वि.)। कर्मकाण्ड के ग्रन्थ—अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त श्रौतयज्ञों का संक्षिप्त परिचय (डा. विजयपाल के सहलेखन में, १९८४), श्रौतयज्ञमीमांसा (१९८७), श्रौतपदार्थ निर्वचनम् (सम्पादन, १९८४).

संस्कृत पठन पाठन की अनुभूत सरलतम विधि—भाग २, इस ग्रन्थ का प्रथम भाग पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु ने लिखा था। द्वितीय भाग मीमांसकजी ने लिखा (२०२७ वि.)। वैदिक नित्य कर्म विधि (२०२८ वि.)। जैमिनीय मीमांसा-भाष्यम्-मीमांसा दर्शन पर सुप्रसिद्ध शाबर भाष्य का हिन्दी अनुवाद तथा उस पर 'आर्षमतविमर्शिनी' नामक हिन्दी टीका लिखकर मीमांसकजी ने एक बड़े कार्य को पूरा किया है। अब तक यह भाष्य पांच खण्डों में प्रकाशित हुआ है तथा प्रथम खण्ड में प्रथम अध्याय, द्वितीय में तृतीय अध्याय के प्रथम पाद पर्यन्त, तृतीय में तृतीय अध्याय की समाप्ति तक, चतुर्थ में पंचम अध्याय तक तथा पंचम खण्ड में षष्ठ अध्याय तक की व्याख्या लिखी गई है। इन खण्डों का प्रकाशन क्रमशः २०३४, २०३५, २०३७, २०४१ तथा २०४३ वि. में हुआ। प्रथम भाग के आरम्भ में शास्त्रावतार मीमांसा, वेद-श्रुतिआम्नाय संज्ञा मीमांसा तथा श्रौत यज्ञ मीमांसा शीर्षक तीन निबन्ध भी ग्रन्थ के उपोद्घात में प्रस्तुत किए गए हैं।

उपर्युक्त शास्त्रीय ग्रन्थों के लेखन, सम्पादन आदि के अतिरिक्त मीमांसकजी ने समय-समय पर अनेक शोध-निबन्ध भी लिखे जो स्वतन्त्र पुस्तकाकार प्रकाशित हुए। ऐसे निबन्धों का विवरण इस प्रकार है—१. ऋग्वेद की ऋक्संख्या (२००६ वि.), २. ऋग्वेद की कतिपय दान-स्तुतियों पर विचार (२००८ व.), ३. मन्त्रब्राह्मणयोर्वेद-नामधेयम् इत्यत्र कश्चिद् अभिनवो विचार: (२००९ वि.), ४. दुष्कृताय चरकाचार्यम्—क्या यजुर्वेद में चरक ऋषि का वर्णन है? (२००९ वि.), ५. वेदसंज्ञामीमांसा—'मन्त्र ब्राह्मणयोर्वेदनाम धेयम्' इति सूत्रस्य मीमांसा (२०२३ वि.)। ६. वेदानांमहत्त्वंतत्प्रचारोपायाश्च—राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन के १२वें भीलवाड़ा अधिवेशन में आयोजित वेद परिषद् के अध्यक्ष पद से दिया गया भाषण। ७. क्या वैदिक ऋषि मंत्र रचयिता थे? (१९४५)। ८. आचार्य पाणिनि के समय विद्यमान संस्कृत वाङ्मय। ९. वेदार्थ की विविध प्रक्रियाओं की ऐतिहासिक मीमांसा (१९७६)—यह निबन्ध 'वेदार्थ की विविध प्रक्रियाओं का ऐतिहासिक अनुशीलन' शीर्षक २००९ वि. में प्रकाशित निबंध का संशोधित रूप है।

मीमांसक लेखावली—(वैदिक सिद्धान्त मीमांसा) वेद विषयक : प्रथमो भाग : मीमांसकजी द्वारा समय समय पर लिखित विभिन्न २० शोध निबन्धों का संग्रह (२०३३ वि.), वेदसुधा (मंत्र व्याख्या १९७०).

उनके विभिन्न ग्रन्थ विभिन्न संस्थानों द्वारा समय-समय पर पुरस्कृत हो चुके हैं, जिनका विवरण इस प्रकार है—उत्तरप्रदेश शासन द्वारा उनके संस्कृत व्याकरण-शास्त्र का इतिहास भाग—१. पर १९५२ में ५०० रु., वैदिक स्वर मीमांसा पर १९५९ में ७०० रु., वैदिक छन्दो-मीमांसा पर १९६१ में ५०० रु., काशकृत्स्न धातु व्याख्यानम् पर १९७२ में ५०० रु., माध्यन्दिन पद पाठ पर १९७३ में ५०० रु., पातंजल महाभाष्य व्याख्या भाग २ पर १९७४ में ५०० रु., दयानन्द सरस्वती कृत ऋग्वेद-भाष्य भाग—१ पर १९७५ में २५०० रु. भाग २ पर १९७६ में ३००० रु. तथा महाभाष्य हिन्दी व्याख्या भाग ३ पर १९७६ में ३००० रु. प्रदान किए गए।

वि. अ.—आत्मपरिचय (आत्मकथा) १९८८.

व. प.—रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़ (सोनीपत) १३१०२१.

स्वामी योगानन्द सरस्वती (यशपाल शास्त्री)

शास्त्रीजी का जन्म ३ फरवरी १९२८ को अलीगढ़ जिले के सिकन्दरपुर माछुआ नामक ग्राम में सेठ लक्ष्मी-चन्द के यहाँ हुआ। इनका अध्ययन बी. ए. तथा शास्त्री तक का था। संन्यास ग्रहण करने से पूर्व ये यशपाल शास्त्री के नाम से जाने जाते थे। इन्होंने अलीगढ़ जिले के गंगीरी नामक स्थान में गुरुकुल की स्थापना की और कई वर्षों तक उसका संचालन किया। पंजाब के हिन्दी रक्षा-आन्दोलन तथा गोरक्षा आन्दोलन में भी आपने भाग, लिया। आप कुछ समय के लिये आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश के वेदप्रचार अधिष्ठाता के पद पर रहे। २४ अक्टूबर १९८२ को इनका निधन हो गया।

ले. का.—१. धर्म विचार ४ भाग, २. वैदिक अर्थ—शास्त्र, ३. ग्राम सुधार ।

स्वामी योगानन्द सरस्वती

आप अलवर राजस्थान के निवासी थे ।

ले. का.—जीवन सफल कैसे हो ? १९६८, ब्रह्मचर्य-रक्षा ही जीवन है, मनुष्य पूर्ण नीरोगी कैसे हो ?, वैदिक-संध्या (जीवात्मा और परमात्मा के बीच एक संधिपत्र) १९६७, यज्ञ हवन पद्धति १९६८, वेदो हि परमो धर्मः १९५३, सप्तश्लोकी भगवद्गीता, सुखशान्ति कैसे प्राप्त हो १९७० ।

डा. योगेन्द्रकुमार शास्त्री

डा. योगेन्द्रकुमार मूलतः उत्तरप्रदेश के हैं। आपका जन्म बुलन्दशहर के ग्राम अरनिया में श्री कर्णवीरसिंह के यहाँ १५ सितम्बर १९३८ को हुआ। इनकी शिक्षा गुरुकुल बदायूं तथा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में हुई। आपने हिन्दी तथा संस्कृत में एम. ए. किया है। विगत कई वर्षों से आप जम्मू को अपना केन्द्र बना कर धर्म-प्रचार कार्य में रत हैं। आप आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू व काश्मीर के प्रधान भी हैं। आपने जम्मू विश्वविद्यालय से 'त्रैतवाद का उद्भव और विकास' शीर्षक शोध प्रबन्ध पर पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। यह ग्रन्थ आर्यसमाज कलकत्ता द्वारा १९८२ में प्रकाशित हो चुका है।

ले. का.—जीवात्मा क्या है ? (१९८४), सरल-गीता ज्ञान, योग का सही मार्ग ।

व. प.—१३२, पुराना अस्पताल रोड, जम्मू

स्वामी योगेन्द्रपाल

स्वामी योगेन्द्रपाल का जन्म दीनानगर (जिला गुरुदासपुर) में हुआ। आप प्रसिद्ध धर्मप्रचारक तथा शास्त्रार्थी थे। अरबी तथा फारसी के अच्छे विद्वान् थे। आपने मौलवी अब्दुलहक़, मौलवी सनाउल्ला आदि से अनेक शास्त्रार्थ किये।

ले. का.—१. जाली कृष्ण (मिर्जा गुलाम अहमद का खण्डन), २. मुता वा नियोग, ३. ऋषि जीवन के जगमगाते हीरे ।

योगीन्द्रकुमार सरकार

इन्होंने बंगला भाषा में स्वामी दयानन्द का जीवन-चरित लिखा जो सिटी बुक सोसाइटी कलकत्ता से १९०९ में प्रकाशित हुआ था। इस पुस्तक की एक प्रति नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता में विद्यमान है।

पं. रघुनन्दन शर्मा

वेदों के प्रसिद्ध विद्वान् पं. रघुनन्दन शर्मा कानपुर के निवासी थे। उन्होंने वैदिक-सम्पति नामक एक विशाल ग्रन्थ का प्रणयन किया, जिसमें वेदों की प्राचीनता, वेदों की अपौरुषेयता, वेदों की उपेक्षा तथा वेदों की शिक्षा शीर्षक चार खण्डों के अन्तर्गत विस्तारपूर्वक वेदों के प्रतिपाद्य तथा वेद विषयक विभिन्न प्रश्नों का विवेचन किया गया है। इस ग्रन्थ की भूमिका लिखने के लिये महात्मा गांधी से निवेदन किया गया था, किन्तु वे उन दिनों यरवदा कारागार में थे, अतः चाहने पर भी उनके लिये भूमिका लिखना सम्भव नहीं हुआ। १९३१ में वैदिक सम्पत्ति का प्रथम संस्करण बम्बई के आर्य श्रेष्ठि श्री शूरजी वल्लभदास ने प्रकाशित किया। तत्पश्चात् इसके कई संस्करण बम्बई से निकले। एक संस्करण दयानन्द संस्थान, नई दिल्ली ने प्रकाशित किया। शर्माजी ने 'अक्षर विज्ञान' नामक एक अन्य ग्रन्थ भी लिखा था।

कविराज रघुनन्दनसिंह निर्मल

आर्यसमाज के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान् तथा लेखक कविराज रघुनन्दनसिंह उर्दू, हिन्दी, संस्कृत, फारसी तथा अंग्रेजी के प्रौढ मर्मज्ञ तथा सिद्धहस्त साहित्यकार थे। आपका निवास दिल्ली में ही रहा और यहीं पर ५ सितम्बर १९८६ को निधन हुआ।

ले. का—१. ईश्वर का सच्चा स्वरूप, २. गीता का सच्चा स्वरूप, ३. धर्म का सच्चा स्वरूप, ४. मुक्ति का सच्चा स्वरूप, ५. योग का सच्चा स्वरूप, ६. मन का

वैदिक स्वरूप, ७. सत्यार्थ दिग्दर्शन, ८. वेदान्तदर्शन, ९. सत्यार्थप्रकाश के प्रथम दो समुल्लासों का सम्पादन, १०. षोड्शकला सम्पूर्ण दयानन्द (२०३१ वि.), ११. दयानन्द शास्त्रार्थ संग्रह (१९६९), १२. पं. लेखराम रचित ऋषि दयानन्द के उर्दू जीवन चरित का कविराजजी ने हिन्दी अनुवाद किया जिसे आर्यसमाज नया बांस दिल्ली तथा आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली ने प्रकाशित किया। उर्दू काव्य—आर्यों की गर्जना, भारत मां के लाल, ज्ञान-गंगा (गीता का पद्यानुवाद), रामायण-उर्दू मंजूम।

रघुनाथदत्त बंधु

आप अमृतधारा वाले पं. ठाकुरदत्त शर्मा के साथी एवं सहयोगी थे।

ले. का—१. ईशावास्योपनिषद् (अनेक भाष्यकारों के भाष्यों का सार संग्रह) (सं. २०१२ वि.), २. क्या राम की सेना बन्दर थी ? (१९६२).

पं. रघुनाथप्रसाद पाठक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में आधी शताब्दी से भी अधिक समय तक रह कर उसे सुव्यवस्थित रूप देने वाले पं. रघुनाथप्रसाद पाठक का जन्म १९०१ में बिजनौर जिले के महमूदपुर ग्राम में पं. लालमणि शर्मा के यहां हुआ। पाठकजी का अध्ययन कांठ (जिला मुरादाबाद) तथा चन्दौसी में हुआ। १९२४ में इन्होंने हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। १९२५ में महात्मा नारायण स्वामी की प्रेरणा से पाठकजी सार्वदेशिक सभा की सेवा में आ गये। सभा का साहित्यिक एवं प्रकाशन का कार्य इन्हीं की देख-रेख में होता रहा। हिन्दी तथा अंग्रेजी दोनों भाषाओं पर आपका समान रूप से अधिकार था। आपने सार्वदेशिक पत्र का सम्पादन उसके जन्मकाल (१९२७) से ही आरम्भ कर दिया था। सभा के अंग्रेजी मासिक 'वैदिक लाइट' का भी वे सम्पादन करते थे। १६ जुलाई १९८५ को इनका निधन हो गया।

ले. का—महर्षि दयानन्द विषयक ग्रन्थ—

१. महर्षि दयानन्द जीवन, २. आदर्श गुरु शिष्य (२०१६ वि.), ३. सत्यार्थप्रकाश दर्पण (१९७९), ४. Dayanand : The Man and His Mission., ५. Teachings of Swami Dayanand : Talks and Sermons. **आर्यसमाज विषयक ग्रन्थ**—६. दस नियम—व्याख्या (२०१२ वि.), ७. आर्यसमाज का परिचय (२००५ वि.), ८. आर्यसमाज और उसका संदेश (१९७५), ९. आर्यसमाज के मन्तव्य, १०. Achievements of the Arya Samaj, ११. The Arya Samaj at a Glance. **जीवन चरित**—१२. गुरुवर विरजानन्द (१९६९), १३. पं. लेखराम के जीवन पर एक दृष्टि, १४. स्वामी श्रद्धानन्द (१९७०), १५. महात्मा नारायण स्वामी (२००२ वि.) **अनूदित ग्रन्थ**—१६. वैदिक संस्कृति (गंगाप्रसाद उपाध्याय कृत Vedic Culture का अनुवाद,। १७. विवाह और विवाहित जीवन (गंगाप्रसाद उपाध्याय कृत Marriage and Married Life का अनुवाद), १८. आर्यावर्त की वाणी (टी. एल. वास्वानी कृत Voice of Aryavarta) का अनुवाद (१९२९), १९. भारत का एक ऋषि (रौमां रौला कृत लेख का अनुवाद, २०१३ वि.), **स्फुट ग्रन्थ**–२०. नैतिक-जीवन, २१. मातृत्व की ओर, २२. आर्य जीवन और गृहस्थ धर्म, २३. कथा माला, २४. नैतिक शिक्षा (१९६५), २५. नया संसार (१९४६).। **लघु ग्रन्थ**—२६. मद्यनिषेध की आवश्यकता, २७. शराबबंदी क्यों आवश्यक है ? (२०२९ वि.), २८. आर्य शब्द का महत्त्व (१९४६), २९. तीर्थ और मोक्ष, ३०. ग्रहण और दान, ३१. मांसाहार घोर पाप (१९७५), ३२. Vedic Precepts (सौ वेद मन्त्रों की व्याख्या), ३३. Arya and Dravid-आर्य-द्रविड़ विषयक पाश्चात्य धारणा का खण्डन। आपने ६० वर्षीय लेखकीय जीवन में पाठकजी ने हजारों उपयोगी लेख लिखे।

रघुनाथप्रसाद मिश्र

मिश्रजी इटावा के छिपैटी मौहल्ले के निवासी थे। ये वैद्यक के द्वारा अपना जीविकोपार्जन करते थे।

ले. का.—१. हिन्दी कुरान (सम्पूर्ण कुरान का सरल हिन्दी अनुवाद), २. विधर्मियों को हिन्दू बनाने की युक्तियां २ भाग, ३. हिन्दू संगठन विधि, ४. हिन्दू देवियों का आत्म-बलिदान, ५. जहाद (पं. लेखराम की पुस्तक का अनुवाद)।

रघुवरदयाल

इन्होंने 'आर्यसमाज के नियमों पर पं. ज्वालाप्रसाद के आक्षेपों का उत्तर' शीर्षक पुस्तक लिखी जो १९०३ में प्रकाशित हुई।

आचार्य रघुवीर

भारतीय विद्या विशारदों में शीर्षस्थ आचार्य रघुवीर का जन्म २० दिसम्बर १९०२ को रावलपिण्डी में श्री मुन्शीराम के यहाँ हुआ। पंजाब विश्वविद्यालय से एम. ए. करने के पश्चात् आपने लंदन विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि ग्रहण की। १९३४ में आपने लाहौर में सरस्वती विहार की स्थापना की जो देश विभाजन के पश्चात् दिल्ली में पुनः स्थापित किया गया। डा. रघुवीर ने पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण तथा कोश रचना के क्षेत्र में अद्वितीय कार्य किया है। १४ मई १९६३ को एक कार दुर्घटना में उनका निधन हो गया।

ले. का.—स्वामी दयानन्द कृत अष्टाध्यायी भाष्य का सम्पादन डा. रघुवीर ने अ. १-१-६० पर्यन्त पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के सहयोग से तथा अध्याय ३ पर्यन्त स्वतन्त्र रूप से किया। अष्टाध्यायी भाष्य के ये दोनों खण्ड वैदिक यंत्रालय अजमेर से १९८४ वि. तथा १९९७ वि. में प्रकाशित हुए।

डा. रघुवीर वेदालंकार

डा. वेदालंकार का जन्म २ जुलाई १९४५ को मुजफ्फरनगर जिले के एक ग्राम में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल झज्जर में हुई। तत्पश्चात् आपने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से वेदालंकार की परीक्षा उत्तीर्ण की। पी-एच. डी. के लिये आपका शोध का विषय था—'काशिका का समालोचनात्मक अध्ययन'। यह १९७७ में छपा।

ले. का.—काशिका-हिन्दी व्याख्या प्रथम पाद (१९७९), वेदों का तुलनात्मक एवं समीक्षात्मक अध्ययन (सम्पादित) १९८२, नैतिक शिक्षा भाग २ (१९७५), वैदिक दर्शन (१९८७), काशिका विषयक आपके दोनों ग्रन्थ उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा पुरस्कृत हो चुके हैं। केवलानन्द शर्मा कृत यतीन्द्र शतकम् का हिन्दी भाषानुवाद (गुरुकुल पत्रिका-फाल्गुन २०३० वि.)।

व. प.—संस्कृत विभाग, रामजस कालेज, मॉरिस-नगर दिल्ली ११०००७.

रघुवीरशरण दुबलिश

आर्यसमाज के एक संकल्पनिष्ठ पत्रकार, लेखक तथा प्रकाशक श्री रघुवीरशरण दुबलिश का जन्म मेरठ जिले के अन्तर्गत मवाना नामक कस्बे में १८८६ में हुआ। इनके पिता का नाम श्री रामदास था, जो स्वयं एक सम्पन्न परिवार के थे। रघुवीरशरण की शिक्षा मेरठ कालेज में हुई। कालेज में पढ़ते समय ही आपने एक संकल्प कर लिया था कि अध्ययन के उपरान्त मैं प्रेस स्थापित करूंगा और ग्रन्थ प्रकाशन व्यवसाय को अपनाऊंगा। उन्हें अपना संकल्प पूरा करने में कोई कठिनाई नहीं हुई। मेरठ में आपने भास्कर प्रेस की स्थापना की। इसी प्रेस से १९१२ में आपने 'भास्कर' नामक मासिक पत्र प्रकाशित करना आरम्भ किया। १९१३ में 'भारत महिला' नामक एक अन्य पत्र भी निकाला। श्री दुबलिश आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के दो वर्ष मन्त्री भी रहे। १८ अक्टूबर १९१८ को इनका निधन हो गया।

ले. का.—भारत वर्ष का सच्चा इतिहास, संस्कृत—हिन्दी कोष (१९७१ वि.), वाल्मीकीय रामायणम्-प्रक्षिप्त भाग की आलोचना सहित रामायण का हिन्दी अनुवाद।

श्री रघुवीरशरण ने 'वैदिक सिद्धान्त ग्रन्थ माला' का प्रकाशन भी किया था, जिसके अन्तर्गत आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध लेखकों की अनेक रचनाएं प्रकाशित हुईं। विशेष रूप से पं कालूराम शास्त्री, पं. अखिलानन्द शर्मा आदि पौराणिक पंडितों द्वारा लिखी गई आक्षेप युक्त पुस्तकों का उत्तर इस ग्रन्थमाला में प्रकाशित किया जाता था।

रघुवीरशरण बंसल

मेरठ निवासी श्री बंसल हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक हैं। इन्होंने आर्यसमाज के महापुरुषों के कुछ उत्तम जीवन चरित लिखे हैं।

ले. का.—१. हमारे स्वामी, २. आर्यसमाजी नेता, ३. पं. लेखराम, ४. स्वामी श्रद्धानन्द (१९५२).

डा. रघुवीरसिंह तोमर

डा. तोमर का जन्म मध्यप्रदेश के मुरैना जिले के ग्राम पलना में श्री लखपतिसिंह तोमर के यहाँ हुआ। इन्होंने राजनीतिशास्त्र में एम. ए. किया और जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर से 'भारतीय राष्ट्रीय जागरण में आर्यसमाज का योगदान' विषय लेकर पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। १९८३ से डा. तोमर काशी विद्यापीठ वाराणसी में राजनीति शास्त्र के वरिष्ठ प्रवक्ता हैं। आपके अनेक शोध निबंध प्रकाशित हुए हैं।

व. प.—राजशास्त्र विभाग, काशी विद्यापीठ वाराणसी (उ. प्र.)।

पं. रघुवीरसिंह शास्त्री

शास्त्रीजी का जन्म १९१५ में हुआ। इनका अध्ययन गुरुकुल किरठल (मेरठ) में हुआ जहां पं. जगदेवसिंह शास्त्री सिद्धान्ती से आपने शास्त्रों का अभ्यास किया। कालान्तर में ये स्वयं इसी गुरुकुल के आचार्य भी रहे। जब आर्यसमाज ने पंजाब में हिन्दी रक्षा सत्याग्रह चलाया तो शास्त्रीजी ने उसका नेतृत्व किया और भाषा स्वातन्त्र्य समिति के मंत्री रहे। १९५९-६१ की अवधि में वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री पद पर कार्य करते रहे। वे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति भी बने और आपके कार्यकाल में इस शिक्षण संस्था ने अपूर्व उन्नति की। २९ सितम्बर १९८२ को आपका निधन हो गया।

ले. का.—अविभाजित पंजाब के किसान नेता चौधरी छोटूराम का जीवन चरित। सार्वदेशिक सभा के मंत्रित्व काल में शास्त्रीजी ने निम्न उपयोगी ग्रन्थ प्रकाशित कराये-आर्य महासम्मेलनों के प्रस्ताव, सार्वदेशिक आर्य-प्रतिनिधि सभा का इतिहास, आर्य महा-सम्मेलनों के अध्यक्षीय भाषण तथा सार्वदेशिक सभा के निर्णय।

राजा रणंजयसिंह

उत्तरप्रदेश के सुलतानपुर जिले के अन्तर्गत अमेठी राज्य के नरेश राजा भगवानबख्शसिंह के द्वितीय पुत्र राजा रणंजयसिंह का जन्म २९ अप्रैल १९०१ (१९५८वि.) को अमेठी (उ. प्र.) के राजप्रसाद 'भूपति भवन' में हुआ। आपने अनेक गुरुओं से विद्याध्ययन किया तथा काल्विन तालुकेदार कालेज लखनऊ में भी पढ़े। राजा साहब की आर्यसमाज के प्रति आस्था प्रारम्भ से ही रही। आप समय समय पर उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्य तथा लोक सभा के सदस्य भी रहे। आपने आर्य प्रतिनिधि-सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान पद को भी सुशोभित किया। आपने 'मनस्वी' नामक मासिक पत्र का सम्पादन किया तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर अनेक विचारोत्तेजक लेख भी लिखे। राजा साहब सहृदय कवि थे। आपकी अनेक काव्य रचनायें प्रकाशित हुई हैं। आपका निधन ४ अगस्त १९८८ को हुआ।

ले. का.—राजा रणंजयसिंह अभिनन्दन ग्रन्थ के-सप्तम खण्ड में उनकी कविताओं तथा लेखों का संग्रह। सत्य संरक्षण, व्यायाम, म्लेच्छमहामण्डल।

वि. अ.—राजा रणंजयसिंह अभिनन्दन ग्रन्थ-सं. सोमेश्वरसिंह (१९७९)।

रणजित मुनि 'तन्मय'

श्री रणजित मुनि का जन्म आषाढ़ कृष्णा प्रतिपदा १९७४ वि. (६ जून १९१७) को श्री रामसिंह के यहाँ राजस्थान के एक देहात में हुआ। इनके पूर्वज उत्तरप्रदेश के सहारनपुर जिले के निवासी थे। इनकी शिक्षा एम. ए. (संस्कृत) तथा एल. एल. बी. तक हुई है। पूर्वाश्रम में मुनिजी का नाम श्री रणजीतसिंह था और उन्होंने १९३८ से १९७६ तक लेखा विभाग राजस्थान (१९३८ से १९४६ तक जयपुर राज्य, तत्पश्चात् राजस्थान) में कार्य किया। इधर कई वर्षों से वे ज्वालापुर में वानप्रस्थ का जीवन

व्यतीत कर रहे हैं। इनके ३ काव्य संग्रह तन्मय कविता-वली २ भाग तथा प्रेरक काव्य प्रकाशित हुए हैं। 'श्रुति सुधा' (१९४८)—'विश्वानिदेव' आदि प्रार्थना के ८ मन्त्रों की भावपूर्ण व्याख्या।

व. प.—योगधाम, आर्यनगर ज्वालापुर (हरिद्वार)

डा. रणजीतसिंह

हरियाणा निवासी डा. रणजीतसिंह का कार्यक्षेत्र मुख्यतः शिक्षा ही रहा। वे नेहरू मेमोरियल कालेज हांसी में प्रिंसिपल के पद पर कार्य करते रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वे मंत्री तथा सक्रिय कार्यकर्ता रहे हैं।

ले. का.—हरयाणा के आर्यसमाज का इतिहास (२०३३ वि.), वैदिक सत्संग पद्धति, ईश्वर की सत्ता और स्वरूप, ओम् नाम का आश्रय।

व. प.—२०५, सैक्टर १६ फरीदाबाद (हरयाण)

श्री रणवीर

महात्मा खुशहालचन्द (महात्मा आनन्द स्वामी) के पुत्र श्री रणवीर का जन्म २६ दिसम्बर १९०६ को पाकिस्तान के जलालपुर जट्टां ग्राम में हुआ। आपका अध्ययन डी. ए. वी. कालेज लाहौर में हुआ। लाहौर षड्यंत्र केस में आपको अभियुक्त बनाया गया और निचली अदालत से फांसी का दण्ड भी मिला किन्तु हाई-कोर्ट ने इन्हें मुक्त कर दिया। दिल्ली से प्रकाशित उर्दू दैनिक 'मिलाप' के आप आजीवन सम्पादक रहे। इनका निधन ८ दिसम्बर १९८२ को हुआ।

ले. का—१. वैदिक भक्ति स्तोत्र (२००० वि.), २. रुद्र स्तोत्र-यजुर्वेद के १६वें अध्याय की व्याख्या (२०२१ वि.), ३. युग पुरुष [गुरु गोविन्दसिंह की जीवनी], ४. महात्मा आनन्द स्वामी का जीवन चरित, (उर्दू तथा हिन्दी १९७३)।

डा. रणवीर शास्त्री

शास्त्रीजी का जन्म १४ अगस्त १९५५ को जींद (हरयाणा) जिले के ग्राम में पौली में श्री प्रीतसिंह के यहाँ हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल झज्जर में हुई जहाँ से इन्होंने व्याकरणाचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए. (१९७६) तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से प्राचीन भारतीय इतिहास तथा संस्कृति में एम. ए. (१९८३) में किया। 'याज्ञवल्क्य स्मृति में दायभाग का आलोचनात्मक अध्ययन' विषय पर आपको पी-एच. डी. उपाधि प्राप्त हुई। वर्तमान में आप हरयाणा के पुरातत्त्व विभाग में तकनीकी सहायक के पद पर कार्यरत हैं।

व. प.—एस. सी. ओ. १७३ सैक्टर ८ सी. चंडीगढ़।

राजकुमार रणवीरसिंह

उत्तरप्रदेश के सुलतानपुर जिले में अमेठी रियासत के स्वामी महाराजा भगवानबख्शसिंह के द्वितीय पुत्र राज-कुमार रणवीरसिंह एक उत्तम कवि तथा सिद्धहस्त लेखक थे। इनका जन्म आषाढ़ शुक्ला १४ सं. १९५६ (२१ जुलाई १८९९) को अमेठी के राजमहल 'भूपति-भवन' में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा काल्विन तालुकेदार कॉलेज लखनऊ में हुई। तत्पश्चात् पं. राधाकृष्ण तथा प. शिव-नारायण उपाध्याय से उन्होंने संस्कृत एवं अंग्रेजी का विशेष रूप से अध्ययन किया। स्वामी दयानन्द और आर्य-समाज के सिद्धान्तों के प्रति उनकी अनन्य निष्ठा थी। वे उच्च चरित्र सम्पन्न, पूर्ण सदाचारी तथा कट्टर निरामिष-भोजी थे। आप हिन्दी के दृढ़ समर्थक तथा सच्चे राष्ट्र-वादी थे। खेद है कि इस होनहार युवक का निधन २१ वर्ष की आयु में २ फरवरी १९२१ (१९७७ वि.) को हो गया। श्री रणवीरसिंह की काव्य रचनायें 'कविता कंकोष' नामक पुस्तक में संगृहीत की गई हैं, जिसका सम्पादन उनके अनुज राजा रणंजयसिंह ने किया है।

ले. का.—सुघोर संगर (१९१७), विजयोल्लास (१९१७), मित्रम् प्रति समुक्ति (१९१८), सुभट तरुण (१९१८), सामाजिक सुधार (१९१९), तथा उत्थानो-द्बोधन (१९१९), संस्कृत सुधार नाटक, सत्यमेव जयते नानृतम्। इनके अतिरिक्त आपकी २० अन्य रचनाओं की सूची उपलब्ध है जो अभी तक अप्रकाशित ही हैं। रणवीर-

रत्नाकर शीर्षक से राजकुमार रणवीरसिंह की गद्य रचनाओं को संग्रहीत कर १९८१ में प्रकाशित किया गया है।

डा. रत्नकुमारी देवी

श्रीमती रत्नकुमारी का जन्म १९१० में हुआ। आप आर्यसमाज के प्रसिद्ध लेखक और दार्शनिक पण्डित गंगा-प्रसाद उपाध्याय की पुत्रवधू तथा उनके पुत्र आर्य जगत् के विख्यात विद्वान् डा. (स्वामी) सत्याप्रकाश की पत्नी थीं। आपकी शिक्षा एम. ए. तथा डी. फिल. तक प्रयाग विश्वविद्यालय से ही हुई। आप डी. ए. वी कन्या कालेज इलाहाबाद की प्रिंसिपल रहीं। पारिवारिक संस्कारों ने आपको हिन्दी लेखन की ओर प्रवृत्त किया। आपकी 'प्राची प्रतीची' नामक यात्रा पुस्तक १९७२ में प्रकाशित हुई, जिसमें आपने अपनी यूरोप यात्रा का वर्णन किया है। पुस्तक की भूमिका इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डा. धीरेन्द्र वर्मा ने लिखी थी। एक दिसम्बर १९६४ को आपका निधन हुआ। आपकी स्मृति को सुरक्षित रखने की दृष्टि से आपके पति डा. सत्यप्रकाश ने 'डा. रत्नकुमारी स्वाध्याय संस्थान' की स्थापना की है जिसके अन्तर्गत अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ छप चुके हैं।

डा. रत्नचन्द्र शर्मा

डॉ. शर्मा का जन्म १९ अप्रैल १९१९ को पाकिस्तान के जिला सियालकोट के ग्राम गोइन्दकी में पं. गणपतिराम शर्मा के यहाँ हुआ। इन्होंने अंग्रेजी तथा संस्कृत में एम.ए. किया तथा पी-एच. डी. की उपाधि भी ग्रहण की। वे पर्याप्त समय तक दयालसिंह कालेज करनाल में प्राध्यापक तथा बाद में प्राचार्य रहे। ११ नवम्बर १९८६ को इनका निधन हो गया। उन्होंने काव्य, निबन्ध, जीवन-चरित्र, आलोचना आदि विविध विषयों पर ग्रन्थ रचना की।

ले. का.—धर्म ग्रन्थावलोकन, वैदिक जीवन पद्धति, दैनिक स्वाध्याय और गीता सार, The Vedas : An Introduction.

कविराज रत्नाकर शास्त्री

कविराजजी का जन्म १९१४ में हुआ। उनका अध्ययन गुरुकुल वृन्दावन में हुआ। वे व्यवसाय से चिकित्सक थे, किन्तु उन्होंने कवि हृदय पाया था। नीराजना, प्रायश्चित, नदी का देवता आदि उनकी काव्य कृतियाँ हैं। उनके अन्य ग्रन्थ हैं—स्नातक के पत्र, वैदिक आलोचक तथा भारत की सांस्कृतिक प्रयोगशाला-काश्मीर। भारत के प्राणाचार्य उनकी शोध पूर्ण कृति है। १९८९ में उनका निधन हुआ।

बाबू रतनलाल

मेरठ निवासी श्री रतनलाल उत्तरप्रदेश की न्यायिक सेवा में कार्यरत रहे। सार्वदेशिक सभा द्वारा गठित न्याय-सभा में भी आपका सहयोग रहा। परोपकारिणी सभा के आग्रह पर आपने स्वामी दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश का अंग्रेजी में अनुवाद दिया जो अप्रकाशित ही है। आपने स्वामीजी के कतिपय निम्न लघु ग्रन्थों का भी अंग्रेजी अनुवाद किया। आपका निधन १९७२ में हुआ।

ले. का.—१. व्यवहारभानु २. गोकरुणानिधि (Ocean of Mercy), ३. भ्रमोच्छेदन (Doubts dispelled), ४. काशी शास्त्रार्थ, ५. मेला चाँदापुर (Seasch for the Truth), गोकरुणानिधि के अनुवाद का प्रकाशन सार्वदेशिक सभा ने किया जब कि अवशिष्ट ४ ग्रन्थ परोपकारिणी सभा ने १९७४ में प्रकाशित किये।

रतनलाल शर्मा

आप आर्यसमाज डीडवाना (राजस्थान) के सक्रिय कार्यकर्ता थे। इन्होंने स्व पुरुषार्थ से पौराणिक वातावरण प्रधान डीडवाना नगर में १९५३ में आर्यसमाज के विद्वानों से पौराणिक पण्डितों का शास्त्रार्थ आयोजित किया। आर्य-समाज की ओर से सर्व श्री पं. लोकनाथ तर्कवाचस्पति, पं. बुद्धदेव विद्यालंकार तथा पं. हरिदत्त शास्त्री थे जब कि पौराणिकों की ओर से मुख्य प्रवक्ता पं. माधवाचार्य और सहायक पं. अखिलानन्द थे। श्री शर्मा ने इस शास्त्रार्थ का विवरण 'अपूर्व शास्त्रार्थ' शीर्षक से सम्पादित

कर आर्यसमाज डीडवाना द्वारा १९५४ में प्रकाशित किया।

रतनसिंह दीपसिंह परमार

आप गुजराती भाषा के लेखक हैं। इनके द्वारा रचित 'स्वामी दयानन्द सरस्वती नुं जीवनचरित' रणछोड़लाल मोतीलाल शाह द्वारा १९१६ में प्रकाशित हुआ।

रमणलाल वसन्तलाल देसाई

श्री देसाई गुजराती के प्रख्यात लेखक तथा उपन्यासकार थे। आपने महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व का विवेचन करते हुए एक भावपूर्ण निबन्ध लिखा था। इसे मूल गुजराती रूप में आर्यसमाज सैजपुर बोघा अहमदाबाद ने प्रकाशित किया है। मूलतः यह एक व्याख्यान था, जिसे श्री देसाई ने गुरुकुल सूपा में दिया था।

पं. रमाकान्त शास्त्री

आर्यसमाज कलकत्ता के पुरोहित तथा आचार्य पं. रमाकान्त शास्त्री का जन्म आश्विन शुक्ला ९ (मातृनवमी) १९७२ वि. (१९१५) को सुलतानपुर जिले के झौआरा ग्राम में पं. नागेश्वर उपाध्याय के यहाँ हुआ। प्रारम्भिक अध्ययन के पश्चात् १९३३ में ये कलकत्ता आये और १९४० में त्रिशुद्धानन्द संस्कृत पाठशाला से 'व्याकरणतीर्थ' की परीक्षा उत्तीर्ण की। आर्यसमाज के उत्सवों में विद्वानों के व्याख्यान सुनकर इनका आर्यसमाज के प्रति आकर्षण हुआ और कुछ समय पश्चात् ये आर्यसमाजी बन गये। आप वर्षों तक आर्यसमाज कलकत्ता के आचार्य पद पर रहे। इस अवधि में आपने सनातनी विद्वानों से अनेक शास्त्रार्थ भी किये। पं. रमाकान्त ने 'दयानन्द चरितम्' शीर्षक २० सर्गों का एक महाकाव्य संस्कृत में लिखा था जिसके कुछ अंश आर्यसंसार कलकत्ता में छपे। पूर्ण ग्रन्थ अभी अप्रकाशित ही है। ८ जुलाई १९७० को इनका कलकत्ता में निधन हो गया।

ले.का.—आर्य संकीर्तन तथा वैदिक सत्संग (१९५४)।

पं. रमादत्त त्रिपाठी

नैनीताल निवासी श्री त्रिपाठी का जन्म १९०९ वि. में हुआ। ये आर्यसमाज नैनीताल के मन्त्री पद पर रहे।

ले. का.—१. शिक्षावली-द्वितीय पुस्तक (१८९३), २. शिक्षाध्याय (१९५२ वि.—१८९५), ३. कस्तूरी १९९७), ४. शुभ चिन्तक—मांसाहार के खण्डन में लिखित, ५. सनातनधर्म प्रकाश, ६. श्राद्ध पद्धति, ७. तत्त्वबोध, ८. नीतिसार, ९. बालबोध, १०. अधमोद्धारक (१८९८).

श्री रमेशचन्द्र बंद्योपाध्याय

बंद्योपाध्याय महाशय बंगलादेश के यशोहर नगर के कालेज में प्रोफेसर थे। आपने बंगला भाषा में 'धर्मवीर श्रद्धानन्द' नामक जीवन चरित लिखा है। आपने आर्यसमाज क्या है? (लाला रलाराम लिखित) का बंगला अनुवाद भी किया जो 'आर्यसमाज कहा के बले ? शीर्षक से छपा।

रमेशचन्द्र वर्मा

आपका जन्म २४ जून १९२० को मैनपुरी के प्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता श्री श्यामसुन्दरलाल वकील के यहाँ हुआ। रमेशचन्द वर्मा ने प्रयाग विश्वविद्यालय से एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। वे मैनपुरी में वकालत करते हैं। आपका लिखा 'ऋषि गाथा' शीर्षक काव्य १९५६ में आर्यसमाज कटरा, प्रयाग ने प्रकाशित किया।

व. प.—१८३४, देवी रोड़ मैनपुरी (उ. प्र.)।

पं. रमेशचन्द्र शास्त्री

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के प्रसिद्ध स्नातक तथा प्रतिष्ठित विद्वान् पं. रमेशचन्द्र शास्त्री का जन्म बिजनौर जिले के गंज दारानगर नामक ग्राम में १४ जनवरी १९१५ को हुआ। इनकी शिक्षा ज्वालापुर महाविद्यालय में हुई जहां से आपने १९३३ में विद्याभास्कर की परीक्षा उत्तीर्ण की। अध्ययन समाप्त कर ये राजस्थान में आये और शाहपुरा राज्य में संस्कृत विद्या-

लय के आचार्य पद पर सात वर्ष तक कार्य करते रहे। १९५१ में आप आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मंत्री बने तथा दो वर्षों तक इस प्रान्त में सभा के कार्यों का संचालन किया। १९६४ में आपने आगरा विश्वविद्यालय से संस्कृत विषय लेकर एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। तदनन्तर वनस्थली विद्यापीठ तथा दयानन्द कालेज, अजमेर में संस्कृत के प्राध्यापक पद पर रहे। २४ नवम्बर १९८० को आपका निधन हो गया।

ले. का.—दयानन्द गुरुपथ (पद्य, १९२८), दयानन्द-वाणी—दयानन्द के वचनों का संग्रह (१९५५), विश्व का वैदिक आधार, ईश्वर क्या है और क्या नहीं है?

प्रिंसिपल रलाराम

श्री रलाराम का जन्म होशियारपुर जिले के ग्राम में तलवाड़ा में श्री मेहरचन्द शास्त्री के यहां १९०१ में हुआ। आपकी शिक्षा होशियारपुर, लाहौर तथा जम्मू में हुई। ये डी. ए. वी. कालेज होशियारपुर में अध्यापक पद पर १९२६ में नियुक्त हुए और १९४५ से १९६३ तक इसी कालेज के प्राचार्य भी रहे। आप पंजाव विधानसभा के लिये १९५२, ५७ तथा ६२ में सदस्य चुने गये। १९७५ में इनकी मृत्यु हो गई।

ले. का.—संध्या और स्वाध्याय (२०२९ वि., १९७३)

लाला रलाराम

स्वामी श्रद्धानन्द के साथी और सहयोगी लाला रलाराम ने सर्वप्रथम गुजरांवाला में स्थापित गुरुकुल का संचालन किया।

ले. का.—The Rules and Scheme of Studies of the Gurukulas (1902), AryaSamaj : What Is it ?—२ भाग। लालाजी की इस पुस्तक का गुजराती अनुवाद मोतीलाल त्रिभुवनदास दलाल ने किया जो आर्य-प्रतिनिधि सभा वम्बई से छपा।

श्री रहतूलाल आर्य

सहारनपुर जिले के गंगोह नामक कस्बे के निवासी श्री रहतूलाल अत्यधिक स्वाध्यायशील तथा सुचिन्तित विचारों के धनी थे। इनका जन्म १८७१ में हुआ। आप पं. लेखराम आर्य पथिक के सम्पर्क में आकर १८९५ में आर्यसमाज के सदस्य बने थे। आपने तत्कालीन आर्य-समाजिक पत्रों में अनेक लेख लिखे तथा पुस्तकों का भी प्रणयन किया।

ले. का.—१. सनातन धर्म का मुगालता, २. प्रेम-लीला भाग-१, ३. भागवत रचयिता कौन है?, ४. आइना ए भागवत, (भागवत का खण्डन), ५. शिव पुराण (अपूर्ण), ६. नायाव गुलदस्ता, (आर्य सिद्धान्त विषयक पुस्तक), ७. शास्त्रार्थ प्रदीप (१९४८), ८. पुष्प आर्य-समाज गंगोह (यह श्री रहतूलाल की आत्मकथा है), ९. राज़े तन्दुरुस्ती (१९४७)।

श्रीमती राकेश रानी

सुप्रसिद्ध आर्य महिला पत्रकार श्रीमती राकेश रानी का जन्म ८ जून १९३४ को पं. रामचरण शर्मा के यहाँ बुलन्दशहर जिले के ग्राम गिनौरा में हुआ। १९५० में इनका विवाह प्रसिद्ध लेखक और आर्य पत्रकार पं. भारतेन्द्रनाथ के साथ हुआ। राकेश रानी सदा अपने स्वर्गीय पतिदेव के प्रत्येक साहित्यिक कार्य में सहयोग करती रहीं। वे मासिक जनज्ञान की सम्पादक हैं तथा दयानन्द संस्थान के प्रकाशन कार्य को भी देखती हैं। वे एक प्रगल्भ वक्ता, कुशल लेखिका तथा सफल कवयित्री हैं। जनज्ञान में नियमित रूप में वे सम्पादकीय लिखती हैं।

ले. का.—ऋषि दयानन्द ने कहा था (सम्पादित) ऋषि दयानन्द के चरणों में श्रद्धांजलियाँ (सम्पादित), इस्लाम में क्या है?

व. प.—दयानन्द संस्थान, २२८६ आर्यसमाज मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली ११०००५.

लाला राजकंवर एम. ए.

आप आर्यसमाज लाहौर के सभासद थे। आपने आर्य-समाज लाहौर के वार्षिकोत्सव पर एक अंग्रेजी निवन्ध पढ़ा जिसे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के ट्रैक्ट विभाग ने The True Pilgrim's Progress or A Journey

Towards Heaven. शीर्षक से १९०६ में प्रकाशित किया। इनकी एक अन्य पुस्तक The Beauties of Vedic Dharma वजीरचन्द शर्मा लाहौर द्वारा १९२५ में प्रकाशित हुई।

राजकुमार अनिल

दिल्ली निवासी श्री अनिल ने निम्न ग्रन्थ लिखे हैं—१. राष्ट्र नेता स्वामी दयानन्द (१९७३), २. महान् देशभक्त स्वामी श्रद्धानन्द (१९७३).

राजनाथ पाण्डेय

श्री पाण्डेय का जन्म १ जनवरी १९०८ को वाराणसी जिले के एक ग्राम पिंडरा में हुआ। इनकी शिक्षा इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हुई। अध्ययन समाप्त कर ये गोरखपुर, काठमाण्डो (नेपाल) तथा सागर विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक पद पर रहे।

ले. का.—१. वेद का राष्ट्रगान (अथर्ववेद के पृथ्वी-सूक्त का पद्यानुवाद, १९९३ वि.), २. त्रिकाल जयी—(स्वामी दयानन्द तथा प्रसिद्ध किसान नेता स्वामी सहजानन्द का व्यक्तित्व विश्लेषण)।

राजपाल आर्य

श्री आर्य का जन्म इन्दौर जिले के रंगवासा राऊ नामक ग्राम में २० अगस्त १९२६ को हुआ। पत्रकारिता में रुचि रखने वाले श्री राजपाल को भ्रमण करने का शौक प्रारम्भ से ही रहा है। इन्होंने 'भारतः साइकिल यात्रा' के संस्मरण लिखे हैं जो अभी अप्रकाशित ही हैं। वे महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के उपदेशक थे तथा स्वतन्त्र रूप से भी प्रचार कार्य करते रहे हैं।

ले. का.—आर्यों से निवेदन (२०१९ वि.), आर्यों के चार धाम।

व. प—ग्राम रंगवासा राऊ (इन्दौर).

महाशय राजपाल—आर्य साहित्य के महान् प्रकाशक

राजपाल एण्ड संस के नाम से आर्यसमाज के साहित्य को उन्नत स्तर पर प्रकाशित करके वाले महाशय राजपाल का जन्म अमृतसर के एक निर्धन परिवार में ५ आषाढ़ १९४२ वि. को हुआ था। उनका बचपन का नाम घसीटाराम था। उनके पिता किसी अज्ञातकारण से घर छोड़ कर चले गये, अतः माता तथा छोटे भाई के पालन का भार घसीटाराम पर आ पड़ा। आपने जैसे तैसे मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण की और अमृतसर के एक हकीम फतहचन्द के यहां बारह रुपये मासिक पर नौकरी कर ली। लिखने पढने में उनकी प्रारम्भ से ही रुचि थी। १९०६ में आप महात्मा मुन्शीराम द्वारा प्रकाशित सद्धर्मप्रचारक साप्ताहिक पत्र में क्लर्क बन गये। इस समय उन्हें २५ रुपये मासिक वेतन मिलता था। कालान्तर में जब महाशय कृष्ण ने अपना साप्ताहिक पत्र 'प्रकाश' लाहौर से निकाला तो आप इस पत्र के मैनेजर के रूप में नियुक्त हो गये। 'प्रकाश' का कार्य आपने पूर्ण परिश्रम और लगन से किया।

१९११ में इनका विवाह हुआ और जब गृहस्थ के कारण घर का खर्च बढा तो इन्होंने सरस्वती आश्रम और आर्य पुस्तकालय के नाम से एक प्रकाशन संस्था आरम्भ की। स्वामी सत्यानन्द की पुस्तक 'सत्योपदेश माला' आपके पुस्तकालय की प्रथम प्रकाशित रचना थी। फिर तो महाशय राजपाल (अमृतसर में रहते हुए घसीटाराम ने अपना नाम बदल कर राजपाल रख लिया था) ने आर्यसमाज के साहित्य प्रकाशन में युगान्तर उपस्थित कर दिया। उन्होंने उर्दू, हिन्दी और अंग्रेजी में सैंकड़ों पुस्तकें प्रकाशित कीं। सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि तथा ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के उर्दू अनुवाद भी सहस्रों की संख्या में प्रकाशित किये।

१९२४ में कादियानी मुसलमानों के प्रकाशन गृह से 'उन्नीसवीं सदी का महर्षि' शीर्षक एक पुस्तक प्रकाशित हुई जिसमें ऋषि दयानन्द के जीवन पर घृणित आक्षेप थे। इसके उत्तर में १९२४ में ही महाशय राजपाल ने 'रंगीला रसूल' नामक पुस्तक प्रकाशित की। जब महात्मा गांधी ने इस पुस्तक के विरोध में लिखा तो मुसलमानों में इसके विरुद्ध आन्दोलन की सी स्थिति उत्पन्न हो गई। अन्ततः

सरकार की ओर से महाशय राजपाल पर अभियोग चलाया गया किन्तु अदालत से वे बरी हो गये। परन्तु मुसलमानों की उनके प्रति शत्रुता कायम रही। उन्हें मार डालने की धमकियां दी गईं। अन्ततः ६ अप्रैल १९२९ को इल्मदीन नामक मुसलमान ने दूकान पर बैठे हुए महाशय राजपाल पर छुरे का प्रहार किया और उन्हें शहीद बना दिया। इल्मदीन को फांसी का दण्ड मिला।

महाशय राजपाल ने 'भक्ति दर्पण' के नाम से एक सुन्दर ग्रन्थ का संकलन किया है, जिसकी अब तक लाखों प्रतियां छप चुकी हैं। १९२८ तक इसके ग्यारह संस्करण निकल चुके थे और २८ वां संस्करण २०२४ वि. में निकला था। देश के स्वतन्त्र हो जाने के पश्चात् राजपाल एण्ड सन्स ने अपना प्रकाशन व्यवसाय दिल्ली में प्रारम्भ किया। अब उनका क्षेत्र आर्यसमाज के साहित्य तक सीमित न रह-कर हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं से सम्बन्धित ग्रन्थों को प्रकाशित करने के कारण अधिक विस्तृत हो गया। आर्यसमाज के साहित्य प्रकाशन में महाशय राजपाल का योगदान चिरस्मरणीय रहेगा।

डा. राजपाल नैन

डा. नैन का जन्म हिसार जिले के हसनगढ़ ग्राम में ५ अक्टूबर १९५९ को हुआ। पंजाब विश्वविद्यालय से १९७३ में शास्त्री करने के पश्चात् इन्होंने इसी विश्व-विद्यालय से १९७९ में संस्कृत में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। दयानन्द शोधपीठ, पंजाब विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. करने के लिये इन्होंने 'मनुस्मृति में राजधर्म' विषय चुना और १९८६ में इन्हें उक्त उपाधि प्राप्त हुई।

व. प.—७७९ अर्बन एस्टेट-२, हिसार (हरयाणा)

राजपालसिंह शास्त्री

शास्त्रीजी का जन्म सहारनपुर जिले के ग्राम नगली में पं. सूर्यदेव के यहाँ २६ जनवरी १९२३ को हुआ। इनकी शिक्षा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में हुई। पंजाब-विश्वविद्यालय की शास्त्री परीक्षा भी आपने १९४४ में उत्तीर्ण की। विगत अनेक वर्षों से आप मधुरलोक मासिक का सम्पादन कर रहे हैं। मधुर प्रकाशन के माध्यम से आपने आर्य साहित्य का प्रकाशन भी किया है।

ले. का.—सदाचार बोध, मधुर शिष्टाचार और सदाचार, अमर क्रान्तिकारी पं. रामप्रसाद बिस्मिल की आत्मकथा (सम्पादन)

व. प.—मधुर प्रकाशन, २८०४, गली आर्यसमाज, सीताराम बाजार दिल्ली ११०००६

मुन्शी राजबहादुर श्रीवास्तव

आप मथुरा जिले के चौमुहा ग्राम के जमींदार थे। वहाँ से आकर आप मथुरा की मातागली में निवास करने लगे।

ले. का.—१. श्री मद्भागवत तत्त्वमीमांसा (१९९५ वि.) इस पुस्तक के खण्डन में वृन्दावन के श्री कृष्णानन्ददास वैरागी ने 'भागवत तत्त्व विमर्श' पुस्तक लिखी। २. भगवान् श्रीकृष्ण और श्रीमद्भागवत (१९९५ वि.)। आपके दो अन्य ग्रन्थ थे—वानर जाति-निर्णय और रावण के दस सिर और बीस भुजा।

पं. राजरत्नाचार्य

तेलुगु भाषी जनता के लिये आर्यसमाज के साहित्य को उपलब्ध कराने का कार्य पं. राजरत्नाचार्य ने किया। आप १९१० में आर्यसमाज में प्रविष्ट हुए। आप हिन्दी, संस्कृत, तथा तेलुगु के अच्छे विद्वान् थे। आपने सत्यार्थप्रकाश के १२, १३ तथा १४वें समुल्लास का तेलुगु में अनुवाद किया। संस्कारविधि तथा आर्य पर्व पद्धति का भी आपने तेलुगु में अनुवाद किया। हिन्दी तथा तेलुगु में रचित आपके आर्य सिद्धान्त विषयक समस्त ग्रन्थों की संख्या २० बताई जाती है। आप आर्यसमाज सुलतान बाजार हैदरा-बाद के उपप्रधान रहे। ९ अगस्त १९७० को आपने संन्यास की दीक्षा ली तथा स्वामी ओमानन्द सरस्वती नाम ग्रहण किया।

राजवीर आर्य

भारत के स्वाधीनता आन्दोलन तथा हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह में भाग लेने वाले राजवीर आर्य का जन्म

२२ अगस्त १९३० को आंध्रप्रदेश के वारंगल नगर में श्री वीरप्पा तथा वीरलक्ष्मी देवी के यहाँ हुआ। इन्होंने विद्यावाचस्पति तथा साहित्यरत्न की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। आप आर्यसमाज वारंगल के प्रधान के पद पर कई वर्षों तक रहे तथा हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर आपको साहित्य विभूषण की उपाधि से सम्मानित किया गया।

ले. का.—प्रौढ़ों के लिये राष्ट्रभाषा की पाठ्यपुस्तकें तथा आर्य सत्याग्रह अर्ध शताब्दी समारोह हैदराबाद स्मारिका का सम्पादन (१९८९).

व. प.—११-२२-५१ नरेन्द्रनगर, वारंगल ५०६००२ (आं. प्र.)

पं. राजवीर शास्त्री

वैदिक शास्त्रों के प्रौढ़ विद्वान् पं. राजवीर शास्त्री का जन्म गाजियाबाद जिले के फजलगढ़ ग्राम में ४ अप्रैल १९३८ को हुआ। आपके पिता का नाम श्री शिवचरण-दास था। आपका अध्ययन गुरुकुल झज्जर में हुआ। आपने मेरठ विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए. तथा वाराणसी से आचार्य (प्राचीन व्याकरण) परीक्षा उत्तीर्ण की है। आप दिल्ली प्रशासन के अधीन संस्कृत अध्यापन करते हैं। आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली के ग्रन्थ लेखन, सम्पादन एवं संशोधन के कार्यों में आपका सहयोग प्राप्त होता रहा है, जिसके फलस्वरूप अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ प्रकाश में आ सके हैं। आप 'दयानन्द सन्देश' मासिक का विगत कई वर्षों से सम्पादन कर रहे हैं।

ले. का.—**स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों का सम्पादन:**— संस्कारविधि (२०३४ वि.), ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, उपदेश मंजरी (२०३७ वि.), आर्याभिविनय, दयानन्द-वैदिककोष (विमर्श टीका सहित, २०२३ वि.), यजुर्वेद-देवतार्थ विषय सूची (पं. सुदर्शनदेव शास्त्री के सहलेखन में, १९७२), महर्षि दयानन्द वेदार्थ प्रकाश (२०३७ वि.), उपनिषद् भाष्य—ईश, केन, कठ (२०३७ वि.), योग-मीमांसा, पातंजल योगदर्शन भाष्यम् (२०३९ वि.), विशुद्ध मनुस्मृति (२०३८ वि.), षड्दर्शन पदानुक्रमणिका (१९७८)

व. प.—भूपेन्द्रपुरी, मोदीनगर (उ. प्र.)

पं. राजाराम शास्त्री

वैदिक शास्त्रों के प्रसिद्ध विद्वान् तथा अनेक शास्त्र-ग्रन्थों के टीकाकार पं. राजाराम शास्त्री का जन्म १८६७ में अविभाजित पंजाब के जिला गुजरांवाला के अन्तर्गत किला मिहांसिंह नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम पं. सूबामल था, जिनके सान्निध्य में राजाराम ने अपना प्रारम्भिक अध्ययन किया। प्राइमरी श्रेणी उत्तीर्ण कर वे छात्र-वृत्ति पाने लगे। इन्हीं दिनों एक अंग्रेजी शिक्षित नवयुवक को ईसाई बनते देखकर पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली से इन्हें विरक्ति हो गई और वे संस्कृत पढ़ने लगे। इसी बीच स्वामी दयानन्द रचित सत्यार्थप्रकाश पढ़ने का अवसर इन्हें मिला, जिससे संस्कृत शास्त्रों के गहन अध्ययन की रुचि जागृत हुई। इसी बीच आपने व्याकरण, काव्य, न्याय आदि का विधिवत् अध्ययन किया और शांकर भाष्य सहित उपनिषदों का अनुशीलन कर 'महा-भाष्य' पढ़ने के लिये जम्मू चले गये।

१८८९ में अध्ययन समाप्त कर घर लौटे तथा एक हिन्दी पाठशाला का संचालन करने लगे। तदुपरान्त अमृतसर चले गये और वहाँ आर्यसमाज द्वारा संचालित विद्यालय में अध्यापन कार्य किया। १८९२ में डी. ए. वी. कालेज लाहौर के यशस्वी प्रिंसिपल महात्मा हंसराज ने इन्हें लाहौर बुलाकर डी. ए. वी. स्कूल में संस्कृत का अध्यापक नियत किया। दो वर्ष पश्चात् १८९४ में ये डी. ए. वी. कालेज लाहौर में संस्कृत प्राध्यापक नियुक्त हुए। अगस्त १८९९ में कालेज की ओर से ६० रु. मासिक की छात्रवृत्ति लेकर मीमांसादि दर्शनों का अध्ययन करने ये काशी चले गये। वहाँ उन्होंने महामहोपाध्याय पं. शिवकुमार शास्त्री से मीमांसा एवं वेद तथा पं. भोलानाथ सोमयाजी से यज्ञ प्रक्रिया का विधिवत् अध्ययन किया। १९०१ में अध्ययन समाप्त कर लाहौर लौट आये। इस बार कालेज की प्रबन्ध समिति ने उन्हें विभिन्न शास्त्रीय ग्रन्थों के भाषान्तर का कार्य सौंपा। तदनुसार पं. राजा-राम शास्त्रों पर भाष्य एवं टीका लिखने में संलग्न हो गये।

१९०४ में आहिताग्नि राय शिवनाथ (अधिशाषी अभियन्ता) के सहयोग से इन्होंने आर्ष ग्रन्थावली नामक

एक मासिक प्रकाशन प्रारम्भ किया। इसके अन्तर्गत इनके द्वारा किए हुए शास्त्र ग्रन्थों के भाष्य प्रकाशित हुए। यद्यपि पं. राजाराम ने आर्यसमाज तथा उससे सम्बद्ध शिक्षण संस्थाओं में रहकर ही अपना लेखन कार्य किया, किन्तु ऐसा लगता है कि उनके विचार स्वामी दयानन्द के शास्त्रीय सिद्धान्तों से पूर्णतया मेल नहीं खाते थे। उत्तरोत्तर उनके विचार आर्यसमाज से भिन्न दिशा की ओर बढ़ते गये। मई १९३१ में पं. विश्वबन्धु के सहयोग से इन्होंने 'निरुक्तकार यास्क वेद में इतिहास मानते थे, या नहीं' विषय पर पं. भगवद्दत्त, पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, पं. प्रियरत्न आर्ष, ठाकुर अमरसिंह आदि से एक शास्त्रार्थ किया जो १८ मई से २२ मई १९३१ तक महात्मा हंसराज की अध्यक्षता में लाहौर में हुआ। पं. राजाराम का निधन १८ अगस्त १९४८ को हुआ।

ले. का.—अथर्ववेद भाष्य—यह भाष्य विषयनिर्देश, स्वरसहित मंत्रपाठ, पुनः शब्दार्थ एवं छन्द, ऋषि तथा विनियोग निर्देशक टिप्पणियों सहित किया गया है (१९८६ वि.)। भाष्य चार भागों में समाप्त हुआ है। भाष्यकार ने स्वामी दयानन्द की वेदार्थ प्रणाली को न अपना कर सायण एवं पाश्चात्य वेदार्थविदों की शैली का ही अनुसरण किया है।

वेदव्याख्या विषयक अन्य ग्रन्थ—वेदोपदेश भाग—१ (१९०४), वेदोपदेश भाग—२ (१९०५), स्वाध्याय यज्ञ—(१९१०), शताब्दी शतक (प्रथम शतक) ईश्वर महिमापरक १०० वेद मन्त्रों की व्याख्या (१९८१ वि.), उपदेश कुसुमांजलि भाग—१ (१९०८), भाग—२ (१९०९), भाग—३ अप्रैल (१९०९), वेदप्रकाश भाग—१ (१९२९)—(१९८५ वि.), वेदप्रकाश भाग—२—अथर्ववेदोक्त पृथ्वी सूक्त की व्याख्या (१९२९)। वेदप्रकाश भाग—३—विभिन्न वैदिक सूक्तों की सुबोध व्याख्या। स्वाध्याय कुसुमांजलि (वेदार्थप्रकाश), वेद शिक्षक, वेद-प्रवेश (३ भाग), उपदेश सप्तक, वेद और महाभारत के उपदेश, वेद और रामायण के उपदेश, वेद, मनु और गीता के उपदेश।

वेदांग विषयक ग्रन्थ—वेदभाष्यभूमिका (१९८५ वि.), निरुक्त टीका, कौत्सव्य निघण्टु, अथर्ववेद का निघण्टु, वासिष्ठ धर्मसूत्र, पारस्कर गृह्य-सूत्र, सामवेदीय आर्ष क्षुद्र सूत्रम् १९७८ वि. (१९२१), औशनस धनुर्वेद संकलनम्।

दर्शनशास्त्र विषयक ग्रन्थ—न्यायदर्शन (वात्स्यायन-भाष्य का हिन्दी अनुवाद) १९७८ वि. (१९२१), वेदान्त-दर्शन, योगदर्शन, साँख्य दर्शन, कपिल कृत तत्त्वसमास, पंचशिख रचित सांख्य सूत्र तथा ईश्वरकृष्ण प्रणीत सांख्य-कारिका (१९१२), वैशेषिक दर्शन।

दर्शन विषयक स्फुट ग्रन्थ—आर्य दर्शन (१९१८), न्याय-प्रवेशिका, नवदर्शनसंग्रह (चार्वाक, बौद्ध तथा जैन सहित षड्दर्शनों का परिचय)। उपनिषद् साहित्य—ईश से श्वेताश्वतर पर्यन्त ११ उपनिषदों का भाष्य।

उपनिषद् विषयक अन्य ग्रन्थ—उपनिषदों की भूमिका, उपनिषदों की शिक्षा (६ खण्डों में) १९०७।

अन्य शास्त्र ग्रन्थों की टीका तथा भाष्य—मनुस्मृति टीका, वाल्मीकीय रामायण (भाषानुवाद), महाभारत (२ भाग), टीका १९७३ वि. (१९१६), श्रीमद्भगवद्गीता भाष्य, गीता गुटका (सरल भाषा टीका), गीता हमें क्या सिखलाती हैं ?

इतिहास एवं जीवन चरित—सूर्यवंश, नलदमयन्ती, द्रौपदी का पति, शंकराचार्य का जीवनचरित और उनकी शिक्षा, १९०२.

हिन्दी तथा संस्कृत भाषा एवं व्याकरण विषयक ग्रन्थ—

संस्कृत प्रवेशिका, राजव्याकरण, बाल व्याकरण, शब्द-शास्त्र, पंजाबी संस्कृत शब्द शास्त्र, राजकोष (हिन्दी) संस्कृत प्रथम पुस्तक, हिन्दी प्रथम पुस्तक, हिन्दी गुरमुखी।

स्फुट ग्रन्थ—आर्य जीवन (१९१८), दिव्य जीवन (१९१८) सफल जीवन, आर्यपंचमहायज्ञ पद्धति (१९१०), वैदिक आदर्श, वैदिक स्तुति प्रार्थना, शास्त्र रहस्य २ भाग, शुद्धि शास्त्र, उपदेश सप्तक, प्रार्थना पुस्तक, मनुष्य समाज। अवेस्ता का संस्कृतानुवाद—पारसी मत के मान्य ग्रन्थ अवेस्ता के संस्कृत अनुवाद का प्रशंसनीय प्रयत्न पं. राजाराम द्वारा किया गया था। इसका प्रथम भाग—'अवेस्ता संस्कृतच्छाया, हुआ मयश्तयस्नहं पर्यन्त १ वैशाख १९९१ वि. को प्रकाशित हुआ। इसका उपोद्घात अत्यन्त महत्त्व-

पूर्ण है। वैदिक संस्कृत के शब्द जिन नियमों के अनुसार अवेस्ता की भाषा में परिवर्तित हुए हैं, उनका संक्षेप में निरूपण हुआ है। कोई भी संस्कृतज्ञ इन नियमों के द्वारा अवेस्ता को संस्कृत में रूपान्तरित कर सकता है। इसके साथ ही अवेस्ता की भाषा के विशिष्ट उच्चारण पर भी प्रकाश डाला गया है।

पंडित राजेन्द्रजी, अतरौली

महान् स्वाध्यायशील तथा सैद्धान्तिक ग्रन्थों के सफल प्रणेता पंडित राजेन्द्रजी का जन्म मार्गशीर्ष शुक्ला ४ सं. १९५३ वि. (१८९६) को अलीगढ़ जिले के अतरौली नामक कस्बे में एक धनाढ्य जमींदार ब्राह्मण श्री मथुराप्रसाद के यहाँ हुआ। वे आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता, अत्यन्त स्वाध्यायशील तथा सिद्धान्त पालन में अत्यन्त कट्टर थे। आप वर्षों तक आर्यसमाज अतरौली के मन्त्री तथा प्रधान रहे। आर्यसमाज अतरौली के नवीन भवन का निर्माण उन्होंने स्वयं का धन लगाकर कराया। राजेन्द्रजी अतिथि सत्कारपरायण थे तथा वैदिक धर्मप्रचार हेतु सहस्रों रुपये निस्संकोच व्यय कर देते थे। यद्यपि उनका नियमित शिक्षण इण्टरमीडियेट तक ही हुआ था, परन्तु स्वाध्याय से उन्होंने हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी तथा संस्कृत की अच्छी योग्यता अर्जित कर ली थी। हिन्दी के प्रसिद्ध समालोचक डॉ. नगेन्द्र पं. राजेन्द्रजी के ही पुत्र हैं। ७३ वर्ष की आयु में १ सितम्बर १९६९ को उनका निधन हुआ।

ले. का.—१. भारत में मूर्तिपूजा (२००७ वि.), २. महर्षि दयानन्द के पुण्य संस्मरण (२०१५ वि.), ३. पूर्वजन्म स्मृति (२०१२ वि.), ४. भारतीय संस्कृति के तीन प्रतीक—ओम्, आर्य, नमस्ते, ५. ब्राह्मण समाज के तीन महापातक—मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष तथा मूर्तिपूजा, ६. हरिनाम संकीर्तन (२०१३ वि.), ७. नमस्ते बनाम नमस्कार, ८. सनातन धर्म (२०२३ वि.), ९. सर्वधर्म समन्वय, १०. शाँकर मायावाद, ११. आर्यसमाज का नवनिर्माण (२०१९ वि.), १२. राधाकृष्ण (१९६०)। पं. राजेन्द्रजी गीता को अप्रामाणिक, अनार्ष तथा महाभारत में कालान्तर में प्रक्षिप्त मानते थे। उन्होंने गीता के खण्डन में निम्न पुस्तकें लिखी थीं—१. गीता विमर्श (२०१६ वि.), २. ऋषि दयानन्द और गीता, ३. गीता की पृष्ठ भूमि (२०१९ वि.), ४. शुद्धगीता—असत्य में सत्य की खोज (प्रो. भवानीलाल भारतीय कृत 'शुद्ध गीता' का समालोचनात्मक विवेचन, (२०२५ वि.)।

राजेन्द्रकृष्ण कुमार

श्री कुमार एम. डी. कालेज मोगा के प्रिंसिपल थे। आपने श्री रतनलाल भाटिया और श्री रमेशचन्द्र शास्त्री के संयुक्त लेखन में The Light of the Vedas शीर्षक ग्रन्थ लिखा जो डी. एम. कालेज मोगा से १९३३ में छपा। इनकी एक अन्य पुस्तक The Light of the Vedas (सामवेद) १९४९ में छपी। इसके सहलेखक रतनलाल भाटिया तथा सुन्दरदास शास्त्री थे।

प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

आर्यसमाज के सुयोग्य शोध विद्वान् तथा इतिहासज्ञ प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु का जन्म २८ मई १९३२ को स्यालकोट जिले के मालोमेह ग्राम में हुआ था। इनके पिता महाशय जीवनमल अपने ग्राम के प्रथम आर्यसमाजी थे। इनकी माता का नाम श्रीमती हरदेवी था। श्री जिज्ञासु ने एम. ए. (इतिहास) की परीक्षा दयानन्द कालेज हिसार से उत्तीर्ण की। वे डी. ए. वी. कालेज शोलापुर में इतिहास के प्रवक्ता रहे। अब अनेक वर्षों से डी.ए.वी. महिला कालेज, अबोहर में इतिहास के प्राध्यापक हैं। आपने आर्यसमाज के दिवंगत महापुरुषों, घटनाओं तथा कार्यों के सम्बन्ध में महत्त्वपूर्ण अनुसंधानात्मक कार्य किया है।

ले. का.—१. वीर संन्यासी स्वामी स्वतन्त्रतानन्द की जीवनी (१९६६), २. एक मनस्वी जीवन (पं. मनसाराम का जीवनचरित (१९७२), ३. नींव के पत्थर (१९७२), ४. प्रेरणा कलश (१९७२), ५. प्रेरणा कुटी (१९७२), ६. अतीत के झरोखे से (१९७२), ७. मौलिकभेद (१९६८), ८. महर्षि का एक्यवाद (१९७१), ९. अखण्ड ज्वाला (१९७१), १०. मूल की भूल (१९७३), ११. हृदय तंत्री २ भाग (कविता संग्रह), १२. महर्षि का विषपान : अमर बलिदान (२०२९ वि.), १३. लौहपुरुष

स्वामी स्वतन्त्रानन्द (१९७५) संशोधित एवं परिवर्धित, १४. वीतराग स्वामी स्वतन्त्रानन्द (१९७७), १५. रक्तसाक्षी पं. लेखराम (१९७८), (संशोधित और परिवर्धित संस्करण, १९८८), १६. पं. लेखराम और उनका बलिदान, १७. रक्तसाक्षी चिरंजीवलाल (२०३४ वि.), महर्षि दयानन्द और जनजागरण, १८. पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय : जीवनी एवं विचार दर्शन (१९८१), १९. रक्तसाक्षी मुरलीमनोहर (सम्पादित, १९८३), २०. व्यक्ति से व्यक्तित्व (पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय का जीवनचरित २०४० वि.), २१. वैदिक अध्यात्म सुधा (१९८०), २२. छत्रपति शिवाजी का राज्याभिषेक, २३. सत्य सांई बाबा, २४. जगराता, २५. युग की करवट, २६. बलिदान वीणा, २७. उमंग-तरंग, २८. आर्यों की तान, २९. आदर्श माता-पिता (१९८२), तड़पवाले : तड़पाती जिनकी कहानी २ भाग, (आर्य पुरुषों के रोचक एवं शिक्षाप्रद संस्मरण), ३०. एकता का शंखनाद, ३१. धर्म बोध-विवेकविहार (स्फुट निबंध संग्रह), ३२. पंजाब केसरी लाला लाजपतराय, ३३. तरंगित हृदय (भजन संग्रह), ३४. वीर हकीकतराय (जीवनचरित), ३५. बंदीघर के विचित्र अनुभव (स्वामी श्रद्धानन्द के जेल विषयक संस्मरणों का सम्पादन), ३६. सुखी-गृहस्थ, ३७. पं. गुरुदत्त। ३८. स्वामी दर्शनानन्द (जीवनी) महाराजा हंसराज ग्रन्थावली ४ भाग (प्रथम भाग में जीवनचरित तथा अन्य भागों में महात्मा हंसराज द्वारा रचित ग्रन्थ तथा लेख)

व. प.—वेदसदन, नई सूरज नगरी, अबोहर (पंजाब)

राजेन्द्रप्रसाद आर्य

फूलपुर (जिला आजमगढ़) के निवासी राजेन्द्रप्रसाद आर्य श्री रामानन्द आर्य के पुत्र हैं। आपने साहित्य रत्न तथा विद्यावाचस्पति आदि उपाधियों के अतिरिक्त योग-विज्ञान तथा प्राकृतिक चिकित्सा का भी अध्ययन किया है। आप पर्याप्त समय से आर्यसमाज की गतिविधियों में भाग लेते रहे हैं तथा आजमगढ़ जिले की आर्य उपप्रतिनिधि सभा के उपप्रधान और आर्यवीर दल के उपसंचालक रहे हैं।

ले. का.—विभिन्न पद्य रचनाओं के अतिरिक्त चरित्र-निर्माण की आवश्यकता, दीपावली और द्यूत-क्रीड़ा, सगुण-निर्गुण समीक्षा, आर्यवीर दल और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ आदि लघु ग्रन्थ।

व. प.—आर्यसमाज फूलपुर, (जिला आजमगढ़) २७६३०४.

राजेन्द्रनाथ मल्लिक

आप हावड़ा जिले के ग्राम आन्द्रल के निवासी थे। आपने बंगला में 'भाषा ओ ज्ञान जिज्ञासा' शीर्षक ग्रन्थ लिखा।

डा. राजेन्द्र वर्मा

व्यवसाय के चिकित्सक किन्तु हृदय से कवि डा. वर्मा कोटा [राजस्थान] के निवासी थे। इनके पिता का नाम श्री रसिकविहारीलाल था। आप आर्यसमाज गुमानपुर कोटा के कार्यकर्ता रहे थे।

ले. का.—देवर्षि दयानन्द (महाकाव्य) स्वामी श्रद्धानन्द काव्य।

डा. राणाप्रतापसिंह गन्नौरी

राणाप्रतापसिंह का जन्म पाकिस्तान के जिले मुजफ्फरगढ़ की तहसील अलीपुर के ग्राम जहानपुर में ३ जून १९३८ को श्री जयमुनिलाल भूटानी के यहाँ हुआ। देश विभाजन के पश्चात् ये भारत आ गये और सोनीपत जिले के कस्बा गन्नौर में निवास करने लगे। राणाप्रतापसिंह ने हिन्दी, संस्कृत तथा उर्दू में एम. ए. किया तथा 'हिन्दी एवं उर्दू काव्य में राष्ट्रीय भावना : एक तुलनात्मक अध्ययन' शीर्षक शोध ग्रन्थ लिखकर पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। ये उर्दू के अच्छे कवि हैं। इन्होंने महाकवि कालिदास के मेघदूत का उर्दू में पद्यानुवाद किया है। विगत कई वर्षों से आप आर. के. एस. डी. कालेज, कैथल में हिन्दी के प्राध्यापक हैं।

ले. का.—१. क्रान्ति दूत महर्षि दयानन्द (स्वामी दयानन्द के जीवन पर लिखा गया हिन्दी काव्य, १९७५), २. तरंगें—(उर्दू काव्य संग्रह), ३. रश्मियाँ-(हिन्दी काव्यसंग्रह)

व.प.—प्रोफेसर्स कालोनी, कैथल (हरयाणा)-१३२०२७

श्री राधाकृष्ण आर्य

पटियाला जिले के कस्बा समाना के निवासी श्री आर्य ने जैनमत की आलोचना से सम्बन्धित निम्न साहित्य लिखा—

जैनमत विचार उर्दू तथा हिन्दी (१९६५), उत्तर-प्रकाश-मुनि श्री धनराज की पुस्तक प्रश्नप्रकाश का उत्तर (उर्दू में)।

राधाकृष्ण मेहता

उर्दू भाषा में आर्यसमाज विषयक उत्कृष्ट साहित्य का प्रणयन करने वाले मेहता राधाकृष्ण स्वामी दयानन्द के समकालीन थे।

ले. का.—सत्यार्थप्रकाश का उर्दू तर्जुमा (१८९७), मेहताजी ने स्वामी दयानन्द की सुप्रसिद्ध कृति सत्यार्थ-प्रकाश का उर्दू अनुवाद किया। यह सर्वप्रथम १९०५ में सर्वहितकारी प्रेस लाहौर से छपा। इसके अन्य संस्करण आर्य पुस्तकालय लाहौर (१९३०), आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा लाहौर (१९४३) तथा लाजपतराय एण्ड संस, लाहौर (चतुर्थ संस्करण) ने भी प्रकाशित किये। स्वामी दयानन्द और उनकी तालीम (जीवनचरित), संध्या (उर्दू), तारीखे आर्यसमाज—आर्यसमाज के प्रथम ३५ वर्षों का इतिहास (१९०३)। ब्रह्मसमाज की समीक्षा में मेहता जी ने निम्न पुस्तकें लिखीं—आर्यसमाज और ब्रह्मसमाज की तालीम (१८८८), इसरार ए ब्रह्मपन्थ ('स्वामी दयानन्द और उनका नया पंथ' शीर्षक पुस्तक का उत्तर) (१८८६), ब्रह्मसमाज की असलियत (१८८८), शिवनारायण की शेखी का जवाब-देवसमाज के संस्थापक शिवनारायण (सत्यानन्द) अग्निहोत्र के प्रतिवाद में (१८८८), इल्हाम (१८८८), सबूत तनासुख (पुनर्जन्म की सिद्धि में लिखी गई पुस्तक)।

श्री राधेश्याम आर्य

श्री आर्य का जन्म सुलतानपुर जिले के ग्राम पूरे दरियावलाल में श्री भगवतप्रसाद श्रीवास्तव के यहाँ १४ फरवरी १९४९ को हुआ। आपकी शिक्षा लखनऊ विश्वविद्यालय से एम. ए., एल. एल. बी. तक हुई और वे विगत कई वर्षों से मुसाफिर खाना (सुलतानपुर) में वकालत कर रहे हैं। श्री आर्य सहृदय कवि हैं। आर्यसमाज, ऋषि दयानन्द तथा अन्य विषयों पर लिखित आपकी सहस्रों कवितायें विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छप चुकी हैं। आप रश्मिरथी नामक एक द्विमासिक पत्रिका भी निकालते हैं।

ले. का.—भरतभूमि (१९८१), हिमालय (१९८२), विश्ववंद्य बापू, श्रद्धा के फूल, आर्यसमाज, महर्षि दयानन्द।

व. प.—डा. मुसाफिरखाना (सुलतानपुर).

डा. राधेश्याम पारीक

जयपुर निवासी डा. पारीक का जन्म १९२३ में हुआ। आपने राजनीति शास्त्र में एम. ए. किया तथा राजस्थान की स्कूल शिक्षा सेवा में प्रविष्ट हुए। आपने राजस्थान विश्वविद्यालय में राजनीति शास्त्र के अध्यक्ष डा. शान्तिप्रसाद वर्मा के निर्देशन में पी-एच.डी के लिये शोध कार्य किया और १९६५ में 'The Contribution of AryaSamaj in the making of Modern India'. विषय में पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। यह शोध-प्रबन्ध सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने १९७३ में प्रकाशित किया। डा. पारीक १९७८ में प्राचार्य के पद से कार्य मुक्त हुए।

व. प.—जमना डेयरी, अजमेर रोड, जयपुर.

डा. रामकृष्ण आर्य

डा. आर्य का जन्म २४ नवम्बर १९४२ (मार्गशीर्ष कृष्णा २ सं. १९९९ वि.) को मध्यप्रदेश के धार जिले के काछी बड़ोदा ग्राम में श्री गोविन्दराम आर्य के यहां हुआ। स्वाध्याय के बल पर इन्होंने विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन से 'प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति' विषय लेकर एम. ए. किया। १९६८ में ये आर्यसमाज में प्रविष्ट हुए और तब से लेकर अद्य पर्यन्त वैदिक धर्म प्रचार में अनवरत संलग्न हैं। आपने 'महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों में प्रतिपादित आर्थिक विचारधारा' विषय पर दयानन्द शोध पीठ, पंजाब

विश्वविद्यालय से १९९० में पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की है। इस महत्त्वपूर्ण कार्य को सम्पन्न करने के लिये आपने ऋषि दयानन्द के आर्योद्देश्यरत्नमाला जैसे लघु ग्रन्थ से लेकर वेदभाष्य तक के विशाल साहित्य का तलस्पर्शी अध्ययन किया तथा स्वतन्त्र निष्कर्ष प्रस्तुत किये। फलतः दयानन्द का आर्थिक दृष्टिकोण प्रथम बार सुचिन्तित रूप से पाठकों के समक्ष आ सका है। ये श्रीराम फर्टिलाइजर्स कोटा में श्रमिक (Crane Lifter) के रूप में कार्यरत हैं।

अन्य लेखन—गायत्री परिवार : एक समीक्षा (१९७८) तथा नैतिकता के मूल तत्त्व। इनके अनेक खोजपूर्ण लेख आर्यसमाज की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रायः प्रकाशित होते हैं।

व. प.—४ भ २७ विज्ञाननगर कोटा, (राजस्थान) ३२४००५.

श्री रामकृष्ण भारती

श्री भारती का जन्म कार्तिक संक्रान्ति १९७४ वि. (१२ नवम्बर १९१७) को पाकिस्तान के जिला मुजफ्फरगढ़ के ग्राम दायरा दीनपनाह (तहसील कोट अद्दू) में हुआ। इनके पिता का नाम श्री बालकृष्ण था जो बादामी बाग लाहौर रेलवे स्टेशन पर स्टेशन-मास्टर थे। श्री रामकृष्ण की शिक्षा पंजाब में हुई जहाँ से आपने शास्त्री तथा विद्या वाचस्पति (दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय) की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। कालान्तर में देश विभाजन के पश्चात् आपने दिल्ली से एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपने अनेक शिक्षण संस्थानों में अध्यापन का कार्य किया। १९५६ से १९७५ तक भारत सरकार के गृह विभाग में राजभाषा प्रकोष्ठ में राजपत्रित कर्मचारी के रूप में सेवा की।

ले. का.—१. श्रीमद्भगवद्गीता : पद्यानुवाद (१९६०), २. आर्याभिविनय : पद्यानुवाद (१९६०), ३. भ्रष्टाचार (१९६४), ४. ज्ञानदीपिका (१९७८), ५. वैदिक विवाह-पद्धति पद्यानुवाद (१९७८), ६. आपने ऋग्वेद के १००० मंत्रों का पद्यानुवाद किया है, जो अभी अप्रकाशित है।

व. प.—तपोवन (नालापानी), देहरादून।

पं. रामगोपाल विद्यालंकार

सुप्रसिद्ध पत्रकार और लेखक पं. रामगोपाल विद्यालंकार का जन्म १९०० में बिजनौर जिले के हल्दौर कस्बे में हुआ। इनके पिता पं. भवानीप्रसाद थे जो गुरुकुल कांगड़ी में वर्षों तक अध्ययन कर चुके थे। रामगोपालजी को शिक्षा हेतु गुरुकुल कांगड़ी में प्रविष्ट कराया। यहां से आपने १९७७ वि. (१९२१), में विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की। इनका पत्रकार जीवन नागपुर से प्रकाशित होने वाले 'प्रणवीर' के सम्पादन से आरम्भ हुआ। कालान्तर में ये कलकत्ता से प्रकाशित होने वाले विश्वमित्र के सम्पादक रहे। तत्पश्चात् ये दिल्ली आ गये और यहां से वीर अर्जुन साप्ताहिक का सम्पादन किया। आप प्रसिद्ध हिन्दी दैनिक 'नवभारत टाइम्स' के प्रधान सम्पादक भी रहे। इस प्रकार पत्रकार जीवन के २० वर्ष इन्होंने दिल्ली में ही व्यतीत किये। इनका निधन १९६३ में हुआ।

ले. का.—संस्कारप्रकाश (स्वामी दयानन्द रचित संस्कारविधि की व्याख्या) (१९२४), २. वीर संन्यासी श्रद्धानन्द (१९२९), ३. आचार्य रामदेव (१९४०), ४. धर्मवीर पं. लेखराम, ५. गुरु विरजानन्द।

पं. रामगोपाल शास्त्री

प्रसिद्ध विद्वान्, सामाजिक कार्यकर्त्ता तथा राष्ट्रकर्मी वैद्य रामगोपाल शास्त्री का जन्म ८ अगस्त १८९१ को लाहौर में हुआ। इनके पिता का नाम श्री रामदास था। १९११ में आपने पंजाब की शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की। १९१६ में इनकी नियुक्ति डी. ए. वी. हाई स्कूल लाहौर में धर्मशिक्षा अध्यापक के रूप में हुई। इस पद पर कार्य करते हुए आप लाहौर के तत्कालीन आर्यसमाजी नेताओं एवं कार्यकर्त्ताओं के सम्पर्क में आए तथा आपने सक्रिय रूप से आर्यसमाज की गतिविधियों में भाग लिया। १९१९ में उन्हें डी. ए. वी. कालेज लाहौर के वैदिक शोध विभाग में नियुक्त किया गया, जहां पं. भगवद्दत्त जैसे प्रसिद्ध वैदिकशोध विद्वान् के सान्निध्य में रहकर आपने अनुसंधान कार्य किया। १९२४ में डी. ए. वी. कालेज की प्रबन्ध-समिति ने दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय की स्थापना की और आपको इसका उपाचार्य बनाया।

इसी बीच जब महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वराज्य प्राप्ति का आन्दोलन अधिकाधिक तीव्र होता गया तो शास्त्रीजी ने अपने कुछ मित्रों के सहयोग से १९२२ में लाहौर में ही 'आर्य स्वराज्य सभा' की स्थापना की। इधर डी. ए. वी. संस्थाओं के व्यवस्थापकगण पंडितजी की राष्ट्रभावना से तथा आचार्य पं. विश्वबंधु शास्त्रीजी की कट्टर आर्य सामाजिकता से सन्तुष्ट नहीं थे। इन परिस्थितियों से दुखी होकर शास्त्रीजी ने १९२८ में ब्राह्म-महाविद्यालय की सेवा से त्यागपत्र दे दिया। अब उन्होंने जीवन निर्वाह के लिये चिकित्सक बनने का निश्चय किया और रावलपिण्डी के प्रसिद्ध वैद्य पं. मस्तरामजी के शिष्य बन कर आयुर्वेद का अध्ययन किया।

१९३० में नमक सत्याग्रह में भाग लेने के कारण शास्त्रीजी को एक वर्ष का कारावास दण्ड मिला। कारावास काल में आपने 'वेदों में आयुर्वेद' नामक ग्रन्थ लिखा। देश विभाजन के पश्चात् पंडितजी ने दिल्ली को अपना स्थायी निवास बनाया तथा करोलबाग में रहकर चिकित्सा कार्य करने लगे। दिल्ली के इस निवासकाल में ही शास्त्रीजी आर्यसमाज की प्रायः सभी प्रमुख गतिविधियों में भाग लेते थे। आपने कुछ आर्यबन्धुओं के सहयोग से 'भारतीय-लोक समिति' नामक राजनीतिक संस्था की भी स्थापना की, यद्यपि यह प्रयोग सफल नहीं रहा। जीवन के अन्तिम वर्षों में शास्त्रीजी ने आर्यसमाज करोलबाग के आर्थिक सहयोग से वेद गोष्ठियों का सफल आयोजन किया। इन गोष्ठियों में कतिपय ऐसे विषयों पर विद्वानों के निबन्ध पढ़े जाते थे, जिन्हें लेकर भारतीय तथा पाश्चात्य वेदाभ्यासियों में मौलिक मतभेद रहता आया है। इन निबन्धों का स्तर पर्याप्त ऊंचा तथा अनुसंधान और शोध की वैज्ञानिक परिपाटी के अनुसार होता था। स्वयं शास्त्रीजी ने भी इन गोष्ठियों में भाग लिया तथा विभिन्न शोध निबन्ध स्वयं भी लिखे। ९ जून १९७४ को दिल्ली में आपका निधन हो गया।

ले. का.—१. दन्त्योष्ठ्यविधि-(सम्पादित) डी.ए.वी. कालेज संस्कृत ग्रन्थमाला संख्या ४, (१९७७ वि.-१९२१), २. अथर्ववेदीयाबृहत् सर्वानुक्रमणिका (सम्पादित) डी.ए.वी. कालेज संस्कृत ग्रन्थमाला-संख्या ६ (१९७९ वि.-१९२२), ३. वेदों में आयुर्वेद, ४. ईशोपनिषद् (हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद (१९५३), ५. केनोपनिषद् (हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद (१९५७), ६. कठोपनिषद् हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद, (१९५८), ७. संस्कारविधि मण्डनम् (सं. १९७६ वि.), ८. अस्पृश्य निर्णय (राष्ट्रीय हिन्दू सभा लाहौर)।

अन्य ग्रन्थ—

१. महर्षि दयानन्द की राष्ट्रीय विचारधारा (२०१९ वि.) हिंसा और अहिंसा का वैदिक स्वरूप समझिए, वेदान्त : प्राचीन और नवीन (२०२७ वि.), ३. हिन्दुत्व के द्वार फिर खोल दो (१९६६), ४. श्रीकृष्ण और उनकी नीति, ५. भूलसुधार—अर्थात् हिन्दूजाति के पतन के कारण और उत्थान का कार्यक्रम, ६. सत्य और अहिंसा पर प्राचीन आर्यों के विचार।

शोध निबन्ध—

क्या वेद में आर्यों और आदिवासियों के युद्ध का वर्णन है? (२०२६ वि.), वेद के आख्यानों का यथार्थ स्वरूप (२०२९ वि.), वेद में आर्य-दास युद्ध सम्बन्धी पाश्चात्य मत का खण्डन (२०२७ वि.)। इसका अंग्रेजी अनुवाद—वेस्टर्न थ्योरी ऑफ आर्य एबोरिजिन्स। वैदिक रुद्र और शिवशंकर महादेव, दस अवतारों की कल्पना, वेद रत्नमाला।

वि. अ.—पं. रामगोपाल शास्त्री स्मृति ग्रन्थ—सं. दीनानाथ सिद्धान्तालंकार, १९७६.

श्री रामचन्द्र जावेद

लेखक, अध्यापक और पत्रकार श्री रामचन्द्र जावेद का जन्म २ अगस्त १९१९ को जिला डेरा गाजी खां (पाकिस्तान) के एक ग्राम दाजल में साधारण परिवार में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त कर आप दयानन्द-उपदेशक विद्यालय लाहौर में प्रविष्ट हुए जहां से आपने उच्च कोटि का सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ उर्दू एवं फारसी का भी अध्ययन किया। प्रारम्भ में आपने के. सी. आर्य हाई स्कूल स्यालकोट में तीन वर्ष तक

अध्यापन कार्य किया। तत्पश्चात् डी. ए. वी. हाई मिण्टगुमरी में चार वर्ष तक अध्यापक रहे। देश विभाजन के पश्चात् ये जालंधर छावनी आ गये तथा एन. डी. विक्टर हाई स्कूल में अध्यापक बन गये। कालान्तर में आप इसी विद्यालय के प्राचार्य रहे तथा दीर्घकाल पर्यन्त कार्य करने के पश्चात् सेवा-निवृत्त हुए। श्री जावेद ने उर्दू में वैदिक धर्म साप्ताहिक निकाला तथा हिन्दी में वैदिक धर्म पाक्षिक का सम्पादन किया। आप आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वर्षों तक मंत्री रहे। आपका निधन १२ जुलाई १९८४ को हो गया।

ले. का.—पंजाब का आर्यसमाज (हिन्दी व उर्दू) (१९६४ तथा १९८०), आर्यसमाज दर्शन, आर्यसमाज के महापुरुष (१९६४), स्वामी स्वतन्त्रानन्द तथा स्वामी आत्मानन्द की लेखमालाओं का सम्पादन।

पं. रामचन्द्र देहलवी

अद्भुत वाग्मी, प्रगल्भ तार्किक तथा शास्त्रार्थ महारथी पं. रामचन्द्र देहलवीजी का जन्म मध्यप्रदेश के नीमच नगर में चैत्र शुक्ला ९ सं. १९३८ वि. (रामनवमी) (१८८१) को हुआ था। रामनवमी के दिन जन्म लेने के कारण इनका नाम 'रामचन्द्र' रक्खा गया। इनके पिता का नाम मुन्शी छोटेलाल तथा माता का नाम श्रीमती रामदेई था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा नीमच के प्राथमिक विद्यालय में हुई। वे बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि थे। बाद में उन्होंने डी. ए. वी. स्कूल अजमेर से मिडिल की परीक्षा उत्तीर्ण की। मैट्रिक की परीक्षा इन्दौर से दी और प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। बस यहीं पर आपकी पढ़ाई का अन्त हो गया। १८ वर्ष की आयु में इनका विवाह श्रीमती कमला देवी से हुआ। अब परिवार के निर्वाह का दायित्व भी इन्हीं पर आ गया।

जीविका हेतु पं. रामचन्द्र दिल्ली आये और दिल्ली के ही होकर रह गये। यहाँ रैली ब्रदर्स नामक एक अंग्रेजी फर्म में १५ रु. मासिक पर कार्य करने लगे। कुछ समय पश्चात् इस नौकरी को छोड़ कर अपने श्वसुर की दुकान पर स्वर्णकारी का काम करने लगे। इस कार्य में उन्हें सफलता और लोकप्रियता प्राप्त हुई। जब ये ३६ वर्ष के ही थे, इनकी पत्नी का निधन हो गया किन्तु अनेक प्रस्ताव आने पर भी आपने पुनर्विवाह नहीं किया। इन्हीं दिनों पं. रामचन्द्र देहलवी अपना पर्याप्त समय धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में लगाते थे।

उन दिनों दिल्ली के चांदनी चौक स्थित फव्वारे पर सप्ताह में दो दिन मुसलमान मौलवी तथा ईसाई पादरी सार्वजनिक रूप से धर्म प्रचार करते थे। पं. रामचन्द्र इनके व्याख्यानों को सुनते और परमतावलम्बियों द्वारा हिन्दू धर्म पर किये जाने वाले आक्षेपों को सुन कर उन्हें बड़ी ग्लानि होती। वे मन में सोचने लगे कि यदि इन मिथ्या बातों का वे दो टूक उत्तर देने की क्षमता अपने में प्राप्त नहीं करते तो उनके धार्मिक ग्रन्थों के स्वाध्याय का लाभ ही क्या है? अन्ततः उन्होंने पादरियों और मौलवियों के प्रचार का मुकाबिला करने का निश्चय किया। उन्होंने उसी स्थान पर नियमित रूप से व्याख्यान देना आरम्भ कर दिया। अब पादरियों और मौलवियों की मजलिस उखड़ने लगी और लोग देहलवीजी का व्याख्यान सुनने के लिये बड़ी संख्या में एकत्र होने लगे। जब श्रोताओं की भीड़ के कारण चांदनी-चौक के यातायात में भी बाधा पड़ने लगी तो पुलिस ने इनके व्याख्यानों के लिये गांधी-ग्राउण्ड का स्थान नियत कर दिया। १९१० से १९२४ तक देहलवीजी बिना किसी व्यवधान के वहां अपने व्याख्यानों का क्रम चलाते रहे। इसी बीच उनके पुत्र व पत्नी का भी निधन हो गया, किन्तु उनके व्याख्यान क्रम में कोई बाधा नहीं आई।

अब वे एक अपंग हाफिजजी को अपना गुरु बना कर उनसे विधिवत् कुरान का अध्ययन करने लगे। तत्पश्चात् उन्होंने मौलवियों और पादरियों से शास्त्रार्थ करने आरंभ किये, जिनमें उन्हें सदा ही विजयश्री मिली। देहलवीजी द्वारा किये गये शास्त्रार्थों के संस्मरण बहुत अधिक हैं और वे रोचक तथा शिक्षाप्रद भी हैं। वैदिक-धर्म के उत्कृष्ट प्रवक्ता के रूप में उनकी ख्याति सर्वत्र फैल गई। वे समस्त भारत की आर्यसमाजों द्वारा व्याख्यानों और शास्त्रार्थों के लिये आमंत्रित किये जाते। हैदराबाद दक्षिण में तो उनके

व्याख्यानों ने अपूर्व जागृति तथा हलचल पैदा कर दी। निजाम के शासन ने उनके व्याख्यानों पर प्रतिबंध तो लगाया ही, उन्हें अपने राज्य से निष्कासित भी किया। २ फरवरी १९६८ को दिल्ली में देहलवीजी का निधन हुआ।

ले. का—दो सनातन सत्ताएं, सत्यार्थप्रकाश के चतुर्दश समुल्लास में उद्धृत कुर्आन की आयतों का देवनागरी में उल्था और अनुवाद (१९४५), ईश्वर सिद्धि, ईश्वरोपासना, धर्म और अधर्म, ईश्वर में अविश्वास क्यों? विद्यार्थी और सदाचार, ईश्वर पूजा का वैदिक स्वरूप, इंजील के परस्पर विरोधी वचन, पौराणिकों से शास्त्रार्थ का विषय निश्चित करते समय ध्यान में रखने योग्य बातें, कुर्आन में अन्य मतावलम्बियों के लिये कुछ अति कठोर, उत्तेजक वाक्यों का संग्रह (१९४४) आर्यसमाज की मान्यताएं, आर्यसमाज के मन्तव्य, कुरान का अनुवाद (सूर ए बकर और सूर ए फातिहा), रामचन्द्र देहलवी लेखावली (१९६८). १. ईश्वर ने दुनिया क्यों बनाई? २. पूजा क्या, क्यों और कैसे? ३. वेद का इस्लाम पर प्रभाव।

उपर्युक्त तीनों ग्रन्थ टेपरिकार्डर पर रिकार्ड किये गये व्याख्यान हैं।

पं. रामचन्द्र भारती

ब्रह्मदेश (बर्मा) में आर्यसमाज तथा हिन्दी का प्रचार करने वाले पं. रामचन्द्र भारती का जन्म १९ फरवरी १८९९ को हुआ। सार्वजनिक कार्यों में आपकी प्रारम्भ से ही रुचि थी। हिन्दू विश्वविद्यालय काशी में अध्ययन करते समय आपने इस विश्वविद्यालय में आर्यसमाज की स्थापना की। १९२६ में नरेला (दिल्ली) में आप मुख्याध्यापक नियुक्त हुए। १९२८ में डी. ए. वी. हाई स्कूल आगरा में सहायक अध्यापक बने। यहां रहकर आपने आर्यमित्र सभा आगरा का संगठन किया तथा कालाकांकर के महाराजा अवधेशसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न अखिल-भारतीय आर्य युवक कान्फ्रेंस के स्वागत मंत्री रहे।

१९३० में भारतीजी डी. ए. वी. स्कूल माण्डले के मुख्याध्यापक बन कर बर्मा चले गये। आपके प्रयत्नों से बर्मा के आर्यसमाज द्वारा संचालित इस स्कूल में भारतीय भाषाओं को पढ़ाने की स्वीकृति मिली। १९३४ में यह स्कूल हाई स्कूल बन गया। १९३० में ही आप ब्रह्मदेश हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति बने। आपने आर्य प्रतिनिधि सभा बर्मा का संगठन किया तथा अनेक नवीन आर्यसमाजों की स्थापना की। १९४० में आप भारत लौटे तथा दिल्ली से 'संस्कृत प्रचारक' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया। संस्कृत के प्रचार एवं प्रसार में इस पत्र का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। ३० जून १९७८ को आपका दिल्ली में निधन हो गया।

ले. का.—आर्य जीवनमाला तथा विनय माला-इनमें क्रमशः नित्य कर्मों तथा संध्या एवं अग्निहोत्र का विधान किया गया है। गोकरुणानिधि का बर्मी अनुवाद, श्री विज्ञान मार्तण्ड वात्स्यायन लिखित बोधरात्रि महाकाव्य का प्रकाशन भारतीजी ने स्वयं के सरस्वती प्रेस में १९३९ में किया। पुस्तक के प्रकाशित होते ही बर्मा सरकार ने इसे जब्त कर लिया था।

रामचन्द्रराव वंदेमातरम्

वंदेमातरम् के नाम से प्रसिद्ध रामचन्द्र आंध्रप्रदेश के निवासी हैं। ये प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी तथा राष्ट्रकर्मी के रूप में जाने जाते हैं। आप आंध्रप्रदेश की विधानसभा के दो बार सदस्य चुने गये तथा वर्तमान में सार्वदेशिक-आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान हैं।

ले. का.—१. हिन्दू संगठन (१९४०), 2. Police Action against Hyderabad., 3. Chinese Aggression, 4. Anecdotes from the Life of Swami Dayanand., 5. Prince Among Patriots: Veer Savarkar.

श्री वंदेमातरम् ने सत्यार्थप्रकाश का विशद एवं प्रामाणिक अंग्रेजी अनुवाद किया, जो उद्गीथ प्रकाशन हैदराबाद के द्वारा 'Spotlight On Truth' शीर्षक से १९८८ में प्रकाशित हुआ है।

व. प.—१४-३-१७८ गोशा महल हैदराबाद (आंध्र-प्रदेश).

श्री रामचन्द्र शर्मा, आर्योपदेशक

आपका जन्म अलीगढ़ जिले के नगला केसों (नगरिया सासनी) नामक ग्राम में १८८४ में हुआ। आपके पिता का नाम श्री केसरीराम शर्मा था। आप स्वामी दर्शनानन्दजी के शिष्य थे तथा उन्हीं से आपने शास्त्र-ज्ञान प्राप्त किया था। आपने वैदिक धर्म का प्रचार जावा, सुमात्रा, बर्मा तथा जापान आदि देशों में जाकर किया। इनका निधन १९६० में हुआ।

ले. का.—अमरसिंह राठौड़, नीलदेवी, द्रौपदी चीर, चूड़ावत सरदार, वीरांगना कलावती, कुरीति खण्डन, क्षत्राणी वीरमती, वीर भजनावली, नवीन भजनावली।

मेहता रामचन्द्र शास्त्री

शास्त्रीजी का जन्म १९३९ वि. में हुआ। आप आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक थे।

ले. का.—१. शुद्धि १९६६ वि. (१९०७), २. सारे संसार के आचार्य दयानन्द (१९०९), ३. पतितों की शुद्धि सनातन है (१९७४ वि.), ४. गोरक्षा (१९७७ वि.), ५. वर्तमान राष्ट्रीय आन्दोलन और वैदिक धर्म (१९२२), ६. भारत गौरवादर्श, ७. वैदिक धर्म मुझे क्यों प्यारा है? (१९५०)।

रामचरण विद्यार्थी

विद्यार्थीजी उत्तरप्रदेश के निवासी थे। इनका जन्म १९०१ में तथा निधन १९७३ में हुआ। कुछ काल तक इन्होंने लखनऊ से आर्यमित्र का सम्पादन भी किया।

ले. का.—१. स्वदेश सेवक स्वामी दयानन्द (१९२२), २. महर्षि के मन्तव्य, ३. धर्म बोध (रामलाल श्रीवास्तव के सह लेखन में) (१९२७).

पं. रामजीलाल शर्मा

हिन्दी प्रेस प्रयाग के माध्यम से राष्ट्रभाषा हिन्दी की अपूर्व सेवा करने वाले पं. रामजीलाल शर्मा का जन्म उत्तरप्रदेश की हापुड़ तहसील के अन्तर्गत अतराड़ा नामक ग्राम में १८७६ में हुआ। उनके पिता का नाम पं. श्रीराम शर्मा था। पं. रामजीलाल शर्मा मेरठ के प्रसिद्ध आर्य विद्वान् पं. तुलसीराम स्वामी के सम्पर्क में आये और उन्हीं के स्वामी प्रेस में १५ रु. मासिक पर प्रूफ रीडर का काम करने लगे। स्वामीजी के सम्पर्क में आने के कारण ही आप आर्यसमाजी विचारधारा में दीक्षित हो गये। कालान्तर में आप वैदिक यंत्रालय अजमेर में २० रु. मासिक पर प्रूफ रीडर बन कर चले गये। अजमेर में शर्माजी के कार्यक्षेत्र की अधिकाधिक वृद्धि होती गई। दयानन्द अनाथालय अजमेर के मासिक मुखपत्र 'अनाथरक्षक' के सम्पादन में भी इन्होंने योग दिया।

१९०५ में पं. रामजीलाल शर्मा प्रयाग चले आये और प्रसिद्ध इण्डियन प्रेस में कार्य करने लगे। यहां रहकर उन्होंने बाल रामायण, बाल मनुस्मृति आदि पुस्तकें लिखीं। १९१२ में इन्होंने हिन्दी प्रेस की स्थापना की तथा 'विद्यार्थी' नामक पत्र निकालने लगे। हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की गतिविधियों में भी शर्माजी पूर्ण रुचि से भाग लेते थे। ३० अगस्त १९३० को इनका निधन हुआ।

ले. का.—स्वामी दयानन्द के सिद्धान्त (सूक्ति-संग्रह)।

पं. रामजी शर्मा, मधुबनी

आजमगढ जिले के मधुबन ग्राम के निवासी पं. रामजी शर्मा का जन्म १९५६ वि. में हुआ। मिश्रबन्धुविनोद में आपकी १८ प्रकाशित रचनाओं का उल्लेख हुआ है।

ले. का.—१. महर्षि दयानन्द (जीवनी, १९२५), भर्तृहरि शतक (१९२६), ३. दृष्टान्त सागर, ४. श्री कृष्ण-चरित (१९२६), ५. भीष्म पितामह (द्वितीय संस्करण १९२६), ६. महारथी अर्जुन, ७. नल दमयन्ती नाटक, ८. द्रौपदी चीर हरण नाटक, ९. मेरी राम कहानी (उपन्यास), १०. चन्द्रिका (उपन्यास), ११. गोरी बीबी (उपन्यास), १२. वैद्यभूषण, १३. आजमगढ़ दर्पण, १६. महात्मा ध्रुव (खण्ड काव्य), १५. द्रौपदी-स्वयंवर (खण्ड काव्य), १६. महात्मा गांधी (खण्ड काव्य), १७. हिन्दी महाभारत, १८. पतिप्राणा राधा।

पं. रामदत्त शुक्ल

श्री शुक्ल का जन्म शाहजहांपुर जिले के भावलखेड़ा ग्राम में १८९५ में हुआ। आपके पिता आर्यसमाज के प्रसिद्ध उपदेशक पं. नन्दकिशोरदेव शर्मा थे। आपने एम. ए. तथा एल. एल. बी. की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं तथा लखनऊ में वकालत करते रहे। १९४१ से १९४५ तक आप संयुक्त-प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री रहे। इनका निधन ८ फरवरी १९५६ को हुआ।

ले. का.—१. वैदिक निघण्टु—भास्करराय दीक्षित कृत पद्य श्लोक, गद्य एवं पदानुक्रम सूची समन्वित (१९९४ वि., सम्पादित), २. आथर्वण पैप्पलाद संहिता मंत्र संग्रह (१९९४ वि., सम्पादित), 3. Atharvana Paipplad Samhita (Collection of Hymns) (सम्पादित 1937), ४. आत्मोपनिषद् (१९९४ वि.), ५. गायत्री उपनिषद् (१९४४), ६. शारीरिकोपनिषद्। ७. चाणक्य सूत्र—वासुदेवशरण अग्रवाल के सहयोग से अनुवाद (१९४१)।

पं. रामदयालु शास्त्री

शास्त्रीजी हरयाणा के जिले गुड़गांव की तहसील नूह के ग्राम कुण्डल के निवासी हैं। इन्होंने स्वामी दयानन्द कृत 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका संक्षिप्त सार' संस्कृत भाषा में छात्रों के लाभार्थ लिखा है जो भाष्यभूमिका सार शीर्षक से माता बहाली देवी ग्रन्थमाला के प्रथम पुष्प के रूप में दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ, गदपुरी (फरीदाबाद) के द्वारा २०२४ वि. में प्रकाशित हुआ था।

व. प.—आर. ज़ेड ७० सी., गली सं. ८ तुगलकाबाद विस्तार, नई दिल्ली.

पं. रामदयालु शास्त्री

पं. रामदयालु शास्त्री का जन्म अलीगढ जिले की खैर तहसील के ग्राम रामपुर में हुआ। उनका अध्ययन मुलतान में हुआ जहां से उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय की शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की। कई वर्षों तक वे डी. ए. वी. हाई स्कूल मुलतान में अध्यापक रहे। तत्पश्चात् आर्य-प्रादेशिक सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में उपदेशक का कार्य किया। देश विभाजन के पश्चात् उन्होंने अलीगढ़ में अध्यापन किया तथा इस कार्य से मुक्त होकर स्वतन्त्र रूप से वे धर्म प्रचार करते रहे। शास्त्रीजी उच्च कोटि के विद्वान्, वक्ता तथा शास्त्रार्थकर्त्ता थे। १९८१ में उनका निधन हुआ।

ले. का.—सनातन धर्म और आमिषोत्सर्ग, वृक्षों में जीवन एक भ्रान्ति है (१९८१)।

रामदास छबीलदास बैरिस्टर

स्वामी दयानन्द के एक गुजराती भक्त सेठ छबीलदास लल्लूभाई बम्बई के सम्पन्न व्यक्ति थे। इन्हीं के पुत्र रामदास थे जिन्होंने स्वामी दयानन्द से १९७५ में उनके बालकेश्वर स्थित निवास पर जाकर उनसे संस्कृत का अध्ययन किया था। रामदास की ही बहिन भानुमति प्रसिद्ध देशभक्त श्यामजी कृष्ण वर्मा से ब्याही गई थी। रामदास आर्यसमाज बम्बई के सदस्य रहे और कालान्तर में उन्होंने इंग्लैण्ड में जाकर बैरिस्टरी का अध्ययन किया। इन्हें संस्कृत में काव्य रचना करने का अच्छा अभ्यास था। स्वामी दयानन्द के निधन के उपरान्त इन्होंने शोकांजलि के रूप में संस्कृत के २१ उत्कृष्ट पद्य लिखे जो सर्वप्रथम गोपालराव हरि द्वारा लिखित 'दयानन्द दिग्विजयार्क' में संगृहीत हुए। कालान्तर में इन्हें स्वामी दयानन्द के अनेक जीवन चरितों में उद्धृत किया गया। इनका लिखा पद्मिनी चम्पू नामक एक काव्य भी छपा था। १८८४ में इन्होंने केम्ब्रिज विश्वविद्यालय से संस्कृत विषय लेकर एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। तब इन्हें ३०० रुपये पुरस्कार रूप में दिये गये।

रामदास शर्मा (आर. डी. शर्मा)

वैदिक परमार्थ आश्रम बम्बई के संस्थापक श्री. आर. डी. शर्मा का जन्म ४ मई १९०६ को अमृतसर (पंजाब) में पं. देवीदास शर्मा के यहां हुआ। इनका प्रारम्भिक अध्ययन बम्बई के सेंट जेवियर स्कूल में हुआ। पिता की मृत्यु के पश्चात् ये अमृतसर चले गये और हिन्दू सभा कालेज में पढ़ने लगे, परन्तु पारिवारिक कठिनाइयों के कारण उन्हें अपना अध्ययन बीच में ही छोड़ देना पड़ा।

१९४७ में ये बम्बई आ गये और व्यापार करने लगे। १९७३ में शर्माजी ने वैदिक परमार्थ आश्रम की स्थापना की जिसके द्वारा वे विभिन्न महत्त्वपूर्ण प्रवृत्तियों का संचालन करते रहे। इनकी एक उल्लेखनीय कृति Vedic Fundamentals है जो दयानन्द संस्थान से प्रकाशित हुई है। इनकी एक अन्य पुस्तक Exposition of Mundakopnishad अभी तक अप्रकाशित है। इनका निधन ४ अप्रैल १९८६ को हो गया।

रामदीन

आपका जन्म १८६० में हुआ। आपने गुरुकुल ज्वालापुर में विभिन्न पदों पर रहकर वर्षों तक कार्य किया। आपने 'वैदिक नित्य प्रातः ईश्वर स्तुति प्रार्थना' शीर्षक पुस्तक लिखी जिसे श्रीमती महारानी देवी ने गुरुकुल वृन्दावन से वैदिक अनुसंधान ग्रन्थमाला-१ के रूप में १९३७ में प्रकाशित किया।

रामदुलारेलाल चतुर्वेदी

आप उत्तरप्रदेश के फतेहगढ़ नगर के निवासी थे। १९०८ में इस प्रान्त की आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद पर रहे।

ले. का.—१. अघमर्षण रहस्य (संध्या के अघमर्षण मंत्रों की व्याख्या, १९२४), २. सत्यार्थप्रकाश का चमत्कार अर्थात् पं. कालूराम शास्त्री लिखित 'सत्यार्थप्रकाश की छीलालेदर' का उत्तर (१९३०)।

आचार्य रामदेव

अपूर्व वक्ता, शिक्षाशास्त्री तथा साहित्यककार आचार्य रामदेव का जन्म ३१ जुलाई १८८१ को होशियारपुर जिले के बजवाड़ा कस्बे में लाला चंदूलाल के यहाँ हुआ। पिता अध्यापक थे, अतः उन्होंने अपने पुत्र की शिक्षा की व्यवस्था सुचारु रूप से की। १५ वर्ष की आयु में रामदेवजी ने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की, पश्चात् डी. ए. वी. कालेज लाहौर में अध्ययनार्थ प्रविष्ट हुए। यहां उनकी शिक्षा एफ. ए. तक हुई। उन दिनों आर्यसमाज में कालेज दल तथा गुरुकुल दल के मतभेद पराकाष्ठा पर पहुंचे हुए थे। रामदेवजी की सहानुभूति गुरुकुल दल की ओर होने के कारण उन्हें कालेज से पृथक् कर दिया गया। इस समय लाला मुन्शीराम ने रामदेव को सहारा दिया। उन्हें आर्य-प्रतिनिधि सभा पंजाब की साप्ताहिक पत्रिका 'आर्यपत्रिका' का उपसम्पादक बना दिया। पुनः वे विक्टर हाई स्कूल जालंधर छावनी के मुख्याध्यापक बन गए। यहां रहकर उन्होंने १९०४ में बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा १९०५ में सैण्ट्रल कालेज लाहौर से बी. टी. किया। जींद राज्य में जबकि आपको विद्यालयों के निरीक्षक के पद पर नियुक्त किया जा रहा था, उन्हें महात्मा मुन्शीराम का आदेश गुरुकुल कांगड़ी पहुंचने के लिए मिला। तदनुसार रामदेवजी गुरुकुल के लिए चल पड़े।

महात्मा मुन्शीराम ने रामदेवजी को गुरुकुल का संचालन करने में अपना प्रमुख सहायक बनाया। अब तक गुरुकुल कांगड़ी संस्कृत की साधारण पाठशाला के रूप में चल रहा था। रामदेवजी को गुरुकुल का मुख्याध्यापक नियुक्त किया गया। शिक्षाशास्त्र के मर्मज्ञ आचार्य रामदेव ने गुरुकुल की व्यवस्था, पाठ्य पद्धति, तथा शिक्षण प्रणाली में अनेक सुधार किये। विभिन्न विषयों की पढ़ाई अब नियत समय विभाग चक्र तथा कालांश विभाजन के अनुसार कराई जाने लगी। संस्कृत और वेद तथा अन्य आर्ष ग्रन्थों के साथ साथ अर्थशास्त्र, इतिहास, राजनीति-विज्ञान, गणित, अंग्रेजी तथा विज्ञान भी पाठ्यक्रम में प्रविष्ट किए गए। इन परिवर्तनों के कारण गुरुकुल कांगड़ी ने एक विश्वविद्यालय का रूप ले लिया। महात्मा मुन्शीराम का वरदहस्त पाकर आचार्य रामदेव सम्पूर्ण दायित्व के साथ गुरुकुल का संचालन करने लगे। महात्माजी के संन्यास लेकर देश के सार्वजनिक राजनीतिक जीवन में उतरने के पश्चात् तो गुरुकुल के संचालन का समग्र भार रामदेवजी पर ही आ गया। अब वे गुरुकुल के आचार्य तथा मुख्याधिष्ठाता बन कर कार्य करने लगे। १९२४ में अतिवृष्टि तथा झंझावातों के कारण गंगा पार बने गुरुकुल के पुराने भवन नष्ट हो गए। अब नये भवन बनाने की आवश्यकता

हुई। आचार्यजी ने गुरुकुल के निर्माण हेतु लाखों रुपये एकत्रित किए तथा १९३० में नवीन भूमि पर गुरुकुल को प्रतिष्ठित किया। भवन निर्माण हेतु धन संग्रहार्थ आचार्य रामदेव दक्षिण अफ्रीका गए और वहाँ से एक लाख रुपया प्राप्त किया। १९२६ में कन्या गुरुकुल देहरादून का अधिष्ठाता पद भी रामदेवजी ने सम्भाल लिया। इस प्रकार १९३२ तक आचार्य रामदेव ने गुरुकुल कांगड़ी का संचालन किया।

रामदेवजी १९३२ में देश के स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े। महात्मा गांधी के अनुशासित सिपाही के रूप में आपने सत्याग्रह किया, पंजाब में कांग्रेस आन्दोलन के सर्वाधिकारी रहे तथा कारावास भोगा। १९३५-३६ में आप आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान रहे। १९३६ में लन्दन में होने वाली 'कॉन्फरेन्स आफ लिविंग रिलीजन्स' में सम्मिलित होने का निमंत्रण प्राप्त कर आप उसमें जाने के लिये तैयार हुए परन्तु पक्षाघात का आक्रमण हो जाने के कारण यह यात्रा रुक गई। ९ दिसम्बर १९३९ को लगभग तीन वर्ष की अस्वस्थता के पश्चात् आर्यसमाज के इस मनीषी विद्वान् का देहरादून में निधन हुआ।

आचार्य रामदेव का अध्ययन विशाल था। वे उच्च कोटि के विचारक तथा वक्ता थे। उनकी स्मरण शक्ति अद्भुत थी। उनके भाषणों में विभिन्न ग्रन्थों के प्रमाणों और उद्धरणों की इतनी भरमार रहती थी कि श्रोता उनके अपरिमित ज्ञान तथा प्रस्तुतीकरण के अभिनव कौशल को देखकर चकित हो जाते थे। लगातार कई घण्टों तक धारावाही व्याख्यान देना आपके लिए एक सहज बात थी। इतिहास, राजनीति, तुलनात्मक धर्म, अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियां आदि आपके अध्ययन के प्रिय विषय थे।

लेखक के रूप में आचार्य रामदेव का योगदान निर्विवाद है। वे गुरुकुल कांगड़ी के मुखपत्र वैदिक मैगजीन के वर्षों तक सम्पादक रहे। उनके सम्पादनकाल में पत्र ने अभूतपूर्व उन्नति की। रूस के प्रसिद्ध साहित्यकार काउण्ट लियो तॉल्सताय से उनका पत्र व्यवहार इतिहास की एक अमर घटना बन गया है।

ले. का. १. भारतवर्ष का बृहद् इतिहास—तीन भागों में प्रकाशित हुआ। प्रथम भाग आर्य पर्व १९६७ वि. में गुरुकुल कांगड़ी से प्रकाशित। इसका द्वितीय संस्करण १९६८ वि. तथा तृतीय संस्करण १९८० वि. (१९२४) में छपा। तृतीय खण्ड जो बौद्ध काल से सम्बन्धित है, डा. सत्यकेतु विद्यालंकार के सहलेखन में लिखा गया। इसका प्रकाशन १९९० वि. में हुआ।

२. पुराणमत पर्यालोचन—पं. जयदेव शर्मा विद्यालंकार के सहलेखन में तैयार किया गया पुराणालोचन विषयक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ (१९११)।

3. AryaSamaj and its Detractors : A Vindication—जब पटियाला राज्य में अंग्रेजी शासन के संकेत पर आर्यसमाजियों पर अभियोग चलाया गया तो महात्मा मुन्शीराम तथा रामदेवजी ने उपर्युक्त ग्रन्थ लिखकर आर्यसमाज के पक्ष को दृढ़तापूर्वक प्रस्तुत किया। इसमें आर्यसमाज तथा उसके कार्यकर्ताओं पर लगाये जाने वाले उन आरोपों का प्रमाण पूर्वक खण्डन किया गया है, जिनके आधार पर कहा जाता था कि इस संस्था का उद्देश्य षड्यंत्र पूर्ण कार्यवाहियों से ब्रिटिश शासन को भारत से समाप्त करना है (१९१०)।

4. Vedic Dharma and Young India—आर्यकुमार सभा लाहौर द्वारा आयोजित एक सम्मेलन में २७ नवम्बर १९०७ को पठित निबन्ध, १९०८ में आर्यकुमार सभा लाहौर द्वारा प्रकाशित।

५. आर्य और दस्यु (निबन्ध) १९७४ वि. (१९१८)

६. दिग्विजयी दयानन्द।

प्राप्त जानकारी के अनुसार आचार्य रामदेव ने विकासवाद के खण्डन में एक पुस्तक लिखी थी तथा राजपाल एण्ड सन्स लाहौर ने उनके लेखों और व्याख्यानों का एक संग्रह भी प्रकाशित किया था।

वि. अ.—आर्योदय का आचार्य रामदेव आत्मकथा विशेषांक (मेरी आत्मकथा के कुछ पृष्ठ, १९७७) इसमें उन लेखों का संग्रह है जो आचार्य रामदेव ने विशाल-भारत (कलकत्ता) के लिए लिखे थे।

लाला रामनाथ

आप आर्यसमाज अमृतसर के सभासद थे। आपने उर्दू में एक पुस्तक तहकीकुल इल्हाम शीर्षक लिखी। इसका हिन्दी अनुवाद दिल्ली निवासी जगन्नाथ भारतीय ने सत-मत परीक्षा शीर्षक से किया। इसका प्रकाशन १८८६ में हुआ।

डा. रामनाथ वेदालंकार

वेदों के उद्भट विद्वान् डा. रामनाथ वेदालंकार का जन्म ७ जुलाई १९१४ को बरेली जिले के फरीदपुर ग्राम में श्री गोपालराम के यहां हुआ। आपने १९९२ वि. (१९३६) में गुरुकुल कांगड़ी से वेदालंकार की उपाधि प्राप्त की। प्रारम्भ में आप गुरुकुल कांगड़ी के विद्यालय विभाग में अध्यापक रहे। तत्पश्चात् १९३९ से १९५८ तक गुरुकुल के वेद महाविद्यालय में वेदोपाध्याय के रूप में कार्य किया। १९५८ से १९७६ तक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में उपाध्याय तथा अध्यक्ष पद पर रहे। १९७६-१९७९ तक पंजाब विश्वविद्यालय के दयानन्द अनु-संधान पीठ के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष पद पर कार्य किया। यहां से अवकाश ग्रहण कर अब आप स्वतन्त्र लेखन तथा वैदिक शोध का कार्य कर रहे हैं। डा. वेदालंकार ने आगरा विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए. तथा पी. एच. डी. की उपाधियां प्राप्त कीं। १९८९ में आर्यसमाज सान्ता-क्रूज बम्बई ने आपको वेद वेदांग पुरस्कार से सम्मानित किया।

ले. का.—वैदिक वीर गर्जना—(२००३ वि., १९४६), वैदिक सूक्तियां, (२००७ वि.), वेदों की वर्णन शैलियां, (पी.-एच.डी. के लिए शोध प्रबन्ध, १९७६), वैदिक प्रार्थना-पुष्पाजंलि (१९८०), वेदभाष्यकारों की वेदार्थ प्रक्रियायें (१९८०), यज्ञ-मीमांसा (१९८१), अग्निहोत्रदर्पण (१९८१) दयानन्द विचार कोश: (महर्षि दयानन्द के शिक्षा, राजनीति और कला कौशल सम्बन्धी विचार) भाग—१ (२०३८ वि. १९८२), वैदिक शब्दार्थ विचार (२०३८ वि.), वेद-मंजरी (२०४० वि.), वैदिक नारी (१९८५), सामवेद भाष्य (प्रकाशनाधीन) ऋषि दयानन्द निर्दिष्ट आध्यात्मिक प्रक्रिया का अनुसरण करते हुए यह भाष्य लिखा गया है।

व. प.—वेद मंदिर (गीताश्रम), ज्वालापुर (हरिद्वार)

रामनारायण मिश्र

काशी नागरी प्रचारिणी सभा के संस्थापक पं. राम-नारायण मिश्र का जन्म १८७६ में हुआ। आपके मामा डा. छन्नूलाल पंजाब से आकर काशी में बस गये थे। उन्हीं की प्रेरणा से मिश्रजी का आर्यसमाज से सम्पर्क हुआ और बचपन में उर्दू एवं फारसी पढ़ने पर भी वे हिन्दी की ओर आकृष्ट हुए। मिश्रजी ने बाबू श्यामसुन्दरदास तथा ठाकुर शिवकुमारसिंह के सहयोग से १८९३ में काशी-नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना की। सभा की स्था-पना में उन्हें पंजाब निवासी पं. शंकरनाथ का भी सहयोग मिला जो उन दिनों काशी में संस्कृत का अध्ययन करते थे। यही पं. शंकरनाथ आगे चल कर आर्यसमाज के प्रसिद्ध उप-देशक तथा विदेशों में धर्मप्रचारार्थ भ्रमण करने वाले स्वामी शंकरानन्द के नाम से विख्यात हुए। मिश्रजी की प्रेरणा से ही मिर्जापुर के ठाकुर गदाधरसिंह ने १८८४ में स्थापित अपना आर्य भाषा पुस्तकालय १८९४ में सभा को भेंट कर दिया। मिश्रजी ने अनेक बार विदेशों का भ्रमण किया था। वे स्विट्जरलैण्ड में स्वामी दयानन्द के शिष्य तथा क्रान्ति-कारी आन्दोलन के पुरोधा पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा से मिले थे। मिश्रजी ने अपने मामा डा. छन्नूलाल की स्मृति में पुरस्कार की घोषणा की जो हिन्दी में विज्ञान विषयक सर्वश्रेष्ठ पुस्तक पर दिया जाता था। १९५३ में मिश्रजी का निधन हुआ।

ले. का.—जापान दर्पण तथा यूरोप प्रवास (यात्रा-विवरण)।

रामनारायणलाल

श्री रामनारायणलाल अलीगढ़ के निवासी थे। इन्होंने १०७ पद्यों में ब्रह्म सहस्रनाम शीर्षक ग्रन्थ हरिगीतिका छन्द में लिखा। इसमें संस्कृत में उपलब्ध विष्णु, शिव आदि के 'सहस्रनाम' शीर्षक स्तोत्रों की शैली का अनुकरण करते हुए परमात्मा के सहस्र नामों का कीर्तन किया गया है। इसका प्रकाशन काल १९१६ है।

बिहार के पण्डित रामनारायण जी का नहीं

रामनारायण शास्त्री

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के स्नातक श्री रामनारायण शास्त्री लेखक, पत्रकार और प्रचारक हैं। आपने राष्ट्रजागरण नामक एक पत्र का सम्पादन किया था।

ले. का.—१. आर्यसमाज दर्शन (२०२७ वि., १९७०), २. आर्यसमाज की क्षात्र शक्ति (१९६५).

श्री रामनिवास विद्यार्थी

वेद मन्त्रों का हिन्दी काव्यानुवाद करने में दक्ष श्री विद्यार्थी का जन्म ११ अक्टूबर १९२७ को मेरठ जिले के फजलपुर ग्राम में पं. कृष्णलाल शर्मा के यहां हुआ। इनका अध्ययन एम. ए. एल. टी. तक हुआ। सम्प्रति ये आर्य-विद्यालय इण्टर कालेज तेड़ा (मेरठ) में उपाचार्य हैं। श्री विद्यार्थी आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता हैं तथा पंजाब हिन्दी रक्षा आन्दोलन में जेल जा चुके हैं।

ले. का.—ईशोपनिषद् प्रकाश (ईशोपनिषद् का भावात्मक भाषान्तर, १९५६) ऋचाओं की छाया में—३२० वेद मंत्रों का गद्य-पद्यमय भाषान्तर (१९७०), 'स्तुतामयावरदा वेदमाता' (प्रवचन संग्रह, १९७८), संध्या संगीत (उपासना गीताञ्जलि, २०३८ वि.) सामवेद सहस्रधारा (सामवेद पूर्वार्द्ध का पद्यानुवाद, १९८३)।

व. प.—डा. फजलपुर (सुन्दरनगर) मेरठ २५०३४५

डा. रामप्रकाश

प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री तथा युवक आर्य नेता डा. रामप्रकाश का जन्म ५ अक्टूबर १९३९ को कुरुक्षेत्र जिले के बरवाला ग्राम में हुआ। इनके पिता महाशय प्रभुदयाल दृढ़ आर्यसमाजी थे। आपने पंजाब विश्वविद्यालय से रसायन विषय लेकर एम. एस-सी. तथा पी-एच.डी. की उपाधियां ग्रहण कीं। आप पंजाब विश्वविद्यालय में रसायन-शास्त्र के प्रोफेसर हैं तथा तीन वर्ष तक कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में प्रो-वाइस चांसलर के पद पर रह चुके हैं। आर्यसमाज के प्रति आपकी निष्ठा विद्यार्थीकाल से ही रही है तथा आपने युवक वर्ग में स्वामी दयानन्द के सिद्धांतों के प्रति आस्था जगाने के लिये सदा कार्य किया है। आप एक सिद्धहस्त लेखक तथा प्रभावशाली वक्ता हैं।

ले. का.—१. हवन यज्ञ और विज्ञान, २. वेद विमर्श (१९६२), ३. पं. गुरुदत्त विद्यार्थी—जीवन एवं व्यक्तित्व (१९६६)।

व. प.—ई. १-८ पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़-१६००१४.

डा. रामप्रकाश आर्य

डा. आर्य का जन्म २० नवम्बर १९२७ को बरेली में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल काँगड़ी में हुई। बरेली कालेज से इन्होंने हिन्दी तथा संस्कृत में एम. ए. की परीक्षायें पास कीं। मध्यप्रदेश की कालेज शिक्षा सेवा में रहकर आप अनेक स्थानों में अध्यापन कर चुके हैं। आगरा विश्वविद्यालय से इन्होंने 'दयानन्द सरस्वती : जीवनी तथा हिन्दी रचनाएं' शीर्षक शोध प्रबन्ध लिखकर पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की।

डा. रामप्रताप वेदालंकार

डा. रामप्रताप का जन्म २६ जुलाई १९३६ को गाजियाबाद जिले के दादरी ग्राम में हुआ। इनका अध्ययन गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में हुआ, जहाँ से आपने वेदालंकार की उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात् आपने संस्कृत में एम. ए. तथा पी-एच.डी. की उपाधियाँ ग्रहण कीं। कुछ काल तक होशियारपुर स्थित विश्वेश्वरानन्द-संस्कृत स्नातकोत्तर संस्थान, पंजाब विश्वविद्यालय में कार्य करने के पश्चात् आप जम्मू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में प्रवक्ता पद पर चले गये। वर्तमान में आप वहीं प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। आप संस्कृत के उत्तम कवि हैं। आपका एक काव्य संग्रह 'उर्मिला' (१९८७) प्रकाशित हो चुका है।

व. प.—रघुनाथपुरा, जम्मू

शहीद रामप्रसाद बिस्मिल

काकोरी षड्यन्त्र अभियोग में फांसी की सजा पाकर मौत के फंदे को चूमने वाले अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल

का जन्म ज्येष्ठ शु. ११ सं. १९५४ वि. (१८९७) को उत्तरप्रदेश के शाहजहाँपुर नगर में हुआ। उनके पिता का नाम पं. मुरलीधर था जो ग्वालियर राज्य के अपने ग्राम को छोड़कर शाहजहाँपुर आकर बस गये थे। वहाँ आर्यसमाज में निवास करने वाले आर्य संन्यासी स्वामी सोमदेव के संपर्क में आकर आप कट्टर आर्यसमाजी वन गये। ठाकुर रोशनसिंह तथा अशफाकुल्ला के साथ ९ अगस्त १९२५ को हुई काकोरी ट्रेन डकैती में इन्हें प्रमुख अभियुक्त माना गया और १९ दिसम्बर १९२७ को गोरखपुर जेल में फांसी दी गई। बिस्मिल उच्च कोटि के कवि और लेखक थे। उनकी सरल हिन्दी तथा उर्दू में लिखी देशभक्ति पूर्ण कवितायें 'मन की लहर' शीर्षक से १९७७ वि. में (शहादत से ७ वर्ष पूर्व) छपी थीं। इसमें बिस्मिल की स्वरचित कविताओं के अतिरिक्त लालचन्द 'फलक' जैसे कुछ अन्य देशभक्त कवियों की कवितायें भी संकलित थीं। 'मन की लहर' का एक परिवर्धित संस्करण श्री विरजानन्द दैवकरणि ने १९८४ में सम्पादित किया।

ले. का.—अमेरिका को स्वाधीनता कैसे मिली ? बोलशेविकों की करतूत, स्वदेशी रंग, क्रांतिकारी जीवन, चीनी षड्यन्त्र मैनपुरी षड्यन्त्र।

वि. ब.—बिस्मिल की आत्मकथा-रामप्रसाद बिस्मिल ने अपनी आत्मकथा जेल की काल कोठरी में बैठ कर लिखी थी। इसे राजधर्म प्रकाशन, रोहतक तथा आर्य प्रकाशन, दिल्ली ने प्रकाशित किया है।

लाला रामप्रसाद

लालाजी मूलतः शाहाबाद (करनाल) के निवासी थे। इनका अध्ययन डी.ए.वी. कालेज लाहौर में हुआ। आप राजनीति में लाला लाजपतराय के साथी और सहयोगी रहे। डी.ए.वी. हाई स्कूल होशियारपुर के प्रधानाध्यापक पद पर भी रहे। कुछ काल के लिए आप आर्य प्रादेशिक-प्रतिनिधि सभा के मन्त्री भी रहे। लाला लाजपतराय के उर्दू दैनिक वन्देमातरम् का सम्पादन कार्य भी आपने कुछ समय तक किया। जीवन के अन्तिम दिनों में अपने नगर (शाहाबाद) में ही रहे और वहीं के आर्यसमाज तथा डी.ए.वी स्कूल का काम देखते रहे। इनका निधन १९४० में हुआ। इनका 'वैदिक सिद्धान्त' शीर्षक एक सुन्दर ग्रन्थ है जो प्रश्नोत्तर शैली में लिखा गया है। इसको लेखक ने अपने धर्म गुरु महात्मा हंसराज की स्मृति में समर्पित किया था। सार्वदेशिक पत्र ने इसे २०२५ वि. (१९६८) में एक विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया। इस पुस्तक का तेलुगु अनुवाद भी छपा है।

प्रो. रामप्रसाद वेदालंकार

श्री वेदालंकार का जन्म उत्तर पश्चिम सीमाप्रान्त (वर्तमान पाकिस्तान) के जिला मरदान के एक ग्राम थाना में श्री गंगाविशन के यहाँ ७ जनवरी १९३६ को हुआ। इन्होंने दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर तथा गुरुकुल काँगड़ी में अध्ययन किया। इन्होंने गुरुकुल काँगड़ी से १९६६ में वेदालंकार की उपाधि प्राप्त की तथा यहीं से वैदिक साहित्य में एम. ए. भी किया। आप गुरुकुल काँगड़ी के वेद विभाग में विगत कई वर्षों से कार्यरत हैं तथा आजकल इस विश्वविद्यालय के आचार्य भी हैं।

ले. का.—विनय सुमन-३ भाग, प्रार्थना प्रसून, वेदसुधा-२ भाग, पावमानी वरदा वेदमाता, वेदोपदेश, वैदिक पुष्पाञ्जलि-४ भाग, प्रभातवंदन, प्रार्थना सुमन-२ भाग, वैदिक रश्मियां-३ भाग, प्रार्थना प्रदीप, कौन चैन की नींद नहीं सो सकते और उसके उपाय, विदुरजी की दृष्टि में बुद्धिमान कौन ? महान् विदुर के महान् उपदेश, अनन्त की ओर, वैदिक गृहस्थाश्रम, शयन विनय, वैदिक-आदर्श परिवार, ब्रह्म यज्ञ, यमनियम, ईशोपनिषद्, नचिकेता के तीन वर (कठोपनिषद् पर आधारित), याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी संवाद, यज्ञसुधा, पावन धारा। यह सारा साहित्य श्रद्धा प्रकाशन के अन्तर्गत छपा है। इनकी एक पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद Quest for the Infinite (1985) शीर्षक से छपा है।

व. प.—वेद विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

पं. रामभजदत्त चौधरी

आपका जन्म गुरदासपुर जिले के कंजरूर ग्राम में १८६४ में हुआ। पंजाब में आर्यसमाज के आप प्रसिद्ध

कार्यकर्ता तथा नेता थे। आपने इस क्षेत्र की दलित जातियों की शुद्धि का कार्य लगन से किया। आपने बी. ए. और एल.एल.बी. तक शिक्षा प्राप्त की थी तथा लाहौर में वकालत करते थे। आपने स्वाधीनता संग्राम में भी भाग लिया था। चौधरीजी का विवाह महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर की भतीजी सरलादेवी से हुआ था। आपका निधन १९२३ में हुआ। आपने देवसमाज के संस्थापक शिवनारायण अग्निहोत्री द्वारा लिखित Dayanand Unveiled के उत्तर में 'Agnihotri demolshed' शीर्षक पुस्तक लिखी जो विरजानन्द प्रेस लाहौर से १८९२ में प्रकाशित हुई।

रामरीझन रसूलपुरी

आपका जन्म १० मई १९०६ को बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के रसूलपुर ग्राम में हुआ था। १९३६ में आपने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया तथा राष्ट्रदूत (पटना), योगी (पटना) आदि पत्रों के सहायक सम्पादक रहे। आपने आर्यसमाज मुजफ्फरपुर के 'जयन्ती स्मारक ग्रन्थ' का सम्पादन किया जो २००४ वि. में प्रकाशित हुआ। इसमें बिहार प्रान्त में आर्यसमाज के कार्य पर ऐतिहासिक सामग्री एकत्रित की गई है। आपका निधन २७ सितम्बर १९८१ को हुआ।

रामलाल

आप उर्दू मिलाप के सम्पादक थे। उर्दू में आपने स्वामी विरजानन्द का जीवन-चरित लिखा था। आपके द्वारा लिखित राधास्वामी मत परीक्षा का हिन्दी अनुवाद चिम्मनलाल वैश्य ने किया था। इसका प्रकाशन १९०२ में हुआ।

पं. रामलाल अग्निहोत्री

ये उत्तरप्रदेश के निवासी थे। इन्होंने सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास का पद्यात्मक अनुवाद किया, जो पद्यात्मक सत्यार्थप्रकाश (प्रथम समुल्लास) शीर्षक से हजारीलाल शर्मा शाहाबाद (हरदोई) द्वारा आर्य ग्रन्थमाला—१ के अन्तर्गत १९७२ वि. (१९१५) में प्रकाशित हुआ। इसका तृतीय संस्करण सुखानन्द ग्रन्थमाला लखनऊ से फरवरी १९२५ में प्रकाशित हुआ था। पुस्तक की कुल पद्य संख्या ७६ है।

रामलाल भाटिया

भाटियाजी कोटा (राजस्थान) के निवासी थे। आप इस्लाम धर्म के मर्मज्ञ विद्वान् तथा अरबी एवं फारसी के अच्छे जानकार थे। इनका निधन २७ जुलाई १९८० को हुआ।

ले. का.—फरिश्ते तथा जिन क्या हैं ?

आपने बांरा निवासी मौलवी हाफिज अताउल्ला लिखित कुरान-बाईबिल में भी तनासुख (पुनर्जन्म) है तथा मसलए तनासुख शीर्षक दो पुस्तकें प्रकाशित कीं।

प्रो. रामविचार

आपका जन्म १० अक्टूबर १९३७ को वजीराबाद (गुजरांवाला) में श्री विहारीलाल के यहाँ हुआ। आपने १९६१ में हिन्दी में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। १९६१ से १९६५ तक आपने दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में अध्यापन किया। तत्पश्चात् डी. ए. वी. कालेज हिसार में हिन्दी के प्रवक्ता बन गये। आर्यसमाज की गतिविधियों में आप गहरी रुचि लेते हैं।

ले. का.—१. सर्वस्व त्यागी महात्मा हंसराज, २. यह नैया कैसा पार लगे ? (१९७३), ३. आर्यसमाज का कायाकल्प कैसे हो ? आचार्य ज्ञानचन्द अभिनन्दन ग्रन्थ (सम्पादन), ४. वेदसंदेश—वेदमन्त्रों की सुबोध व्याख्या (१९८४), ५. वेदसंदेश भाग-२ (१९८८).

व. प.—दयानन्द कालेज, हिसार (हरयाणा)

राव साहब रामविलास शारदा

हिन्दी में स्वामी दयानन्द की प्रथम विस्तृत जीवनी लिखने वाले तथा अपने युग की आर्यसामाजिक गतिविधियों के सूत्रधार रामविलास शारदा का जन्म पौष शुक्ला प्रतिपदा सं. १९२१ वि. को अजमेर के एक वैश्य परिवार में हुआ। इनके पिता श्री रामरत्न लेन-देन का काम करते

थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू में हुई। कालान्तर में इनके चाचा श्री हरनारायणजी, जो उन दिनों गवर्नमेंट कालेज अजमेर में पुस्तकालयाध्यक्ष थे, के परामर्श से इन्हें अंग्रेजी पाठशाला में प्रविष्ट कराया गया। विद्यार्थी काल में ही रामविलासजी का आर्यसमाज से परिचय हो गया। उन्होंने स्वामी दयानन्द के व्याख्यान उस समय सुने थे जब वे अजमेर आये हुए थे। ये व्याख्यान कड़क्का चौक स्थित सेठ गजमलजी की गली में लूणियाजी के मकान में हुए थे। जिस समय स्वामीजी का अजमेर में निधन हुआ, उस सायंकाल को रामविलास जी अपने चचेरे भाई हरविलास सारडा के साथ उस भिनाय की कोठी में उपस्थित थे, जहां स्वामीजी ने परलोक गमन किया था। वे आर्यसमाज अजमेर के सभासद बन गये और नगर की सभी आर्य-सामाजिक गतिविधियों में पूर्ण उत्साह के साथ भाग लेने लगे। वे आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मंत्री रहे तथा परोपकारिणी सभा के सदस्य के रूप में वर्षों तक इस सभा के प्रकाशन कार्यों तथा वैदिक यंत्रालय की देखभाल करते रहे। ७ मई १९३१ को शारदा जी का अजमेर में निधन हो गया।

ले. का.—१. आर्य धर्मेन्द्र जीवन—यह स्वामी दयानन्द का विस्तृत हिन्दी जीवनचरित है जो मुख्यतया पं. लेखराम द्वारा अन्वेषित सामग्री के आधार पर लिखा गया है। इसकी विस्तृत भूमिका पं. आत्माराम अमृतसरी ने लिखी है (१९६१ वि.), २. स्वामी विरजानन्द का जीवनचरित्र (१९०३), ३. विद्यार्थी विनोद—व्यंग्य एवं विनोद पूर्ण लेखों का संग्रह (ये लेख पं. रामजीलाल शर्मा द्वारा सम्पादित विद्यार्थी नामक पत्र में प्रकाशित हुए हैं), ४. जोगी का फेरा (शिक्षाप्रद सामाजिक उपन्यास)।

रामशरण वसिष्ठ

आपका निवास दिल्ली है।

ले. का.—१. वेद में पशुहिंसा विषयक पाश्चात्य विद्वानों के लेखों की समालोचना। २. वेदार्थ विज्ञान (१९७२)।

ब. प.—ए-२/५, सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली ११००१९.

रामस्वरूप पाठक

श्री रामस्वरूप पाठक मूलत: अफजलगढ़ के निवासी थे। वे बिजनौर की नगीना तहसील के अन्तर्गत रायपुर सादात नामक ग्राम में अध्यापक भी रहे। इन्होंने चाणक्य-नीति का सरस तथा हृदयग्राही पद्यानुवाद किया है जो आषाढ़ कृष्णा नवमी १९५३ वि. को समाप्त हुआ था।

रामस्वरूप बेली

श्री बेली का जन्म कार्तिक शुक्ला १० सं. १९७८ वि. को शाहपुरा (राजस्थान) के एक सम्पन्न माहेश्वरी परिवार में श्री मथुरालाल के यहां हुआ। इन्होंने शाला स्तर पर संस्कृत का अध्ययन किया और उसे स्वाध्याय से और अधिक बढ़ाया। बेलीजी शाहपुरा की आर्य सामाजिक प्रवृत्तियों में आरम्भ से ही रुचि लेते रहे तथा विभिन्न सामाजिक एवं शिक्षा संस्थाओं से सम्बद्ध हैं। यज्ञादि नित्य कर्मों में आपकी अनन्य निष्ठा है।

ले. का.—गृहस्थ कर्त्तव्य निर्देशिका, पं. हरिश्चन्द्रजी व्याकरणाचार्य का जीवनचरित, शिवसंकल्पयज्ञ स्मारिका।

ब. प.—सदर बाजार, शाहपुरा (भीलवाड़ा)।

रामस्वरूप रक्षक

इनका जन्म अजमेर में श्री गणेशीलाल वर्मा के यहां हुआ। इनका अध्ययन बी. एस-सी. तक का है, किन्तु वैदिक शास्त्रों का आपने सपरिश्रम विस्तृत स्वाध्याय किया है। आप आर्यसमाज के प्रबुद्ध विचारक और चिन्तक तथा महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक ट्रस्ट अजमेर के ट्रस्टी हैं।

ले. का.—वैदिक धर्म और ईसाई मत (सत्यार्थ-प्रकाश के १३वें समुल्लास पर आधारित, (१९८२), ऋषि दयानन्द और मानव एकता।

ब. प.—पर्यावरण सुख, गोलाई, डा. थांवला (नागौर) ३०५०२६.

रामस्वरूप वानप्रस्थी

आपके द्वारा रचित निम्न ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है—१. संस्कार रहस्य (पद्य १९५१), २. आल्हा महा-

भारत, ३. राम व दयानन्द की तुलना (काव्य), ४. देवासुर संग्राम (१९६२)।

पं. रामस्वरूप शर्मा (१)

एटा जिले के कस्बा जलेसर के निवासी थे।

ले. का.—कालूराम की कालिमा, ऋषि पताका, मलकानों की पुकार।

पं. रामस्वरूप शर्मा (२)

इनकी निम्न कृतियों का पता चलता है—योगदर्शनभाष्य (१९५४ वि.), वेदान्तदर्शनभाष्य (१९५४ वि.)।

रामसिंह

श्री रामसिंह का जन्म ग्राम हुमायूंपुर नई दिल्ली में २० जनवरी १९३१ को हुआ। इन्होंने १९५२ में प्रयाग विश्वविद्यालय से भौतिकी विषय लेकर एम. एस. सी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। १९५३ में भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग में प्रविष्ट हुए और अनेक वरिष्ठ पदों पर रहकर १९८९ में अवकाश ग्रहण किया। श्री रामसिंह ने कवि हृदय पाया है। आपकी 'हृदय की वीणा' (१९८३) तथा 'अन्तर के स्वर' (१९८७) शीर्षक काव्य कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। स्वामी दयानन्द की प्रशस्ति में लिखी गई उनकी कवितायें परोपकारी में प्रकाशित हुई हैं।

व. प.—१७०, हुमायूंपुर, डा. सफदरजंग एन्क्लेव नई दिल्ली-११००२९

रामसिंह आर्य

श्री आर्य का जन्म १६ अक्टूबर १९०८ को कानपुर में श्री गोपालसिंह के यहां हुआ। आपने ईस्ट इण्डिया रेलवे तथा इलाहाबाद बैंक में सेवा की। १९८६ में अवकाश लेने के पश्चात् वे पूर्ण रूपेण स्वाध्याय एवं लेखन कर्म में संलग्न हैं।

ले. का.—वेद रहस्य, वेदाधारित आचार प्रकाश।

व. प.—१७ गांधीनगर, आगरा-२८२००३.

चौधरी रामसिंह

हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले के ग्राम घण्डरा में रामसिंह का जन्म विचित्रसिंह कटोच के यहां २५ अगस्त १८८८ को हुआ। प्रारम्भिक शिक्षा के बाद उन्होंने स्वाध्याय के द्वारा ही अपने ज्ञान की वृद्धि की। आप पंजाब की विधान परिषद् के दो बार सदस्य रहे थे। इनका निधन १३ अगस्त १९६५ को हुआ।

ले. का.—सुभाषित मंजूषा (१९२४), महर्षि जीवन (१९१२), गुरमुखी मीमांसा (१९५६), हिन्दी भाषा का महत्त्व (२००६ वि.), फारसी कविचर्चा (२०२० वि.), इनकी अप्रकाशित पुस्तकों की संख्या भी पर्याप्त है।

वि. अ.—नींव का एक पत्थर-राजेन्द्र जिज्ञासु द्वारा सम्पादित।

रामसिंहासन तिवारी

'स्वामी श्रद्धानन्द : दैहिक बलिदान' शीर्षक आपकी हिन्दी पद्य में लिखी गई पुस्तक डायमण्ड जुबली प्रेस अजमेर से १९२७ में प्रकाशित हुई थी।

रामहर्षसिंह वर्मा

आप सुल्तानपुर (उत्तरप्रदेश) के निवासी थे। आपकी एक कृति 'आर्यसमाज गौरवादर्श' (१९०९) का उल्लेख मिलता है जिसमें यह सिद्ध किया गया था कि आर्यसमाज को राजद्रोही संस्था समझना अनुचित है।

रामाज्ञा वैरागी

बिहार के प्रसिद्ध आर्यसमाजी कार्यकर्ता श्री वैरागी का जन्म १९२० में पूर्वी चम्पारण जिले के भगवतिया ग्राम में हुआ। इनके पिता श्री निर्मल ठाकुर रक्सौल में रहते थे। श्री रामाज्ञा ने युवावस्था में देश के स्वाधीनता संग्राम में भाग लिया तथा कारागार की यातनायें सहन कीं। आपकी आर्यसमाज में आरम्भ से ही रुचि थी। वे बिहार प्रदेशीय आर्यवीर दल के सक्रिय कार्यकर्ता तथा संगठक थे। कालान्तर में आप अपने प्रदेश की आर्यप्रतिनिधि सभा के मंत्री बने। १९ दिसम्बर १९८८ को श्री वैरागी का निधन हो गया।

श्री रामाज्ञा वैरागी ने अपनी विदेश यात्रा के संस्मरणों को 'मेरी यूरोप यात्रा' (१९८३) शीर्षक ग्रन्थ में निबद्ध किया था।

पं. रामानन्द शास्त्री

बिहार प्रान्त के गोपालगंज जिले के बलथरी नामक ग्राम में भाद्रपद पूर्णिमा १९७१ वि. (७ सितम्बर १९१४) को पं. अलखनारायण पाठक के यहां रामानन्द शास्त्री का जन्म हुआ। व्याकरण, दर्शनादि का अध्ययन करने के पश्चात् वे आर्यसमाज के सम्पर्क में आये और गुरुकुल गोरखपुर में १९३६ में आचार्य के पद पर प्रतिष्ठित हुए। अनेक वर्षों तक वहाँ कार्य करने के बाद वे आर्यसमाज के प्रचार क्षेत्र में आ गये। शास्त्रीजी ने अपने जीवन में पौराणिक विद्वानों से अनेक शास्त्रार्थ किये। वे उच्चकोटि के वक्ता थे। आप आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के मंत्री तथा उपप्रधान आदि पदों पर भी रहे। उन्होंने सार्वदेशिक-आर्य प्रतिनिधि सभा में अपने प्रान्त का वर्षों तक प्रतिनिधित्व किया। २ जून १९८८ को आपका निधन हो गया।

ले. का.—१. नये युग के नये विचार (१९६०), २. हिन्दुत्व की विजय (१९४७), ३. भारतीय विचारधारा, ४. आर्यत्व का स्वरूप (१९६५), ५. प्रगतिशील विचार (१९४९), ६. वैदिक लोक व्यवहार, ७. प्राचीन सत्यनारायण की कथा, ८. भारतीय संस्कृति, ९. आनन्द-मार्ग परिचय, १०. स्व. रघुनन्दन चौधरी का जीवन, ११. ऋषिव्रत कथा (संस्कृत), १२. सत्यव्रत कथा १३. राजधनवार (बिहार) के दो शास्त्रार्थ (सम्पादन, १९५३)।

वि. अ.—स्वाध्याय निर्णय का आचार्य रामानन्द शास्त्री स्मृति अंक।

स्वामी रामानन्द सरस्वती

आप नैनीताल में रहते थे। इनका पूर्वाश्रम का नाम श्री रामप्रसाद मुख्तार था। कुमाऊं प्रदेश में आपने आर्य-समाज का खूब प्रचार किया। आपने 'रामायण रहस्य' नामक एक सुन्दर विवेचनात्मक पुस्तक लिखी जो आर्य-समाज हलद्वानी से १९९० वि. में प्रकाशित हुई।

पं. रामावतार शर्मा षट्तीर्थ

शर्माजी का जन्म १९०१ में सारण जिले के अन्तर्गत करतारपुर नामक ग्राम के ब्राह्मण परिवार में हुआ। आपका शास्त्रीय अध्ययन अत्यन्त विस्तृत था। आपने कलकत्ता से छः विषयों में 'तीर्थ' उपाधि ग्रहण की थी। कालान्तर में आप छपरा जिले के हरपुरजान गुरुकुल में १८ वर्षों तक आचार्य पद पर रहे। आपने आर्य प्रादेशिक-सभा की प्रेरणा से सामवेद का भाष्य किया जो देश के स्वतंत्र होने के पश्चात् पं. वैद्यनाथ शास्त्री के नाम से प्रकाशित हुआ। शास्त्रीजी वेदभाष्य लेखन में शर्माजी के सहयोगी थे। जीवन के अन्तिम वर्षों में वे मुंगेर जिले के गोगरी नामक ग्राम में रहते थे। २० मई १९८४ को आपका निधन हो गया। आपने बृहद्हवनमंत्र शीर्षक ग्रन्थ २०२३ वि. में लिखा जिसमें प्रार्थना, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण तथा हवन मंत्रों की पदार्थ सहित सरल व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

डा. रामेश्वरदयाल गुप्त

डा. गुप्त का जन्म १९२० में एटा जिले के ग्राम अलीगंज में श्री बाबूलाल गुप्त के यहाँ हुआ। इनकी शिक्षा बी. एस-सी. तक डी. ए. वी. कालेज कानपुर में हुई। तत्पश्चात् आप केन्द्रीय संचार विभाग में कार्य करते रहे। आपने भोपाल विश्वविद्यालय तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। अब आप राजकीय सेवा से अवकाश ले चुके हैं।

ले. का.—त्रैत दर्शन, ब्रह्मयज्ञ, निराकार का स्तवन, निराकार की स्तुति, नारी : वरदान या अभिशाप, शिव और विष्णु : ऐतिहासिक पुरुष, रामकथा में अनधिकृत परिवर्तन, दयानन्द सरस्वती द्वारा पुनः प्रस्तुत राजदर्शन (पी-एच. डी. की उपाधि के लिये स्वीकृत शोध प्रबंध), अजेय भारत, हिन्दी में यज्ञ प्रक्रिया, भक्ति दर्शन का थोथापन, अवतारवाद की निस्सारता, भगवद्गीता और श्रीमद्भागवत में वर्णित कृष्ण के अलग व्यक्तित्व। डा. गुप्त आर्यों का त्रैतवाद शीर्षक मासिक पत्र के सम्पादक भी हैं।

व. प.—रामेश्वर कुञ्ज, आर्यनगर, ज्वालापुर (हरिद्वार)।

रामेश्वर शास्त्री

आपने स्वामी दयानन्द का एक लघु जीवनचरित लिखा है जो मधुर प्रकाशन दिल्ली द्वारा १९७८ में प्रकाशित हुआ। इनकी एक अन्य कृति 'स्वाध्याय और प्रवचन' आर्य साहित्य मण्डल अजमेर से प्रकाशित हुई।

स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती

आर्यसमाज के तेजस्वी संन्यासी, विद्वान् तथा वक्ता स्वामी रामेश्वरानन्द का जन्म १८९० में एक कृषक परिवार में हुआ। ग्रामीण पाठशाला में आपने सामान्य अध्ययन किया। किशोर अवस्था में ही इन्होंने गृहत्याग कर दिया तथा काशी जाकर स्वामी कृष्णानन्द से संन्यास की दीक्षा ली। प्रारम्भ में आप पौराणिक विचारधारा के ही अनुयायी थे, किन्तु कालान्तर में आर्यसमाज के सुयोग्य प्रचारक स्वामी भीष्म के सम्पर्क में आकर आप आर्यसमाजी बन गये। अब आपको विद्याध्ययन की धुन सवार हुई। आपने गुरुकुल ज्वालापुर के आचार्य स्वामी शुद्धबोध तीर्थ से संस्कृत व्याकरण पढ़ा, पुनः खुर्जा में रहकर दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया। तत्पश्चात् काशी में रह कर अनेक शास्त्रों का विस्तृत अध्ययन किया। आपका अध्ययन काल २१ वर्ष की अवधि का था जो १९३५ में समाप्त हुआ। आपने देश की स्वतन्त्रता की लड़ाई में भी भाग लिया था।

१७ अप्रैल १९३९ को आपने घरौण्डा (जिला करनाल) में गुरुकुल की स्थापना की। १९३९ में आपने हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लिया तथा औरंगाबाद की जेल में रहे। पंजाब के हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भी आपने भाग लिया। आप लोकसभा के सदस्य भी रहे। आपका निधन ८ मई १९९० को हो गया।

ले. का.—महर्षि दयानन्द और राजनीति, महर्षि दयानन्द का योग (१९७६), संध्या भाष्यम् (महर्षि दयानन्द प्रणीतम्, २०१२ वि.), नमस्ते प्रदीप (२००३ वि.), महर्षि दयानन्द और आर्यसमाजी पण्डित, विवाह पद्धति, भ्रमोच्छेदकम् (पं. रामचन्द्र देहलवी से सैद्धान्तिक शंका-समाधान)

डा. रासासिंह

आर्यसमाज अजमेर के प्रसिद्ध कार्यकर्ता तथा वर्तमान लोकसभा सदस्य श्री रासासिंह का जन्म उदयपुर जिले के एक गांव में १ अक्टूबर १९४१ को हुआ। उनकी शिक्षा एम. ए. हिन्दी तथा संस्कृत तक हुई। वे आर्यसमाज अजमेर के वर्षों तक मंत्री रहे तथा इसी नगर की डी. ए. वी. शिक्षण संस्थाओं में अध्यापन का कार्य किया। १९८९ के चुनावों में वे भारतीय जनता पार्टी की ओर से लोकसभा के लिये अजमेर से चुने गये। श्री रासासिंह विचारशील लेखक तथा आर्यसमाज विषयक समस्याओं के गम्भीर चिंतक हैं। आर्य पुनर्गठन पाक्षिक के वे सम्पादक भी हैं। उन्होंने सत्यार्थप्रकाश के पंचम समुल्लास की व्याख्या के रूप में 'संन्यासी कौन और कैसे हों ?' शीर्षक पुस्तक लिखी जो सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थमाला के अन्तर्गत १९८२ में प्रकाशित हुई।

व. प.—आर्यसमाज, अजमेर ३०५००१

पं. रुचिराम

अरब देशों में वैदिक धर्म के प्रचारक पं. रुचिराम का जन्म मियांवाली (पाकिस्तान) जिले के जण्डांवाला ग्राम में १ जनवरी १९०५ को हुआ। इनके पिता का नाम श्री श्यामदास था। रुचिराम की शिक्षा डी. ए. वी. हाई स्कूल लाहौर में हुई जहां से मैट्रिकुलेशन की परीक्षा उत्तीर्ण कर वे दयानन्द उपदेश विद्यालय गुरुदत्त भवन लाहौर में प्रविष्ट हुए। स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी की प्रेरणा से १९२९ में उन्होंने अरब देशों में वैदिक धर्म के प्रचार हेतु यात्रा आरम्भ की। स्थल मार्ग से ईरान की खाड़ी के तटवर्ती मस्कत, दुबई, सऊदी अरब तथा अदन की यात्रा पूरी कर १९३६ में वे भारत लौटे। उनका यह यात्रा विवरण 'अरब में सात साल' शीर्षक से १९३८ में प्रकाशित हुआ। मूल पुस्तक उर्दू में लिखी गई थी जिसका हिन्दी अनुवाद श्री ब्रह्मानन्द ने किया था। इस पुस्तक का संक्षिप्त रूप गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ द्वारा २०१५ वि. में प्रकाशित किया गया।

पं. रुद्रदत्त शर्मा, सम्पादकाचार्य

पत्रकार, लेखक, विद्वान् तथा शास्त्रार्थ महारथी पं. रुद्रदत्त शर्मा का जन्म धामपुर (जिला बिजनौर) में

मार्गशीर्ष त्रयोदशी १९११ वि. (१८५४) को हुआ। उनके पिता पं. काशीनाथ शास्त्री संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् तथा ज्योतिष के पारंगत पंडित थे। रुद्रदत्त की प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। तत्पश्चात् वे अपने चाचा के पास वृन्दावन, मथुरा और काशी में अध्ययनार्थ रहे। इक्कीस वर्ष की अवस्था में अध्ययन समाप्त कर घर लौटे। अब उन्होंने प्रथम मुरादाबाद तथा बाद में सहारनपुर में आर्योपदेशक के रूप में अपना जीवन आरम्भ किया। प्रचार कार्य हेतु वे उत्तरप्रदेश के अतिरिक्त बिहार, बंगाल आदि प्रान्तों में भी जाते थे। सफल लेखक, वक्ता, पत्रकार तथा शास्त्रार्थ कर्त्ता विद्वान् के रूप में उनकी प्रतिभा चतुर्मुखी होकर व्यक्त हुई। प्रसिद्ध पौराणिक विद्वान् तथा संस्कृत के प्रौढ़ लेखक पं. अम्बिकादत्त व्यास से उनके कई शास्त्रार्थ हुए थे।

पं. रुद्रदत्त शर्मा हिन्दी के विख्यात पत्रकार के रूप में जाने जाते हैं। आर्यसमाज मुरादाबाद के पाक्षिक पत्र 'आर्यविनय' का सम्पादन उन्होंने १ मई १८८५ से आरम्भ किया। तत्पश्चात् वे आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल-बिहार के मुखपत्र 'आर्यावर्त' के सम्पादक बन कर कलकत्ता चले गए उन्होंने। आर्यमित्र, इन्द्रप्रस्थप्रकाश, भारतमित्र, हिन्दी बंगवासी, हितवार्ता, श्री वेंकटश्वर समाचार, सत्यवादी, प्रेम, मारवाड़ी आदि अनेक पत्रों का समय समय पर सम्पादन किया। यह दुर्भाग्य की बात है कि आजीवन सारस्वत साधना में संलग्न रहने वाला यह तपस्वी साहित्यकार अपने जीवन में आर्थिक कठिनाइयों से कभी मुक्त नहीं हो सका। उनके जीवन के अन्तिम दिन आर्थिक विपन्नता में व्यतीत हुए। इस प्रकार विभिन्न कठिनाइयों से जूझते हुए पं. रुद्रदत्त ने १७ नवम्बर १९१८ को संसार से विदा ली।

पत्रकार के अतिरिक्त एक सफल लेखक तथा विशिष्ट शैलीकार के रूप में पं. रुद्रदत्त को हिन्दी साहित्य के इतिहास में सम्मानित स्थान प्राप्त है। नागरी प्रचारिणी सभा आगरा के सभाकक्ष में उनका चित्र लगाया गया है।

ले. का.—१. स्वर्ग में सब्जैक्ट कमेटी—यह एक व्यंग्य-कथा है। भारतेन्दुकालीन साहित्य में इस प्रकार की विद्रूपात्मक शैली में विनोद वार्ताओं के माध्यम से धार्मिक एवं सामाजिक विकृतियों पर व्यंग्य करने का सिलसिला चल पड़ा था। पुराणों में देवी देवताओं का जो चित्र उपस्थित किया है, उसे ही लेखक ने व्यंग्य का निशाना बनाया है। यह पुस्तक सर्वप्रथम आर्यावर्त प्रेस दानापुर से १९५१ वि. (१८९५) में प्रकाशित हुई। अनेक प्रकाशकों ने इसके विभिन्न संस्करण समय समय पर प्रकाशित किए हैं।

२. स्वर्ग में महासभा—इस पुस्तक में स्वर्ग में सब्जेक्ट-कमेटी की कथा को ही आगे बढ़ाया गया है। यहाँ अष्टादश पुराणों के रचयिताओं को देवनिंदक सिद्ध किया गया है। प्रथम संस्करण आर्यावर्त प्रेस दानापुर से १८९७ में प्रकाशित हुआ।

३. आर्यमतमार्तण्ड नाटक—'प्रबोधचन्द्रोदय' की शैली में लिखा गया यह नाटक आर्य भास्कर प्रेस आगरा से प्रकाशित हुआ तथा आर्यमित्र के ग्राहकों को भेंट रूप में भेजा गया था। पं. रुद्रदत्त ने इसका प्रथम भाग १८९५ में लिखा। द्वितीय भाग पंडितजी के अनुज पंडित दामोदर-प्रसाद ने लिखा।

४. कण्ठीजनेऊ का विवाद—यह व्यंग्य कथा विभिन्न प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित हुई।

धर्म विषयक व्याख्यान (१८९५), पाखण्डमूर्ति (१८८८), पुराण परीक्षा (१८९८), पातंजल योगदर्शन—व्यासभाष्य तथा भोजवृत्ति का भाषानुवाद (१८८९)।

अन्य ग्रन्थ—१. ध्यान योग विधि, २. शिक्षा विज्ञान, ३. वीरसिंह दारोगा (उपन्यास), ४. जर्मन जासूस (उपन्यास), ५. अबला विलाप नाटक (शुभचिन्तक पत्र के अप्रैल १८८४ के अंक में कुछ अंश छपा)।

वि. अ.—पं. रुद्रदत्त शर्मा ग्रन्थावली भाग-१ सम्पादक-भवानीलाल भारतीय, सत्य प्रकाशन मथुरा से १९६५ में प्रकाशित।

रुलियाराम

आप पंजाब के निवासी थे। आपकी शिक्षा एम. एस. सी. तक की थीं।

ले. का.—१. वैदिक प्रमाणों से वेद का अर्थ (१९९० वि.), २. वेद से वेदार्थ (१९९२वि.)।

डा. रूपकिशोर शास्त्री

शास्त्रीजी का जन्म १९ दिसम्बर १९५७ को बुलन्द-शहर जिले के डिबाई ग्राम में एक किसान परिवार में हुआ। इन्होंने शास्त्री के अतिरिक्त संस्कृत में एम. ए. तथा 'सामवेदीय ब्राह्मणों का दार्शनिक अध्ययन' विषय लेकर दिल्ली विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। सम्प्रति ये दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में प्रवक्ता हैं।

ले. का. 1.—Vedic Marriage Procedure— संस्कारविधि प्रोक्त विवाह-विधि का अंग्रेजी अनुवाद (१९८८), २. सामवेदीय ब्राह्मण: दार्शनिक अध्ययन ३. जैमिनीयोपनिषद् ब्राह्मण: दार्शनिक अध्ययन, ४. संभलो, नीच योनियों से, ५. वैदिक विवाह, ६. यूरोप की धरती से (यात्रा वृत्त)।

व. प.—१५, हनुमान रोड नई दिल्ली ११०००१.

भक्त रैमल

आप मूलत: पंजाब के निवासी थे। आपके विषय में पं. चमूपति लिखते हैं—"भक्त रैमल इस काल की विभूति हैं। इनका सादा सत्याश्रित जीवन विशेष आकर्षण रखता है।" १ जनवरी १८९१ को इन्हें वैदिक यंत्रालय अजमेर का प्रबन्धक नियुक्त किया गया। उस समय परोपकारिणी सभा ने यंत्रालय की व्यवस्था पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा को सौंप रक्खी थी। कारणवश श्री वर्मा तथा भक्त रैमल में परस्पर मतभेद हो गया। परिणामस्वरूप रैमल पुन: लाहौर आ गये। उनका अवशिष्ट जीवन लाहौर में ही व्यतीत हुआ।

ले. का.—दयानन्द लेखावली-भाग १, स्वामी दयानन्द के संस्कृत पत्रों का संग्रह (१९०३)।

सत्यार्थप्रकाश का प्रथम उर्दू अनुवाद जो मास्टर आत्माराम अमृतसरी ने किया उसमें भक्त रैमल ने भी सहायता दी थी। यह अनुवाद 'मुस्तनिद सत्यार्थप्रकाश' शीर्षक से १८९८ में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने प्रकाशित किया था।

महाशय रौनकराम 'शाद'

आप आर्यसमाज भिदौड़ (पटियाला) के प्रधान थे। इन्होंने 'खालसा पंथ की हकीकत' नामक एक पुस्तक लिखी। इसके एक अध्याय में नियोग का प्रकरण था। इसका सिख समुदाय ने बुरा माना और महाशयजी पर अभियोग दायर कर दिया। महाशय विश्वम्भरदास इस अभियोग में सह अभियुक्त बनाये गये। दोनों को एक-एक वर्ष के कारावास का दण्ड मिला तथा प्रत्येक को दो-दो सौ रुपये जुर्माने अदा करने का आदेश हुआ था। शाद का एक उर्दू भजनसंग्रह भजन रत्नावली १९७० वि. में छपा।

रौमां रौलां

फ्रांस के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री रौमां रौलां ने रामकृष्ण परमहंस का जीवनचरित फ्रेंच भाषा में लिखा, जो अंग्रेजी में भी प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थ के एक अध्याय The Builders of Unity में स्वामी दयानन्द के व्यक्तित्व एवं विचारों का विवेचनात्मक अनुशीलन किया गया है। इसी प्रकरण को श्री रघुनाथप्रसाद पाठक ने अंग्रेजी से अनूदित एवं सम्पादित कर 'भारत का एक ऋषि' शीर्षक से सार्वदेशिक सभा द्वारा २०१३ वि. में प्रकाशित कराया। यही सामग्री 'Dayanand and AryaSamaj' शीर्षक से सार्वदेशिक सभा ने १९६४ में प्रकाशित की। इस सामग्री का मराठी अनुवाद वसन्त जगन्नाथ ठोम्बरे ने 'भारत चा एक ऋषि' शीर्षक से किया है।

बैरिस्टर रौशनलाल

बैरिस्टर साहब मूलत: इलाहाबाद के निवासी थे। इंग्लैण्ड से बैरिस्टरी पास करने के उपरान्त आप लाहौर में वकालत करने लगे। १८९६ में वे परोपकारिणी सभा के सदस्य चुने गये। वे आर्यसमाज बच्छोवाली लाहौर के

प्रधान तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री एवं उप-प्रधान भी रहे। २४ सितम्बर १९३२ को इनका निधन हुआ।

ले. का.—A Fingerpost to the Religion of the Vedas (1902), Stray Thoughts on the Arya-Samaj.

ऋषिदेव विद्यालंकार

आपका जन्म १० अगस्त १९१३ को डेरा गाजी खां जिले के ग्राम जामपुर में श्री उद्धवदास के यहां हुआ। आप गुरुकुल कांगड़ी में अध्ययन कर १९९१ वि. (१९३५) में स्नातक बने। १९३६-३७ में आप राजा साहब अमेठी के व्यक्तिगत सचिव रहे। पश्चात् १९३७ से १९४२ तक हिन्दी मिलाप लाहौर के उप सम्पादक पद पर कार्य किया। पुन: १९४२ से १९४५ तक आर्यमित्र के सम्पादक रहे। आपने संस्कृत में मनोविज्ञानम् शीर्षक ग्रन्थ लिखा है।

ले. का.—आर्यसमाज जिन्दाबाद, आर्यसमाज और मूर्तिपूजा, नशाबंदी और आर्यसमाज।

व. प.—ई-२, रिवर बैंक कालोनी, लखनऊ।

ऋषिपालसिंह एडवोकेट

चौधरी ऋषिपालसिंह का जन्म १५ मई १९३४ को जालंधर जिले के ग्राम लडोआ के एक सिख परिवार में चौ. विशनसिंह सैनी के यहां हुआ। इन्होंने मुस्लिम यूनीवर्सिटी अलीगढ़ से एम. ए. और एल. एल. बी. की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। तत्पश्चात् १९५५ से १९६३ तक आप झांसी में वकालत करते रहे। विगत अनेक वर्षों से वे जालंधर में वकालत करते रहे हैं। आपने आर्यसमाज से सम्बन्धित विभिन्न विषयों पर अनेक विचारोत्तेजक लेख लिखे हैं जो आर्य मर्यादा (जालंधर), आर्यमित्र (लखनऊ), सर्वहितकारी (रोहतक) तथा वीरप्रताप एवं पंजाब केसरी आदि पत्रों में प्रकाशित हुए हैं।

व. प.—कोठी नं. २, अंकुश, चौक नई कचहरी, जालंधर १४४००१.

पं. ऋभुदेव शर्मा

शर्माजी का जन्म १६ दिसम्बर १९१७ को उत्तर-प्रदेश के बलिया जिले के नवपुरा नामक गांव में श्री नयपाल शर्मा के यहां हुआ। आपने अपनी युवावस्था में राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया। तत्पश्चात् दयानन्द-उपदेशक विद्यालय में स्वामी वेदानन्द तीर्थ के निकट रहकर शास्त्राध्ययन किया। वे कुछ काल तथा पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर के पास औंध (जिला सतारा) में भी रहे। कालान्तर में हैदराबाद चले गये और अवशिष्ट जीवन वहीं व्यतीत किया। १७ जनवरी १९७७ को आपका निधन हो गया।

ले. का.—ऋग्वेद भाष्य, महर्षि दयानन्द गान, आर्य-भानु का सम्पादन।

पं. ऋषिमित्र शास्त्री

अयोध्या गुरुकुल के स्नातक श्री शास्त्री का अधिकांश जीवन बम्बई में व्यतीत हुआ। वे इस महानगर की आर्य-सामाजिक गतिविधियों में भाग लेते रहे। आर्यसमाज की स्थापना तथा बम्बई में उनकी प्रारम्भिक प्रवृत्तियों के बारे में आपने गंभीर अनुसंधान किया था जो आर्यसमाज बम्बई की स्थापना शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका में छपा। आपकी एक पद्यात्मक कृति 'ऋषि दयानन्द की अमर कहानी' अत्यन्त लोकप्रिय हुई।

आचार्य ऋषिराम

आचार्यजी का जन्म १८९३ में अम्बाला जिले के रायपुर रानी नामक ग्राम में एक वैश्य परिवार में हुआ। उनकी शिक्षा डी. ए. वी. कालेज लाहौर में हुई जहां वे महात्मा हंसराज के सम्पर्क में आये। आप डी. ए. वी. कालेज के आजीवन सदस्य बन गये तथा १९३४ से १९४३ तक ब्राह्म महाविद्यालय लाहौर के आचार्य रहे। इससे पूर्व वे मोपला विद्रोह के समय केरल में सहायता कार्य के लिये गये। आपने १९२७ में नैरोबी में आर्यसमाज की स्थापना की थी। देश के स्वतंत्र हो जाने के पश्चात् उन्होंने अनेक देशों की यात्रायें कीं और वैदिक संदेश को प्रसारित किया। १९७० में उनकी मृत्यु हुई।

स्वामी दयानन्द की जन्म शताब्दी के अवसर पर उन्होंने स्वामीजी के जीवन एवं कृतित्व पर लिखे गये कुछ महत्त्वपूर्ण अंग्रेजी लेखों का संकलन और सम्पादन किया। ये लेख १९२४ में 'स्वामी दयानन्द सरस्वती : संक्षिप्त जीवन वृतान्त तथा कृतित्व का समीक्षात्मक अध्ययन' शीर्षक से कालीकट से प्रकाशित हुए। इस संग्रह में डा. गोकुलचन्द नारंग, लाला द्वारकादास, महात्मा हंसराज, सी. एफ. एण्ड्रूज, अरविन्द घोष, टी. एल. वास्वानी तथा एण्ड्रू जैक्सन डेविस के प्रसिद्ध लेख संगृहीत किये गये थे। आपने सत्यार्थप्रकाश का संक्षिप्त संस्करण भी तैयार किया था जो डी. ए. वी. कालेज प्रबंधक समिति द्वारा छपा है।

मास्टर लक्ष्मण आर्योपदेशक

आर्यसमाज के जिन विद्वानों ने इस्लाम का गम्भीर अध्ययन कर उसकी समालोचना में उच्च कोटि के साहित्य का प्रणयन किया उनमें मास्टर लक्ष्मण का नाम उल्लेखनीय है। लक्ष्मणजी जिला गुजरांवाला (पाकिस्तान) के रामनगर नामक ग्राम के निवासी थे। लाहौर में इन्होंने भारत पुस्तकालय की स्थापना की, जिसमें विभिन्न मत-मतान्तरों का विशाल साहित्य था। लाहौर में ही शीतला मन्दिर के निकट इन्होंने एक आर्य होटल चला रक्खा था, जिसमें लाहौर आने वाले आर्यों के लिए सात्त्विक भोजन की सुन्दर व्यवस्था थी। कालान्तर में ये दिल्ली चले आये, और नई सड़क पर आर्य प्रेस स्थापित किया। आर्यसमाज चावड़ी बाजार को अपनी गतिविधियों का केन्द्र बना कर मास्टरजी ने प्रारम्भ में अपना लेखन तथा ग्रन्थ प्रकाशन का कार्य जारी रक्खा किन्तु थोड़े समय पश्चात् वहां के अधिकारियों से मतभेद हो जाने के कारण वे अपने पुस्नकालय को आर्यसमाज बिड़लालाइन्ज ले गये। यहाँ वैदिक पुस्तकालय के रूप में उनके द्वारा संग्रहीत पुस्तकों तथा विक्रयार्थ ग्रन्थों का स्टाक रहता था। अपनी वसीयत में इन्होंने अपना सम्पूर्ण पुस्तकालय तथा दस हजार रुपया नकद आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब को दान रूप में दे दिया।

ले. का.—खात मुत्तासफीर या कुरान का वैदिक-भाष्य—यह कुरान का विशालकाय उर्दू भाष्य है। पुस्तक के विज्ञापन में लिखा गया है कि "यह भाष्य भिन्न-भिन्न अनुवादकों तथा भाष्यकारों की सिद्धान्तज्ञान शून्यता के कारण कुरान और मुहम्मद साहब के विषय में फैली हुई भ्रान्तियों का निराकरण ही नहीं करेगा अपितु वेद और वैदिक धर्म के नित्य तथा एकरस स्वतन्त्र सिद्धान्तों के चमत्कार भी दिखायेगा और साम्प्रदायिक वैमनस्य के स्थान में सार्वजनिक एक्य को स्थापित करेगा।"

अहमदिया सम्प्रदाय की आलोचना के ग्रन्थ—तहज़ीबुल मिर्जा या नियोग फिलासफी, मिर्जाई दागोफरेब, चोर और चतुर, कादियानी मसीह का कच्चा चिट्ठा।

इस्लाम विषयक ग्रन्थ—इस्लाम में जलवए वेद, वैदिक-स्वर्ग और इस्लामी बहिश्त, मुस्लिम आर्यमिलाप सं. ३ (१९३८), नकली चन्न वस्वेश्वर (खंजरे जामिल) मौलाना सिद्दीक दीनदार को उत्तर, मकर तोड़, (धर्मपाल का कच्चा चिट्ठा) हिन्दी व उर्दू, दाइए इस्लाम या तबाही इस्लाम, धर्मपाल और दीन इस्लाम, कहां कुरान कहां ईश्वरीय ज्ञान ?, कुरान मजीद और आवागमन (मुस्लिम-आर्य मिलाप-२, कुफ़तोड़ का भांडा फोड़, आगाखानी ढोल की पोल, आगाखानी दागोफरेब, हकीकतुल कुरान भाग-१, बाबा नानक और दीन इस्लाम, आगाखानी इल्मियत, दीन इस्लाम और उसका प्रचार, वैदिक-धर्म और दीन इस्लाम।

अन्य मतों के समालोचनात्मक ग्रन्थ—ईसाई मत में जलवए वेद, बाइबिल का कच्चा चिट्ठा भाग-१, राधास्वामी मत और वैदिक धर्म (हिन्दी, उर्दू), राधास्वामी हवाई महल (हिन्दी और उर्दू), यथार्थप्रकाश की हकीकत (राधास्वामी मत के गुरु आनन्दस्वरूप साहब जी महाराज द्वारा सत्यार्थप्रकाश की समीक्षा में लिखित ग्रन्थ यथार्थप्रकाश की आलोचना), बुद्ध, जैन वैदिक धर्मी हैं, आर्य खालसा-मिलाप, गुरुमुख या मनमुख, (सिक्ख मत की आलोचना)।

पौराणिक मत खण्डन विषयक ग्रन्थ—मूर्तिपूजा खंडन, भविष्य पुराण की आलोचना, शिवलिंग पूजा, अखिलानन्द की शरारत, नियोग प्रमाण।

ऋषि दयानन्द विषयक ग्रन्थ—मुकम्मल जीवनचरित्र महर्षि दयानन्द—१२०० पृष्ठों से अधिक कलेवर में प्रकाशित यह जीवन चरित मुख्यत: पं. लेखराम रचित स्वामी दयानन्द की उर्दू जीवनी को आधार बना कर लिखा गया है (१९७६) वैदिक मैगजीन (मार्च १९१७) में इस ग्रन्थ की प्रशंसापूर्ण समालोचना छपी है। ऋषि जीवन कथा (हिन्दी-उर्दू, १९७४ वि.), दयानन्द और शंकर मत—शंकराचार्य तथा स्वामी दयानन्द का तुलनात्मक अध्ययन, निष्कलंक दयानन्द, तमहीद तफसीर ऋग्वेद वगैरा—(ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का उर्दू अनुवाद)।

अन्य स्फुट ग्रन्थ—वैदिक संध्या उर्दू, वैदिक तर्क संग्रह १९३७, यजुर्वेद प्रथम अध्याय (उर्दू अनुवाद), सार्वजनिक धर्म, विद्या तथा निर्भ्रान्ति ज्ञान, ईश्वर की हस्ती, जीवात्मा की हस्ती, वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है, मुक्ति, मुक्ति से वापसी (हिन्दी में मुक्ति से पुनरावृत्ति), तत्त्व रामायण, युक्तिवाद, संकीर्तन भजनावली, धारा २९५ ए.

अनुवाद—यवनमत परीक्षा अर्थात् अहमदी युक्तियों का खण्डन (पं. लेखराम के ग्रन्थ का अनुवाद)। लक्ष्मणजी के ग्रन्थ मूलरूप में उर्दू में लिखे जाते थे, किन्तु बाद में वे हिन्दी में भी अनूदित होकर प्रकाशित होते थे।

पं. लक्ष्मणराव ओघले शास्त्री

मराठी भाषा में आर्यसामाजिक साहित्य के प्रणेता पं. लक्ष्मराव ओघले का जन्म महाराष्ट्र के मिरज नामक कस्बे में ३१ अगस्त १८९८ को हुआ। जब इनकी आयु ४ वर्ष की ही थी, इनकी माता की मृत्यु हो गई। अत: इनकी दादी को इनका पालन पोषण करना पड़ा। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा मिरज में ही हुई। जब वे तीसरी कक्षा के विद्यार्थी थे, तभी इनका विवाह हो गया। उस समय इनकी आयु १५ वर्ष की थी। जब वे पांचवी कक्षा में पहुंचे तो इन्हें छात्रवृत्ति मिली। हाई स्कूल में पढ़ते समय इनके द्वारा लिखित 'ब्रह्मचर्य' एवं 'भीष्म पितामह' शीर्षक निबन्धों पर इन्हें पुरस्कार मिला। इनकी उच्च शिक्षा राजाराम कालेज कोल्हापुर में हुई। यहां से प्रकाशित मासिक पत्रिका के सम्पादक भी थे। १९१४ में इनका पालन करने वाली दादी का देहान्त हुआ और १९१६ के प्लेग में इनके भाई की मृत्यु को गई। अगले वर्ष पत्नी भी मर गई।

१९१८ में बेलगांव जिला कांग्रेस में ये स्वयंसेवक के रूप में उपस्थित हुए। यहां उन्होंने लोकमान्य तिलक के दर्शन किये। इस अधिवेशन से उन्हें अछूतोद्धार की प्रेरणा मिली। सेवावृत्ति तो श्री ओघले ने अपनी आयु के ८वें वर्ष में ही स्वीकार कर ली थी। १९१८ में जब महाराष्ट्र में इन्फ्लुऐंजा का भयंकर प्रकोप हुआ तो श्री ओघले ने सांगली के आरोग्यमण्डल में स्वयंसेवक का कार्य किया। १९२० में इनका दूसरा विवाह हुआ। ३० जून १९२० को आपने कोल्हापुर में २० रु. मासिक पर शिक्षक का कार्य आरम्भ किया। स्वामी ओंकारसच्चिदानन्द से प्रेरणा प्राप्त कर १९२२ में इन्होंने कोल्हापुर में ही आर्यसमाज में प्रवेश किया। इस समय ये आर्यसमाज कोल्हापुर से प्रकाशित होने वाले 'आर्यभानु' मराठी साप्ताहिक के सह सम्पादक बने तथा आर्यसमाज के उपमंत्री के रूप में कार्य किया। १९२४ में स्वामी श्रद्धानन्द के सम्पर्क में आये और उनके निष्ठावान् सेवक बने। स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान का इनके मन पर बड़ा प्रभाव पड़ा। अगले दो वर्षों में इन्होंने पुणे में कार्य किया। १९३० में श्रद्धानन्द ग्रन्थमाला आरम्भ की। इसके अन्तर्गत धर्मप्रचार, हिन्दू समाज तथा संघटना आदि पुस्तकें छपीं। १९३३ में आपने श्रद्धानन्द-स्मृति ग्रन्थमाला से ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का मराठी अनुवाद प्रकाशित किया। अनुवादक थे श्रीदास विद्यार्थी। १९३४ में गुलबर्गा, मोमिनाबाद, उस्मानाबाद, कलंब, शोलापुर आदि स्थानों में आपने धर्म प्रचार किया। पं. ओघले ने वैदिक विवाह पद्धति से सहस्रों विवाह कराये। १९३६ में आर्यसमाज के माध्यम से समस्त जातियों के सम्मिलित सहभोज का आयोजन किया जिसमें वीर सावरकर आदि अनेक गण्यमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में भी इनकी प्रभावशाली भूमिका रही। १९४४ में ठाणे जिले में उन लोगों की पुन: आर्य धर्म में शुद्धि की जो किसी कारणवश ईसाई बन गये थे। पंजाब में हिन्दी सत्याग्रह के अवसर पर आपने अनेक लोगों को

सत्याग्रही बनाकर भेजा तथा आर्थिक सहायता भी की। १९५६ में इन्होंने सत्यार्थप्रकाश का मराठी संस्करण प्रकाशित किया। १९७४ में आपका निधन हुआ।

ले. का.—१. आर्यसमाजा चे सिद्धान्त व नियम, २. ईश्वर स्वरूप, ३. दयानन्दां चे संक्षिप्त चरित्र (अनूदित), ४. कार्य धर्म न को, ५. वैदिक संध्याग्निहोत्र, ६. स्वदेशी व बहिष्कार (प्रकाशित), ७. पंचमहायज्ञ, ८. ईश्वर एक या अनेक, ९. गुरुदत्त विद्यार्थी (संक्षिप्त चरित्र), १०. महाराष्ट्र व आर्यसमाज, ११. तुकाराम महाराज चा सदुपदेश, १२. उपनयन संस्कार, १३. वैदिक विवाह पद्धति, १४. शुद्धि चा रहस्य, १५. हिन्दू समाज कसा आहे, १६. गृहस्थाश्रम (अनूदित)।

वि. अ.—स्मारिका : आर्यसमाज लोअर परेल, बम्बई।

लक्ष्मण नारायण चौहान

श्री चौहान मौरवी (सौराष्ट्र) के निवासी हैं। आपने 'महर्षि वन्दना' शीर्षक एक गुजराती काव्य लिखा है। इसे श्री गिरधर गोविन्दजी मेहता ने २००१ वि. में टंकारा से प्रकाशित किया था।

लक्ष्मण शर्मा 'ललित'

बिहार के दरभंगा जिले के अस्थुआ ग्राम के निवासी थे। इन्होंने स्वामी दयानन्द के जीवन को लेकर 'महारथी' शीर्षक एक काव्य की रचना की थी। यह काव्य आर्यसमाज लहेरियासराय से २००४ वि. में प्रकाशित हुआ था।

स्वामी लक्ष्मणानन्द

योग पर एक महत्त्वपूर्ण तथा स्वानुभूत तथ्यों पर आधारित ग्रन्थ लिखने वाले स्वामी लक्ष्मणानन्द का जन्म १८८७ वि. में अमृतसर के एक खत्री परिवार में हुआ। इनके पिता का देहान्त उसी समय हो गया, जब इनकी आयु दो वर्ष की ही थी। माता ने कठिनाइयां सहन कर पुत्र का पालन किया। बाल्यावस्था में ही इनकी रुचि साधु संन्यासियों की संगति की ओर थी। इससे इनकी माता अप्रसन्न रहती। कुछ बड़े होने पर जीविका के लिये कार्य प्रारम्भ किया, जिससे प्रचुर अर्थ प्राप्ति होने लगी तथा माता की अप्रसन्नता भी जाती रही। आप विवाह के प्रति उदासीन रहे और सीधे ब्रह्मचर्य आश्रम से ही संन्यास की दीक्षा ले ली। प्रतिमा पूजन, तीर्थयात्रा, एकादश्यादि व्रत जैसे पौराणिक कर्मों के प्रति तो इनकी प्रारम्भ से ही विरक्ति थी। योग सीखने में इनकी रुचि रही। प्रारम्भ में दो अज्ञातनामा साधुओं से योग सीखा और अन्ततः स्वामी दयानन्द के अमृतसर पधारने पर उनसे अष्टांग योग की परिपूर्ण विधि सीखी। माता की मृत्यु हो जाने पर संस्कारविधि वर्णित विधान से उनकी अन्त्येष्टि की तथा इसी ग्रन्थ वर्णित विधि से १९४३ वि. में संन्यासाश्रम में प्रवेश किया।

ले. का.—ध्यान योग प्रकाश—स्वामी लक्ष्मणानन्द की योग विषयक महत्त्वपूर्ण कृति है। यह १९५८ वि. में प्रथम बार प्रकाशित हुई। इसके अन्य संस्करण १९७० वि., १९९४ वि. २०२० वि., तथा २०३२ वि. में छपे।

डा. लक्ष्मीदत्त आर्य मुसाफिर

आगरे में आर्य मुसाफिर विद्यालय के संस्थापक पं. भोजदत्त आर्य मुसाफिर के पुत्र डा. लक्ष्मीदत्त आगरा के अस्पताल में चिकित्सक थे। कालान्तर में उन्होंने सरकारी सेवा से त्यागपत्र दे दिया और स्वतंत्र रूप से चिकित्सा करने लगे। वे उच्च कोटि के शायर, वक्ता तथा विदग्ध शास्त्रार्थकर्ता थे।

ले. का.—डा. लक्ष्मीदत्त ने धार्मिक विषयों पर कुछ उच्च कोटि की गजलें लिखी थीं। कु. सुखलाल आर्यमुसाफिर अपने व्याख्यानों में उन्हें प्रायः सुनाते थे। कुं. सुखलाल द्वारा गाई जाने वाली गजलों में कौन सी उनकी स्वरचित तथा कौन सी डा. लक्ष्मीदत्त द्वारा लिखी गई थीं, इसकी जानकारी स्व. अमर स्वामीजी को ही थी। देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता पर डा. लक्ष्मीदत्त ने उच्चकोटि का उर्दू काव्य लिखा था।

पं. लक्ष्मीधर वाजपेयी

वाजपेयीजी का जन्म १८८६ में कानपुर जिले के मैथा नामक ग्राम में हुआ। अध्ययन समाप्त कर आप

पत्रकारिका के क्षेत्र में आये और हिन्दी केसरी, चित्रमय-जगत् आदि पत्रों का सम्पादन किया। आपने सर्वानन्द के छद्म नामक से आर्यमित्र का भी कुछ काल तक सम्पादन किया। १९५३ में आपका निधन हो गया।

ले. का.—स्वामी नित्यानन्द जीवनचरित (१९१३), हिन्दू जाति का ह्रास (१९७२ वि.), शालोपयोगी भारतवर्ष, दास बोध (अनुवाद), समर्थ रामदास चरित, हिन्दी मेघदूत आदि ५० ग्रन्थ।

डा. लक्ष्मीनारायण गुप्त

डा. लक्ष्मीनारायण गुप्त का जन्म प्रयाग में २६ जुलाई १९१५ को हुआ। आपने १९४२ में लखनऊ विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम. ए. किया, तत्पश्चात् १९५७ में "हिन्दी भाषा और साहित्य को आर्यसमाज की देन' विषय लेकर डा. दीनदयाल गुप्त के निर्देशन में पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। आपके शोध ग्रन्थ के परीक्षक थे डा. धीरेन्द्र वर्मा तथा डा. वासुदेवशरण अग्रवाल। उत्तर-प्रदेश सरकार ने इस शोध ग्रन्थ पर लेखक को ५०० रु. का पुरस्कार १९६२ में प्रदान किया। डा. गुप्त ने लखनऊ विश्वविद्यालय तथा राजकीय जुबली कालेज लखनऊ में हिन्दी का अध्यापन किया। आप १९७४ में कार्यमुक्त हुए। आपका शोध ग्रन्थ १९६१ में लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित हुआ।

ब. प.—सोसाइटी पार्क नरही, लखनऊ।

डा. लक्ष्मीनारायण दुबे

डा. दुबे का जन्म २७ जून १९३२ को मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले के हरदा नामक कस्बे में हुआ। हिन्दी और इतिहास में एम. ए. करने के पश्चात् डा. दुबे ने पी-एच. डी. की उपाधि ग्रहण की। सम्प्रति वे डा. हरिसिंह गौड विश्वविद्यालय सागर में हिन्दी विभाग में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। डा. दुबे आर्यसमाज के अनेक पत्र पत्रिकाओं में विगत कई वर्षों से नियमित रूप से लिखते आ रहे हैं। आपकी कुछ ऐसी ही रचनाओं का संग्रह 'हिन्दी साहित्य में आर्यसमाज की अभिव्यक्ति' शीर्षक से १९८६ में छपी।

ब. प.—ब. ६ डा. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर म. प्र. ४७०००३

लक्ष्मीनारायण बार. एट ला, लाहौर

विगत शताब्दी के अन्तिम दशक में लंदन में जब आर्यसमाज की स्थापना हुई, तो बैरिस्टरी के छात्र लक्ष्मीनारायण को आर्यसमाज लंदन का मंत्री नियुक्त किया। आर्यसमाज लंदन के साप्ताहिक सत्संग नियमपूर्वक होते थे। सत्संगों में भजन-प्रवचन आदि प्रायः अंग्रेजी में ही होते, क्योंकि अनेक अंग्रेजी स्त्री, पुरुष भी इन अधिवेशनों में उपस्थित रहते थे। फलतः लक्ष्मीनारायणजी ने Hymn Book of Arya Samaj का संकलन किया, जिसमें गायत्री मंत्र की अंग्रेजी व्याख्या, अंग्रेजी भाषा में कुछ भजन तथा भगवद् भक्ति एवं देशभक्ति की अंग्रेज कवियों द्वारा प्रणीत कविताओं का संग्रह था। अन्त में आर्यसमाज के नियमों का अंग्रेजी भाषान्तर भी दिया था। पुस्तक का मुद्रण, प्रकाशन लंदन में १८८६ में ही हुआ। बैरिस्टर लक्ष्मीनारायण रोहतक जिले के सांपला के तहसीलदार श्री अंगनलाल के पुत्र थे।

लक्ष्मीशंकर मिश्र

आपका जन्म १८८५ में उन्नाव जिले के ग्राम रावतपुर टिकोली में हुआ था। इनके पिता पं. देवीदत्त शर्मा, मिश्र संस्कृत के योग्य पण्डित थे। आप आर्यसमाज सुलतानपुर बाजार हैदराबाद में पुरोहित के पद पर रहे। आपका निधन ४ अप्रैल १९५७ को हुआ। आपने अपने पिता द्वारा लिखित 'श्रीमद्दयानन्द चरितामृतम्' काव्य की हिन्दी टीका लिखी। आपकी एक अन्य कृति 'ऋग्वेद में देवृकामा पाठ प्राचीन तथा देवकामा नवीन : इस पर विचार' आर्यसमाज सुलतान बाजार हैदराबाद से १९९८ वि. में प्रकाशित हुई।

श्री लब्भूराम नैयड़

इनका जन्म १८६५ में हुआ। ये लुधियाना नगर के निवासी थे। स्वामी श्रद्धानन्द के सान्निध्य में रहने तथा उनका विश्वासभाजन बनने का सुअवसर उन्हें मिला था। २८ अगस्त १९५० को इनका निधन हो गया।

ले. का—महर्षि दयानन्द सरस्वती (जीवनचरित), स्वामी श्रद्धानन्दजी के धर्मोपदेश ३ भाग, (सद्धर्म प्रचारक में स्वामीजी द्वारा लिखे वेद, उपनिषद्, गीता, मनुस्मृति आदि शास्त्र ग्रन्थों पर आधारित उपदेशों का संग्रह)।

श्री लाखनसिंह भदौरिया "सौमित्र"

कवि सौमित्र का जन्म ३ अगस्त १९२८ को इटावा जिले के बरौली ग्राम में श्री सूबासिंह के यहां हुआ। इन्होंने हिन्दी तथा संस्कृत में एम. ए. तक शिक्षा प्राप्त की। अध्यापक के रूप में आपने कई वर्षों तक विभिन्न स्थानों पर कार्य किया। आपकी काव्य कृतियां अनेक पत्र पत्रिकाओं में छपती रही हैं।

ले. का.—माटी और मुक्तक (१९६४), अपना दीप जलाओ (१९६६), ज्योति के फूल (१९७०)। ये सभी काव्य संग्रह हैं।

व. प.—डा. भोजपुर (मैनपुरी)।

लाला लाजपतराय

सुप्रसिद्ध देशभक्त तथा आर्यसमाज के प्रति प्रगाढ़ आस्थावान लाला लाजपतराय का जन्म २८ जनवरी १८६५ को पंजाब के एक ग्राम (धुंधिके) में हुआ। इनके पिता का नाम राधाकृष्ण था, जो अध्यापक थे। लालाजी की शिक्षा बी. ए. एल. एल. बी. तक हुई। कालान्तर में आपने हिसार तथा लाहौर में वकालत की। कांग्रेस के गरमदली नेताओं में उनका विशेष स्थान था। वे कलकत्ता कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे थे। लालाजी ने देश की स्वतन्त्रता के लिये जो त्याग एवं बलिदान किये, वे अनुपम हैं। १७ नवम्बर १९२८ को उनका लाहौर में देहान्त हुआ।

ले. का.—1. The AryaSamaj लांगमैन ग्रीन एण्ड कम्पनी लंदन से १९१५ में प्रकाशित। इसी पुस्तक का द्वितीय संस्करण अतरचन्द कपूर एण्ड सन्स लाहौर ने १९३२ में प्रकाशित किया। श्रीराम शर्मा द्वारा सम्पादित इसका एक अन्य संस्करण A History or the Arya-Samaj के शीर्षक से १९६७ में ओरियेंट लांगमैन दिल्ली ने प्रकाशित किया। इस ऐतिहासिक पुस्तक का हिन्दी अनुवाद डा. भवानीलाल भारतीय ने किया। यह आर्यसमाज अजमेर द्वारा १९८२ में प्रकाशित हुआ। 'तारीख ए आर्यसमाज' शीर्षक से इसका उर्दू अनुवाद किशोर सुलतान ने किया जो तरक्किये उर्दू बोर्ड नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ।

२. 'महर्षि दयानन्द सरस्वती और उनका काम' शीर्षक जीवन चरित प्रथम उर्दू में छपा। इसका हिन्दी अनुवाद गोपालदास देवगण शर्मा ने किया। इसका प्रथम संस्करण १८९८ में और दूसरा १९१२ में लाहौर से छपा। सार्वदेशिक साप्ताहिक के विशेषांक के रूप में यही ग्रन्थ २०२४ वि. में प्रकाशित हुआ।

लालाजी ने श्रीकृष्ण (१८९८), शिवाजी (१८९६), मैजिनी (१८९६), तथा गैरीवाल्डी (१८९६) के जीवनचरित भी लिखे जो अत्यन्त लोकप्रिय हुए। इनमें से अन्तिम दो को तो अंग्रेजी सरकार ने जब्त भी कर लिया था। लालाजी ने अपनी आत्मकथा भी लिखी जो पं. भीमसेन विद्यालंकार द्वारा अनूदित होकर १९२५ में लाहौर से प्रकाशित हुई थी। उनकी पं. गुरुदत्त का जीवनचरित उर्दू तथा अंग्रेजी में प्रकाशित हुआ था। 'Pt. Gurudatta Vidyarthi: Life and Work' शीर्षक यह ग्रन्थ १८९१ में पं. गुरुदत्त के निधन के एक वर्ष पश्चात् प्रकाशित हुआ था। इसका हिन्दी अनुवाद इस कोशकार ने किया, जो पं. गुरुदत्त की निधन शताब्दी वर्ष १९९० में आर्य प्रकाशन दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। अन्य ग्रन्थ—

The Depressed Classes and our Duty, पतित उद्धार।

वि. अ.—लाला लाजपतराय : पं. अलगूराय शास्त्री लिखित जीवनी।

श्री ललताप्रसाद अग्निहोत्री

आपने पं. लेखराम विषयक एक उर्दू पुस्तक का हिन्दी अनुवाद किया। यह पुस्तक थी 'उन्नीसवीं शताब्दी का सच्चा बलिदान'। इसका प्रकाशन आर्य भास्कर प्रेस मुरादाबाद से १८९७ में हुआ था। आपकी एक अन्य पुस्तक 'पंचमहायज्ञ पद्धति' भी प्रकाशित हुई थी।

पं. लालताप्रसाद यादव

श्री यादव का जन्म १९०२ में हुआ। डी. ए. वी. कालेज कानपुर में ये प्रयोगशाला सहायक के रूप में वर्षों तक कार्यरत रहे। स्वाध्याय के प्रति आपकी प्रगाढ़ रुचि थी और ईसाई एवं इस्लाम के अनुयायियों से आपने अनेक बार शास्त्रार्थ भी किये थे। अवकाश ग्रहण करने के अनन्तर ये आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश में उपदेशक भी रहे। १९ जून १९८८ को ८६ वर्ष की आयु में आप दिवंगत हुए।

ले. का.—बाइबिल की विध्वंसकारी शिक्षा (१९५४), ईसाईमत का कच्चा चिट्ठा (१९५४)।

लालतासिंह आर्य

आप कलकत्ता निवासी थे। आपने गोरक्षा के समर्थन में 'जय गोमाता' नाटक लिखा जो रामप्रताप हलवाई कलकत्ता द्वारा १९५९ वि. में प्रकाशित हुआ।

श्री लालमन आर्य

श्री आर्य का जन्म राजस्थान के शेरड़ा ग्राम में श्री डूंगर अग्रवाल के यहां हुआ चैत्र शुक्ला २ सं. १९६८ वि. (१९११) को हुआ। आर्यसमाज के सम्पर्क में आकर आपने तन, मन, धन से वैदिक धर्म की सेवा की। आपको अपने उद्योग-व्यवसाय में अपूर्व सफलता मिली। विभिन्न धार्मिक एवं सामाजिक संस्थाओं को आपने लाखों रुपये दान दिये। ज्येष्ठ शुक्ला दशमी २०४० वि. (२० जून १९८३) को आपका निधन हो गया।

श्री आर्य ने अपने जीवनकाल में अनेक भजनों, गीतों और पद्यों की रचना की। उनकी स्मृति में प्रकाशित यादें शीर्षक ग्रन्थ (१९८४) में ये रचनायें प्रकाशित हुई हैं। ईश्वर-प्रार्थना एवं उपदेश, खण्डन मण्डन, ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज तथा अन्य सामयिक विषयों पर लिखा हुआ उनका यह काव्य हरियाणा और राजस्थानी की लोक-प्रचलित भाषा में है। उन्होंने खड़ी बोली में भी कवितायें लिखी हैं।

वि. अ.—यादें—सम्पादक महेन्द्र आर्य.

डा. लालसाहबसिंह

उत्तरप्रदेश के आजमगढ़ जिले के ग्राम मस्तवानी में ३ मार्च १९५८ को डा. सिंह का जन्म हुआ। १९७९ में इन्होंने गोरखपुर विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में एम. ए. किया और १९८१ में रणवीर रणंजय कालेज अमेठी में इसी विषय के प्राध्यापक बन गये। आपने स्वामी 'दयानन्द के राजनीतिक दर्शन' पर शोध ग्रन्थ लिखा और १९८९ में गोरखपुर विश्वविद्यालय से उन्हें इस पर पी.-एच. डी. की उपाधि प्राप्त हुई। इस उपयोगी ग्रन्थ को आर्यसमाज कलकत्ता ने 'आर्य संसार' के विशेषांक रूप में तथा ग्रन्थ रूप में १९९० में प्रकाशित किया है।

ब. प.—प्राध्यापक निवास, रणवीर रणंजय कालेज, अमेठी (उ. प्र.).

लीलाधर हरि ठक्कर

कच्छ (गुजरात) के माण्डवी ग्राम में श्री लीलाधर का जन्म श्री हरिदास ठक्कर के यहाँ १८९८ वि. में हुआ। १९१० वि. में ये व्यवसाय के लिए बम्बई आये और वहाँ रहकर दलाली का धन्धा करने लगे। वंश-परम्परा से ये वल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी थे किन्तु इस मत के महाराजों के दुराचार पूर्ण कृत्यों को देखकर इनकी आस्था इस सम्प्रदाय से हट गई। कालान्तर में जब बम्बई नगर में स्वामी दयानन्द का आगमन हुआ तो ये उनके सम्पर्क में आये और विधिवत् आर्यसमाज की सदस्यता स्वीकार कर ली। २४ फरवरी १८९१ (माघ कृ. १ सं. १९४७ वि.) को मात्र ४९ वर्ष की आयु में इनका निधन हो गया।

ले. का.—सत्यासत्य विचार—इसे लेखक ने आर्य-समाज बम्बई में निबन्ध रूप में पढ़ा था। यूनीयन प्रेस बम्बई में १८७६ में मुद्रित हुआ। इसके कुल तीन संस्करण निकले थे। १८९४ में इसे स्वामी ब्रह्मानन्द ने लखनऊ से प्रकाशित किया। २. सत्यासत्य विचार (गुजराती) मूल-ग्रन्थ को गुजराती में अनूदित कर तथा उसमें कुछ वृद्धि कर सेवकलाल कृष्णदास ने इसका एक संशोधित संस्करण तैयार किया। इसे सेठ सुन्दरदास धर्मसी ने १८९३ में

बम्बई से प्रकाशित किया। आरम्भ में सेवकलाल कृष्णदास ने श्री लीलाधर की जीवनी भी लिखी है। सत्यासत्य-विचार का मराठी अनुवाद नरहरि विष्णु गोडसे ने किया जो १९५१ वि. (१८१७ शकाब्द) में छपा। ३. पुष्टि-मार्ग अथवा महाराज नो पंथ—१८९० में सेवकलाल कृष्णदास द्वारा बम्बई से प्रकाशित। इसका एक अन्य संस्करण १९१९ में भी छपा। प्रथम संस्करण पर लेखक का नाम अंकित नहीं था। इसमें पुष्टिमार्ग के इतिहास के साथ-साथ स्वामी दयानन्द के बम्बई प्रवास के समय प्रकाशित गुजराती विज्ञापनों को प्रकाशित किया गया है।

मादाम लुई मोरेन

सत्यार्थप्रकाश की फ्रैंच अनुवादिका मादाम लुई मोरेन पेरिस की निवासिनी थीं। अपनी मातृभाषा फ्रैंच तथा अंग्रेजी पर उसका पूर्ण अधिकार था। पं. जवाहरलाल नेहरू से भी उनके आत्मीयता पूर्ण सम्बन्ध थे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द की प्रेरणा से सत्यार्थप्रकाश का यह फ्रैंच अनुवाद सम्पन्न हो सका। डा. सत्यकेतु विद्यालंकार ने अनुवाद का कार्य मादाम को सौंपा। उन्होंने प्रथम डा. चिरंजीव भारद्वाज कृत सत्यार्थप्रकाश के अंग्रेजी अनुवाद का सहारा लिया, पुनः मूल ग्रन्थ भी डॉ. सत्यकेतु की सहायता से पढ़ा। १९४० में यह अनुवाद बेलजियम से छप कर प्रकाशित हुआ किन्तु द्वितीय विश्व युद्ध के कारण इस ग्रन्थ की प्रायः सभी प्रतियाँ नष्ट हो गईं। कठिनाई से केवल चार प्रतियां भारत लाई गईं। इनमें से एक प्रति मसूरी के पुस्तकालय में, दूसरी सार्वदेशिक सभा के पास, तीसरी स्वामी स्वतन्त्रानन्द के पास तथा चौथी डा. सत्यकेतु के पास रही, जिसे उन्होंने मॉरिशस भेज दिया। कालान्तर में यह अनुवाद श्री वासुदेव विष्णुदयाल की देखरेख में मॉरिशस से भी प्रकाशित हुआ।

पं. लेखराम आर्य पथिक

आर्यसमाज के महान् साहित्यकार पं. लेखराम का जन्म ८ चैत्र सं. १९१५ वि. (१८५८) को जिला जेहलम-तहसील चकवाल के ग्राम सय्यदपुर में हुआ। इनके पिता का नाम तारासिंह तथा माता का नाम श्री भागभरी था। सामान्य फारसी की शिक्षा पाकर ये पुलिस विभाग में कर्मचारी नियुक्त हुए और उन्नति करते करते सार्जेण्ट के पद पर पहुंच गये। पहले इनका झुकाव नवीन वेदान्त की ओर था, परन्तु मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी की पुस्तकों को पढ़ने से उन्हें स्वामी दयानन्द की विचारधारा का ज्ञान हुआ। १८८१ में वे स्वयं अजमेर जाकर स्वामीजी से मिले तथा अपनी शंकाओं का समाधान किया। १८८० में उन्होंने पेशावर आर्यसमाज की स्थापना की और आर्यसमाज पेशावर के सहयोग से 'धर्मोपदेश' नामक पत्र का प्रकाशन किया।

वैदिक धर्म प्रचार की तीव्र लगन के कारण पं. लेखराम ने सरकारी सेवा से त्यागपत्र दे दिया और सर्वात्मना धर्म प्रचार में लग गए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपदेशक बन कर उन्होंने देश के विभिन्न प्रांतों में भ्रमण किया और आर्यसमाज का संदेश सर्वत्र प्रसारित किया। सभा के आदेश से ही उन्होंने ऋषि दयानन्द के जीवन-चरित को लिखने का संकल्प किया और जीवनी के उपादानभूत तथ्यों की खोज में अनेक स्थानों का भ्रमण किया। वे प्रायः ईसाई तथा मुसलमानों से शास्त्रार्थ भी करते थे। विशेषतः मुसलमानों के अहमदिया सम्प्रदाय से उनका वादविवाद होता ही रहता था। ६ मार्च १८९७ (फाल्गुन शुक्ला ३ सं. १९५३ वि.) को एक आततायी के प्रहार से पं. लेखराम ने आत्मबलिदान किया। उस समय उनकी आयु मात्र ३९ वर्ष की थी। पं. लेखराम का समस्त साहित्य उर्दू में लिखा गया है, किन्तु हिन्दी में उनके प्रायः सभी ग्रन्थों का अनुवाद हो चुका है।

ले. का.—कुलियात आर्य मुसाफिर—आर्य प्रतिनिधि-सभा पंजाब द्वारा १८९७ में प्रकाशित। इसी ग्रन्थ को मुन्शीराम जिज्ञासु ने सम्पादित कर तीन भागों में सद्धर्म-प्रचारक प्रेस जालंधर से १९०३-०४ में प्रकाशित किया। महाशय लक्ष्मण ने भी आर्य पथिक ग्रन्थावली उर्दू में प्रकाशित की। हिन्दी में आर्य पथिक ग्रन्थावली का अनुवाद श्री प्रेमशरण प्रणत ने किया। इसका प्रथम पुष्प प्रेम पुस्तकालय आगरा से छपा। स्वामी अनुभवानन्द शान्त ने तीन खण्डों में आर्य पथिक ग्रन्थावली का अनुवाद किया। तीनों

खण्ड स्टार प्रेस प्रयाग से १९७४ वि. में छपे। लेखराम-ग्रन्थावली का एक अन्य अनुवाद दो खण्डों में अध्यापक सुखदेवलाल ने किया। यह सुखदेव पुस्तकालय बनारस से १९८४ वि. में प्रकाशित हुआ। कालान्तर में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने आर्य पथिक ग्रन्थावली दो खण्डों में प्रकाशित की। प्रथम खण्ड के अनुवादक पं. जगतकुमार शास्त्री तथा पं. शान्तिप्रकाश थे जबकि द्वितीय खण्ड पं. शान्तिप्रकाश द्वारा अनूदित किया गया। दोनों खण्ड क्रमश: १९६३ तथा १९७२ में प्रकाशित हुए। हरयाणा साहित्य-संस्थान ने भी 'ग्रन्थावली' प्रकाशित की है। अब हम पं. लेखराम के ग्रन्थों का पृथकश: उल्लेख करते हैं—१. आर्य, हिन्दू और नमस्ते की तहकीकात—इसका हिन्दी अनुवाद पं. रामविलास शर्मा ने किया। यह अनुवाद स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती द्वारा प्रकाशित भारतोद्धारक मासिक पत्र मेरठ के १८९७ के अंकों में धारावाही प्रकाशित हुआ। तत्पश्चात् इसे वैदिक प्रचारक फण्ड मेरठ (१९९७), स्वामी प्रेस मेरठ (१८९७), तथा वैदिक पुस्तकालय मुरादाबाद ने १९२९ में प्रकाशित किया।

२. रिसाला ए नवेद ए बेवगान (विधवा स्त्रियों की समस्या पर) (१८८३), ३. आर्यसमाज में शान्ति फैलाने के असली उपाय—मांस भक्षण निषेध में लिखी गई पुस्तक। ४. स्त्री शिक्षा के उपाय—इसका हिन्दी अनुवाद शिवचरणलाल सारस्वत ने किया। ५. कुमारी भूषण, ६. स्त्री शिक्षा, (१८९३)। सुखदेवलाल ने इसे हिन्दी में अनूदित कर बनारस से प्रकाशित की। ७. तारीखे दुनियां—'ऐतिहासिक निरीक्षण' शीर्षक से अनुवाद कर्णवास निवासी श्री शेरसिंह वर्मा ने किया जो सरस्वती यंत्रालय प्रयाग से १८९४ (१९५१ वि.) में प्रकाशित हुआ। एक अन्य अनुवाद दो भागों में स्वामी प्रेस मेरठ से प्रकाशित हुआ। द्वितीय भाग का अनुवाद मुन्शी जगदम्बाप्रसाद ने किया था, जो मई १९०० में तथा प्रथम भाग का अनुवाद शेरसिंह वर्मा कृत १९२४ में प्रकाशित हुआ। तारीखे दुनिया के कुछ अन्य अनुवाद 'सृष्टि का इतिहास' शीर्षक से छपे। अनुभवानन्द शान्त कृत अनुवाद आर्य पथिक ग्रन्थावली भाग २ व ३ के रूप में स्टार प्रेस प्रयाग से छपा जब कि प्रेमशरण प्रणत का अनुवाद आर्य पथिक ग्रन्थावलि प्रथम पुष्प 'क' भाग में समाविष्ट था। रामसुख पाण्डेय ने एक अन्य अनुवाद किया जो चौधरी एण्ड सन्स बनारस से १९२८ में प्रकाशित हुआ। अमरसिंह आर्य पथिक कृत अनुवाद गो. हा. द्वारा वेदप्रकाश के विशेषांक के रूप में २०१४ वि. में प्रकाशित हुआ। ८. भारत गौरवादर्श—अनु. सूर्यप्रसाद मिश्र।

इस्लाम ईसाई तथा अहमदिया मत विषयक ग्रन्थ

९. नुस्खा ए खब्त ए अहमदिया-'सुरमा ए चश्म आरिया' पुस्तक का उत्तर। १०. तकजीब ए बुराहीन ए अहमदिया (१८९१), ११. रिसाला ए जिहाद यानी दीन ए मुहम्मदी की बुनियाद (१८९२), १२. लिक्चर 'इशायत ए इस्लाम पर' (१८९३), १३. हुज्जतुल इस्लाम (१८९७) इसका हिन्दी अनुवाद पं. बद्रीदत्त शर्मा ने किया। १४. अबताले वशारते अहमदिया, १५. रद्दे खिलअते इस्लाम, १६. आइना-ए-शफाअत इस्लाम (क्षमा-दर्पण) २५ अप्रैल १८९५ को लिखित, १७. क्रिश्चियन मत-दर्पण—राम विलास शर्मा द्वारा अनूदित (१८९७), १८. यवन मत समीक्षा (हुज्जतुल इस्लाम का अनुवाद), १९. आइना ए इंजील (इंजील की हकीकत, १८८८), अन्य ग्रन्थ—श्रीकृष्ण का जीवन चरित्र—हिन्दी अनुवादक सुखदेवलाल अध्यापक, २०. सदाकत ऋग्वेद, २१. सुबूते-तनासुख, २२. पुराण किसने बनाये ? इसके कई संस्करण निम्न प्रकाशकों ने प्रकाशित किये—१. विरजानन्द यंत्रालय लाहौर (१० अक्टूबर १८९१), २. आर्य पुस्तकालय, इटावा, ३. वैदिक पुस्तक प्रचारक फण्ड मेरठ (१८९४-९६), ४. आर्य भास्कर प्रेस आगरा (१९०७), ५. आर्यसमाज अजमेर। Who wrote the Puranas. शीर्षक से इसका अंग्रेजी अनुवाद भी हुआ। २३. देवी भागवत-परीक्षा, २४. मूर्ति प्रकाश—मूल उर्दू पुस्तक चश्म ए नूर प्रेस अमृतसर से १८८८ में छपी। ठाकुरप्रसाद शाह दानापुर ने १९४९ वि. में इसे हिन्दी में प्रकाशित की। इसका सिंधी अनुवाद बेचाराम चटर्जी ने आर्यसमाज सक्खर (सिंध) से प्रकाशित किया था। २५. पतितोद्धारण—मुन्शी जगदम्बाप्रसाद द्वारा अनूदित (१९००), २६. इतरे-

रूहानी, २७. सांच को आंच नहीं—शिवनारायणप्रसाद कायस्थ लिखित श्री स्वामी द. स. की महिमा का उत्तर। २८. अन्त्येष्टि कर्म आवश्यक है ? (मुर्दा अवश्य जलाना चाहिए) शेरसिंह वर्मा द्वारा अनूदित (१८९८), २९. महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवनचरित—मास्टर आत्माराम अमृतसरी द्वारा सम्पादित तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा १८९७ में प्रकाशित। इसका हिन्दी अनुवाद पं. रघुनन्दनसिंह निर्मल ने किया जो प्रथम बार आर्यसमाज नया बांस दिल्ली द्वारा २०२८ वि. तथा द्वितीय बार आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली द्वारा २०३४ वि. में प्रकाशित हुआ। इसका सम्पादित संशोधित संस्करण इस कोशकार ने तैयार किया जो प्रकाशनाधीन है। ३०. सदाकते इल्हाम—ए. ओ. ह्यूम लिखित पुस्तक 'दलाएल अगलाते इल्हाम (प्रकाशक-ब्रह्मसमाज लाहौर) का उत्तर (१८८६), ३१. सत्य धर्म का संदेश, ३२. निज़ात की असली तारीफ (मोक्ष का वास्तविक लक्षण), ३३. नियोग का मन्तव्य (मुहम्मदियों का मुता) ३४. सत्य सिद्धान्त और आर्य समाज की शिक्षा।

वि. अ.—रक्त साक्षी लेखराम : राजेन्द्र जिज्ञासु

पं. लोकनाथ तर्कवाचस्पति

अद्वितीय शास्त्रार्थी, तर्कपटु तथा वाग्मी पं. लोकनाथ तर्कवाचस्पति कोट अद्दू जिला मुजफ्फरगढ़ (पाकिस्तान) के निवासी थे। इनका अध्ययन मुलतान (पाकिस्तान) तथा बाद में काशी में हुआ। १९१५ में वे आर्य प्रतिनिधि-सभा पंजाब में उपदेशक बने। आपका कार्य क्षेत्र पंजाब, सिंध तथा उत्तर पश्चिम सीमान्त प्रदेश रहा। आपने अपने जीवन में विभिन्न मतावलम्बियों से सैंकड़ों शास्त्रार्थ किये। अमर शहीद भगतसिंह का यज्ञोपवीत पं. लोकनाथ ने ही कराया था। देश विभाजन के पश्चात् आपने दिल्ली को केन्द्र बना कर धर्म प्रचार का कार्य जारी रक्खा। सितम्बर १९५७ में आपका निधन हुआ।

ले. का.—१. महर्षि महिमा—संस्कृत तथा हिन्दी का मिश्रित काव्य। २. ऋषिराजचालीसा—हनुमान-चालीसा की शैली पर लिखी गई पद्यात्मक पुस्तक। ३. भक्त गीता, ४. प्रभात गीत, ५. प्रभुभक्ति स्तोत्र।

वंशीधर पाठक

पाठकजी पुरानी पीढ़ी के लेखक और विद्वान् थे।

ले. का.—१. गंगा माहात्म्य (संवाद शैली में तीर्थ समीक्षा), २. भक्ति प्रदीप—प्राचीनतम ऋषि मुनियों की दिनचर्या (१९२४), ३. वन्नो देवी (शुद्धि की देवी १९२८)।

वंशीधर विद्यालंकार

पं. वंशीधर का जन्म पाकिस्तान के नगर डेरा ग़ाजी खां में २२ जून १९०० को हुआ। इनकी शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी में हुई और १९२२ में उन्होंने विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की। कुछ काल तक वे गुरुकुल सूपा के आचार्य रहे। तत्पश्चात् धर्मप्रचारार्थ बर्मा गये। वर्षों तक वे उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद में हिन्दी विभाग के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष रहे। वे उच्च कोटि के कवि थे। उनकी काव्य कृति है—मेरे फूल। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने उन्हें 'विद्यामार्तण्ड' की मानद उपाधि प्रदान की थी। २२ फरवरी १९६६ को उनका निधन हुआ।

वज़ीरचन्द विद्यार्थी

विद्यार्थी जी लाहौर के निवासी थे। आप महात्मा मुन्शीराम के सहयोगी तथा सद्धर्मप्रचारक पत्र के सह-सम्पादक थे। सनातनी पं. गोपीनाथ ने महात्मा मुन्शीराम पर जब १९०१ में मानहानि का अभियोग चलाया तो उसने वजीरचन्द विद्यार्थी को भी सह अभियुक्त बनाया था। इनका निधन १९०९ में हुआ।

ले. का.—मृतक श्राद्ध विषयक प्रश्न (१८९६), भविष्य पुराण में ईसा व मुहम्मद।

वल्लभदास भगवानजी गणात्रा

गुजरात प्रान्त के निवासी श्री गणात्रा संस्कृत के रस-सिद्ध कवि थे। आपने महर्षिदयानन्दचरितम् लिखा है। इसमें पद्य के साथ-साथ सरस संस्कृत गद्य में ऋषि दयानन्द का गुणानुवाद है। यह लघु ग्रन्थ १९३१ में छपा।

वल्लभ रत्नसिंह मेहता

वल्लभदास रत्नसिंह मेहता का जन्म श्रावण कृ. ८ १९६४ वि. (१९ अगस्त १९०८) को कच्छ जिले के मुंद्रा

कस्बे में हुआ। दस वर्ष की आयु में ही इन्होंने खादी पहनने का व्रत धारण किया तथा दलितोत्थान के कार्यक्रम में रुचि प्रदर्शित की। १९२५ में आपने भुज के एल्फ्रेड हाई स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। १९३१ में बी. ए. तथा १९३४ में एल. एल. बी. की परीक्षायें पास कीं। तत्पश्चात् आपने बम्बई में वकालत करना आरम्भ किया। यहीं से आपने 'आर्य ज्योति' शीर्षक साप्ताहिक पत्रिका का प्रकाशन भी किया। अप्रैल १९३७ में ये बैरिस्टरी की पढ़ाई करने इंगलैण्ड गये, किन्तु दुर्भाग्यवश इन्हें क्षय रोग ने आक्रान्त कर लिया। फलतः २८ अक्टूबर १९३८ को ३० वर्ष की आयु में ही इनका निधन हो गया। श्री वल्लभदास मेहता ने सत्यार्थप्रकाश का एक बालोपयोगी संस्करण 'कुमार सत्यार्थप्रकाश' तैयार किया। इसे १९३५ में आर्यसमाज बम्बई ने प्रकाशित किया।

बसन्तराय जे. जोशी

अफ्रीका की स्वाहिली भाषा में स्वामी दयानन्द का जीवन चरित लिखने वाले श्री जोशी हैं। इनकी इस कृति का शीर्षक है Suffi Dayanand Muandi तथा इसे इण्डो अफ्रीकन लिटरेरी सोसाइटी मोम्बासा ने १९५३ में प्रकाशित किया।

डा. (श्रीमती) वसुन्धरा रिहानी

डा. रिहानी का जन्म ४ सितम्बर १९४६ को होशयारपुर (पंजाब) में श्री हरिप्रकाश तथा श्रीमती कैलाश के यहां हुआ। आपने संस्कृत में एम. ए. किया तथा जर्मन भाषा में डिप्लोमा प्राप्त किया है। विगत अनेक वर्षों से दयानन्द शोध पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय में शोध सहायक के रूप में कार्य करने के पश्चात् अब वे इसी विभाग में प्रवक्ता के पद पर कार्यरत हैं।

ले. का.—वेदवाणी, पावमानी, जनज्ञान, विश्वज्योति, वेदोद्धारिणी, परोपकारी तथा विश्वसंस्कृतम् आदि पत्रों में आपके अनेक शोध प्रबन्ध प्रकाशित हो चुके हैं। आपको 'वैदिक देवता: महर्षि दयानन्द कृत यजुर्वेद भाष्य के विशिष्ट संदर्भ में' विषय पर १९८६ में पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त हुई। यह कार्य दयानन्द शोध पीठ पंजाब विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान में सम्पन्न हुआ।

ब. प.—ई १, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ १६००१४.

पं. वाक्पतिराज शास्त्री

नेपाल में आर्यसामाजिक जागृति के सूत्रधार पं. माधवराज जोशी के पुत्र पं वाक्पतिराज का जन्म १९५२ वि. में हुआ। इनके पिता पं. माधवराज ने नेपाल में आर्यसमाज की विचारधारा का प्रचार करने में पहल की थी। इनके बड़े भाई पं. शुक्रराज शास्त्री थे, जिन्हें नेपाल के राणा शासन के अन्तर्गत राज्य में राजनैतिक एवं सामाजिक जागृति फैलाने के कारण फांसी का दण्ड दिया था। पं. वाक्पतिराज की शिक्षा गुरुकुल सिकन्दराबाद में हुई। अपने भाई की शहादत के पश्चात् ये नेपाल में रहकर आर्यसमाज का प्रचार करते रहे।

ले. का.—योगदर्शन (व्यास भाष्य सहित) नेपाली अनुवाद, न्यायदर्शन (वात्स्यायन भाष्य सहित) नेपाली अनुवाद, पिंगल छन्दः सूत्र अनुवाद। नेपाल में आर्यसमाज की विचारधारा के प्रथम प्रसारक पं. माधवराज जोशी का जीवनचरित।

पं. वागीश्वर विद्यालंकार

संस्कृत एवं हिन्दी के रस सिद्ध कवि पं. वागीश्वर विद्यालंकार का जन्म १३ मई १८९६ को बिजनौर जिले के जलालाबाद नामक ग्राम में हुआ। इनका शिक्षण गुरुकुल कांगड़ी में हुआ जहां से आपने १९७५ वि. (१९१९) में विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की। आपने राजकीय संस्कृत कालेज बनारस से साहित्याचार्य तथा आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी तथा संस्कृत में एम. ए. की परीक्षायें भी उत्तीर्ण कीं। १९२० से १९५८ तक आप गुरुकुल कांगड़ी में ही संस्कृत विभाग के अध्यक्ष, कुल सचिव, पुस्तकालयाध्यक्ष आदि विविध पदों पर रहे। आप गुरुकुल की विद्या सभा के सदस्य भी रहे। ३० मई १९७६ को आपका निधन हुआ।

ले. का.—साहित्य सुधा संग्रह—(१९२४), पाठ्य-ग्रन्थ, कौतुकम्—(संस्कृत एकांकी, १९३४), विदूषक-परिषद्, (एकांकी संग्रह, १९३७), वैदिक साहित्य-सौदामिनी—वेद मन्त्रों को उदाहरण रूप में प्रस्तुत करते हुए काव्यशास्त्र का मौलिक विवेचन, नीराजना (हिन्दी काव्य संग्रह, १९३९) कुन्दमाला व शाकुन्तल (संस्कृत नाटकों, का हिन्दी अनुवाद, १९३८).

वाघजी भाई अमरसिंह आर्य

श्री आर्य ने स्वामी दयानन्द की प्रशस्ति में गुजराती काव्य की रचना की जो 'दयानन्द नो श्लोको' शीर्षक से आर्य सेवा संघ प्रकाशन सूरत द्वारा १९६१ में प्रकाशित हुआ।

पं. वाचस्पति एम. ए., बी. एस. सी.

आप आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा लाहौर के साहित्य विभाग के अध्यक्ष थे। इनकी देख-रेख में ही प्रादेशिक सभा के तत्त्वावधान में उत्कृष्ट कोटि का साहित्य प्रकाशित होता था।

ले. का.—सत्यार्थप्रकाश भाष्य—प्रथम एवं द्वितीय समुल्लास (१९९१ वि. तथा १९९२ वि.), स्वामी दयानन्द रचित आर्याभिविनय का सम्पादन (१९८८ वि., १९३२), देवयज्ञ प्रकाश (अग्निहोत्र की विधि एवं व्याख्या, १९९७ वि.)

डा. वाचस्पति उपाध्याय

दर्शन के प्रख्यात विद्वान् डा. वाचस्पति का जन्म १ जुलाई १९४३ को सुलतानपुर (उत्तरप्रदेश) में पं. रमाकान्त उपाध्याय के यहाँ हुआ। उनका अध्ययन कलकत्ता में हुआ। कलकत्ता विश्वविद्यालय से उन्होंने १९६२ में एम. ए. (संस्कृत) तथा १९६६ में मीमांसादर्शन में स्वतः प्रामाण्यवाद विषय लेकर पी. एच-डी. की। १९७० में उन्हें वाराणसेय सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से डी. लिट्. की उपाधि मिली। यहाँ उनका शोध विषय था—प्राचीन भारत में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध। १९६७ से १९७० तक उन्होंने इसी विश्वविद्यालय में परीक्षाधिकारी तथा प्रस्तोता का कार्य किया। १९७० से वे दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में कार्यरत हैं तथा वर्तमान में प्रोफेसर हैं।

ले. का.—मीमांसादर्शन विमर्श १९७६, उत्तरप्रदेश संस्कृत अकादमी से पुरस्कृत, लौगाक्षिभास्कर कृत अर्थसंग्रह का सम्पादन १९७८, धर्मशास्त्र संग्रह (२ खण्डों में) लघु तथा वृहद् स्मृतियों का संकलन (१९८१), वेदान्तदेशिक कृत सेश्वर मीमांसा (सम्पादन १९८३), हेमचन्द्र कृत अभिधान संग्रह का सम्पादन (१९८४).

व. प.—९ ए/४ डब्लू. ई. ए., करौलबाग, नई दिल्ली ११०००५.

साधु टी. एल. वास्वानी (थावरदास लीलाराम वास्वानी)

स्वामी दयानन्द की जन्म शताब्दी के अवसर पर 'वायस आफ आर्यावर्त' तथा 'टार्च बियरर' जैसे श्रेष्ठ ग्रन्थ लिखकर स्वामीजी को भावनाप्रवण श्रद्धांजलि अर्पित करने वाले साधु टी. एल. वास्वानी (थावरदास लीलाराम वास्वानी) का जन्म २५ नवम्बर १८७९ को हैदराबाद (सिंध) में हुआ था। आपने बी. ए. की परीक्षा बम्बई विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की तथा दर्शनशास्त्र विषय लेकर एम.ए. किया। वे डी.जी. सिंध कालेज करांची में प्राध्यापक बन गये। कालान्तर में आपने दयालसिंह कालेज लाहौर, विक्टोरिया कालेज कूच बिहार तथा महेन्द्र कालेज पटियाला में अध्यापक तथा प्राचार्य पद पर कार्य किया। साधु वास्वानी प्रारम्भ से ही अध्यात्म भावापन्न पुरुष थे। आप स्वामी श्रद्धानन्द के सम्पर्क में आये और तब स्वामी दयानन्द के प्रखर व्यक्तित्व का अध्ययन करने का अवसर मिला। १९२८ में आपने गुरुकुल कांगड़ी में दीक्षान्त-प्रवचन किया तथा आर्यसमाज के मन्तव्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। १९२५ में स्वामी दयानन्द की जन्म शताब्दी के अवसर पर आपने दो ग्रन्थ अंग्रेजी में लिखे जिनमें स्वामीजी के जीवन, व्यक्तित्व तथा कृतित्व का भावपूर्ण शैली में विवेचन किया गया था। साधु वास्वानी का निधन १६ जनवरी १९६६ को पुणे में हुआ, जहाँ देश विभाजन के पश्चात् आप अपना आश्रम बनाकर रह रहे थे।

ले. का.—The Torch Bearer—१९२५ में दयानन्द जन्म शताब्दी के अवसर पर लिखा गया यह ग्रन्थ पं. धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री द्वारा 'पथ प्रदीप' शीर्षक से अनूदित हुआ। इसे 'ज्योतिर्मय' शीर्षक देकर २०३५ वि. में पुनः प्रकाशित किया गया।

Voice of Aryavarta—१९२५ में प्रथमवार प्रकाशित यह ग्रन्थ पं. रघुनाथप्रसाद पाठक द्वारा हिन्दी में अनूदित होकर १९२९ में प्रकाशित हुआ। उपर्युक्त ग्रन्थ करांची से Rishi Dayanand. An Intrepretration तथा पुणे से १९५८ में Rishi Dayanand शीर्षक से छपे।

वासुदेव चैतन्य

श्री चैतन्य का जन्म ८ मई १९१९ को उदयपुर में श्री हरिदत्त नागर के यहाँ हुआ। आपने गुरुकुल कांगड़ी से १९४० में आयुर्वेदालंकार की उपाधि ग्रहण की। आपने 'चैतन्य नीतिशतकम्' शीर्षक संस्कृत का उत्तम नीति काव्य लिखा है।

वासुदेव डी. एन.

श्री वासुदेव का जन्म १९०६ में सरगोधा (पाकिस्तान) में हुआ। इनकी शिक्षा पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर में हुई जहाँ से आपने बी. ए. तथा एल. एल. बी. तक अध्ययन किया। आपने स्वल्प काल तक केन्द्रीय सरकार में सेवा की। तत्पश्चात् विभिन्न व्यावसायिक संस्थानों में काम किया। १९५५ में उन्हें आर्यसमाज के सम्पर्क में आने का अवसर मिला, जब वे फगवाड़ा में शक्कर के एक कारखाने में कार्यरत थे।

ले. का.—A Short Life Story of Dayanand Saraswati (1977), Glimpses from Satyartha-Prakash (1979).

व. प.—सी. ११५, नालको नगर (उड़ीसा)-७५९१४५

वासुदेव वर्मा

दिल्ली निवासी श्री वासुदेव वर्मा ने '१८५७ और स्वामी दयानन्द' शीर्षक एक पुस्तक लिखी जो भारतीय लोक समिति दिल्ली द्वारा २०२६ वि. में प्रकाशित हुई। इसमें स्वामी दयानन्द का १८५७ की हलचल में योगदान पर कुछ प्रमाण जुटाये गये थे।

प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल

मॉरिशस देशवासी प्रसिद्ध साहित्यकार प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल का जन्म १५ अप्रेल १९०६ को मॉरिशस में ही हुआ। इनके पूर्वज विष्णुदयाल नामक सज्जन थे जो १८६४ में भारत से मॉरिशस गये थे। उच्चतर शिक्षा के लिए श्री वासुदेव भारत आये और १९३३ से १९३७ तक उन्होंने डी. ए. वी. कालेज लाहौर में अध्ययन किया। वहाँ से इन्होंने बी. ए. आनर्स की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् वे कलकत्ता गये और वहाँ से उन्होंने अंग्रेजी में एम. ए. किया। द्वितीय विश्वयुद्ध छिड़ जाने पर ये स्वदेश लौट गये और आर्यसमाज का प्रचार करने लगे। हिन्दी, अंग्रेजी तथा फ्रैंच में इन्होंने प्रचुर साहित्य लिखा है। आप वर्षों तक मॉरिशस वासियों को हिन्दी पढ़ाते रहे। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में इनके अनेक लेख प्रकाशित हुए हैं।

ले. का.—अंग्रेजी ग्रन्थ—1. Hindu Scriptures–वेद, उपनिषद्, रामायण तथा गीता आदि हिन्दू शास्त्रों का परिचय देने वाला ग्रन्थ मैकमिलन कम्पनी लंदन से १९६० में प्रकाशित। 2. An Introduction to the Vedas—यह पुस्तक Hindu Scriptures के प्रारम्भिक वेद विषयक अंश का पृथक् मुद्रित रूप है (१९६५)। 3. The Essence of the Vedas and Allied Scriptures—इस ग्रन्थ में ऋग्वेद के सूक्तों, यजुर्वेद के शिवसंकल्पात्सक मंत्रों तथा महाभारतान्तर्गत यक्ष-धर्मराज प्रश्नोत्तर आदि प्रसंगों की रोचक व्याख्या की गई है। (१९६६) 4. The Message of the Four Vedas (1943), 5. Glimpses of the Vedas and Vedic Prayer, 6. The AryaSamaj Introduced.

फ्रैंच ग्रन्थ—L' Essence du Vi'disme (1969). Les Hindous et leurs'e criturs Sacrees (1965), Dayanand Et Gandhi—स्वामी दयानन्द और महा-

त्मा गांधी विषयक ग्रन्थ Deux Indians शीर्षक ग्रन्थ-माला के अन्तर्गत १९६८ में अड्यार मद्रास तथा पेरिस से प्रकाशित हुआ।

हिन्दी ग्रन्थ—वेद ज्ञान, वेद भगवान् बोले (वैदिक प्रवचनों का संग्रह १९४२)। महर्षि का सच्चा स्वरूप (१९८४)।

व. प.— १४ सुखदेव विष्णुदयाल स्ट्रीट, पोर्टलुई (मॉरिशस)।

पं. वासुदेव वर्मा

प्रसिद्ध गायक, प्रचारक तथा भजनोपदेशक पं. वासुदेव शर्मा का जन्म बिजनौर जिले के ऊमरी नामक ग्राम में १८८० में हुआ। आपकी शिक्षा तो सामान्य ही थी किन्तु आर्यसमाज के प्रति अनन्य निष्ठावान् होने के कारण आपने स्वरचित कविताओं और भजनों के माध्यम से धर्म-प्रचार किया। आप आर्यसमाज धामपुर की पाठशाला में अध्यापक भी रहे थे। आपकी 'वासुदेव भजन बत्तीसी' एक प्रसिद्ध पुस्तक है। आपका निधन १९२१ में हुआ।

डा. वासुदेवशरण अग्रवाल

सुप्रसिद्ध संस्कृतज्ञ डा. वासुदेवशरण का जन्म १९०४ में मेरठ जिले के एक ग्राम में हुआ। इनकी शिक्षा काशी विश्वविद्यालय में हुई जहां से इन्होंने एम. ए. पी-एच. डी. तथा डी. लिट. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। प्रारम्भ में ये लखनऊ म्यूजियम के अध्यक्ष रहे। तत्पश्चात् हिन्दू विश्वविद्यालय में प्राच्यविद्या विभाग के आचार्य पद पर कार्य किया। भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में उन्होंने संस्कृत के कालजयी ग्रन्थों का विवेचन किया। १९६६ में उनका निधन हो गया।

ले. का.—उरू ज्योति (वैदिक निबन्धों का संग्रह), ऋषि दयानन्द की दीक्षा शताब्दी पर आयोजित वेद-सम्मेलन का अध्यक्षीय भाषण (१९५९), ब्रह्म सिद्धांत, वेदार्थ कल्पलतिका, वैदिक विश्वदर्शन, रजोवाद, सहस्राक्षरा वाक्, अग्नि विद्या, वेद विद्या, वेदरश्मि Sparks from the Vedic Fire, The Vision of Dirghtamas or a Commentary on the Asyavamiya Sukta, The Riddle of Rishi Vasukra, The Symbolism of two boilers, The Four Horned Bull (चत्वारि शृंगा मंत्र की व्याख्या)।

विंध्यवासिनीप्रसाद अनुगामी

श्री अनुगामी का जन्म १८९२ में मिर्जापुर (उ.प्र.) में हुआ। इनके पिता का नाम श्री सरयूप्रसाद अग्रवाल था। इनकी शिक्षा हिन्दू विश्वविद्यालय में हुई जहाँ से आपने बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। कालान्तर में आपका संपर्क पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु से हुआ। फलतः आप शास्त्रीय अध्ययन में प्रवृत्त हुए और स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों का गम्भीर अनुशीलन किया। आपने वेदवाणी में आर्याभिविनय में व्याख्यात मंत्रों का सुबोध भाष्य लिखा था। जीवन के उत्तरार्द्ध में ये कलकत्ता रहने लगे। वहीं आपका देहान्त २५ फरवरी १९७६ को हो गया।

ले. का.—१. अग्निहोत्र की प्रतीकात्मक व्याख्या, २. आर्याभिविनय की दण्डान्वय टीका (१९८३)। श्री अनुगामी ने आर्याभिविनय के द्वितीय प्रकाश के ४२ मंत्रों पर ही यह टीका लिखी थी कि उनका निधन हो गया। अवशिष्ट मंत्रों की टिप्पणी स्वामी जगदीश्वरानन्द ने लिखी। ३. माण्डूक्य उपनिषद् भाष्य (अपूर्ण)।

डा. विक्रमकुमार विवेकी

डा. विवेकी का जन्म २ मार्च १९५१ को उड़ीसा प्रान्त के जिला सम्बलपुर के कटापालि नामक ग्राम में श्री दीनबंधु आर्य के यहाँ हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल झज्जर में हुई जहाँ से १९६९ में इन्होंने व्याकरणाचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् वे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में प्रविष्ट हुए और वहां से १९७७ में संस्कृत में एम. ए. किया। दयानन्द शोध पीठ पंजाब विश्वविद्यालय से उन्होंने स्वामी दयानन्दकृत संस्कारविधि में विवाह-गृहाश्रम प्रकरण विषय लेकर १९८१ में पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। सम्प्रति वे पंजाब विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में प्राध्यापक पद पर कार्यरत हैं। इनका शोध प्रबंध संस्कृत में लिखा गया था।

व. प.—संस्कृत विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ १६००१४

विक्रमादित्य 'वसन्त'

लखनऊ के निवासी श्री वसन्त ने चतुर्थाश्रम की दीक्षा लेकर अपना नाम स्वामी वेद बोध रख लिया था। वे कई वर्ष पूर्व आर्यमित्र के सम्पादक भी रहे। वेद मन्त्रों की आध्यात्मिक व्याख्या युक्त ग्रन्थ लिखने में उनकी विशेष रुचि थी। २४ जुलाई १९८९ को लखनऊ में उनका निधन हुआ।

ले. का.—परम धाम के पथिक (सामवेद की महा-नाम्नी ऋचाओं की व्याख्या), स्वराज्य की अर्चना (ऋग्वेद के स्वराज्य सूक्त की व्याख्या)।

विजयकुमार

आर्यसमाज के विख्यात साहित्य प्रकाशक श्री गोविन्द-राम हासानन्द के सुपुत्र श्री विजयकुमार का जन्म २६ फरवरी १९३२ को कलकत्ता में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ तथा गुरुकुल कांगड़ी में हुई। तत्पश्चात् आपने पंजाब विश्वविद्यालय से प्रभाकर तथा दिल्ली विश्वविद्यालय से बी. ए. की उपाधि प्राप्त की। साहित्य प्रकाशन में आपकी आरम्भ से ही रुचि रही। श्री गोविन्दराम के निधन के पश्चात् आपने अपने प्रकाशन-कार्य को तीव्र गति दी। आज गोविन्दराम हासानन्द को आर्य प्रकाशकों में शीर्षस्थ स्थान प्राप्त है। महात्मा आनन्द स्वामी, स्वामी सत्यप्रकाश, स्वामी जगदीश्वरानन्द, पं. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, डा. भवानीलाल भारतीय आदि आर्य जगत् के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों के ग्रन्थों को प्रकाशित करने का श्रेय श्री विजयकुमार को ही है। महात्मा हंसराज तथा स्वामी श्रद्धानन्द के समग्र साहित्य को प्रकाशित कर आपने प्रकाशन जगत् में नवीन मानदण्ड स्थापित किया है। वे विगत कई वर्षों से 'वेद प्रकाश' मासिक के सम्पादक भी हैं।

व. प.—सुबोध पॉकेट बुक्स, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली ११०००२.

डा. विजयपाल

सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डा. विजयपाल का जन्म २५ जनवरी १९२९ को गाजियाबाद जिले के आसिफपुर उजैडा ग्राम में श्री बुधसिंह के यहां हुआ। आपकी शिक्षा मोदी-नगर तथा कानपुर में हुई। तत्पश्चात् आपने आर्ष गुरु-कुल एटा में भी अध्ययन किया। पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु से आपने व्याकरण, निरुक्त आदि वेदांगों का अध्ययन किया था। पुनः पं. ढुंढिराजशास्त्री से वैदिक दर्शनों का अध्ययन किया। कई वर्षों से आप श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट में कार्य कर रहे हैं तथा विगत कई वर्षों से वेदवाणी के सम्पादक भी हैं।

ले. का.—गोपथ ब्राह्मण का सम्पादन (२०३७ वि.), वेंकटमाधवीया ऋग्वेदानुक्रमणी हिन्दी व्याख्या (१९७९), बोधायन श्रौतसूत्र भवस्वामिसायण भाष्य युतम् (२०३९ वि.), निरुक्त श्लोक वार्तिकम् (१९८२), अष्टाध्यायी शुक्ल-यजुर्वेदप्रातिशाख्ययोर्मतविमर्शः (१९८३), कात्यायनीय-सर्वानुक्रमणी (वेदार्थदीपिका सहित), श्रौतयज्ञों का संक्षिप्त परिचय (२०४१ वि.)।

व. प.—रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़ (सोनीपत)

डा. विजयवीर विद्यालंकार

डा. विद्यालंकार का जन्म १३ जुलाई १९४२ को श्री नारायणराव के यहां बम्बई में हुआ। इनकी शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी में हुई जहां से इन्होंने १९६४ में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण कर विद्यालंकार की उपाधि ग्रहण की। कालान्तर में हिन्दी तथा संस्कृत में एम. ए. तथा पी-एच. डी. की उपाधियां उस्मानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद से ग्रहण कीं। प्राच्य महाविद्यालय हैदराबाद में आप हिन्दी के प्राध्यापक हैं। 'वैदिक विचार' शीर्षक आपका एक निबंध-संग्रह वैदिक संस्थान हैदराबाद से १९८० में प्रकाशित हुआ है।

व. प.—३-४-६६३।२२-१ नारायण गुड्डा, हैदराबाद ५०००२९.

पं. विजयशंकर मूलशंकर जानी

बम्बई प्रान्त में वैदिक धर्म के प्रचार के लिये समर्पित

पं. विजयशंकर का जन्म पौष शुक्ला १३ सं. १९५३ वि. तदनुसार १६ जनवरी १८९७ गुरुवार को सौराष्ट्र के जूनागढ़ राज्य के अन्तर्गत मेदरड़ा नामक ग्राम में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। इनके पिता मूलशंकर सनातनी विचारधारा के अनुयायी थे। बचपन में ही विजयशंकर का मूर्तिपूजा से विश्वास उठ गया और वे परमात्मा को सर्व व्यापक मानने लगे। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा अपने ग्राम में ही हुई। तत्पश्चात् वे राजकोट के एल्फ्रेड हाई स्कूल में प्रविष्ट हुए और वहां से सीनियर कैम्ब्रिज की परीक्षा देने के लिये बम्बई चले गये। कुछ काल तक वे कलकत्ता भी रहे। पुनः बम्बई आये और वहीं बस गये। १९२० में उन्होंने स्वामी दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश का अध्ययन किया और वे आर्यसमाज की विचार-धारा में दीक्षित हो गये। अब उन्होंने संस्कृत व्याकरण, वेद तथा उपनिषदादि ग्रन्थों का अध्ययन किया और वैदिक धर्म के प्रचार में लग गये।

आर्यसमाज के अनुयायी बन जाने के कारण उनके पिता ने उन्हें नास्तिक ही नहीं कहा, अपनी सम्पत्ति के अधिकार से भी वंचित कर दिया। किन्तु पं. विजयशंकर की आर्यसमाज के प्रति अविचलित आस्था रही। उन्होंने अपनी युवावस्था में अनेक पण्डितों और मौलवियों से शास्त्रार्थ किये तथा उनमें विजय प्राप्त की। पुरी के शंकराचार्य भारती कृष्णतीर्थ से भी उनका शास्त्रार्थ हुआ जिसमें वे विजयी रहे। उन्होंने बम्बई से 'आर्यज्योति' नामक एक साप्ताहिक पत्रिका भी निकाली।

बम्बई में आर्यसमाज के प्रचार प्रसार का श्रेय पं. विजयशंकर को ही है। उनके प्रयत्नों से ही कलकत्ता के पं. अयोध्याप्रसादजी को विश्व धर्म सम्मेलन में वैदिक-धर्म का प्रतिनिधि बना कर अमेरिका के शिकागो नगर में भेजा गया। १९२५ में वे मथुरा में आयोजित महर्षि दयानन्द की जन्म शताब्दी के समारोह में सम्मिलित हुए तो उनकी इच्छा हुई कि अगले वर्ष अर्थात् १९२६ में महर्षि के जन्म स्थान टंकारा में श्री महाराज की जन्म-शताब्दी का एक अन्य महोत्सव विशाल स्तर पर आयोजित किया जाय। उनके पुरुषार्थ से ७ फरवरी से ११ फरवरी १९२६ तक टंकारा ग्राम में यह महोत्सव सफलता पूर्वक आयोजित हुआ। इसमें आर्यसमाज के गण्यमान्य विद्वानों और संन्यासियों के अतिरिक्त सौराष्ट्र के अनेक राजा तथा सामन्त भी सम्मिलित हुए। इस समारोह की अध्यक्षता स्वामी श्रद्धानन्द ने की थी।

पं. विजयशंकर आर्यसमाज (काकडवाड़ी) बम्बई तथा मुम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के कई वर्षों तक अध्यक्ष भी रहे। ३५ वर्ष की सार्वजनिक सेवा के पश्चात् आश्विन शुक्ल ११ सं. २०१४ वि. (२३ अक्टूबर १९५८) गुरुवार को हृदय की बीमारी से उनका बम्बई में ही निधन हो गया।

ले.का—१· दयानन्द जन्मस्थान निर्णय (१९८६ वि.)-स्वामी दयानन्द के जन्मस्थान तथा माता-पिता एवं परि-वार आदि की प्रामाणिक जानकारी इसमें उपलब्ध कराई गई है। २. जगत् ना उपादान कारण नी समीक्षा (१९५५), ३. उपाकर्मविधि (१९६३), ४. Philosophy of Cre-ation (२०२१ वि., १९६४.)

विजेन्द्र 'कुसुम'

आर्याभिविनय के ब्रेल लिपि में अनुवादक श्री कुसुम का जन्म १९५२ में मुजफ्फरनगर जिले के ग्राम जमालपुर में हुआ। पांच वर्ष में इनकी नेत्र शक्ति नष्ट हो गई। परिश्रम और अध्यवसाय से इन्होंने एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। दृष्टिहीनों के लिये स्वामी दयानन्द की कृतियों को उपलब्ध कराना उनका लक्ष्य है। इनके प्रयत्न से ब्रेल लिपि का आर्याभिविनय आर्यसमाज पानीपत द्वारा २०४१ वि. में प्रकाशित हुआ है।

डा. विजेन्द्रपालसिंह

ग्राम बहादुरपुर जट (सहारनपुर) के निवासी डा. सिंह दिगम्बर जैन कालेज बडौत के राजनीति-विज्ञान विभाग में प्रवक्ता हैं। आपने भारतीय राष्ट्रवाद और आर्य-समाज आन्दोलन (१८७५-१९२०) शीर्षक शोध प्रबन्ध पी-एच.डी. की उपाधि हेतु लिखा। इस पर उन्हें मेरठ विश्वविद्यालय से उक्त उपाधि प्राप्त हुई। ८ अध्यायों में विभक्त इस शोध प्रबन्ध का प्रकाशन १९७७ में हुआ।

विज्ञानमार्तण्ड वात्सयायन

स्वामी दयानन्द के जीवन प्रसंग को लेकर बोध रात्रि शीर्षक एक सुन्दर महाकाव्य की रचना करने वाले विज्ञान-मार्तण्ड वात्स्यायन एक बौद्ध भिक्षु थे। उनका जन्म अजमेर में पौष पूर्णिमा बुधवार १९६५ वि. (६ जनवरी १९०९) को मांगीलाल शर्मा नामक एक ब्राह्मण के घर हुआ था। इनका प्रारम्भिक अध्ययन अजमेर में हुआ। तत्पश्चात् ये लाहौर चले गये, जहां से इन्होंने शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके पश्चात् ये काशी चले गये जहां वे किसी विद्वान् संन्यासी के शिष्य बनकर पढ़ते रहे। इसी समय बौद्ध धर्म के प्रति उनकी जिज्ञासा हुई। राहुल सांकृत्यायन की प्रेरणा तथा डा. काशीप्रसाद जायसवाल की सहायता से वे १९३८ में बर्मा चले गये।

बर्मा में रहकर उन्होंने पालि भाषा का गहन अध्ययन तथा बौद्ध मत का विस्तृत अनुशीलन किया। आर्यसमाज के संपर्क में तो सम्भवतः वे लाहौर रहते समय ही आ गये थे, यद्यपि वे आर्यसमाजी नहीं बने। माण्डले में उनकी भेंट वहाँ की डी.ए.वी. हाई स्कूल के मुख्याध्यापक श्री रामचन्द्र भारती से हुई। सम्भवतः भारतीजी की प्रेरणा से ही उन्होंने 'बोधरात्रि' शीर्षक एक सुन्दर महाकाव्य लिखा, जो भारतीजी द्वारा लिखित टिप्पणियों सहित सरस्वती बुक डिपो माण्डले से १९३९ (शिवरात्रि) में प्रकाशित हुआ। वे भारत लौट कर आ गये और कुछ दिन काशी में रहे। देशविभाजन के समय वे करांची में थे और सम्भवतः १९४७ में वे वहीं मार डाले गये। महापण्डित राहुल सांकृत्यायन ने अपने संस्मरणों में उनकी विद्वता, पाण्डित्य तथा कवित्व प्रतिभा का विस्तार-पूर्वक उल्लेख किया है। ये संस्मरण 'मैं इनका ऋणी' शीर्षक से छपे हैं।

स्वामी विज्ञानानन्द सरस्वती (सत्यभूषण)

आचार्य सत्यभूषण का जन्म १८ दिसम्बर १८८५ को पाकिस्तान के जिला डेरा ग़ाज़ी खां के ग्राम हैरोशर्की में चौधरी राधूराम के यहाँ हुआ। आपने लाहौर से बी. ए., एल. एल. बी. किया और कई वर्ष तक वकालत की। इनका वचपन का नाम सिद्धराम था। महात्मा प्रभु आश्रित के सम्पर्क में आकर आप आध्यात्मिक साधना की ओर उन्मुख हुए और आचार्य सत्यभूषण के नाम से गुरुकुल कमालिया (जिला लायलपुर) के आचार्य बने। विभाजन के पश्चात् आपने रोहतक में वैदिक भक्ति साधन आश्रम स्थापित किया तथा 'यज्ञ योग ज्योति' नामक मासिक पत्र प्रकाशित किया। २५ सितम्बर १९८० को आपका निधन हुआ।

ले. का.—देव यज्ञ मर्यादा यथार्थ में क्या है?—पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के उर्दू रिफार्मर में प्रकाशित एक लेख का उत्तर (१९४९), गायत्री माता (१९५१), अध्यात्म सुधा (१९६०), महात्मा प्रभु आश्रित का जीवन-चरित ३ भाग (१९६३), विरजानन्द परिचय।

स्वामी विज्ञानाश्रम

आपने पातंजल योगदर्शन (व्यास भाष्य तथा भोज वृत्ति सहित) का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया है। इसका प्रथम संस्करण आर्य साहित्य मण्डल अजमेर से १९८९ वि. (१९३२) में प्रकाशित हुआ था।

पं. विद्यानन्द मन्तकी

पं. विद्यानन्द का जन्म १८८६ में वाराणसी (उत्तर-प्रदेश) में हुआ। आप शास्त्रों के विख्यात विद्वान्, प्रगल्भ वक्ता तथा शास्त्रार्थ महारथी थे। आपका निधन २८ नवम्बर १९८० को अपने निवास स्थान बड़ा गणेश, वाराणसी में हुआ।

ले.का.—व्याख्यान मुक्तावली—प्रथम भाग (१९६९)

स्वामी विद्यानन्द विदेह

वैदिक शिक्षा और आर्य आदर्शों के निष्ठावान् प्रचारक विद्यानन्द विदेह का जन्म १५ नवम्बर १८९९ को अलीगढ़ जिले के टप्पल नामक ग्राम में हुआ। आपका वचपन का नाम चैनसुखदास था। १९१८ में आपने खुर्जा से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। आजीविका की तलाश में आप अजमेर आये और ओसवाल जैन हाई स्कूल में अध्यापक बन गये। इसी नगर में आप आर्यसमाज के

संपर्क में आये और दृढ़ आर्यसमाजी बने। १९२१ में आपने पुलिस विभाग में नौकरी कर ली तथा इन्दौर, आबूरोड एवं अजमेर आदि स्थानों पर रहे। १४ फरवरी १९४८ को आपने वेद संस्थान की स्थापना की और पुलिस सेवा से त्यागपत्र देकर वानप्रस्थ ग्रहण कर लिया। आपने अपना नाम विद्यानन्द तो १९२६ में ही रख लिया था। अब ये विद्यानन्द विदेह के नाम से प्रसिद्ध हुये। कालान्तर में आपने संन्यास ग्रहण किया और देश-विदेश में वेद प्रचार में लग गये। आपने वेद व्याख्या तथा अन्य विषयों पर अनेक ग्रन्थ लिखे तथा सविता नामक वेद विषयक पत्र का सम्पादन भी किया। विदेहजी अपने लेखों तथा व्याख्यानों में अनेक बार ऋषि दयानन्द एवं आर्यसमाज के मंतव्यों के विपरीत विचार भी प्रकट करते थे। अतः सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने धर्मार्य सभा की संस्तुति पर उन्हें आर्यसमाज से निष्कासित कर दिया, किन्तु कई वर्ष पश्चात् पुनः अपने संगठन में प्रविष्ट कर लिया। ५ मार्च १९७८ को सहारनपुर में आर्यसमाज के उत्सव पर व्याख्यान देते समय आपका निधन हो गया।

ले. का.—यजुर्वेद व्याख्या ग्रन्थ—यजुर्वेद के प्रथम २० अध्यायों की व्याख्या, An Exposition of the Vedas.

वेद व्याख्या के स्फुट ग्रन्थ—आनन्द सुधा, गायत्री, प्रभु से विनय, वेदालोक, वेदों की सूक्तियाँ, शिव संकल्प तथा सामवेद का अध्ययन, The Vedic Prayers.

कर्मकाण्ड विषयक ग्रन्थ—तपोयाग, विजय याग, वृष्टि-यज्ञ पद्धति, स्वस्ति याग, सत्यनारायण की कथा, वैदिक-सत्संग तथा वैदिक साधना।

कर्मकाण्ड व्याख्या ग्रन्थ—जीवन पाथेय, यज्ञोपवीत-रहस्य (१९५२), संध्या योग।

शास्त्र ग्रन्थों का टीका—गीता योग तथा योगालोक (योगदर्शन की व्याख्या)।

जीवनी ग्रन्थ—अज्ञात महापुरुष, जीवन ज्योतियाँ, रामचरित, विदेह गाथा (यह स्वामी विदेह की आत्मकथा है।)

नैतिकोत्थान से सम्बन्धित साहित्य—उत्तम स्वभाव, गृहस्थ विज्ञान, गृहस्थाश्रम, चरित्र निर्माण, भारत के अध्यापकों से, भारत के विद्यार्थियों से, मानव धर्म, विश्व-सुधार, वैदिक बाल शिक्षा ४ भाग, वैदिक स्त्री शिक्षा, २ भाग।

पद्य ग्रन्थ—दयानन्द चरितामृत, योग तरंग तथा विदेह-गीतावली।

वेद प्रवचन—विदेह वाणी ३ भाग, उद्गार, शिक्षा विषयक-संस्कृत शिक्षा २ भाग, संस्कृत स्वयं शिक्षक, वैदिक बाल-शिक्षा (१९५३)।

योग विषयक ग्रन्थ—ओंकारोपासना, गायत्री मंत्र का अनुष्ठान, परमयोग, महामृत्युंजय मंत्र का अनुष्ठान, वैदिक योग पद्धति, साधना, The Science of Yoga.

स्वास्थ्य विषक ग्रंथ—स्वास्थ्य और सौन्दर्य।

सामयिक समस्याओं से सम्बन्धित ग्रंथ—नेहरू: उत्थान और पतन, हिन्दू जाति के अस्तित्व की रक्षा।

दिवंगत होने के पश्चात् की रचना—कल्प पुरुष दयानन्द (२०४३ वि.)।

वि. अ.—सविता का विदेह-स्मृति अंक, १९७८।

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती (पं. लक्ष्मीदत्त दीक्षित)

आर्यसमाज के विख्यात विद्वान्, लेखक, विचारक तथा शिक्षाशास्त्री पं. लक्ष्मीदत्त दीक्षित (संन्यासाश्रम में स्वामी विद्यानन्द सरस्वती) का जन्म उत्तरप्रदेश के बिजनौर नगर में २० अगस्त १९१५ को हुआ। डी. ए. वी. कालेज होशियारपुर से बी. ए. परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त आपने डी. ए. वी. कालेज लौहार से एम. ए. परीक्षा पास की। आपका विवाह आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध शास्त्रार्थ-महारथी पं. मुरारिलाल शर्मा की पौत्री तथा पं. देवेन्द्रनाथ शास्त्री की पुत्री श्रीमती शकुन्तला देवी काव्यतीर्थ से हुआ। आपने होशियारपुर, दिल्ली तथा पानीपत में सुदीर्घकाल तक अध्यापन किया। लगभग २० वर्षों तक होशियारपुर तथा पानीपत के कालेजों में प्रिंसिपल के पद पर रहे। १९७२ में आप पंजाब विश्वविद्यालय के फैलो मनोनीत

किए गए। कुछ समय तक गुरुकुल वृन्दावन के आचार्य भी रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तर्गत संचालित आर्य विद्यापरिषद् के संस्थापक-प्रस्तोता रहे।

आर्यसमाज के संगठनों तथा सभा संस्थाओं से दीक्षितजी का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। १९४४ में उन्होंने आर्य-केन्द्रीय सभा दिल्ली का स्थापना की तथा दिल्ली नगर की समस्त आर्यसमाजों को एक सूत्र में पिरोया। १९५६ तक वे इस संस्था के मन्त्री तथा बाद में कई वर्षों तक उपप्रधान एवं अन्तरंग सदस्य रहे। १९४७ से १९५२ तक आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त मन्त्री रहे। १९६१ में जब उक्त सभा की स्वर्णजयन्ती तथा नवम आर्य-महासम्मेलन का आयोजन हुआ, तो दीक्षितजी इन समारोहों की स्वागतसमिति के मन्त्री चुने गए। इसी प्रकार आप आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश, पंजाब तथा हरयाणा की अन्तरंग सभाओं के सदस्य भी रहे।

आर्यसमाज द्वारा समय-समय पर चलाये गए आन्दोलनों में भी आपने भाग लिया। १९३९ में आपने हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लेने हेतु सेवा से त्यागपत्र दे दिया और विवाह को स्थगित कर सत्याग्रह के लिए प्रस्थान किया तथा कारावास की यातनायें सहन कीं। १९४४ में सत्यार्थप्रकाश रक्षा समिति दिल्ली के मन्त्री निर्वाचित हुए। १९४७ में जब सिंध प्रान्त की मुस्लिम लीगी सरकार ने सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबंध लगा दिया, तो आप सार्वदेशिक-सभा द्वारा सत्याग्रह के लिए नियुक्त पांच प्रथम सर्वाधिकारियों में एक थे। १९५७ में पंजाब में चलाये गए हिन्दी-रक्षा आन्दोलन के संचालनार्थ नियुक्त केन्द्रीय संघर्ष समिति तथा पंजाब हिन्दी रक्षा समिति के आप सक्रिय सदस्य रहे। इस समय आपको जेल में नजरबन्द रक्खा गया था। संन्यास लेने के पश्चात् आप प्रायः दिल्ली में ही रहते हैं तथा प्रचारार्थ यत्र तत्र जाते हैं।

ले. का.—१. स्वराज्य दर्शन—स्वामी दयानन्द की राजनीतिक विचारधारा को संस्कृत की प्राचीन सूत्रशैली में व्याख्या सहित प्रस्तुत किया गया है (१९४७)। यही पुस्तक 'महर्षि दयानन्द का राजनीति शास्त्र' शीर्षक से भी छपी है। २. राजधर्म—सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास को अनेक टिप्पणियों तथा परिशिष्टों सहित सम्पादित कर १९५० में भारत के प्रथम गणतन्त्र दिवस पर प्रकाशित किया गया। ३. पोलिटिकल साइन्स—उक्त 'राजधर्म' का अंग्रेजी अनुवाद। ४. अनादितत्त्वदर्शन—महर्षि दयानन्द द्वारा ईश्वर, जीव तथा प्रकृति के अनादित्व का प्रतिपादन करते हुए प्राचीन सूत्रात्मक शैली में व्याख्या। ५. वेदमीमांसा—महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वेद विषयक मान्यताओं की सूत्रशैली में व्याख्या।

उपनिषद् विषयक ग्रन्थ—अध्यात्म-मीमांसा (ईशोपनिषद् की व्याख्या, १९८२), त्यागवाद (केनोपनिषद् पर आधारित), दार्शनिक रचनायें—तत्वमसि अथवा अद्वैत-मीमांसा, प्रस्थानत्रयी और अद्वैतवेदान्त, द्वैतसिद्धि (१९८८), अंग्रेजी ग्रन्थ—The Theory of Reality (1980), The Age of Shankar (पं. उदयवीर शास्त्री के एक ग्रन्थ के अंश का अनुवाद), Vedic Concept of God, The Brahma Sutras : A New Approach.-(वादरायण के वेदान्तसूत्र की त्रैतवाद प्रतिपादक व्याख्या) अन्य ग्रन्थ—आर्यों का आदि देश और उनकी सभ्यता (१९८९), आर्यों का आदि देश (भारत की ११ भाषाओं में अनूदित, अंग्रेजी में इसका अनुवाद Original Home of the Aryans शीर्षक से हुआ है)। भूमिका भास्कर—दयानन्दीय ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका पर दो खण्डों में विस्तृत व्याख्या ग्रन्थ। खट्टी मीठी यादें—(रोचक संस्मरणात्मक आत्मकथा, १९८८)।

स्वामीजी आजकल सत्यार्थप्रकाश पर एक विशद व्याख्या ग्रन्थ लिख रहे हैं।

व. प.—डी. १४-१६ माडल टाउन, दिल्ली ११०००८.

पं. विद्यानिधि शास्त्री

व्याकरण के प्रगल्भ विद्वान् पं. विद्यानिधि का जन्म जिला पानीपत के ग्राम लोहारी में १८ सितम्बर १९११ को श्री साहूजी के यहां हुआ। सातवीं कक्षा तक आते आते आपने सम्पूर्ण यजुर्वेद कण्ठस्थ कर लिया तथा उन्नीसवें

वर्ष में गुरुकुल कांगड़ी की रजत जयन्ती के अवसर पर अष्टाध्यायी अन्त्याक्षरी में पुरस्कृत हुए। आपने दयानन्द-उपदेशक विद्यालय लाहौर में अध्ययन कर 'सिद्धान्त शिरोमणि' की उपाधि १९३४ में प्राप्त की। तत्पश्चात् साहित्य एवं व्याकरण में आचार्य की उपाधियाँ भी ग्रहण कीं। आप १९३५ में डी. ए. वी. कालेज लाहौर के अनुसंधान विभाग में नियुक्त हुए और कुछ वर्ष तक वहाँ शोधकार्य किया। देश विभाजन के पश्चात् पं. विश्वबंधु के आग्रह पर १९५८ से १९६२ तक होशियारपुर स्थित विश्वेश्वरान्द वैदिक शोध संस्थान में रहे और वैदिक-पदानुक्रम कोष तथा अथर्ववेद के सायण भाष्य के सम्पादन का कार्य किया। शास्त्रीजी ने गुरुकुल भैंसवाल, गुरुकुल मटिण्डू, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, गुरुकुल रायकोट, गुरुकुल चित्तौड़गढ, तथा गुरुकुल झज्जर में भी वर्षों तक अध्यापन किया। सम्प्रति इनका निवास पटियाला है।

ले. का.—व्यवहारभानु का संस्कृत पद्यानुवाद (१९९९ वि.), वैदिक यज्ञ पद्धति (पद्यानुवाद), प्रार्थनावली, गीता-संदेश, मैत्रायणी सूक्ति संग्रह (गुरुकुल पत्रिका में प्रकाशित सम्पूर्ण सामवेद का हिन्दी काव्यानुवाद) श्री दयानन्दर्षिचरितम् (संस्कृत के प्रौढ गद्य में लिखा जीवन चरित २०३० वि.), संक्षिप्ते रामायण-महाभारते, श्री भक्त फूलसिंह चरितम् (अप्रकाशित)।

व. प.—द्वारा-डा. भीमसिंह. संस्कृत विभाग, पंजाबी-विश्वविद्यालय, पटियाला

विद्याप्रकाश सेठी

विख्यात जनसेवक तथा कर्मठ आर्य कार्यकर्त्ता श्री विद्याप्रकाश सेठी का जन्म १९१२ में पाकिस्तान के सरगोधा नगर में श्री लक्ष्मीदास के यहां हुआ। १९४४ से आप दिल्ली में निवास कर रहे हैं। आपका दिल्ली की अनेक आर्य संस्थाओं से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। अगस्त १९८० से आपने 'आर्य पथ' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन आरम्भ किया। इसका सम्पादन भी श्री सेठी स्वयं ही करते हैं। इस पत्र में आपके विचारपूर्ण लेख प्रायः प्रकाशित होते हैं।

वि.अ.—श्री विद्याप्रकाश सेठी—अभिनन्दन ग्रन्थ

व. प.—सेठी भवन, विजय चौक, कृष्णनगर, दिल्ली

डा. विद्याभूषण विभु

उत्कृष्ट कवि तथा बाल साहित्य के निर्माण में अपना उल्लेखनीय योगदान करने वाले डा. विद्याभूषण विभु का जन्म अलीगढ जिले के नाहरपुर नामक ग्राम में ४ दिसम्बर १८९२ को एक कायस्थ परिवार में हुआ। आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिन्दी विषय लेकर एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् इसी विश्वविद्यालय से डा. धीरेन्द्र वर्मा के निर्देशन में शोधकार्य सम्पन्न कर पी-एच. डी. की उपाधि ग्रहण की। इनका शोध प्रबन्ध 'अभिधान अनुशीलन' हिन्दुस्तानी एकेडमी से प्रकाशित हुआ है। डा. विद्याभूषण डी. ए. वी. हाई स्कूल प्रयाग में अध्यापक रहे। सेवा निवृत्त होने पर १९६५ में आपने कानपुर के आर्यनगर मोहल्ले में पुस्तकों तथा लेखन-सामग्री की दूकान खोल ली। आपने बालोपयोगी साहित्य का प्रणयन किया तथा प्रयाग से ही चमचम एवं शिशु नामक बालोपयोगी पत्र निकाले। २७ सितम्बर १९६५ को इलाहाबाद में इनका निधन हुआ।

ले. का.—विरजानन्द विजय—स्वामी दयानन्द की जन्म शताब्दी के अवसर पर विभुजी ने विरजानन्द विजय नामक एक सप्तसर्गीय काव्य लिखा जो शताब्दी ग्रन्थमाला १४ के अन्तर्गत महात्मा नारायण स्वामी द्वारा १९८१ वि. में प्रकाशित हुआ। आपके द्वारा रचित पद्य पयोनिधि, सुहराब और रुस्तम तथा चित्रकूट चित्रण आदि अन्य काव्य भी प्रकाशित हुए थे। महर्षि दयानन्द के जीवन पर एक महाकाव्य की रचना अधूरी रह गई।

श्रीमती विद्यावती देवी

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं. धर्मदेव विद्यावाचस्पति की पत्नी श्रीमती विद्यावतीदेवी का जन्म १९०५ में हुआ था। आप विदुषी नारी थीं। वानप्रस्थ ग्रहण करने के अनन्तर आपने अपना नाम 'ऋतम्भरा वानप्रस्थ' रख लिया था। वेद मन्त्रों के भावार्थ को काव्य रूप में प्रस्तुत कर

आपने 'सोमामृत' नामक एक ग्रन्थ की रचना की जो पं. धर्मदेव विद्यामार्तण्ड (आनन्द कुटीर, ज्वालापुर) द्वारा २०२६ वि. (१९६९) में प्रकाशित हुआ। आपका निधन १५ मई १९८४ को दिल्ली में हुआ।

विद्यासागर शास्त्री वेदालंकार

सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में उल्लिखित ईश्वर के १०८ नामों की शास्त्रीय गवेषणा तथा व्याख्या करने वाले पं: विद्यासागर शास्त्री का जन्म उत्तरप्रदेश के बिजनौर जिले के नगीना नामक कस्बे में हुआ। आपके पिता का नाम श्री लालबिहारीलाल सक्सेना था। गुरुकुल कांगड़ी से आपने वेदालंकार की उपाधि १९७४ वि. (१९१८) में ग्रहण की। इसके अतिरिक्त आपने पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री, जयपुर से साहित्याचार्य एवं दर्शनाचार्य, कलकत्ता से कई विषयों में तीर्थ तथा आगरा विश्वविद्यालय से एम. ए. परीक्षा भी उत्तीर्ण की। १९१८ से १९२० तक आपने गुरुकुल कांगड़ी में अध्यापन कार्य किया, पुनः १९२६ से १९३२ तक गुरुकुल मुलतान में संस्कृत तथा दर्शन का अध्यापन किया। तदनन्तर सुभाष नेशनल कालेज उन्नाव में संस्कृत के विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य किया। दर्शन के आप अप्रतिम विद्वान् थे। 'चार्वाक दर्शन' आपका गवेषणापूर्ण मौलिक ग्रन्थ था जिस पर आपको हरजीमल डालमिया पुरस्कार प्राप्त हुआ। आपका निधन २७ अगस्त १९७२ को हुआ।

ले. का.—१. छन्दो दीपिका, २. सांख्य दर्शन—एक परिचय, ३. वेदान्त—एक परिचय, ४. काव्यप्रकाश टीका, ५. अष्टोत्तरशतनाम मालिका, (१९६३)—सत्यार्थ-प्रकाश के प्रथम समुल्लास में उल्लिखित परमात्मा के १०८ नामों की शास्त्रीय आधार पर व्याख्या तथा पुष्टि।

विधुभूषणदेव वर्मन—

बंगलादेश के खुलना जिले के ग्राम पाटकेल धारा के निवासी थे।

ले. का.—स्वामी दयानन्द की बंगला जीवनी तथा मूर्तिपूजा-खण्डन।

विनयकृष्ण सेन

आपने बंगला में धर्मवीर श्रद्धानन्द (जीवनी) तथा हिन्दू संगठन शीर्षक ग्रन्थ लिखे।

डा. विनोदचन्द्र विद्यालंकार

डा. विनोद का जन्म ४ जून १९४२ को फरीदपुर (बरेली) में डा. रामनाथ वेदालंकार के यहाँ हुआ। इनकी शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में हुई जहाँ से १९६४ में इन्होंने विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की। आपने संस्कृत में एम. ए. तथा पी-एच.डी. भी की। वर्तमान में वे गोविन्दवल्लभ पन्त विश्वविद्यालय पन्तनगर में प्रकाशनाधिकारी के पद पर कार्यरत हैं।

ले. का.—स्नातक परिचायिका (गुरुकुल कांगड़ी के स्नातकों का १९१२-१९७६ तक की अवधि का सचित्र परिचय, १९७७), स्वामी श्रद्धानन्द : एक विलक्षण व्यक्तित्व; (सम्पादन, १९८६)। डा. विद्यालंकार वर्षों तक गुरुकुल पत्रिका के छात्र सम्पादक रहे।

व. प.—१/११६ फूल बाग, पंतनगर (नैनीताल)—२६३१४५.

प्राध्यापक विपिनचन्द्र त्रिवेदी

श्री त्रिवेदी का जन्म गुजरात के सुरेन्द्र नगर जिले के एक ग्राम शियाणी में १ सितम्बर १९४६ को हुआ। इन्होंने अर्थशास्त्र में एम. ए. किया और इसी विषय में प्राध्यापक बने। १९८१ से ये जे. एम. शाह कालेज जम्बूसर (जिला भरुच) में सेवारत हैं। श्री त्रिवेदी की विशेष रुचि महर्षि दयानन्द के जीवन प्रसंगों के अनुसंधान एवं अन्वेषण में है। यथा—महर्षि दयानन्द का बम्बई शास्त्रार्थ और जयकृष्ण व्यास (१९८८), महर्षि दयानन्द और पं गट्टूलाल (१९८८), महर्षि के गुजराती भक्त मथुरादास लवजी (१९८८), लाला भक्त, सायला और शुद्ध चैतन्य (१९८९)। ये उपयोगी शोध-निबन्ध वेदवाणी के दयानन्द अंकों में प्रकाशित हुए हैं।

व. प.—२५ जयमहादेवनगर सोसायटी, नवयुग स्कूल के पास, जम्बूसर (भड़ौंच)-३९२१५०.

पं. विभुमित्र शास्त्री

शास्त्रीजी का जन्म १९३४ में बिहार के जिला नालंदा के ग्राम चारुसुवा में हुआ। इनका आरम्भिक अध्ययन गुरुकुल अयोध्या में हुआ। १९६९ से आप डी. ए.वी. हायर सैकण्डरी दानापुर कैंट में अध्यापन कार्य कर रहे हैं। आपने व्याकरणाचार्य एवं साहित्याचार्य की उपाधियाँ भी ग्रहण की हैं।

ले. का.—काव्य संग्रह—कवित्तकल्पलतिका (१९५२), काव्यमाधुरी (१९६२)।

अन्य ग्रन्थ—दयानन्द चरितामृत, वर्णाश्रम विवेचन और अक्षर समाम्नाय, राष्ट्रीय क्रान्ति के सूत्रधार—स्वामी दयानन्द सरस्वती (१९७३), दानापुर में दयानन्द का पदार्पण और प्रभाव (१९७८)।

विमलकान्त शर्मा

श्री शर्मा का जन्म हिमाचलप्रदेश के ऊना नगर में श्री चिरंजीलाल शर्मा के यहां १ अक्टूबर १९३९ को हुआ। आपकी शिक्षा एम. ए. (हिन्दी) तक हुई। आप आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के मंत्री तथा दिल्ली आर्य-प्रतिनिधि सभा की प्रचार समिति के संयोजक हैं। आपने राष्ट्रीय स्तर की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में आर्यसमाज विषयक महत्त्वपूर्ण लेख लिखे हैं।

व. प.—४८० (जेड), तिमारपुर, दिल्ली-११००५४

विमलचन्द्र विमलेश

श्री विमलेश का जन्म २६ जुलाई १९३४ को मथुरा में आर्यसमाज के प्रख्यात उपदेशक श्री शीतलचन्द्र शर्मा के यहाँ हुआ। इनकी शिक्षा एम. ए. और साहित्यरत्न तक की है। विमलेश को निसर्गसिद्ध काव्य प्रतिभा मिली है, फलत: आपने स्वामी दयानन्द के जीवन का सरस चित्रण करते हुए 'ऋषि गाथा' शीर्षक काव्य सत्रह वर्ष की आयु में लिखना आरम्भ किया और उन्नीस वर्ष की आयु में उसे समाप्त किया। दो भागों में इसका प्रथम बार प्रकाशन १९५३ में हुआ।

श्रीमती विमला

आपका जन्म १९४० में हुआ। आपने पं. भारतेन्द्रनाथ की पुस्तक 'संसार को आर्यसमाज का संदेश' का बर्मी भाषा में अनुवाद किया है जो आर्य प्रतिनिधि सभा बर्मा से १९६२ में प्रकाशित हुआ। सम्प्रति आप अपने पति डा. दर्शनकुमार एम. डी. के साथ न्यूयार्क (अमेरिका) में निवास कर रही है।

श्रीमती विमला श्रीवास्तव

श्रीमती विमला का जन्म २२ अगस्त १९३५ को श्री मुरलीधर छाबड़ा के यहाँ राजपुरा (पटियाला) में हुआ। आपके सुयोग्य पति श्री रमेशचन्द्र श्रीवास्तव आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश एवं विदर्भ के प्रधान पद पर विगत कई वर्षों से विराजमान हैं। विमलाजी ने पंजाब विश्वविद्यालय से १९६० में हिन्दी में एम.ए. किया। तत्पश्चात् आपने शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश किया और पठानकोट, खन्ना, सुलतानपुर लोधी तथा बरनाला के कन्या कालेजों में प्राचार्या के पद पर कार्य किया। १९७३ में आर्य महासम्मेलन में भाग लेने आप मॉरिशस गईं। निबंध तथा कहानी लेखन में आपकी अभिरुचि विद्यार्थी काल से ही रही। वे सामाजिक सेवा में भी अग्रणी रही हैं। सम्प्रति श्रीमती विमला नागपुर (महाराष्ट्र) से प्रकाशित होने वाले आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश एवं विदर्भ के मासिक मुखपत्र आर्यसेवक का सम्पादन कर रही हैं। आर्यसेवक, आर्यमर्यादा, सार्वदेशिक आदि पत्रों में आपके लेख प्रायः प्रकाशित होते रहते हैं।

व. प.—४ ए., स्ट्रीट १, सैक्टर ४ भिलाई नगर ४९०००१ (म. प्र.)।

विमलेश्वरनंद

पश्चिमी उड़ीसा प्रान्त में वैदिक धर्म का संदेश पहुंचाने वाले विमलेश्वर नंद ने उड़ीसा में 'सनातन वैदिक-धर्म' शीर्षक ग्रन्थ लिखा। यह १९८४ में प्रकाशित हुआ।

पं. विरजानन्द दैवकरणि

श्री दैवकरणि का जन्म २ दिसम्बर १९४५ को हरयाणा के जिला महेन्द्रगढ़ के ग्राम भगड्याणा में श्री देव-

करण यादव के यहाँ हुआ। आपने गुरुकुल झज्जर से शास्त्री, दर्शनाचार्य, व्याकरणाचार्य तथा प्राचीन इतिहास में आचार्य की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। गुरुकुल झज्जर के पुरातत्त्व संग्रहालय में इन्होंने २५ वर्ष तक कार्य किया और प्राचीन लिपियों, सिक्कों तथा मुद्राओं को पढ़ने का ज्ञान एवं अनुभव प्राप्त किया। सांस्कृतिक तथा पुरातात्त्विक यात्राओं में आपकी विशेष रुचि रही। फलतः आपने सिंगापुर, जावा, सुमात्रा आदि देशों का भ्रमण भी किया।

ले. का.—सत्यार्थप्रकाश (ताम्रपट्ट संस्करण का सम्पादन २०४० वि.), महर्षि दयानन्द सरस्वती का सिद्धान्त (२०४२ वि.), मन की लहर (रामप्रसाद बिस्मिल के काव्य संग्रह का सम्पादन).

व. प.—३, वीनस अपार्टमेण्ट्स, इन्द्र एन्क्लेव, रोहतक रोड, दिल्ली.

स्वामी विवेकानन्द

हिमाचल प्रदेश के सोलन जिले में सलोगड़ा नामक स्थान में आपका निवास था। आपकी कृति शान्तिपथ १९७६ वि. में प्रकाशित हुई।

स्वामी विवेकानन्द

आपके द्वारा लिखे गये ग्रन्थ का विवरण इस प्रकार है—गप्पाष्टक मोहम्मदी–प्रेम पुस्तकालय आगरा से १९८० में प्रकाशित।

स्वामी विवेकानन्द सरस्वती

स्वामी विवेकानन्द का जन्म उत्तरप्रदेश में हुआ। आप स्वामी समर्पणानन्द के शिष्य एवं गुरुकुल प्रभात-आश्रम मेरठ के आचार्य हैं। वेद तथा वेदांगों का आपका अध्ययन अत्यन्त विस्तृत तथा गम्भीर है। प्रभात आश्रम से प्रकाशित होने वाली शोध पत्रिका 'पावमानी' के आप सम्पादक हैं।

ले. का.—वेद और वेदार्थ (१९८३), अग्निहोत्र यज्ञ-विज्ञान की दृष्टि में (१९९०)।

व. प.—प्रभात आश्रम, डा. भोला झाल (मेरठ)-२५०५०१.

विश्वनाथ

प्रसिद्ध आर्य साहित्य प्रकाशक महाशय राजपाल के पुत्र श्री विश्वनाथ का जन्म २७ जुलाई १९२० को लाहौर में हुआ। आपकी शिक्षा एम. ए. अर्थशास्त्र की हुई है। देश विभाजन के पश्चात् जब राजपाल एण्ड सन्स ने अपना व्यवसाय दिल्ली में आरम्भ किया तो श्री विश्वनाथ ने पुस्तक प्रकाशन के क्षेत्र में अपनी अपूर्व क्षमता और कौशल से नये आयाम जोड़े। वे भारतीय प्रकाशक संघ तथा अखिल भारतीय हिन्दी प्रकाशक संघ के अध्यक्ष रहे हैं तथा डी. ए. वी. ट्रस्ट एवं प्रबंधक समिति के उपाध्यक्ष हैं। उन्होंने अनेक देशों की यात्रा की है और विभिन्न प्रतिनिधि मण्डलों के सदस्य रहे हैं।

ले. का.—प्रार्थना सुमन, महाराणा प्रताप, महापुरुषों के संस्मरण आदि।

व. प.—५ रैकट कोर्ट रोड, सिविल लाइन, दिल्ली ११००५४.

प्रो. विश्वनाथ विद्यालंकार, विद्यामार्तण्ड

वेदों के अद्वितीय विद्वान् पं. विश्वनाथ का जन्म वजीराबाद (गुजरांवाला-पाकिस्तान) में १८९२ में हुआ। इनके पिता का नाम श्री प्रीतमदास था जो दृढ़ आर्यसमाजी थे तथा उन्होंने अपने जीवनकाल में स्वामी दयानन्द के दर्शन किये थे। विश्वनाथ की शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी में हुई जहाँ से उन्होंने १९१४ में विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की। इस परीक्षा में उन्होंने वैदिक और संस्कृत साहित्य, दर्शनशास्त्र तथा रसायनशास्त्र विषय लिये थे। उन्हें इस परीक्षा में स्वर्णपदक प्रदान किया गया। इसी वर्ष वे गुरुकुल कांगड़ी में वेदोपाध्याय के पद पर नियुक्त हुए तथा १९४२ तक वेदों का अध्यापन किया। तत्पश्चात् आप देहरादून में निवास करने लगे तथा इस अवधि में विविध ग्रन्थों की रचना की। आपको गुरुकुल कांगड़ी ने विद्यामार्तण्ड की उपाधि प्रदान की है। १९८३ में आपको पं. गोवर्धन शास्त्री साहित्य पुरस्कार से भी सम्मानित

किया गया। आर्यसमाज सान्ताक्रूज बम्बई ने आपको १९८७ में वेद-वेदांग पुरस्कार से पुरस्कृत किया है।

ले. का.—**वेदों के भाष्य**—सामवेद-आध्यात्मिक भाष्य, अथर्ववेद (७-२० काण्डपर्यन्त) भाष्य, वैदिक व्याख्या तथा विवेचन—वैदिक पशु यज्ञ मीमांसा, वैदिक जीवन, वैदिक-गृहस्थाश्रम, आत्मिक जीवन (१९२५), ऋग्वेद परिचय, अथर्ववेद परिचय, शतपथ ब्राह्मण अग्निचयन समीक्षा, अन्य ग्रन्थ—संध्या रहस्य (१९३७), बाल ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका, बाल सत्यार्थप्रकाश।

व. प.—६१ कांवली रोड, देहरादून

विश्वनाथ शर्मा

विश्वनाथ शर्मा का जन्म १९२४ वि. में हुआ। वे मथुरा के निवासी थे तथा वी. एन. शर्मा के नाम से लिखते थे।

ले. का.—पुराण मीमांसा, मूर्तिपूजा मीमांसा, वर्ण-व्यवस्था मीमांसा (१९०७), वृक्षों में जीव विचार (स्थावर जीव मीमांसा), प्रकरण प्रमाण दर्शिका (१९०८)।

अन्य ग्रन्थ—ब्रजदर्शक, आर्य यंत्री, निदर्शन, शिक्षा-मंजरी।

पं. विश्वनाथ शास्त्री

पं. विश्वनाथ का जन्म भागलपुर जिले के छत्रहार नामक ग्राम में पं. प्राणनाथ के यहां हुआ।

इनकी लिखी 'यज्ञोपवीत मीमांसा' वैदिक साहित्य-पुस्तकालय कलकत्ता से १९३८ में प्रकाशित हुई।

पं. विश्वनाथ शास्त्री

पुस्तकालय विज्ञान के मर्मज्ञ पं. विश्वनाथ शास्त्री का जन्म १ अगस्त १९०९ को पश्चिमी पंजाब ने जेहलम जिले के जगता नामक ग्राम में हुआ। आपने हिन्दी एवं संस्कृत में एम. ए. की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। एम. ओं. एल. तथा शास्त्री भी पास कीं और पुस्तकालय विज्ञान में डिप्लोमा प्राप्त किया। आपने आर्य प्रतितिधि पंजाब के शोध विभाग में १९३३ से १९४४ तक कार्य किया। तत्पश्चात् अम्बाला के आत्मानन्द जैन कालेज में १९४४ से १९५४ तक संस्कृत के प्राध्यापक रहे। १९५४ से १९६५ तक सागर विश्व-विद्यालय में सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष रहे तथा १९६५ से १९७४ तक रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर में पुस्तका-लयाध्यक्ष रहे। अब भिलाई में अवकाश का जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

ले. का.—१. दयानन्द रत्नमाला—स्वामी दयानन्द की सूक्तियों का संग्रह (१९९२ वि.), २. Immortal Sayings of Swami Dayanand (१९३५), ३. आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का सचित्र इतिहास—पं. चमूपति द्वारा लिखित इस ग्रन्थ का परिशिष्ट 'आर्यसमाजों का वृत्तान्त' आपका लिखा है। ४. आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब अर्द्ध शताब्दी वृत्तान्त (१९३६), ५. दयानन्द जीवनी-साहित्य—स्वामी दयानन्द के जीवन चरितों के सम्बन्ध में संदर्भ पुस्तक (१९६१)।

व. प.—२-३ बी ५१/से. ८, भिलाई ४९०००१ (म. प्र.)।

डा. विश्वनाथसहाय भटनागर

डा. सहाय का जन्म वैशाख कृष्णा २ सं. १९९२ वि. (२० अप्रैल १९३५) को श्री हरनाथसहाय के यहां हुआ। इनकी शिक्षा एम. ए. (अर्थशास्त्र) तथा एल. एल. बी. तक हुई। आप आर्यसमाज नई मण्डी मुजफ्फरनगर के सक्रिय कार्यकर्ता हैं तथा इसी नगर में एक विद्यालय के संस्थापक संचालक हैं।

ले. का.—आर्थिक विकेन्द्रीकरण व शिक्षा में क्रांति, बाल इतिहास, दैनिक सदाचार, संस्कारिका, मातृभूमि-देवभूमि भारत, बालोपयोगी इतिहास, नीति कथायें।

व. प.—७५ बी. आर्य भवन, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.) २५१००१

विश्वप्रकाश

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के द्वितीय पुत्र श्री विश्व-प्रकाश का जन्म ७ जनवरी १९०७ को हुआ। आपकी शिक्षा बी. ए. तथा एल. एल. बी. तक हुई। आपने कुछ

समय तक वकालत की। तत्पश्चात् कला प्रेस प्रयाग का प्रकाशन कार्य संभालने लगे। आप आर्यसमाज चौक प्रयाग के वर्षों तक प्रधान भी रहे। आपके प्रयास से पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय स्मारक साहित्य पुरस्कार की स्थापना हुई जो आर्यसमाज के अनेक लेखकों को दिया जाता रहा है। आपका निधन ८ जून १९८४ को हो गया।

ले. का.—The Life and Teachings of Swami Dayanand (१९३५), महिला सत्यार्थप्रकाश, आर्य विवाह-पद्धति, मृतक संस्कार (१९६५), आर्यसमाज के निर्माता (१९६४), महात्मा नारायण स्वामीजी का जीवन चरित। स्त्रियोपयोगी ग्रन्थ—बहनों की सीख (१९६५), पाकविज्ञान स्त्रियों के रिश्ते, विधवाओं का इन्साफ, बाइबिल में चमत्कार (१९७२)। बालोपयोगी साहित्य जो 'कहानी माला' के अन्तर्गत छपा—१. गुरु घण्टाल, २. शराबी पति, १. विधवा की आहें, ३. बंबं महादेव ५. पण्डों की लीला, ६. छुआछूत, ७. मरे बाप का भोजन, ८. भूत की लंगोटी-९. कब्र के फरिश्ते, १०. स्वामी दयानन्द की कहानी, ११. स्वामी श्रद्धानन्द की कहानी, १२. धर्मवीर पं. लेखराम की कहानी, १३. आर्यसमाज की कहानी, १४. शुद्धि की कहानी, १५. शीतला महारानी, १६. धर्म की फरियाद, १७. होली की ठिठोली, १८. मधुर गान, १९. संध्या।

उपर्युक्त में से १ से ८ तथा ११ और १२ उर्दू में भी छपीं।

डा. विश्वबंधु व्यथित

श्री व्यथित का जन्म १४ दिसम्बर १९३५ को पंजाब के सरहिंद नगर में श्री मुनिलाल के यहां हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल रायकोट में हुई। तत्पश्चात् आपने हिन्दी एवं संस्कृत में एम. ए. भी किया। विगत कई वर्षों से वे डी. ए. वी. कालेज अबोहर में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य कर रहे हैं। श्री व्यथित के अब तक अनेक काव्य संकलन प्रकाशित हो चुके हैं। आपने सरिता में प्रकाशित गायत्री विषयक आलोचनात्मक लेखों का प्रत्युत्तर 'गायत्री गरिमा' शीर्षक से दिया। 'हिन्दी का आत्मकथा साहित्य' आपका पी-एच. डी. के लिए स्वीकृत शोध प्रबन्ध था जिस पर पंजाब विश्वविद्यालय से १९८१ में इन्हें उक्त उपाधि प्राप्त की। इस ग्रन्थ में स्वामी दयानन्द की आत्मकथा को हिन्दी आत्मकथा साहित्य का प्रथम ग्रन्थ सिद्ध किया गया है। साथ ही आर्यसमाज के विभिन्न विद्वानों तथा नेताओं द्वारा लिखित आत्मकथाओं का भी इसमें मार्मिक विवेचन है।

व. प.—बी. V ४०३ कालेज रोड, अबोहर (पंजाब) १५२११६।

आचार्य विश्वबंधु शास्त्री

विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान के द्वारा वैदिक शोध में नवीन प्रतिमान स्थापित करने वाले पं. विश्वबंधु शास्त्री का जन्म ३० सितम्बर १८९७ को पश्चिमी पंजाब के सरगोधा जिले के भेरा नामक कस्बे में हुआ। आपके पिता श्री रामलुभाया आनन्द पुलिस में कार्य करते थे। आपका बचपन का नाम चमनलाल था। आपका अध्ययन डी. ए. वी. कालेज लाहौर में हुआ जहां से आपने संस्कृत में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके पश्चात् जब डी. ए. वी. कालेज कमेटी ने दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय की स्थापना की तो आचार्य विश्वबंधु को इसका आचार्य बनाया गया। कालान्तर में १९२४ में विश्वेश्वरानन्द वैदिक संस्थान की स्थापना होने पर आचार्य विश्वबंधु संस्थान के अवैतनिक निदेशक बने। देश-विभाजन के पश्चात् संस्थान को साधु आश्रम होशियारपुर ले आया गया तथा वैदिक शोध के कार्य को अधिक गति मिली और वैदिकपदानुक्रम कोष जैसे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का सम्पादन किया गया। अब आचार्य विश्वबंधु के वेद विषयक विचारों में परिवर्तन आ गया था और वे वेद को अपौरुषेय तथा ईश्वरीय ज्ञान मानने की अपेक्षा ऋषियों की कृति मानने लगे थे तथा उनकी दृष्टि में वेदों में अनित्य इतिहास भी उपलब्ध होता है। जब आर्यसमाज के वेद विषयक मन्तव्यों से आचार्यजी के विचारों में स्पष्ट अन्तर आ गया तो महात्मा हंसराज की अध्यक्षता में उनका आर्यसमाज के विद्वानों से 'वेद में इतिहास' विषय पर एक शास्त्रार्थ आयोजित किया गया था। १ अगस्त १९७३ को आपका निधन चण्डीगढ़ में हुआ।

ले. का.—आर्योदय (१९२७), आर्य दर्पण (१९६७), वेदसंदेश—३ भाग (१९२६-२९)।

वि. अ.—आचार्य विश्वबंधु : जीवन और कार्य पं. शादीराम जोशी (१९८३).

विश्वबंधु शास्त्री

शास्त्रीजी का जन्म २५ अप्रैल १९२१ को अलीगढ़ जिले के उखलाना ग्राम में श्री चुन्नीलाल के यहां हुआ। उनकी शिक्षा सर्वदानन्द साधु आश्रम तथा गुरुकुल वृन्दावन में हुई। वे आर्यसमाज के एक सशक्त एवं प्रभावशाली प्रचारक थे। राजस्थान में कई वर्षों तक धर्म प्रचार करने के पश्चात् उत्तरप्रदेश उनका कार्यक्षेत्र रहा। वे उत्तरप्रदेश आर्य-प्रतिनिधि सभा के कई वर्षों तक प्रधान भी रहे। २६ जनवरी १९८८ को ज्वालापुर में उनका निधन हो गया।

ले. का.—मुक्तात्मा महर्षि दयानन्द, राधा कौन थी ?, आर्यसमाज के प्रथम नियम की व्याख्या, हिरण्यकशिपु और प्रहलाद का वैदिक स्वरूप, वैदिक शिव, दीपक, अथर्ववेद के प्रथम, द्वितीय तथा षष्ठ काण्ड का संस्कृत-हिन्दी भाष्य (अपूर्ण और अप्रकाशित) प्रथम काण्ड के प्रथम सूक्त के प्रथम मन्त्र का भाष्य स्वयं भाष्यकार ने ही प्रकाशित किया था।

पं. विश्वम्भरप्रसाद शर्मा

आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता, उच्चकोटि के पत्रकार तथा प्रसिद्ध गोभक्त पं. विश्वम्भरप्रसाद शर्मा का जन्म फाल्गुन शु. ८ सं. १९६० वि. को उत्तरप्रदेश के गढ़मुक्तेश्वर नामक प्रसिद्ध तीर्थ के निकट लुहारी ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम पं. भजनलाल तथा माता का नाम श्रीमती कलावती था। आप मारवाड़ी पुस्तकालय दिल्ली के व्यवस्थापक रहे तथा आर्यसमाज के सम्पर्क में आये। कालान्तर में आप 'माहेश्वरी' के सम्पादक बने। १९३४ में आपने सहारनपुर से 'विकास' नामक हिन्दी साप्ताहिक निकाला। १९३८ में वे नागपुर आ गये। आपने आर्य-कुमार परिषद् के मुखपत्र 'आर्य कुमार' का भी सम्पादन किया था। आप आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश के प्रधान तथा आर्य सेवक के प्रधान सम्पादक रहे। गोरक्षा आंदोलन से भी आपका सक्रिय सम्पर्क रहा। १६ मई १९९० को भोपाल में आपका निधन हो गया।

ले. का.—१. गोरक्षा का राष्ट्रीय प्रश्न, २. शुद्धि-अछूतोद्धार नाटक, ३. आर्य कुमार संकीर्तन ४. हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द, ५. महारथी लाला लाजपतराय, ६. आर्य-समाज और राष्ट्र निर्माण, ७. दीवान बहादुर हरविलास शारदा, ८. नारी जागरण।

वि. अ.—पं. विश्वम्भर प्रसाद शर्मा अभिनन्दन ग्रन्थ-सम्पादिका कौसल्या देवी (१९७८).

विश्वम्भरसहाय प्रेमी

प्रसिद्ध पत्रकार तथा निष्ठावान् आर्यसमाजी विश्वम्भर-सहाय प्रेमी का जन्म मेरठ जिले के फरीदपुर कस्बे में १९ जुलाई १८९९ को हुआ। आपका जीवन प्रारम्भ से ही आर्यसमाज के माध्यम से देश सेवा तथा समाज के उत्थान हेतु समर्पित रहा। आपने स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय रूप से भाग लिया तथा कारावास की यातनाओं को सहन किया। हिन्दी पत्रकारिता को आपका अविस्मरणीय योग-दान है। १९२३ में आपने मातृभूमि नामक साप्ताहिक निकाला। १९३३ में तपोभूमि मासिक का प्रकाशन किया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् प्रेमीजी ने पंचायती राज नामक पत्र का सम्पादन किया। आपने अपने पर्यटनजन्य अनुभवों को भी लिपिबद्ध किया। आपका प्रेमी प्रेस एक मुद्रण संस्थान ही नहीं अपितु प्रकाशन केन्द्र भी था। सुप्रसिद्ध विदेश प्रचारक भी जैमिनि मेहता के अधिकांश ग्रन्थ प्रेमी प्रेस ने ही प्रकाशित किये थे। २० जनवरी १९७४ को इनका निधन हुआ।

ले. का.—१. उत्तराखण्ड के वन पर्वतों में ऋषि दयानन्द (१९५९), २. ऐतिहासिक नगर मेरठ और महर्षि दयानन्द (१९७३), ३. वैदिक संस्कृति (१९३३), ४. प्रगतिशील आर्य (१९४७), ५. ऋषि दयानन्द जीवन, ६. सत्य-हरिश्चन्द्र काव्य (१९७७ वि.), बालधर्म बोध २ भाग।

डा. डी. विश्वमित्र वैश्वमित्र

कर्नाटक के गौरीविदनूर नामक स्थान के निवासी डा. विश्वमित्र ने महर्षि दयानन्द की प्रशस्ति में ८५ संस्कृत

पद्यों की रचना की। ये पद्य प्रथम टंकारापत्रिका (कार्तिक-मार्गशीर्ष-पौष २०२२ वि.) में प्रकाशित हुए। श्रीकान्त भगतजी ने इनका गुजराती में अनुवाद किया और 'श्री महर्षि दयानन्द गुण गौरवम्' शीर्षक से प्रकाशित किया। स्वामी दयानन्द द्वारा १८६९ में काशी में किये गये शास्त्रार्थ की शताब्दी के अवसर पर कतिपय आर्य विद्वानों द्वारा लिखे गये वेद विषयक शोध पत्रों का सम्पादन भी डा. विश्वमित्र ने किया जो 'वेदों का सत्य स्वरूप' शीर्षक के १९६८ में आर्य उपप्रतिनिधि सभा काशी द्वारा प्रकाशित हुआ। आपने पं. धर्मदेव विद्यावाचस्पति लिखित वैदिक-धर्म आर्य प्रश्नोत्तरी का कन्नड़ में अनुवाद किया है।

आचार्य विश्वश्रवा (वेदर्षि व्यास)

आचार्य विश्वश्रवा की आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वानों में गणना होती है। आपका जन्म बरेली के मीरगंज मुहल्ले में मुन्शी तोताराम के यहाँ १८६१ वि. में हुआ। इनका पूर्व नाम रामलाल था, किन्तु अब वे आचार्य विश्वश्रवा के नाम से जाने जाते हैं। आचार्यजी का अध्ययन बरेली, काशी तथा लाहौर में हुआ। उन्होंने पं. हृदयानन्द व्याकरणाचार्य से अष्टाध्यायी तथा लाहौर वास्तव्य पं. शिवदत्त दाधिमथ से महाभाष्य का अध्ययन किया। पं. परमेश्वरानन्द शास्त्री से उन्होंने वेदांग पढ़े तथा पं. भीमसेन शर्मा (आगरा) से निरुक्त-शास्त्र पढ़ा। अपने लाहौर निवास-काल में उन्होंने ओरियण्टल कालेज के प्रिंसिपल डा. ए. सी. बुलनर से ग्रन्थ सम्पादन तथा पाठालोचन का अभ्यास किया। वे पर्याप्त समय तक डी. ए. वी. कालेज लाहौर के संस्कृत विभाग, अनुसंधान विभाग तथा विश्वेश्वरानन्द-वैदिक शोध संस्थान से भी सम्बद्ध रहे।

वे सार्वदेशिक सभा के पुस्तकाध्यक्ष तथा धर्मार्य सभा के मंत्री पद पर भी रहे हैं। उन्होंने देश में सर्वत्र भ्रमण कर धर्म प्रचार किया है। हाल ही में उन्होंने संन्यासाश्रम में प्रवेश किया है और अब वे वेदर्षि व्यास के नाम से जाने जाते हैं।

ले. का.—ऋग्वेद महाभाष्य प्रथम भाग—स्वामी दयानन्द के ऋग्वेदभाष्य का व्याख्यान, (२०३४ वि.), स्वामीजी की पाठविधि का वास्तविक स्वरूप, संध्या पद्धति-मीमांसा, यज्ञ पद्धति मीमांसा (१९५१), वेद और निरुक्त, निरुक्त को समझने में प्राचीन आचार्यों की भूल, आर्य-समाज का भूत, भविष्य और वर्तमान (१९६८) हिन्दू-कोडबिल विवाह पद्धति (व्यंग्य विनोद), दयानन्द चालीसा (संस्कृत पद्य)।

व. प.—१०३ बाजार मोतीलाल, बरेली (उ. प्र.)

आचार्य विश्वेश्वर

संस्कृत काव्य-शास्त्र के धुरीण आचार्य विश्वेश्वर का जन्म पीलीभति जिले के मकतूल ग्राम में १९०८ में हुआ। १९१६ में वे गुरुकुल वृंदावन में उस समय प्रविष्ट हुए जब महात्मा नारायण स्वामी वहां मुख्याधिष्ठाता थे। १९२९ में सिद्धान्त शिरोमणि की उपाधि प्राप्त कर वे स्नातक बने और उसके पश्चात् तीन वर्ष तक काशी में रहकर शास्त्रों का गूढ अध्ययन किया। वे पुनः अपने गुरुकुल में ही आ गये और दर्शनोपाध्याय रहे। तत्पश्चात् वे आचार्य बने और जीवन पर्यन्त इसी पद पर रहकर पठन-पाठन तथा लेखन में लगे रहे। ३० जुलाई १९६२ को उनका निधन हो गया।

ले. का.—प्रपंच परिचय, ध्वन्यालोक, वक्रोक्ति—जीवित, काव्यालंकार सूत्र, नाट्यदर्पण, अभिधावृत्ति मातृका, अभिनव भारती, काव्यप्रकाश आदि साहित्यशास्त्रीय ग्रन्थों की विशद टीकायें। तर्क भाषा तथा न्याय कुसुमांजलि (उदयनाचार्य लिखित ईश्वर सिद्धि पर प्रसिद्ध ग्रन्थ) पर उनकी प्रशस्त टीकायें उपलब्ध हैं। निरुक्त का दो अध्याय पर्यन्त भाष्य। मौलिक ग्रन्थ-मनोविज्ञान मीमांसा, साहित्य-मीमांसा (अप्रकाशित) नीतिशास्त्रम् बौद्धदर्शन मीमांसा, खगोलप्रकाश।

पं. विश्वेश्वर शर्मा

आपने गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से विद्या भूषण की उपाधि प्राप्त की थी। पुनः कलकत्ता से काव्यतीर्थ भी किया। आप शाहपुरा (राजस्थान) की दरबार हाई स्कूल में संस्कृत के अध्यापक थे तथा १९३० में आर्यसमाज के मंत्री भी रहे। आपने जैन विद्वान् पं. वर्धमान शास्त्री

तथा आर्यसमाज के पं. भगवान्स्वरूप न्यायभूषण के बीच हुए शास्त्रार्थ का सम्पादन व प्रकाशन किया। यह ग्रन्थ शास्त्रार्थप्रकाश अर्थात् प्रश्नोत्तर शीर्षक से १९८७ वि. में आर्यसमाज शाहपुरा द्वारा प्रकाशित हुआ है।

विशिकेशन शास्त्री

शास्त्रीजी आर्य प्रतिनिधि सभा उत्कल प्रदेश (उड़ीसा) के मंत्री हैं। व्यवसाय से आप शिक्षक हैं।

ले. का.—व्यवहारभानु का उड़िया अनुवाद आर्यमाला (१९८०), स्वामी जगदीश्वरानन्द कृत 'स्वास्थ्य का महान् शत्रु अण्डा' का उड़िया अनुवाद (१९८२)

पं. विशुद्धानन्द मिश्र शास्त्री

श्री मिश्र का जन्म २४ नवम्बर १९२४ को वदायूं जिले के ग्राम पूठी में पं. अयोध्याप्रसाद तथा माता ललिता देवी के यहाँ हुआ। इन्होंने संस्कृत शास्त्रों का उच्च कोटि का अध्ययन किया। पुनः गुरुकुल वृन्दावन के कुलपति पद पर भी रहे।

ले. का.—करपात्री स्वामी के संरक्षण में प्रणीत वेदार्थ-पारिजात नामक ग्रन्थ, जिसमें ऋषि दयानन्द तथा उनके अनुयायी वैदिक विद्वानों की वेद विषयक धारणाओं का प्रतिपद खण्डन किया गया है, का सटीक उत्तर शास्त्रीजी ने वेदार्थ कल्पद्रुम : प्रथम खण्ड में दिया है। इस ग्रन्थ को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने दयानन्द पुरस्कार से पुरस्कृत किया। स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने भी लेखक को इस कार्य के लिये ११११ रु. की राशि से सम्मानित किया। आर्यसमाज कलकत्ता तथा आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली ने वेदार्थ कल्पद्रुम के महत्त्व को अनुभव कर लेखक को सम्मानित एवं पुरस्कृत किया। मूल ग्रन्थ संस्कृत में लिखा गया है। इसका हिन्दी रूपान्तर लेखक की पत्नी श्रीमती निर्मला मिश्र ने किया है। ये पार्वती आर्य कन्या महाविद्यालय बदायूं की आचार्या हैं। वेदार्थ कल्पद्रुम का प्रकाशन २०४१ वि. (१९८४) में हुआ था। आर्य विद्वत्पञ्चकाभिनन्दनम् (सम्पादन), (१९७३.)

व. प.—द्वारा प्राचार्या, पार्वती आर्य कन्या महाविद्यालय-बदायूं।

डा. विष्णुदत्त राकेश

डा. राकेश का जन्म ८ मार्च १९४१ को मुजफ्फरनगर जिले के ग्राम किनौनी में पं. चन्द्रभानु तथा श्रीमती रुक्मिणी देवी के यहां हुआ। इन्होंने हिन्दी एम. ए. (आगरा) पी-एच. डी. (जोधपुर) तथा डी. लिट्. (उज्जैन) की उपाधियाँ प्राप्त की हैं। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर ने आपको साहित्य वाचस्पति की मानद उपाधि से सम्मानित किया है। आप गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में विगत २७ वर्षों से अध्यापन कार्य कर रहे हैं। सम्प्रति वहीं हिन्दी विभाग के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष हैं। वे विश्वविद्यालय की त्रैमासिक शोध पत्रिका प्रह्लाद के सम्पादक भी हैं।

ले. का.—वेदों के राजनीतिक सिद्धान्तः मेरी दृष्टि में, वैदिक संस्कृति, साहित्य और समाज दर्शन (सम्पादन)—(आचार्य सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार अभिनन्दन ग्रन्थ) श्रुतिपर्णा।

व. प.—हिन्दी विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार।

विष्णु प्रभाकर

हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार श्री विष्णु प्रभाकर का जन्म २१ जून १९१२ को जिला मुजफ्फरनगर के मीरापुर नामक ग्राम में श्री दुर्गाप्रसाद तथा माता श्रीमती महादेवी के यहां हुआ। आपकी शिक्षा हिसार के चन्दूलाल ऐंग्लो वैदिक हाई स्कूल में हुई जहां से १९२९ में आपने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। १९२९ से १९४४ तक आप राजकीय सेवा में रहे। पुनः १९५५ से १९५७ तक आकाशवाणी दिल्ली के नाटक प्रभाग में निदेशक के पद पर कार्यरत रहे। तत्पश्चात् उन्होंने पूर्ण रूप से लेखन कर्म को ही अपना लिया। अब तक आपके अनेक उपन्यास, कहानी संग्रह, नाटक, जीवनचरित आदि प्रकाशित हो चुके हैं। आपने अनेक बार विदेश यात्रायें कीं तथा अपनी साहित्य सेवा के कारण विभिन्न पुरस्कारों से पुरस्कृत हुए हैं। आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द के प्रति अपने उद्गारों को व्यक्त करते हुए स्वयं श्री प्रभाकर ने लिखा है—"मेरे

निर्माण में किस-किस का योगदान रहा है इसका लेखा-जोखा लेता हूँ तो सबसे ऊपर आर्यसमाज का नाम दृष्टि-पथ में आता है। मैं आर्यसमाज में नहीं हूँ पर आर्यसमाज तो मेरे रक्त मांस में इस तरह रच-बस गया है कि मुक्ति पाना चाहूं तो भी न पा सकूं। मुझ में आज जो कुछ भी, जितना कुछ भी शुभ और सुन्दर है वह मेरी अपनी कमाई नहीं है। वह तो मुझे आधुनिक भारत के दो युग निर्माताओं की कृपा से सहज ही प्राप्त हो गया है। वे युग पुरुष हैं स्वामी दयानन्द और महात्मा गांधी।"

ले. का.—भारतीय साहित्य के निर्माता : स्वामी दयानन्द सरस्वती (साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित, १९८९), भारतीय नवजागरण और स्वामी श्रद्धानन्द (गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय में प्रदत्त राष्ट्रीय प्रसार व्याख्यान माला का एक भाषण)।

व. प.— ८१८, कूण्डेवालान, अजमेरी गेट, दिल्ली-११०००६.

आचार्य विष्णुमित्र विद्यामार्तण्ड

संस्कृत के अप्रतिम विद्वान् तथा रचनाकार पं विष्णुमित्र का जन्म जिला करनाल के बुंवाना लाखू नामक ग्राम में ८ सितम्बर १९१३ को हुआ। इनके पिता का नाम श्री शिवलाल था। इनका अध्ययन गुरुकुल भैंसवाल में हुआ जहां से इन्होंने १९९० वि. में विद्याप्रभाकर की परीक्षा उत्तीर्ण की। १९३५ से १९५४ तक ये गुरुकुल भैंसवाल में ही पढ़ाते रहे तथा आचार्य एवं मुख्याधिष्ठाता भी रहे। १९७१ में ये कन्या गुरुकुल खानपुर (जिला सोनीपत) के उपकुलपति नियुक्त हुए। इनका निधन १७ सितम्बर १९८६ को हुआ।

ले. का.—१. हुतात्मा भक्त फूलसिंहजी का जीवन चरित (१९५१), २. रामायण संस्कृत गद्य, ३. सरदार वल्लभ भाई पटेलस्य जीवनचरितम् (१९७४), ४. श्री योगिराजस्य श्री कृष्णस्य चरितम् (१९७५), ५. मर्यादा-पुरुषोत्तमस्य श्रीरामचन्द्रस्य चरितम् (१९७४), ६. संक्षिप्तं कांग्रेसीयमैतिह्यम् (१९७३), ७. इन्दिराचरितम्, ८. महर्षि दयानन्द चरितम् (१९७६), ९. श्री जवाहरलाल नेहरो : चरितम्, १०. सुभाषित चयनम् ११. एकादशोपनिषद् सार (हिन्दी), भर्तृहरिशतकसार (१९७१), १२. वेद प्रवचन, १३. महाभारत-हिन्दी (अप्रकाशित)।

पं. विष्णुलाल शर्मा

बरेली निवासी श्री विष्णुलाल शर्मा का जन्म १९२४ वि. में हुआ। इनकी शिक्षा एम. ए. तक हुई। आप संयुक्तप्रान्त में सब जज के पद पर रहे। १२ नवम्बर १९०९ को आप परोपकारिणी सभा के सभासद चुने गये।

ले. का.—The HandBook of the Arya-Samaj—इसका प्रथम संस्करण आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्तप्रान्त की ट्रैक्ट सोसायटी द्वारा १९०५ में प्रकाशित हुआ। द्वितीय संस्करण इण्डियन प्रेस इलाहाबाद से १९१२ में छपा। 'आर्यसमाज परिचय' शीर्षक से यह पुस्तक हिन्दी में भी छपी।

डा. (श्रीमती) वीणा कल्ला

वीणाजी का जन्म १९५१ में जोधपुर के डा. आत्माराम व्यास के यहां हुआ। आपकी शिक्षा जोधपुर तथा चण्डीगढ़ में हुई। आपका विवाह अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त जीव वैज्ञानिक डा. नटवरराज कल्ला से हुआ। दयानन्द-शोध पीठ पंजाब विश्वविद्यालय से आपने 'स्वामी दयानन्द की विचारधारा का हिन्दी काव्य पर प्रभाव' शीर्षक शोध-प्रबन्ध लिखकर १९८७ में पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। इस खोजपूर्ण शोधकृति में आर्यसमाजी तथा आर्य-समाजी विचारों से प्रभावित हिन्दी कवियों के काव्य की समीक्षा की गई है।

व. प.—ई-१-८० पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़-१६००१४.

पं. वीरसेन वेदश्रमी

वेद तथा यज्ञ विज्ञान के अद्वितीय विद्वान् पं. वीरसेन वेदश्रमी का जन्म मार्गशीर्ष शुक्ला १३, सं. १९६५ वि. तदनुसार ५ दिसम्बर १९०८ को देवास (मध्यप्रदेश) में हुआ। आपका अध्ययन गुरुकुल वृन्दावन में हुआ जहां से

१९३० में उन्होंने 'आयुर्वेद शिरोमणि' की उपाधि प्राप्त की। कालान्तर में आपने इन्दौर को अपना स्थायी निवास बनाकर वेद एवं यज्ञ विषयक सुगम्भीर अध्ययन, अनुसंधान एवं लेखन कार्य किया। यजुर्वेद एवं सामवेद को कण्ठस्थ करने एवं विलोम पाठ तथा विकृति पाठों का आपने गहन अभ्यास किया था। इसी प्रकार यज्ञ के वैज्ञानिक लाभों तथा पर्यावरण पर उनके प्रभाव विषयक प्रयोग भी आपने किये। आपका निधन २२ दिसम्बर १९८७ को हुआ।

ले. का.—१. वैदिक सम्पदा (१९७२)—(पं. गंगा-प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार से १९७२ में सम्मानित।) २. वैदिक समाजवाद (१९७२), ३. वैदिक अध्यात्म (१९७१), ४. वैदिक श्रीसूक्त, ५. वैदिक सरस्वती सूक्त, ६. वैदिक सुमंगल सूक्त, ७. गायत्री मन्त्र (प्रकृति विकृति पाठ युक्त), ८. आत्मपावन सूक्त, ९. संजीवन सूक्त, १०. वेद महिम्न स्तोत्र, ११. वाणिज्य सूक्त, सूक्त-संग्रह (१९८२), १२. संध्या योग रहस्य (१९८१), १३. वेद कथा (१९८२), १४. संस्कार प्रश्नोत्तरी, १५. याज्ञिक वृष्टिविज्ञान, १६. वैदिक वृष्टि विज्ञान, १७. वैदिक पर्जन्य विज्ञान, १८. वृष्टि यज्ञों के परीक्षण एवं परिणाम, १९. यज्ञ चिकित्सा विज्ञान।

अंग्रेजी ग्रन्थ—

1. Three Main Current Problems and their Solution through Science of Yajna. (1978).

2. The Science of Yajna in Rain formation. (1960), 3. yajna : A foremost excellent Project for Universal Flourishment.

वीरेन्द्र

श्री वीरेन्द्र का जन्म १५ फरवरी १९११ को लाहौर में आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता और पत्रकार महाशय कृष्ण के यहां हुआ। आपकी शिक्षा एम. ए. तक हुई है। आपने देश के स्वाधीनता संग्राम में भाग लिया और कारावास भी सहन किया। १९३३ में आपने दैनिक प्रताप के सम्पादकीय विभाग में कार्य आरम्भ किया और देश विभाजन के पश्चात् जालंधर से दैनिक वीर प्रताप का प्रकाशन आरम्भ किया। विगत कई वर्षों से आप आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाव के प्रधान पद पर आसीन हैं। आप गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के कुलाधिपति भी रहे हैं। सभा के मुखपत्र आर्य मर्यादा का सम्पादन विगत अनेक वर्षों से कर रहे हैं। आर्यसमाज के अतीत, वर्तमान और भविष्य तथा एतद् विषयक समस्याओं पर आपके सम्पादकीय लेख अत्यन्त मार्मिक होते हैं।

ले. का.—The AryaSamaj and Sikhs. The Political Crisis in the Punjab.

व. प.—नेहरू गार्डन रोड, जालंधर (पंजाब)।

वीरेन्द्रकुमार आर्य

श्री आर्य का जन्म ४ जनवरी १९६५ को मेरठ जिले के खेड़ा हटाना ग्राम में श्री श्रीपाल आर्य के यहां हुआ। आपकी शिक्षा स्नातक स्तर तक हुई तथा पत्रकारिता का आपने विशेष प्रशिक्षण लिया। पत्रकारिता के क्षेत्र में आपने १९८४ में पदार्पण किया। आप १९८७ में आर्य-समाज अजमेर के पाक्षिक मुख पत्र 'आर्य पुनर्गठन' के सम्पादन बने। आपके अग्रलेख आर्यसमाज के सम्मुख उपस्थित प्रश्नों और समस्याओं को लेकर होते हैं।

ले. का.—आपने प्रसिद्ध पत्रकार पं. क्षितीश वेदालंकार के अभिनन्दन ग्रन्थ का सम्पादन 'राष्ट्रीय पत्रकारिता के पुरोधा' शीर्षक से किया, जो १९८९ में प्रकाशित हुआ है।

व. प.—द्वारा-'दैनिक अजयमेरु', ब्यावर रोड, अजमेर-३०५००१.

वीरेन्द्रकुमार राजपूत

श्री राजपूत का जन्म २० नवम्बर १९३९ को बिजनौर जिले के झुझौला ग्राम में हुआ। आपने हिन्दी, इतिहास तथा समाजशास्त्र में एम. ए. की परीक्षायें उत्तीर्ण की हैं। वर्तमान में वे शिक्षक हैं। आप उच्च कोटि के कवि हैं। 'बांध कर कफन चलो' शीर्षक आपका काव्य-संग्रह प्रकाशित हो चुका है। आपने स्वामी दयानन्द के

राजनैतिक, शिक्षा विषयक तथा राष्ट्रभाषा सम्बन्धी विचारों पर उच्च कोटि के लेख लिखे हैं।

व. प.—राजकीय इण्टर कालेज, मुरादाबाद (उ.प्र.)।

डा. वीरेन्द्रकुमार वर्मा

सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डा. वर्मा का जन्म १९३३ में सहारनपुर में श्री सुचित्र वर्मा के यहाँ हुआ। इनकी उच्च शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हुई। यहाँ से १९५८ में इन्होंने संस्कृत में एम. ए. तथा १९६१ में The Concept of Destiny in Sanskrit Literature विषय पर पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। वे १९६० में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में प्रवक्ता के पद पर नियुक्त हुए और वर्तमान में इसी विभाग में प्रोफेसर तथा अध्यक्ष हैं। आपके निर्देशन में लगभग पचास शोधार्थियों ने शोधकार्य सम्पन्न किया है।

ले. का.—१. ऋग्वेद प्रातिशाख्य—आलोचनात्मक संस्करण, २. ऋग्वेद प्रतिशाख्य : एक परिशीलन, ३. शुक्लयजुः प्रातिशाख्य : आलोचनात्मक संस्करण एवं परिशीलन- ४. तैत्तिरीय प्रातिशाख्य : आलोचनात्मक संस्करण।

व. प.—बी. ५/२२ शीशमहल कालोनी, कमच्छा, वाराणसी (उ. प्र.)।

डा. वीरेन्द्रकुमार विद्यालंकार

श्री कुमार का जन्म १५ अक्टूबर १९६२ को हरयाणा के गोहाना कस्बे में श्री सुखदयाल आर्य के यहाँ हुआ। इनका अध्ययन गुरुकुल आर्य नगर, हिसार तथा गुरुकुल-कांगड़ी विश्वविद्यालय में हुआ। १९८३ में इन्हें विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त हुई। तत्पश्चात् आपने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से एम. ए. (संस्कृत) परीक्षा १९८५ में उत्तीर्ण की। 'संस्कृत व्याकरण' में लकारार्थ विवेचन (नागेशभट्ट की मंजूषा के संदर्भ में), विषय लेकर आपने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से १९८९ में पी-एच. डी. की उपाधि ग्रहण की। विगत कई वर्षों तक ये कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के प्रवक्ता पद पर रहे। अब पंजाब विश्वविद्यालय में हैं।

ले. का.—लिङ्लकार : एक दार्शनिक दृष्टि एवं पाणिनीय लकारार्थ प्रक्रिया (१९८८), देव प्रशस्ति काव्यम्-गुरुकुल आर्यनगर, हिसार के संस्थापक स्वामी देवानन्द की प्रशस्ति में लिखा गया संस्कृत काव्य (१९८९).

व. प.—संस्कृत विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़।

वीरेन्द्र गुप्त

श्री गुप्त का जन्म श्रावण शुक्ला ६ सं. १९८४ वि. (३ अगस्त १९२७) को मुरादाबाद नगर में श्री भूषणशरण के यहाँ हुआ। १९४६ में इन्होंने आर्यवीर दल के माध्यम से आर्यसमाज में प्रवेश किया और आर्यसमाज मुरादाबाद के विभिन्न पदों पर रहे।

ले. का.—पाणिग्रहणसंस्कारविधि-(१९६४), बोधरात्रि (स्वामी दयानन्द का संक्षिप्त जीवन वृत्त, १९७०), धार्मिक चर्चा (१९७१), कर्म चर्चा (१९७१), सस्ती पूजा (१९७४), वेद में क्या है? (१९७५), वेद में चार शक्तियां (१९७७), कामनाओं की पूर्ति कैसे? (१९७८), नींव के पत्थर (१९७९), यज्ञों का महत्त्व (१९७०), ज्ञानदीप (१९८१), दैनिक पंच महायज्ञ—दिव्य दर्शन (१९८२), दस नियम (१९८३), वेद दर्शन (१९८८), (विभिन्न वैदिक सूक्तों की व्याख्या)। इनके अतिरिक्त आपने इच्छानुसार सन्तान (१९५८), पुत्र प्राप्ति का साधन (१९६३), How to beget a Son? (१९६६), सीमित परिवार (१९६९), गर्भावस्था की उपासना (१९७७), आदि सन्तान-शास्त्र विषयक ग्रन्थ भी लिखे हैं।

व. प.—मै. वीरेन्द्रनाथ अश्विनीकुमार, बाजार चौक, मुरादाबाद।

वीरेन्द्रसिंह पमार

प्रसिद्ध लेखक तथा चिन्तक वीरेन्द्रसिंह पमार का जन्म १९०९ में एटा जिले के एक ग्राम में हुआ। उनका प्रारम्भिक जीवन शिक्षक का रहा। तत्पश्चात् १९४८ में अमरीकी सूचना सेवा के हिन्दी विभाग में प्रविष्ट हुए। तत्पश्चात् भारत सरकार के सूचना एवं प्रसार मंत्रालय में क्षेत्रीय अधिकारी नियुक्त हुए। १९७१ में वे सेवा निवृत्त

हुए। उनका आरम्भिक अध्ययन गुरुकुल वृन्दावन में हुआ था। अतः अवकाश ग्रहण के पश्चात् भी वे कुछ काल तक इस गुरुकुल के आचार्य तथा अधिष्ठाता भी रहे। सम्प्रति वे एक धर्मार्थ आयुर्वेदिक औषधालय का संचालन कर रहे हैं।

ले. का.—अणु शक्ति के शान्तिमय उपयोग तथा जीवात्मा (१९९०)—जीवात्मा की शरीर में स्थिति विषय विभिन्न मतों का ऊहापोह करने वाला दार्शनिक ग्रन्थ।

व. प.—२८ यू. बी., जवाहरनगर, दिल्ली ११०००७.

वीरेन्द्र मुनि (पं. वीरेन्द्र शास्त्री)

श्री वीरेन्द्र शास्त्री का जन्म १ जुलाई १९१५ को हाथरस (जिला अलीगढ़) में हुआ। इनके पिता का नाम पं. हरिश्चन्द्र अग्निहोत्री था। आपने संस्कृत तथा हिन्दी में एम. ए. परीक्षा उत्तीर्ण की तथा साहित्याचार्य एवं काव्यतीर्थ की परीक्षायें भी पास कीं। उत्तरप्रदेश की शिक्षा सेवा में कार्य करने के अनन्तर १ जुलाई १९७३ को आपने अवकाश ग्रहण किया। शास्त्रीजी आर्य प्रतिनिधि-सभा उत्तरप्रदेश के शिक्षा विभाग के अधिष्ठाता, सार्वदेशिक विद्यार्य सभा के मंत्री तथा अनेक आर्यसमाजों के अधिकारी भी रहे। जब स्व. स्वामी धर्मानन्द सरस्वती द्वारा विश्ववेद परिषद् का संगठन किया गया तो शास्त्रीजी ने उसका महामंत्री पद सम्भाला तथा वेद विषयक अनेक प्रवृत्तियों का सूत्रपात किया। अब उन्होंने तृतीय आश्रम में प्रवेश कर अपना नाम वीरेन्द्र मुनि रख लिया है।

ले. का.—शास्त्र ग्रन्थों के भाष्य, अनुवाद आदि—यजुर्वेद पुरुषसूक्त तथा ईशोपनिषद् की व्याख्या, सामवेद (हिन्दी अनुवाद), प्रथम वेदवाणी वाराणसी के विशेषांक रूप में (२००७ वि.), पश्चात् ग्रन्थाकार (२०२० वि.), ऐतरेय ब्राह्मण अनुवाद (२०४० वि.), शतपथ ब्राह्मण प्रथम २ काण्ड (२०४२ वि.), देवताध्याय ब्राह्मण, संहितोपनिषद् ब्राह्मण तथा वंश ब्राह्मण का हिन्दी अनुवाद, अष्टाध्यायी टीका, वेदांग-निघण्टु-निरुक्तभाष्य, (२०४० वि.), वेदांग-छन्दः परिचय (२०३४ वि.), योगदर्शन व्याख्या।

अन्य ग्रन्थ—वेदार्थ पारिजात खण्डन, संस्कृत वाक्य-प्रबोध का सम्पादन, धर्मशिक्षा आदि। काशी से वेदवाणी का प्रथम प्रकाशन पं. वीरेन्द्र शास्त्री ने ही किया था। विगत पन्द्रह वर्षों से वे 'वेद ज्योति' मासिक का सम्पादन कर रहे हैं।

व. प.—सी. ८१७, महानगर लखनऊ।

वीरेन्द्र वीर

श्री वीर का जन्म बरेली जिले के अन्तर्गत मनौना ग्राम में द्वितीय चैत्र कृष्णा अष्टमी २००२ वि. को श्री सिपट्टरसिंह के यहां हुआ। मैट्रिक तक अध्ययन करने के पश्चात् श्री वीर ने आर्यसमाज में सक्रिय रूप से भाग लेना आरम्भ किया। इस समय वे आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश की ओर से बरेली जनपद में निरीक्षक का कार्य करते हैं। इनकी अनेक रचनायें तपोभूमि, आर्यमित्र आदि पत्रों में प्रकाशित हुई हैं। वैदिक सत्यनारायण कथा, परावर्तन यज्ञ, परमेश चालीसा, वीर वज्रांग चालीसा, आर्य भजन वाटिका तथा आदर्श दिनचर्या प्रकाशनाधीन हैं।

व. प.—द्वारा ओमप्रकाश आर्य, वटीलाल की बजरिया, भूड़ बरेली-२४३००१ (उ. प्र.)।

व्रतपाल स्नातक

आपने 'गरुड़ पुराण की आलोचना' लिखी जो पुराणालोचन ग्रन्थमाला लाहौर के अन्तर्गत १९८४ वि. (१९२७) में प्रकाशित हुई। आपकी एक अन्य पुस्तक 'ग्रहण मीमांसा' का भी उल्लेख मिलता है।

स्वामी व्रतानन्द सरस्वती

गुरुकुल चित्तौड़गढ़ के संस्थापक स्वामी व्रतानन्द का जन्म ३० नवम्बर १८९२ को लुधियाना जिले के किला रायपुर नामक ग्राम के एक सम्पन्न परिवार में श्री केदारनाथ थापर के यहां हुआ। इनका पूर्वाश्रम का नाम युधिष्ठिर था। गुरुकुल कांगड़ी में अध्ययन समाप्त कर इन्होंने १९१४ में विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की। आजन्म ब्रह्मचारी रहने की प्रतिज्ञा कर माघ पूर्णिमा १९८६

वि. के दिन आपने चित्तौड़गढ़ में गुरुकुल की स्थापना की और आजीवन उसके आचार्य तथा कुलपति रहे। आर्ष-पाठविधि के प्रति इनमें असीम निष्ठा थी। इन्होंने कन्याओं के लिये नरेला (दिल्ली) तथा दाधिया (जिला अलवर) में गुरुकुलों की स्थापना की। आपका निधन १२ अक्टूबर १९८० को हो गया।

ले. का.—सच्ची पाठविधि, २. आर्य कुमार के कर्त्तव्य, ३. कर्त्तव्य किरण, ४. ओम् संकीर्तन।

मुन्शी वृन्दावन

पं. आत्माराम अमृतसरी के श्वसुर मुन्शी वृन्दावन काशीपुर (जिला नैनीताल) के निवासी थे। इन्होंने मुरादाबाद में स्वामी दयानन्द से यज्ञोपवीत ग्रहण किया तथा निरन्तर २१ दिनों तक उनके उपदेश सुने। छात्रा-वस्था में ही मुन्शी वृन्दावन मुरादाबाद के मुन्शी इन्द्रमणि से परिचित हो गये थे और उन्हीं के आग्रह से ये काशीपुर से पैदल चल कर ऋषि दयानन्द के दर्शनार्थ मुरादाबाद आये थे। कालान्तर में ये काशीपुर के एक विद्यालय में मुख्याध्यापक बन गये। १८९२ में इनकी पुत्री यशोदा देवी का विवाह पं. आत्मारामजी से हुआ। मुन्शीजी का हस्तलेख बहुत सुन्दर था। अतः स्वामीजी अपने ग्रन्थों को लिखवाने के लिए उन्हें अपने समीप रखना चाहते थे किन्तु अपने सांसारिक दायित्वों के कारण ये महर्षि के सान्निध्य में बहुत काल तक नहीं रह सके।

ले. का.—१. नारी भूषण (स्त्री शिक्षा विषयक), २. शिशु शिक्षा।

पं. व्यासदेव शास्त्री

आपका जन्म अम्बहटा (जिला सहारनपुर) निवासी पं. प्रभुदयाल शर्मा के यहाँ हुआ। आप गुरुकुल महा-विद्यालय ज्वालापुर के स्नातक थे। आपने साहित्या-चार्य, विद्यानिधि, न्याय सांख्यतीर्थ आदि संस्कृत की उपाधियों के साथ-साथ एम. ए. तथा एल. एल. बी. का भी अध्ययन किया। प्रारम्भ में आप सहारनपुर में वकालत करते रहे। तत्पश्चात् रामजस कालेज दिल्ली में अध्यापन भी किया। दिल्ली के शिव मन्दिर सत्याग्रह में आपने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। आप शास्त्रार्थ कला में निष्णात थे। १९४४ में आपने दिल्ली में अखिल भारतीय धर्म संघ द्वारा आयोजित महायज्ञ के अवसर पर सनातन धर्मी विद्वान् पं. माधवाचार्य से लिखित शास्त्रार्थ किया था। शास्त्रीजी का ४५ वर्ष की आयु में क्षयरोग से निधन हो गया।

ले. का.—हमें क्या मिला ? (हैदराबाद सत्याग्रह विषयक)

वेणीप्रसाद जिज्ञासु

आप वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर के निवासी हैं। आपने 'स्वामी श्रद्धानन्द की जीवन झांकी' शीर्षक पुस्तक लिखी जो हिन्दी साहित्य स्मारिका (१९७६) से प्रकाशित हुई।

डा. वेद कुमारी

डा. वेद कुमारी का जन्म १६ नवम्बर १९३२ को जम्मू (काश्मीर) में हुआ। पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु आपके गुरु थे। आपने संस्कृत में एम. ए. किया तथा काश्मीर के इतिहास के आधारभूत ग्रन्थ 'नीलमत पुराण का सांस्कृतिक तथा साहित्यिक अध्ययन' विषय पर पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। १९६३ से आप जम्मू विश्वविद्या-लय के संस्कृत विभाग में प्राध्यापक हैं तथा सम्प्रति प्रोफे-सर तथा विभागाध्यक्ष के पद पर अभिषित हैं।

ले. का.—नीलमत पुराण का साहित्यिक और सांस्कृतिक अध्ययन, सांस्कृतिक और साहित्यिक निबंध, उर्मिका (काव्य संग्रह)—यह काव्य संग्रह आपने अपने पति डा. रामप्रताप के सहलेखन में निर्मित किया है। इसमें आनन्दत्रितय स्तुमः शीर्षक कविता में स्वामी विरजानन्द, स्वामी दयानन्द तथा स्वामी श्रद्धानन्द का स्तवन किया गया है।

व. प.—१७३ रघुनाथपुरा, जम्मू।

डा. वेदपाल वर्णी

श्री वर्णी का जन्म १० अगस्त १९५३ को रोहतक जिले के बरहाणा ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम

चौधरी हुक्मचन्द था। श्री वर्णी का अध्ययन गुरुकुल झज्जर (१९६४-६५) प्रभात आश्रम मेरठ (१९६६-६७) तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय (१९७९-८१) में हुआ। इन्होंने संस्कृत में एम. ए. तथा पंजाब विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि ग्रहण की। उड़ीसा, मेरठ तथा गुरुकुल होशंगाबाद में आपने अध्यापन भी किया। शतपथ-ब्राह्मण का इन्होंने विशिष्ट अध्ययन किया है।

ले. का.—शतपथ सुभाषित (१९८३), २. वैदिक-शोध निवन्ध (१९८४), सोम विमर्श (१९८५), संस्कृत-स्वयं शिक्षक (२०३९ वि.), माध्यन्दनीय शतपथ दयानन्दीय-याजुषभाष्ययोंस्तुलनात्मकमध्ययनम्। (अप्रकाशित शोध-प्रबंध) पं. बुद्धदेव विद्यालंकार कृत शतपथ ब्राह्मण भाष्य (आंशिक) का आलोचनात्मक सम्पादन (१९९०)

व. प.—ग्राम डा. वरहाणा (रोहतक)

डा. वेदपाल शास्त्री

११ नवम्बर १९५७ को जींद जिले के ग्राम बालू में श्री वेदपाल का जन्म श्री निहालसिंह के यहां हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल कुम्भाखेड़ा में हुई। तत्पश्चात् इन्होंने पंजाब से शास्त्री तथा राजस्थान विश्वविद्यालय से १९८६ में संस्कृत में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। दयानन्द शोध पीठ पंजाब विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान में इन्होंने 'दयानन्दीय वाङ्मय में विवेचित राजनीतिक चिंतन' विषय पर पी-एच. डी. के लिये शोधप्रबन्ध लिखा जो १९९० में स्वीकृत हुआ।

व. प.—म. नं. २२४६-बी., न्यू हाउसिंग बोर्ड, जींद (हरयाणा)

डा. वेदप्रकाश

डा. वेदप्रकाश का जन्म मेरठ जिले के एक ग्राम कलंजरी में चैत्र कृष्णा १, सं. २००८ वि. (१२ मार्च १९५२) को हुआ। इनके पिता का नाम श्री बाबूराम तथा माता का नाम श्रीमती प्रेमवती है। मेरठ कालेज से आपने हिन्दी तथा अर्थशास्त्र में एम. ए. की परीक्षाएं उत्तीर्ण की हैं। सम्प्रति आप मेरठ कालेज मेरठ में हिन्दी विभाग में अध्यापन कार्य कर रहे हैं।

ले. का.—सच्ची गीता, वैदिक भगवद्गीता (२०४१ वि.), ईश्वर उपासना क्यों और कैसे? (२०४१ वि.), वैदिक उपासना का रहस्य, ईश्वर उपासना विधि, यज्ञोप-वीत रहस्य, सत्यनारायण की सत्यकथा, हमारे अंध विश्वास, पुराणों के अविश्वसनीय प्रसंग।

व. प.—एच. ३ शास्त्रीनगर, मेरठ

डा. वेदप्रकाश उपाध्याय

डा. उपाध्याय का जन्म ७ फरवरी १९४७ को पं. रामसजीवन उपाध्याय के यहां इलाहाबाद जिले के एक ग्राम में हुआ। इनकी शिक्षा एम. ए. तथा डी. फिल् तक हुई। विगत अनेक वर्षों से वे पंजाब विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग से सम्बद्ध हैं और वर्तमान में वहां रीडर के पद पर कार्यरत हैं।

ले. का.—हिन्दू विधि एवं स्रोत, ऋग्वेदसूक्त संग्रह, वज्रसूची उपनिषद् (शंकराचार्यकृत टीका सहित) सम्पादन, वैदिक साहित्य : एक विवेचन।

व. प.—संस्कृत विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय. चण्डीगढ़ १६००१४.

डा. वेदप्रकाश वाचस्पति

डा. वाचस्पति का जन्म २५ अगस्त १९२१ को पाकिस्तान के जिला मुजफ्फरगढ़ के कोट अद्दू नामक ग्राम में श्री तुलसीराम आर्य के यहां हुआ। इन्होंने दयानन्द ब्राह्म-महाविद्यालय लाहौर में अध्ययन किया और १९३९ में विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त की। पुनः पंजाब विश्व-विद्यालय से शास्त्री (१९४१) एम. ए. (संस्कृत-१९५०) तथा एम. ओ. एल. (१९५२) की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। १९८२ में आपको पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला से 'Sanskrit Syntax : A Grammatico. Linguistic Study' विषय पर पी-एच. डी. की उपाधि मिली।

प्रारम्भ में आपने दयानन्द ब्राह्ममहाविद्यालय लाहौर में अध्यापक तथा आचार्य पद पर कार्य किया। देश विभा-

जन के पश्चात् महाविद्यालय के श्याम चौरासी में स्थापित होने पर १९५० तक उसके आचार्य रहे। तत्पश्चात् पंजाब के महाविद्यालयों में दीर्घकाल पर्यन्त संस्कृत के प्रवक्ता रहे। आप १९७९ में वहां से सेवानिवृत्त हुए। तत्पश्चात् आपको विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर में काम करने का अवसर मिला। यहां रहकर आप संस्कृत के त्रैमासिक विश्व संस्कृतम् तथा हिन्दी मासिक विश्वज्योति का सम्पादन कर रहे हैं। आपने पातंजल महाभाष्य के प्रथम दो अध्यायों का हिन्दी अनुवाद सहित सम्पादन (१९७९) किया है। आपका एक शोध निबन्ध A Bird's EyeView of the Vedic Literature (१९७९) प्रकाशित हो चुका है।

व. प.—साधु आश्रम, होशियारपुर (पंजाब)

डा. वेदप्रकाश वेदालंकार

डा. वेदालंकार का जन्म करनाल जिले के ग्राम गुमथला में श्री बाबूराम के यहां ६ जनवरी १९४१ को हुआ। इनका अध्ययन गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में हुआ जहाँ से आपने १९६१ में वेदालंकार की उपाधि ग्रहण की। आप हिन्दी तथा संस्कृत में एम. ए. तथा पी-एच. डी. हैं। विगत अनेक वर्षों से आप डी. ए. वी. कालेज अम्बाला सिटी में हिन्दी विभाग के प्रवक्ता हैं।

ले. का.—उपनिषद् दर्पण, कालिदास तथा भास के अनेक काव्यों तथा नाटकों पर टीकायें, महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज।

व. प.—देवसमाज कालेज हॉस्टल के पास, अम्बाला नगर।

वेदप्रकाश सुमन

श्री सुमन का जन्म मार्गशीर्ष शुक्ला ५ सं. २००३ वि. को मथुरा के आर्य विद्वान् पं. ईश्वरीप्रसाद प्रेम के यहाँ हुआ। उनकी शिक्षा एम. ए. तक हुई। आप आर्य साहित्य के कुशल लेखक थे। उनका निधन श्रावण शुक्ला १४ सं. २०४६ (१६ अगस्त १९८९) को हुआ।

ले. का.—ज्योतिषविवेक, श्री कृष्णादि ईश्वरावतार क्यों?, आर्यसमाज के स्वर्णिम सिद्धान्त, भारत माँ की बेड़ियाँ, आदि।

डा. वेदप्रताप वैदिक

प्रख्यात पत्रकार और क्रान्तिकारी विचारक डा. वैदिक का जन्म ३० दिसम्बर १९४४ को इन्दौर के आर्य कार्यकर्ता श्री जगदीशप्रसाद वैदिक के यहाँ हुआ। इनकी शिक्षा क्रिश्चियन कालेज इन्दौर में हुई जहाँ से आपने राजनीतिशास्त्र में एम. ए. किया। तत्पश्चात् आप १९६४ में दिल्ली आये और हिन्दी माध्यम से राजनीतिशास्त्र में शोध करने हेतु आपको कठिन संघर्ष करना पड़ा। अन्ततः आपको हिन्दी माध्यम से ही शोध प्रवन्ध प्रस्तुत करने की अनुमति मिल गई। वे १९७४ से १९८५ तक नवभारत टाइम्स के सम्पादकीय विभाग में रहे तथा वर्तमान में समाचार एजेंसी 'भाषा' के सम्पादक हैं। डा. वैदिक के ग्रन्थों में 'अंग्रेजी हटाओ : क्यों और कैसे' तथा 'हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम' विशेष उल्लेखनीय हैं। हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास का आपने गम्भीर अध्ययन किया है। पत्रकारिता विषयक उक्त ग्रन्थ प्रख्यात हिन्दी पत्रकार श्री अक्षयकुमार जैन के सम्मान में प्रकाशित किया गया था, जिसका सम्पादन डा. वैदिक ने किया। इसमें आर्यसमाज के पत्रों और पत्रकारों पर मूल्यवान सामग्री संगृहीत की गई है।

व. प.—ए. १९. प्रेस एन्क्लेव, नई दिल्ली ११००१७.

महात्मा वेदभिक्षु (पं. भारतेन्द्रनाथ)

जनज्ञान प्रकाशन तथा दयानन्द संस्थान के माध्यम से आर्यसमाज के साहित्य प्रकाशन के कार्य में क्रान्ति लाने वाले पं. भारतेन्द्रनाथ का जन्म १४ मार्च १९२८ को कानपुर में पं. गयाप्रसाद शुक्ल तथा माता विद्यावती के यहाँ हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल जेहलम (पाकिस्तान) में हुई। इन्होंने आर्यसमाज की पत्रकारिता को रुचि तथा आजीविका दोनों कारणों से चुना तथा आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के मुखपत्र आर्य, आर्योदय, आर्यमर्यादा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के मुखपत्र 'आर्यमित्र' का सम्पादन किया। १९६८ में उन्होंने मासिक

'जनज्ञान' निकाला तथा १९७२ में वेदसंस्थान की स्थापना कर चारों वेदों तथा विपुल वैदिक साहित्य का प्रकाशन किया। १४ मार्च १९७९ को वानप्रस्थ ग्रहण कर पं. भारतेन्द्रनाथ ने वेदभिक्षु नाम ग्रहण किया। २१ दिसम्बर १९८३ को उनका दिल्ली में निधन हो गया।

ले. का.—वैदिक अर्थशास्त्र परिचय, विश्व को आर्य-समाज का संदेश, महर्षि दयानन्द चित्र दर्शन, दयानन्द-चित्र कथा, पोप की सेना का भारत पर हमला, हिन्दुओं को चेतावनी।

वेदमित्र ठाकोर

गुजरात के भड़ौंच जिले के भोलाव ग्राम के निवासी श्री वेदमित्र ठाकोर ने गुजराती भाषा में उच्चकोटि के साहित्य की रचना की है। आपने अंग्रेजी में भी लिखा है। कई वर्ष पूर्व आपकी एक पुस्तक में उद्धृत 'भ्रष्टा-स्ततो भागवता भवन्ति' इस श्लोकार्द्ध को लेकर गुजरात सरकार ने आप पर अभियोग दायर किया। यह अभियोग काफी दिनों तक चला। अन्ततः पं. वैद्यनाथ शास्त्री तथा पं. युधिष्ठिर मीमांसक जैसे विद्वानों की साक्षियों के बल पर इसे अदालत ने खारिज कर दिया।

ले. का.—भगवद्गीता नु वैज्ञानिक स्वरूप (१९५८), आचार्य दयानन्द ज! शा माटे? Dayanand : The Great (१९६१), आर्यसमाज नुं सांचुस्वरूप, ज्ञान ना अजवाले, वेदवाणी (१९८६), मानव कल्याण नो मूल मंत्र (गायत्री), आचार-विज्ञान, हवन-यज्ञ।

व. प.—ग्राम डा. भोलाव, जिला भड़ौंच।

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

परिव्राजकजी का पूर्वाश्रम का नाम बलवन्तसिंह था। इनका जन्म विजनौर जिले के शेरकोट कस्बे में एक कृषक परिवार में हुआ। आर्यसमाज में इनकी प्रारम्भ से ही रुचि थी। १९५२ से ये वेद प्रचार के कार्य में संलग्न हैं। १९५७ के पंजाब हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में इन्होंने भाग लिया तथा १९५९ में संन्यास ग्रहण कर वेदमुनि परिव्राजक के नाम से जाने गये। इन्होंने 'पुण्यलोक' नामक एक मासिक पत्र भी निकाला तथा वैदिक संस्थान की स्थापना कर विगत कई वर्षों से धर्म प्रचार कर रहे हैं।

ले. का.—नारी का शील, सृष्टि विज्ञान और वेद, महामृत्युंजय मंत्र, मनुष्य बन, एक ही रास्ता, माता पिताओं से, हिन्दू नहीं आर्य, कुछ ज्वलन्त प्रश्न, आदर्श-परिवार, मृगतृष्णा, कर्म व्यवस्था, तीन प्रकार के बंधन, सात मर्यादायें, अमृतमय छाया, आर्यसमाज क्या है?, पथरीली नदी, वर्ण जन्म से नहीं गुण कर्म से, ईश्वर नाम-मणिमाला, गायत्री, आर्यों का आदि देश, अण्डा, माँस, शराब, देश के पहरेदारों से, धर्म का तत्त्व, विद्यार्थी, वेदान्त, हमारी राष्ट्रभाषा और उसके कुछ महत्त्वपूर्ण पहलू, (सम्पादित), वेदोपनिषद्।

व. प.—वैदिक संस्थान, बिजनौर (उ. प्र.)।

प्रो. वेदव्यास

डी.ए.वी. प्रवन्धकारिणी सभा के वर्तमान प्रधान प्रो. वेदव्यास का जन्म १ सितम्बर १९०२ को पश्चिमी पंजाब के तख्त हजारा (जिला सरगोधा) ग्राम में हुआ। १९२४ में इन्होंने डी.ए.वी. कालेज लाहौर से संस्कृत में एम.ए. की परीक्षा पास की। एल. एल. बी. भी किया। कुछ काल तक संस्कृत तथा प्राचीन भारतीय इतिहास का अध्यापन करने के पश्चात् इन्होंने लाहौर में ही वकालत आरम्भ की। देश विभाजन के पश्चात् आप दिल्ली आ गये और सर्वोच्च न्यायालय में वकालत आरम्भ की। १९२८ से ही डी.ए.वी. प्रबन्ध समिति के सदस्य रहते आये हैं और १९८० से समिति के अध्यक्ष हैं।

ले. का.—संस्कृत साहित्य का इतिहास प्रथम भाग—(डी.ए.वी. कालेज अनुसंधान विभाग लाहौर) विशाल भारत का इतिहास (उक्त विभाग द्वारा १९२९ में प्रका-शित)।

व. प.—६१ गोल्फ लिंक्स, नई दिल्ली-११०००३

डा. वेदव्रत 'आलोक'

श्री आलोक का जन्म २० जुलाई १९३८ को दिल्ली में पं. राजेन्द्रनाथ शास्त्री के यहां हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा दयानन्द वेद विद्यालय गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली में हुई। पश्चात् आपने संस्कृत लेकर पंजाब विश्व-

विद्यालय से एम. ए. तथा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से १९६८ में पी-एच.डी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। विगत अनेक वर्षों से आप स्वामी श्रद्धानन्द कालेज, अलीपुर दिल्ली में संस्कृत का अध्यापन कर रहे हैं।

ले. का.—संस्कृत शिक्षण के लिये सरल संस्कृतम्, संस्कृत पथ, संस्कृत दीपिका तथा संस्कृत लतिका शीर्षक पुस्तकें, संस्कृत सूक्तियों-लोकोक्तियों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन (शोध ग्रंथ, १९८६), योगदर्शन के व्यास भाष्य का शंकराचार्य कृत भाष्य विवरण के आधार पर सम्पादन और पुनर्गठन, हिन्दी विवृत्ति सहित।

व. प.—१५९५, हरध्यानसिंह रोड, करौलबाग, नई दिल्ली-११०००५।

वेदव्रत मीमांसक

आप आंध्रप्रदेश के डिचपल्ली नामक स्थान में गुरुकुल वेद विद्यालय का संचालन कर रहे हैं। आप ज्योतिष-शास्त्र के अधिकृत विद्वान् हैं। आपकी फलित ज्योतिष की समीक्षा में लिखी पुस्तकें पर्याप्त लोकप्रिय हुई हैं।

ले. का.—ज्योतिष विवेक, शकुनों का भयंकर दुष्परिणाम, ज्योतिष और भविष्यवाणी का पोलखाता, नवग्रह पूजा का भांडाफोड़, राशि और कुण्डली की पोल, आर्योद्देश्यरत्नमाला का संस्कृत पद्यानुवाद (गुरुकुल पत्रिका मार्गशीर्ष २०२६ वि.)।

व. प.—गुरुकुल वेद विद्यालय, गोवर्धन आश्रम, डिचपल्ली (निजामाबाद)।

पं वेदव्रत वेदालंकार

श्री वेदालंकार का जन्म बुलन्दशहर (उत्तरप्रदेश) में हुआ। इन्होंने गुरुकुल कांगड़ी से १९३६ में वेदालंकार की उपाधि प्राप्त की। कालान्तर में ये अरविंद आश्रम पाण्डिचेरी में साधक के रूप में रहे। इनकी 'वेद गीतांजलि' शीर्षक काव्य कृति स्वाध्याय मंजरी के अन्तर्गत प्रकाशित हुई थी। इसमें ऋग्वेद के कतिपय सूक्तों के मंत्रों का पदच्छेद तथा भावार्थ देकर उनको काव्य शैली में अनूदित किया गया है। इनका निधन १९४४ में हुआ।

पं. वेदव्रत शास्त्री

शास्त्रीजी का जन्म राजस्थान के झुंझनू जिले के ग्राम घासी का बास (अजीतपुरा) में मार्गशीर्ष शु. १२ सं १९८९ (४ दिसम्बर १९३२) को श्री ज्ञानाराम के यहां हुआ। आपका अध्ययन गुरुकुल झज्जर में हुआ जहां से आपने व्याकरण, साहित्य, निरुक्त, दर्शन तथा आयुर्वेद में आचार्य की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। १९५२ से १९६४ तक आप गुरुकुल झज्जर के आचार्य रहे तथा गुरुकुल के मुखपत्र 'सुधारक' मासिक का सम्पादन किया। १९७३ में आपने सर्वहितकारी पत्र आरम्भ किया जो बाद में आर्य प्रतिनिधि-सभा हरयाणा का मुखपत्र बना। वर्तमान में आप आर्य-प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मंत्री हैं।

ले. का.—वेद विमर्श (२०१६ वि.), पातंजल महाभाष्य का सम्पादन (प्रदीप व उद्योत टीका तथा विमर्श टिप्पणी सहित (१९६२-६३), आसनों के व्यायाम, मेधाव्रताचार्य के काव्य विरजानन्द चरितम् तथा गुरुकुल शतकम् का अनुवाद।

व. प.—आचार्य प्रेस, दयानन्द मठ. रोहतक (हरयाणा)

स्वामी वेदानन्द तीर्थ

आर्यसमाज के लब्ध प्रतिष्ठ वैदिक विद्वान् तथा सशक्त लेखक स्वामी वेदानन्द तीर्थ का जन्म १८९२ में उज्जैन नगर के एक सारस्वत ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम पं. कृष्णमोहन ज्येष्ठानन्द चतुर्वेदी था, जो एक सम्पन्न गृहस्थ थे। वैष्णव धर्म में इनकी गहन आस्था थी। बाल्यकाल में अचानक ही वेदानन्द की नेत्र ज्योति तीन वर्षों तक लुप्त रही किन्तु एक देहाती चिकित्सक द्वारा जड़ी बूटियों के रस का प्रयोग करने से उन्हें पुनः दृष्टि शक्ति प्राप्त हो गई। ऐसा विदित होता है कि किशोरवय में ही उन्होंने गृहत्याग कर दिया था। अब वे 'ब्रह्मचारी यशवन्त' का नाम धारण कर मुलतान में गोस्वामी घनश्यामजी से अष्टाध्यायी पढ़ते रहे। साथ ही सरकारी स्कूल में पढ़ कर पंजाब विश्वविद्यालय से मैट्रिक परीक्षा भी उत्तीर्ण कर ली।

विद्या प्राप्ति की अदम्य लालसा से प्रेरित होकर ब्रह्मचारीजी काशी चले गए। यहां एक आर्य संन्यासी

स्वामी जयानन्द तीर्थ से अपने चतुर्थाश्रम की दीक्षा ली और 'दयानन्द तीर्थ' नाम धारण किया परन्तु कालान्तर में आपने अपने परमगुरु स्वामी दयानन्द का नाम स्वीकार करने की अपेक्षा अपना नाम अन्य रखना ही श्रेयस्कर समझा। फलतः अब वे 'वेदानन्द तीर्थ' के नाम से विख्यात हुए। आपने कुछ काल महाविद्यालय ज्वालापुर तथा गुरुकुल कांगड़ी में भी व्यतीत किया। महात्मा मुन्शीराम से आपका पूर्ण सौहार्द भाव था। अभी तक वेदानन्द तीर्थ अपनी ज्ञान-पिपासा को पूर्णतया शान्त नहीं कर सके थे, अतः एक बार पुनः आप काशी की ओर उन्मुख हुए। उन दिनों काशी की स्थिति विचित्र थी। पुरातन विचारों के संस्कृत विद्वान् आर्यसमाजी विद्यार्थियों को शास्त्राध्यापन कराने में संकोच करते थे। अतः जिज्ञासु छात्रों को यदाकदा अपनी आर्य-विचारधारा को छिपाये रखना पड़ता था। परन्तु वेदानन्द तीर्थ ने अपने विचारों को कभी गुप्त नहीं रक्खा और स्वयं को आर्यसमाजी के रूप में प्रख्यापित करते हुए विद्या-भ्यास में कमी नहीं आने दी। काशी वास के दिनों में पं. राहुल सांकृत्यायन भी कुछ काल तक आपके सहाध्यायी रहे थे।

सन् १९२६ में वेदानन्द तीर्थ दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर के मुख्याध्यापक बनाये गए। १९३९ में आप उक्त विद्यालय के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित हुए और देश-विभाजन के दो दिन पूर्व १३ अगस्त १९४७ तक इस पद पर रहे। देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात् आपने विरजानन्द-वैदिक संस्थान की स्थापना की और दिल्ली के निकट खेड़ा खुर्द ग्राम में संस्थान का कार्यालय जमाया। अब आप दत्त-चित्त होकर स्वाध्याय तथा ग्रन्थ लेखन में जुट गए। महात्मा नारायणस्वामी के देहान्त के पश्चात् स्वामी वेदानन्द को 'दयानन्द संन्यासी वानप्रस्थ मंडल' का अध्यक्ष चुना गया। फलतः कुछ काल तक आपका निवास आर्य-वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में भी रहा। विरजानन्द वैदिक-संस्थान के मुखपत्र के रूप में आपने 'वेदपथ' नामक मासिक पत्र का प्रकाशन १९४९ में प्रारम्भ किया जो कुछ काल तक आपके सम्पादन में निकलता रहा। अक्टूबर १९५६ में वेदानन्द तीर्थ आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री के पद पर निर्वाचित हुए परन्तु इसी वर्ष (१९५६) २७ नवम्बर को आपका हृदय गति रुक जाने के कारण निधन हो गया। स्वामी वेदानन्द तीर्थ उच्च कोटि के लेखक, गवेषक तथा प्रगल्भ विद्वान् थे।

ले. का.—वेदव्याख्या विषयक ग्रन्थ—१. वेदामृत—ऋषि दयानन्द की जन्म शताब्दी के अवसर पर आर्यप्रतिनिधि सभा, पंजाब ने श्रीपाद दामोदर सातवलेकर द्वारा 'वेदामृत' नामक ग्रन्थ तैयार कराया जो १९८१ वि. में प्रकाशित हुआ। इसी ग्रन्थ का द्वितीय सम्पादित संस्करण स्वामी वेदानन्द ने तैयार किया, जो १९२७ (१९८४ वि.) में लाहौर से प्रकाशित हुआ।

२. वेदोपदेश—(वैदिक स्वदेश भक्ति)—अथर्ववेद के पृथिवी सूक्त, ब्रह्मगवी सूक्त तथा ऋग्वेद के स्वराज्य सूक्त (मण्डल १ सूक्त ८०) की हृदयग्राही व्याख्या (१९३०), यजुर्वेद का ४०वां अध्याय (१९९८ वि.), वैदिक धर्म—वैदिक धर्म के विभिन्न सिद्धान्तों से सम्बन्धित, वैदिक मन्त्रों का संग्रह (१९३०), वेदप्रवेश—वेदाध्ययन में रुचि जागृत करने हेतु स्वामीजी ने १९७७ वि. में तीन भागों में इस ग्रन्थ की रचना की। वेदपरिचय—वेद विषयक कतिपय महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का सारगर्भित विवेचन। स्वाध्याय सुमन—५३ मन्त्रों की सुगम व्याख्या (१९४१), स्वाध्याय संग्रह (२००८ वि.), सावित्री प्रकाश—गायत्री मन्त्र की सार-गर्भित व्याख्या (१९४८), स्वाध्याय संदोह—३६७ मन्त्रों की रोचक एवं ललित व्याख्या (१९४३), (२००० वि.)। राष्ट्र रक्षा के वैदिक साधन—(पृथ्वी सूक्त के प्रथम मन्त्र की व्याख्या), वैदिक स्तुति प्रार्थनोपासना—(स्वामी दयानन्द संकलित प्रार्थना मन्त्रों की व्याख्या) (१९४८), श्रुतिसूक्तिशती (वैदिक सूक्तियों का संग्रह) (२०११ वि.), **स्वामी दयानन्द कृत ग्रन्थों के सम्पादित संस्करण**—स्थूलाक्षरी सत्यार्थप्रकाश—उपयोगी भूमिका तथा ज्ञान-वर्धक टिप्पणियों सहित सत्यार्थप्रकाश का यह स्थूलाक्षर संस्करण विरजानन्द वैदिक संस्थान खेड़ा खुर्द से २०१३ वि. में प्रकाशित हुआ। संस्कारविधि—स्वामी दयानन्द कृत संस्कारविधि का केवल विधिभाग। पंचमहायज्ञ विधि—पंच-महायज्ञों का विधान करने वाले ग्रन्थ की मार्मिक व्याख्या

(२०१३ वि.), महर्षि विरजानन्द सरस्वती का जीवन चरित (२०११ वि.), ऋषि बोध कथा—स्वामी दयानन्द के कतिपय उदात्त जीवन संस्मरणों की भावपूर्ण व्याख्या (२००९ वि.), स्वामी दयानन्द की अद्भुत बातें (२००९ वि.), स्वामी दयानन्द की विलक्षण बातें, आर्य-समाज और राजनीति।

अन्य ग्रन्थ—पुराणों में परस्पर विरोध, संध्यालोक (संध्या के मन्त्रों की हृदयग्राही व्याख्या।), नैमित्तिक वेद-पाठ (२००५ वि.), अध्यात्म प्रसाद, ब्रह्मोद्योपनिषद् (प्रश्नोत्तरोपरिषद्) (१९९५ वि.)। हम संस्कृत भाषा क्यों पढ़े? हमारा नाम आर्य है, हिन्दू नहीं, नारद नीति (२००८ वि.), कणिक नीति (२००८ वि.), विदुर-प्रजागर (विदुरनीति)(२००९ वि.)। विदुर, कणिक तथा नारद के इन तीनों ग्रन्थों के नवीन संस्करण विरजानन्द-वैदिक संस्थान ने २०३० वि. में पुनः प्रकाशित किये। वेदार्ष कोष ३ भाग पं. चमूपति के सहयोग से लिखा और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने (१९९१ वि., १९९७ वि.) प्रकाशित किया। जीवन की भूलें (आत्मकथा), सत्यार्थ-प्रकाश का प्रभाव—(२०१६ वि.), सत्यार्थप्रकाश की रचना का प्रयोजन। योगोपनिषद् (योग दर्शन की व्याख्या (१९८८ वि.)।

संस्कृत ग्रन्थ—न्याय सूत्रवृत्ति टिप्पणी, कलौसत्ता-प्रकाश।

वि. अ.—वेदप्रकाश में प्रकाश्यमान धारावाही जीवनी: लेखक-सत्यानन्द शास्त्री।

स्वामी वेदानन्द वेदवागीश

सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् तथा शिक्षाविद् स्वामी वेदा-नन्द का जन्म मेरठ जिले के गठीना ग्राम में १९२० में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा स्व-ग्राम में ही हुई। तत्-पश्चात् तहसीली स्कूल वागपत में आपने कुछ काल तक अध्ययन किया। कालान्तर में आप गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में प्रविष्ट हुए और १९४५ में 'वेद वागीश' की उपाधि ग्रहण की। आप इस गुरुकुल के प्रथम स्नातक थे। अध्ययन समाप्त कर आप रावलपिण्डी स्थित स्वामी आत्मानन्द सरस्वती के आश्रम में पहुंचे और उनके सान्निध्य में कुछ काल तक रहे। इसी समय आप दयानन्द भिक्षु मण्डल में प्रविष्ट हुए और 'आत्मभिक्षु' नाम ग्रहण किया। देश-विभाजन के पश्चात् आप रावलपिण्डी से लौट आये और गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में कई वर्षों तक मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य के पदों पर कार्य किया।

१९६८ में आप गुरुकुल झज्जर आ गये और श्रीमद्दयानन्द आर्ष विद्यापीठ के द्वारा गुरुकुलीय शिक्षा-प्रणाली के अन्तर्गत यहाँ की परीक्षाओं के प्रस्तोता के रूप में कार्य करने लगे। आप गुरुकुल झज्जर के उपाचार्य भी रहे। ४ जून १९८७ को आपका निधन हो गया।

ले. का.—भारत की एक विभूति दयानन्द सरस्वती (२०२५ वि.), स्वामी आत्मानन्द जीवन-ज्योति (स्वामी आत्मानन्द का जीवन चरित, २०२० वि. १९६४), सच्चे गुरु और पारखी (१९१५-१९६५ की अवधि के गुरुकुल झज्जर का उपन्यास शैली में वर्णन), तत्त्वबोध—(वैदिक सिद्धान्तों का विवेचनात्मक ग्रन्थ), ईशोपनिषद् व्याख्या (२०२५ वि.), गीता विवेक—(संस्कृत तथा हिन्दी में श्रीमद्भगवद्गीता की टीका। प्रक्षिप्त श्लोक समाविष्ट नहीं किये गये हैं) (१९७३), सामयिक समाधान, स्वस्थवृत्तम, नाम रूप रूपिका। उपर्युक्त मौलिक ग्रन्थों के अतिरिक्त आपने कविरत्न मेधाव्रताचार्य रचित दयानन्द लहरी, ब्रह्म-चर्यमहत्त्वम् तथा ब्रह्मचर्य शतकम् की टीकायें भी लिखी हैं। अन्य ग्रन्थ—जीवात्मा अणु विभुर्वा, जीव का परिमाण, धातु रूपावली आदि।

वेंकटेश्वर शास्त्री

आप गुरुकुल घटकेश्वर (हैदराबाद) में अध्यापक रहे। कई वर्षों तक हैदराबाद (सिकन्दराबाद) से परिव्राट् नामक साप्ताहिक पत्र निकाला जो हिन्दी, तेलुगु तथा अंग्रेजी भाषाओं में छपता था। आपकी एक कृति 'सरलार्थ योग-दर्शन' २०१३ वि. में छपी। इसमें योगदर्शन के सूत्रों की सरल व्याख्या है।

पं. वैद्यनाथ शास्त्री

संस्कृत एवं वैदिक साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान् पं. वैद्यनाथ शास्त्री का जन्म १ दिसम्बर १९१५ को उत्तर-

प्रदेश के जौनपुर नगर में हुआ। वाराणसी, प्रयाग तथा लाहौर में आपका अध्ययन हुआ। कांग्रेस के द्वारा संचालित स्वाधीनता आंदोलन में भी आपने सक्रिय रूप से भाग लिया। तत्पश्चात् आपने डी. ए. वी. कालेज प्रबन्ध-समिति द्वारा संचालित दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय लाहौर में प्रधानाचार्य के रूप में कुछ समय तक कार्य किया। देश-विभाजन के पश्चात् वे गवर्नमेण्ट संस्कृत कालेज बनारस के पुस्तकालयाध्यक्ष के पद पर रहे, पुनः महाराष्ट्र के नासिक नगर में रहकर स्वतन्त्र रूप से लेखन एवं प्रचार-कार्य करने लगे। कुछ समय के लिये आप आर्य कन्या-गुरुकुल पोरवन्दर के आचार्य पद पर भी रहे। १९६३ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अनुसंधान विभाग के अध्यक्ष पद पर आपकी नियुक्ति हुई। लगभग एक दशक तक इस पद पर रहकर आपने कार्य किया और सार्वदेशिक-सभा के तत्त्वावधान में अनेक उच्चकोटि के ग्रंथों की रचना की। आपने अफ्रीका, मॉरिशस आदि का प्रचारार्थ भ्रमण किया। २ मार्च १९८८ को आपका निधन हो गया।

ले. का.—आर्य सिद्धांत सागर (प्रथम खण्ड) इस महाग्रन्थ की रचना में आपने ठाकुर अमरसिंह आर्यपथिक (अमर स्वामी) को सहयोग दिया (२००० वि.), वैदिक-ज्योति—वेद विषयक उच्चकोटि के स्फुट निबंधों का संग्रह। इस पर लेखक को सार्वदेशिक सभा ने 'दयानन्द पुरस्कार' प्रदान किया था (१९५५)। शिक्षण तरंगिणी—शिक्षा से सम्बन्धित निबंधों का संग्रह, वैदिक इतिहास विमर्श (१९६१), पाश्चात्य विद्वानों ने वेद में अनित्य इतिहास की सत्ता स्वीकार करते हुये जो आक्षेप किये हैं उनके समाधान रूप में यह ग्रन्थ लिखा गया है। इसमें प्रो. ए.ए. मैकडॉनल लिखित वैदिक इण्डेक्स में अभिव्यक्त विचारों की प्रमाणपुरस्सर समीक्षा की गई है। दयानन्द-सिद्धांतप्रकाश—गाजियाबाद निवासी पौराणिक पंडित रामचन्द्र यक्ता ने 'दयानन्द रहस्य' लिखकर स्वामीजी के अनेक सिद्धांतों का कठोर खण्डन किया था। शास्त्रीजी ने इस पुस्तक का सप्रमाण उत्तर दिया (२०१९ वि.)। कर्ममीमांसा—(१९५४), सामवेद भाष्य (२०२३ वि.), अथर्ववेद (अंग्रेजी अनुवाद), वैदिक युग और आदि मानव—भारतीय विद्या भवन बम्बई द्वारा प्रकाशित 'वैदिक एज' ग्रन्थ के कतिपय आपत्तिजनक स्थलों की समीक्षा में लिखा गया ग्रंथ (१९६४)। वैदिकविज्ञानविमर्श—महामहोपाध्याय पं. गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी द्वारा लिखित ग्रन्थ "वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति" में व्यक्त किए गए मूर्ति-पूजा, मृतक श्राद्ध, कृष्ण की पुराणोक्त रासलीला, अवतार-वाद आदि के पोषक मन्तव्यों की आलोचना में लिखा गया। इसमें शर्माजी के द्वारा स्वामी दयानन्द के वेद विषयक सिद्धांतों की यत्रतत्र स्पष्ट रूप में तथा अन्यत्र व्याजस्तुति शैली में की गई आलोचना का भी प्रत्युत्तर दिया गया है। तत्त्वार्थादर्श—जैन मतानुयायी पं. अजित-कुमार शास्त्री लिखित सत्यार्थदर्पण (सत्यार्थप्रकाश के त्रयोदश समुल्लास का खण्डन) तथा छुल्लक निजानन्द लिखित 'ईश्वर मीमांसा' के उत्तर में लिखा गया। छः दर्शनों में मतैक्य है (१९७२), दर्शनतत्त्व विवेक—भाग-१ (भारतीय वैदिक दर्शन से संबन्धित गम्भीर आलोचनात्मक ग्रन्थ) (१९७३) मुक्ति का साधन ज्ञान-कर्म-समुच्चय, महर्षि की जन्मतिथि, आर्यसमाज की स्थापना-तिथि, ब्रह्मपारायण यज्ञ हो सकता है, नानजी भाई कालिदास मेहता का जीवन चरित, वैदिक यज्ञ दर्शन (१९८०)। शास्त्रीजी ने निम्न ग्रन्थ संस्कृत में लिखे हैं। ये अभी प्रकाशित नहीं हो सके हैं। काल, सांख्य सम्प्रदायान्वेषणम्, वैदिक वाग् विज्ञानम्, सदाचारः।

अंग्रेजी ग्रन्थों का विवरण—1. The AryaSamaj : Its Cult and Creed, (1965), 2. Vedic Caste System (1969), 3. Natural Sciences in the Vedas, 4. Gems of Aryan Wisdom, 5. The Vedic Marriage Ceremony., 6. Vedic Sandya, 7. Havana Mantras., 8. Swami Dayanand's Canon of Vedic Interpretation, 9. Some points of the Political Philosophy of the Vedas. 10. Unity of Home and in the World, 11, Ban on Cow Slaughter (2 parts), 12. Philosophy of Swami Dayanand, 13. Morality is the Ultimate end of Religion, 14. AryaSamaj at a glance,

15. A Miscellania of Vedic Religion and Philosophy, 16. संस्कार विधि का अंग्रेजी अनुवाद।

पं. शंकरदत्त शर्मा

आर्य साहित्य के प्रसिद्ध प्रकाशक पं. शंकरदत्त शर्मा का जन्म ज्येष्ठ शुक्ला ११, सं. १९३८ वि. को बुलन्दशहर जिले के समावदीनपुर नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम पं. कल्याणदत्त था। पं. मुरारिलाल शर्मा के उपदेशों को सुनकर आप आर्यसमाजी बने। काशी में रहकर आपने संस्कृत का अध्ययन किया और कालान्तर में मुरादाबाद में धर्मदिवाकर प्रेस और वैदिक पुस्तकालय के नाम से आर्यसमाज के साहित्य का मुद्रण व प्रकाशन आरम्भ किया। आपने इस संस्थान से सैकड़ों उत्कृष्ट ग्रन्थों को प्रकाशित किया। आपने देश की स्वाधीनता के युद्ध में खुल कर भाग लिया तथा कारावास का दण्ड स्वीकार किया।

ले. का.—कारावास के संस्मरणों के रूप में लिखी गई पुस्तक 'मेरी जेलयात्रा और उसका रहस्य' (१९८० वि.), प्राचीनोपनयन पद्धति (१९०४), पंच महायज्ञ-विधि।

पं. शंकरदेव पाठक

सत्यार्थप्रकाश के संस्कृतानुवादक पं. शंकरदेव पाठक का जन्म बिजनौर जिले के ग्राम महमूदपुर में पं. लालमणि शर्मा तथा माता हरिदेवी के यहाँ १९५० वि., में हुआ। इन्हें ९ वर्ष की आयु में गुरुकुल सिकन्दराबाद में प्रविष्ट कराया गया। कालान्तर में यही गुरुकुल बदायूं तथा उसके बाद वृन्दावन में लाया गया। यहाँ शंकरदेवजी ने संस्कृत के विख्यात विद्वान् स्वामी कृष्णानन्द से अष्टाध्यायी और महाभाष्य का विशद अध्ययन किया। अध्ययन समाप्त होने पर वे गुरुकुल वृन्दावन में व्याकरणशास्त्र पढ़ाने लगे। १९१६ में इनका विवाह येवला (महाराष्ट्र) निवासी सेठ जगजीवनराम खेमचन्द की पुत्री तथा महाकवि मेधाव्रत की बहिन श्रीमती जानकीदेवी से हुआ। पं.शंकरदेव ने कलकत्ता की काव्यतीर्थ परीक्षा भी उत्तीर्ण की और वे गुरुकुल के मुख्याध्यापक तथा मुख्याधिष्ठाता भी रहे। २४ जून १९४९ को उनका निधन हो गया।

ले. का.—महात्मा नारायण स्वामी के आदेश और प्रेरणा से पं. शंकरदेव ने सत्यार्थप्रकाश का सुललित संस्कृत गद्य में अनुवाद किया जो १९२५ में दयानन्द जन्म-शताब्दी के अवसर पर छपा। इसका नवीन संस्करण सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने प्रकाशित किया है। उनका एक अन्य ग्रन्थ अष्टाध्यायी पर लिखी गई वृत्ति है।

पं. शंकरदेव विद्यालंकार

बहुभाषाविद् तथा साहित्यिक सुरुचि सम्पन्न पं. शंकरदेव विद्यालंकार का जन्म गुजरात के बलसाड़ जिले के मलवाड़ा ग्राम में १९०७ में हुआ। आपके पिता का नाम श्री मुकुन्दजी कुंवरजी था। आपने गुरुकुल कांगड़ी में अध्ययन किया और १९८५ वि. (१९२८) में विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की। आपने १९४२ में गुरुकुल सूपा में अध्यापन कार्य किया। पुनः १९४३ से १९५७ तथा गुरुकुल कांगड़ी में हिन्दी अध्यापन करते हुए आश्रमाध्यक्ष का भी कार्य किया। १९५७ में आप सेठ नानजीभाई कालिदास मेहता द्वारा स्थापित एवं संचालित कन्या आर्ट्स कालेज पोरबंदर के उपाचार्य नियुक्त हुए। आपने महाकवि रवीन्द्रनाथ के चित्रांगदा तथा नैवेद्य आदि ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद किया। आपने सेठ नानजी भाई कालिदास मेहता, पं. आनन्दप्रिय तथा पं. महेन्द्रप्रताप शास्त्री को समर्पित किये गये अभिनन्दन ग्रन्थों का सम्पादन किया। आपने इन पंक्तियों के लेखक को स्वामी दयानन्द की एक सर्वांग सुन्दर, साहित्य-गुणसम्पन्न तथा विवेचनाप्रधान जीवनी लिखने की प्रेरणा दी तथा अपने सुझावों द्वारा समय समय पर प्रोत्साहित किया। तदनुसार यह जीवनचरित १९७२-७३ में ही तैयार हो गया तथा उसे आपने पाण्डुलिपि के रूप में आद्योपान्त पढ़ कर अपनी प्रशंसापूर्ण सम्मति दी। १९८३ में यह जीवनी नवजागरण के पुरोधा : दयानन्द सरस्वती शीर्षक से प्रकाशित हुई। २ अप्रैल १९८१ को पं. शंकरदेव का बम्बई में निधन हो गया।

शंकरनाथ पण्डित

शंकरनाथ पण्डित के पूर्वज काश्मीरी थे जो बंगाल में आकर वस गये थे। बंगला और अंग्रेजी में आर्यसमाज विषयक उच्चकोटि का साहित्य लिखने वाले शंकरनाथ पण्डित अपने युग के सुलेखक और विद्वान् थे। जब १८८५ में कलकत्ता में आर्यसमाज की स्थापना हुई तो शंकरनाथ जी को उप प्रधान पद दिया गया। इनके पिता पं. शम्भुनाथ कलकत्ता उच्च न्यायालय के न्यायाधीश थे। पं. शंकरनाथ ने साहित्य लेखन और प्रकाशन के माध्यम से आर्य सिद्धान्तों का व्यापक प्रचार किया। ६२, शम्भुनाथ पण्डित स्ट्रीट भवानीपुर कलकत्ता पं. शंकरनाथ का निवास-स्थान था। यहीं से उनका साहित्य प्रकाशित होता था। आर्यसमाज कलकत्ता के प्रथम प्रधान राजा तेजनारायणसिंह की आर्थिक सहायता से आर्यावर्त प्रेस की स्थापना भी इसी मकान में हुई, जहां से पं. रुद्रदत्त शर्मा के सम्पादन में आर्यावर्त पत्र निकलने लगा।

ले. का.—स्वामी दयानन्द की रचनाओं का बंग भाषानुवाद-सत्यार्थप्रकाश (१३०९ बंगाब्द) १९०१ तथा १९११, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का बंगला अनुवाद (१३१४ बंगाब्द) १९०६, संस्कारविधि, पंचमहायज्ञविधि १९०३, (१३१० बंगाब्द), आर्याभिविनय १९२० वि. (१३२७ बंगाब्द), आर्योद्देश्यरमाला।

शंकरनाथ पण्डित के बंगला भाषा में रचित मौलिक ग्रन्थ-

ऋषीन्द्र जीवन २ भाग (स्वामी दयानन्द का बंगला जीवनचरित) १३३३ बंगाब्द (१९२७), स्वामी दयानन्द ओ आर्यसमाज (१९२६), धर्मवीर व प्रकृति वीर पुरुष, इसका हिन्दी अनुवाद 'धर्मवीर अथवा सच्चा वीर पुरुष किसे कहते हैं' ? (१९०८), वेद व दर्शनादिमते परमात्मा वा ईश्वर निरूपण, अमि के ? (मनुष्य जीवन के कर्म, उद्देश्य और परिणाम १९२५)। वाइबिलेर आत्म खण्डन— यह अंग्रेजी पुस्तक Contradiction of the Bible का बंगला अनुवाद है। वैदिक तीर्थ, मानव जीवनेर कर्म, उद्देश्य ओ परिणाम, वैदिक यज्ञे हिंसा निषेध, आस्तिकादर्श व ईश्वर निरूपण, उपदेश रत्नावली, गुरु शिष्य विषयक शास्त्र मत, दान विषयक शास्त्र मत, वेद नित्य उ अपौरुषेय, स्त्री शूद्रादिर वेद पाठ, पुराण ओ व्यासदेव (१९०६) इसका हिन्दी अनुवाद भी छपा। आर्यसमाज परिचय, हिंन्दू-संगठन और दलितोद्धार (१९२५)

पं. शंकरनाथ के अंग्रेजी ग्रन्थों का विवरण—

1. What is AryaSamaj ? Pt. I & II, 2. The Vedas as the Revelation, 3. The Vedas intended for all or the Study of The Vedas by Women and Shudras. यह पण्डित महोदय की बंगला पुस्तक स्त्री शूद्रादि वेद पाठ का अंग्रेजी अनुवाद है। 4. Destiny and Self Exertion, 5. The Hindu Sangthan and Our Depressed Brethren, 6. Duty Towards Our Depressed Brethren, 7. The Sacred Duty of Uplifting our Depressd Brethren, 8. Varna-Vyavastha or the Vedic Classification of Caste, 9. Daiva and Purushakar, 10. The Clasification of Caste according to the Vadas and Dharma-Shastra, 11. The Bible Exposed with Comments, 12. Christ : Who and What he Was ? Christ: A Hindu (Indian) Disciple, Neo Buddhist Saint (1927), 13. Dwaita and Adwaita Philosophy (Being an exposition of Theism and Monism or Pantheism).

शंकरसिंह वेदालंकार

श्री वेदालंकार का जन्म ६ जून १९४२ को कानपुर जिले के सरैयां ग्राम में श्री मंगलसिंह के यहां हुआ। इनकी शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में हुई जहां से इन्होंने २०२१ वि. (१९६५) में वेदालंकार की उपाधि प्राप्त की। ये हिन्दी तथा संस्कृत में एम. ए. भी थे। आर्य-प्रतिनिधि उत्तरप्रदेश में उपदेशक पद पर कार्य करने के अनन्तर ये डी. ए. वी. कालेज अम्बाला तथा सढौरा में संस्कृत तथा हिन्दी के प्रवक्ता भी रहे। २८ फरवरी १९८२ को इनका निधन हो गया।

ले. का.—एक महर्षि : एक समाज (१९७५), केवला-नन्द शर्मा लिखित यतीन्द्रशतकम् (संस्कृत काव्य) का

इन्होंने हिन्दी पद्यानुवाद किया जो परोपकारी में धारावाही प्रकाशित हुआ। इनके अतिरिक्त आपकी अनेक भावपूर्ण कवितायें गुरुकुल-पत्रिका तथा अन्य पत्रों में भी छपीं।

शम्भुदत्त शर्मा

आपकी एक कृति 'जैनमत समीक्षा' आर्यप्रतिनिधि-सभा पंजाब से प्रकाशित हुई थी।

स्वामी शंकरानन्द

आर्यसमाज के तेजस्वी संन्यासी स्वामी शंकरानन्द का जन्म चैत्र कृष्णा चतुर्थी सं १९२४ वि. को जालंधर में पं. तुलसीराम के यहां हुआ। स्वामी दयानन्द के दर्शनों का लाभ आपको लाहौर, अमृतसर तथा जालंधर में प्राप्त हुआ। अतः आप शीघ्र ही आर्यसमाज की ओर आकृष्ट हुए तथा धर्मप्रचार की धुन में गृह का त्याग कर दिया। उन्हें काशी में रहने का अवसर मिला जहाँ आपने अनेक गुरुओं से शास्त्रों का अध्ययन किया। यहीं पर आपने नागरी प्रचारिणी सभा को सुदृढ़ करने के लिये भी महत्त्व-पूर्ण कार्य किया। कालान्तर में आपने स्वामी आत्मानन्द से संन्यास ग्रहण किया और स्वामी शंकरानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुये। पूर्वाश्रम में आपका नाम पं. शंकरनाथ था। यों तो स्वामी शंकरानन्द ने भारत के सभी प्रान्तों का व्यापक भ्रमण किया था किन्तु उनका मुख्य कार्यक्षेत्र सौराष्ट्र रहा। यहाँ के रजवाड़ों में आपने वैदिक धर्म का प्रचार किया और क्षत्रिय नरेशों में धर्म भावना जागृत की। पुनः वे दक्षिण अफ्रीका गये और वहाँ के प्रवासी भारतीयों की समस्याओं में रुचि ली। १९०८ में वे विश्व-शान्ति सम्मेलन में भाग लेने लंदन गये। उन्होंने श्रीलंका की भी यात्रा की थी।

ले. का.—स्वदेशी वस्तु प्रचारक नामक पत्र का सम्पादन। इटावा निवासी पं. भीमसेन शर्मा के राजकोट में दिये भाषणों का भीम भ्रम शीर्षक से खण्डन (कुमार हमीरसिंह वर्मा प्रधान आर्यसमाज वीरपुर द्वारा प्रकाशित)

वि.अ.—शंकरानन्द संन्यासी : श्री कृष्ण शर्मा (१९४०) तथा स्वामी शंकरानन्दसंदर्शन-भवानीदयाल संन्यासी (१९४२).

लाला शम्भुनाथ

आप आगरा के निवासी थे। आपने ऋषि दयानन्द की जन्म शताब्दी के अवसर पर 'दयानन्द दया प्रकाश' नामक पद्यात्मक ग्रन्थ लिखा जो १९८१ वि. में प्रकाशित हुआ।

शमानन्द पाठक

पाठकजी इटावा जिले के खानपुर औरैया ग्राम के निवासी थे। इनका जन्म १९३६ वि. में हुआ।

ले. का.—कुमार कर्त्तव्य, रामायण शिक्षावली।

डा. शान्ता मल्होत्रा

डा. शान्ता का जन्म लाहौर (पाकिस्तान) में २३ जून १९३९ को आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् पं. भीमसेन विद्यालंकार के यहां हुआ। इनकी माता श्रीमती वेद कुमारी आर्य कन्या महाविद्यालय जालंधर की स्नातिका थीं। शान्ताजी का विवाह श्री राजकुमार मल्होत्रा के साथ हुआ जो हरियाणा के सिंचाई विभाग में अधीक्षण अभियंता हैं। स्वामी दयानन्द के राजनैतिक विचारों पर डा. शान्ता ने अपना शोध प्रबन्ध लिखा जो 'Political Thought of Swami Dayanand' शीर्षक से १९८० में प्रकाशित हुआ है। इसी ग्रन्थ पर आपको गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त हुई थी।

व. प.—आर्य महिला कालेज, अम्बाला कैंट (हरयाणा)

डा. शान्ति देवबाला

डा. देवबाला का जन्म ३ जून १९२७ को हुआ। आगरा विश्वविद्यालय से आपने राजनीतिशास्त्र में एम. ए. की उपाधि ग्रहण की। तत्पश्चात् अनेक वर्षों तक मुरादाबाद में राजनीतिशास्त्र की प्राध्यापिका के रूप में कार्य किया। १९६५ से लखनऊ विश्वविद्यालय में अन्त-र्राष्ट्रीय अध्ययन विषय की प्राध्यापिका रहीं तथा विश्व-विद्यालय सेवा से १९८७ में अवकाश लिया। आपने लखनऊ विश्वविद्यालय से 'Swami Dayanand and Indian Nationalism' विषय पर शोधकार्य सम्पन्न कर

पी-एच. डी. की उपाधि ग्रहण की । यह शोध प्रवन्ध अभी अप्रकाशित है । इसके अतिरिक्त आपने 'महर्षि दयानन्द और नारी की सामाजिक और राजनैतिक चेतना' शीर्षक एक अन्य ग्रन्थ भी लिखा है । आपके शोधपूर्ण लेख परोपकारी, आर्यजगत् तथा आर्यमित्र आदि पत्रों में छपते रहते हैं ।

व. प.—४२३ सी. महानगर, लखनऊ २२६००६

पं. शान्तिप्रकाश

ईसाइयत तथा इस्लाम के मर्मज्ञ तथा शास्त्रार्थ कला में निष्णात पं. शान्तिप्रकाश का जन्म ३० नवम्बर १९०६ को हुआ । आपका अध्ययन लाहौर में पं. बुद्धदेव विद्यालंकार द्वारा संचालित पाणिनीय पाठशाला में हुआ । तदनन्तर आपने दयानन्द उपदेशक विद्यालय से सिद्धान्तभूषण की परीक्षा उत्तीर्ण की । स्वामी स्वतन्त्रानन्द के अनुरोध पर आपने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में उपदेशक के रूप में कार्य प्रारम्भ किया । इस काल में आपने अन्य मतावलम्बियों से सैंकड़ों शास्त्रार्थ किये । आप आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता भी रहे। अब सभा की सेवा से मुक्त होकर स्वतन्त्र रूप से धर्मप्रचार में लगे रहते हैं । आर्यसमाज सान्ताक्रूज बम्बई ने आपकी धर्मप्रचार विषयक सेवाओं के लिये आपको सम्मानित तथा पुरस्कृत किया है ।

ले. का.—शास्त्रार्थ दर्पण, मेरा धर्म मुझे क्यों प्यारा है ? शास्त्रार्थ अवतारवाद, ईसाई मत पोल प्रकाश, आर्यसमाज और उसकी आवश्यकता, ईसाइयत की वास्तविकता, ६ मार्च की खूनी होली (पं. लेखराम बलिदान विषयक उर्दू पुस्तक) (१९५५), आपने पं. लेखराम के कुछ ग्रन्थों का अनुवाद किया जो आर्य पथिक ग्रन्थावली भाग १, २ के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से क्रमशः १९६३ तथा १९७२ में प्रकाशित हुआ ।

व. प.—४५६ बरकतनगर, जयपुर ।

पं. शारदाप्रसन्न वेदशास्त्री

आपने सत्यार्थप्रकाश का बंग भाषानुवाद किया । यह इस ग्रन्थ का तृतीय संस्करण था । किन्तु अनुवाद में आपका नाम अनुवादक के रूप में मुद्रित नहीं हुआ ।

पं. शालिग्राम शर्मा

आप चर्थावल (जिला मुजफ्फरनगर) के निवासी थे तथा अध्यापन का कार्य करते थे । आपने उर्दू काव्य की मुसद्दस शैली में 'ब्रह्मकुल वर्तमान दशा दर्पण' शीर्षक एक ओजस्वी कविता लिखी । ४६ छन्दों में समाप्त इस मुसद्दस में ब्राह्मणों की हीन दशा का यथार्थ विवरण उपस्थित किया गया है । इसका प्रकाशन लाला द्वारकाप्रसाद अत्तार शाहजहांपुर निवासी ने किया था । हमारे संग्रह में इसका तृतीय संस्करण है जो १९११ में प्रकाशित हुआ था ।

पं. शालिग्राम शास्त्री

शास्त्रीजी काशी निवासी पं. राजाराम शास्त्री के शिष्य थे । १६ नवम्बर १८६९ को जब स्वामी दयानन्द का काशी के विद्वानों से प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ तो उसमें शास्त्रीजी भी पौराणिक पण्डितों की ओर से उपस्थित थे । कालान्तर में आप स्वामी दयानन्द के भक्त बन गये । इन्होंने गवर्नमेंट कालेज, अजमेर में संस्कृत का अध्यापन किया और हैड पण्डित रहे । उन्होंने न्यायदर्शन पर 'न्यायतत्त्वबोधिनी' नामक संस्कृत टीका लिखी जो राजस्थान यंत्रालय अजमेर से (१९५० वि.) १८९४ में प्रकाशित हुई ।

शाहज़ादाराम

आप आर्यसमाज अनारकली, लाहौर के सभासद थे ।

ले. का.—पुत्री शिक्षक (१९२१), वैदिक प्रार्थना पुस्तक (१९२२), ईश्वर पूजा (१९८० वि.), ईश्वरमिलाप (१९८१ वि.), मुक्ति का सत्य ज्ञान—उर्दू से श्री लालचन्द द्वारा अनूदित ।

शिवकुमार मिश्र

श्री मिश्र का जन्म हरदोई जिले के पिहानी नामक ग्राम में श्री प्रभुदयाल तथा श्रीमती कौशल्या के यहां

हुआ। आपने गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में विद्याध्ययन किया और वहाँ से विद्या भास्कर की उपाधि प्राप्त की। तदुपरान्त आपने हिन्दी तथा संस्कृत में एम. ए. की परीक्षायें भी उत्तीर्ण कीं। उत्तरप्रदेश के विभिन्न इण्टर कालेजों में आपने लगभग ३५ वर्षों तक अध्ययन कार्य किया। आर्यसमाज के प्रचार कार्य में आप सदा लगे रहे।

ले. का.—दयानन्द सूक्ति सप्तशती—१९ संस्कृत पद्यों का उत्कृष्ट काव्य (१९८८)।

व. प.—चौहान थोक, हरदोई (उ.प्र.) २४१००१.

शिवकुमार गुप्ता (डा.)

श्री गुप्ता का जन्म २३ फरवरी १९४५ को श्री रोशनलाल के यहां हुआ। आपने पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला से इतिहास में एम. ए. किया तथा १९८४ में पंजाब विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि ग्रहण की। इनके शोध का विषय था—आर्यसमाज के प्रति ब्रिटिश सरकार की दृष्टि एवं नीति—British Attitude And Policy towards AryaSamaj (१८७५-१९२०) १९६९ में ये डी. ए. वी. कालेज मलौट में इतिहास के प्रवक्ता बने। सम्प्रति पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में इतिहास विभाग में रीडर हैं।

व. प.—इतिहास विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला।

पं. शिवकुमार विद्यालंकार

प्रसिद्ध पत्रकार और लेखक शिवकुमार विद्यालंकार का जन्म अविभाजित पंजाब के मुजफ्फरगढ़ जिले के सनावां नामक ग्राम में मार्च १९१४ में हुआ। आपके पिता का नाम श्री रामचन्द्र था। आपका अध्ययन गुरुकुल कांगड़ी में हुआ जहां से आपने १९३५ में विद्यालंकार की उपाधि ग्रहण की। प्रारम्भ में वे गुरुकुल मुलतान में अध्यापक बने। तदनन्तर पत्रकारिता के क्षेत्र में आ गये और वीर अर्जुन के सम्पादकीय विभाग में रहे। तत्पश्चात् दैनिक हिन्दुस्तान में आ गये और १९७६ तक यहां कार्य किया। आपका निधन १ जनवरी १९७७ को हुआ।

ले. का.—संघर्ष मूर्ति स्वामी श्रद्धानन्द।

पं. शिवकुमार शास्त्री

प्रसिद्ध विद्वान् एवं वक्ता पं. शिवकुमार शास्त्री का जन्म १५ अक्टूबर १९१५ को अलीगढ़ जिले के ग्राम आर्यनगर (डा. शाहपुर मदराक) में ठाकुर रामचन्द्रसिंह के यहां हुआ। इनकी माता का नाम श्रीमती गायत्री देवी था। सात वर्ष की आयु में इनका उपनयन संस्कार पं. धुरेन्द्र शास्त्री द्वारा सम्पन्न हुआ और सर्वदानन्द साधुआश्रम में इन्हें अध्ययन के लिये प्रविष्ट कराया गया। यहां इनके प्रारम्भिक गुरु पं. प्रियरत्न आर्ष (स्वामी ब्रह्ममुनि) थे। तत्पश्चात् ये गुरुकुल महाविद्यालय सूर्यकुण्ड बदायूं में प्रविष्ट हुए और १९३४ में वहां से विद्याभूषण की उपाधि ग्रहण की। तदनन्तर नित्यानन्द वेद विद्यालय वाराणसी में रहकर राजकीय संस्कृत कालेज काशी की शास्त्री तथा कलकत्ता की काव्यतीर्थ एवं व्याकरणतीर्थ उपाधियां प्राप्त कीं।

१९३७ से ३१ दिसम्बर १९४४ तक आप गुरुकुल-धाम जेहलम (पाकिस्तान) के आचार्य रहे। १ जनवरी १९४५ से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में उपदेशक का कार्य आरम्भ किया तथा १९५० से १९६१ तक इस सभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता रहे। १९६३ से ६६ तक शास्त्रीजी गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के अधिष्ठाता भी रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश ने एकाधिक बार उन्हें अपना प्रधान चुना और इसी बीच गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के आप कुलपति भी रहे। शास्त्रीजी की राजनीति में भी दिलचस्पी रही और वे दो वार (१९६७ तथा १९७१) लोकसभा के सदस्य चुने गये किन्तु उनकी प्रमुख भूमिका उपदेशक की ही रही। ३ सितम्बर १९८९ को आपका निधन हो गया।

ले. का.—विश्वशान्ति का वैदिक संदेश-अथर्ववेद के एक मंत्र की व्याख्या (१९४५), संस्कृत निबंधमाला (१९६८) धरती पर स्वर्ग गृहस्थाश्रम—अथर्ववेद के स्वर्ग-

सूक्त पर आधारित, (१९७४), श्रुति सौरभ—५३ वेद-मन्त्रों की मनोरम व्याख्या (२०४२ वि.), वैदिक व्यवस्था (१९६८)

शिवचन्द्र

आर्यसमाज के गम्भीर विचारक, लेखक तथा कार्य-कर्ता श्री शिवचन्द्र का जन्म १९०३ में अलीगढ़ में हुआ। आपके पिता श्री रामलाल ने अपने विद्यार्थी काल में स्वामी दयानन्द के दर्शन किये तथा उनके उपदेशों को सुन कर उनके भक्त बन गये। अलीगढ़ से हाई स्कूल तक की शिक्षा लेकर कालेज में अध्ययन करने के पश्चात् शिवचन्द्र सरकारी सेवा में प्रविष्ट हुए। आर्यसमाज के महान् नेता पं. रासबिहारी तिवारी के अनुरोध पर महात्मा नारायण स्वामी ने इन्हें १९३३ में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि-सभा की सेवा में ले लिया। तब से निरन्तर ३५ वर्षों तक वे सभा के कार्यों से सम्बद्ध रहे। आप सार्वदेशिक-सभा के आजीवन सभासद थे। महात्मा नारायण स्वामी के आदेश से आपने दक्षिण भारत में आर्यसमाज का प्रचार किया। इनका निधन ७ जुलाई १९८४ को दिल्ली में हुआ। निधन से कुछ पूर्व इन्होंने वानप्रस्थाश्रम की दीक्षा ले ली थी और मुनि ओमाश्रित के नाम से जाने जाते थे।

ले. का.—विदेशों में आर्यसमाज (१९३३), The Hindu Race and Future of India (1942), India to be named Arayavarta (1949).

शिवचरणलाल सारस्वत, जैतली

आप आर्यसमाज कालपी (बुन्देलखण्ड) के कार्यकर्ता थे।

ले. का.—आर्यसामाजिक नियमों का वेदमन्त्रों से सम्मेलन (१८९८), वैश्यप्रतियज्ञोपवीतादर्श (१९०२), प्रेम प्रभाव, गो महत्त्व।

पं. शिवदयालु

लेखक तथा समर्पित कार्यकर्ता पं. शिवदयालु का जन्म २२ मार्च १९०० को मेरठ छावनी में प्रो. शंकरलाल के यहाँ हुआ। इन्होंने देश के स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया तथा कई मास तक कारावास की यातनायें झेलीं। आप आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के मंत्री रहे तथा आर्यमित्र का सम्पादन भी किया। ऋषि दयानन्द की जन्म शताब्दी के अवसर पर आपने आर्य ध्वज-समिति की अध्यक्षता की थी। आपने कई वर्ष आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में निवास करते हुए वहाँ के अध्यक्ष पद को संभाला।

ले. का.—आर्य पर्व परिचय (१९२४), आर्य ध्वज-आरोहण अवतरण पद्धति (१९९० वि.), आर्यसमाज की प्रगति एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश का ७५ वर्षीय इतिहास (२०२० वि.), आर्यसमाज के दस नियम, महान् दयानन्द (१९६५), क्रान्ति का अग्रदूत : स्वामी दयानन्द (१९७१), लघु सत्यार्थप्रकाश २ भाग, आर्य संस्कृति की प्रतिष्ठा : गौ. (१९९६ वि.), आर्यराजनीति (१९३६), राष्ट्र सुरक्षा और वेद (२०३३ वि.), वैदिक राष्ट्र-धर्म (२०१५ वि.), विदुर का राजधर्म (विदुरनीति) मानव धर्म बोध ३ भाग, आर्य राजनीति सूत्रम्, बार्हस्पत्य-अर्थशास्त्र (मूल-सूत्र तथा टीका)

वेदव्याख्या ग्रन्थ—मां गायत्री (गायत्री छन्द वाले १०० मन्त्रों की व्याख्या), शतकत्रयी—इन्द्र, अग्नि तथा सोम देवता वाले ३०० मन्त्रों का भावात्मक अनुवाद, (१९७२), धरती माता की महिमा—अथर्ववेद के पृथ्वी-सूक्त की हिन्दी तथा अंग्रेजी व्याख्या (२०२० वि.), वेद और योग विद्या। **उपनिषद् विषयक**—उपनिषद् त्रयी तथा उप-निषद् कथामृत।

खण्डनात्मक साहित्य—बहाई मत दर्पण, ईसा मसीह और कुमारी मरियम, कैथॉलिक ईसाइयों का षड्यन्त्र, कैथॉलिक ईसाई पंथ का नग्न चित्रण (१९५६), थॉमस पेन और ईसाई मत (२०२१ वि.), विश्व में रोमन कैथॉ-लिक मत की स्थिति (२०२१ वि.), पाश्चात्य विद्वान् और ईसाइयत (२०२२ वि.), रोमन कैथॉलिक चर्च क्या है ?, जैनमत दर्पण (२०२४ वि.), ब्रह्माकुमारी मत दर्पण (२०१८ वि.), हंसामत दर्पण, मेहेर बाबा-मत दर्पण (२०२२ वि.),

कर्मकाण्ड विषयक ग्रन्थ—गर्भाधान संस्कार पद्धति (१९९३ वि.), वैदिक विवाह संस्कार पद्धति (१९९३ वि.), संध्या का अंग्रेजी अनुवाद (२०१९ वि.), अग्निहोत्र-रहस्य, कर्मकाण्ड प्रदीप, कर्मकाण्ड पद्धति, बलिवैश्वदेव-यज्ञ।

व. प.—३१३, तिलक मार्ग, मेरठ

शिवनन्दनप्रसाद कुलियार

स्वामी दयानन्द का अंग्रेजी में सुन्दर जीवनचरित लिखने वाले श्री कुलियार का जन्म १९ सितम्बर १८६९ को पटना सिटी में हुआ। इनके पिता का नाम श्री सुमरन-लाल तथा माता का नाम श्रीमती जानकी था। अध्ययन समाप्त करने पर इन्हें पटना नगर न्यायालय में अपरेंटिस का पद मिला। १८९७ में ये सिविल कोर्ट पटना में क्लर्क के पद पर नियुक्त हुए। कालान्तर में इन्होंने कलकत्ता, इलाहाबाद तथा पटना उच्च न्यायालयों के अनेक पदों पर कार्य किया। १९२३ में इन्होंने न्यायिक सेवा से अवकाश लिया। ये अनेक अंग्रेजी पत्रों के नियमित लेखक थे। श्री कुलियार आर्यसमाज गुड़हट्टा पटना तथा आर्य-समाज चौक पटना के प्रधान भी रहे। गुरुकुल कांगड़ी की मासिक पत्रिका 'दि गुरुकुल मैगजीन' में वे नियमित रूप से लिखते थे। २४ अक्टूबर १९५५ को उनका पटना में ही निधन हो गया।

ले. का.—इन्होंने स्वामी दयानन्द की जीवनी से सम्बन्धित दो ग्रन्थ लिख—स्वामी दयानन्द सरस्वती : लाइफ एण्ड टीचींग्स। जी. ए. गणेश एण्ड कम्पनी मद्रास ने इसे १९११ में 'Biography or Eminent Indians' शीर्षक ग्रन्थमाला में छापा।

उक्त शीर्षक का ही एक अन्य ग्रन्थ आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार द्वारा १९३८ में प्रकाशित हुआ। इसके कई अंश गुरुकुल कांगड़ी की अंग्रेजी मासिक पत्रिका 'वैदिक मैग-जीन में छपे थे।

पं. शिवपूजनसिंह कुशवाहा

लेखनी के धनी, सिद्धांतमर्मज्ञ तथा प्रतिपक्ष का खण्डन करने में तत्पर श्री शिवपूजनसिंह कुशवाहा का जन्म १ जून १९२४ को बिहार प्रान्त के सारण जिला-न्तर्गत गौरा ग्राम में हुआ। इनकी व्यवस्थित पढ़ाई तो मिडिल पर्यन्त ही हुई परन्तु कालान्तर में आपने प्राइवेट विद्यार्थी के रूप में मैट्रिक से लेकर एम. ए. (संस्कृत) तक की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। हिन्दी विद्यापीठ देवघर (बिहार) की साहित्यालंकार तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन की विशारद परीक्षाएँ भी उत्तीर्ण कीं। १९८३ में आपने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी से साहित्य-शास्त्री की परीक्षा भी उत्तीर्ण की। १९४१ से १९४४ तक कुशवाहाजी विरक्त अवस्था में रहे। १ नवम्बर १९४४ को वे प्रसिद्ध दानवीर श्री धनीराम भल्ला के सम्पर्क में आये तथा उनके कार्यालय में ८ वर्ष तक कार्य किया। पुनः कानपुर की प्रसिद्ध जूतों की कम्पनी फ्लैक्स के कार्यालय में लिपिक के पद पर कार्य किया। श्री कुशवाहा ने अपने लेखकीय जीवन में आर्यसमाज एवं वैदिक धर्म के सिद्धान्तों पर सैकड़ों लेख लिखे तथा प्रतिपक्षियों के आक्षेपात्मक विचारों का सप्रमाण उत्तर दिया।

ले. का.—ऋग्वेद के दशम मण्डल पर पाश्चात्य विद्वानों का कुठाराघात (२००७ वि.), सामवेद का स्वरूप (२०१२ वि.), अथर्ववेद की प्राचीनता (२००६ वि.), महर्षि दयानन्द कृत वेद भाष्यानुशीलन (२००७ वि.), गायत्री माहात्म्य (२०१४ वि.), वैदिकशासन पद्धति (२०१० वि.), क्या वेदों में मांसाहार का विधान है? नीर क्षीर विवेक (२०१८ वि.), वैदिक सिद्धान्तमार्तण्ड (२०२० वि.), आर्यसमाज में मूर्तिपूजाध्वान्तनिवारण (२००७ वि.), शिवलिंगपूजापर्यालोचन (१९६०), अष्टादश पुराण परिशीलन (१९६१), नारद पुराण का आलोचनात्मक अध्ययन (२०२८ वि.), मार्कण्डेय पुराण : एक समीक्षा (२०२९ वि.), वामनावतार की कल्पना (२००७ वि.), सत्यार्थप्रकाश भाष्य (तृतीय समुल्लास) (१९५५), महर्षि दयानन्द की दृष्टि में 'यज्ञ' (२०१० वि.), आर्यसमाज के द्वितीय नियम की व्याख्या (२००६ वि.), भारतीय इतिहास और वेद (२००७ वि.), वैदिक काल में तोप और बंदूक, पाश्चात्यों की दृष्टि में वेद ईश्वरीय ज्ञान (२०११ वि.), वैदिक देवता रहस्य, 'वैदिक एज' पर समीक्षात्मक दृष्टि (१९५८), उपनिषदों की उत्कृष्टता

(२०१० वि.), भारतीय इतिहास की रूपरेखा पर एक समीक्षात्मक दृष्टि, बाइबिल में वर्णित बर्बरता तथा अश्लीलता का दिग्दर्शन (२०११ वि.), ईसाई दम्भ का प्रत्युत्तर (२०११ वि.), 'आर्य दयानन्द सरस्वती और मसीही मत' पर्यालोचन, पाश्चात्यों की दृष्टि में इस्लामी-मत प्रवर्तक (२०१२ वि.), इस्लाम के स्वर्ग और नरक पर महर्षि दयानन्द की आलोचना का प्रभाव (१९६३), आर्यों का आदि जन्मस्थान निर्णय (१९६९), महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज को समझने में पौराणिकों का भ्रम (१९६०), क्या वेद में मृतक श्राद्ध है ?, श्री सत्य सांई बाबा का कच्चा चिठ्ठा (१९७७)। कुशवाहा क्षत्रियोत्पत्ति मीमांसा, राठौर कुलोत्पत्ति मीमांसा, जादू-विद्या रहस्य, शतपथ ब्राह्मण का भ्रष्ट भाष्य (१९७९), इन्द्र अहल्या उपाख्यान का वास्तविक स्वरूप और महर्षि दयानन्द (१९८३), आचार्य महीधर और स्वामी दयानन्द के यजुर्वेद माध्यन्दिन भाष्य का तुलनात्मक अध्ययन का आलोचनात्मक अध्ययन, गायत्री मीमांसा (१९८७), सती दाह : एक लोमहर्षण प्रथा ? (१९८७), हनुमान का वास्तविक रूप (१९८६) मनोवैज्ञानिक जादू विद्या के चमत्कार (१९९०), पद्मपुराण का आलोचनात्मक अध्ययन (१९९०)। अपने कानपुर निवास काल में कुशवाहा जी ने दयानन्द शोध संस्थान की स्थापना की तथा उसके अन्तर्गत रुद्रग्रंथमाला से उनके कई ग्रंथ छपे। जयदेव ब्रदर्स बड़ौदा ने भी उनके कई ग्रन्थ प्रकाशित किये।

व. प.—वेद मंदिर (गीताश्रम) ज्वालापुर (हरिद्वार) २४९४०७

शिवराजसिंह शास्त्री

शास्त्रार्थ महारथी अमर स्वामी के अनुज शिवराजसिंह शास्त्री ग्राम अरनियां (जिला बुलन्दशहर) के निवासी थे। उन्होंने एम. ए. किया तथा आलिमफाजिल की परीक्षायें भी उत्तीर्ण की। वे इस्लाम के मर्मज्ञ विद्वान् थे।

ले. का.—विष : ऋषि मृत्यु का कारण (वैदिक पर-मार्थ आश्रम बम्बई के संचालक स्व. आर. डी. शर्मा की प्रेरणा से लिखित ऋषि दयानन्द की मृत्यु के कारणों की समीक्षा विषयक निबन्धों का सम्पादन) (१९७४), चौदहवीं का चांद (पं. चमूपति की प्रसिद्ध उर्दू पुस्तक का हिन्दी अनुवाद) (१९८८.)

पं. शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ

आर्यसमाज के प्रारम्भिक काल के जिन साहित्यकारों ने अपनी विद्वतापूर्ण कृतियों से आर्यसमाज के साहित्यिक भण्डार की अभिवृद्धि की, उनमें शिवशंकर शर्मा का नाम प्रमुख है। शर्माजी का जन्म भारत के उस भू-भाग में हुआ, जो महान् विद्वानों, शास्त्रज्ञों और मनीषियों की जन्मभूमि रहा है। हमारा अभिप्राय मिथिला से है। विहार के इसी उत्तरवर्ती मिथिला प्रदेश के दरभंगा जिले के चिहुंटा नामक ग्राम में पं. शिवशंकर का जन्म हुआ। इनका संस्कृत शिक्षण सुप्रसिद्ध सनातनी विद्वान् तथा 'शिव-राजविजय' जैसे लब्धप्रतिष्ठ गद्य ग्रन्थ के लेखक पं. अम्बिकादत्त व्यास के सान्निध्य में हुआ। शर्माजी ने अपने संस्कृत गुरुओं में पं. राम स्वामी शास्त्री तथा पं. गंगाधर शास्त्री के नामों का भी उल्लेख किया है।

शीघ्र ही शर्माजी का परिचय आर्यसमाज के सिद्धांतों से हुआ तथा उन्होंने स्वामी दयानन्द रचित ग्रन्थों का विशद अध्ययन आरम्भ कर दिया। इस प्रकार सर्वशास्त्र-निष्णात् होकर शिवशंकर शर्मा आर्यसमाज के उपदेशक के रूप में कार्यक्षेत्र में अवत्तीर्ण हुए। मिथिला जैसे पुराण-पन्थी प्रदेश में पं. शिवशंकर शर्मा के उदार एवं प्रगति-शील विचारों का विरोध होना स्वाभाविक ही था, अतः उन्होंने दक्षिण विहार को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। १८९८ से १९०० तक शर्माजी रांची रहे तथा सुप्रसिद्ध आर्य नेता बाबू बालकृष्णसहाय के सहयोग से धर्मप्रचार किया। इसी अवधि में उन्होंने प्रसिद्ध आर्य पत्र आर्यावर्त्त में अनेक महत्त्वपूर्ण सैद्धान्तिक लेख लिखे।

विहार से चल कर पंडितजी अजमेर आए तथा १९०३ से १९०६ तक निवास किया। यहां वे परोपकारिणी सभा के निर्देशन में धर्म प्रचार तथा ग्रन्थ लेखन का कार्य करते रहे। इसी समय उन्होंने छान्दोग्य तथा बृहदारण्यक उपनिषदों पर बृहद् संस्कृत-हिन्दी भाष्य लिखे। अगस्त १९०६ में शर्माजी पंजाब गए और आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के अन्तर्गत उपदेशक बन गए। इसी समय उन्होंने इस सभा की प्रेरणा से कुछ उत्कृष्ट शोध ग्रन्थ लिखे तथा

१९८७ वि. में ऋग्वेद के उस अंश का भाष्य लेखन आरम्भ किया, जो स्वामी दयानन्द द्वारा नहीं लिखा जा सका था। (अष्टम २ अध्याय ६ वर्ग ३६ मंत्र १० से आरम्भ) ग्रन्थ रचना के साथ साथ उन्होंने पौराणिक विद्वानों से अनेक शास्त्रार्थ किए और आर्यसमाज को विजय दिलाई। पंजाब सभा के उपदेशक पद को त्याग कर शर्माजी गुरुकुल कांगड़ी में वेदोपाध्याय के पद पर १९१० में नियुक्त हुए तथा वेद का अध्यापन किया।

ले. का.—ओंकार निर्णय (१९६३ वि.) (१९०६), इसमें वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण आदि ग्रन्थों के आधार पर ओंकार की महिमा का विवेचन किया गया है। जाति-निर्णय (गुणकर्मानुसार वर्ण-व्यवस्था का विवेचन) (१९६४ वि.), (१९०७), त्रिदेव निर्णय-यह लेखक की एक ऊहा-प्रधान रचना है जिसमें ब्रह्मा, विष्णु और शिव की देवत्रयी का मूल वेदों में तलाशा गया है। (१९१३), वैदिक इतिहासार्थ निर्णय—इसका प्रथम भाग (१९६६ वि.) (१९०९) में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने प्रकाशित किया। अनेक व्यक्तिवाचक नामों के दिखलाई पड़ने से वेदों में लौकिक इतिहास का अस्तित्व अनेक विद्वानों ने माना है। इसी का खण्डन इस ग्रन्थ में किया गया है। श्राद्ध निर्णय (मृतक-श्राद्ध का खण्डनपरक ग्रन्थ) (१९०८) ऋग्वेद भाष्य (सप्तम मण्डल के ६१वें सूक्त के मंत्र संख्या ३ से ८वें मण्डल के २९वें सूक्त तक लिखा भाष्य (१९८७ वि.) (१९३०), छान्दोग्योपनिषद् का संस्कृत-हिन्दी भाष्य (१९६२ वि.) (१९०५), बृहदारण्यकोपनिषद् का संस्कृत-हिन्दी भाष्य (१९६८ वि.) (१९११)। अन्य ग्रन्थ-वैदिक-रहस्य भाग—१ (चतुर्दश भुवन) (१९६७ वि.) (१९१२), वैदिक रहस्य भाग—२ (वसिष्ठनन्दिनी) (१९६८ वि.) (वैदिकर हस्य भाग—३) (वैदिक विज्ञान) (१९१२) वैज्ञानिक सिद्धान्त, वैदिक विज्ञान (१९६८ वि.) (१९११) गोस्वामी तुलसीदास की एक अलौकिक माला (१९१०), वेदसुधा—वेद मंत्रों की व्याख्या, वैदिक पीयूष बिन्दु (१९८४ वि.) (१९२७), श्री कृष्णमीमांसा (१९६७ वि.)।

शास्त्रार्थ महारथी शिव स्वामी (शिव शर्मा)

पूर्व आश्रम में शिवशर्मा के नाम से प्रसिद्ध शिव स्वामी सरस्वती मुरादाबाद के सम्भल कस्बे के निवासी थे। उन्होंने अपने जीवन काल में प्रतिद्वन्द्वियों से सैकड़ों शास्त्रार्थ किये तथा उपदेशक के रूप में सर्वत्र भ्रमण कर धर्म प्रचार किया। वे पर्याप्त काल तक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के उपदेशक भी रहे। इनके ग्रन्थ 'शिव शर्मा प्रकाशन' सम्भल से छपते रहे।

ले. का.—सत्यार्थ निर्णय (प्रथम खण्ड, १९३४) शास्त्रार्थ महारथी, शास्त्रार्थ कोपागंज, मूर्तिपूजा-विचार, मूर्तिपूजा विवेचन, अखिलानन्द का हृदय, (१९८६ वि), वैदिक धर्म और इस्लाम, चमन इस्लाम की सैर, धर्म-शिक्षा, ४ खण्ड वैदिक धर्म शिक्षा (१९५४).

पं. शुक्रराज शास्त्री

अमर बलिदानी पं. शुक्रराज शास्त्री का जन्म नेपाल के आर्य विद्वान् पं. माधवराज जोशी के यहां श्रावण पूर्णिमा १९५० वि. को हुआ। आपका अध्ययन गुरुकुल सिकन्दराबाद में पं. मुरारिलाल शर्मा की देखरेख में हुआ। आपने पंजाब विश्वविद्यालय की शास्त्री परीक्षा भी उत्तीर्ण की थी। आपने कुछ समय तक डी. ए. वी. हाई स्कूल इलाहाबाद में अध्यापन कार्य किया। आपका जीवन संघर्षों से परिपूर्ण रहा। नेपाल में धार्मिक एवं सामाजिक अंधविश्वास पराकाष्ठा पर पहुंचे हुए हैं। ऐसे देश में रहकर मूर्ति-पूजा, मांसाहार, वाम मार्ग, पशुहिंसा आदि का खण्डन करना आगे होकर विपत्ति मोल लेने के तुल्य ही था। इसी कारण से पं. शुक्रराज शास्त्री तथा उनके परिवार के लोगों को राज्य की ओर से बार बार सताया जाता था। अन्त में नेपाल सरकार ने आप पर अभियोग चलाया और क्रूर राणाशाही ने आपको १९९७ वि., माघ (सौर) ९ बुध-वार (जनवरी १९४१) को फांसी दे दी।

ले. का.—नेपाली भाषा का व्याकरण, स्वर्ग को दरबार (पर्वतीय भाषा में) बाल विवाह का खण्डन इस पुस्तक का प्रतिपाद्य है। ब्रह्मसूत्र—शांकर भाष्य का हिन्दी अनुवाद पूर्वार्द्ध (१९९३ वि.) (१९३३), वैदिक अग्निहोत्र (नेपाली भाषा), वैदिक संध्या (नेपाली भाषा), आर्य हिन्दू धर्मोप-देश (नेपाली भाषा) शास्त्रीजी ने अपने पिता तथा नेपाल में आर्यसमाज की नींव डालने वाले पं. माधवराज जोशी

का विस्तृत जीवनचरित् लिखना आरम्भ किया था। इसमें नेपाल के इतिहास का विवरण भी दिया गया है। १९४१ में शहीद हो जाने के कारण यह जीवन गाथा अधूरी रही। इसे शास्त्रीजी के अनुज स्व. पं. वाक्पतिराज शास्त्री तथा उनकी बहिन श्रीमती चन्द्रकान्ता ने पूरा किया तथा २०१५ वि. में प्रकाशित किया।

स्वामी शुक्लानन्द सरस्वती

इनके द्वारा लिखित ऋग्वेद के प्रथम १३ सूक्तों का हिन्दी भाष्य अमृतसर से २००१ वि. में छपा था। इसके अतिरिक्त इन्होंने ईश, केन तथा प्रश्न उपनिषदों पर टीकायें भी लिखी थीं।

स्वामी शुद्धबोध तीर्थ (आचार्य गंगादत्त शास्त्री)

पं. गंगादत्त शास्त्री का जन्म बुलन्दशहर जिले के बैलोन नामक कस्बे में श्री हेमराज वैद्य के यहां १९२३ वि. में हुआ। कुछ काल तक खुर्जा में पढ कर ये मथुरा चले गये जहां दण्डी विरजानन्द के शिष्य पं. उदयप्रकाश से इन्होंने अष्टाध्यायी का अध्ययन किया। पुन: १९४६-१९५१ वि. पर्यन्त काशी में रहकर पं. काशीनाथ शास्त्री तथा पं. हरनामदत्त भाष्याचार्य से क्रमश: दर्शन तथा व्याकरण महाभाष्य का अध्ययन किया। यहाँ पं. कृपाराम, पं. भीमसेन शर्मा (इटावा) तथा पं. आर्यमुनि से सम्पर्क हुआ जिसके कारण ये आर्यसमाजी बन गये।

जब महात्मा मुन्शीराम ने कांगड़ी ग्राम में गुरुकुल की स्थापना की तो १९५८ वि. में पं. गंगादत्त को यहां आचार्य बना दिया गया। कतिपय कारणों से १९०७ में ये गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में आ गये और वहां के आचार्य बने। १९७२ वि. में इन्होंने ब्रह्मचर्य से सीधे संन्यास की दीक्षा ली और स्वामी शुद्धबोध तीर्थ कहलाते। आश्विन शुक्ला ७ सं. १९९० वि. (२६ सितम्बर १९३३) को इनका गुरुकुल ज्वालापुर में ही निधन हुआ।

ले. का.—पाणिनीयाष्टकम्—दो भाग—अष्टाध्यायी की तत्त्वप्रकाशिका नामक टीका (१९६१ वि.), आख्यातिक सम्पादित ग्रन्थ (सद्धर्मप्रचारक प्रेस कांगड़ी १९६३ वि.), नामिक (१९६३)

वि. अ.—सचित्र शुद्धबोध—पं. नरदेव शास्त्री रचित जीवनचरित।

शुद्धबोध शर्मा

श्री शर्मा का जन्म १९ अगस्त १९३३ को राजस्थान के झुंझनू जिले के मंडावां ग्राम में हुआ। इनके पिता श्री खेमारामजी दृढ आर्य विचारों के थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल चित्तौड़गढ में हुई। तत्पश्चात् आपने बी. ए. तथा बी. एड. तक शिक्षा ग्रहण की। सम्प्रति आप आर्य विद्यालय श्रीगंगानगर में मुख्याध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। आप अपने जिला तथा प्रान्त की आर्यसामाजिक गतिविधियों में उत्साह पूर्वक भाग लेते हैं। आपने अनेक बार भारतेतर देशों की यात्रायें की हैं।

ले. का.—विदेश यात्रा वर्णन (१९८७)

व. प.—आर्यसमाज श्री गंगानगर (राजस्थान)

स्वामी शुद्धानन्द भारती

प्रसिद्ध तमिल सन्त तथा योगी स्वामी विशुद्धानन्द भारती का जन्म १८९७ में हुआ। आपने तमिल भाषा में स्वामी दयानन्द की अमर कृति सत्यार्थप्रकाश का अनुवाद किया। यह आर्यसमाज मद्रास द्वारा १९७४ में प्रकाशित हुआ। आपने स्वामी दयानन्द की जीवनी भी लिखी जो ऋषि दयानन्द शीर्षक से अम्बुनिलयम रामचन्द्रपुरम से १९४७ में प्रकाशित हुई। १९९० में आपका निधन हो गया।

शेरसिंह

मुरादाबाद जिले के सुरजननगर निवासी थे। आपने सत्यार्थप्रकाश कोष: लिखा जो आर्यमित्र यंत्रालय मुरादाबाद से १९०० में प्रकाशित हुआ।

पं. शेरसिंह आर्योपदेशक

पं. शेरसिंह एटा जिले की अवागढ़ जागीर के वित्ताधिकारी थे। आप आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुजफ्फरनगर के उपमंत्री भी रहे।

ले. का.—नमस्ते की प्राचीनता (पं. कालूराम शास्त्री की 'नमस्ते मीमांसा' का उत्तर) (१९१६), नियोग मीमांसा, उर्दू पुस्तकें—वैदिक धर्म की जबरदस्त फतह (शास्त्रार्थ), धर्मवीर की लासानी कुर्बानी, जैनमत का सच्चा खण्डन (मिथ्या खण्डन का उत्तर), वैदिक फिलासफी की अज़मत।

शेरसिंह, कविकुमार

'कविकुमार' शेरसिंह वर्मा का जन्म कर्णवास (बुलन्दशहर) के ठाकुर सीतारामसिंह के यहां हुआ। इनके गुरु का नाम पं. टीकाराम था जो पं. अखिलानन्द शर्मा के पिता थे। शेरसिंह स्वामी दयानन्द के समकालीन थे और उन्होंने कर्णवास में श्री महाराज के अनेक प्रवचन सुने थे। उन्होंने स्वामीजी के कर्णवास आगमन के प्रसंग का आंखों देखा वृत्तान्त लिपिवद्ध किया था जो कालान्तर में इन पंक्तियों के लेखक के द्वारा सम्पादित किया जाकर 'कर्णवास में महर्षि दयानन्द के ऐतिहासिक संस्मरण' शीर्षक से २०३२ वि. में प्रकाशित हुआ।

ले. का.—धर्म दिवाकरोदय महाकाव्य (स्वामी दयानन्द के जीवन पर लिखा गया काव्य) (१९७० वि.), वियोग सन्ताप चालीसा—(स्वामीजी के वियोग में लिखे गये शोक सूचक ४० पद्य), नमस्ते, ब्रह्मनिरूपण काव्य, कवि विनोद काव्य, बधाई काव्य, नित्य सुमिरिनी, यथार्थगीता, त्योहारमाला, आवश्यक तथोपदेश, परोपकारार्थविनती।

प्रो. शेरसिंह

आर्यसमाज के सम्मान्य नेता तथा स्वतन्त्रता सेनानी प्रोफेसर शेरसिंह का जन्म रोहतक जिले के ग्राम बाघपुर में १८ सितम्बर १९१७ को हुआ। आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से गणित में एम. ए. किया तथा भरतपुर और रोहतक के कालेजों में इसी विषय का अध्यापन भी किया। आपका राजनैतिक जीवन १९४६ से आरम्भ हुआ जब वे अविभाजित पंजाब की विधानसभा के सदस्य चुने गये। तत्पश्चात् १९५२ से १९६२ पर्यन्त आप पंजाब की विधानसभाओं में सदस्य चुने जाते रहे। १९६७, १९७१ तथा १९७७ में आप लोकसभा के सदस्य निर्वाचित हुए तथा कांग्रेस एवं जनता पार्टी के शासनकाल में केन्द्र में शिक्षा, सूचना प्रसारण, संचार, कृषि तथा रक्षा राज्य मंत्री जैसे महत्त्वपूर्ण पदों पर रहे। विगत अनेक वर्षों से आप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान हैं। आप १९६९ में परोपकारिणी सभा के सदस्य चुने गये और गत दो वर्षों से गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के पद पर विराजमान हैं। इस समय आप भारत सरकार के योजना आयोग के सदस्य भी हैं।

प्रोफ़ेसर साहब एक गम्भीर विचारक तथा चिन्तक हैं। सामयिक तथा विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषयों पर आपके विचारपूर्ण लेख प्रायः आर्य पत्रों में छपते रहते हैं।

व. प.—१४ एम. साकेत, मालवीयनगर विस्तार, नई दिल्ली।

बैरिस्टर श्यामकृष्णसहाय

बैरिस्टर सहाय रांची (विहार) के निवासी थे। आप उच्च शिक्षा के लिये इंग्लैण्ड गये और १९०९ में बैरिस्टर बन कर स्वदेश लौटे। कुछ दिन कलकत्ता में वकालत करने के पश्चात् आप रांची आ गये और यहीं पर कानून का व्यवसाय करने लगे। आप १९२६ से १९६३ तक आर्यसमाज रांची के प्रधान रहे। इस आर्यसमाज के भवन निर्माण में भी आपका सराहनीय योगदान रहा। बैरिस्टर साहब रांची की शैक्षिक, धार्मिक तथा अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों के केन्द्र बिन्दु थे। १९६३ में उनका निधन हुआ।

ले. का.—आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग का कार्यक्रम (महात्मा नारायण स्वामी लिखित प्राक्कथन सहित)।

पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा

स्वामी दयानन्द के साक्षात् शिष्य पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म ४ अक्टूबर १८५७ को कच्छ जिले के माण्डवी नामक नगर में श्री करसनजी भणशाली के यहाँ हुआ। इनका उच्च शिक्षण बम्बई में हुआ। यहीं पर १९७५ में उनकी स्वामी दयानन्द से भेंट हुई और वे महाराज के दृढ़ अनुयायी बन गये। उनका विवाह एक अन्य आर्य श्रेष्ठि सेठ छबीलदास लल्लूभाई की पुत्री भानुमति से हुआ। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के संस्कृत प्रोफेसर सर मोनियर विलियम्स की सहायता और प्रोत्साहन से वे इंग्लैण्ड गये और बैरिस्टर बने। १८८५ में वे स्वदेश लौटे और रतलाम, जूनागढ़ तथा उदयपुर राज्यों में उच्च पदों पर कार्य किया। १८९७ में वे पुन: इंग्लैण्ड चले गये और वहां से ही उन्होंने भारत को स्वतन्त्र कराने के लिये अपनी राजनैतिक गतिविधियाँ आरम्भ कीं। वे सशस्त्र क्रान्ति के समर्थक थे और इसी कारण उन्हें इंग्लैण्ड से निर्वासित कर दिया गया। वे लन्दन से हटकर पैरिस चले गये। अन्तत: वे स्विट्जरलैण्ड के जेनेवा नगर में रहने लगे। यहीं पर ३१ मार्च १९३० को उनका निधन हुआ।

ले. का.—पं. श्यामजी ने अन्तर्राष्ट्रीय प्राच्य विद्या-सम्मेलन के ५वें बर्लिन अधिवेशन में Sanskrit : A Living Language शीर्षक भाषण दिया। इसे आर्य-प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रदेश के घासीराम साहित्य विभाग ने १९४२ में प्रकाशित किया। इसका उर्दू अनुवाद भी 'प्राचीन आर्यावर्त में फने तहरीर' शीर्षक से छपा था।

वि. अ.—श्यामजी कृष्ण वर्मा (जीवन चरित) डा. भवानीलाल भारतीय।

श्यामजी विश्राम शर्मा

शर्मा जी बम्बई निवासी थे। आपने स्वामी दयानन्द-कृत यजुर्वेद के ४०वें अध्याय के भाष्य को गुजराती भाषा में रूपातन्तरित कर ईशोपनिषद् (दयानन्द भाष्य) नाम से निर्णयसागर प्रेस बम्बई से १८९९ में प्रकाशित किया।

कविराजा श्याममलदास

स्वामी दयानन्द के विश्वासपात्र तथा परोपकारिणी सभा के प्रथम मंत्री कविराजा श्यामलदास का जन्म जोधपुर राज्य के ढोकलिया ग्राम में चारणों के दधिवाड़िया गोत्र में १८३६ में हुआ था। आपने काव्य, वैद्यक तथा ज्योतिष आदि शास्त्रों का अच्छा अध्ययन किया था। आप उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह के अत्यन्त विश्वसनीय राज्याधिकारी थे। आपने ही स्वामी दयानन्द को चित्तौड़ आमन्त्रित किया तथा महाराणा सज्जनसिंह से उनकी भेंट करवाई। आपने 'वीर विनोद' नामक एक प्रसिद्ध इतिहास ग्रंथ लिखा है। स्वामीजी के निधन पर आपने डिंगल पद्यों में उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की थी। आपका निधन १८९४ में हुआ।

श्यामलाल शर्मा

शर्माजी पं. तुलसीराम स्वामी के सहयोगी थे। डी.ए.वी. स्कूल मेरठ में आप संस्कृत के प्रधान अध्यापक भी रहे।

ले. का.—संस्कृत भाषा प्रथम श्रेणी, पतिव्रता माहात्म्य (सावित्री उपाख्यान) (१९५५ वि.) (१८९८), धर्मलक्षण वर्णन (महाभारतोक्त तुलाधार वैश्य की कथा—(मूल तथा टीका)। वैराग्य शतकम् (१९५३ वि.) (१८९७)।

श्यामलाल सुहृद

आप अलीगढ़ निवासी थे। इसी नगर में आपका सुखरंजन औषधालय चलता था।

ले. का.—स्वामी दयानन्द का संक्षिप्त जीवन (१९८१ वि.), संध्या आत्मज्ञान (१९२६)

श्याम शर्मा

आप आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार-बंगाल के मुखपत्र आर्यावर्त्त के सम्पादक थे। आपकी एक कृति 'नियोग तत्त्व-दर्पण भाग-१' राजकिशोर वर्मा पटना ने १९१५ में प्रकाशित की।

डा. श्यामसिंह शशि

भारत सरकार द्वारा १९९० में पद्मश्री उपाधि से सम्मानित डा. शशि का जन्म १ जुलाई १९३६ को हरिद्वार जिले के बहादुरपुर जट नामक ग्राम में हुआ। आपने समाजशास्त्र में एम. ए. तथा पी-एच. डी. एवं नृ-विज्ञान में डी. लिट्. की उपाधियां प्राप्त की हैं। आपने आर्यसामाजिक साहित्य का अध्ययन भी किया तथा विद्या-वाचस्पति एवं सिद्धान्तशास्त्री की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। आपने देश विदेश का व्यापक भ्रमण किया है तथा जिप्सी एवं रोमा जैसी यायावर एवं घुमन्तु जातियों के विशिष्ट अध्ययन के लिये यूरोप तथा अमेरिका की यात्रायें कीं। एतद्विषयक अध्ययन को आपने अपने हिन्दी तथा अंग्रेजी में लिखे ग्रन्थों में समाविष्ट किया है।

ले. का.—लगभग १६ काव्य ग्रन्थ, १० गद्य रचनायें, १० बाल साहित्य विषयक ग्रन्थ तथा एक दर्जन अंग्रेजी ग्रन्थ। उनका लिखा 'अग्निसागर' महाकाव्य स्वामी दयानन्द की विचारधारा को प्रतिविम्बित करता है। इसमें मनुस्मृति के मन्तव्यों को काव्यबद्ध किया गया है। उनकी बाल साहित्य की कृति 'अच्छे बच्चे कितने सच्चे' महर्षि दयानन्द कृत आर्याभिविनय पर आधारित है। आर्यमित्र, सार्वदेशिक तथा आर्यजगत् आदि पत्रों में लेखन।

व. प.—निदेशक, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, पटियाला हाउस, नई दिल्ली ११०००१.

श्यामसुन्दरलाल वकील

जिला मैनपुरी के ग्राम औंछा निवासी श्री श्यामसुन्दर-लाल का जन्म १० दिसम्बर १८६८ को एक कायस्थ परिवार में हुआ। आपकी शिक्षा एम. ए. तथा एल. एल. बी. तक हुई। प्रथम वे अध्यापक रहे, तदनन्तर मैनपुरी में वकालत का व्यवसाय किया। आप उत्तरप्रदेश की आर्य-सामाजिक गतिविधियों से निरन्तर जुड़े रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के आप उपप्रधान भी रहे। १९०१ तथा १९०२ में इसी सभा के मंत्री पद का कार्य किया। अध्यापक के रूप में आप मुरादावाद में १८९७-१९०३ में रहे। आपका निधन १९ जून १९४८ को हुआ।

ले. का.—स्थावर जीव मीमांसा, मनु श्राद्ध मीमांसा (१९०१), मानव धर्म वर्ण-व्यवस्था (१८९८), A Tretise on the AryaSamaj and the Theosophical Society once amalgamated Bodies.—१९२५), (आर्यसमाज तथा थियोसोफिकल सोसाफइटी के पारस्परिक सम्बन्धों की विवेचना) १९८१ वि. (१९२५), वेद और गोमेध (१९८१ वि.), अल्लामियां का भंडाफोड़ और अल्लामियां की ख्वारी।

डा. श्यामस्वरूप सत्यव्रत

डा. सत्यव्रत का जन्म २६ जुलाई १८८२ को मुलतान (पंजाब) में हुआ। इनके पिता का नाम श्री रामस्वरूप था जो राजकीय सेवा में ओवरसियर के पद पर कार्य करते थे। १८९९ में महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) के व्याख्यानों को सुनकर आप आर्यसमाज की विचार-धारा में दीक्षित हुए। १९०६ में इन्होंने लाहौर की मेडिकल कालेज में प्रवेश लिया और १९०१ में वहां से एल. एम. एस. की उपाधि प्राप्त की। इसी वर्ष इन्होंने बरेली में आकर चिकित्सक का कार्य प्रारम्भ किया।

आप वरेली नगर की सामाजिक गतिविधियों में पूर्ण भाग लेते थे। १९१२ में आपने यहां आर्य विद्या सभा की स्थापना की और उसके द्वारा अनेक शिक्षण संस्थाओं का संचालन किया। इस सभा की ओर से आपने 'आर्य' नामक एक साप्ताहिक पत्र भी निकाला। वैदिक संघ नामकी एक अन्य संस्था की भी आपने स्थापना की, जिसकी ओर से 'वैदिक संघ पत्र' प्रकाशित होता था। आपका निधन ७ दिसम्बर १९५४ को हुआ।

ले. का.—"वैदिकसंध्या (अन्वय तथा हिन्दी भाष्य सहित), देवयज्ञ (हवन विधि-सरल भाष्य) ईशोपनिषद् भाष्य, सत्यार्थप्रकाश का सारांश, प्रथम समुल्लास (१९४०), वेदविचार।

स्वामी श्रद्धानन्द

आर्यसमाज के महान् नेता, कार्यकर्त्ता, शिक्षाविद् तथा समर्पणशील पुरुष स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म फाल्गुन कृष्णा १३ सं. १९१३ वि. (२२ फरवरी १८५७) को जालंधर

जिले के तलवन ग्राम में लाला नानकचन्द के यहाँ हुआ। इनके पिता पुलिस के कर्मचारी थे तथा तत्कालीन पश्चिमोत्तर प्रदेश में कार्यरत रहे। इनका पूर्वाश्रम का नाम मुन्शीराम था। स्वामी दयानन्द के व्याख्यान सुनने का अवसर इन्हें बरेली में मिला। लाहौर में रहकर मुख्तारी की परीक्षा के लिये तैयारी करते समय आप आर्यसमाज के सम्पर्क में आये और आर्यसमाज लाहौर के सभासद बन गए। कालान्तर में आप आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान भी रहे तथा वर्षों तक जालंधर को केन्द्र बना कर आपने धर्म प्रचार किया।

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना और संचालन महात्मा मुन्शीराम का एक महत्त्वपूर्ण कार्य था। कालान्तर में आपने आर्यसमाज के क्षेत्र के साथ-साथ देश से सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों में भी कार्य करने का संकल्प लिया। दलितोद्धार, शुद्धि एवं संगठन जैसे महत्त्वपूर्ण सामाजिक आंदोलनों का संचालन करने के साथ-साथ आपने देश के स्वाधीनता आंदोलन में भी भाग लिया। १९१९ में अमृतसर में सम्पन्न हुये कांग्रेस के अधिवेशन में आप स्वागताध्यक्ष के पद पर थे। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भागलपुर अधिवेशन के सभापतित्व का भार भी आपने १९१३ में ग्रहण किया था। २३ दिसम्बर १९२६ को एक मुसलमान आततायी ने आपकी उस समय हत्या कर दी, जब आप रुग्णावस्था में दिल्ली के नया बाजार स्थित एक भवन में स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे।

स्वामी श्रद्धानन्द एक सफल लेखक तथा साहित्यकार थे। उन्होंने उर्दू, हिन्दी तथा अंग्रेजी-तीनों भाषाओं में उत्कृष्ट साहित्य लिखा है।

ले. का.—आत्मकथा तथा जीवनचरित—१. कल्याण-मार्ग का पथिक (आत्म कथा) (१९८१ वि.), बंदीघर के विचित्र अनुभव (गुरु का बाग सत्याग्रह में मिले कारावास के संस्मरण) (१९७९ वि. १९२३)—प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु द्वारा पुनः सम्पादित और प्रकाशित, आर्यपथिक लेखराम का जीवन वृत्तान्त (१९१४), तत्ववेत्ता ऋषि की कथा (दयानन्द ग्रन्थमाला भाग—१, (१९२५) में प्रकाशित ऋषि दयानन्द की संक्षिप्त जीवनी।

ऋषि दयानन्द विषयक शोधात्मक ग्रन्थ—उपदेश मंजरी (पूना प्रवचन का उर्दू अनुवाद १८९८), ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का उर्दू अनुवाद (तृतीयांश मात्र) (१८९८), ऋषि-दयानन्द का पत्र व्यवहार भाग १ (सम्पादन, १९६६ वि.), (१९१०), आदिम सत्यार्थप्रकाश और आर्यसमाज के सिद्धांत (१९७४ वि.) (१९१७), पं. लेखराम रचित महर्षि दयानन्द सरस्वती के उर्दू जीवनचरित की भूमिका (१८९७)।

आर्य धर्म ग्रन्थमाला के अन्तर्गत प्रकाशित ग्रन्थ— (१९१६-१७), आर्यों की नित्यकर्म विधि, पाँच महायज्ञों की विधि, विस्तारपूर्वक संध्या विधि (लाला ज्वालासहाय की उर्दू पुस्तक का अनुवाद), आचार अनाचार और छूत-छात, ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज (पादरी जे. एन. फर्कुहर द्वारा लिखित 'माडर्न रिलिजियस मूवमेंट्स इन इण्डिया' में आर्यसमाज विषयक टिप्पणियों की समीक्षा), वेद और आर्यसमाज (१९७३ वि.), मातृभाषा का उद्धार (हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भागलपुर अधिवेशन (१९१३) में दिये गए अध्यक्षीय भाषण का मुद्रित संस्करण), (१९७० वि.), पारसीमत और वैदिक धर्म—(मार्टिन हॉग की पुस्तक पर आधारित) (१९१६) मानव धर्मशास्त्र और शासन पद्धति (१९१७)।

आध्यात्मिक और धार्मिक उपदेश पूर्ण साहित्य—धर्मोपदेश तीन खण्ड (लाला लब्भूराम नैयड़ द्वारा सम्पादित और गुरुकुल कांगड़ी की स्वाध्याय मंजरी के अन्तर्गत प्रकाशित, (१९३७), मुक्ति सोपान (१९२५), वेदानुकूल संक्षिप्त मनु-स्मृति (१९११)।

अन्य स्फुट ग्रन्थ—

आर्य संगीत माला (१९००), उत्तराखण्ड की महिमा अर्थात् गढ़वाल: प्राचीन और अर्वाचीन (१९१९), जाति के दीनों को मत त्यागो (१९१९), हिन्दुओ, सावधान, तुम्हारे धर्म दुर्ग पर रात्रि में छिपकर धावा बोला गया। (ख्वाजा हसन निज़ामी की पुस्तक दाइये इस्लाम के उर्दू में लिखे उत्तर 'मुहम्मदी साजिश का इन्कशाफ' का हिन्दी अनुवाद (१९२४), वर्तमान मुख्य समस्या—अछूतपन के कलंक को दूर करो (१९२४), मेरी गढवाल यात्रा (१९१९), रामयाणरहस्यकथा—(फरवरी १९२६ में

शिवरात्रि पर टंकारा में प्रदत्त रामायण विषयक प्रवचन), हिन्दू संगठन क्यों और कैसे ? (१९२४)।

उर्दू ग्रन्थ—

वर्ण व्यवस्था (१८९१), एक मांस प्रचारक महापुरुष की गुप्त लीला का प्रकाश (लाला मुल्कराज भल्ला की मांस भक्षण के समर्थन में लिखित पुस्तक का खण्डन), (१८९५), क्षात्र धर्म पालन का गैरमामूली तरीका (१८९५), यज्ञ का पहला अंग (स्वस्ति वाचन और शान्तिकरण का उर्दू अनुवाद) (१८९७), आर्यसमाज के खानाज़ाद दुश्मन (लेख संग्रह) (१८९९), सुबहे उमीद (वेदों के विभिन्न भाष्यकारों और स्वामी दयानन्द की भाष्य शैली का तुलनात्मक विवेचन) (१८९८), पुराणों की नापाक तालीम से बचो, (१८९९), सद्धर्म प्रचारक पर पहला लायबल केस। पं. गोपीनाथ द्वारा लाला मुन्शीराम तथा दो अन्यों—वजीरचन्द विद्यार्थी तथा बस्तीराम पर चलाये गये मानहानि केस का पूरा विवरण—(उर्दू तथा हिन्दी दोनों में छपा), महात्मा मुन्शीराम के सात लेक्चरों का मजमूआ (संग्रह) (१९०४), दुःखी दिल की पुरदर्द दास्तां (आर्यसमाज के आन्तरिक विग्रह की कष्ट कथा)—(१९०६), मेरी जिन्दगी के नशेबोफराज (आत्मकथा का अंश), (११९१), हिन्दू मुस्लिम इत्तिहाद की कहानी (१९२४), अंधा एतकाद और खुफिया ज़िहाद (वॉनहैमर की जर्मन पुस्तक के अंग्रेजी अनुवाद—The History of the Assasians का अनुवाद (१९२६), मुहम्मदी साजिश का इन्कशाफ (ख्वाजा हसन निजामी की पुस्तक दाइए इस्लाम का खण्डन) (१९२४), अछूतोद्धार का फौरी मसला, मेरा आखरी मशविरा, दाइए इस्लाम या तबाहिए इस्लाम, नियोग के मूजिद। उर्दू ग्रंथ संग्रह—कुलियात संन्यासी—१९२७ में शान्त स्वामी अनुभवानन्द द्वारा सम्पादित।

अंग्रेजी साहित्य—

1. The Future of the AryaSamaj : A fore-cast—२७ जनवरी १९८३ को आर्यसमाज लाहौर में पठित लेख 2. The AryaSamaj and Its Detrec-tors : A Vindication. पटियाला राज्य द्वारा आर्यसमाज पटियाला के सभासदों पर चलाये गए अभियोग के समय प्रस्तुत आर्यसमाज का पक्ष (१९१०). पं. रामदेव के सहलेखन में 3. Hindu Sangthan : Saviour of the Dying Race–1924. 4. Inside Congress : 'The Librator' में प्रकाशित १५ लेखों का संग्रह १९४६,. अलभ्य ग्रन्थ—भविष्यपुराण की प्रेक्षा (परीक्षा), मृतक श्राद्ध विचार (१९७३ वि.), गुरुमत दिवाकर, छात्रों के लिये उपदेश। **स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा प्रकाशित और सम्पादित पत्र**—साप्ताहिक सद्धर्मप्रचारक १८८९ में उर्दू में, पुनः १९०७ से हिन्दी में, श्रद्धा साप्ताहिक (१९२०), सत्यवादी साप्ताहिक (१९०४), दि लिबरेटर अप्रैल १९२६ से अक्टूबर १९२६ तक।

वि. अ.—श्रद्धानन्द ग्रन्थावली ११ खण्ड सं. डा. भवानीलाल भारतीय १९८७.

श्रीकरण शारदा

परोपकारिणी सभा के वर्षों तक मंत्री पद पर प्रतिष्ठित रहे शारदाजी का जन्म अजमेर के प्रसिद्ध आर्य नेता कुं. चांदकरण शारदा के यहां १४ जून १९१९ को हुआ। उनका अध्ययन अजमेर तथा आगरा में हुआ। कुछ समय तक वकालत करने के पश्चात् वे व्यवसाय में लग गये, किन्तु उनका अधिकांश समय आर्यसमाज की सेवा में ही लगता था। परोपकारिणी सभा के संयुक्त मंत्री पद पर उन्हें १९५८ में निर्वाचित किया गया। १९६४ में वे मंत्री बने और जीवन पर्यन्त इस पद पर रहे। आपके कार्यकाल में सभा ने अभूतपूर्व प्रगति की। ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों के प्रकाशन का कार्य पूर्ण सावधानी के साथ किया जाने लगा। सभा के मुखपत्र 'परोपकारी' को प्रकाशित करने का श्रेय शारदाजी को ही है। १९५९ में इस मासिक पत्र का प्रकाशन शारदाजी के सम्पादन में ही हुआ। वे यदा कदा इसमें लिखते भी थे। शारदाजी ने अपनी काश्मीर, असम तथा उत्तराखण्ड यात्राओं के रोचक वृत्तान्त लिखे। उनकी विदेश-यात्रा का वर्णन भी परोपकारी में छपा। उनका चन्द्रशेखर आजाद विषयक संस्मरण भी महत्त्वपूर्ण था। २० जुलाई १९८६ को कलकत्ता में आपका निधन हो गया।

श्रीकान्त भगतजी

गुजराती में आर्य साहित्य के प्रमुख लेखक तथा प्रकाशक श्रीकान्त भगत का जन्म फाल्गुन शुक्ला १३ सं. १९७४ वि. (२५ मार्च १९१८) को हुआ। इनके पिता श्री रणछोड़जी भगत मूलतः बड़ौदा के निवासी थे। १९४६ से इन्होंने आर्यसमाज में सक्रियता से भाग लेना आरम्भ किया। १९५२ में आपने सूरत में आर्य सेवा संघ की स्थापना की और गुजराती में आर्यसाहित्य का लेखन और प्रकाशन आरम्भ किया। १९६८ में इन्होंने अफ्रीका महाद्वीप का भ्रमण किया और केन्या, युगाण्डा, तन्जानिया, जांबिया, रोडेशिया आदि देशों में धर्म प्रचार किया। १९८१ में आपका निधन हो गया।

ले. का.—आर्यसमाज (अनूदित) (१९५५), ईशोपनिषद्, उपवीत रहस्य (१९६५), एकमेव दयानन्द (१९६९), ऋषि कथा (१९६७), अंजलि (सम्पादित) (१९६५), दयानन्द दर्शन (१९५७), दिव्य दयानन्द (अनूदित) (१९६३), पूजा कोनी करिये (अनूदित) (१९५८), पंजाब हिन्दी-सत्याग्रह (१९६४), भगवान् श्रीकृष्ण उवाच (१९६८), मन नी अपारशक्ति (अनूदित) (१९६३), महर्षि अने महापुरुषो (१९५५), यमनियम (अनूदित) (१९६४), यजुर्वेद-शतक (१९५९), वैदिक कर्मकाण्ड चन्द्रिका (१९५३), वैदिक-लग्न विधि (१९६२), ज्ञानदीप (१९६८), ज्ञान प्रकाश (१९६८) बृहद्गुजरात माँ आर्यसमाज (गुजरात प्रान्त में आर्यसमाज की गतिविधियों का सचित्र इतिहास)

श्रीकृष्ण गुप्त

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश के मंत्री तथा विदर्भ प्रान्त में आर्यसमाज की विभिन्न प्रवृत्तियों के सूत्रधार श्री कृष्ण गुप्त सुकवि तथा लेखक थे। इनका जन्म उदयपुर (राजस्थान) के समीपवर्ती मावली ग्राम में १८९७ में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान में हुई। तत्पश्चात् आपने इन्दौर से मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की और लखनऊ से आशुलिपि का प्रशिक्षण प्राप्त किया। १५ जनवरी १९२८ को आप आर्यसमाज सदर बाजार नागपुर के सदस्य बने और उत्तरोत्तर सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने लगे। १९३८ में ये आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य-प्रदेश के मंत्री पद पर निर्वाचित हुए। हैदराबाद के आर्य-सत्याग्रह तथा पंजाब के हिन्दी सत्याग्रह में इन्होंने पूर्ण उत्साह के साथ भाग लिया। ८ मई १९७३ को इनका निधन हो गया।

ले. का.—सामसुधा—(सामवेद का पद्यानुवाद) संध्या-सुमन—(संध्या के मंत्रों का पद्यानुवाद) दयानन्द दर्शन।

श्रीकृष्ण शर्मा, आर्यमिशनरी

स्वामी दयानन्द के जीवन विषयक महत्त्वपूर्ण शोध करने वाले पं. श्रीकृष्ण शर्मा का जन्म १९०१ में इटावा जिले के अजीतमल नामक कस्बे में हुआ। बाल्यावस्था में ही इनका आर्यसमाज से सम्पर्क हुआ। १९२१ में आपने कांग्रेस द्वारा प्रवर्तित असहयोग आन्दोलन में भाग लिया तथा कारावास का दण्ड स्वीकार किया। १९२६ में आप वैदिक धर्म के प्रचार हेतु फिजी गये तथा १९३२ तक वहाँ रहे। १९३२ में वे स्वदेश आये और पुनः स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े। आपने काठियावाड (सौराष्ट्र-गुजरात) को अपना कार्यक्षेत्र बनाया तथा राजकोट में वेद स्वाध्याय-मंदिर की स्थापना की। आपने राजकोट से ही 'वैदिक-संदेश' नामक एक मासिक पत्र भी निकाला। पंजाब के हिन्दी रक्षा आन्दोलन में आपने सक्रिय रूप से भाग लिया।

ले. का.—शंकरानन्द संन्यासी—(सौराष्ट्र में आर्य-समाज का प्रचार करने वाले स्वामी शंकरानन्द का जीवन-चरित) (१९४०), स्वामी दयानन्द का वंश परिचय—(२०२० वि.), महर्षि दयानन्द स्मारक का इतिहास (२०२० वि.), उपर्यक्त दोनों पुस्तकें स्वामी दयानन्द की पारिवारिक पृष्ठभूमि, उनकी जन्मतिथि तथा जन्मस्थानादि के विषय में महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान करती हैं।

डा. श्रीनिवास शास्त्री

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में दयानन्द प्रोफेसर के पद पर रहकर उच्च कोटि का अनुसंधान करने वाले डा. श्रीनिवास शास्त्री का जन्म १ अगस्त १९१६ को मेरठ जिले के रसूल-पुर जाहद नामक ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम श्री

चन्द्रभानु नम्बरदार था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा ग्राम में ही हुई। १९३२ में इन्होंने गुरुकुल चित्तौड़ में अष्टाध्यायी क्रम से संस्कृत पढ़ी। तत्पश्चात् १९३४ में गुरुकुल डौरली (मेरठ) आकर काशिका, महाभाष्य, न्यायदर्शन तथा निरुक्त का अध्ययन किया। बाद में आगरा, खुर्जा, तथा काशी में रहकर व्याकरण तथा दर्शनों का उच्च कोटि का अध्ययन किया। आपने १९३९-४० में गुरुकुल डौरली में अवैतनिक रूप में अध्यापन किया। इसी बीच एम. ए. भी कर लिया। मेरठ तथा बिजनौर के कालेजों में आपने अध्यापन कार्य किया। पुनः कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में प्रवक्ता तथा रीडर के पदों पर लगभग १२ वर्ष तक कार्य किया। कालान्तर में जब इस विश्वविद्यालय में 'दयानन्द प्रोफेसर' के पद की स्थापना हुई तो आप उस पर नियुक्त हुए और लगभग ६ वर्षों तक इस पद रहकर ३१ जुलाई १९८२ को सेवामुक्त हुए।

ले. का.—संक्षिप्त ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका (१९५२), दयानन्द दर्शन : एक अध्ययन (१९७७), वेद तथा ऋषि दयानन्द (१९७९), वेद प्रामाण्य मीमांसा तथा ऋषि दयानन्द (१९८०-८१), वेद नित्यता तथा ऋषि दयानन्द (१९८२), वाचस्पति मिश्र द्वारा बौद्धदर्शन का विवेचन (१९६८), (शोध ग्रन्थ), कुसुमांजलि कारिका व्याख्या (१९७४) न्यायबिन्दु टीका (१९७५) तथा प्रशस्तपाद भाष्य की हिन्दी व्याख्या (१९८४)।

श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

वेदों के महान् व्याख्याकार तथा लेखक पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर का जन्म १९ सितम्बर १८६७ को महाराष्ट्र प्रान्त के कोल गांव में हुआ। आपके पिता श्री दामोदर भट्ट संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् थे। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा बम्बई के जे. जे. स्कूल आफ आर्ट में हुई, जहां से आपने चित्रकला की विधिवत् शिक्षा प्राप्त की। आपका प्रारम्भिक जीवन भी एक सफल चित्रकार के रूप में प्रारम्भ हुआ किन्तु शीघ्र ही आप वैदिक स्वाध्याय और चिन्तन के क्षेत्र में आ गये। आपने अथर्ववेद के पृथ्वी-सूक्त की क्रान्तिकारी व्याख्या 'वैदिक राष्ट्रीय गीत' नामक पुस्तक में प्रस्तुत की जिसके कारण आपको विदेशी सरकार का कोपभाजन बनना पड़ा। इसके पश्चात् आप गुरुकुल-कांगड़ी आये। पृथ्वी-सूक्त की राष्ट्रीय भावों से ओत-प्रोत व्याख्या जब शासक वर्ग को पसन्द नहीं आई तो उन्होंने सातवलेकरजी को दो वर्ष का कारावास दण्ड दिया। इस दण्ड को भोगकर सातवलेकरजी लाहौर चले गये। जब यहां भी पुलिस ने उनका पीछा नहीं छोड़ा तो सातवलेकर जी महाराष्ट्र के सातारा जिले की औंध रियायत में आकर रहने लगे। यहां उन्होंने स्वाध्याय मण्डल की स्थापना की और वैदिक साहित्य का लेखन एवं प्रकाशन का कार्य आरम्भ किया। 'वैदिक धर्म' मासिक के प्रकाशन के द्वारा उन्होंने वैदिक अध्ययन को एक नवीन दिशा प्रदान की।

देश के स्वतन्त्र होने के पश्चात् सातवलेकरजी गुजरात के वलसाड जिले के किल्ला पारडी नामक स्थान में आये और वहां से अपनी साहित्य प्रवृत्तियों का संचालन करने लगे। आपका लेखन अत्यन्त व्यापक परिवेश को लेकर चलता था। वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत आदि शास्त्रीय वाङ्‌मय के सभी अंगों पर उन्होंने समान रूप से कलम चलाई थी। भारत के राष्ट्रपति ने उनकी साहित्यिक सेवाओं के लिये 'पद्म भूषण' की उपाधि प्रदान की थी। प्रारम्भ में उनके वेद सम्बन्धी विचार स्वामी दयानन्द के विचारों के सर्वथा अनुकूल ही थे, किन्तु धीरे-धीरे सातवलेकरजी का वेद विषयक चिन्तन परिवर्तित होने लगा और वे वेदों को अपौरुषेय तथा ईश्वरीय ज्ञान मानने की अपेक्षा उन्हें ऋषियों द्वारा प्रणीत मानने लगे थे। इसी प्रकार अब वेद मन्त्रों में उन्हें नाना राजाओं, ऋषियों तथा व्यक्तियों से सम्बन्धित घटनायें तथा ऐतिहासिक तथ्यों का उल्लेख दृष्टिगोचर होने लगा। तथापि वे वेदों की आध्यात्मिक व्याख्या करने के प्रबल पक्षधर थे। १०१ वर्ष की आयु प्राप्त कर ११ जुलाई १९६८ को वे परलोक-वासी हुए।

ले. का.—चतुर्वेद संहिताओं का सम्पादन (परंपरागत संहिता पाठ तथा पद पाठ के जानकार वेदज्ञ ब्राह्मणों की सहायता से शुद्धतम संस्करण), शुक्ल यजुर्वेद की काण्व

तथा कृष्ण यजुर्वेद की मैत्रायणी, काठक तथा तैत्तिरीय शाखाओं का सम्पादन, चारों वेदोंपर सुबोध भाष्य-लेखन, देवता तथा ऋषि क्रम से दैवत संहिता तथा आर्ष संहिता शीर्षक से वेदमंत्रों का सार्थ संकलन, मराठी तथा गुजराती में वेद भाष्य लेखन, वेद विषयक व्याख्या-विवेचना-वैदिक चिकित्सा, वेद में कृषि विद्या, वेदों में चर्खा, वैदिक-सर्पविद्या आदि, शतपथ बोधामृत (शतपथ ब्राह्मण विषयक), ईश से छान्दोग्य पर्यन्त ९ उपनिषदों का सुगम भाष्य। भगवद्गीता की पुरुषार्थबोधिनी टीका, वाल्मीकीय रामायण तथा महाभारत के विवेचना युक्त टीका ग्रन्थ, वेद का स्वयं शिक्षक, वेद परिचय। आगम निबंधमाला के अन्तर्गत् वैदिक स्वराज्य की महिमा, मानवी आयुष्य, इन्द्र शक्ति का विकास, ऋग्वेद में रुद्रविद्या, वैदिक अग्निविद्या आदि ग्रन्थ। वैदिक निवंधमाला के अन्तर्गत वैदिक समाज-शास्त्र, राजनीति, अध्यात्म, शरीरशास्त्र, सृष्टिविद्या आदि विषयों पर ४८ निबंध।

विशेष—अथर्ववेद के सुप्रसिद्ध पृथ्वीसूक्त की सातवलेकर व्याख्या से विदेशी सरकार इतनी विचलित हुई कि इस पुस्तक पर संयुक्त प्रान्त तथा बम्बई सरकार ने प्रतिबंध लगाये तथा लेखक पर अभियोग भी चलाया।

वि. अ.—पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर (जीवनी) पं. श्रुतिशील शर्मा द्वारा लिखित, पं. श्रीपाद सातवलेकर अभिनन्दन ग्रन्थ—पं. क्षितीश वेदालंकार द्वारा सम्पादित

प्रो. श्रीप्रकाश

आर्यसमाज के विख्यात दार्शनिक विद्वान् पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के तृतीय पुत्र प्रो. श्रीप्रकाश का जन्म १९२५ प्रयाग में हुआ। इन्होंने रसायनशास्त्र में एम. एस. सी. की परीक्षा उत्तीर्ण की और १९५० में डी. ए. वी. कालेज कानपुर में इसी विषय के प्रवक्ता पद पर नियुक्त हुए। इनका निधन २२ नवम्बर १९८६ को हुआ।

ले. का.—स्वामी दयानन्द का राजनैतिक दर्शन (१९७१), देश और आर्यसमाज (१९८४).

डा. श्रीराम आर्य

खण्डन मण्डनात्मक साहित्य के प्रसिद्ध लेखक श्रीराम आर्य का जन्म अक्टूबर १९११ में एटा जिले के एक ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम श्री प्यारेलाल गुप्त था जो स्टेशनमास्टर थे। आर्यसमाज के साथ इनका सम्पर्क १९२७ से ही रहा है। श्री आर्य व्यवसाय से चिकित्सक हैं और एटा जिले के कासगंज नगर में निवास करते हैं। आपने खण्डन मण्डनपरक विशाल साहित्य की रचना की है।

ले. का.—पौराणिक मत खण्डन परक ग्रन्थ—पौराणिक मुख चपेटिका (१९६०), संसार के पौराणिक विद्वानों से ३० प्रश्न, (१९६१), पौराणिक गप्प दीपिका (१९६२), पौराणिक कीर्तन पाखण्ड है (१९६३), तुलसी और शालिग्राम (१९६०), शास्त्रार्थ के चैलेंज का उत्तर (२०१८ वि.), टोंक का शास्त्रार्थ (१९६९), मूर्तिपूजा खण्डन (१९६८), पुराण किसने बनाये ? (१९६३), भागवत-समीक्षा (१९६५), अवतार रहस्य (१९७५), नृसिंह-अवतार वध, सनातन धर्म में नियोग व्यवस्था, अवतारवाद पर ३१ प्रश्न (१९७५), मृतक श्राद्ध खण्डन (१९६१), मृतकश्राद्ध पर २१ प्रश्न, माधवाचार्य की चुनौती का उत्तर (१९६४), शिवजी के चार विलक्षण बेटे (१९६०), शिवलिंग पूजा रहस्य (१९५९), शिवलिंग पूजा क्यों ? (१९६०), गीता विवेचन (१९६४), गीता पर ४२ प्रश्न (१९६४), हनुमानजी बंदर नहीं थे (१९६९), पुराणों के कृष्ण।

इस्लाम की आलोचना विषयक ग्रन्थ—१. कुरान दर्पण (१९६६), खुदा और शैतान (१९६७), कुरान की विचारणीय बातें (१९६९), कुरान खुदाई किताब नहीं (१९७०), खुदा का रोजनामचा (१९७१), मौलवी हार गया, शैतान की पैदाइश, कुरान पर सप्रमाण १७६ प्रश्न (१९७५), कुरान की छान-बीन, शैतान की कहानी, इस्लाम दर्शन, कुरान-प्रकाश, कुरान खुदाई कैसे ? कुरान में परस्पर विरोधी स्थल, इस्लाम में नारी की दुर्गति, कुरान में पुनर्जन्म, कुरान में बुद्धि, विज्ञान विरुद्ध स्थल।

ईसाई मत खण्डन विषयक ग्रन्थ—बाइबिल दर्पण (१९६७), ईसाई मत का पोलखाता (१९६९), मरियम और ईसा (१९७०), ईसामसीह मुक्तिदाता नहीं था (१९७१), बाइबिल पर सप्रमाण ३१ प्रश्न (१९७१)

अन्य मत खण्डन विषयक ग्रन्थ—जैनमत समीक्षा (१९७०), कबीर मत गर्वमर्दन (१९६५), मुनिसमाज-मुखमर्दन (१९६१), गुरुडम के पाखण्ड (१९६८), हंसामत का पोलखाता (१९६८), ब्रह्माकुमारी मत खण्डन।

व. प.—वैदिक साहित्य प्रकाशन, कासगंज (एटा)

श्रीराम पथिक

पथिकजी का जन्म १९३० में पाकिस्तान के जिला सरगोधा में श्री सुखदयाल के यहां हुआ। ये छुटमलपुर (सहारनपुर) में मानव सेवा आश्रम का संचालन करते हैं। १९८६ में इन्होंने वानप्रस्थ की दीक्षा ली और वैदिक यति-मण्डल के सदस्य बने।

ले. का.—देव दयानन्द, वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द, का उपकार, ईश्वर दर्शन के सरल उपाय।

व. प.—मानव सेवाश्रम, रुड़की मार्ग छुटमलपुर (सहारनपुर)

पं. श्रीराम शर्मा

पं. श्रीराम शर्मा का जन्म जिला बदायूं के ग्राम ग्राम ग्राम निवासी पं. रामप्रसाद शर्मा के यहां माघ कृष्णा ९ सं. १९४१ वि. (१८८४) को हुआ। स्वामी दर्शनानन्द की प्रेरणा से श्रीराम को गुरुकुल बदायूं में शिक्षा दिलाई गई। अनेक वर्षों तक श्रीराम शर्मा इसी गुरुकुल में कार्य करते रहे। वे बड़ौदा के प्रशिक्षण महाविद्यालय में हिन्दी अध्यापक के पद पर भी १९१०-२० की अवधि में रहे। आपने अपने कनिष्ठ भ्राता श्री भगवद्दत्त शर्मा की स्मृति में श्री भगवद्दत्त प्रकाशन मंदिर की स्थापना की। आपका निधन १२ जनवरी १९७० को बम्बई में हुआ।

ले. का.—पूना प्रवचन (उपदेश मंजरी का सम्पादित संस्करण), दर्शनानन्द दर्शन (स्वामी दर्शनानन्द का जीवन-चरित (१९५९), सयाजी जीवन चरित (बड़ौदा के प्रगतिशील नरेश महाराजा सयाजीराव गायकवाड का जीवन चरित), पतित पावन।

प्रो. श्रीराम शर्मा

मध्यकालीन इतिहास के मर्मज्ञ श्रीराम शर्मा का जन्म १ जून १९०० को हिमाचलप्रदेश के ऊना कस्बे में हुआ। इनके पिता का नाम श्री जयरामदास था। शर्माजी की प्रारम्भिक शिक्षा ऊना में हुई। आपने पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर से इतिहास विषय में एम. ए. परीक्षा उत्तीर्ण की। १९२३ में वे डी. ए. वी. कालेज कमेटी के आजीवन सदस्य बन गये और डी. ए. वी. कालेज लाहौर में इतिहास के प्राध्यापक नियुक्त हुए। आप १९२३ से १९६३ तक लाहौर, श्रीनगर, शोलापुर तथा चण्डीगढ़ के डी. ए. वी. कालेजों में प्राध्यापक तथा प्राचार्य पदों पर रहे। उन्होंने कुछ समय तक आर्य प्रादेशिक सभा के उर्दू मुखपत्र 'आर्य गजट' का सम्पादन भी किया। १९६४ से १९६६ तक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा सम्मानित प्रोफेसर के रूप में उन्होंने डी. ए. वी. कालेज जालंधर में कार्य किया। जीवन की संध्यावेला में प्रो. शर्मा अपने जन्म-स्थान ऊना में रहकर लेखन तथा शोध कार्य में लगे रहे। २६ अगस्त १९७६ को उनका निधन हो गया।

ले. का.—Mahatma HansRaj: Maker of Modern Punjab 1941, लाला लाजपतराय की प्रसिद्ध अंग्रेजी कृति The AryaSamaj का संशोधित संस्करण-A History or the AryaSamaj 1967, Half a Century or the AryaSamaj work, The Arya-Samaj and its impact on Contemporary India, Conversion and Reconversion to Hinduism during Muslim Period, The Earliest Autobiography or Swami Dayanand. पंजाब विश्वविद्यालय रिसर्च बुलेटिन भाग ३, ४. (१९७२-७३) में प्रकाशित। **विशेष**—कई वर्ष पूर्व हरयाणा सरकार ने स्वामी दयानन्द के जीवन तथा कार्य पर एक शोधपूर्ण ग्रन्थ लिखवाने हेतु ५० हजार रुपये का अनुदान स्वीकार किया था। पंजाब विश्वविद्यालय के तत्कालीन उपकुलपति श्री सूरजभान ने इस कार्य के लिये श्री शर्मा को नियुक्त किया। इस शोधपूर्ण जीवनी के लेखन हेतु सामग्री संग्रह करने के लिये प्रो. शर्मा ने अनेक स्थानों पर

भ्रमण किया तथा अनेक उल्लेखनीय तथ्य एकत्रित किये। इसी बीच प्रो. शर्मा ने आर्यसमाज की पत्र-पत्रिकाओं में कुछ ऐसे लेख प्रकाशित किये जिनमें यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया था कि स्वामीजी की मृत्यु का कारण विष नहीं था। स्वामीजी के देहान्त के सम्बन्ध में निकाले गये उनके इन निष्कर्षों के कारण आर्यसमाज में विरोध का ज्वार उमड़ पड़ा तथा पंजाब विश्वविद्यालय से कहा गया कि श्रीराम शर्मा द्वारा लिखी गई इस विवादास्पद जीवनी का प्रकाशन न किया जाये। फलतः यह ग्रन्थ पाण्डुलिपि के रूप में ही रह गया। पंजाव विश्वविद्यालय के विगत कुलपति प्रो. आर. सी. पॉल के आग्रह पर इस कोशकार ने उक्त पाण्डुलिपि का आद्योपान्त निरीक्षण तथा परीक्षण किया तथा इसकी शुद्ध टंकित प्रतियां तैयार करवाईं। अब यह टंकित पाण्डुलिपि हरयाणा साहित्य-अकादमी के पास है। इस पुस्तक की एक टंकित प्रति इस कोशकार के निजी पुस्तकालय में भी है।

श्रीवत्स पण्डा

सत्यार्थप्रकाश के उड़िया अनुवादक श्रीवत्स पण्डा का जन्म उड़ीसा प्रांत के गंजाम जिले के मंदार नामक ग्राम में २ अक्टूबर १८६० को एक सम्पन्न सारस्वत ब्राह्मण परिवार में हुआ। इन्होंने बी. ए. तक शिक्षा प्राप्त की। प्रारम्भ में ये पौराणिक विचारों के थे और 'उत्कल-दीपिका' नामक पत्रिका में वेदों के सम्बन्ध में लेख लिखा करते थे। उन दिनों कटक में राममोहन राय (ब्रह्मसमाज के संस्थापक नहीं) नामक एक ब्रह्मसमाजी सज्जन निवास करते थे जो वैदिक धर्म के वास्तविक स्वरूप से परिचित थे। इन्हीं राय महाशय ने स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों को भी पढ़ रक्खा था। उन्होंने श्रीवत्स पण्डा को स्वामी दयानन्द कृत ग्रन्थ पठनार्थ दिये, जिन्हें पढ़ कर पण्डाजी के विचारों में महान् परिवर्तन हो गया और वे स्वामीजी की विचारधारा के अनुयायी बन गये।

श्रीवत्स पण्डा ने अध्ययन समाप्त करने के पश्चात् सरकारी सेवा में प्रवेश किया। वे सब रजिस्ट्रार के पद तक पहुंचे। राजकीय नौकरी करते हुए भी वे समाज-सुधार, राष्ट्र सेवा तथा धर्म प्रचार में पूर्ण रुचि लेते थे। अन्ततः उन्होंने राज्य सेवा से भी त्यागपत्र दे दिया और अपना सारा समय नारी जागरण, गो सेवा तथा शिक्षा-प्रचार में लगाया। इनका निधन १९४३ में हुआ।

ले. का.—उड़िया भाषा में आपने आर्य, वैदिक धर्म-प्रचारक तथा संस्कारक नामक मासिक पत्र समय समय पर प्रकाशित किये। आपने अपनी भू-सम्पत्ति गोरक्षा हेतु तरनडा में दान कर दी तथा १० एकड़ भूमि में विशाल गोरक्षाश्रम स्थापित किया। आर्य प्रादेशिक सभा के सहयोग से आपने उड़िया भाषा में सर्वप्रथम सत्यार्थ-प्रकाश का अनुवाद किया जो १९२७ में प्रकाशित हुआ। आपने संस्कारविधि, पंच महायज्ञ विधि तथा स्वामी दयानन्द की कुछ अन्य पुस्तकों का भी अनुवाद उड़िया में किया। अन्य ग्रन्थ—वैदिक धर्म, सत्संग गुटका, रामायण व महाभारत सार कथा, सूक्ति माला, पंच देवता।

पं. श्रुतबंधु शास्त्री, वेदतीर्थ

इनका जन्म १४ नवम्बर १९०१ को मुंगेर (बिहार) जिले के डेल्हवा ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम पं. प्रभुनारायण शर्मा तथा माता का श्रीमती कर्मदेवी था। इनका अध्ययन गुरुकुल पोठोहार (रावलपिण्डी) में आचार्य मुक्तिरामजी उपाध्याय के सान्निध्य में हुआ। यहां रहकर आपने महाभाष्य पर्यन्त व्याकरण तथा दर्शन-शास्त्रों का अध्ययन किया। सांग वेग विद्यालय काशी में रहकर इन्होंने सूत्र एवं ब्राह्मण सहित यजुर्वेद का अध्ययन किया। कलकत्ता से वेदतीर्थ तथा पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री परीक्षा भी उत्तीर्ण की। आजीविका हेतु आपने गुरुकुल सोनगढ़, आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा तथा गुरुकुल सूपा में वर्षों तक अध्यापन कार्य किया। कुछ काल तक गुरुकुल कांगड़ी में भी आप अध्यापक रहे। सम्प्रति अमेरिका में रह रहे हैं। आपने आचार्य मेधाव्रत रचित महाकाव्य 'दयानन्द-दिग्विजय' (पूर्वार्द्ध) तथा उनके संस्कृत नाटक प्रकृति सौन्दर्यम् की हिन्दी टीका लिखी है।

श्रुतिकान्त शास्त्री

स्वामी वेदानन्द तीर्थ के सम्पादन में लाहौर से एक पुराणलोचन ग्रन्थमाला प्रकाशित हुई थी। शास्त्री जी

द्वारा लिखित वराहपुराण की आलोचना इसी के अन्तर्गत १९२८ में छपी।

पं. सच्चिदानन्द शास्त्री

शास्त्रीजी का जन्म हरदोई जिले के सुरसा ग्राम में पं. रघुनन्दन शर्मा के यहाँ वैशाख पूर्णिमा १९८७ वि. (१९३०) को हुआ। इनका अध्ययन गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में हुआ, जहाँ से इन्होंने विद्याभास्कर की उपाधि ग्रहण की। तदनन्तर आगरा विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए. तथा लखनऊ विश्वविद्यालय से भाषा-विज्ञान में भी एम.ए. की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। आप विगत कई वर्षों से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री हैं। १९९० में आपको महाकवि देव के काव्य पर शोध ग्रन्थ लिखने पर पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त हुई।

ले. का.—संक्षिप्त ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका (१९८६), ऋग्वेद शतकम्, यजुर्वेद शतकम्, यज्ञोपवीत मीमांसा, भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्व, शिक्षाप्रद ऐतिहासिक कहानियाँ, नारी दर्पण, क्रान्ति के अग्रदूत।

व. प.—दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली—११०००२.

स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती

पूर्व आश्रम में मथुरादास वानप्रस्थी के नाम से प्रसिद्ध स्वामी सच्चिदानन्द का जन्म १ जनवरी १९०३ को पाकिस्तान के शेखूपुरा जिले के उच्चापिण्ड नामक ग्राम में हुआ। देश विभाजन के पूर्व वे स्यालकोट जिले के बद्दोमल्ली कस्बे में रहते थे। तत्पश्चात् अमृतसर आये और आर्यसमाज नवांकोट की स्थापना की। प्रारम्भ से ही इन्हें धर्म प्रचार में रुचि थी। १७ अप्रैल १९८३ को इन्होंने स्वामी सर्वानन्दजी से संन्यास की दीक्षा ली।

ले. का.—जीवन परिचय (संक्षिप्त आत्मकथा) (१९८३) ऋषि वाणी-३ भाग, तुलसी के राम।

व. प.—एफ-८, ओ३म् विहार, उत्तमनगर, नई दिल्ली—११००५९।

स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती (राजेन्द्रनाथ शास्त्री)

पं. राजेन्द्रनाथ का जन्म १० फरवरी १९०६ को दिल्ली के निकट नांगलोई ग्राम में एक वैश्य परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम श्री प्यारेलाल था जो गणित के अध्यापक थे। इनका अध्ययन गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में स्वामी शुद्धबोध तीर्थ के निकट हुआ। १९२७ में इन्होंने अपने वास्तविक नाम 'राजालाल' को बदल कर राजेन्द्रनाथ कर लिया। १९३४ में इन्होंने दिल्ली में दयानन्द वेद विद्यालय की स्थापना की जो आजकल गौतम नगर में चल रहा है। १९६८ में इन्होंने संन्यास आश्रम में प्रवेश किया और योगी सच्चिदानन्द के नाम से जाने गये। २६ दिसम्बर १९८९ को इनका निधन हो गया।

ले. का.—संस्कृत गद्यपद्यमयं महाभारतम्, सरल संस्कृतं तथा व्याकरण प्रकाश। आपने सिद्धांतकौमुदी के खण्डन में 'सिद्धांतकौमुदी की अन्त्येष्टि' नामक पुस्तक लिखी (१९९४ वि.), इनका एक ग्रन्थ है, 'सत्यार्थप्रकाश के संशोधनों की समीक्षा' (१९६६)। आपने योग पर भी कुछ ग्रन्थ लिखे हैं। यथा—पातंजल योग साधन—(२०२६ वि.), योग सार तथा पातंजल योग सूत्र भाष्यम्।

वि. अ.—स्वामी सच्चिदानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ—सम्पादक : क्षितीश वेदालंकार।

स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती

स्वामी सच्चिदानन्द का जन्म २६ जुलाई १९३३ को उड़ीसा प्रांत के सम्बलपुर जिले के भातविड़ा ग्राम में बलराम साहू के यहाँ हुआ। इनका पूर्व आश्रम का नाम कविराज जीवानन्द साहू था। आपने आयुर्वेद की शिक्षा ली तथा अपने ग्राम में चिकित्सा करते रहे। १५ जून १९८५ को इन्होंने संन्यास ग्रहण कर लिया। स्व ग्राम में श्रुति सेवाश्रम नामक अपने आश्रम का संचालन करते हुए स्वामी सच्चिदानन्द लोक सेवा तथा धर्म प्रचार में लगे हुए हैं।

ले. का.—दयानन्द किए, आर्यसमाज स्थापना शताब्दी कह, महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी श्रद्धांजलि, सत्यार्थप्रकाश का पांच समुल्लास पर्यन्त उड़िया पद्यानुवाद।

व. प.—श्रुति सेवाश्रम भातविड़ा पो. लेविड़ी जिला सम्वलपुर (उड़ीसा) ७६८०३३.

ठाकुर सज्जनसिंह वर्मा

वर्माजी मैनपुरी जिले के निवासी थे। आपने खण्डन-मण्डन विषयक साहित्य लिखा है

ले. का.—अल्ला मियां की कुकड़ुंकूं, अल्लामियां की ऊंटनी—तूफान बेतमीजी, वीर वाक्य।

डा. सत्यकाम वर्मा

डा. वर्मा का जन्म १९२६ में स्व. विद्याधर विद्यालंकार के यहां अम्वाला छावनी में हुआ। इन्होंने १९४८ में गुरुकुल कांगड़ी से 'आयुर्वेदालंकार' की उपाधि प्राप्त की। कुछ काल तक स्वतन्त्र चिकित्सा कार्य करने के पश्चात् इन्होंने दिल्ली के विभिन्न कालेजों में संस्कृत का अध्यापन किया। संस्कृत एवं हिन्दी में एम. ए. करने के पश्चात् आपने 'वाक्यपदीय का भाषा तात्त्विक विवेचन' विषय लेकर पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। आप १९६९ से दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में रीडर तथा प्रोफ़ेसर के पदों पर रहे। कुछ काल के लिये गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में कुलपति भी रहे।

ले. का.—वाक्यपदीय—ब्रह्मकाण्ड (त्रिभाषी टीकायें) १९७०, संस्कृत व्याकरण का उद्भव और विकास १९७१, वेद वाटिका १९७५, वेद सुमन १९७४, Flash of Truth 1979, कठोपनिषद् (भाष्य)।

व. प.—३३३ दीपाली, पीतमपुरा दिल्ली ११००३४

पं. सत्यकाम सिद्धान्तशास्त्री

आप दिल्ली के निवासी हैं।

ले. का.—वैदिक मनुस्मृति (इसमें स्वामी दयान्द के ग्रन्थों में उद्धृत मनुस्मृति के श्लोकों का सार्थ संग्रह है) महर्षि दयानन्द सचित्र जीवन चरित (२०१९ वि.)।

पं. सत्यकाम विद्यालंकार

सुप्रसिद्ध साहित्य सेवी, पत्रकार तथा लेखक पं. सत्यकाम विद्यालंकार का जन्म १९०५ में लाहौर में हुआ। आपके पिता का नाम श्री धनीराम था। आपने गुरुकुल कांगड़ी में अध्ययन किया और १९८१ वि. (१९२५) में विद्यालंकार की उपाधि ग्रहण की। तत्पश्चात् आपने अनेक पत्रों का सम्पादन किया। हिन्दी के विख्यात साप्ताहिक धर्मयुग तथा मासिक नवनीत के भी आप सम्पादक रहे। आपने विविध विधाओं के अनेक ग्रन्थों की रचना की है।

ले. का.—वैदिक वंदना गीत (वेद मन्त्रों का काव्यानुवाद २०१७ वि.),। वैदिक वंदन—१९७४, वेद-गीतांजलि (वेद मंत्रों पर आधारित गीत), वेद पुष्पांजलि (५२ वेद मंत्रों का भावार्थ तथा काव्य रूप में अनुवाद) १९७७, वैदिक संस्थान दिल्ली के तत्त्वावधान में प्रकाशित होने वाले वेदों के अंग्रेजी अनुवाद का कार्य भी आपने ही सम्पन्न किया है। इस योजना के अन्तर्गत चारों वेदों का धारावाही अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द १९७६, पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति का जीवनचरित—अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार के सहलेखन में।

अंग्रेजी ग्रन्थ—

The Holy Vedas : International Veda Trust Stranger (S. A.), Wisdom of the Vedas., Inspiration from the Vedas., The message of the Vedas.

डा. सत्यकेतु विद्यालंकार

प्रसिद्ध इतिहासकार डा. सत्यकेतु का जन्म १९ सितम्बर १९०३ को सहारनपुर जिले के गांव आलमपुर में श्री आशाराम के यहाँ हुआ। इनकी शिक्षा गुरुकुल काँगड़ी में हुई जहां से इन्होंने १९२४ में विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की। १९३६ में वे फ्रांस गये और १९३८ में पेरिस विश्वविद्यालय से उन्होंने डी. लिट. की उपाधि ली। इससे पहले वे गुरुकुल कांगड़ी में ही इतिहास का अध्यापन करते रहे। गुरुकुल से उनका सम्बन्ध १९७४ में पुनः जुड़ा जब वे इसके कुलपति बने। १९८५ से १९८८ तक वे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति भी रहे। १६ मार्च

१९८९ को एक भीषण कार दुर्घटना के कारण उनका निधन हो गया।

ले. का.—डा. सत्यकेतु का लेखन विविध आयामी रहा। इतिहास उनका प्रिय विषय था। 'मौर्य साम्राज्य का इतिहास' ग्रन्थ पर उन्हें हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने मंगलाप्रसाद पुरस्कार से सम्मानित किया था। उपन्यास, इतिहास, राजनीति-विज्ञान, भारतीय संस्कृति आदि विषयों पर उन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे।

ले. का.—सात खण्डों में आर्यसमाज का इतिहास। यह महत्त्वपूर्ण ग्रन्थमाला १९८२ से १९८८ की अवधि में प्रकाशित हुई। इसके लेखन में उन्हें डा. हरिदत्त वेदालंकार, पृथ्वीसिंह मेहता विद्यालंकार, डा. भवानीलाल भारतीय तथा पं. दत्तात्रेय तिवारी का सहयोग मिला। इन खण्डों का वर्ण्य विषय निम्न प्रकार है—

प्रथम खण्ड—आर्यसमाज स्थापना की पृष्ठभूमि तथा १८८३ तक की गतिविधियां, **द्वितीय खण्ड**—आर्यसमाज का प्रचार प्रसार (१८८३-१९४७), **तृतीय खण्ड**—आर्यसमाज का शिक्षा कार्य, **चतुर्थ खण्ड**—आर्यसमाज और राजनीति (१८७५-१९२६), **पंचम खण्ड**—आर्यसमाज का साहित्य, **षष्ठ खण्ड**—स्वतन्त्रता संघर्ष और आर्यसमाज (१९२६-१९४७), **सप्तम खण्ड**—स्वातन्त्र्योत्तर युग में आर्यसमाज। डा. सत्यकेतु ने आचार्य रामदेव के सहलेखन में भारतवर्ष के इतिहास का तृतीय खण्ड लिखा। महात्मा गांधी और आर्यसमाज १९२४

वि. अ.—आर्यसंदेश का डा. सत्यकेतु स्मृति अंक मार्च १९९०

पं. सत्यचरण राय शास्त्री, सांख्य, वेदान्त, वेदतीर्थ

शास्त्रीजी हुगली जिलान्तर्गत श्रीरामपुर के निवासी थे। संस्कृत तथा बंगला साहित्य के उद्भट विद्वान् पं. सत्यचरण ने व्याकरण, निरुक्त आदि वेदांगों का अच्छा अभ्यास किया था। वे स्वयं सामवेदी थे अतः इन्होंने सामवेद पूर्वार्चिक (आग्नेयपर्व) का संस्कृत एवं बंगला में सुन्दर भाष्य किया है। उनकी इस व्याख्या को 'अधियाज्ञिका आध्यात्मिका भाष्यान्वयपदपाठव्याकरणाद्युपेता विविध टिप्पणी समलंकृता' कहा गया है। इसका प्रथम संस्करण १९२१ में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था। स्वामी दयानन्द रचित 'पंचमहायज्ञविधि' का इन्होंने बंगला अनुवाद भी किया था जो १८९८ में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ।

पं. सत्यदेव (भूतपूर्व मौलाना गुलामहैदर)

मौलाना गुलामहैदर अरबी, फारसी के उत्कृष्ट विद्वान् तथा मुसलमानों के मान्य मौलवी थे। उन दिनों पंडित भोजदत्त शर्मा आर्य मुसाफिर विद्यालय आगरा का संचालन करने के साथ-साथ 'आर्य मुसाफिर' नामक साप्ताहिक पत्र का सम्पादन भी करते थे। पं. भोजदत्त अपने पत्र में इस्लाम की आलोचना में जो कुछ लिखते उसे पढ़ कर मौलाना गुलामहैदर अत्यन्त उत्तेजित हो जाते। उनके मन में एक दिन विचार आया कि पं. लेखराम की ही भांति इस्लाम का आलोचक होने के कारण पं. भोजदत्त भी 'वाजिबुल क़त्ल' (मारे जाने योग्य) है। उन्होंने स्वयं पण्डितजी को कत्ल करने का मनसूबा बनाया और इसी उद्देश्य से पं. भोजदत्त के निकट गये। परन्तु जब उन्होंने पण्डितजी की दिव्य मूर्ति और भव्य व्यक्तित्व के दर्शन किए तो एक बार ही प्रभावित होकर अपने मन की विभिन्न धार्मिक शंकायें उनके समक्ष प्रस्तुत करने लगे। पं. भोजदत्त ने मौलाना की सभी शंकाओं का समाधान कर दिया और उन्हें अपने पास ही रहने के लिये कहा। इस प्रकार पं. भोजदत्त की निर्भीकता तथा धर्माचरण से प्रभावित होकर गुलामहैदर का हृदय परिवर्तित हो गया। अब उन्होंने पण्डित भोजदत्त को वह छुरा दिखाया, जिससे वे उनका वध करना चाहते थे। सारा काण्ड सामने आ जाने पर भी पण्डित भोजदत्त की स्थितप्रज्ञता में कोई अन्तर नहीं आया। उनकी आकृति पूर्व की ही भांति शांत, सौम्य तथा तेजस्वितापूर्ण बनी रही। अब तो मौलाना के हृदय में एक विचित्रसी हलचल मच गई और वे इस्लाम को त्याग कर पं. सत्यदेव बन गये।

मौलाना गुलामहैदर का शुद्ध होकर वैदिक धर्मी बन जाना आर्यसमाज की एक बहुत बड़ी उपलब्धि थी। इस अवसर पर इस्लाम के एक अन्य मर्मज्ञ आर्य विद्वान् पं. देवप्रकाश ने पण्डित सत्यदेव के पास वधाई रूप में एक नज्म लिखकर भेजी, जो उस समय 'आर्य मुसाफिर' में प्रकाशित हुई। उसकी कुछ पंक्तियाँ निम्न हैं—

तुझे वैदिक धर्म में ए सज्जन आना मुबारिक हो।
सच्चाई का जलवा ये दिखलाना मुबारिक हो।
अविद्या की घटाओं और खिज़ां के तुन्द झोंकों से।
निकल कर गुलशने वहदत में आजाना मुबारिक हो।

ले. का.—अर्शसवार (कुरान के अंग्रेजी अनुवादक मौलाना मुहम्मदअली ने 'अर्श' शब्द की जो व्याख्या लिखी थी, उसके उत्तर रूप में) (१९२४), कुरान में परिवर्तन (मौलाना मुहम्मदअली की पुस्तक 'जमा कुरान का उत्तर) (१८८४ वि.), अफशाए राज, नाराए हैदरी, कुरान में तहरीफ (कुरान में परिवर्तन का मूल उर्दू रूप), कुरान में इख्तलाफात १२ भाग, इस्लाम का परिचय (१९२८), इस्लामी धर्मानुसार सृष्टि उत्पत्ति (१९१४), रहमतमसीह महाशय की 'वेदों की तादात' नामक पुस्तक का उत्तर तथा हिन्दू आर्यों के विचारने योग्य वेद सम्वन्धी लेखों पर एक दृष्टि। रहमतमसीह बशीर शाहकोटी नामक एक ईसाई ने 'वेदों की तादात' नामक एक आक्षेपात्मक पुस्तक लिखी थी, जिसमें अथर्ववेद को वेदों में सम्मिलित कर 'वेदत्रयी' के स्थान पर चार वेदों की कल्पना करने के लिये स्वामी दयानन्द की कटु आलोचना की गई थी। यह पुस्तक उर्दू में दयानन्द मत खण्डनी सभा इन्द्रप्रस्थ ने प्रकाशित की। सुप्रसिद्ध आर्योपदेशक पं. विहारीलाल शास्त्री ने इसका उत्तर लिखा, जिसे पं सत्यदेव ने उपर्युक्त शीर्षक देकर पुस्तक रूप में जार्ज प्रिंटिंग वर्क्स कालभैरव, काशी से मुद्रित कर प्रकाशित किया। पुस्तक का उत्तरार्द्ध स्वयं पं. सत्यदेव ने लिखा था। शास्त्र परिचय—अर्थात् हिन्दू आर्यों के विचारने योग्य वेद आदि शास्त्रों पर एक दृष्टि संख्या (१९२५), वेद तथा ब्राह्मण ग्रन्थों में ओम्-मिर्जाई मत के एक आक्षेपकर्त्ता का उत्तर, जैनकाल भ्रमोच्छेद, जैन शास्त्रों की काट छांट, बौद्ध धर्मसमीक्षा, दिव्यनाद। पं. सत्यदेव ने अरबी की मूल आयतों सहित कुरान का हिन्दी अनुवाद करने की योजना बनाई थी। वे 'कुरान केवल अरबों के लिए है' शीर्षक एक अन्य बृहत् ग्रन्थ लिखने के भी इच्छुक थे, जो सम्भवतः नहीं लिख पाये। उन्होंने 'धर्मदिवाकर' नामक पत्र भी निकाला। पण्डित सत्यदेव वाराणसी के गोला दीनानाथ मुहल्ले के निवासी थे।

डा. सत्यदेव आर्य

आपका जन्म २६ दिसम्बर १९१२ को जोधपुर में हुआ। आपके पिता श्री च्यवन आर्य जोधपुर के कर्मठ आर्य कार्यकर्ता थे। डा. आर्य की शिक्षा एम. बी. बी. एस. तथा डी. पी. एच. (इंग्लैण्ड) तक हुई। आपने जोधपुर राज्य तथा राजस्थान राज्य के जन स्वास्थ्य-विभाग में कार्य किया तथा स्वास्थ्य सेवाओं के निदेशक पद से १९७१ में निवृत्त हुए। १९७३ में आप परोपकारिणी सभा के सभासद चुने गये। आपने स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेक उत्तम ग्रन्थ लिखे हैं। आपकी 'उपासना रहस्य' शीर्षक पुस्तक सत्य प्रकाशन, मथुरा से प्रकाशित हुई। डा. आर्य के अनेक उपयोगी लेख परोपकारीणी तथा अन्य आर्य पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं।

व. प.—एस. बी. १६१ बापूनगर जयपुर ३०२००४

पं. सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार

इनका जन्म २६ दिसम्बर १९०८ को नैरोबी (अफ्रीका) में श्री वैशाखीराम के यहां हुआ। गुरुकुल कांगड़ी में अध्ययन करने के उपरान्त आप १९३२ में स्नातक बने और वेदालंकार की उपाधि प्राप्त की। आपका कार्य क्षेत्र अफ्रीका महाद्वीप रहा जहां आपने वैदिक धर्म प्रचार के अतिरिक्त वस्त्र और होजियरी के व्यवसाय में उन्नति की। आप प्रभावशाली वक्ता, प्रसिद्ध दानी तथा कुशल कार्यकर्ता हैं।

ले. का.—एक विश्व की कल्पना।

व. प. ई—१८ ग्रेटर कैलाश नई दिल्ली ११००४८.

पं. सत्यदेव वासिष्ठ

संस्कृत के कवि तथा आयुर्वेद के जानकार पं. सत्यदेव वासिष्ठ का जन्म भाद्रपद पूर्णिमा सं. १९६९ को जालंधर जिले के माहलमहिला नामक ग्राम में श्री अनन्तराम सहजपाल के यहां हुआ। आपने वेद, व्याकरण, निरुक्त आदि शास्त्रों का गम्भीर अध्ययन किया। उन्होंने आयुर्वेद विषयक नाड़ी तत्त्वदर्शन नामक एक महाप्रबन्ध लिखा है जिसे शंकर दाजी पदक से पुरस्कृत किया गया था। वे गुरुकुल झज्जर में आयुर्वेद विभाग के अध्यक्ष रह चुके हैं।

ले. का.—सत्याग्रहनीतिकाव्य—हैदराबाद सत्याग्रह के घटनाचक्र को आधार बनाकर लिखा गया पांच अध्यायों में समाप्त संस्कृत काव्य (२०१५), इसका हिन्दी अनुवाद पं. रुद्रदेव त्रिपाठी (मन्दसौर निवासी) ने किया था।

पं. सत्यदेव विद्यालंकार

प्रसिद्ध पत्रकार तथा लेखक पं. सत्यदेव विद्यालंकार का जन्म १ अक्टूबर १८९७ को पंजाब के नाभा राज्य में हुआ था। इनके पिता श्री प्रभुदयाल खन्ना रेलवे में स्टेशन-मास्टर थे। १९०६ में इन्हें गुरुकुल कांगड़ी में प्रविष्ट कराया गया। १९२० में स्नातक बनने के पश्चात् आजीविका के लिये इन्होंने पत्रकारिता को चुना। गुरुकुल से विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त करने के अनन्तर आप दिल्ली आये और 'विजय' दैनिक का सम्पादन किया। तदनन्तर आप दैनिक हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स तथा दैनिक विश्वमित्र जैसे प्रतिष्ठित पत्रों के सम्पादक बने। जब प्रसिद्ध सनातनधर्मी नेता गोस्वामी गणेशदत्त ने दिल्ली से 'अमर भारत' नामक दैनिक पत्र निकालना आरम्भ किया तो सत्यदेवजी को इसका सम्पादक नियुक्त किया गया। यद्यपि पं. सत्यदेव का समग्र जीवन ही पत्रकारिता के लिये समर्पित था, किन्तु समय समय पर उनकी लेखनी से अनेक उत्कृष्ट ग्रन्थ भी निकले। २५ जून १९६५ को इनका निधन हुआ।

ले. का.—दयानन्द दर्शन-स्वामी दयानन्द के राष्ट्रवाद को प्रथम बार अत्यन्त भव्य रूप में प्रस्तुत करने वाला यह ग्रन्थ सर्वप्रथम स्वामीजी की जन्म शताब्दी के अवसर पर १९८१ वि. (१९२४) में प्रकाशित हुआ। राष्ट्रवादी दयानन्द शीर्षक से यह उपयोगी ग्रन्थ अब तक अनेक बार छप चुका है। जीवन चरित-स्वामी श्रद्धानन्द (१९३३,) लाला देवराज (१९९४ वि.), जीवन संघर्ष (महाशय कृष्ण की जीवनी) १९६४, आर्यसत्याग्रह (१९४२.)

पं. सत्यदेव विद्यालंकार

पं. सत्यदेव का जन्म ७ अप्रैल १९०४ को होशियार-पुर जिले के सरहाला कलाँ ग्राम में पं. ठाकुरदास के यहां हुआ। १९८२ वि. में आपने गुरुकुल कांगड़ी से विद्या-लंकार की उपाधि प्राप्त की। संस्कृत तथा हिन्दी में आपने एम. ए. किया तथा १९३९ से १९६६ तक डी. ए. वी. कालेज जालंधर में प्राध्यापक रहे। तत्पश्चात् कई वर्षों तक आपने दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित उपदेशक विद्यालय में आचार्य का दायित्व पूरा किया। आपने प्लेटो तथा शंकराचार्य के दर्शन की तुलना में एक अंग्रेजी ग्रन्थ लिखा है। आपके अनेक विचार पूर्ण निवन्ध आर्य पत्रों में प्रायः प्रकाशित होते हैं।

व. प.—शान्ति सदन, १४५/४ सेन्ट्रल टाउन-जालंधर नगर।

श्री सत्यदेव शास्त्री 'अशोक'

आप देशभक्त कुं. चांदकरण शारदा के सहयोगी कार्य-कर्ता थे। आपने शारदाजी का एक जीवनचरित लिखा जो १९४५ में प्रकाशित हुआ।

पं. सत्यदेव 'सिद्धान्त शिरोमणि'

आपका अध्ययन दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर में स्वामी वेदानन्द तीर्थ के पास हुआ। आपने सांख्यतीर्थ तथा वेदतीर्थ की उपाधियां प्राप्त कीं तथा शुद्धि विषय पर महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे।

ले. का.—शुद्धि स्मृति तथा शुद्धि पद्धति, शुद्धि स्मृति (देवल स्मृति), पतितों की शुद्धि शास्त्र सम्मत है।

स्वामी सत्यपति

सोनीपत जिले के फरमाणा नामक ग्राम के एक मुस्लिम परिवार में इनका जन्म १९८४ वि. (१९२७) में

हुआ। देश विभाजन के समय इनका परिवार शुद्ध होकर वैदिकधर्मी बन गया। अब इनका नाम मनुदेव रक्खा गया। इन्होंने दीर्घकाल तक गुरुकुल झज्जर में अध्ययन किया और कुछ समय तक पं. युधिष्ठिर मीमांसक से मीमांसा दर्शन भी पढा। चैत्र शुक्ला प्रतिपदा २०२७ वि., (७ अप्रैल १९७०) को इन्होंने संन्यास की दीक्षा ली और स्वामी सत्यपति का नाम धारण किया। वर्षों तक धर्म प्रचारार्थ यत्र तत्र भ्रमण करने के पश्चात् स्वामी सत्यपति १९८६ से गुजरात के साबरकांठा जिले के रोजड़ नामक ग्राम में एक आश्रम का संचालन कर रहे हैं। यहां छात्रों को शास्त्रों का अध्ययन एवं योग का प्रशिक्षण कराया जाता है।

ले. का.—योग मीमांसा, षड्दर्शन एवं योग प्रशिक्षण शिविर (१९८८), मेरा संक्षिप्त जीवनचरित और योग के कुछ नियम (१९८८)

व. प.—दर्शन योग विद्यालय, आर्य वन विकास क्षेत्र, रोजड़ डा. सागपुर (जिला साबरकांठा) ३८३३०७.

डा. (स्वामी) सत्यप्रकाश

वैदिक साहित्य के लब्धप्रतिष्ठ लेखक और विद्वान् डा. सत्यप्रकाश का जन्म आर्यसमाज के प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के यहां २४ अगस्त १९०५ को बिजनौर में हुआ। १९२३ में आपने आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण की। आपका उच्च अध्ययन इलाहाबाद विश्वविद्यालय में हुआ जहां से आपने १९२७ में रसायनशास्त्र में एम. एस-सी. और १९३२ में डी. एस-सी. की उपाधियाँ प्राप्त कीं। १९३० में आप इलाहाबाद विश्वविद्यालय के रसायन विभाग में डिमॉन्स्ट्रेटर के पद पर नियुक्त हुए और क्रमशः प्रवक्ता, प्रवाचक तथा प्रोफेसर के पदों पर कार्य करने के पश्चात् १९६७ में सेवा निवृत्त हुए। १० मई १९७१ को आपने संन्यास आश्रम की दीक्षा स्वामी ब्रह्मानन्द दण्डी से ग्रहण की। स्वामीजी ने अनेक बार विदेश यात्रायें कीं और यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका, आदि महाद्वीपों में धर्मप्रचार किया है। वे एकाधिक बार मॉरिशस भी गये हैं। परोपकारिणी सभा ने उन्हें अपना सदस्य मनोनीत किया। गत २० वर्षों से वे देश में सर्वत्र परिव्राजक के रूप में भ्रमण कर वैदिक सिद्धान्तों के प्रसार में संलग्न हैं। उन्होंने रसायनशास्त्र तथा विज्ञान पर अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे हैं, किन्तु यहाँ उनके वैदिक और आर्यसामाजिक साहित्य का ही उल्लेख किया जा रहा है।

ले. का.—संन्यास पूर्व का लेखन—वेदों पर अश्लीलता का व्यर्थ आक्षेप (१९३५), A Critical Study of the Philosophy of Dayanand. आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर १९३८ में प्रकाशित। यही ग्रन्थ १९७५ में Dayanand's Outline of Vedic Philosophy शीर्षक से पुनः छपा। ब्रह्मविज्ञान (ईश तथा श्वेताश्वतरोपनिषद् का पद्यानुवाद) (१९८० वि.) प्रतिबिम्ब (काव्य), Agnihotra (१९३७) तथा Humanitarian Diet-Religious Renaissance series के अन्तर्गत छपी।

संन्यास ग्रहण करने के पश्चात् का साहित्य—

अंग्रेजी ग्रन्थ—Vincit Veritus—दक्षिण अफ्रीका में दिये गये व्याख्यान 1971, Light within 1974, Enchanted Island—(वेद मंत्रों की व्याख्या) The Nectareal songs of the Vedas. (वेद मंत्रों की व्याख्या), 1975, Man and his Raligion, God and his Divine Love, The self, Life and consciousness, 1983. Three Hazards of Life. The AryaSamaj : A Renaissance 1981, Architects of AryaSamaj (Edited) 1987, Vedic Sandhya, Agnihotra (Ritual) स्वामी दयानन्द की निर्वाण शताब्दी पर—Dayanand and his Mission 1983, Dayanand Commemoration Volume 1983. हिन्दी ग्रन्थ—प्रभु के मार्ग पर (प्रवचन-संग्रह) १९८१, प्रार्थना और चिन्तन (बर्मा में प्रदत्त प्रवचनों का संग्रह) १९८१, जगत् की उत्पत्ति (सत्यार्थप्रकाश के ८वें समुल्लास की व्याख्या) १९८२, मनुष्य और मानव-धर्म १९७५, ईश्वर और ईश्वरीय ज्ञान, अध्यात्म और आस्तिकता १९८४, महर्षि दयानन्द समग्र क्रान्ति के दूत

(सम्पादन) १९८५, आर्यसमाज संघर्ष और समस्यायें १९८७.

प्राचीन भारत में विज्ञान विषयक ग्रन्थ—प्राचीन भारत में रसायन का विकास, प्राचीन भारत के वैज्ञानिक कर्णधार, Founders of Sciences in Ancient India, (2 Volumes), Coinage in Ancient India. (2 Volumes), Critical Study of Brahmagupta and his Works. Geometary in Ancient India.

योग विषयक ग्रन्थ—पातंजल राजयोग (अंग्रेजी में योग-दर्शन की व्याख्या) १९७५, योग और उसकी अनुभूमिका १९८४, योग : सिद्धांत और साधना, १९८५, योग और प्राण सौष्ठव १९८७, योग, प्राणायाम और चेतनाएँ १९५८.

वैदिक साहित्य की व्याख्या—वेद प्रतिष्ठान दिल्ली के द्वारा चारों वेदों के अंग्रेजी अनुवाद की भूमिका और सम्पादन, The Critical and Cultural Study of Satpath Brahman. (गंगाप्रसाद उपाध्याय कृत शतपथ-ब्राह्मण भाष्य की भूमिका) Parables and Dialogues from the Upanishads. 1984, आपस्तम्ब शुल्व सूत्र, कर्पादि भाष्य (संस्कृत टीका तथा अंग्रेजी अनुवाद) १९६८, बोधायन शुल्व सूत्र (संस्कृत व्याख्या तथा अंग्रेजी अनुवाद) १९६८.

वि. अ.—परिव्राजक संन्यासी (अभिनन्दन ग्रन्थ) विज्ञान परिषद् प्रयाग १९७६.

व.प.—आर्यसमाज मंदिर मार्ग, नई दिल्ली ११०००१.

स्वामी सत्यप्रकाश यति

इनके द्वारा रचित निम्न ग्रन्थों का उल्लेख मिलता है—

ले. का.—ओम् प्रत्यक्ष—दयानन्द जन्म शताब्दी सभा मथुरा के अवसर पर १९२४, ब्रह्मबोधिनी संध्या—१९२३, आर्यसमाज के १० नियम १९८१ वि.

सत्यप्रकाश

शिमला के डी. ए. वी. हाई स्कूल के मुख्याध्यापक श्री सत्यप्रकाश का अध्ययन एम. एस-सी. तक हुआ था।

ले. का.—ऋषि दयानन्द के जीवन विषयक रोचक संस्मरणों का अंग्रेजी में संग्रह। इसकी भूमिका डा. गोकुलचंद नारंग ने लिखी थी।

पं. सत्यप्रिय शास्त्री

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के आचार्य पं. सत्यप्रिय शास्त्री का जन्म भाद्रपद अमावस्या १९९० वि. (२१ अगस्त १९३३) को कुरुक्षेत्र जिले के मन्धार नामक ग्राम के चौधरी बूलचन्द के हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल धरौण्डा में हुई। तदनन्तर आप दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर में प्रविष्ट हुए जहां से इन्होंने 'सिद्धान्त शिरोमणि' की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इसके अतिरिक्त आपने वाराणसेय संस्कृत-विश्वविद्यालय से शास्त्री तथा मेरठ विश्वविद्यालय से संस्कृत विषय लेकर एम. ए. भी किया। आर्यसमाज द्वारा संचालित हिन्दी रक्षा आन्दोलन तथा गोरक्षा आन्दोलन में आपने भाग लिया और कारावास की यातनायें सहीं। १९६० में आप दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय में अध्यापक के रूप में नियुक्त हुए। १९७३ में आप इस विद्यालय के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किये गये। आर्यसमाज के उपदेशक के रूप में आपने व्यापक रूप से देश भ्रमण किया है।

ले. का.—भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम और आर्यसमाज—१९६९ इसका परिवर्धित संस्करण १९९० में छपा है। संध्या-भाष्य १९७३, आर्य वीरों की शौर्य-गाथाएँ १९७३, आध्यात्मिक पथ १९७८, आर्यवीर दल—इतिहास, व्याख्या, उद्देश्य १९८४, एक आग्नेय व्यक्तित्व (स्वामी अग्निदेव भीष्म का जीवनचरित)

व. प.—दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार (हरयाणा)।

श्री सत्यपाल पथिक

श्री पथिक का जन्म १३ मार्च १९३८ को स्यालकोट (पंजाब पाकिस्तान) में हुआ। सम्प्रति ये अमृतसर में निवास करते हैं। १९६५ से इन्होंने आर्यसमाज का प्रचार-कार्य आरम्भ किया। अब तक इनकी १२ भजन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। श्री पथिक वैदिक धर्म प्रचार हेतु मई १९७३ से अप्रैल १९७५ पर्यन्त सिंगापुर में रहे थे। आपने महर्षि दयानन्द जीवन गाथा काव्य लिखा है, जिसका प्रकाशन १९७८ में हुआ।

व. प.—७० ए. गोकुलनगर, मजीठारोड़ अमृतसर-१४३००१

पं. सत्यपाल शास्त्री

शास्त्रीजी का जन्म १५ अगस्त १९२७ को मेरठ जिले के ग्राम कालन्द में पं. कबूलसिंह त्यागी के यहां हुआ। इनका प्रारम्भिक शिक्षण गुरुकुल डौरली में हुआ जहां से आपने संस्कृत मध्यमा परीक्षा उत्तीर्ण की। १९५६ में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश में आप उपदेशक बने तथा १९५७ में हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भाग लिया। तत्पश्चात् अमरोहा, हापुड़ तथा आर्यसमाज करोलबाग नई दिल्ली में पुरोहित रहे। आपने हिन्दी तथा संस्कृत में एम. ए. परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं तथा मेरठ में प्राध्यापक भी रहे।

ले. का.—वैदिक पंचमहायज्ञ पद्धति—१९६१, हम सुखी कैसे रहें १९६३, (इसका गुजराती अनुवाद श्रीकान्त भगतजी ने किया) आर्योदय के सत्यार्थप्रकाश विशेषांक की समालोचना १९६३, यज्ञ दर्शन १९६५, वेद में शरीर-विज्ञान १९६५, वैदिक सिद्धांत रत्नावली (आर्योद्देश्य-रत्नमाला की व्याख्या २०२८ वि. १९७२)

व. प.—१२८ सदनपुरी कंकर खेड़ा, मेरठ कैंट

सत्यबंधुदास

न्यायमूर्ति शारदाचरण मित्र द्वारा प्रकाशित देव-नागर नामक मासिक पत्र में, जो कलकत्ता से प्रकाशित होता था, श्री सत्यबंधुदास लिखित 'श्री श्री दयानन्द-चरित' की ११ किस्तें छपीं। यह बंगला में लिखा गया स्वामी दयानन्द का एक सुन्दर जीवनचरित था जो स्वामीजी के प्रथम आगरा गमन तक जाकर अधूरा ही रह गया। 'श्री श्री दयानन्द चरित' का प्रकाशन १९०७ में हुआ था और यह देवनागरी लिपि में छपता था। आचार्य प्रियदर्शन से अनूदित तथा इस कोशकार द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ १९८६ में आर्यसमाज कलकत्ता द्वारा ग्रन्थाकार प्रकाशित हुआ। बहुत प्रयत्न करने पर भी इसके लेखक श्री सत्यबंधुदास का विस्तृत परिचय उपलब्ध नहीं होता किन्तु श्री दिनेश शर्मा ने मुझे बताया कि सत्यबंधुदास छद्म नाम था, और इसे लिखने वाले हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक पं. अक्षयवट मिश्र थे।

सत्यभूषण योगी वेदालंकार

आचार्य रामदेव के पुत्र पं. सत्यभूषण योगी का जन्म १४ नवम्बर १९१७ को गुरुकुल कांगड़ी में ही हुआ। आपने इसी विश्वविद्यालय से १९९५ वि. (१९३९) में वेदालंकार की उपाधि प्राप्त की। आपने हिन्दी तथा संस्कृत में एम. ए. परीक्षाएं उत्तीर्ण की हैं। प्रारम्भ में आपने गुरुकुल कांगड़ी में ही तुलनात्मक धर्म विज्ञान का अध्यापन किया। पश्चात् वे सेंट स्टीफेंस कालेज दिल्ली में संस्कृत व हिन्दी के अध्यापक रहे।

ले. का.—स्वामी दयानन्द (जीवनी) स्वामी दर्शनानन्द (जीवनी) १९७२, निरुक्त—डा. लक्ष्मणस्वरूप के ग्रन्थ का हिन्दी अनुवाद, मनुस्मृति (प्रथम दो अध्याय), मण्डूक एवं पुरुष सूक्तों का विशेष अध्ययन।

पं. सत्यव्रत अग्निवेश

अग्निवेशजी का जन्म भिवानी जिले के झोंझूकलां ग्राम में श्री धनसिंह के यहां १९४७ में हुआ। १९५९ में ये गुरुकुल झज्जर में प्रविष्ट हुए और व्याकरणाचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। १९७१ में इसी

गुरुकुल में आपने मुख्याध्यापक का पद ग्रहण किया। १६ दिसम्बर १९७८ को इनका निधन हो गया।

ले. का.—सुखी जीवन, दैनन्दिनी, महापुरुषों के संग में।

पं. सत्यव्रत उपाध्याय

आप पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के अनुज थे। आपने डी. ए. वी. हाई स्कूल प्रयाग में अध्यापक के पद पर कार्य किया। आपकी शिक्षा बी. ए. एल. टी. तक हुई थी। आपने पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के सहलेखन में वैदिक उपनयन-वेदारम्भ पद्धति (१९३०) तथा वैदिक-विवाह-पद्धति लिखी। दोनों पुस्तकें कला प्रेस प्रयाग से प्रकाशित हुई।

डा. सत्यव्रत राजेश

राजेशजी का जन्म सहारनपुर जिले के आर्यनगर ग्राम में २६ नवम्बर १९३१ को श्री किशनलाल तथा माता मुकुन्दी देवी के यहां हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर में हुई। १९६६ में आपने आगरा विश्वविद्यालय से एम. ए. (संस्कृत) की परीक्षा पास की। तत्पश्चात् गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से 'महर्षि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य में समाज का स्वरूप' विषय लेकर १९८१ में पी-एच. डी. की उपाधि ग्रहण की। विगत अनेक वर्षों से डा. राजेश गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में ही वैदिक साहित्य विभाग में प्रवक्ता के पद पर कार्यरत हैं।

ले. का.—यमयमी सूक्त की आध्यात्मिक व्याख्या, वृक्षों में जीव और हिंसा: एक विवेचन, महर्षि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य में समाज का स्वरूप (प्रथम भाग)

व. प.—वेद विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

डा. सत्यव्रत शर्मा 'अजेय'

डा. अजेय का जन्म सहारनपुर जिले के ग्राम डंघेड़ा में पं. बालमुकुन्द शर्मा के यहां वैशाख अमावस्या १९९१ वि. को हुआ। इनका अध्ययन एम. ए. और साहित्याचार्य तक हुआ। मेरठ विश्वविद्यालय से इन्होंने हिन्दी में लावनी साहित्य पर शोध कार्य करने के पश्चात् पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। विगत कई वर्षों से ये गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के उपाचार्य पद पर कार्य कर रहे हैं।

ले. का.—मंगल ज्योति, शंकर स्तवन, हीरक हार (२ भाग), भक्तामर स्तोत्र (पद्यानुवाद) आदि काव्य ग्रन्थों के अतिरिक्त आपकी एक शोधकृति 'पं. जगदम्बाप्रसाद हितैषी: व्यक्तित्व एवं कृतित्व' भी छपी है। आर्यसमाज की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपके लेख प्रकाशित होते हैं।

व. प.—गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर (हरिद्वार)

पं. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

आर्यसमाज के यशस्वी लेखक, शिक्षाविद् तथा चिन्तक पं. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार का जन्म ५ मार्च १८९८ को लुधियाना जिले के सवद्दी ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम पं. बालकराम शर्मा था। आपने गुरुकुल कांगड़ी में अध्ययन किया और संवत् १९७५ वि. (१९१९) में सिद्धान्तालंकार की उपाधि ग्रहण की। तत्पश्चात् आप दक्षिण में कोल्हापुर, मैसूर, बैंगलोर तथा मद्रास आदि स्थानों में धर्म प्रचार कार्य करते रहे। १९२३ में दयानन्द सेवा सदन के आजीवन सदस्य बन कर आपने गुरुकुल की सेवा का व्रत लिया। १५ जून १९२६ को आपका विवाह श्रीमती चन्द्रावती लखनपाल से हुआ जो एक विदुषी नारी तथा प्रसिद्ध लेखिका थीं। आपने १९३० में महात्मा गांधी द्वारा संचालित सत्याग्रह संग्राम में भी भाग लिया। सत्यव्रतजी गुरुकुल कांगड़ी में उपाध्याय, मुख्याधिष्ठाता (१९३५-४०) तथा कुलपति (१९६१-६६) के पदों पर रहे। १९६० में आपको समाजशास्त्र के मूल-तत्त्व नामक ग्रन्थ पर हिन्दी का प्रसिद्ध मंगलाप्रसाद पुरस्कार प्राप्त हुआ। पंजाब सरकार के भाषा विभाग ने १९७२ में आपको आपकी साहित्यिक सेवाओं के लिये पुरस्कृत किया। १९६४ में आप भारत के तत्कालीन

राष्ट्रपति डा. राधाकृष्ण द्वारा राज्य-सभा के सदस्य के रूप में मनोनीत किये गये। १९७७ में आपकी पुस्तक 'वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार' पर १२०० रु. का पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय स्मारक पुरस्कार मिला। १९८१ में आप भारत के राष्ट्रपति द्वारा संस्कृत के विशिष्ट विद्वान् के रूप में सम्मानित हुए। आप अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन नैरोबी (केन्या) के अध्यक्ष पद पर निर्वाचित हुए। आपने अनेक देशों की यात्रा कर धर्म-प्रचार किया है। गुरुकुल काँगड़ी ने आपको विद्यामार्तण्ड की उपाधि से भी विभूषित किया है। भारतीय विद्या भवन ने उनकी पुस्तक 'वैदिक विचारधारा का वैज्ञानिक आधार' को पुरस्कृत किया है।

ले. का.—शास्त्र व्याख्या ग्रन्थ—

१. एकादशोपनिषद् २ भाग १९५४, उपनिषद् प्रकाश, श्रीमद्भगवद्गीता (धारावाही हिन्दी भाष्य) १९६५, ईशावास्योपनिषद् भाष्य, चतुर्वेद गंगा लहरी (चारों वेदों का स्वाध्यायोपयोगी संकलन) १९९०.

सांस्कृतिक ग्रन्थ—

आर्य संस्कृति के मूल तत्त्व १९५३, वैदिक विचार-धारा का वैज्ञानिक आधार, वैदिक संस्कृति के मूल तत्त्व, सत्य की खोज, ब्रह्मचर्यसंदेश १९३४, संस्कारचन्द्रिका १९७७, वैदिक संस्कृति का संदेश, गीतासार।

अंग्रेजी ग्रन्थ—Heritage of Vedic Culture, Exposition of Vedic Thought, Glimpses of the Vedas, Is Rigveda Sumerian Document ? (डा. प्राणनाथ विद्यालंकार की इस धारणा का खण्डन कि वेद सुमेरियन सभ्यता के पुरालेख हैं) Reminiscences and Recollections of a Vedic Scholar (आत्म वृत्तान्त), Confidential Talks to Youngmen (ब्रह्म-चर्य संदेश का अंग्रेजी संस्करण)।

वि. अ.—वैदिक साहित्य, संस्कृति और समाज दर्शन (डा. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार—व्यक्तित्व एवं कृतित्व) सं. विष्णुदत्त राकेश १९८८.

व. प.—डब्लू ७७ ए. ग्रेटर कैलाश (१) नई दिल्ली ११००४८.

सत्यव्रत स्नातक

संस्कृत भाषा में स्वामी दयानन्द के जीवन को आधार बना कर नाटक की रचना करने वाले सिद्धहस्त लेखक तथा विद्वान् पं. सत्यव्रत स्नातक (सत्यव्रत बी. कामदार) का जन्म ३ नवम्बर १९०२ को गुजरात के अमरेली नगर में श्रीमाली जैन परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम बेचर भाई त्रिक्रमजी कामदार तथा माता का नाम श्रीमती मणि बेन था। बाल्यकाल में ही इनके माता पिता का निधन हो गया। श्री हीराचन्द रायचन्द मास्टर नामक एक सज्जन ने इन्हें १९१५ में मुम्बई प्रदेश आर्य विद्या सभा द्वारा सान्ताक्रूज बम्बई में संचालित गुरुकुल में प्रविष्ट करा दिया। उस समय संस्कृत के उद्भट आर्य विद्वान् पं. मयाशंकर शर्मा इस गुरुकुल के आचार्य थे। उन्होंने बालक चतुर्भुज को 'सत्यव्रत' नाम देकर गुरुकुल में प्रविष्ट कर लिया। १९३६ में सत्यव्रत ने गुरुकुल की सर्वोच्च परीक्षा उत्तीर्ण की तथा स्नातक बन कर 'वेद-विशारद' उपाधि ग्रहण की। स्नातक परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिये इन्होंने 'वैदिक त्रैतवाद' शीर्षक महानिबन्ध लिखा जिसकी सर्वत्र प्रशंसा हुई। तत्पश्चात् आपने गुरुकुल घाट-कोपर तथा आर्यसमाज माटुंगा बम्बई द्वारा संचालित दयानन्द विद्यालय के प्रबन्ध को संभाला। अनेक वर्षों तक आप आर्यसमाज काकड़वाड़ी बम्बई तथा मुम्बई प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री रहे। सभा के मुखपत्र आर्य-प्रकाश का कई वर्षों तक सम्पादन भी किया।

ले. का.—वैदिक त्रैतवाद—'वेदविशारद' परीक्षा के लिये यह निबन्ध मूलतः संस्कृत में लिखा गया था। इसका गुजराती रूपान्तर १९८४ वि. में प्रकाशित। मूर्ति-मीमाँसा १९८१ वि., अस्पृश्यता नुं कलंक १९८८ वि., क्रान्तिकारक दयानन्द १९९० वि., महर्षि चरितामृतम् नाटक २०२१ वि., महर्षि चरितामृतम् नाटक (हिन्दी अनुवाद सहित) २०३६ वि. (१९७९), संस्कारविधि (मराठी अनुवाद, २०२४ वि.) आर्यो अने सन्तति नियमन—(१९६७)

व. प.—स्नातक सदन, भिमानी रोड़ माटुंगा, बम्बई

पं. सत्यश्रवा

विख्यात वैदिक विद्वान् पं. भगवद्दत्त के पुत्र सत्यश्रवा का जन्म २४ अगस्त १९२४ को महाराष्ट्र के नासिक नगर में हुआ। पिता पं. भगवद्दत्त संस्कृत के अद्वितीय पण्डित तथा डी. ए. वी. कालेज लाहौर में शोध विभाग के अध्यक्ष थे। उनकी माता पं. सत्यवती शास्त्री पंजाब की प्रथम महिला शास्त्री थीं। पंजाब विश्वविद्यालय लाहौर से इन्होंने १९४५ में इतिहास में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। १९४६ से देश विभाजन पर्यन्त ये उक्त विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग से सम्बद्ध रहे। तत्पश्चात् आपने भारत सरकार के पुरातत्त्व विभाग में उच्च अधिकारी के रूप में कार्य किया। लखनऊ के राजकीय संग्रहालय के अध्यक्ष पद पर भी रहे। पं. भगवद्दत्तजी के निधन के पश्चात् आपने उनके ग्रन्थों के सम्पादन तथा अंग्रेजी अनुवाद का महत्त्वपूर्ण कार्य प्रणव प्रकाशन दिल्ली की स्थापना कर किया। इस संदर्भ में आपके द्वारा सम्पादित एवं अनूदित निम्न ग्रन्थ प्रकाशित हुए—वैदिक वाङ्मय का इतिहास प्रथम खण्ड (ब्राह्मण तथा आरण्यक) १९७४, वैदिक वाङ्मय का इतिहास द्वितीय खण्ड—(वेदों के भाष्यकार) १९७६, वैदिक वाङ्मय इतिहास तृतीय खण्ड (अपौरुषेय वेद) और शाखा १९७८, A Comprehensive History of Vedic Literature.

व. प.—प्रणव प्रकाशन १।२८ पंजाबी बाग, नई दिल्ली ११००२६

सत्यानन्द आर्य

प्रसिद्ध दानी स्व. लालमन आर्य के कनिष्ठ पुत्र श्री सत्यानन्द आर्य का जन्म १२ अक्टूबर १९४७ को ग्राम शेरड़ा जिला श्रीगंगानगर में हुआ। इनकी शिक्षा दीक्षा कलकत्ता में हुई जहां से आपने एम. काम. की परीक्षा पास की। अपने व्यावसायिक कार्यों को संभालते हुए श्री आर्य आर्यसमाज की विभिन्न प्रवृत्तियों में प्रारम्भ से ही रुचि लेते रहे हैं। वे अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेद प्रतिष्ठान के मंत्री हैं। विश्व के महापुरुषों के रोचक एवं शिक्षाप्रद प्रसंगों का संग्रह कर आपने 'जीवन सौरभ' नामक ग्रन्थ का प्रणयन किया। इसमें आर्यसमाज के महापुरुषों के जीवन प्रसंग भी वर्णित हुए हैं।

व. प.—'सुक्षिति', ७।७८ पंजाबी बाग (पश्चिम), नई दिल्ली—११००२६

स्वामी सत्यानन्द

ऋषि दयानन्द का श्रद्धापूरित तथा भक्तिभावापन्न शैली में जीवनचरित लिखने वाले स्वामी सत्यानन्द का जन्म १८६१ में ग्राम जग्गू का मोरा पोठोहार (जिला रावलपिण्डी) में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। सोलह-सत्रह वर्ष की आयु में गृहत्याग कर ये साधु सन्तों की संगति में रहने लगे। कालान्तर में ये जैन धर्म की ओर आकृष्ट हुए तथा श्वेताम्बर सम्प्रदाय में दीक्षित होकर उन्होंने अनेक कृच्छ साधनाएं भी कीं, किन्तु इन्हें आत्मिक शान्ति नहीं मिली। तब ये आर्यसमाज की ओर आकृष्ट हुए तथा दिसम्बर १८९८ में विधिवत् संन्यास की दीक्षा ग्रहण की। चतुर्थाश्रमी बन कर इन्होंने विस्तृत स्वाध्याय किया तथा वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों की मधुर एवं आकर्षक शैली में कथायें करने लगे। उच्च कोटि के कथावाचक होने के कारण इन्हें असाधारण ख्याति मिली। १९२१ में ये गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य बनाये गये और १९२४ तक इस पद पर रहे। लाहौर में अमृतधारा के आविष्कारक पं. ठाकुरदत्त शर्मा के निवास पर ही आप प्रायः रहा करते थे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने जब गुरुदत्त भवन में दयानन्द उपदेशक विद्यालय प्रारम्भ किया, तो स्वामी सत्यानन्द ने इस कार्य हेतु एक लाख रुपया एकत्र कर सभा को भेंट किया। ९ अक्टूबर १९२७ को जब आप महाशय राजपाल (आर्यसमाज के प्रसिद्ध प्रकाशक) की दूकान पर लाहौर के अनारकली बाजार में बैठे थे, तो अब्दुलअजीज नामक एक मुसलमान ने इन्हें ही 'रंगीला रसूल' का प्रकाशक राजपाल समझ कर इन पर छुरे का घातक प्रहार किया, किन्तु स्वामीजी घायल होकर ही रह गये।

कालान्तर में स्वामीजी का झुकाव सन्तमत की ओर हो गया। अब ये अपने भक्तों को राम नाम की दीक्षा देने

लगे तथा अपने नवीन विचारों को पुस्तक रूप में निबद्ध करने लगे। आर्यसमाज में इनकी प्रतिष्ठा कम हो गई, परन्तु राम नाम की दीक्षा लेने वाले नवीन भक्तों ने इन्हें पूर्ण प्रश्रय दिया। ९८ वर्ष की दीर्घायु भोग कर स्वामी सत्यानन्द १३ नवम्बर १९६० को परलोक वासी हुए।

ले. का.—स्वामी सत्यानन्द उच्च कोटि के लेखक थे। उनकी सर्जनात्मक प्रतिभा श्रीमद्दयानन्दप्रकाश के रूप में व्यक्त हुई। आर्यसमाज के प्रवर्त्तक का यह जीवनचरित भावप्रधान शैली तथा साहित्यिक गुणों के कारण हिन्दी के जीवनी साहित्य में अनुपम है।

ले. का.—श्रीमद्दयानन्द प्रकाश—स्वामीजी की इस सर्वोत्कृष्ट साहित्य कृति का प्रथम संस्करण राजपाल, अध्यक्ष आर्य पुस्तकालय लाहौर ने (१९७५ वि. १९१८) में प्रकाशित किया था। दयानन्द वचनामृत (१९२०), आर्य सामाजिक धर्म—(आर्यसमाज के नियमों की व्याख्या), एकादशोपनिषद्—संग्रह—ईश से श्वेताश्वतरोपनिषद् पर्यन्त ग्यारह उपनिषदों का धारावाही अनुवाद (१९८७ वि.), वाल्मीकीय रामायण सार (पद्य), श्रीमद्भगवद्गीता भाषानुवाद, सत्य उपदेश माला—(इसका उर्दू अनुवाद भी छपा था) भक्तियोग और ईश्वर सिद्धि, ईश्वर दर्शन (उसकी राह पर १९६२), भगवद् प्राप्ति क्यों और कैसे ?, विजय का मूलमन्त्र, संध्यायोग—१९१७, वेद पाठ (वैदिक भक्ति प्रदर्शन) ज्ञान ज्योति (१९७० वि.)

सत्यानन्द नैष्ठिक

श्री नैष्ठिक का जन्म जिला करनाल के ग्राम कतलहेड़ी में १९३९ में हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल सिंहपुरा में हुई। तत्पश्चात् ये गुरुकुल झज्जर तथा आर्ष गुरुकुल एटा में भी पढ़े। यहाँ से इन्होंने व्याकरणाचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। आपने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से वेद तथा संस्कृत में एम.ए. भी किया है। इन्होंने गुरुकुल झज्जर में कई वर्षों तक निःशुल्क अध्यापन किया तथा सम्प्रति धर्मप्रचार में संलग्न हैं।

ले. का.—आर्यसामाजिक पत्र-पत्रिकाओं में दो दर्जन लेख तथा पंचमहायज्ञ, आदर्श परिवार एवं गाय-विश्व की माता आदि कृतियाँ प्रकाशनाधीन हैं।

व. प.—द्वारा आचार्य विजयपाल, डॉ. गुरुकुल झज्जर (रोहतक)

पं. सत्यानन्द वेद वागीश

श्री वेद वागीश का जन्म अजमेर जिले के लीड़ी नामक ग्राम के एक कृषक परिवार में १० अक्टूबर १९३३ को हुआ। इनके पिता का नाम श्री ओंकारसिंह था। आपकी शिक्षा गुरुकुल चित्तौड़गढ़ में हुई जहाँ से आपने 'वेदवागीश' की उपाधि प्राप्त की। विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में आपने अध्यापन का कार्य किया तथा परोपकारिणी सभा में ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों के संशोधन एवं सम्पादन का दायित्व भी सम्भाला। अब आप स्वतन्त्र रूप से धर्मोपदेश तथा संस्कारादि कृत्य करते कराते हैं। पं. सत्यानन्द व्याकरण के प्रौढ़ विद्वान् तथा उत्तम वक्ता हैं।

ले. का.—नाम निधि :(नामकरण संस्कार की व्याख्या) २०४५ वि., अन्त्येष्टि संस्कार २०४५ वि. पाणिनीय शब्दनुशासनम् (अष्टाध्यायी सूत्रपाठ, उणादि सूत्र पाठ, लिंगानुशासन सूत्र पाठ, धातु पाठ, गणपाठ, शिक्षा सूत्र पाठानां संग्रहः) २०४३ वि.।

व. प.— २७२, आर्यनगर, अलवर—३०१००१ (राज.)।

पं. सत्यानन्द शास्त्री एम. ए.

देश विभाजन से पूर्व आप दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय लाहौर में आचार्य थे। केन्द्रीय सचिवालय में कार्य करने के पश्चात् आपने अवकाश ग्रहण किया है। आप स्वामी वेदानन्द तीर्थ के शिष्य हैं तथा विरजानन्द वैदिक संस्थान गाजियाबाद में मंत्री पद पर कार्य कर चुके हैं।

ले. का.—क्या आर्य लोग मांसाहारी थे ? (२०२५ वि.), आर्याभिविनय का सम्पादित संस्करण (२०२६ वि.), आर्याभिविनय का अंग्रेजी अनुवाद (Devotional Texts

of the Aryas) १९७२, आपने स्वामी वेदानन्द तीर्थ का एक खोजपूर्ण जीवनचरित लिखा है जो वेदप्रकाश दिल्ली में धारावाही छप रहा है।

स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

स्वामीजी पहले कबीरमत के अनुयायी थे। बाद में आर्यसमाजी बन गये। आपने कबीर मत के खण्डन में निम्न ग्रन्थ लिखे—पाखण्ड मत कुठार १९५० वि. (१८९३), कबीरपंथ की समीक्षा (१९६० वि. १९०४).

सत्येन्द्रबंधु आर्य

श्री आर्य का जन्म बुलन्दशहर जिले के वीर गांव टिटोला नामक ग्राम में १९०१ में हुआ। इनकी आरम्भिक शिक्षा डी.ए.वी. कॉलेज अनूपशहर में हुई। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के कार्यालय में आपने मुख्य लिपिक के पद पर कार्य किया। आपका निधन २१ मई १९७१ को हुआ।

ले. का.—मनुष्य हितैषिणी १९६४, आर्यसमाज के कार्यों का सिंहावलोकन १९६६, शिव बोध १९६९.

सतीशकुमार शर्मा

डा. शर्मा का जन्म २८ मार्च १९५४ को हुआ। इनकी शिक्षा एम. ए. (समाजशास्त्र) तथा पी-एच.डी तक पंजाब विश्वविद्यालय में हुई। ये कुछ काल तक महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ विश्वविद्यालय वड़ोदरा में समाजशास्त्र के प्रवक्ता रहे। तत्पश्चात् आपने पंजाब विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग में शोध सहायक के रूप में कार्य किया।

ले. का.—Social Movements and Social Change : A Study of Arya Samaj and Untouchables in Punjab. 1985.

व. प.—समाजशास्त्र विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़-१६००१४

सतीशचन्द्र शर्मा

श्री शर्मा का जन्म १ जनवरी १९५२ को हरयाणा के पिहोवा नगर में श्री ठाकुरदत्त वैद्य के यहां हुआ। इन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से साहित्याचार्य तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए. किया। दयानन्द शोध पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय से १९९० में इन्होंने 'मनुस्मृति और याज्ञवल्क्य स्मृति का आलोचनात्मक और तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर पी-एच. डी. की उपाधि ग्रहण की। इन्होंने योगदर्शन पर एक सुन्दर टीका भी लिखी है।

व. प.—एल. २८५ न्यू कालोनी पलवल (हरयाणा)

सतीशचन्द्र शुक्ल

स्वामी दयानन्द द्वारा संस्थापित वैदिक यंत्रालय के सुयोग्य प्रबंधक सतीशचन्द्र शुक्ल का जन्म २८ अक्टूबर १९४२ को अजमेर में श्री राधाकृष्णजी के यहाँ हुआ। १९६३ में इन्होंने इलाहाबाद से मुद्रणकला का विधिवत् प्रशिक्षण लेकर डिप्लोमा प्राप्त किया तथा १९६५ में वैदिक यंत्रालय के सहायक प्रबंधक के पद पर नियुक्त हुए। १९७३ में वे प्रबंधक के बनाये गये। श्री शुक्ल साहित्यिक अभिरुचि सम्पन्न हैं तथा महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों के मुद्रण कार्य को अत्यन्त निष्ठा, दक्षता तथा परिश्रम से कर रहे हैं। वे यदा कदा सामयिक समस्याओं पर लिखते भी हैं।

ले. का.—आर्यसमाज के प्रखर व्यक्तित्व (सम्पादन) १९९०, अन्य ग्रन्थ—मुद्रणकला, प्रिण्टर्स गाइड.

व. प.—वैदिक यंत्रालय, अजमेर ३०५००१

स्वामी सदानन्द संन्यासी

स्वामी सदानन्द आर्यसमाज के एकमात्र बंगाली संन्यासी थे। १९२० में वे मोहन आश्रम हरिद्वार में प्रविष्ट हुए तथा १९२२ तक वहां रहकर वैदिक ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया। गुरुकुल कांगड़ी के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द से भी आपका घनिष्ठ परिचय तथा गुरु-शिष्य सम्बन्ध था। १९२३ में स्वामी सदानन्द काश्मीर भ्रमण के उपरान्त रावलपिंडी आए तथा गुरुकुल पोठोहार के आचार्य पंडित मुक्तिराम उपाध्याय (स्वामी आत्मानन्द सरस्वती) के सान्निध्य में रहे। यहाँ उन्हें स्वामी वेदानन्द तीर्थ का भी सम्पर्क प्राप्त हुआ। वे गहन स्वाध्याय में

लीन रहे। गुरुकुल कांगड़ी में स्वामी श्रद्धानन्द से उनकी पुनः भेंट हुई और स्वामीजी की प्रेरणा से सदानन्दजी स्वप्रान्त बंगाल में वेद धर्म के प्रचारार्थ आ गए। कलकत्ता पहुंच कर स्वामी सदानन्द ने आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल-विहार के प्रधान पं. शंकरनाथ से भेंट की और बंगभूमि में प्रचार कार्यक्रम आयोजित किया। स्वामी जी की जन्मभूमि ढाका थी। आप ढाका आए और पूर्व बंग के मैमनसिंह, ढाका, टांगायल आदि जिलों में प्रचारार्थ भ्रमण किया।

दयानन्द जन्म शताब्दी के अवसर पर स्वामी सदानन्द मथुरा आए और समारोह के पश्चात् पुनः कलकत्ता आ गए। यहां उन्होंने मथुराप्रसाद शिवहरे की प्रसिद्ध पुस्तक 'खतरे का घण्टा' का बंगला में अनुवाद किया जो 'सतर्कीकरण घण्टा' नाम से प्रकाशित हुआ। इस प्रसिद्ध पुस्तक की रचना ख्वाजा हसन निजामी की पुस्तक 'दाइए इस्लाम' के उत्तर में की गई थी। इसी बीच केरल (मालावार) में मोपला मुसलमानों के अत्याचारों से हिन्दू त्रस्त हुए।तब आर्यप्रादेशिक सभा की ओर से आर्यसमाज ने वहाँ अपना सहायता शिविर लगाया। स्वामी श्रद्धानन्द भी सहायता कार्य का निरीक्षण करने आए। उस समय स्वामी सदानन्द ने भी स्वामीजी के साथ दक्षिण भारत के विभिन्न स्थानों का भ्रमण किया। नवम्बर १९२७ में आर्य महासम्मेलन के दिल्ली अधिवेशन में सम्मिलित होकर स्वामीजी पुनः बंगाल आए। कलकत्ता आकर उन्होंने शुद्धिसभा की स्थापना की तथा वैदिक धर्म महा-मण्डल (कलकत्ता) की स्थापना कर बंगाल-आसाम में धर्म प्रचार की योजना बनाई। शुद्धि सभा का कार्य भी तत्परता से चल पड़ा तथा बंगला में 'शुद्धिसमाचार' मासिक का सम्पादन स्वयं स्वामी सदानन्द करने लगे। १९२३ में कलकत्ता कांग्रेस के अवसर पर आपने शुद्धि सम्मेलन का भी आयोजन किया। १९२९ में स्वामी सदानन्द गौहाटी पहुंचे और प्रसिद्ध देशभक्त तरुणराम फूकन वार एट-ला के प्रधानत्व में आर्यसमाज की स्थापना की। लगभग पौने दो वर्ष आसाम में रहकर स्वामीजी ने विभिन्न आर्यसामाजिक गतिविधियों को प्रगति दी तथा दलितोद्धार, हिन्दी प्रचार आदि के कार्यक्रमों का संचालन किया। प्रसिद्ध लोक साहित्य के मर्मज्ञ देवेन्द्र सत्यार्थी के साथ स्वामीजी ने आसाम तथा बंगाल की व्यापक प्रचार-यात्रायें कीं। दार्जिलिंग में उन्होंने विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर से भेंट की। पबना में स्वामीजी की प्रेरणा से वेद विद्यालय की स्थापना हुई।

२० जून १९३२ को स्वामी सदानन्द ने सत्यार्थीजी के साथ शान्ति निकेतन की यात्रा की तथा इस आश्रम में सप्ताह भर तक निवास किया। पुनः १ जुलाई को धर्म प्रचारार्थ वे ब्रह्मदेश की राजधानी रंगून पहुंचे। अगस्त १९३३ तक वर्मा में रहकर आपने विभिन्न नगरों और कस्बों में आर्य-समाज का प्रचार किया। ऋषि दयानन्द की निर्वाण-अर्द्धशताब्दी के अवसर पर स्वामी सदानन्द अजमेर आये और शताब्दी समारोहों में भाग लिया। उसी अवसर पर आपने राजस्थान, मध्यप्रदेश तथा उत्तरप्रदेश के विभिन्न नगरों का भी भ्रमण किया।

ले. का.—एशिया का वेनिस (यात्रा विवरण), वेद और साम्यवादियों के विरोधियों से १९३९, वेद और साम्यवाद, निजाम जेल की कष्ट कहानी १९३९, निजाम राज्य और आर्यसमाज, सतर्कीकरण घण्टा (खतरे का विगुल का बंगला अनुवाद), । हैदराबाद के शहीद।

शशधरराय एम. ए., एल. एल. बी, एडवोकेट, हाईकोर्ट कलकत्ता के सहलेखन में लिखित बंगला ग्रन्थ—वैदिक सभ्यता, अवतार, प्रतिमापूजा, बंगे वेद-प्रचार, पितृयज्ञ, वर्णश्रम धर्म, शुद्धिकि ?, इस्लाम धर्म ओ वेद।

सदाशिव कृष्ण फड़के

आपने मराठी भाषा में 'श्रीमद्दयानन्द' (नव वैदिक धर्म अथवा आर्यसमाज चा विवेचनात्मक इतिहास) लिखा। यह पनवेल (महाराष्ट्र) से लेखक द्वारा ही १९२८ में प्रकाशित हुआ। आपकी आर्यसमाज शीर्षक एक अन्य मराठी पुस्तक का भी उल्लेख मिलता है।

प्रो. सन्तराम

दिल्ली विश्वविद्यालय के भौतिक विभाग के एक समय के प्रोफेसर सन्तराम ने 'क्रान्तिकारी दयानन्द' शीर्षक पुस्तक लिखी थी।

सन्तराम बी. ए.

सुप्रसिद्ध लेखक पं' सन्तराम का जन्म १४ फरवरी १८८७ को होशियारपुर के निकट पुरानी बसी नामक ग्राम में हुआ। १९०९ में इन्होंने बी. ए. की परीक्षा पास की और पुश्तैनी व्यापार में लग गये। तत्पश्चात् श्री सन्तराम आर्यसमाज के सम्पर्क में आये और लाहौर से १९१४ में उषा नामक पत्रिका निकाली। १९२० में वे कन्या महाविद्यालय जालंधर की पत्रिका भारती के भी सम्पादक नियुक्त हुए। आगे चल कर आपने भाई परमानन्द के सहयोग से जातपांत तोड़क मण्डल की स्थापना की और मण्डल के उद्देश्यों के प्रचारार्थ क्रान्ति तथा युगान्तर नामक उर्दू तथा हिन्दी के पत्र निकाले। देश-विभाजन के पश्चात् ये अपने गांव में आकर रहने लगे। ३१ मई १९८८ को आपका दिल्ली में निधन हुआ। उस समय आपकी आयु १०१ वर्ष की थी।

ले. का.—दयानन्द (जीवनचरित) १९३०, हमारा समाज १९४८, पं. गुरुदत्त लेखावली १९०८ पं. भगवद्दत के सहयोग से अनुवाद।

वि. अ.—मेरे जीवन के अनुभव (आत्मकथा) १९६३

सन्तराम शर्मा, वेदरत्न

मोगा (लुधियाना) निवासी श्री सन्तराम शर्मा वैद्यक का व्यवसाय करते थे। इनका मंगल औषधालय आयुर्वेदिक चिकित्सा का केन्द्र था।

ले. का—नमस्ते प्रचार, १९०६, वेद भाष्य समीक्षा—(स्वामी दयानन्द कृत वेद भाष्य पर किये जाने वाले आक्षेपों का उत्तर), शुद्ध रामायण, सचित्र संक्षिप्त महाभारत १९८१ वि., नवग्रहसमीक्षा, आर्यसमाज क्या है?

पं. सन्तलाल दाधिमथ

लुधियाना निवासी पं. सन्तलाल दाधिमथ पीयूषपाणि वैद्य थे। लुधियाना में ये रमेश औषधालय का संचालन करते थे। आपने स्वामी विरजानन्द के जीवन को आधार बना कर श्रीमद्विरजानन्ददर्शन नामक एक काव्य की रचना की। यह काव्य आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मुखपत्र आर्य में धारावाही छपता रहा। पुनः १९८२ वि. में सरस्वती सदन लुधियाना से पुस्तककार प्रकाशित हुआ। ग्रन्थ की प्रस्तावना स्वामी श्रद्धानन्द ने लिखी थी। यह काव्य संस्कृतनिष्ठ हिन्दी में लिखा गया है। लेखक ने काव्य के नायक के सभी उपलब्ध जीवनचरितों का पूर्ण पर्यालचोन करने के पश्चात् इस काव्य की रचना की है। आर्य (मासिक) लाहौर में आपकी अनेक सुन्दर काव्य कृतियाँ प्रायः छपती रहती थीं।

सन्तोष कण्व

श्री कण्व ने रसायन शास्त्र में एम. एस-सी. की परीक्षा उत्तीर्ण की है, किन्तु आर्य सामाजिक लेखन उनकी रुचि का विषय है। वे बरेली निवासी हैं और प्रायः आर्य पत्रों में विचारपूर्ण लेख लिखते हैं। 'वेदार्थ पारिजात' के लेखक करपात्रीजी की समीक्षा में लिखे गये उनके लेख परोपकारी में प्रकाशित हुए हैं। संस्कृत भाषा के शब्दों को आम बोल चाल में प्रयुक्त करने पर उन्होंने अपने लेखों में बल दिया। उर्दू आन्दोलन की अराष्ट्रीयता को भी उन्होंने अपने लेखों द्वारा उजागर किया है।

ले. का.—उर्दू क्यों लाएं?

व. प.—४०, चाह बाई, (ठेरा) बरेली २४३००३

सन्नूलाल गुप्त

बुलन्दशहर निवासी श्री गुप्त का जन्म १८५२ में हुआ। आपने नारी शिक्षा विषयक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की थी।

ले. का.—कृष्ण के क्राइस्ट (१९७० वि. १९१३), स्त्री सुबोधिनी, (५ भाग), बाला बोधिनी ५ भाग, सुरभि-सन्ताप (गोरक्षा का महत्त्व,) वीर और विदुषी स्त्रियां, गृहिणी सुधार, नारी धर्म विचार, सच्ची देवियां।

स्वामी समर्पणानन्द (पं. बुद्धदेव वेदालंकार)

अद्भुत वाग्मी, विचित्र ऊहा के धनी, उद्भट् विद्वान् तथा शास्त्रों के तलस्पर्शी अध्येता पं. बुद्धदेव विद्यालंकार का जन्म १ अगस्त १८९५ को देहरादून के निकट कौला-गढ (जिला सहारनपुर) ग्राम में पं. रामचन्द्र के यहां हुआ। ये मुद्गल गोत्रोत्पन्न ब्राह्मण थे। पण्डितजी की माता का नाम यशवती देवी था जो देहरादून के पं. कृपा-राम की पुत्री थीं। ये वही पं. कृपाराम थे जिन्होंने स्वामी दयानन्द को देहरादून आने के लिये आमंत्रित किया था तथा स्वामीजी के व्याख्यानों की सुचारु व्यवस्था की थी। इनका बचपन का नाम नवीनचन्द्र था। सात वर्ष की अवस्था में इन्हें गुरुकुल कांगड़ी में प्रविष्ट कराया गया जहां अध्ययन कर आपने १९७२ वि. (१९१६) में विद्या-लंकार की उपाधि प्राप्त की।

पं. बुद्धदेव ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में वर्षों तक उपदेशक का कार्य किया। तत्पश्चात् आप स्वतन्त्र रूप से धर्म प्रचार में आजीवन लगे रहे। कुछ समय तक आपने गुरुकुल कांगड़ी में अध्यापन कार्य भी किया। आपकी पत्नी का नाम श्रीमती सुशीला देवी था। आपने अपनी दो पुत्रियों—अपराजिता एवं प्रभातशोभा का विवाह जात पाँत तोड़कर किया। कालान्तर में आपने संन्यास ग्रहण कर लिया। अब वे स्वामी समर्पणानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए। पं. बुद्ध-देव आर्यसमाज के सम्मान्य विद्वान् और प्रतिष्ठित नेता थे। हैदराबाद आर्य सत्याग्रह में भाग लेकर आपने कारा-वास का दण्ड स्वीकार किया। वे एक उच्चकोटि के शास्त्रार्थ कर्त्ता, प्रगल्भ लेखक तथा कुशल वक्ता थे। अफ्रीका जाकर वैदिक धर्म प्रचार करने का अवसर भी उन्हें मिला था। १९३९ में उन्होंने मेरठ के निकट प्रभात-आश्रम गुरुकुल की स्थापना की। वे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान भी रहे थे। १४ जनवरी १९६९ को दिल्ली में उनका निधन हो गया।

१. अथर्ववेद भाष्य—(आंशिक) आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मासिक मुखपत्र आर्य में धारावाही छपता रहा। २. शतपथ ब्राह्मण प्रथम काण्ड का भाष्य १९७३ में, ३. शतपथ में एक पथ—(१९८६ वि.) (शतपथ ब्राह्मण के अध्ययन में सहायक ग्रन्थ), ४. अथ मरुत्सूक्त (१९८८ वि.) ५. सप्त सिन्धु सूक्त (अथर्ववेद के चतुर्दश काण्ड का भाष्य) ६. प्रातः सूक्त, ७. ऋग्वेद का मणिसूत्र, ८. ऋग्वेद मण्डल मणि सूत्र (ऋग्वेद के मण्डलों में प्रस्तुत विचारधारा का पारस्परिक सामंजस्य स्थापित करने वाला ग्रन्थ), ९. पशु बलि वेद शास्त्र विरुद्ध है, १०. किसकी सेना में भर्ती होंगे? कृष्ण की या कंस की? (सरिता में प्रकाशित रतनलाल के बंसल 'आज का सबसे बड़ा देशद्रोह: गोपूजा' शीर्षक लेख का खण्डन) १९५३, ११. वेदों के सम्बन्ध में क्या जानो और क्या भूलो?, १२. गोपावर्त (गाय की महत्ता का निरूपण), १३. वर्ण व्यवस्था और उस पर आक्षेप (१९९५ वि.), १४. वर्ण व्यवस्था के चार सूत्र, १५. कायाकल्प (वर्ण व्यवस्था की सारगर्भित व्याख्या प्रस्तुत करने वाला ग्रन्थ) (१९९६ वि.) इसके अनेक संस्करण २००६ वि., २०२६ वि. तथा २०३५ वि. में छपे। १६. मनु और मांस (१९७२ वि.), (व्याख्यान) १७. श्रीमद्-भगवद्गीता समर्पण भाष्य (२०२७ वि.), १८. वैदिक अग्निप्रकाश (कारावास के दिनों में दिये गये प्रवचनों का संग्रह) संकलनकर्त्ता श्री इन्द्रराज, १९. सुर और असुर, २०. पाणिनि प्रवेशिका (संस्कृत भाषा शिक्षण), २१. अथ ब्रह्मयज्ञ (१९९० वि.), २२. अथ देवयज्ञ (अग्नि-होत्र व्याख्या) (१९९३ वि.), २३. पंचयज्ञप्रकाश (१९४०), २४. उसकी राह पर (काव्य संग्रह) (१९९६ वि.), २५. प्रार्थनावली, २६. तीन देवता, २७. बिखरे हुए फूल, २८. भारतीय लोक संघ की स्थापना क्यों, २९. संसार का पुर्ननिर्माण, ३०. साम (१९३१), ३१. स्वर्ग, ३२. हिन्दू समाज मत चूक।

मुन्शी (मनीषी) समर्थदान

स्वामी दयानन्द द्वारा स्थापित वैदिक यंत्रालय के सुयोग्य प्रबन्धक तथा उनके परम विश्वासभाजन मुन्शी समर्थदान का जन्म जयपुर राज्यान्तर्गत शेखावाटी प्रान्त के नेठवा ग्राम में १८५७ में हुआ। इनके पिता का नाम श्री मंगलदान था, जो दधिवाड़िया गोत्र के चारण थे। यद्यपि आपकी प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू में हुई थी, किन्तु स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में आने के कारण आपने हिन्दी तथा

संस्कृत का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। जब स्वामी दयानन्द का वेद भाष्य बम्बई के निर्णय सागर प्रेस में मुद्रित होने लगा तो स्वामीजी ने इस कार्य की देख रेख के लिये मुन्शीजी जो बम्बई भेजा। कालान्तर में स्वामी दयानन्द ने स्वग्रन्थों के मुद्रण की सुविधा की दृष्टि से १२ फरवरी १८८० को काशी में वैदिक यंत्रालय की स्थापना की। २ जुलाई १८८२ को मुन्शी समर्थदान को इस प्रेस का प्रबन्धक नियुक्त किया गया। वे लगभग ४ वर्ष तक इस पद पर रहे। उनके कार्य काल में ही स्वामी दयानन्द की प्रसिद्ध कृति सत्यार्थप्रकाश का द्वितीय संशोधित संस्करण प्रकाशित हुआ। १८८६ में वैदिक यंत्रालय की सेवा से मुक्त होने के पश्चात् मुन्शी जी अजमेर में रहने लगे। उन्होंने यहां से १८८९ में 'राजस्थान समाचार' नामक साप्ताहिक पत्र निकालना आरम्भ किया। यह पत्र १९०७ तक निकलता रहा। १७ जून १९१४ को मुन्शी समर्थदान का निधन हो गया।

ले. का.—आर्यसमाज परिचय-(१९४४ वि.), स्वधर्म-रक्षा (ईसाई प्रचार से सावधान कराने वाली उपयोगी पुस्तिका) (१९४४ वि.), १८८७, आपकी अनेक अप्रकाशित रचनायें परोपकारिणी सभा अजमेर के ग्रन्थ संग्रह में विद्यमान हैं। उनकी एक अन्य रचना 'अक्षर दीपिका' का भी उल्लेख मिलता है।

सरदार शर्मा 'सोम कवि'

मिश्रबंधु विनोद में संख्या ४३९९ पर इनका उल्लेख हुआ है तथा इनका जन्म १९५४ वि. का बताया गया है।

ले. का.—दयानन्दाष्टक, निराकार उपासना, समस्यापूर्ति पुंज, सोम सम्पदा, प्रेम पराग, कविकुल कला, मातुपितृ आदर्श भक्त श्रवणकुमार, अछूतों का आर्तनाद।

सरबदयाल

आपने 'स्वानेह ऊमरी श्री स्वामी विरजानन्द' शीर्षक लिखी जिसमें दण्डी विरजानन्द का जीवनचरित उर्दू में निबद्ध किया गया था। यह पुस्तक लाहौर से १९२० में छपी।

सरला शारदा

आर्यसमाज के यशस्वी नेता देशभक्त कुं. चांदकरण शारदा की पुत्री सरला शारदा का जन्म बड़ौदा में हुआ। इनकी शिक्षा आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा में हुई जहाँ से आपने भारती समलंकृता की उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात् एम.ए. तथा बी.एड. की परीक्षाएँ भी उत्तीर्ण कीं। १९४७ से १९८० तक सरलाजी ने आर्य पुत्री उच्च माध्यमिक विद्यालय अजमेर में अध्यापन किया तथा प्रधानाचार्य भी रहीं। आप आर्यसमाज (नगर) अजमेर तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान की गतिविधियों में भाग लेती रही हैं तथा अजमेर नगर की महिला जागृति में आपका विशिष्ट योगदान रहा है।

ले. का.—नीति निर्झर (नैतिक शिक्षा विषयक उपयोगी ग्रंथ (१९५५), कुं. चांदकरण शारदा स्मृति ग्रन्थ—त्याग की धरोहर का प्रबन्ध सम्पादन। आर्यसमाज की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख।

व. प.—शारदा भवन, अशोक मार्ग, अजमेर-३०५००१

डा. सरस्वती पण्डित

पं. आत्माराम अमृतसरी की पौत्री तथा पं. शान्तिप्रिय पण्डित की पुत्री सरस्वती पण्डित का जन्म १९१७ में हुआ। शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् वे स्वल्प काल के लिये आर्य कन्या महाविद्यालय बड़ौदा में कार्यरत रहीं। तत्पश्चात् आर्य कन्या महाविद्यालय दुर्ग की संचालिका के पद का भार संभाला। वे पूर्वी अफ्रीका में भी कुछ समय के लिये अध्यापन करती रहीं। तत्पश्चात् म. स. गायकवाड़ विश्वविद्यालय बड़ौदा में वे शिक्षा विषय पढ़ाती रहीं। १९७४ में इसी विश्वविद्यालय से उन्हें 'आर्यसमाज की भारतीय शिक्षा को देन' विषय पर पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त हुई। उनका यह शोध प्रबन्ध A Critical Study of the Contribution of

the Arya Samaj in Indian Education शीर्षक से सार्वदेशिक सभा ने १९७६ में प्रकाशित किया। ६८ वर्ष की आयु में डा. सरस्वती का निधन २७ अगस्त १९८५ को हुआ।

डा. सरोजदीक्षा विद्यालंकार

डॉ. सरोजदीक्षा का जन्म २८ अक्टूबर १९४६ को हुआ। इन्होंने गुरुकुल कांगड़ी से विद्यालंकार तथा वनस्थली विद्यापीठ से संस्कृत में एम. ए. किया। सम्प्रति वे श्यामाप्रसाद मुखर्जी महिला कालेज दिल्ली में संस्कृत की प्रवक्ता हैं। आपने 'ऐतरेय तथा तैत्तिरीय ब्राह्मणों में निर्वचन' विषय पर शोध कार्य किया है। आपका यह शोध प्रवन्ध प्रकाशित हो चुका है।

व. प.—७/२ रूपनगर दिल्ली ११०००७

स्वामी सर्वदानन्द

आर्यसमाज के तपस्वी सन्त तथा साधुमना संन्यासी स्वामी सर्वदानन्द का जन्म १९१२ वि. (१८५५) में होशियारपुर जिले के बस्सी कलां ग्राम के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम गंगाविष्णु था जो वैद्यक के द्वारा जीविकोपार्जन करते थे। इनका बचपन का नाम चंदूलाल था। चंदूलाल वंश परम्परा से शैव थे और नियमित रूप से शिवार्चन के लिए पुष्प लाकर प्रतिमा का शृंगार करते थे। एक दिन जब पूजा के लिये मन्दिर में गये तो देखा कि एक कुत्ता मूर्ति पर पेशाब कर उसे अपवित्र कर रहा है। इस दृश्य को देखकर प्रतिमार्चन के प्रति उनके हृदय में अश्रद्धा उत्पन्न हो गई। अब वे वेदान्त के प्रति उन्मुख हुये। फारसी के मौलना रूम आदि सूफी कवियों का अध्ययन किया। शीघ्र ही उनमें वैराग्य की तीव्र भावना उत्पन्न हुई और वे गृहत्याग कर ३२ वर्ष की आयु में संन्यासी बन गये।

संन्यास लेने के पश्चात् आपने चार वर्ष तक निरन्तर देशाटन किया तथा विभिन्न तीर्थों का भ्रमण कर सत्संग करते रहे। आर्यसमाज में उनके प्रवेश का प्रसंग रोचक एवं शिक्षाप्रद हैं। एक बार जब स्वामी सर्वदानन्द अत्यन्त रुग्ण हो गये तो एक आर्यसमाजी सज्जन ने बड़े सेवाभाव से उनकी चिकित्सा की। जब स्वामीजी पूर्णतया स्वस्थ हो गये और इस स्थान से चलने लगे तो उक्त आर्यसमाजी ने एक सुन्दर रेशमी वस्त्र में लपेट कर ऋषि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश की पुस्तक उन्हें भेंट की और साथ ही यह आग्रह भी किया कि यदि वे उसकी सेवा से प्रसन्न हैं तो इस पुस्तक को अवश्य पढ़ें। स्वामीजी ने इस भक्त का यह प्रेमोपहार स्वीकार कर लिया। जब उन्होंने पुस्तक का वस्त्राच्छादन हटाया तो उन्हें ज्ञात हुआ कि यह तो दयानन्द रचित सत्यार्थप्रकाश है। यद्यपि पौराणिक संन्यासी होने के कारण स्वामी दयानन्द के इस क्रान्तिकारी ग्रंथ के प्रति उनका कोई विशेष आदरभाव नहीं था, किन्तु अपने सेवाभावी भक्त को दिये वचनों का आदर करने के कारण उन्हें इस पुस्तक को आद्योपान्त पढ़ना पड़ा। सत्यार्थप्रकाश के इस अध्ययन ने उनके विचारों में अपूर्व परिवर्तन किया और वे शांकर वेदान्त के प्रति अपनी निष्ठा खो बैठे। अब उन्होंने वेद, दर्शन, उपनिषद् आदि का विस्तृत अध्ययन किया तथा आर्यसमाज के माध्यम से धर्म प्रचार में लग गये।

कालान्तर में उन्होंने अलीगढ़ जिले में काली नदी के पुल पर साधु आश्रम की स्थापना की तथा आर्ष पद्धति पर छात्रों के लिए शास्त्राध्ययन की व्यवस्था की। १९३९ में उन्होंने अजमेर में आनासागर तट पर स्थित साधु-आश्रम में संस्कृत पाठशाला भी स्थापित की। धर्म प्रचारार्थ वे देश के सुदूरवर्ती भागों में जाते रहते थे। साधुजनोचित सरलता, तप, त्याग तथा सहिष्णुता आदि गुण स्वामी सर्वदानन्द में पराकाष्ठा तक पहुँचे हुए थे। १० मार्च १९४१ को आपका ग्वालियर में निधन हुआ।

ले. का.—जीवन सुधा १९२७, आनन्द संग्रह (हिन्दी, उर्दू) १९२८, सन्मार्ग दर्शन १९३३, ईश्वर भक्ति १९४०, कल्याण मार्ग १९३८, सर्वदानन्द वचनामृत, सत्य की महिमा, प्रणव परिचय, परमात्मा के दर्शन १९३६।

पं. सर्वेन्द्र शास्त्री

शास्त्रीजी का जन्म बिहार के जिला सारण के ग्राम पहलेजा में श्री रामसेवक राय के यहां ३० अप्रैल १९२६

को हुआ। इनकी शिक्षा बी. ए. तथा साहित्याचार्य तक हुई। आपने बिहार के शिक्षा विभाग में विभिन्न पदों पर कार्य किया तथा १९८४ में राज्य सेवा से अवकाश लिया। वर्तमान में आप आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के सहमंत्री हैं। आप सभा के मुख पत्र आर्यसंकल्प का सम्पादन भी करते हैं।

ले. का.—बिहार में स्वामी दयानन्द (२०४१ वि.), बिहार में आर्यसमाज।

व. प.—आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार, मुनीश्वरानन्द भवन नया टोला पटना ४

प्रिंसिपल सांईदास

इनका जन्म १८८० में गुजरात (पाकिस्तान) में हुआ। १९१२ में महात्मा हंसराज के अवकाश ग्रहण कर लेने पर उन्हें डी. ए. वी. कालेज लाहौर के प्रिंसिपल पद पर नियुक्त किया गया। आपने कलकत्ता विश्वविद्यालय से १९०२ में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। अध्ययन के पश्चात् १९०२ में डी. ए. वी. कालेज लाहौर में प्राध्यापक बने। कालान्तर में वे केम्ब्रिज विश्वविद्यालय गये और वहां से भी बी. एस-सी. की परीक्षा उत्तीर्ण की। लाला सांईदास ने महात्मा हंसराज की परम्पराओं को ही आगे बढ़ाया। उनके कार्य काल में इस कालेज के गौरव में अपूर्व वृद्धि हुई। १९३१ में अपने दुर्बल स्वास्थ्य को ध्यान में रख कर उन्होंने स्वयं ही इस पद से त्यागपत्र दे दिया। लाला सांईदास अध्ययनशील व्यक्ति तथा सफल लेखक थे। इनका निधन १४ जून १९५७ को हुआ।

ले. का.—The Teachings of IsaUpanishad, उपनिषदों का संदेश, गीता का संदेश १९६३, आर्यसमाज के पुरोगम पर एक दृष्टि १९५३।

लाला सांईदास

पंजाब में आर्यसमाज के प्रारम्भिक कर्णधारों में लाला सांईदास का नाम सर्वप्रमुख है। उनका जन्म जालंधर जिले की फिल्लौर तहसील के लस्साड़ा ग्राम में १८४१ में हुआ। मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् वे सरकारी सेवा में प्रविष्ट हुए। प्रारम्भ में सांईदास ब्रह्मसमाज में प्रविष्ट हुए किन्तु जब इन्होंने अनुभव किया कि इस संस्था के द्वारा वे अपनी देश सेवा और समाज सुधार की आकांक्षाओं को पूरा नहीं कर सकते तो उन्होंने आर्यसमाज लाहौर की स्थापना के साथ ही उसकी सदस्यता स्वीकार कर ली। स्वामी दयानन्द की विचारधारा ने सांईदास को प्रभावित किया था। वे आर्यसमाज लाहौर के प्रथम मंत्री थे। पंजाब की आर्यप्रतिनिधि सभा की स्थापना के साथ ही वे इस संस्था के प्रधान निर्वाचित हुए और आजीवन इस पद पर रहे।

लाला सांईदास में स्वदेश हित का भाव अत्यन्त प्रबल था। यद्यपि वे पंजाब सरकार की सेवा में ट्रान्सलेटर के पद से उन्नति कर १८९३ में प्रान्त के गवर्नर के कार्यालय में मीर मुन्शी के पद तक पहुँच गये थे किन्तु देश और हिन्दू समाज को उन्नत बनाने के लिये उनके जैसी धुन उस युग के सरकारी कर्मचारियों में सर्वथा दुर्लभ ही थी। लालाजी की आर्यसमाज के प्रति अनन्य निष्ठा थी। कहते हैं कि महीने के पहले दिन वेतन मिलते ही वे सीधे अपने दफ्तर से आर्यसमाज मंदिर जाते और अपने वेतन का १० प्रतिशत (उन दिनों उन्हें १३० रु. वेतन मिलता था) आर्यसमाज के मासिक चंदे के रूप में जमा कराने के पश्चात् ही घर लौटते। यह थी आर्यसमाज के प्रति सांईदास की आस्था। नवयुवक वर्ग को आर्यसमाज में प्रविष्ट होते देखकर उन्हें विशेष प्रसन्नता अनुभव होती थी। हंसराज, लाजपतराय, गुरुदत्त तथा मुन्शीराम जैसे नौजवानों को आर्यसमाज का कार्य करते देख कर सांईदास का रोम रोम प्रफुल्लित होता था। जून १८९० में लाला सांईदास का देहान्त हो गया। १२ फरवरी १८८१ को जब कलकत्ता में पौराणिक पण्डितों ने आर्य सन्मार्गसंदर्शिनी सभा के नाम से एक बैठक बुला कर स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों के प्रतिकूल व्यवस्थायें दीं, तो उसके उत्तर में लाला सांईदास ने 'रसाला एक आर्य' पुस्तक उर्दू में लिखी तथा पौराणिक विद्वानों की धारणाओं का तीव्र प्रतिवाद किया। यह

पुस्तक ही लाला सांईदास की एक मात्र साहित्यिक कृति कही जा सकती है ।

सारस्वतमोहन मनीषी

कवि मनीषी का जन्म ६ मई १९५० को ग्राम कनीना खास जिला महेन्द्रगढ़ (हरयाणा) में पं. मंगतूराम के यहाँ हुआ । आपने एम. ए. तक शिक्षा ग्रहण की है । प्रारम्भ में ये आर्य संदेश साप्ताहिक के सम्पादक रहे । १९८१ से आप डी. ए. वी. कालेज अबोहर में हिन्दी के अध्यापक हैं । मेरठ विश्वविद्यालय ने आपको पी-एच. डी. की उपाधि प्रदान की है ।

ले. का.—आग के अक्षर १९८२, आधा कफन, बूंद-बूंद वेदना, कलम नहीं बेचेंगे ।

व. प.—३ कल्पना कालोनी डी. ए. वी. परिसर अबोहर (पंजाब) १५११६.

श्रीमती सावित्री देवी

श्रीमती सावित्री मुरादाबाद जिले के बहजोई कस्बे की महिला आर्यसमाज की मंत्राणी थीं । इन्होंने श्रीमद्-भगवद्गीता का राधेश्याम रामायण की शैली में पद्यानुवाद 'श्रीमद्भगवद्गीतासार' शीर्षक से किया और १९६४ में प्रकाशित किया ।

पं. सिद्धगोपाल कविरत्न

उच्च कोटि के कवि, गायक तथा प्रचारक पं. सिद्ध-गोपाल का जन्म इटावा जिले के अजीतमल ग्राम में हुआ था । इनके पिता श्री रामचरण अग्रवाल वैश्य थे । बाल्य-काल में ही सिद्धगोपाल के माता, पिता की मृत्यु हो गई । इनका पालन पोषण हाथरस निवासी एक वैद्य ने किया । बड़े होने पर दिल्ली स्टेशन पर एक अंग्रेज महिला की सिगरेट की दूकान पर ये सेलसमेन का कार्य करने लगे । इसी बीच आर्यसमाज से इनका सम्पर्क हुआ, अब इन्होंने दूकान की नौकरी छोड़ दी और आर्यसमाज के प्रचारक बन गये । पं. सिद्धगोपाल में कवित्व और गायन की नैसर्गिक प्रतिभा थी । वे घण्टों तक काव्य पाठ के साथ-साथ धाराप्रवाह भाषण देकर श्रोताओं को मुग्ध कर देते थे । उनके कविता पढ़ने तथा गायन में अपूर्व रस था । इस प्रकार गायन और व्याख्यान के द्वारा धर्म प्रचार करने में इन्हें पूर्ण सफलता मिली । अब वे आर्यसमाजों में सर्वत्र बुलाये जाते । निरन्तर यात्रायें करने तथा स्वास्थ्य की ओर समु-चित ध्यान न देने के कारण उन्हें क्षय रोग का शिकार होना पड़ा । अन्ततः २८ नवम्बर १९४७ को उनका हाथ-रस में निधन हो गया ।

ले. का.—गोपाल कुसुमांजलि, गोपाल पुष्पांजलि, गोपाल गीतांजलि, हिन्दुओ बताओ, हमारा समाज, क्या वे अछूत हैं ?

उनकी सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तक 'बहनों की बातें' हैं । संवाद रूप में लिखी गई इस पुस्तक में सैद्धान्तिक बातों का रोचक शैली में निरूपण किया गया है । इसके अनेक संस्करण प्रकाशित हुए हैं । इस लोकप्रिय पुस्तक का पद्यानुवाद पं रूपराम शर्मा ने किया है । इसका बंगला अनुवाद पं. प्रियदर्शन ने वैदिक धर्म धारा शीर्षक से किया है । (प्रथमसंस्करण आर्य युवक संघ दिल्ली से १९४७ में प्रकाशित) मृतक श्राद्ध समीक्षा—बहिनों की बातें का एक अंश है ।

श्रीमती सियासुन्दरी आर्या

समस्तीपुर (बिहार) जिले के मानपुरा ग्राम की निवा-सिनी श्रीमती सियासुन्दरी के पति श्री सीताराम आर्य दरभंगा प्रमण्डल आर्य सभा के उपदेशक हैं । पारसी नाटक शैली में श्रीमती सियासुन्दरी ने महर्षि दयानन्द नाटक लिखा जिसे श्री रामचन्द्र आर्य ने अक्टूबर १९८३ में प्रकाशित किया ।

व. प.—ग्रा-डा. मानपुरा वाया ताजपुर (जिला समस्तीपुर बिहार) ।

सीताराम आर्य

कलकत्ता के प्रसिद्ध उद्योगपति तथा आर्यसमाजी कार्यकर्त्ता श्री सीताराम आर्य ने अपनी आत्मकथा 'प्रगति का पथ' शीर्षक लिखी है । यह रोचक आत्म वृत्तान्त स्वयं लेखक ने ही १९८३ में प्रकाशित किया । श्री आर्य का

जन्म १९२२ में फैजाबाद जिले के ग्राम फूलपुर (टाण्डा) में हुआ। पन्द्रह वर्ष की आयु में वे कलकत्ता आ गये और स्वपुरुषार्थ से व्यवसाय आरम्भ किया। इसमें उन्हें असाधारण सफलता मिली। इनका समग्र जीवन आर्यसमाज के लिये समर्पित रहा और कलकत्ता महानगर में आर्यसमाज की प्रवृत्तियों के संचालन में उनकी विशिष्ट भूमिका है।

व. प.—आर्य निकेतन १० बी. हंगरफोर्ड स्ट्रीट कलकत्ता ७०००१७.

आचार्या सुकामा

इनका जन्म १ अक्टूबर १९६१ को रोहतक जिले के ग्राम आकूपुर में हुआ। इनकी शिक्षा गुरुकुल नरेला दिल्ली में हुई। यहां से इन्होंने शास्त्री तथा व्याकरणाचार्य की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। तत्पश्चात् गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए. (१९८२) करने के अनन्तर 'महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य के परिप्रेक्ष्य में इन्द्र देवता का अध्ययन' विषय पर पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। आचार्या सुकामा दयानन्द कन्या गुरुकुल चौंटीपुरा में अध्यापन कर रही हैं।

व. प.—दयानन्द कन्या गुरुकुल चौंटीपुरा (मुरादाबाद)

सुकुमार शास्त्री

श्री सुकुमार का जन्म कर्नाटक राज्य के उडुपि नगर में पं. संजीव कामत के यहां १६ अप्रैल १९५२ को हुआ। वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय से शास्त्री करने के पश्चात् आपने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से १९७५ में वेद में एम. ए. किया। तदुपरान्त राजस्थान विश्वविद्यालय से संस्कृत तथा हिन्दी में एम. ए. किया। आप कन्नड़ भाषा में प्रकाशित होने वाले वेदप्रकाश मासिक का सम्पादन कार्य भी करते रहे। इन्होंने दयानन्द शोध पीठ पंजाब विश्वविद्यालय से 'स्वामी दयानन्द की शैली के परवर्ती वेद भाष्यकार' विषय लेकर १९९० में पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की है।

व. प.—आर्यसमाज श्रद्धानन्द भवन, विश्वेश्वरपुरम् बैंगलूर (कर्नाटक)

पं. सुखदेव दर्शनावाचस्पति

दर्शनों के अप्रतिम विद्वान् पं. सुखदेव का जन्म मुलतान (पाकिस्तान) में श्री शोभराज के यहां हुआ। १९८२ वि. में गुरुकुल कांगड़ी से स्नातक बन कर उन्होंने विद्या (दर्शन) वाचस्पति की उपाधि प्राप्त की। आपने गुरुकुल वैद्यनाथ धाम (बिहार) के आचार्य पद पर दो वर्ष तक कार्य किया। तत्पश्चात् आप गुरुकुल कांगड़ी में दर्शन विभाग के प्राध्यापक पद पर रहे। दर्शन शास्त्र पर आपका असाधरण अधिकार था तथा आप इसे सफलतापूर्वक पढ़ाते थे। आप आर्यसमाज कलकत्ता के आचार्य भी रहे। २३ जनवरी १९७७ को दिल्ली में आपका निधन हुआ।

ले. का.—ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का वेद तत्त्वप्रकाश नामक सटिप्पण सम्पादित संस्करण (१९८२ वि.), नमस्ते की व्याख्या २००७ वि., नमस्ते की शास्त्रीय व्यवस्था १९३५, पुराण रहस्य १९३६, पशुवलि निषेध की शास्त्रीय व्यवस्था १९३५, आर्य संकीर्तन तथा आर्य सत्संग १९३६ (इसे पण्डित सुरेन्द्रनाथ विद्यालंकार के सहसम्पादन में तैयार किया गया था।)

सुखदेव शास्त्री

शास्त्रीजी रोहतक जिले के ग्राम आसन के निवासी हैं। आप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशक रहे हैं तथा आपने धर्म प्रचारार्थ मॉरिशस का प्रवास भी किया है।

ले. का.—पितृशतकम् (संस्कृत काव्य)

व. प.—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।

सुखदेवलाल अध्यापक

ये बनारस के निवासी थे तथा अपने नगर में सुखदेव पुस्तकालय का संचालन करते थे। इन्होंने सात खण्डों में लेखराम ग्रन्थावली को प्रकाशित करने की योजना बनाई। इसके अन्तर्गत कुछ खण्ड छपे। द्वितीय खण्ड (१९८४ वि.) १९२८ में प्रकाशित हुआ। इसमें पं. लेख-

राम के स्त्रीशिक्षा, स्त्रीशिक्षा का साधन तथा श्रीकृष्णजी का जीवनचरित शीर्षक ग्रन्थ संगृहीत हैं।

सुखरामदास

आप पंजाब के निवासी थे। आपने उर्दू में क्या द्रौपदी के पांच पति थे ? शीर्षक ग्रन्थ लिखा। इसका हिन्दी अनुवाद पं. ईशानदेव वाजपेयी ने किया था जो लेखक द्वारा ही मोची गेट लाहौर से १९०८ में प्रकाशित हुआ।

कु. सुखलाल आर्य मुसाफिर

सुप्रसिद्ध प्रचारक, गायक, कवि तथा उपदेशक कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर का जन्म १८९० में बुलन्दशहर जिले के अरनियां ग्राम में ठाकुर भोमसिंह के यहां हुआ। प्रारम्भ में इन्होंने गुरुकुल सिकन्दराबाद (बुलन्दशहर) में पं. मुरारिलाल शर्मा के सान्निध्य में अध्ययन किया। यहां से वे आगरा चले गये और पं. भोजदत्त शर्मा द्वारा संस्थापित मुसाफिर विद्यालय में उपदेशक का प्रशिक्षण प्राप्त किया। आपने १६-१७ वर्ष की अल्पायु में ही उपदेशक के रूप में धर्म प्रचार का कार्य आरम्भ कर दिया था। इनकी वाणी में माधुर्य, वक्तृत्व में ओज तथा प्रभविष्णुता थी, अतः आपको अल्पकाल में ही देशव्यापी ख्याति मिली और देश में सर्वत्र आपकी मांग होने लगी। फलतः आप देश के सभी प्रांतों में प्रचारार्थ जाने लगे। जब देश को विदेशी दासता से मुक्त कराने के लिये स्वतन्त्रता की लड़ाई आरम्भ हुई, तो कुंवर सुखलाल उसमें भी कूद पड़े। १९२२ और १९३० में आपको सत्याग्रह में भाग लेने के कारण कारावास का दण्ड भोगना पड़ा। १९३९ में आप हैदराबाद सत्याग्रह में भी सम्मिलित हुये और जेल की यातनाएँ सहन कीं। २ जनवरी १९८१ को आपका निधन हुआ।

ले. का.—मुसाफिर का खजाना, मुसाफिर भजनावली, मुसाफिर गीतांजलि, मुसाफिर पुष्पांजलि, मुसाफिर की तड़प, १९८४, जज्बाते मुसाफिर, नग्माए मुसाफिर।

वि. अ.—कुंवर सुखलाल स्मृति ग्रन्थ : सम्पादक विक्रमसिंह १९८२।

पं. सुदर्शन

हिन्दी के प्रसिद्ध कहानीकार तथा लेखक पं. सुदर्शन का जन्म १८९६ में स्यालकोट (पाकिस्तान) में हुआ। इनके पिता का नाम पं. गुरुदित्तामल तथा माता का नाम यमुना देवी था। वे वत्सगोत्रीय ब्राह्मण थे। इनका बचपन का नाम बद्रीनाथ था। आगे चलकर ये सुदर्शन के नाम से लिखने लगे। सुदर्शनजी की शिक्षा मैट्रिक तक ही हुई थी। इन्होंने प्रारम्भ में उर्दू में लिखना आरम्भ किया। पुनः हिन्दी में लिखने लगे और प्रसिद्ध कहानीकार के रूप में परिगणित हुए। १९३२ में ये चित्रपट जगत् में कथानक लेखक के रूप में प्रविष्ट हुए और अनेक फिल्मों के लिये कहानियाँ लिखीं। १७ दिसम्बर १९६७ को आपका बम्बई में निधन हो गया।

ले. का.—दयानन्द नाटक १९१७, धर्मवीर दयानन्द १९५०, स्वामी सत्यानन्द कृत श्रीमद्यानन्दप्रकाश का उर्दू अनुवाद।

डा. सुदर्शनदेव शास्त्री

शास्त्रीजी का जन्म रोहतक जिले के ग्राम बालन्द में श्री शिवदत्त आर्य के यहां माघ शुक्ला ५. सं. १९९१ वि. ८ फरवरी १९३५ को हुआ। इनकी शास्त्रीय शिक्षा गुरुकुल झज्जर में हुई। १९६१ में व्याकरणाचार्य करने के पश्चात् आपने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से १९६७ में एम. ए. (संस्कृत) तथा १९७८ में 'शिक्षा वेदांग' विषय लेकर पी-एच.डी. की उपाधियाँ प्राप्ति कीं। प्रारम्भ में ये दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर में अध्यापक रहे। तत्पश्चात् हरयाणा के कालेज शिक्षा विभाग में आये। स्वल्प काल के लिये ये दयानन्द कालेज अजमेर की दयानन्द पीठ में प्रोफेसर तथा अध्यक्ष रहे। आप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपमन्त्री भी रहे हैं।

ले. का.—आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली के तत्त्वावधान में आपने महर्षि दयानन्द के अधिकांश ग्रन्थों का सम्पादन किया तथा स्वामीजी के यजुर्वेद भाष्य पर चार खण्डों में और ऋग्वेद भाष्य पर दो खण्डों में 'भाष्य भास्कर' नामक व्याख्यायें लिखीं। उन्होंने स्वामीजी के समस्त लघु ग्रन्थों का भी सम्पादन (१९७०) किया है।

अन्य ग्रन्थ—महर्षि वेद भाष्य विबोध (२०२५ वि.), व्याकरण कारिका प्रकाश, लिंगानुशासन वृत्ति, फिटसूत्र प्रदीप, ब्रह्मचर्यामृतम्, वैदिक उपासना पद्धति, व्याकरण-शास्त्रम् (२ भाग), बाल संस्कार विधिः, पं. जगदेवसिंह सिद्धान्ती का जीवनचरित (१९९०)।

व. प.—८०।३२ हरिसिंह कालोनी सुनारिया मोड़, रोहतक।

सुदर्शनसिंह चक्र

श्री चक्र का जन्म १४ नवम्बर १९११ को हुआ। ये प्रसिद्ध धार्मिक पत्र कल्याण के नियमित लेखक थे और आपने अनेक पत्रों का सम्पादन किया।

आपने स्वामी दयानन्द की एक उपयोगी जीवनी लिखी जो विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान होशियारपुर द्वारा १९६० में प्रकाशित हुई।

सुदामाप्रसाद

आपकी अंग्रेजी में लिखी कृतियों का विवरण इस प्रकार है—The Essence or Vedic Religion, Glimpses of the Vedas.

डा. सुद्युम्न

डा. सुद्युम्न का जन्म ९ फरवरी १९४६ को मध्यप्रदेश के सतना जिले के ग्राम कोलगवां में श्री कमलाप्रसाद तथा माता हरदेवी के यहां हुआ। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम. ए. (संस्कृत) तथा डी. फिल. किया है। वर्तमान में आप मु. म. टाउन पी. जी. कालेज बलिया में संस्कृत के प्रवक्ता हैं। आपके अनेक शोध निबन्ध हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी में छप चुके हैं। वे आज कल विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा स्वीकृत शोध योजना 'भाषा शास्त्र में प्रतिबिम्बित भारतीय परम्परा' पर कार्य कर रहे हैं तथा विश्व संस्कृत सम्मेलन के वियेना अधिवेशन में पत्र वाचन के लिये आमंत्रित किये गये हैं।

ले. का.—Architects of the Arya Samaj में संग्रहीत स्वामी दयानन्द का जीवनचरित। १९८६.

व. प.—एम. एम. टाउन कालेज, बलिया (उ. प्र.)

प्रो. सुधाकर एम. ए.

'हिन्दी मनोविज्ञान' शीर्षक प्रसिद्ध ग्रन्थ पर हिन्दी का मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्राप्त करने वाले प्रो. सुधाकर का जन्म १८८९ में पश्चिमी पंजाब की खुशाब तहसील के राजड़ ग्राम में हुआ था। उनका बाल्यकाल का नाम सीताराम था। रावलपिण्डी से आपने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् छात्रवृत्ति लेकर गार्डन क्रिश्चियन कालेज में प्रविष्ट हुए। इन्हीं दिनों आपका परिचय आर्यसमाज के एक अन्य विद्वान् डा. केशवदेव शास्त्री से हुआ। दोनों में घनिष्टता बढ़ी। अब सुधाकरजी केशवदेवजी के साथ काशी आ गये और अष्टाध्यायी का अध्ययन करने लगे। सीताराम का सुधाकर के रूप में नाम परिवर्तन भी काशी में हुआ। जब केशवदेव शास्त्री ने भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् का संगठन किया तो पं. सुधाकर का सहयोग भी उन्हें प्राप्त हुआ।

कालान्तर में पं. सुधाकर डी. ए. वी. हाई स्कूल रावलपिण्डी में अध्यापक बन गये। यहां से वे लाहौर आये और एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। कुछ समय तक आपने देहरादून में अध्यापन किया। १९१३ में वे गुरुकुल कांगड़ी आये और प्राध्यापक बन गये। इसी समय आपकी प्रसिद्ध पुस्तक 'हिन्दी मनोविज्ञान' प्रकाशित हुई जिस पर आपको हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने मंगलाप्रसाद पुरस्कार से सम्मानित किया। प्रो. सुधाकर १९२१ से १९२४ तक दिल्ली के कर्मशियल हाई स्कूल में मुख्याध्यापक रहे। १९२६ में आपको शाहपुरा राज्य के राजकुमारों को पढ़ाने के लिये बुलाया गया। फलतः आप शाहपुरा आये और युवराज सुदर्शनदेव को पढ़ाया। इसी अवधि में आप आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के साथ जुड़े और सभा के अधिकारी बने। १९३३ से १९४६ तक आप सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री रहे। दिल्ली में रहते हुए आपने शारदा मंदिर नामक एक प्रकाशन संस्था की स्थापना की जिससे उच्च कोटि के ग्रन्थों का प्रकाशन किया गया। १९ जून १९४८ को दिल्ली में आपका निधन हुआ।

ले. का.—उपदेशामृत १९३३, पुरुषार्थामृत १९३३, जीवनामृत, आनन्दामृत।

पं. सुधाकर चतुर्वेदी

पं. सुधाकर का जन्म १९०१ में कर्नाटक प्रान्त के तुमकूर नामक स्थान में श्री कृष्णराव तथा माता पुट्टम्मा

के यहां हुआ। ये कुछ काल तक लाहौर में रहे तथा गुरुकुल कांगड़ी में भी अध्ययन किया। अपनी मातृभाषा कन्नड़ में चतुर्वेदीजी ने उच्च कोटि का साहित्य लिखा है। आपने १९७४ में वैदिक साहित्य प्रकाशन समिति का गठन किया तथा कन्नड़ में वेदप्रकाश नामक पत्रिका आरम्भ की।

ले. का.—श्रीमद्दयानन्दर्षि जीवनचरितम् (कन्नड़ में लिखित महाकाव्य) १९४३, योगप्रकाश १९५८, वेदमाता गायत्री, आदर्श मानव, उपदेश मंजरी (महात्मा आनन्द स्वामी की पुस्तक एक ही रास्ता का कन्नड़ अनुवाद), स्वामी दयानन्द का जीवन चरित, उपाकर्म पर्व प्रकाश, आदर्श जीवनदसूत्रगरु, वैदिक धर्मदमौलिक तत्वगरु, वैदिक संध्याग्निहोत्रविधि, सत्यार्थप्रकाश का कन्नड़ अनुवाद १९६८, ऋग्वेद दर्शन (कन्नड़ भाष्य), Grace and Glory of Vedic Dharma.

व. प.—द्वारा-आर्यसमाज श्रद्धानन्द भवन, विश्वेश्वरपुरम्, बैंगलोर

डा. सुधीरकुमार गुप्त

ऋषि दयानन्द की वेदभाष्य शैली तथा उसके महत्त्व को निरूपित करते हुए विश्वविद्यालयों में स्वीकृत शोध प्रणाली से कार्य कर डाक्टर ऑफ फिलासफी की उपाधि प्राप्त करने वाले सर्वप्रथम विद्वान् डा. सुधीरकुमार गुप्त हैं। इनका जन्म हरयाणा के ग्राम अटाली (जिला गुड़गांव) में १ मई १९१७ (१९७४ वि.) को हुआ। आपने १९३९ में संस्कृत विषय लेकर दिल्ली विश्वविद्यालय से एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। पुनः १९४५ में पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री परीक्षा पास की। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डा. फतहसिंह के निर्देशन में आपने 'वेद भाष्य पद्धति को दयानन्द सरस्वती की देन' विषय पर शोध कार्य कर १९५७ में राजस्थान विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। डा. गुप्त ने जाट कालेज रोहतक तथा नत्थीमल कालेज खुर्जा में संस्कृत प्राध्यापक का कार्य किया। तत्पश्चात् वे गोरखपुर विश्वविद्यालय में संस्कृत के प्रवक्ता बन गये। कालान्तर में वे राजस्थान विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के रीडर तथा प्रोफ़ेसर बने और ३० अप्रैल १९७७ को सेवा से अवकाश ग्रहण किया। डा. गुप्त अखिल भारतीय प्राच्यविद्या परिषद्, विश्वेश्वरानन्द-वैदिक शोध संस्थान, भण्डारकर प्राच्य विद्या शोध संस्थान तथा राजस्थान संस्कृत साहित्य परिषद् आदि विभिन्न संस्थाओं से सम्बद्ध रहे हैं। परोपकारिणी सभा के सदस्य के रूप में आपका मनोनयन १९७३ में हुआ तथा इस सभा की विद्वत् समिति के भी आप सदस्य हैं। आपने उच्चकोटि के शोध निबन्ध भी लिखे हैं जिनकी संख्या लगभग २२५ है।

ले. का.—वेद विषयक कृतियां—वेदलावण्यम्—दो भाग १९५९ तथा १९६० ऋग्वेद के सूक्तों का पाठ्योपयोगी संकलन। वेद भारती—इसमें वेद के कतिपय मंत्रों, ऐतरेय एवं शतपथ ब्राह्मण के कुछ अंशों तथा उपनिषद् के कुछ भाग संकलित हैं।

ईशोपनिषद् तथा केनोपनिषद् के सटीक संस्करण। रावण भाष्यम्—(रावण नामक पण्डित के द्वारा किये गये वेद भाष्य के उपलब्ध अंश को सूर्य पण्डित की टीका के साथ सम्पादित कर हिन्दी अनुवाद सहित प्रकाशित किया है।) ऋग्वेद के ऋषि और उनका संदेश तथा दर्शन—लेखक को केरल विश्वविद्यालय के केरल वर्मा कोयल थम्पूरन स्वर्ण पदक (१९५४) प्राप्त कराने वाला यह निबन्ध हिन्दी तथा अंग्रेजी में Seers of the Rigveda and their Message and Philosophy शीर्षक से १९६० में प्रकाशित।

अन्य वैदिक साहित्य

पारस्करीयोपनयन सूत्राणि—यह वेद लावण्यम् का ही अंश है जिसमें पारस्कर गृह्यसूत्र के उपनयन सूत्रों को मूल, हिन्दी अनुवाद तथा टिप्पणियों के साथ दिया गया है। डा. गुप्त द्वारा लिखे गये विभिन्न वैदिक विषयों से सम्बन्धित शोध पत्र भी पुस्तक रूप में छपे हैं। इनका विवरण इस प्रकार है—

वैदिक भाषा और निर्वचन

यास्कीय निर्वचन—Mono Syllabic Origin of the Vedic Language. वेद विषयक शोध निबन्ध—

Nature of the Vedic Shakhas, Ancient Schools of Vedic Interpretation, Swami Dayanand as a Vedic Commentator, Seers of the Rigveda: Their message and Philosophy, Aulthorship of some of the Hymns of the Rigveda, A Critical Study of the Commentary on the Rigveda by Swami Dayanand, Coconut in the Rigveda, Authorship of the Phonetic Sutras edited by Dayanand, The Arya Samaj School of Vedic Studies. (Annals of the Bhandarkar Oriental Reseasch Institute (Diamond Jubilee Volume-1977-78) डा. सुधीरकुमार गुप्त ने 'भारतीय दर्शन के सम्प्रदाय' तथा 'संस्कृत साहित्य का सुबोध इतिहास' नामक दो अन्य उपयोगी ग्रन्थ भी लिखे हैं। उनका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ 'वेद भाष्य पद्धति को दयानन्द सरस्वती की देन' है जो १९८० (२०३७ वि.) में प्रकाशित हुआ। डा. गुप्त ने भारती शोध सार संग्रह नामक शोध पत्रिका का प्रकाशन किया था जिसमें विभिन्न शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित उपयोगी शोध लेखों का परिचय तथा उनका संक्षिप्त सार संकलित किया जाता था।

व. प.—वेदसदन, विश्वविद्यालयपुरी गोपालपुरा मार्ग, जयपुर ३०२०१५

सुन्दरलाल भाटिया

भाटियाजी का जन्म १९०४ में पंजाब के राजनपुर नामक ग्राम में हुआ। हाई स्कूल तक शिक्षा प्राप्त कर आपने राजकीय सेवा में प्रवेश किया। देश विभाजन के पश्चात् वे जयपुर आ गये और राजस्थान के महालेखाकार के कार्यालय में अधिकारी बने। वहीं से कार्य निवृत्त हुए। जयपुर में ही इनका निधन हो गया।

ले. का.—The Life and Mission of Swami Dayanand. (स्वामी दयानन्द के जीवन पर आधारित अंग्रेजी पद्य रचना), Poems of Ways and Means of Successful life from Light of Truth. (सत्यार्थ-प्रकाश पर आधारित अंग्रेजी कवितायें), संध्या प्रदीप।

डा. (श्रीमती) सुनीता

हैदराबाद के प्रसिद्ध आर्य नेता भाई बंशीलाल की पुत्री तथा स्व. पं. मन्जुनाथ शास्त्री की पत्नी डा. सुनीति हैदराबाद में निवास कर रही हैं।

ले. का.—ऋषि दयानन्द की वेद सम्बन्धी मान्यताएँ १९७८, वैदिक सांध्यगीत १९७१.

व. प.—४-५-७५३ सुलतान बाजार हैदराबाद-५०००२७ (म्रां. प्र.)।

श्रीमती सुनीति शर्मा

आपका जन्म २८ जून १९३१ को दिल्ली में पं. शालिग्राम शर्मा के यहां हुआ। आपका विवाह कलकत्ता के प्रसिद्ध आर्य व्यवसायी श्री सुखदेव शर्मा से हुआ है। आप उच्च कोटि की लेखिका, कवयित्री तथा गायिका हैं। आप आर्यसमाज कलकत्ता की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं। आप आर्य संसार मासिक की सहायक सम्पादक भी हैं।

ले. का.—संध्या-ज्योति, श्रुतिसुधा (१९८६) एक गुच्छा फूलों का (काव्य)।

व. प.—एस.डी. शर्मा एण्ड कम्पनी, २० नेताजी सुभाष रोड, कलकत्ता ७००००१

सुभद्रा देवी आर्य

आप प्रसिद्ध आर्यसमाजी विद्वान् तथा शास्त्रार्थ महारथी पं. धर्मभिक्षुजी की पत्नी हैं। आपने पं. धर्मभिक्षुजी का जीवनचरित लिखा है जो जितेन्द्रकुमार अधिवक्ता, इलाहाबाद द्वारा १९८१ में प्रकाशित हुआ है।

व. प.—द्वारा जितेन्द्रकुमार एडवोकेट १६७, चौक, इलाहाबाद।

डा. सुभाषचन्द्र वेदालंकार

आपका जन्म १३ अप्रैल १९४२ को जिला डेरा इस्माइल खां (पंजाब) के ग्राम टांक में हुआ। २०१७ वि. (१९६१) में आपने गुरुकुल कांगड़ी से वेदालंकार की उपाधि ग्रहण की। तत्पश्चात् राजस्थान विश्वविद्यालय

से आपने १९६३ में संस्कृत विषय में एम. ए. तथा कालान्तर में पी-एच.डी. की उपाधियां ग्रहण कीं। सम्प्रति राजस्थान विश्वविद्यालय में संस्कृत के प्रवक्ता हैं। आपने राजस्थान संस्कृत परिषद् की स्थापना तथा आर्यसमाज के प्रचार में योगदान किया। आपका पी-एच.डी. का विषय 'कल्हण रचित राजतरंगिणी में चित्रित भारतीय संस्कृति' था।

ले. का.—ईश स्तोत्रम् (वेद वर्णित ईश्वर के नामों की पद्यात्मक व्याख्या) १९८२, ईश काव्यम् (ईशोपनिषद् का संस्कृत पद्यानुवाद) वैदिक-संस्कृति पीयूष, भारत-गौरवम् संस्कृति सुधा—१९८१, शेक्सपियर शतकम्, संस्कृत शिशुगीतम्, संस्कृत गीतांजलि।

व. प.—संस्कृत विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर।

आचार्या सुमेधा

इनका जन्म १९६० में मुरादाबाद जिले के चौंटीपुरा ग्राम में हुआ। इनकी शिक्षा कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली) में हुई। यहां से इन्होंने शास्त्री एवं व्याकरणाचार्य की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। १९८२ में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए. करने के पश्चात् १९७८ में 'महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य के परिप्रेक्ष्य में अग्नि देवता का अध्ययन' विषय लेकर इन्होंने पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। सम्प्रति अपने ग्राम में ही दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय की आचार्या हैं।

व. प.—दयानन्द कन्या गुरुकुल चौंटीपुरा (मुरादाबाद)

डा. सुरेन्द्रकुमार

इनका जन्म ग्राम मकड़ौली कलां (जिला रोहतक) में श्री गहरसिंह के यहाँ १२ जनवरी १९५१ को हुआ। इनका प्रारम्भिक शिक्षण गुरुकुल झज्जर में हुआ। तदुपरान्त आपने पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा गुरुकुल कांगड़ी से हिन्दी में एम. ए. की परीक्षा १९७१ में सर्वप्रथम रहकर उत्तीर्ण की। प्रो. सुरेन्द्र विगत कई वर्षों से गवर्नमेंट कालेज झज्जर में प्राध्यापक हैं। आपने मनुस्मृति का एक विस्तृत भाष्य लिखा है। इसमें प्रक्षिप्त श्लोकों को पृथक् करने के लिये विशिष्ट तार्किक प्रक्रिया को अपनाया गया है। मनुस्मृति का यह महत्त्वपूर्ण संस्करण आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ है। आपने दयानन्द शोध-पीठ पंजाब विश्वविद्यालय से 'वैदिक आख्यान : संस्कृत एवं हिन्दी काव्यों में चित्रण एवं स्वरूप विवेचन' विषय लेकर १९९० में पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की।

व. प.—हिन्दी विभाग, नेहरू राजकीय कालेज, झज्जर (रोहतक)

सुरेन्द्रकुमार शर्मा

श्री शर्मा का जन्म २० फरवरी १९३५ को राजस्थान में आर्यसमाज के प्रसिद्ध कार्यकर्ता पं. खेमराज शर्मा के यहां मण्डावा (जिला सीकर) में हुआ। इनकी शिक्षा एम. ए. तथा बी. एड. तक हुई। विगत अनेक वर्षों से आप राजस्थान के शिक्षा विभाग में कार्यरत हैं। श्री शर्मा ने अपने पिता तथा आर्य नेता पं. खेमराज शर्मा की जीवनी 'जनजागृति के अग्रदूत पं. खेमराज शर्मा' शीर्षक से लिखी है। राजस्थान के सामन्तयुगीन, जड़ता ग्रस्त जीवन में आर्यसमाज के कर्मठ एवं समपर्णशील कार्यकर्ताओं ने धार्मिक जागृति और सामाजिक प्रगति की चेतना कैसे उत्पन्न की, यह इस जीवनचरित से प्रत्यक्ष होता है।

व. प.—द्वारा—श्री शुद्धबोध शर्मा आर्यसमाज, श्रीगंगानगर (राजस्थान)

सुरेन्द्रनाथ सिद्धान्तविशारद

आप बंगाल के हावड़ा जिले के ग्राम तुलसी बेड़िया के निवासी थे।

ले. का.—धर्म ओ ताहार स्वरूप।

पं. सुरेन्द्र शर्मा गौड़ काव्य, वेदतीर्थ

पं. जयदेव शर्मा के पुत्र पं. सुरेन्द्र शर्मा गौड़ आरम्भ से ही आर्यसमाज के धार्मिक प्रचार कार्य में संलग्न रहे। उन्होंने १९१३-१४ में प्रचारक के रूप में अपना कार्य आरम्भ किया तथा भारत के विभिन्न प्रान्तों के अतिरिक्त

बर्मा के विभिन्न नगरों में धर्म प्रचार किया। १९४४-४५ में वे सिन्ध गुरुकुल (मलीर करांची) के आचार्य एवं अधिष्ठाता रहे। तत्पश्चात् हरदोई के ए. के. पी. कालेज में संस्कृत का अध्यापन किया। बाद में वे शाहदरा दिल्ली में निवास करने लगे।

ले. का.—वेद-वेदांग १९३५, वेद और संसार के मत मतान्तर, जीवन का आनन्द भाग १-१९३१, जीवन का आनन्द भाग—२ (१९५०), कर्मफल नाटक, पुत्रेष्टि यज्ञ (जीवन का आनन्द), गोमेध (सृष्टि की उत्पत्ति), श्रावणी उपाकर्म की वैदिक पद्धति (२०२१ वि.), मानव जीवन का चारित्रिक निर्माण २ भाग (२०२७ वि.), सचित्र अष्टांग योग, वेदोक्त राष्ट्र निर्माण, वेदार्थ में भाष्यकारों की मौलिक भूलें, वेद में सृष्टि की आयु।

पं. सुरेशचन्द्र वेदालंकार

पं. सुरेशचन्द्र विद्यालंकार का जन्म १७ अक्टूबर १९१७ को देवरिया जिले के हाटा नामक ग्राम में श्री हठीप्रसाद के यहां हुआ। आपने गुरुकुल कांगड़ी से १९८५ वि. (१९३९) में वेदालंकार की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम. ए. किया। प्रारम्भ में आपने गुरुकुल वैद्यनाथधाम (बिहार) में १९४०-४६ तक अध्यापन कार्य किया। तत्पश्चात् आप गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में १९४६ से १९४८ तक अध्यापक रहे। १९४८-४९ तक आपने गोरखपुर से निकलने वाले प्राकृतिक चिकित्सा के प्रमुख पत्र आरोग्य के सम्पादकीय विभाग में कार्य किया। १९५१ में आपकी डी. वी. कालेज गोरखपुर में हिन्दी प्राध्यापक के रूप में नियुक्ति हुई, तब से आप अवकाश ग्रहण तक वहाँ रहे।

ले. का.—प्रार्थना मंत्र (१९६२), मन की अपारशक्ति, ईशोपनिषद् व्याख्या, मातृभूमि की वंदना (१९६३), यम-नियम, पंचयज्ञ महिमा, महकते फूल, वेद में ईश्वर, जीव और प्रकृति, आकर्षक व्यक्तित्व, मंगलप्रभात, धर्म का मार्ग, सफल जीवन, मनुष्य बनो, साहसी बनो, हम प्रसन्न रहें, सखी की सीख, हंसते जीना, मानव धर्म सूत्र, वैदिक राजनीति, मां की लोरियां, दुर्गुण दूर भगाइये, गृहस्थ जीवन, धर्म का स्वरूप, हम वीर बनें, संस्कार विषयक ग्रन्थ—नामकरण संस्कार, वैदिक विवाह परिचय, अन्त्येष्टि संस्कार। मातृभूमि वंदना का गुजराती अनुवाद।

सुशील कुमारी और कुसुम कुमारी

मैनपुरी के आर्य विद्वान् बाबू श्यामसुन्दरलाल एडवोकेट की उक्त पुत्रियों का जन्म क्रमशः १९११ तथा १९१३ में हुआ था। दोनों बहनों ने हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी की समुचित शिक्षा प्राप्त की थी। दोनों ही उच्च कोटि की काव्य रचना करती थीं। विभिन्न पत्रों में उनकी कवितायें प्राय प्रकाशित होती थीं। इनके उपनाम क्रमशः 'विकसित कुसुम' तथा 'किसलय' था। आर्यसमाज में स्वीकृत ओम् ध्वज गीत—'जयति ओम् ध्वज व्योम विहारी' की रचना इन्हीं कवयित्री बहनों ने की थी। इसका रचना काल १९३३ का है और उसी वर्ष अजमेर में सम्पन्न महर्षि दयानन्द निर्वाण अर्द्धशताब्दी समारोह में यह गीत सर्वप्रथम गाया गया था।

कुमारी सुशीला आत्माराम पण्डित

मास्टर आत्माराम अमृतसरी की छोटी पुत्री कु. सुशीला का जन्म ८ अप्रैल १९१० को हुआ। आप दीर्घ काल तक आर्य कन्या महाविद्यालय की आचार्या रहीं। विगत अनेक वर्षों से आप कन्यागुरुकुल पोरबन्दर की अधिष्ठाता तथा व्यवस्थापक हैं।

ले. का.—आदर्श दम्पती (पं. आत्माराम अमृतसरी तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती यशोदा देवी का जीवन-चरित) १९६१, मेहकती मानवता—(उक्त ग्रन्थ का गुजराती रूपान्तर) १९८१, नैसर्गिक नारी सौन्दर्य, निसर्ग अने आरोग्य।

व. प.—आर्य कन्या गुरुकुल पोरबंदर ३६०५१५ (गुजरात)

डा. सुशीला आर्या

सुशीलाजी का जन्म नरवाना (जिला जींद) में ५ जुलाई १९३० को श्री हजारीलाल गुप्त के यहां हुआ।

आपने पंजाब विश्वविद्यालय से हिन्दी तथा संस्कृत में एम. ए. किया तथा राजस्थान विश्वविद्यालय से १९७३ में 'महाकवि मेधव्रताचार्यः व्यक्तित्व तथा कृतित्व' विषय लेकर पी-एच. डी. की उपाधि ग्रहण की। नरवाना तथा कन्या गुरुकुल नरेला में आपने अध्यापन किया। तत्पश्चात् १९७० से जनता महाविद्यालय चरखी दादरी में प्रवक्ता पद पर आपने कार्य किया। यहीं से आपने अवकाश लिया है।

ले. का.—गीत संग्रह—आग की लपटें (१९४८), सुशीला गीत शतक, गौ गीतांजलि (१९६७), योगिराज श्रीकृष्ण (१९६४) मर्यादा पुरुषोत्तम राम (१९६७)

व. प.—सुखनिवास, वाटर वर्क्स रोड़ चरखी दादरी (हरयाणा)

श्रीमती सुशीला देवी जौहरी

पं. क्षेमकरणदास त्रिवेदी के पुत्र श्री विष्णुदयाल सेठ की पुत्री श्रीमती सुशीला देवी का जन्म २ दिसम्बर १९०६ को प्रयाग में हुआ। आप भगवानदीन आर्य कन्या महाविद्यालय लखीमपुर खीरी की प्रधानाचार्या रही हैं।

आपने पं. क्षेमकरणदास त्रिवेदी का जीवनचरित लिखा है जो रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा १९७१ में प्रकाशित हुआ।

डा. सुरेन्द्रसिंह कादियाण

डा. कादियाण का जन्म ११ मार्च १९४३ को जींद (हरयाणा) में हुआ। इनके पिता श्री आशाराम मूलतः उत्तरप्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के निवासी थे। इन्होंने हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम. ए. (१९७५) तथा भारतीय पत्रकारिता विद्यापीठ दिल्ली से पत्रकारिता में डिप्लोमा परीक्षा उत्तीर्ण की। १९६६ से ये उत्तर रेलवे में कार्यरत हैं। डा. कादियाण ने आर्यसमाज के विभिन्न पत्रों में अनेक लेख लिखे हैं। इनका शोध प्रबंध 'प्रेमचन्द साहित्य पर आर्यसमाज का प्रभाव' गुरुकुल विश्व-विद्यालय कांगड़ी से १९८२ में पी-एच. डी. की उपाधि के लिये स्वीकृत हो चुका है। आप विगत कई वर्षों से मासिक सम्राट् का सम्पादन कर रहे हैं।

ले. का.—आर्यसमाज चिन्तनः अनुचिंतन (सम्पादित) (१९८५), अंधी गलियों का चक्रव्यूह : खालिस्तान (१९८७)

व. प.—वाई. ४५५. कालोनी नं. १ नांगलोई, दिल्ली ११००४१

डा. सुरेशचन्द्र त्यागी

डा. त्यागी का जन्म मुजफ्फरनगर जिले के चरथावल ग्राम में ३ जुलाई १९४३ को हुआ। १९६३ में इन्होंने हिन्दी में एम. ए. किया तथा १९७० में क. मुन्शी हिन्दी विद्यापीठ आगरा से 'छायावादी काव्य में सौन्दर्य दर्शन' विषय पर पी-एच. डी. की उपाधि ग्रहण की। १९६३ में वे एन. ए. एस. कॉलेज सहारनपुर में हिन्दी के प्रवक्ता पद पर नियुक्त हुए। १९६५ से इसी नगर के एम. एस. कॉलेज में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य कर रहे हैं।

ले. का.—आचार्य अभयदेव ग्रन्थावली का पांच खण्डों में सम्पादन व प्रकाशन (१) इसमें आचार्य अभयदेव लिखित ब्राह्मण की गौ, वैदिक ब्रह्मचर्य गीत, वैदिक उपदेशमाला तथा वेदवाणी शीर्षक पुस्तकें संगृहीत हैं। १९८३, (२) यज्ञ और योग—आचार्य अभयदेव के यज्ञ एवं योग विषयक ३१ स्फुट निबंधों का संकलन—१९८४, (३) तरंगित हृदय—इसमें आचार्य अभयदेव के गद्य काव्य के साथ-साथ उनके संस्मरणात्मक तथा अन्य विविध निबंध संकलित हैं—१९८६, (४) वैदिक विनय—तीनों खण्डों का एक ही ग्रन्थ में संकलन १९८८, (५) एक योग यात्री—आचार्य अभयदेव की आत्मकथा, श्री अरविंद तथा माताजी से उनके पत्र-व्यवहार के कुछ अंश तथा डायरी के स्फुट प्रसंग, १९९०

व. प.—रामजीवन नगर, चिलकाना रोड़ सहारनपुर (उ. प्र.) २४७००१

सुरेशचन्द्र पाठक

पाठकजी का जन्म २५ जुलाई १९२२ को संस्कृत के महान् पण्डित तथा गुरुकुल वृन्दावन के भूतपूर्व मुख्याध्यापक तथा सहायक मुख्याधिष्ठाता पं. शंकरदेव पाठक तथा

संस्कृत की विदुषी एवं महाकवि मेधाव्रताचार्य की अनुजा श्रीमती जानकी देवी के यहां गुरुकुल भूमि वृन्दावन में हुआ। उन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम. ए. किया। १९४२ में भारत छोड़ो आन्दोलन में भी पाठकजी ने भाग लिया और वे लगभग एक वर्ष तक अज्ञातवास में रहे। उनका अधिकांश सेवाकाल भारत सरकार के विदेश सेवा विभाग में रहा जहाँ से उन्होंने १९८१ में अवकाश ग्रहण किया। जुलाई १९८५ से वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अंग्रेजी मासिक पत्रिका वैदिक-लाइट का सफलतापूर्वक सम्पादन कर रहे हैं।

व. प.—६२६/सैक्टर १२ रामकृष्णपुरम नई दिल्ली ११००२२

डा. सुषमा आर्य

डा. सुषमा का जन्म १४ जनवरी १९६३ को हरिद्वार जिले के ग्राम मुण्डेट में श्री सेवाराम आर्य के यहाँ हुआ। इनकी शिक्षा कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली) में हुई जहाँ से आपने व्याकरणाचार्य (स्वर्णपदक प्राप्त) तथा इतिहासाचार्य की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। आपने गुरुकुल नरेला में ही व्याकरण, साहित्य तथा इतिहास का अध्यापन भी किया। पुनः गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से इतिहास में एम. ए. तथा पी-एच.डी. भी की। आपने डा. सत्यकेतु विद्यालंकार के नेतृत्व में दक्षिण पूर्वी ऐशिया के कई देशों में सांस्कृतिक प्रतिनिधि मण्डल में सम्मिलित होकर वैदिक संस्कृति का प्रचार किया है।

ले. का.—महर्षि दयानन्द और उनकी राष्ट्रीयता, उत्तरी और दक्षिणी पंचाल : एक ऐतिहासिक और पुरातात्त्विक अध्ययन।

लाला सूरजभान

प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री तथा आर्य नेता लाला सूरजभान का जन्म १ नवम्बर १९०४ को उत्तर पश्चिमी सीमान्त-प्रदेश के जिला डेरा इस्माइल खां के टांक नामक ग्राम में हुआ। इनकी शिक्षा प्रथम डी.ए.वी. हाई स्कूल लाहौर और उसके पश्चात् डी. ए. वी. कालेज तथा गवर्नमेंट कालेज लाहौर में हुई। पंजाब विश्वविद्यालय से उन्होंने एम. ए. (आनर्स) अंग्रेजी में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् शिक्षा शास्त्र का विशेष अध्ययन करने के लिये आप लन्दन गये और लन्दन विश्वविद्यालय के इन्स्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग से शिक्षा विषय लेकर एम. ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की। शिक्षा समाप्ति के पश्चात् वे डी.ए.वी. कालेज, लाहौर में अंग्रेजी के प्रवक्ता के पद पर नियुक्त हुए। १९४२ तक वे डी.ए.वी. कालेज, शोलापुर में अंग्रेजी के प्रवक्ता तथा प्राचार्य के पद पर रहे। १९४९ से १९६२ तक आपने डी.ए.वी. कालेज प्रधान जालंधर के प्रिंसिपल के पद कर कार्य किया। तत्पश्चात् आप कुरुक्षेत्र तथा पञ्जाब विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। लालाजी आर्य प्रादेशिक सभा के प्रधान पद पर एक लम्बी अवधि तक रहे तथा डी. ए. वी. कालेज कमेटी के प्रधान पद पर भी आपने पर्याप्त समय तक कार्य किया। २८ अगस्त १९८० को आपका दिल्ली में निधन हो गया।

ले. का.—स्वामी दयानन्द का अंग्रेजी जीवनचरित— Dayanand : His Life and Work. इसका प्रथम संस्करण इण्डियन प्रेस प्रयाग से १९३४ में छपा। तत्पश्चात् प्रादेशिक सभा ने इसे १९५४, १९७३ तथा १९७८ में प्रकाशित किया। इसके अतिरिक्त आपने शिक्षा शास्त्र पर अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे हैं।

डा. सूर्यकान्त

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्कृत विद्वान् डा. सूर्यकान्त का जन्म १ जनवरी १९०१ को सहारनपुर जिले के सैदपुरा ग्राम में श्री भीखनलाल के यहाँ हुआ। इनका अध्ययन गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में हुआ, जहाँ से आपने १९१९ में विद्याभास्कर की उपाधि प्राप्त की। आपने लाहौर से संस्कृत में एम.ए. १९२८ में किया तथा ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से १९३७ में डी. फिल. की उपाधि प्राप्त की। आपने लाहौर, दिल्ली, वाराणसी, अलीगढ़ तथा कुरुक्षेत्र में संस्कृत का उच्चस्तरीय अध्यापन किया तथा वाराणसी, अलीगढ़ एवं कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालयों में संस्कृत के प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष रहे। आपका निधन १९८२ में हुआ।

ले. का.—सम्पादन-सामवेद सर्वानुक्रमणी, काठक ब्राह्मण संकलन, काठक श्रौतसूत्र संकलन, लघु ऋक् तन्त्र संग्रह, साम सप्त लक्षण, कौथुम गृह्यसूत्र, कौषीतकी गृह्यसूत्र संग्रह, अनुवाद—ए. ए. मैकडॉनल कृत वैदिक माइथोलोजी का वैदिक देवशास्त्र शीर्षक से अनुवाद १९६१, मॉरिस ब्लूमफील्ड की पुस्तक अथर्ववेद और गोपथ ब्राह्मण का अनुवाद।

सूर्यदत्त शर्मा

आप गुरुकुल होशंगाबाद (मध्यप्रदेश) के अधिष्ठाता थे। आपने वैशेषिक दर्शन का भाषानुवाद किया, जो आर्य ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ।

ले. का.—वैशेषिक दर्शन भाषानुवाद अर्थात् पदार्थ-धर्म निरूपण (आषाढ़ १९७० वि.), वैशेषिक दर्शन भाषा-नुवाद अर्थात् पदार्थ धर्म निरूपण उत्तरार्द्ध (२६ मई १९१४), आर्य ज्ञानोदय—अर्थात् वैदिक धर्म शिक्षा—(१९१४), ईश्वर—निराकार निरूपणम् (१९०८), धर्मोपदेश रत्नमाला प्रथम खण्ड (१९१३), प्रश्नार्णव अर्थात् पौराणिक मत निराकरण प्रश्नावली (१९१०), वेद और पुराण की शिक्षा—(वैदिक और पौराणिक सिद्धांतों की तुलना) (१९०६), वैदिक सिद्धान्तदर्पण अर्थात् वैदिक धर्म शिक्षा (१९२५).

डा. सूर्यदेव शर्मा

प्रसिद्ध लेखक तथा वक्ता डा. सूर्यदेव शर्मा का जन्म १ मार्च १९०१ को एटा जिले के बरना नामक ग्राम के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। इनकी उच्च शिक्षा डी. ए. वी. कालेज कानपुर में हुई जहां से आपने एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। कालान्तर में वे डी. ए. वी. हाई-स्कूल अजमेर के प्रधानाचार्य होकर अजमेर आ गये और जीवन पर्यन्त वहीं रहे। डा. शर्मा भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् के परीक्षा मंत्री रहे। उनके कार्यकाल में इन धार्मिक परीक्षाओं का देशव्यापी प्रचार हुआ और सहस्रों विद्यार्थी इनमें सम्मिलित होते रहे। वे आर्यसमाज अजमेर के कई वर्षों तक मंत्री भी रहे। १९८३ में उनका निधन हो गया।

ले. का.—आर्यसमाज की आवश्यकता, धर्म शिक्षा (१० भागों में) विश्व के महामानव, हैदराबाद का रक्त-रंजित इतिहास (पं. जयदेव शर्मा विद्यालंकार के सहलेखन में), युद्धनीति और अहिंसा, विश्व के महामानव, स्वस्थ-जीवन, इतिहास की कहानियां, साहित्य प्रवेश, खतरे का बिगुल, वैदिक राष्ट्रगीत—(अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त का काव्यानुवाद), पुरुष सूक्त का काव्यानुवाद, आर्यसमाज और हिन्दी, ईश्वर और वेद (सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास की व्याख्या) १९८२, सेवा और संघर्ष (पं. जिया-लाल का जीवन चरित)

स्वामी सूर्यानन्द सरस्वती

स्वामी सूर्यानन्द का पूर्व नाम सूर्यप्रसाद चौधरी था। इनका जन्म २ जनवरी १८९२ को शाजापुर (मध्यप्रदेश) में हुआ। आप पारिवारिक दृष्टि से कबीर पंथी थे, किन्तु पं. गणपति शर्मा के एक शास्त्रार्थ को सुन कर आर्यसमाजी बन गये। आपने मध्यप्रदेश में अनेक स्थानों में वैदिक धर्म का प्रचार किया। जीविकोपार्जन की दृष्टि से आपने वकालत का कार्य किया। १९४४ में आपने स्वामी व्रतानन्द से संन्यास दीक्षा ग्रहण की और स्वामी सूर्यानन्द का नाम ग्रहण किया। १ जनवरी १९६० को उज्जैन में इनका निधन हो गया। आपके काव्य संग्रह का नाम संगीत सूर्य प्रकाश है। इनकी अनेक रचनाएं अप्रकाशित भी हैं। संगीत सूर्य प्रकाश सत्यार्थप्रकाश का आधार लेकर लिखा गया काव्य है जिसमें हिन्दी कविताओं के साथ साथ उर्दू, फारसी के ख़याल आदि काव्य रूपों का भी प्रयोग हुआ है।

ले. का.—ईसू परीक्षा, सबका धर्म।

श्री सेवकलाल करसनदास (कृष्णदास)

स्वामी दयानन्द के बम्बई निवासी भक्तों में श्री सेवक-लाल कृष्णदास का नाम उल्लेखनीय है। ये आर्यसमाज बम्बई के प्रथम सभासदों में थे। इस आर्यसमाज के प्रथम वर्ष के सभासदों की सूची में संख्या ९२ पर इनका नाम अंकित था। ये भणसाली कुलोत्पन्न वैश्य थे। स्वामी दया-नन्द के सम्पर्क में आने से पूर्व ये कुल परम्परानुसार वैष्णव (वल्लभाचार्य के सम्प्रदाय) मत के अनुयायी थे। स्वामी

दयानन्द के बम्बई आगमन से पूर्व इन्होंने स्वामीजी द्वारा १८६९ में काशी में पौराणिक विद्वानों से किये गये शास्त्रार्थ का विवरण गुजराती में संक्षिप्त रूप से आर्यमित्र नामक किसी पत्र में प्रकाशित कराया था। स्वामीजी के बम्बई में वालकेश्वर स्थित गोशाला में निवास के समय सेवकलाल ने उनसे न्यायदर्शन तथा पातंजल महाभाष्य का अध्ययन भी किया था। जब स्वामीजी सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय संशोधित संस्करण को तैयार करने लगे तो सेवकलाल ने जैन धर्म के ग्रन्थों को जुटाने में उनकी सहायता की थी। आप आर्यसमाज बम्बई के मंत्री तथा उप प्रधान आदि पदों पर रहे थे। सितम्बर १८८४ में आपने देश भर के आर्यसमाजों के नाम एक विज्ञप्ति प्रसारित कर सम्पूर्ण भारत के आर्यसमाजों की एक 'प्रतिनिधि प्रधान आर्यसमाज' के संगठन की प्रेरणा दी थी। अलीबाग के मांडवा ग्राम में १९५५ वि. में इनका निधन हुआ।

ले. का.—अथर्ववेद संहिता—सत्यनारायण प्रेस मुम्बई से १८८४ में प्रकाशित। इसका सम्पादन सेवकलाल ने ही किया था। अथधर्माधर्म विचार—गत शताब्दी के नवें दशक में जब प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं का गठन होने लगा तो आपने 'अथ प्रदेश सभा के नियम' शीर्षक से इन नियमों का निर्माण किया। ये नियम २९ दिसम्बर १८८५ को अजमेर में परोपकारिणी सभा के अधिवेशन में स्वीकृत हुए और १८८६ में सेवकलाल कृष्णदास ने इन्हें सुबोधप्रकाश प्रेस बम्बई से प्रकाशित कराया।

सोमदत्त शास्त्री

शास्त्रीजी का जन्म मुजफ्फरनगर जिले के टिटौड़ा नामक ग्राम में १५ मई १९५२ को पं. काशीराम उपाध्याय के यहां हुआ। इनकी शिक्षा गुरुकुल घरौण्डा में हुई। तत्पश्चात् आपने वी. ए., साहित्य रत्न तथा शिक्षा शास्त्री आदि की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। आपके परिवार के सभी सदस्यों की लेखन में रुचि रही। पिता पं. काशीराम तथा ताऊ श्री चन्द्रभान शास्त्री तथा श्री दीपचन्द भी उत्तम कोटि के लेखक थे। इनकी अनेक रचनायें प्रकाशित हुई हैं। चन्द्रभान शास्त्री नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के निकटतम सहयोगी थे। उनकी पुस्तक 'जनता की शक्ति : भारत की मुक्ति' ने पर्याप्त लोकप्रियता अर्जित की। सोमदत्त शास्त्री आर्य केन्द्रीय सभा चण्डीगढ़ के मंत्री हैं तथा संस्कृत प्रचारपरिषद् के प्रधान हैं।

ले. का.—गृहस्थ धर्म, वेदोक्त सद्गृहस्थ।

व. प.—मं. नं. ३९९० सैक्टर २२ डी. चण्डीगढ़

डा. सोमदेव शास्त्री

शास्त्रीजी का जन्म ६ दिसम्बर १९५० को मध्यप्रदेश के जिला मन्दसौर के अन्तर्गत निनोरा नामक ग्राम में श्री भवानीराम शर्मा के यहां हुआ। आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन में रुचि जागृत होने पर ये १९६४ में गुरुकुल झज्जर में प्रविष्ट हुए। तत्पश्चात् प्रभात आश्रम (जिला मेरठ), गुरुकुल देवरिया तथा पाणिनि महाविद्यालय वाराणसी में रहकर आपने अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निरुक्तादि का अध्ययन किया। १९७७ में आपने विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन से संस्कृत में एम. ए. किया और १९८५ में राजस्थान विश्वविद्यालय से 'वैदिक संहितापाठ और पद पाठों का विश्लेषण और मूल्यांकन' विषय लेकर पी-एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। सम्प्रति आप पुनर्वसु आयुर्वेद महाविद्यालय बम्बई में संस्कृत के व्याख्याता हैं।

ले. का.—सरल संस्कृत शिक्षा तथा इसका अंग्रेजी अनुवाद, वैदिक और लौकिक संस्कृत में स्वर सिद्धान्त १९८३, क्रान्तिवीर श्यामजी कृष्ण वर्मा। आजकल डा. सोमदेव सत्यार्थप्रकाश का पत्राचार पाठ्यक्रम तैयार कर रहे हैं।

व. प.—३०४, सुमन एपार्टमेंट्स, यारी रोड, वरसोवा अंधेरी पश्चिम, बम्बई ४०००६१

श्री सोमनाथ मरवाह

विख्यात विधिवेत्ता और आर्य नेता श्री सोमनाथ मरवाह का जन्म १५ दिसम्बर १९१० को पाकिस्तान के जेहलम नगर में श्री रामनिवास के यहां हुआ। इन्होंने लाहौर में रहकर बी. ए. और एल. एल. बी. की शिक्षा

पूरी की तथा १९३३ में वकालत आरम्भ कर दी। देश-विभाजन के पश्चात् आप दिल्ली में व्यवस्थित हुए और कानून के व्यवसाय में पुनः संलग्न हो गये। आप सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति रहे हैं। आप कर्मठ कार्यकर्त्ता तथा जागरूक नेता है। आपने अंग्रेजी में महात्मा हंसराज का एक सुन्दर जीवन चरित लिखा है जो सार्वदेशिक सभा ने प्रकाशित किया है। आपकी Homage to Swami Shraddhanand शीर्षक पुस्तक दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने प्रकाशित की है।

व. प.—सी. ३ ग्रीनपार्क, नई दिल्ली

आदिपूड़ि सोमनाथराव

सत्यार्थप्रकाश के तेलुगु अनुवादक श्री आदिपूड़ि सोमनाथराव अपनी मातृभाषा तेलुगु के अतिरिक्त हिन्दी तथा अंग्रेजी के अच्छे विद्वान् थे। आप आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद दक्षिण में उपदेशक रहे। १९०६ में आपने इस ग्रन्थ के १०वें समुल्लास तक का अनुवाद किया। १९१२ में इन्हीं के भाई पं. गोपालराव ने ११वें समुल्लास का अनुवाद किया। यह आर्यसमाज हैदराबाद से छपा। अवशिष्ट तीन समुल्लासों का अनुवाद पं. राजरत्नाचार्य ने किया।

पं. सोमपाल शास्त्री

पं. सोमपाल का जन्म ११ जनवरी १९६६ को मुरादाबाद जिले के ग्राम मौढ़ा में चौधरी रघुवीरसिंह के यहां हुआ। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरु विरजानन्द संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर (पंजाब) में हुई। तत्पश्चात् पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री उत्तीर्ण करने के अनन्तर आपने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए. किया। आपने 'अथर्ववेदे उपमालंकारः' विषय लेकर शोध कार्य सम्पन्न किया। इनकी कवितायें तथा लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होते रहे हैं।

व. प.—आर्यसमाज सैक्टर १६, चंडीगढ़ १६००१६

स्वामी सोमानन्द सरस्वती

निजाम हैदराबाद में आर्य जागृति के सूत्रधार पं. नरेन्द्र का जन्म १० अप्रैल १९०७ को हुआ। इनके पूर्वज उत्तरप्रदेश के निवासी थे, किन्तु कई पीढ़ियों तक निजाम राज्य की सेवा में रहने के कारण उन्होंने हैदराबाद (दक्षिण) की नागरिकता स्वीकार कर ली थी। उनके पिता राय केशवप्रसाद उर्दू एवं फारसी के विद्वान् थे, जिन्हें निजाम की ओर से मनसबदारी प्राप्त थी किन्तु जब पुत्र नरेन्द्र ने देश और धर्म के प्रति अपनी निष्ठा व्यक्त करते हुए निरंकुश शासन के प्रति विद्रोह किया तो निजाम की सरकार ने उनसे यह मनसबदारी छीन ली।

आर्यसमाज से उनका परिचय पं. रामचन्द्र देहलवी के व्याख्यानों से हुआ। उस समय निजाम राज्य में सिद्दीक दीनदार नामक एक मुसलमान अपने आपको लिंगायत हिन्दुओं के मत प्रवर्तक वसवेश्वर का अवतार बता कर उनका धर्म परिवर्तन कर रहा था। उसने 'सरवरे आलम' नामक एक पुस्तक लिख कर हिन्दू देवी-देवताओं का घोर अपमान किया था। दीनदार के पाखण्ड का भण्डाफोड़ करने के लिये १९२९ में आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् पं. रामचन्द्र देहलवी को हैदराबाद में आमंत्रित किया गया। सुलतान बाजार के देवीदीन बाग में पण्डितजी के भाषण होने लगे। देहलवीजी के प्रभावोत्पादक तथा तर्क पूर्ण भाषणों ने नरेन्द्र की काया-पलट कर दी। इसी प्रकार आर्यसमाज के एक अन्य विद्वान् पं. बुद्धदेव विद्यालंकार ने भी उनकी धर्म विषयक जिज्ञासाओं को शान्त किया। पं. नरेन्द्र ने उर्दू सत्यार्थ-प्रकाश का आद्योपान्त अध्ययन किया जिससे उन्हें ऋषि दयानन्द के तेजस्वी विचारों का आलोक प्राप्त हुआ। इसी बीच वे पं. केशवराव कोरटकर तथा पं. चँदूलाल आदि हैदराबाद के आर्य नेताओं के सम्पर्क में आये और सक्रिय आर्यसमाजी बन गये।

इसके बाद की कहानी लम्बी है। १९३० में वे दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर में प्रविष्ट हुए और स्वामी स्वतन्त्रतानन्दजी के चरणों में बैठकर शास्त्रों का विधिवत् अध्ययन किया। दीक्षान्त संस्कार के समय उन्होंने स्वामी

जी से निम्न सीख ग्रहण की—खाना घर का, काम करना दयानन्द का और गालियां खानी आर्यसमाज के लोगों की। नरेन्द्रजी ने इन बातों को गांठ में बांध लिया और सार्वजनिक जीवन में वे इन सूत्रों को कभी नहीं भूले।

पं. नरेन्द्र आजीवन ब्रह्मचारी रहे। १९३२ में उन्होंने स्वाधीनता संग्राम में भाग लिया और लाहौर के अनारकली बाजार में सत्याग्रह कर जेल यात्रा की। १९३३ में वे हैदराबाद आये और आर्यसमाज के कार्य में जुट गये। इस राज्य में सरकार की ओर से आर्यसमाज को विशेषत: और हिन्दुओं को सामान्यत:, स्वधर्म पालन में नाना बाधायें उपस्थित की जाती थीं। इसका प्रतिकार करने के लिये आर्यसमाज को १९३९ में सत्याग्रह करना पड़ा। पं. नरेन्द्रजी की भूमिका इस सत्याग्रह में सर्वप्रमुख थी। परन्तु इससे पूर्व भी वे निजामशाही के अत्याचारों का विरोध करने हेतु अनेक बार जेल जा चुके थे। उन्हें निजाम राज्य के कालापानी तुल्य मनानूर नामक स्थान में १ वर्ष ५ मास तथा २१ दिन तक कैद में रहना पड़ा था।

देश के स्वतन्त्र हो जाने के पश्चात् भी हैदराबाद के शासक ने देश विरोधी गतिविधियां जारी रक्खीं। जब कासिम रिजवी के नेतृत्व में रजाकारों के संगठन ने हैदराबाद राज्य में अवांछित कार्यवाहियां कीं, तो हैदराबाद कांग्रेस ने स्वामी रामानन्द तीर्थ के नेतृत्व में सत्याग्रह किया। पं. नरेन्द्रजी को सत्याग्रह आरम्भ होने के पूर्व ही गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। अन्तत: हैदराबाद का भारत में विलय हुआ। देश के स्वाधीनता संग्राम में तो पं. नरेन्द्र ने भाग लिया ही, आर्यसमाज के द्वारा संचालित विभिन्न आन्दोलनों में भी उन्होंने पूर्ण तत्परता से भाग लिया। पंजाब के हिन्दी रक्षा आन्दोलन तथा गोरक्षा आन्दोलन में वे प्रथम पंक्ति के नेता के रूप में नेतृत्व प्रदान करते रहे। आर्यसमाज के विशाल आयोजनों तथा बृहत् सम्मेलनों को सुचारु रूप से सम्पन्न कराने में पं. नरेन्द्र को विशेष दक्षता प्राप्त थी। १९५९ में मथुरा में आयोजित दयानन्द दीक्षा शताब्दी, १९६८ में हैदराबाद में सम्पन्न हुए आर्य महासम्मेलन तथा १९७२ के अलवर आर्य महासम्मेलन की प्रबन्ध व्यवस्थाओं को उन्होंने पूर्ण दायित्व के साथ पूरा किया। १९७५ में आर्यसमाज की स्थापना शताब्दी समारोह के भी वे संयोजक थे। दिसम्बर १९७५ में उन्होंने संन्यास ग्रहण कर सोमानन्द सरस्वती नाम ग्रहण कर लिया था। २४ सितम्बर १९७६ को हैदराबाद में उनका निधन हुआ।

ले. का.—ऋषि दयानन्द और चौहदवां समुल्लास—इस्लाम के खण्डन में लिखे गये स्वामी दयानन्द के सत्यार्थप्रकाशान्तर्गत विचारों के समर्थन में यह पुस्तक लिखी गई। १९४६, हैदराबाद में आर्यसमाज का संघर्ष-२०१५ वि., हैदराबाद का स्वाधीनता संघर्ष और आर्यसमाज १९६७, हैदराबाद के आर्यों की साधना और संघर्ष, (निजाम हैदराबाद में आर्यसमाज के कार्यों की ऐतिहासिक समीक्षा) १९७३, दयानन्द आजम (उर्दू में स्वामी दयानन्द की जीवनी) १९५३, कुरान में जलवए वेद (उर्दू पुस्तक, जिसमें कुरान की शिक्षाओं में वैदिक मन्तव्यों की झलक दिखाई गई है), निजामी हकूमत का पसे मंजर, हैदराबाद के शहीद (अप्रकाशित)।

वि. अ.—पं. नरेन्द्र : हैदराबाद के लौह पुरुष, पं. नरेन्द्र अभिनन्दन समिति हैदराबाद द्वारा १९७५ में प्रकाशित।

जीवन की धूप छांव (आत्मकथा) हैदराबाद समाचार का पं. नरेन्द्र अभिनन्दन विशेषांक मार्च १९७६.

स्वामी सोमानन्द सरस्वती (पं. शीतलचन्द्र शर्मा—'शीतल')

आपका जन्म आश्विन कृष्णा १ वि. सं. १९६० को मथुरा जिले के एक ग्राम में हुआ। आपने राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लिया तथा कारावास का दण्ड भी सहन किया। आपने आर्यसमाज में भजनोपदेशक का दायित्व ग्रहण किया और प्रमुखत: राजस्थान को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। बाद में आपने संन्यास ग्रहण कर लिया। अब

आप स्वामी सोमानन्द के नाम से जाने जाते हैं तथा जयपुर को केन्द्र बना कर प्रचार कार्य में संलग्न हैं। आपने 'सत्यार्थ प्रकाश गौरवगान' पुस्तक लिखी जिसमें स्वामी दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश विषयक गीतों का संग्रह है।

व. प.—बी.-२२ आनन्दपुरी, जयपुर

सोहनलाल शारदा

स्वाध्याय में अगाध रुचि रखने वाले श्री सोहनलाल शारदा का जन्म श्रावण शुक्ला ११ सं. १९७७ (१५ अगस्त १९२०) को शाहपुरा के एक वैश्य परिवार में हुआ। शाहपुरा में आर्यसमाज की विचारधारा का बीज वपन महर्षि दयानन्द के आगमन के समय से ही हो गया था। अतः सोहनलाल शारदा में भी वैदिक धर्म के प्रति रुचि जागृत हुई। इनका यज्ञोपवीत राजगुरु पं. धुरेन्द्र शास्त्री के कर कमलों द्वारा हुआ। शारदाजी की संध्या, अग्निहोत्र आदि दैनन्दिन कर्मों में अत्यन्त श्रद्धा है। इनकी शिक्षा वर्नाक्यूलर मिड़िल तक हुई। तत्पश्चात् वे अपने व्यापार में लग गये। इन्होंने 'नित्य संध्या यज्ञोपासन विधि' का सम्पादन किया है और १९७५ से लेकर अब तक इसके पांच-संस्करण निकल चुके हैं। शाहपुरा के आर्य नरेश राजाधिराज नाहरसिंह का जीवनचरित तथा महर्षि का हत्यारा कौन ? शीर्षक उनकी खोजपूर्ण पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं।

व. प.—सदर बाजार शाहपुरा (भीलवाड़ा)।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द

आर्यसमाज के तेजस्वी एवं विद्वान् संन्यासी स्वामी स्वतन्त्रानन्द का जन्म पौष पूर्णिमा सं. १९३४ वि. (११ जनवरी १८७७) को लुधियाना जिले के मोही ग्राम में एक सिख परिवार में हुआ। इनके पिता श्री भगवानसिंह सेना में नौकरी करने के पश्चात् बड़ौदा राज्य की सेना में उच्च अधिकारी के रूप में रहे थे। स्वामीजी का बाल्यकाल का नाम केहरसिंह था। बालक केहरसिंह की प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू माध्यम से उनके ग्राम मोही में ही हुई। तत्पश्चात् वे एन.डी. विक्टर हाई स्कूल जालंधर छावनी में प्रविष्ट हुए। यहां उनकी शिक्षा इंग्लिश मिडिल तक हुई। तत्पश्चात् वे अपने पिता के पास पेशावर चले गये। उस युग की प्रथा के अनुसार उनका विवाह भी अल्प आयु में ही हो गया परन्तु यह विधि का विधान ही था कि थोड़े समय पश्चात् उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई। परन्तु केहरसिंह तो धर्म, प्रेम, वैराग्य और ईश्वर-भक्ति के संस्कार जन्म से ही लेकर आये थे अतः वे एक दिन घर छोड़कर चले गये। १९५७ वि. में उन्होंने फिरोजपुर जिले के पखरनड ग्राम में स्वामी पूर्णानन्द से संन्यास की दीक्षा ली और प्राणपुरी के नाम से विख्यात हुये।

अब तक वे उदासी साधुओं के प्रभाव में थे। इसी सम्प्रदाय के साधु विशनदास ने उन्हें अमृतसर जाकर संस्कृत पढ़ने की प्रेरणा की। अतः साधु प्राणपुरी अमृतसर आये और उदासी विद्वान् साधु स्वरूपदास से न्याय एवं वेदान्त का अध्ययन किया। रायकोट के एक हकीम अब्दुल हक़ से यूनानी चिकित्सा का भी अध्ययन किया और कालान्तर में उन्होंने आयुर्वेद की शिक्षा भी ली। इसके पश्चात् वे घूमते घामते कुरुक्षेत्र में सूर्यग्रहण के अवसर पर पहुंचे। यहाँ साधुओं के विभिन्न सम्प्रदायों को देखकर उनके साथ वे घूमने निकल गये और समस्त देश को देख डाला। इन दिनों ये एक कौपीन, एक चादर तथा एक बाल्टी पास में रखते थे अतः लोग इन्हें 'बाल्टी वाले साधु' के नाम से पुकारने लगे।

१९६३ वि. में आप प्रयाग के कुम्भ मेले में गये। लौटते समय आपने दिल्ली के ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण किया। पं. विशनदास ने ही उन्हें आर्यसमाज के सिद्धांतों से परिचित कराया। अब आप आर्यसमाज की ओर आकृष्ट हुये और स्वामी स्वतन्त्रानन्द नाम धारण किया। सर्वप्रथम वे भटिण्डा जिले के रामां मण्डी नामक स्थान पर रहे और आर्यसमाज के ग्रन्थों का अध्ययन किया। आप आर्यसमाजों में धर्म प्रचारार्थ भी जाते थे। संवत् १९६७ वि. में आपका महाशय कृष्ण से परिचय हुआ और उनकी प्रेरणा से वे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में रह कर धर्म प्रचार करने लगे।

स्वामीजी ने प्रथम बार विदेश यात्रा १९०१ में की, जब वे कलकत्ता से पैनांग द्वीप के लिए रवाना हुए। यहां से वे मलाया (वर्तमान मलेशिया) गये । पुनः लंका, सिंगापुर, इण्डोनेशिया, फिलीपीन होते हुए हॉंग-कांग आये और सिंगापुर होते हुए भारत लौटे। इसके पश्चात् वे एकाधिक बार विदेश यात्राओं पर गये । १९१४ में उन्होंने मॉरिशस की यात्रा की । १९२० में ब्रह्मदेश गये और १९२१ में ब्रिटिश पूर्वी अफ्रीका का भ्रमण किया ।

१९८१ वि. में जब स्वामी दयानन्द की जन्म शताब्दी मथुरा में मनाई गई और उसमें स्वीकृत प्रस्ताव के अनुसार आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब ने दयानन्द उपदेशक विद्यालय की स्थापना का निश्चय किया तो आपको उसका आचार्य बनाया गया। १० वर्षों तक वे इस पद पर कार्य करते रहे। इसी बीच आप आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब के वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता भी रहे । इनके उपदेशक विद्यालय के आचार्यकाल में इस विद्यालय से उच्च कोटि के स्नातक निकले जिन्होंने धर्म प्रचार के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया । विद्यालय के आचार्य पद का त्याग करने के अनन्तर आपने गुरदासपुर जिले के दीनानगर में दयानन्द मठ की स्थापना की। १९३९ में जब हैदराबाद में आर्यसमाज को अपने धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिये सत्याग्रह करना पड़ा तो स्वामीजी को इसका सर्वोच्च नेतृत्व सौंपा गया और वे आर्यसमाज के सुप्रीम कमाण्डर (सर्वोच्च सेनापति) के रूप में सत्याग्रह का संचालन करने लगे। लोहारू के नवाब ने जब अपने राज्य में आर्यसमाज के धर्म प्रचार पर नाना प्रकार के प्रतिबन्ध लगाये तो स्वामीजी ने वहाँ जाकर नवाब के क्रूर प्रतिबन्धात्मक आदेशों को चुनौती दी। यहाँ आर्यसमाज के जुलूस का नेतृत्व करते हुये वे हिंसा के शिकार हुए और उन्हें घातक प्रहार सहने पड़े। अहिंसक संन्यासी ने उफ तक नहीं की और प्राणांतक प्रहारों को झेला ।

१९४२ के आंदोलन के समय स्वामीजी को गिरफ्तार कर लाहौर के किले में बंदी के रूप में रक्खा गया। देश के स्वतन्त्र हो जाने के पश्चात् स्वामीजी ने आर्यसमाज का सर्वविध नेतृत्व किया। जब आर्यसमाज द्वारा गौरक्षा आन्दोलन चलाया गया तो स्वामीजी को ही उसका संचालक बनना पड़ा। इस आन्दोलन को भली प्रकार संचालित करने के लिये वे गम्भीरतापूर्वक विचार करने के साथ साथ गौवध पर पाबन्दी लगाने के लिए विभिन्न राज्य सरकारों से पत्र-व्यवहार भी कर रहे थे। इसी बीच वे कैन्सर ग्रस्त हो गये। फलतः चैत्र शुक्ला ११ सं. २०१२ वि. (३ अप्रैल १९५५) को बम्बई में उनका निधन हो गया। स्वामी स्वतन्त्रानन्द बहुभाषाविद् थे। उन्होंने हिन्दी तथा पंजाबी में अनेक ग्रन्थ लिखे हैं।

ले. का.—सिख मत विषयक ग्रन्थ—

आर्य सिद्धांत तथा सिख गुरु (हिन्दी तथा पंजाबी) २००० वि. (१९४३), सिख और यज्ञोपवीत (२००५ वि.), सिख और गौ—इसका पंजाबी संस्करण सिख अते गऊ नाम से छपा।

वेद की इयत्ता अर्थात् मंत्र संख्या (वेद मन्त्रों की गणना से सम्बन्धित), आर्यसमाज के महाधन (आर्यसमाज के शहीदों के जीवनवृत्त) २००४ वि. (१९४८), मांस मदिरा निषेध २००६ वि.।

अप्रकाशित ग्रन्थ—चिनगारियाँ (आर्यसमाज के त्यागी-तपस्वी व्यक्तियों की जीवन रेखायें) सत्यार्थप्रकाश का पंजाबी अनुवाद, ऋषिवार्ता (पंजाबी), महर्षि जीवन चरित (आर्यज्योति में धारावाही छपा) (अपूर्ण), गुरमुखी लिपि में स्वामीजी के १७ लघु ग्रन्थ अप्रकाशित किन्तु सुरक्षित हैं।

वि. अ.—लौहपुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्दजी : राजेन्द्र जिज्ञासु १९७५.

स्वर्णसिंह महोपदेशक

अलीगढ़ के चण्डौली ग्राम के निवासी श्री स्वर्णसिंह आर्यसमाज के प्रख्यात उपदेशक थे। आपने हैदराबाद के शहीद शीर्षक पुस्तक लिखी।

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

पूर्वाश्रम में श्री त्रिलोकचन्द्र राघव के नाम से विख्यात श्री स्वामी स्वरूपानन्द का जन्म आषाढ शुक्ला पूर्णिमा

१९७७ वि. को मथुरा जिले के गिडोह नामक ग्राम में हुआ। अनेक वर्षों तक श्री राघव ने दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के अन्तर्गत धर्म प्रचार किया और इस अवधि में प्रायः समस्त देश का भ्रमण किया। २८ फरवरी १९७६ को इन्होंने तृतीयाश्रम की दीक्षा ली और इसी वर्ष २६ दिसम्बर को स्वामी जगदीश्वरानन्द से संन्यास ग्रहणकर स्वामी स्वरूपानन्द का नाम धारण किया। सम्प्रति ये आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली में वेद प्रचार अधिष्ठाता है।

ले. का.—राघव गीत उद्यान १९८३, संगीत महोदधि, सरल चिकित्सा (काव्यमय दर्पण) तीन भाग, समय के मोती २०४३ वि. (१९८७), राघव पुष्पांजलि, हंसता चल हंसाता चल—२०४५ वि. (१९८८), टंकारा भजनावाली १९६७, आदर्श बालक भोज १९७४, राघवगीतांजलि १९७५, उपदेश की फुलझड़ी १९७७, ठुकराया वीर १९७९

व. प.—१५. हनुमान रोड़ नई दिल्ली ११०००१

स्वामी स्वात्मानन्द

पं. गुरुदत्त विद्यार्थी के सम्पर्क में आकर जिन चार संन्यासियों ने वैदिक धर्म को ग्रहण किया, उनमें से एक (अन्य तीन थे स्वामी अच्युतानन्द, स्वामी प्रकाशानन्द तथा स्वामी महानन्द) स्वामी स्वात्मानन्द का जन्म १८५६ में हुआ था। इन्होंने पं. गुरुदत्त से रसायन शास्त्र का अध्ययन किया और संस्कृत भी सीखी। तत्पश्चात् वे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपदेशक बन गये। उनके व्याख्यान विद्वतापूर्ण तथा तर्कयुक्त होते थे। किसी कारणवश वे १८८९ के आरम्भ में आर्यसमाज से पृथक हो गये।

ले.का.—मृतक श्राद्ध खण्डन १८९३

पं. हंसराज

वैदिक कोष के निर्माता पं. हंसराज का जन्म १८८८ में गुरदासपुर जिले के मोहलोवाली ग्राम में हुआ। प्रारम्भ में आपने उर्दू, फारसी तथा अंग्रेजी पढ़ी किन्तु किन्हीं कारणों से मैट्रिक की परीक्षा नहीं दे सके। कई वर्षों तक अनेक स्थानों में नौकरी भी की। इस बीच संस्कृत का भी अध्ययन किया। अन्त में १९१८ में पं. भगवदद्त्त की प्रेरणा से पंजाब नेशनल बैंक की नौकरी से त्यागपत्र देकर डी. ए. वी. कॉलेज लाहौर के प्रसिद्ध लालचन्द पुस्तकालय में आ गये। देश विभाजनकाल तक वे इसी संस्था में पुस्तकाध्यक्ष के पद पर कार्य करते रहे। पं. हंसराज ने लालचन्द लाइब्रेरी में रहकर जो विस्तृत स्वाध्याय किया, उसी के परिणामस्वरूप वे उन कोषों का निर्माण कर सके जो वैदिक साहित्य के अध्ययन में नितान्त उपयोगी सिद्ध हुए हैं। कालान्तर में वे श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट के पुस्तकालय के अध्यक्ष के रूप में कार्य करने लगे। २९ सितम्बर १९७४ को आपका बहालगढ़ (हरयाणा) में निधन हुआ।

ले. का.—वैदिक कोषः—१९२५ तक जितने ब्राह्मण ग्रन्थ छपे थे, उनके वैदिक शब्दों के अर्थ-बोधक वचनों का संग्रह इस कोष में किया है। डी. ए. वी. कालेज लाहौर की दयानन्द महाविद्यालय ग्रन्थमाला ८ के अन्तर्गत यह ग्रन्थ १९८२ वि. (१९२६) में प्रकाशित हुआ।

ब्राह्मणोद्धार कोष—यह उपर्युक्त ग्रन्थ का ही परिवर्धित संस्करण है, जिसमें नवीन प्रकाशित जैमिनीय ब्राह्मण के अतिरिक्त आरण्यक तथा शाखा रूप संहिताओं में जो ब्राह्मण पाठ हैं, उनके भी अर्थ निदर्शक वाक्यों का संग्रह किया गया है। उपनिषदुद्धार कोष—इसमें आर्ष एवं अनार्ष सभी उपनिषदों से वैदिक कोष के समान वैदिक-शब्दार्थ बोधक वाक्यों का संग्रह किया गया है। वेद में मानुष इतिहास नहीं, देवतावाद का भौतिक एवं वैज्ञानिक रहस्य (१९५७), दश अवतार, वैदिक सोम, Science in the Vedas

महात्मा हंसराज

आर्यसमाज के महान् विशाविद् तथा त्याग एवं तपस्या की मूर्ति महात्मा हंसराज का जन्म पंजाब के होशियारपुर जिले के बजवाड़ा नामक एक कस्बे में १९ अप्रैल १८६४ को हुआ। इनके पिता का नाम लाला चुन्नीलाल तथा माता का नाम श्रीमती हरदेवी था। १८८५ में इन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से बी. ए. की

परीक्षा उत्तीर्ण की। स्वामी दयानन्द की स्मृति में लाहौर में डी. ए. वी. कालेज की स्थापना का निश्चय आर्य-समाज लाहौर ने किया तो लाला हंसराज ने इस संस्था की सेवा हेतु स्वयं को प्रस्तुत किया। जून १८८६ को डी. ए. वी. हाई स्कूल की जब स्थापना हुई तो हंसराज उसके अवैतनिक आचार्य बने। बाद में यह संस्था कालेज के रूप में प्रोन्नत की गई तो वे ही उसके प्राचार्य बने और १९१२ तक इस पद पर रह कर कालेज के विकास में अपना योगदान करते रहे। १९१२ में उन्होंने कॉलेज के प्राचार्य पद से अवकाश ले लिया तो उन्हें डी. ए. वी. संस्थाओं की प्रबन्ध समिति का अध्यक्ष चुना गया। इस पद पर भी वे कई वर्षों तक रहे। उधर आर्यसमाज के संगठन में भी महात्माजी का अंशदान कम नहीं था। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की स्थापना से लेकर स्व जीवन पर्यन्त महात्मा जी इस सभा के द्वारा आर्यसमाज के प्रचार एवं प्रसार में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे। १५ नवम्बर १९३८ को लाहौर में आपका निधन हुआ। महात्मा हंसराज कुशल लेखक भी थे।

ले. का.—अंग्रेजी ग्रन्थ—1. The Great Seer or the Interpretation of the Vedas by Swami Dayanand., 2. The Vedas as interpreted by Swami Dayanand. (१९१७), इसका उर्दू अनुवाद स्वामी दयानन्द का वेद अर्थ शीर्षक से छपा (१९१७), ऋषि दर्शन (पूजा धर्म) १९७९ वि., ऋषि दर्शन (गृहस्थ-धर्म) १९२४ वि., मोतियों का हार (उर्दू) धर्मोपदेश—लेखों एवं व्याख्यानों का संग्रह (१९१७), संध्या पर व्याख्यान (१९८०वि.),—हिन्दी और उर्दू दोनों में छपी, रायबहादुर मूलराज की दश प्रश्नी की समीक्षा (४ नवम्बर १९३१), मानव संग्रह (१८९०), मानव-धर्म सार—सम्पादित (१९८० वि.) (मनुस्मृति का पाठ्यपयोगी संस्करण), धर्म उपदेशमाला (खुशहालचन्द खुर्सन्द द्वारा सम्पादित) क्या हिन्दू मजहब जवाल पर है? मुरलीमनोहर (अफगानिस्तान में धर्म पर बलिदान होने वाले एक अज्ञात वीर की जीवनी)

वि. अ.—महात्मा हंसराज ग्रन्थावली ४ खण्ड : सम्पादक राजेन्द्र जिज्ञासु

हजारीलाल मल्लिक

मल्लिक महाशय बंगाल के चौबीस परगना जिले के ग्राम चण्डीपुर के निवासी थे।

ले. का.—धर्म ओ मतमतान्तर।

हनुमानप्रसाद शर्मा

शर्माजी का जन्म भाद्रपद कृष्णा १३ सं. १९३५ वि. को जिला कानपुर के शिवली ग्राम में हुआ। इनके पिता का नाम पण्डित देवीदयाल त्रिपाठी था। शर्माजी ने आर्यप्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के तत्त्वावधान में उपदेशक का कार्य किया। १९७५ वि. में इनका निधन हुआ।

ले. का.—रामचरित चिन्तामणि—रामायण के कथानक को लेकर लिखा गया यह ग्रंथ लेखक की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र पण्डित रूपनारायण शर्मा उपदेशक, आर्यप्रतिनिधि सभा संयुक्तप्रांत द्वारा १९८२ वि. में प्रकाशित हुआ। ग्रन्थ में वाल्मीकीय रामायण, आनन्दरामायण, अद्भुत रामायण, अध्यात्म रामायण, भट्टिकाव्य, उत्तर-रामचरित, हनुमन्नाटक तथा रघुवंश में वर्णित रामकथा के कतिपय पद्यों को प्रस्तुत किया गया है। प्रसंगानुसार गोस्वामी तुलसीदास रचित रामचरितमानस के उद्धरण भी दिये गये हैं। कहीं-कहीं स्वरचित संस्कृत श्लोक भी दिये हैं। दृष्टान्तसागर, धर्मरत्नाकर, वेदशास्त्रतालिका, ज्ञानचन्द्रिका, अमृतभाण्डागार, ब्रह्मचर्य, दशधर्मलक्षण-व्याख्या, पाप प्रध्वंसिनी, हनुमान चालीसा, मद्यदोष वर्णन, छुआछूत, मत पर्येषणा, शंका कोष वा शंका पंचशतक (१९०४)।

हमीरसिंहजी

सौराष्ट्र (काठियावाड़) की रियासत वीरपुर के स्वामी ठाकुर हमीरसिंहजी के पिता का नाम ठाकुर शूरसिंह था। इनका जन्म ७ मार्च १८७३ को हुआ। वैदिक धर्म के प्रति इनकी अनन्य निष्ठा थी। स्वामी शंकरानन्द उनके धर्म गुरु थे। उनका निधन १५ दिसम्बर १९३८ को हुआ।

ले. का.—आपने स्वमन्तव्य नामक एक उपयोगी ग्रन्थ गुजराती भाषा में लिखा था जो वेद मंदिर ग्रन्थ पुष्पमाला के रूप में १९८१ वि. (१९२५) में छपा।

हरगोविन्दप्रसाद निगम

पं. लेखराम के बलिदान पर 'हाय लेखराम' शीर्षक उर्दू पुस्तक के लेखक थे। यह पुस्तक १८९७ में दिल्ली से छपी थी।

हरजीतलाल आर्य 'हरि'

अजमेर निवासी श्री हरि भूतपूर्व अजमेर राज्य तथा राजस्थान विधान सभा के सदस्य रहे थे। वे वर्षों तक नगर आर्यसमाज अजमेर के सभासद तथा अन्तरंग सदस्य भी रहे। सवैया, दोहा आदि छन्दों से युक्त महर्षि दयानन्द शतक नामक एक काव्य की आपने रचना की तथा इसका प्रकाशन भी किया। इनकी अन्य रचनायें हैं—समाज-सुधार पचीसी, पतितपावन, नियम नियंता तथा सन्त रविदास चरितामृत।

श्रीमती हरदेवी

सुप्रसिद्ध आर्य नेता और कार्यकर्त्ता बैरिस्टर रौशनलाल की पत्नी श्रीमती हरदेवी आर्यसमाज की प्रथम महिला पत्रकार थीं। आपने १८८८ में प्रयाग से मासिक 'भारत-भगिनी' का प्रकाशन आरम्भ किया। जब बैरिस्टर रौशनलाल अपनी वकालत के सिलसिले में पंजाब चले गये तो श्रीमती हरदेवी ने इस पत्रिका को लाहौर से निकालना जारी रक्खा। श्रीमती हरदेवी अपने पति के साथ इंग्लैण्ड गई थीं। आपने 'लंदन यात्रा' नामक एक पुस्तक लिखी जो १८८९ में प्रकाशित हुई। आपकी एक अन्य पुस्तक लंदन जुबली का भी उल्लेख मिलता है। श्रीमती हरदेवी ने महिलाओं की शिक्षा तथा उनके अधिकारों का प्रतिपादन करते हुए अंग्रेजी में A Pamphlet on Female Education and Female Rights नामक एक पुस्तक लिखी जो १८९२ में लाहौर से छपी। Unjustice to Women शीर्षक एक अन्य पुस्तक भी इन्होंने लिखी जिसके उर्दू तथा हिन्दी रूपान्तर प्रकाशित हुए थे। उनकी 'तालीम तिफलान' शीर्षक पुस्तक बालशिक्षा विषयक थी।

कविराज हरनामदास

पाकिस्तान के जिला मियांवाली, तहसील ईसाखेल के अन्तर्गत कस्बा कमर मुशानी में इनका जन्म १८९५ में हुआ। आपने डी. ए. वी. कालेज, लाहौर से बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा आयुर्वेदिक चिकित्सा द्वारा प्रभूत धन कमाया। कुछ वर्षों तक कविराजजी सार्वदेशिक सभा के मंत्री भी रहे। आपने हिन्दी तथा उर्दू में यौन-विज्ञान पर अनेक पुस्तकें लिखीं। १८ जून १९७७ को आपका दिल्ली में निधन हो गया।

ले. का.—आर्यसमाज क्या मानता है?

भाई हरनामसिंह

बटाला (पंजाब) के निवासी भाई हरनामसिंह पुरानी पीढ़ी के लेखक थे। आपकी खण्डनात्मक पुस्तकें बहुत लोकप्रिय हुईं।

ले. का.—पोप उपद्रव।

हरभगवान

आर्यसमाज बच्छोवाली लाहौर के भूतपूर्व प्रधान श्री हरभगवान ने 'महर्षि दयानन्द और वर्ण व्यवस्था' पुस्तक लिखी थी। इसमें वर्तमान परिस्थितियों में वर्ण-व्यवस्था की निस्सारता का प्रतिपादन किया गया है। यह पुस्तक जातपांत तोड़क मण्डल दिल्ली ने प्रकाशित की थी। श्री हरभगवान उक्त मण्डल के मंत्री भी रहे थे।

दीवान बहादुर हरविलास शारदा

समाजसुधार में अग्रणी तथा अंग्रेजी में उत्कृष्ट साहित्य के प्रणेता हरविलास शारदा का जन्म ज्येष्ठ पूर्णिमा १९२४ वि. (३ जून १८६७) को अजमेर में श्री हरनारायण के यहां हुआ, जो उस समय गवर्नमेंट कालेज, अजमेर में पुस्तकालयाध्यक्ष थे। यह एक संयोग ही था कि हरविलासजी को अपनी युवावस्था में स्वामी दयानन्द

के भाषण सुनने का अवसर मिला। ३० अक्टूबर १८८३ को श्री महाराज के निधन के समय भी वे भिनाय की कोठी में उपस्थित थे और उन्होंने उस महामानव के महाप्रयाण को अपने चर्म चक्षुओं से देखा था। १८८८ में शारदा जी ने आगरा कालेज आगरा से बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। १८८८ में वे कांग्रेस के इलाहाबाद अधिवेशन में सम्मिलित हुए और कांग्रेस के संस्थापक श्री ए. ओ. ह्यूम तथा अन्य नेताओं को निकटता से देखा। वे राष्ट्रीय महासभा के अन्य अधिवेशनों में भी प्रेक्षक की हैसियत से गये। जीविकोपार्जन के लिये पहले तो शारदाजी ने अध्यापन का कार्य किया और गवर्नमेंट कालेज अजमेर में प्राध्यापक बने। तत्पश्चात् उन्होंने सरकारी सेवा में प्रवेश किया और अजमेर राज्य की न्यायिक सेवा में १९२३ तक रहे। १९२४ में वे केन्द्रीय धारा सभा के सदस्य निर्वाचित हुए और लाला लाजपतराय की नेशलिस्ट पार्टी के सदस्य तथा उपनेता पद पर रहे। १९३० से उन्होंने केन्द्रीय धारा सभा से अपना प्रसिद्ध बाल विवाह निरोधक कानून पास कराया।

शारदाजी का आर्यसामाजिक जीवन—हरविलासजी की प्रारम्भ से ही आर्यसमाज में रुचि थी। वे आर्यसमाज अजमेर के प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के संस्थापक प्रधान तथा परोपकारिणी सभा के आजीवन सदस्य रहे। इस सभा में उन्होंने उपमंत्री (१८९३ से १९३३) तथा मंत्री (१९३२ से १९५३) के पदों पर निरन्तर ६० वर्ष तक कार्य किया। २० जनवरी १९५५ को उनका निधन हुआ।

ले. का.—शारदाजी का लेखन अंग्रेजी में हुआ। Swami Dayanand Saraswati–Who he was and what he did? (1925), Dayanand Commemoration Volume—इस महत्त्वपूर्ण स्मृति ग्रन्थ का सम्पादन १९३३ में ऋषि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष्य में किया गया। इसमें कुल १२१ लेखों (१०० अंग्रेजी, २० हिन्दी, १ उर्दू) का संग्रह है। Swami Dayanand Saraswati—स्वामी दयानन्द विषयक कर्नल ऑल्काट, श्रीमती एच.पी. ब्लैवेट्स्की, रोमांरौला, योगी अरविंद आदि के लेखों का संग्रह (१९३३), Works of Maharshi Dayanand and Paropkarini Sabha—लाहौर के एक व्यक्ति अमरसिंह द्वारा अपनी पुस्तक—Views on meat diet and forgeries supressing Swami Dayanand's Opinion में लगाये गये उन आक्षेपों का उत्तर शारदाजी ने दिया है, जिनमें कहा गया था कि स्वामी दयानन्द वास्तव में मांस भक्षण के पक्ष पोषक थे और आर्यसमाजियों ने उनके ग्रन्थों में व्यक्त स्वामीजी के एतद् विषयक विचारों को जानबूझ कर हटाया है। Swami Dayanand and SatyarthaPrakash (1944)—इस पुस्तक के लेखक के रूप में 'परोपकारिणी सभा का एक सदस्य' शब्द अंकित हैं, किन्तु वास्तव में इसे शारदाजी ने लिखा था। इसमें उन आलोचकों को उत्तर दिया गया है जो यह कहते थे कि सत्यार्थप्रकाश का १४वां समुल्लास स्वामी दयानन्द ने नहीं लिखा, अपितु इसे इस्लाम के विरोधी आर्यसमाजियों ने बाद में मूल पुस्तक में मिला दिया है। Shankar and Dayanand (1944)—तुलनात्मक अध्ययन, Life of Dayanand Saraswati: World Teacher (1946) शारदाजी की सर्वोत्कृष्ट कृति है। इसमें स्वामी दयानन्द के जीवन, व्यक्तित्व तथा उनके कृतित्व को व्यापक परिवेश में प्रस्तुत किया गया है। Life of Virjanand Saraswati स्वामी दयानन्द के विद्या गुरु दण्डीजी का अंग्रेजी में निबद्ध एक मात्र जीवनचरित। Shyamji Krishna Varma—यह जीवनी शारदाजी के निधन के उपरान्त १९५९ में प्रकाशित हुई। Hindu Superiority–1906 में प्रकाशित इस पुस्तक में भारतवर्षीय आर्यों की जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में श्रेष्ठता और वरीयता को ऐतिहासिक प्रमाणों से पुष्ट किया गया है। Speeches and Writings—शारदाजी के विभिन्न अवसरों पर दिये गये भाषणों तथा स्फुट लेखों का संग्रह।

वि. अ.—हरविलास शारदा अभिनन्दन ग्रन्थ—गवर्नमेंट कालेज अजमेर के तत्कालीन प्रिंसिपल पी. शेषाद्रि द्वारा सम्पादित।

हरशरणदास

गाजियाबाद निवासी श्री हरशरणदास सार्वदेशिक सभा के आजीवन सदस्य थे। आपने 'आज का आर्यसमाज' शीर्षक एक पुस्तक लिखी जो २०१२ वि. में प्रकाशित हुई।

हरिकृष्णप्रसाद गुप्त अग्रहरि

श्री अग्रहरि का जन्म २५ जनवरी १९५० को नेपाल के पर्सा जिले के ग्राम प्रसौनी भाठा में सोभारी साह के यहां हुआ। इन्होंने इंजीनियरिंग में उच्च शिक्षा प्राप्त की तथा हंगरी से पी-एच. डी. की उपाधि ग्रहण की। आपने नेपाल के सम्बन्ध में अनेक खोजपूर्ण ग्रन्थ लिखे हैं। आपके अनेक महत्त्वपूर्ण लेख आर्य संकल्प (पटना) तथा सार्वदेशिक (दिल्ली) आदि पत्रों में प्रकाशित हुए हैं।

व. प.—वार्ड नं. १, रक्सौल (बिहार) ८४५३०५

हरिदत्त वर्मा

वर्माजी का वास्तविक नाम रामबुझारथलाल था। इनके पिता का नाम रामबहाललाल था। उत्तरप्रदेश के आजमगढ़ जिले के पसिका नामक ग्राम के ये निवासी थे। स्वामी मंगलानन्द पुरी की प्रेरणा से इन्होंने अपना नाम बदल कर हरिदत्त वर्मा रख लिया। इनका लिखा 'दयानन्द-जीवन काव्य' सरस्वती पुस्तकालय गिरगांव बम्बई से १९१३ में प्रकाशित हुआ। ग्रन्थ की भूमिका स्वामी मंगलानन्द पुरी ने ही लिखी थी।

पं. हरिदत्त वेदालंकार

इनका जन्म १९१७ में जम्मू में हुआ। इनके पिता का नाम श्री अतरचन्द था। ये गुरुकुल कांगड़ी में अध्ययनार्थ प्रविष्ट हुए और १९३८ में वेदालंकार की उपाधि प्राप्त की। १९४७ से १९६८ तक गुरुकुल में अध्यापक के रूप में रहकर विभिन्न विषयों का अध्यापन किया। तत्पश्चात् वे पंतनगर स्थित कृषि विश्वविद्यालय के अनुवाद एवं प्रकाशन विभाग के निदेशक रहे। प्राचीन इतिहास, भारतीय संस्कृति आदि विषयों पर उन्होंने प्रामाणिक ग्रन्थ रचना की। डा. सत्यकेतु विद्यालंकार के सम्पादन में तैयार आर्यसमाज के इतिहास के प्रथम पांच खंडों के लेखन में उनका सहयोग रहा। १९८६ में इनका निधन हो गया।

डा. हरिदत्त शास्त्री

संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् तथा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के मंत्री, मुख्याध्यापक, आचार्य एवं कुलपति आदि पदों पर अनेक वर्षों तक रहने वाले पं. हरिदत्त शास्त्री का जन्म १ सितम्बर १९०५ को आगरा में हुआ। इनके पिता आगरा निवासी पंडित भीमसेन शर्मा अपने अपार वैदुष्य तथा गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर की निष्ठापूर्वक सेवा करने के कारण आर्य जगत् में सर्वप्रख्यात थे। शास्त्रीजी का अध्ययन गुरुकुल महाविद्यालय में ही हुआ। कालान्तर में उन्होंने विविध विषयों में एम. ए., आचार्य तथा तीर्थ आदि उपाधियां प्राप्त कीं। कलकत्ता विश्वविद्यालय की तीर्थ उपाधि तो आपने संस्कृत के भिन्न-भिन्न चौदह विषय लेकर उत्तीर्ण की थी। आपने आगरा विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि भी प्राप्त की।

शास्त्रीजी का जीवन मुख्यतः उच्च कक्षाओं को संस्कृत पढ़ाने में ही व्यतीत हुआ। वे प्रारम्भ में बलवन्त राजपूत कॉलेज आगरा में संस्कृत के प्राध्यापक रहे। पश्चात् डी. ए. वी. कॉलेज कानपुर के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य किया। वे जीवन पर्यन्त गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से सम्बद्ध रहे और इस संस्था के मुख पत्र 'भारतोदय' का सम्पादन भी किया। जीवन का अवशिष्ट भाग शास्त्रीजी ने आगरा में व्यतीत किया। २५ मई १९८० को आपका निधन कानपुर में हुआ। यद्यपि शास्त्री जी ने संस्कृत की उच्च श्रेणियों के अध्ययन अध्यापन की दृष्टि से अनेक ग्रन्थ लिखे, जो विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में भी सम्मिलित किए गए, तथापि उनकी कुछ ही कृतियां आर्यसमाज की विचारधारा से भी संबन्धित हैं।

ले. का.—शास्त्र चर्चा अर्थात् दिल्ली दिग्विजय, आर्य पर्व संकीर्तन, अन्त्येष्टि कर्मविधि, आर्योद्देश्यरत्नमाला का संस्कृत अनुवाद, अभिनव संस्कारचन्द्रिका २ भाग (पं.

भीमसेन शर्मा लिखित संस्कारचन्द्रिका का सम्पादित संस्करण)

वि. अ.—भारतोदय का हरिदत्त शास्त्री स्मृति विशेषांक मई-जुलाई १९८०.

हरिदेव आर्य

श्री आर्य का जन्म १३ सितम्बर १९२७ को हुआ। आपकी शिक्षा विद्यावाचस्पति तथा एम. ए. तक हुई।

ले. का.—वैदिकनित्यकर्मपद्धति, वैदिक सत्संगपद्धति, जगमगाते हीरे (सत्यार्थप्रकाश के दस समुल्लासों का सार), प्रभातगीत, स्वामी श्रद्धानन्द।

व. प.—सी. पी. २१२ पीतमपुरा मौर्य एन्क्लेव, दिल्ली ११००३४

मास्टर हरिद्वारीसिंह बेदिल

श्री बेदिल गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में अंग्रेजी के अध्यापक थे। आप उर्दू में लिखते थे तथा आपको शायरी का भी शौक था। कई वर्षों तक आप रुड़की आर्य-समाज के सभासद रहे। आपने रूसी लेखक निकोलस नोटोविच की चर्चित पुस्तक का हिन्दी में अनुवाद किया जिसमें ईसा मसीह की कथित भारत यात्रा का उल्लेख किया गया था। यह पुस्तक 'भारत शिष्य ईसा' शीर्षक से पं. भीमसेन शर्मा द्वारा इतिहास विज्ञान माला के अन्तर्गत १९१४ में प्रकाशित हुई। इनकी एक अन्य पुस्तक 'योगिराज महात्मा कृष्ण' का भी उल्लेख मिलता है।

हरिनारायण कपूर

श्री कपूर का जन्म ९ मार्च १९०२ को हाफिजाबाद (जिला गुजरांवाला पाकिस्तान) में हुआ। इनकी शिक्षा डी.ए.वी. हाई स्कूल लाहौर में हुई। १९२० से १९२४ तक इन्होंने अंग्रेजी के प्रसिद्ध दैनिक ट्रिब्यून के सम्पादकीय विभाग में कार्य किया। तत्पश्चात् १९२७ में रेलवे की सेवा में प्रविष्ट हुए। १९६२ में सेवा निवृत्त होने पर पुणे में रहने लगे। श्री कपूर का रामायण तथा महाभारत विषयक गम्भीर अध्ययन है जिसे उन्होंने अंग्रेजी के माध्यम से व्यक्त किया है।

ले. का.—अप्रकाशित रचनायें — Ramayana Reviewed, Mahabharata Reviewed, Principal Characters of Ramayana, Principal Characters of Mahabharata. Nine Virtuous Women of Ancient Ayavarta, Life of Yogiraj Shrikrishna, Maharshi Dayanand Saraswati : His Life, Teachings and Works, Krishnayan 1974.

हरिभाऊ उपाध्याय

प्रसिद्ध साहित्यकार तथा स्वतन्त्रता सेनानी श्री उपाध्याय का जन्म ९ मार्च १८९३ को ग्वालियर राज्य के एक ग्राम में हुआ। प्रारम्भ में इनका जीवन पूर्णतया लेखन को ही समर्पित रहा। किन्तु बाद में ये स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़े और अजमेर को अपनी सार्वजनिक गतिविधियों का केन्द्र बना कर राजनैतिक कार्यक्रम को अपनाया। आप राजस्थान मंत्रिमण्डल में विभिन्न पदों पर रहे। इनका निधन २५ अगस्त १९७२ को हुआ। श्री हरिभाऊ ने स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान के बाद देश की साम्प्रदायिक समस्या को लक्ष्य में रखकर 'स्वामीजी का बलिदान और हमारा कर्त्तव्य' शीर्षक एक पुस्तक लिखी जो सस्ता साहित्य मण्डल अजमेर से १९२८ में छपी।

हरिवंशलाल मेहता

मेहताजी का जन्म १९१७ में पंजाब के जिला होशियारपुर के कस्बे हरयाणा में हुआ। भारत सरकार के संचार मंत्रालय में कार्य करने के पश्चात् वे सेवा-निवृत्त हुये और लखनऊ में निवास करने लगे। उन्हें वेदाध्ययन करने की प्रेरणा और निर्देशन आचार्य हरिशरण सिद्धान्तालंकार से प्राप्त हुआ। आप आर्य पत्रों में प्रायः लिखते रहते हैं।

ले. का.—दिव्योपदेश, महिलायें, भक्त की जीवनचर्या तथा सुमधुर पुष्पांजलि।

व. प.—आर्यसमाज श्रृंगारनगर, लखनऊ।

डा. हरिश्चन्द्र

डा. हरिश्चन्द्र का जन्म २७ सितम्बर १९५२ को कलकत्ता में हुआ। इन्होंने आई. आई. टी. कानपुर से बी. टेक् की परीक्षा प्रथम श्रेणी (विशेष योग्यता) में उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् आपने संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के कॉपिसटन विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. की उपाधि ग्रहण की। डा. हरिश्चन्द्र आर्यसमाज के निष्ठावान अनुयायी हैं। इन्होंने 'हिन्दुओं का भविष्य' शीर्षक एक विचारपूर्ण पुस्तक लिखी है। सम्प्रति ये पुणे के एक यांत्रिकी संस्थान में उच्च पद पर कार्यरत हैं।

ब. प.—१४, अश्वमेध सोसायटी, ७५ रामबाग कालोनी, पौड रोड़, पुणे-४११०२९

पं. हरिश्चन्द्र त्रिवेदी

श्री त्रिवेदी ने १९०९ से १९१९ तक वैदिक यन्त्रालय, अजमेर के प्रवन्धक पद पर कार्य किया।

ले. का.—प्रश्नोत्तरीय संख्या १—(अजमेर निवासी नारायणदास ज्योतिषी द्वारा सत्यार्थप्रकाश पर उठाई गई शंकाओं का उत्तर) १९६७ वि. प्रमाद भैषज्य।

प्राध्यापक हरिश्चन्द्र रेणापुरकर

प्रा. रेणापुरकर का जन्म १७ सितम्बर १९२४ को महाराष्ट्र के लातूर जिले के रेणापुर ग्राम में हुआ। इनकी शिक्षा एम. ए. (संस्कृत) की हुई। तत्पश्चात् इन्होंने वरंगल, गुलबर्गा, शिमोगा, चिकमंगलूर आदि स्थानों के राजकीय महाविद्यालयों में संस्कृत के प्रवक्ता तथा विभागाध्यक्ष का कार्य किया। सेवा से निवृत्त होने के पश्चात् ये गुलबर्गा (कर्नाटक) में निवास कर रहे हैं। प्राध्यापक रेणापुरकर संस्कृत के प्रतिभाशाली कवि हैं। आपकी शतशः काव्य रचनायें विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छपी हैं। 'धन्यो धन्यः श्रीदयानन्दवर्यः' तथा 'दयानन्द-लहरी' शीर्षक कविताओं में आपने महर्षि दयानन्द के प्रति अपनी काव्यात्मक श्रद्धांजलि अर्पित की है। आपकी संस्कृत कविताओं का एक सुन्दर संग्रह काव्योन्मेषः शीर्षक से भारतीय विद्याभवन बम्बई ने १९८९ में प्रकाशित किया है।

ब. प.—साहू बिल्डिंग, ऐवानशाही रोड गुलबर्गा (कर्नाटक)

हरिश्चन्द्र विद्यार्थी

आपका अध्ययन बी. ए. तक का था। आपने आर्यसमाज के प्रचारक के रूप में रांची (बिहार) तथा अन्य अनेक स्थानों पर कार्य किया।

ले. का.—गाय का अर्थशास्त्र, जम्मू-काश्मीर राज्य में आर्यसमाज का इतिहास १९७८, जनोई : ऐटले शुं १९८४

पं. हरिश्चन्द्र विद्यालंकार

सामवेद के हिन्दी टीकाकार तथा उत्कृष्ट लेखक श्री हरिश्चन्द्र विद्यालंकार का जन्म ३ सितम्बर १९०३ को सोनीपत जिले के फरमाना ग्राम में हुआ। १९८१ वि. (१९२५) में आपने गुरुकुल कांगड़ी से विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की। कुछ समय तक आपने गुरुकुल मुलतान तथा गुरुकुल कुरुक्षेत्र में मुख्याध्यापक का कार्य किया तथा दिल्ली से हिन्दू तथा लोकमान्य नामक साप्ताहिक पत्रों का सम्पादन किया। भारत की राजधानी में आपका निजी प्रेस भी था। इनका निधन १९७४ में हुआ।

ले. का.—आर्यसमाज का संक्षिप्त व सुबोध इतिहास, १९९८ वि. (१९४१), महर्षि दयानन्द सरस्वती जीवन-चरित, २०१० वि. (१९५२), सामवेद संहिता भाषा-भाष्य (२०१२ वि.), महात्मा हंसराज (लघु जीवनचरित, २०१० वि.) मनुस्मृति भाषानुवाद (२०१६ वि.), आर्य डाइरेक्टरी—पं. रामगोपाल विद्यालंकार के संयुक्त सम्पादन में (१९३८), वैदिक शिष्टाचार, बाल रामायण, माता का संदेश।

हरिशरण श्रीवास्तव 'मराल'

कवि हरिशरण श्रीवास्तव 'मराल' का जन्म १९०० में मेरठ में हुआ। आपने खड़ी बोली तथा ब्रज, दोनों भाषाओं में उच्च कोटि की काव्य रचना की है। आप रेलवे में नौकरी करते थे। आर्यसमाज के प्रति आपकी

प्रगाढ़ रुचि थी। हिन्दी, संस्कृत, फारसी तथा अंग्रेजी का आपको अच्छा ज्ञान था। ८ अक्टूबर १९३३ को अल्पायु में ही आपका निधन हो गया।

ले. का.—शिवबोध—(स्वामी दयानन्द के हृदय में मूर्तिपूजा के प्रति अनास्था उत्पन्न करने वाली शिवरात्रि की प्रसिद्ध घटना को कवि ने इस खण्ड काव्य में निबद्ध किया है, १९८१ वि.), बलिवैश्वदेव यज्ञ की वैदिक व्याख्या (पं. शिवदयालु के सहलेखन में लिखी गई, १९८१ वि.) संध्या पद्यानुवाद (१९५२)। आपकी कुछ अन्य कृतियां निम्न हैं—हिमगिरि संदेश (पॉल रिचर्ड कृत The Message of the Himalayas का पद्यानुवाद), पृथ्वीराज नाटक, अप्रकाशित रचनायें—हरिश्चन्द्र, प्रार्थना शतक। आपकी श्रेष्ठ रचनाओं का एक संकलन 'मराल मानस' शीर्षक से १९३४ में कवि मरालजी की मृत्यु के पश्चात् प्रकाशित हुआ।

पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार

सामवेद भाष्यकार पं. हरिशरण का जन्म कमालिया (पाकिस्तान) में हुआ। इनके पिता का नाम श्री लक्ष्मण-दास था। आपका अध्ययन गुरुकुल कांगड़ी में हुआ, जहां से इन्होंने १९७९ वि. (१९२३) में सिद्धान्तालंकार की उपाधि प्राप्त की। आपने अनेक वर्षों तक गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ तथा गुरुकुल कांगड़ी में कार्य किया। वर्तमान में आप दिल्ली में रहकर आर्यसमाज के प्रचार कार्य में संलग्न हैं। १९९० में आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई ने पं. हरिशरण को वेद वेदांग पुरस्कार से सम्मानित किया है।

ले. का.—संध्यामंत्र—विशेष व्याख्यान (१९५०), प्रार्थना मंत्र, ईशोपनिषद् व्याख्या, सामवेद भाषा भाष्य (२०२९ वि.), सामवेद : उपासना—१ से १०६ मन्त्र पर्यन्त (२०१२ वि.), प्रभु के चरणों में (२०३२ वि.), ऋग्वेद के ऋषि (१९५५), वैदिक परिवार व्यवस्था (२०१३ वि.), ऋग्वेद भाष्य—भगवती प्रकाशन दिल्ली द्वारा खण्डशः प्रकाशित हो रहा है।

हरिशंकर मोरारजी व्यास

गुजराती भाषी श्री व्यास ने 'आर्य मुसाफिर धर्मवीर पं. लेखरामजी नु जीवनचरित' अपनी मातृभाषा में लिखा।

पं. हरिशंकर शर्मा

आर्यसमाज के सिद्धान्तों को अपना कर श्रेष्ठ काव्य रचना करने वाले पं. नाथूराम शर्मा 'शंकर' के सुपुत्र पं. हरिशंकर शर्मा का जन्म १९ अगस्त १८९१ को हरदुआगंज (अलीगढ़) में हुआ। इनकी शिक्षा घर पर ही हुई तथा आपने स्वाध्याय के बल पर हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी, बंगला, फारसी आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। आपने पत्रकारिकता के क्षेत्र में प्रवेश किया और महाविद्यालय ज्वालापुर के मुखपत्र भारतोदय के सहकारी सम्पादक बने। पुनः आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश के मुख पत्र आर्यमित्र का आपने सम्पादन किया। इनके सम्पादन काल में आर्यमित्र ने अत्यधिक उन्नति की और अनेक उत्कृष्ट लेखकों के लेख उसमें छपने लगे। इस प्रकार आर्यमित्र आर्यसमाज के क्षेत्र से बाहर भी एक सम्मानित हिन्दी साप्ताहिक के रूप में प्रतिष्ठित हुआ। आर्यमित्र के अतिरिक्त आपने अन्य अनेक पत्रों का सम्पादन किया जिनमें आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद के दैनिक पत्र दिग्विजय का नाम उल्लेखनीय है। ९ मार्च १९६८ को इनका निधन हो गया।

काव्य रचना तो शर्माजी को पितृदाय के रूप में मिली थी। एक उत्कृष्ट कवि होने के साथ-साथ साथ आप सफल हास्य-व्यंग्य लेखक तथा गद्यकार भी थे। आपकी 'घास पात' नामक काव्य कृति पर हिन्दी का उस समय का शिरोमणि सम्मान देव पुरस्कार आपको प्राप्त हुआ। आपने पं. गंगाप्रसाद की विख्यात पुस्तक Fountain-Head of Religion का हिन्दी अनुवाद किया जो आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रदेश द्वारा प्रकाशित हुआ। आपने ऋषि दयानन्द के जीवन को लेकर जो काव्य लिखे उनका विवरण इस प्रकार है।

ले. का.—शिव संकल्प (१९२९), महर्षि महिमा (२०१० वि.), दयानन्द दिग्विजय, केसरी कीर्तन (लाला लाजपतराय की जीवनी (१९२९).

आपके उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधानत्व काल में आर्यसमाज के साहित्यकार—पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय तथा पं. गंगाप्रसाद जज का सम्मान समारोह सम्पन्न हुआ। आपको भारत सरकार ने पद्मश्री की उपाधि से सम्मानित किया, किन्तु जब सरकार ने भारत की राजभाषा के रूप में हिन्दी को प्रतिष्ठित करने की अवधि अनिश्चित काल के लिये बढ़ा दी तो शर्माजी ने इस उपाधि को त्यागने में भी संकोच नहीं किया।

पं. हरिशंकर शर्मा दीक्षित

आप बिजनौर जिले के नगीना कस्बे के निवासी थे। इनके पिता का नाम पं. रामयश था। आप आर्यसमाज नगीना के १८९७ से १८९९ तथा १९०३ से १९२६ तक प्रधान रहे। १४ अप्रेल १९३३ को इनका निधन हो गया। आपने अथर्ववेद के प्रथम काण्ड का आयुर्वेदपरक भाष्य किया है। अखिलानन्द शर्मा लिखित अथर्वालोचन का खण्डन आपने अथर्ववेदालोचनमीमांसा शीर्षक से किया जो १९७५ वि. में छपा। अन्य ग्रन्थ—त्योहार पद्धति तथा पितृकर्ममीमांसा।

पं. हरि सखाराम तुंगार

मराठी भाषा में स्वामी दयानन्द के जीवनचरित-लेखक पं. हरि सखराम तुंगार का जन्म २५ अक्टूबर १८९२ को जिला अहमदनगर के मदड़गांव ग्राम में एक यजुर्वेदी ब्राह्मण परिवार में हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा अहमदनगर के मिशन स्कूल में हुई। १९१० में आपने आर्यसमाज की सदस्यता ग्रहण की। आपने मराठी साप्ताहिक आर्यभानु का सम्पादन भी किया। यह पत्र आर्यसमाज अहमदनगर द्वारा प्रकाशित किया गया था। कालान्तर में आपने बम्बई तथा कोल्हापुर में रह कर सामाजिक कार्य किया। इनका निधन २९ नवम्बर १९८१ को हुआ।

ले. का.—महर्षि दयानन्द यांचे चरित्र व कामगिरि (१९२०), आर्य धमेन्द्र दयानन्द सरस्वती यांची पुर्णे येथील व्याख्याने (पूना प्रवचन का मराठी अनुवाद) श्री शाहु-स्मारक आर्यधर्म साहित्य भण्डार कोल्हापुर द्वारा १०१ द. में प्रकाशित, महाराष्ट्र में आर्यसमाज, ईश्वर प्राप्ति के वैदिक उपाय, अस्पृश्योद्धार, वेद ईश्वर प्रणीत क्यों? वर्णव्यवस्था जन्माधारित या कर्माधारित, दाइये इस्लाम का मराठी अनुवाद (अलार्मबेल अर्थात् भय सूचक घण्टा)

हरिसिंह खलीफा

आप दिल्ली निवासी थे। आपने इस्लाम विषयक आलोचनात्मक साहित्य लिखा है।

ले. का.—आइनाएइस्लाम (१९३५), इस्लामी बहिश्त की हक़ीकत, खुलासा तालीम-ए-कुरान।

हितैषी अलावलपुरी

पंजाब के कस्बा अलावलपुर के निवासी श्री हितैषी का पूरा नाम लालचन्द हितैषी था। ये लाहौर से प्रकाशित होने वाले उर्दू साप्ताहिक प्रकाश के सम्पादक रहे। दिल्ली में आपने प्रकाश पुस्तकालय की स्थापना की।

ले. का.—सत्यार्थप्रकाश आन्दोलन का इतिहास (१९४६), हितैषी की गीता (दोहानुवाद), उपनिषद्-गान, ईशोपनिषद् का पद्यानुवाद, ऋषि गान दोहा।

हीरालाल औलक

इनका जन्म १५ जून १९१६ को सहारनपुर में हुआ। डी. ए. वी. कालेज जालंधर में इन्होंने शिक्षा ग्रहण की। १९४० से १९७७ तक श्री औलक डी. ए. वी. कालेज शोलापुर में प्राध्यापक थे। आप आर्यसमाज शोलापुर के प्रधान भी रहे। आपने 'Dayanand : An Interpretation' शीर्षक एक विचार प्रधान पुस्तक लिखी जो लेखक ने ही शोलापुर से १९६६ में प्रकाशित की।

राजकवि हीरालाल सूद

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध नेता श्री पूर्णचन्द्र एडवोकेट के अग्रज श्री हीरालाल सूद का जन्म १९३९ वि. (१८८२)

में प्रयाग में हुआ। इनके पिता श्री जवाहरलाल मूलतः आगरा निवासी थे किन्तु उस समय संयुक्त-प्रान्त के गवर्नर के कार्यालय में काम करते थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा प्रयाग की कायस्थ पाठशाला में हुई। १९०३ में सूदजी ने सेंट जॉन्स कालेज आगरा से बी. ए. की परीक्षा पास की। तदनन्तर डी. ए. वी. स्कूल मेरठ तथा डी. ए. वी. हाई स्कूल देहरादून में आप मुख्याध्यापक रहे। देहरादून से ये ग्वालियर आ गये और रेजिडेन्सी कार्यालय में रहते हुए भारतवर्ष के देशी राज्यों के इतिहास का सम्पादन किया। कुछ वर्ष तक आप बुन्देलखण्ड की रियासतों में रहे। १९१० में कोटा (राजस्थान) राज्य की सेवा में आ गये और जिला मजिस्ट्रेट तथा न्यायाधीश के पदों पर रहे। कोटा नरेश ने उन्हें राजकवि की उपाधि प्रदान की थी। इनका निधन २२ जून १९३३ को लखनऊ में हुआ। श्री सूद अच्छे साहित्यकार तथा कवि थे। हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी पर आपका समान अधिकार था। आर्यमित्र के विशेषांकों में आपकी रचनाएं प्रायः प्रकाशित होती रहती थीं। पं. पद्मसिंह शर्मा तथा पं. हरिशंकर शर्मा जैसे आर्य साहित्यकारों से सूद साहब की घनिष्टता थी।

ले. का.—The Yama Sukta of the Rigveda (1911), Sandhya or the Song of the Soul, Fivefold Path to Salvation. स्वामी श्रद्धानन्द के निधन पर आपने श्रद्धांजलि शीर्षक एक काव्य कृति लिखी थी। आर्य दिग्विजय नामक आपकी एक अन्य कृति का भी उल्लेख मिलता है।

हेमचन्द्र चक्रवर्ती

स्वामी दयानन्द के बंगाली भक्त श्री चक्रवर्ती कलकत्ता में ही उनके सम्पर्क में आये। पुनः स्वामीजी से योग सीखने की इच्छा लेकर आप उनके साथ कानपुर और फर्रुखाबाद तक आये। आपने स्वामीजी के दिसम्बर १९७२ से अप्रैल १९७३ तक के बंग प्रवास का वर्णन अपनी डायरी में अंकित किया। चक्रवर्ती महाशय आर्य-समाज कलकत्ता के उपदेशक पद पर रहे। उनकी उपर्युक्त डायरी मूल बंगला में बंग-आसाम आर्य महासम्मेलन कलकत्ता द्वारा १९५४ में प्रकाशित हुई। इसका अनुवाद पं. दीनबंधु वेद शास्त्री ने किया है जो आर्यमित्र, वेद-वाणी तथा आर्य संसार आदि पत्रों में छपा। इसे ऋषि दयानन्द के पत्र व्यवहार (परिशिष्ट) में पं. युधिष्ठिर मीमांसक ने सम्मिलित किया है।

होमनिधि शर्मा

आप उत्तरप्रदेश के निवासी थे।

ले. का.—जाति परीक्षा (१९०१), हुक्का दोष दर्पण २ भाग, (हुक्का पीने के दोषों का वर्णन), वैदिक प्राणैषणा (१९१४)

डा. भवानीलाल भारतीय

आर्य लेखक कोश के प्रणेता डा. भारतीय का जन्म आषाढ़ कृष्णा ३ सं. १९८५ वि. (सरकारी रेकार्ड में १ मई १९२८) को राजस्थान के नागौर जिलान्तर्गत परवत-सर नामक ग्राम में श्री फकीरचन्दजी वकील के यहां हुआ। इनकी माता का नाम श्रीमती रतन कुंवर था। भारतीयजी की प्रारम्भिक शिक्षा परबतसर तथा मकराना में हुई। तत्पश्चात् वे सर प्रताप हाई जोधपुर में प्रविष्ट हुए, जहाँ से उन्होंने १९४५ में हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। जसवन्त कालेज जोधपुर से १९४९ में बी.ए. करने के पश्चात् उन्होंने अध्यापक की वृत्ति स्वीकार की और १९४९ से १९५७ तक सर प्रताप हाई स्कूल जोधपुर तथा १९५७ से १९६१ तक न्यू गवर्नमेंट हायर सैकण्डरी स्कूल जोधपुर में वरिष्ठ शिक्षक का कार्य किया। इस अवधि में उन्होंने एम.ए. हिन्दी (१९५३) तथा एम. ए. संस्कृत (१९६१) किया। जुलाई १९६१ में वे राज-स्थान की कालेज शिक्षा सेवा में आये। श्री महाराज-कुमार कालेज जोधपुर (१९६१-६२) गवर्नमेंट कालेज पाली (१९६२-६९) तथा गवर्नमेंट कालेज अजमेर में (१९६९ से १९८०) तक हिन्दी प्रवक्ता के रूप में कार्य करने के पश्चात् वे ८ दिसम्बर १९८० से ३० अप्रैल १९८८ तक पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ की दयानन्द-

शोध पीठ में अध्यक्ष एवं प्रोफ़ेसर के पद पर कार्यरत रहे। १ मई १९८८ से सम्प्रति इसी शोध पीठ में वे प्रोफेसर पद पर कार्य कर रहे हैं।

डा. भारतीय का आर्य सामाजिक जीवन—

भारतीयजी ने १२ वर्ष की अल्पायु में सत्यार्थप्रकाश का आंशिक अध्ययन किया। १९४४ में वे आर्यकुमार सभा जोधपुर के सदस्य बने। १९४६ में अठारह वर्ष की आयु में नगर आर्यसमाज जोधपुर की सदस्यता ग्रहण की। तत्पश्चात् इसी नगर की विभिन आर्यसमाजों में पुस्तकाध्यक्ष, मंत्री तथा उपप्रधान के पदों पर १९६१ तक रहे। आर्यसमाज पाली के प्रधान पद पर कुछ वर्षों तक कार्य करने के पश्चात् अजमेर आने पर वे नगर आर्यसमाज अजमेर के भी वर्षों तक प्रधान रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान से भारतीयजी का सम्बन्ध १९५० से १९८२ पर्यन्त रहा। इस दीर्घ अवधि में वे सभा के अन्तरंग सभासद, उपमंत्री, मंत्री तथा उपप्रधान रहे। सार्वदेशिक सभा के साधारण तथा अन्तरंग सदस्य एवं उपमंत्री पद पर रहने का अवसर भी उन्हें मिला। विगत १० वर्षों से वे आर्यसमाज सैक्टर १६ चण्डीगढ़ के प्रतिष्ठित सभासद हैं। डा. भारतीय का आर्यसामाजिक लेखन १९४९ में आरम्भ हुआ। इस प्रकार उनका यह सारस्वत सत्र चार दशकों की दीर्घ अवधि तक विस्तृत है। उनके लेखन कार्य का विवरण इस प्रकार है—

१. तुलनात्मक अध्ययन विषयक ग्रन्थ—

१. ऋषि दयानन्द और अन्य भारतीय धर्माचार्य (१९४९)
२. महर्षि दयानन्द और राजा राममोहन राय (१९५७)
३. आधुनिक धर्म सुधारक और मूर्तिपूजा (१९७१)
४. महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द (१९७६)

२. वेद विषयक ग्रन्थ—

वेदों में क्या है ? (१९५५), वेदाध्ययन के सोपान (१९७४), उपनिषदों की कथायें भाग-१ (१९८३)

३. ऋषिदयानन्द विषयक ग्रन्थ—

महर्षि दयानन्द का राष्ट्रवाद (१९५६), ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की संस्कृत भाषा और साहित्य को देन (पी-एच.डी. का शोध प्रबन्ध १९६८), महर्षि दयानन्द श्रद्धांजलि (१९६८), महर्षि दयानन्द प्रशस्ति (१९६८), ऋषि दयानन्द के ऐतिहासिक संस्मरण (१९७५), स्वामी दयानन्द के दार्शनिक सिद्धांत (सम्पादन १९८२), दयानन्द-साहित्य सर्वस्व (१९८३), महर्षि दयानन्द प्रशस्ति काव्य (संस्कृत पद्यों का संग्रह, १९८७)।

४. महापुरुषों के जीवनचरित—

श्रीकृष्णचरित (१९५८-१९८१), पं. गणपति शर्मा (सम्पादन) १९७२, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती (१९७२), योगिराज महात्मा कालूरामजी (१९७४), देशभक्त कुं. चांदकरण शारदा (१९८१), नवजागरण के पुरोधा-दयानन्द सरस्वती (१९८३), पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा (१९८४), ऋषि दयानन्द के भक्त, प्रशंसक और सत्संगी (१९८६), श्रद्धानन्द जीवनकथा (१९८७), राजस्थान के आर्य महापुरुष (१९८८)

५. आर्यसमाज विषयक ग्रन्थ—

आर्यसमाज के शास्त्रार्थ महारथी (१९७०), आर्यसमाज के वेद सेवक विद्वान् (१९७४), परोपकारिणी-सभा का इतिहास (१९७५), आर्यसमाज का अतीत और वर्तमान (१९७५), आर्यसमाज के पत्र और पत्रकार (१९८१), आर्यसमाज विषयक साहित्य परिचय (१९८५), आर्यसमाज का इतिहास (पंचम खण्ड-आर्यसमाज के साहित्य का विवेचन, १९८६)

६. ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का सम्पादन—

चतुर्वेद विषय सूची (२०२८ वि.), ऋग्वेद के प्रारम्भिक २२ मंत्रों का भाष्य (२०२७ वि.), दयानन्द-शास्त्रार्थ संग्रह (१९७०), दयानन्द उवाच (सूक्तिसंग्रह, १९७४), महर्षि दयानन्द की आत्मकथा (१९७५), उपदेश-मंजरी (१९७६), पं. लेखराम रचित स्वामी दयानन्द का जीवनचरित (१९८६)

७. अन्य सम्पादित ग्रन्थ—

बालकों की धर्म शिक्षा (१९५३), पं. रुद्रदत्त शर्मा ग्रन्थावली भाग-१ (१९६५), शुद्ध गीता (१९६६), दयानन्द दिग्विजयार्क (१९७४-१९८३), कविरत्न प्रकाशचन्द्र अभिनन्दन ग्रन्थ (१९७१), पं. महेन्द्रप्रताप शास्त्री अभिनन्दन ग्रन्थ, स्वामी भीष्म अभिनन्दन ग्रन्थ (१९८१), श्रद्धानन्द ग्रन्थावली-९ खण्डों में (१९८७), ऋषि दयानन्द-प्रशस्ति (बेताब के उर्दू मुसद्दस, १९७४), श्री श्रीदयानन्द-चरित (१९८६)

८. विभिन्न स्फुट ग्रन्थ—

विद्यार्थी जीवन का महत्त्व (१९६१), ब्रह्मवैवर्त-पुराण की आलोचना (१९६९), महर्षि दयानन्द निर्वाण-शताब्दी व्याख्यान माला (१९८४)

९. सत्यार्थप्रकाश विषयक ग्रन्थ—

ज्ञानदर्शन (एकादश समुल्लास की व्याख्या, १९७७), विश्व धर्म कोश—सत्यार्थप्रकाश (१९७८), हिन्दू धर्म की निर्बलता (१९८२)

१०. अनूदित ग्रन्थ—श्रीमद्भागवत (गुजराती से अनूदित) (१९७७), मीमांसा दर्शन (अध्याय ७ से १२ तक गुजराती से अनूदित, १९८१) आर्यसमाज (लाला लाजपतराय की अंग्रेजी पुस्तक का अनुवाद, (१९८२), श्रद्धानन्द ग्रन्थावली खण्ड—५ तथा १० (इन साइड कांग्रेस तथा आर्यसमाज एण्ड इट्स डिट्रैक्टर्स का अनुवाद, १९८७), पं. गुरुदत्त विद्यार्थी (लाला लाजपतराय की अंग्रेजी पुस्तक का अनुवाद—१९९०), सूरज बुझाने का पाप (डा. केशू भाई देसाई के स्वामी दयानन्द महापरि-निर्वाण से सम्बन्धित गुजराती उपन्यास का अनुवाद—१९९०)

आर्यसमाज की पत्र-पत्रिकाओं में भारतीयजी के सहस्राधिक लेख अब तक प्रकाशित को चुके हैं। स्वामी दयानन्द के व्यक्तित्व एवं कृतित्व विषयक उनके निम्न शोधपूर्ण निबन्ध वेदवाणी के विगत वर्षों के दयानन्द अंकों में छपे हैं—

१९८५—काशी शास्त्रार्थ में उपस्थित पौराणिक विद्वान्

१९८६—कर्नल ऑल्काट के स्वामी दयानन्द विषयक संस्मरण।

१९८७—स्वामी दयानन्द के प्रथम बम्बई प्रवास के समय प्रकाशित विज्ञापन।

१९८८—स्वामी दयानन्द और रा. ब. भोलानाथ साराभाई।

१९८९—स्वामी दयानन्द को लिखे जर्मन शिक्षा-शास्त्री डा. वाइज के पत्र।

१९९०—स्वामी दयानन्द को लिखे थियोसोफिस्टों के मूल पत्र सानुवाद।

आर्यसमाज की पत्रकारिता को भारतीयजी का उल्लेखनीय योगदान है। वे परोपकारी के प्रबन्ध सम्पादक विगत १९ वर्षों से हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मुखपत्र आर्यमार्तण्ड का भी उन्होंने सम्पादन किया है।

ब. प.—४१, सैक्टर-१५ ए. चंडीगढ़ १६००१५

स्थायी पता—रत्नाकर, ८/४२३, नन्दनवन, चौपासनी आवासन बोर्ड, जोधपुर।

संकलयिता—सतीशचन्द्र शुक्ल

□□

पूरक सूची

लाला इन्द्रसेन

लाला इन्द्रसेन कसौली (जिला सोलन) के निवासी थे। बी. ए. करने के पश्चात् उन्होंने बहुत समय तक अम्बाला में वकालत की। वे आर्यसमाज के उन सभी पत्रों में निरन्तर लिखते रहे जो लाहौर से प्रकाशित होते थे। १९४५ में उनकी एक उर्दू पुस्तक प्रकाशित हुई जिसका शीर्षक था—आज़ाद धार्मिक साइन्स। इसमें वैदिक सिद्धांतों को विज्ञान की कसौटी पर खरा सिद्ध किया गया था। इसका एक अन्य संस्करण १९५३ में भी छपा।

डा. ओमदत्त शर्मा

डा. शर्मा का जन्म ७ जून १९५२ को मेरठ के प्रसिद्ध आर्य उपदेशक पं. शोभाराम प्रेमी के यहाँ हुआ। आपने मेरठ विश्वविद्यालय से दर्शनशास्त्र में १९८० में एम. ए. किया। आपको शोध कार्य की प्रेरणा देने वाले डा. वेदप्रकाश गुप्त मेरठ कालेज, मेरठ में दर्शनशास्त्र के प्रवक्ता हैं। इन्हीं के निर्देशन में डा. ओमदत्त ने 'स्वामी दयानन्द के वेद भाष्य की दार्शनिक समीक्षा' विषय पर पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। यह शोध ग्रन्थ अमर ज्योति-प्रकाशन मेरठ द्वारा १९९० में प्रकाशित हुआ है।

व. प.—३०२, पंचशील गली नं. १, गढ़ रोड, मेरठ २५०००२

कर्मवीर शास्त्री

शास्त्रीजी का जन्म माघ शुक्ला प्रतिपदा १८६४ शकाब्द को उस्मानाबाद (आंध्रप्रदेश) के गुंजोटी नगर में श्री वीरपक्ष जी के यहाँ हुआ। आपने दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार से विद्या वाचस्पति, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर से विद्याभास्कर, पुनः शास्त्री तथा एम. ए. की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। विगत ग्यारह वर्षों से आप दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में अध्यापन कार्य कर रहे हैं।

ले. का.—आर्यसमाज आहे तरी काय? श्री रमेश ठाकूर के सहलेखन में मराठी ग्रन्थ १९७१ में प्रकाशित। इस परिचयात्मक ग्रन्थ के अब तक तीन संस्करण निकल चुके हैं।

व. प.—दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार (हरयाणा)

डॉ. जोगेन्द्रसिंह यादव

डॉ. यादव का जन्म १ दिसम्बर १९४१ को श्री नन्दलाल यादव के यहाँ महेन्द्रगढ़ (हरयाणा) जिले के ग्राम नीरपुर में हुआ। आपकी शिक्षा एम. एस-सी. (प्राणिशास्त्र) तथा पी-एच. डी. तक हुई। विगत अनेक वर्षों से आप कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में प्राणिशास्त्र के प्रोफेसर पद पर कार्यरत हैं। आप हरयाणा आर्य युवक-दल के उपाध्यक्ष तथा पर्यावरण रक्षक संस्था 'परिवेश' के अध्यक्ष हैं।

ले. का.—स्वामी दयानन्द सरस्वती—थ्रू नॉन आर्य-समाजिस्ट आईज १९९०, आर्यसमाज के प्रवर्त्तक के सम्बन्ध में पाश्चात्य एवं भारतीय आर्यसमाजेतर लेखकों, विचारकों तथा चिन्तकों के विचारों का संग्रह।

व. प.—प्राणिशास्त्र विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र-१३२११९

डा. धर्मचन्द्र विद्यालंकार 'समन्वित'

डा. धर्मचन्द्र का जन्म १० दिसम्बर १९५६ को फरीदाबाद जिले के ग्राम अतलीका में चौधरी रामचन्द्र के यहाँ हुआ। इनकी शिक्षा एम. ए. (हिन्दी), एम-फिल. तथा पी-एच. डी. तक हुई। आप एक सफल लेखक, चिन्तक तथा व्यवसाय से शिक्षक हैं।

ले. का.—सत्यार्थसुधाशतक (१९८०), वैदिक धर्म एवं संस्कृति (१९८९) साम सुधाशतक (१९९०) तथा आर्य पत्रों में अनेक विचारपूर्ण लेख।

व. प.—सनातन धर्म कालेज पलवल (हरियाणा)

डा. धर्मदेव विद्यार्थी

डा. विद्यार्थी का जन्म कैथल जिले के ग्राम फतहपुर में श्री रोशनलाल के यहाँ हुआ। इनकी शिक्षा एम. ए., बी. एड. तथा पी-एच. डी. तक हुई है। आपने '१८८३ से १९४७ तक की अवधि में पंजाब को आर्यसमाज का शैक्षिक योगदान' विषय लेकर शोध कार्य सम्पन्न किया है। आप गुरुकुल कुरुक्षेत्र में मुख्य संरक्षक रहे तथा आर्य प्रतिनिधि-सभा हरयाणा के सदस्य और सार्वदेशिक आर्यवीर दल की कार्यकारिणी के भी सदस्य रहे हैं। वर्तमान में वे कन्या गुरुकुल खरल के मंत्री, आर्ययुवक दल हरयाणा के मंत्री, आर्य प्रादेशिक उपप्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपमंत्री हैं।

ले. का.—आर्यवीर विजय का सम्पादन (१९८५-९०) उन्नत गोपालन, बोधरात्रि, स्वामी दयानन्द, आर्यसमाज, आर्यवीर दल बौद्धिक प्रशिक्षण।

ब. प.—प्राचार्य, डी. ए. वी. शताब्दी पब्लिक स्कूल टोहाना (हरयाणा)

कविराज धर्मसिंह कोठारी

श्री कोठारी का जन्म १७ फरवरी १९२१ को अजमेर में श्री दलेलसिंह कोठारी के यहाँ हुआ। आपका प्रसिद्ध कोठारी परिवार मूलतः मसूदा (जिला अजमेर) का निवासी है, जिसके पूर्वजों को ऋषि दयानन्द का सत्संग लाभ मिला था तथा जिन्होंने अपने परम्परागत जैन धर्म को त्याग कर निष्ठापूर्वक वैदिक धर्म को स्वीकार किया था। धर्मसिंह कोठारी का अध्ययन लाहौर में हुआ जहाँ से आपने वैद्यवाचस्पति की उपाधि प्राप्त की। वे आर्य-समाज की गतिविधियों में अपनी युवावस्था से ही भाग लेते रहे तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, वेद संस्थान, अजमेर आदि संस्थाओं में सक्रिय रहे। विगत अनेक वर्षों से वे नगर आर्यसमाज अजमेर के प्रधान हैं।

ले. का.—श्री धर्मसिंह कोठारी ने परोपकारिणी सभा की सेवा में रह कर महर्षि कृत सत्यार्थप्रकाश तथा अन्य ग्रन्थों का मूल पाठ के आधार पर प्रेस कापी बनाने का कष्टसाध्य कार्य तत्परतापूर्वक किया है।

ब. प.—कोठारी भवन, केसरगंज, अजमेर ३०५००१

डा. निगम शर्मा

डा. शर्मा का जन्म २३ सितम्बर १९२८ को पं. पुरन्दरनाथ त्रिपाठी के यहाँ ग्राम कनखोटियां (कुशीनगर) जिला देवरिया, उत्तरप्रदेश में हुआ। उन्होंने १९६० में साहित्याचार्य की परीक्षा प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त कर उत्तीर्ण की तथा स्वर्ण पदक प्राप्त किया। आगरा विश्वविद्यालय से १९६२ में उन्होंने संस्कृत विषय लेकर एम. ए. पास किया तथा १९६७ में 'ऋग्वेद में काव्य तत्त्व' विषय पर उसी विश्वविद्यालय से पी-एच. डी. की उपाधि ग्रहण की। डा. निगम शर्मा ३ सितम्बर १९६३ को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के प्रवक्ता पद पर नियुक्त हुए और रीडर के पद से सेवा निवृत्त हुए।

ले. का.—ऋक् सूक्त मंजरी (ऋग्वेद के कतिपय सूक्तों की विस्तृत व्याख्या) तथा अन्य अनेक ग्रन्थ जो अद्यापि अप्रकाशित हैं।

ब. प.—४, वड़ा परिवार, गुरुकुल कांगड़ी परिसर, हरिद्वार (उ. प्र.)।

श्रीमती निर्मला मिश्र

शास्त्रों की अपूर्व विदुषी श्रीमती निर्मला का जन्म २१ जून १९३१ को श्री ब्रजनारायण शर्मा तथा श्रीमती सुखदेवी के यहाँ हुआ। उनका विवाह आर्य जगत् के विख्यात् विद्वान् तथा प्रौढ़ पण्डित विशुद्धानन्द मिश्र के साथ हुआ। आपने संस्कृत तथा दर्शन में एम. ए. करने के अतिरिक्त पुराणेतिहास तथा साहित्य में आचार्य परीक्षायें भी उत्तीर्ण की हैं। कई वर्षों तक पार्वती आर्य कन्या कालेज बदायूं में प्रधानाचार्या का पद भार निर्वहन करने के पश्चात् आपने सेवा से अवकाश ग्रहण किया है। करपात्री स्वामी के मार्गदर्शन में लिखे गये वेदार्थ पारिजात, जिसमें ऋषि दयानन्द कृत ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका

तथा तदनुवर्ती वेदालोचन विषयक आर्य ग्रन्थों के प्रत्यक्षर खण्डन करने का दम्भ किया गया था, के उत्तर में पं. विशुद्धानन्द मिश्र द्वारा लिखे संस्कृत ग्रन्थ 'वेदार्थकल्पद्रुम' का धारावाही हिन्दी अनुवाद कर श्रीमती मिश्र ने आर्य-साहित्य की महती सेवा की है।

व. प.—मुहल्ला कूचा पाड़ा, बदायूं (उत्तरप्रदेश)

डा. बलवीर आचार्य

डा. आचार्य का जन्म फजलपुर (सुन्दरनगर) जिला मेरठ निवासी श्री हरवंशलाल के यहाँ २३ मई १९५२ को हुआ। उनका प्रारम्भिक अध्ययन गुरुकुल झज्जर तथा गुरुकुल सिंहपुरा (रोहतक) में हुआ, जहाँ से आपने शास्त्री एवं आचार्य की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। तत्पश्चात् आपने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से संस्कृत तथा वेद में एम. ए. किया। इसी विश्वविद्यालय से उन्होंने पी-एच. डी. की उपाधि भी प्राप्त की। विगत कई वर्षों से डा. आचार्य महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के संस्कृत विभाग में प्रवक्ता हैं। सम्प्रति ये ब्राह्मण ग्रन्थों में वर्णित राजनीति विषय पर डी. लिट्. के लिये कार्य कर रहे हैं।

ले. का.—ऋग्वेदीय ब्राह्मणों का सांस्कृतिक अध्ययन, ऐतरेय एवं कौषीतकि ब्राह्मण ग्रन्थों में दार्शनिक तत्त्व (शीघ्र प्रकाश्य)

व. प.—२४६ ए. सुभाषनगर, रोहतक (हरयाणा) १२४००१.

डा. भीमसिंह वेदालंकार

संस्कृत व्याकरण शास्त्र के प्रकाण्ड विद्वान् डा. भीमसिंह का जन्म पं. विद्यानिधि शास्त्री के यहाँ ग्राम लोहारी जिला सोनीपत में ५ जनवरी १९५६ को हुआ। इनका प्रारम्भिक अध्ययन गुरुकुल भैंसवाल तथा पश्चात् गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में हुआ जहाँ से आपने क्रमशः शास्त्री तथा वेदालंकार उपाधियाँ प्राप्त कीं। पुनः कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए., एम. फिल. तथा पी-एच. डी. उपाधियाँ प्राप्त कीं। वर्तमान में वे पंजाबी विश्वविद्यालय पटियाला के संस्कृत विभाग में रीडर हैं।

ले. का.—पातञ्जल महाभाष्य के प्रत्याख्यात सूत्र : एक समीक्षात्मक अध्ययन (१९८७), पातञ्जल महाभाष्य में अपूर्व कल्पनायें (१९८८), प्रकाशनाधीन-सम्पूर्ण व्याकरण महाभाष्य की हिन्दी व्याख्या, हरयाणवी-संस्कृत-हिन्दी का त्रिभाषीकोश तथा संस्कृत व्याकरण, लोकन्यायकोश।

संस्कृत तथा भारत विद्या के विशिष्ट शोधपत्रों में अनेक स्तरीय शोधनिबंध।

व. प.—रीडर, संस्कृत विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला १४७००२ (पंजाब)।

रामनारायण आर्य

श्री आर्य का जन्म रोहतक (हरयाणा) में लाला उमरावसिंह के यहाँ १४ अक्टूबर १८९४ को हुआ। उन्होंने बी. ए. उत्तीर्ण करने के पश्चात् आर्यसमाज में रह कर समाज सेवा का कार्य किया। १९१९ में आर्य स्कूल और आर्यपुत्री पाठशाला की स्थापना रोहतक में की तथा समीपवर्ती गांवों में भी शिक्षा प्रचार किया। उन्होंने दयानन्द साल्वेशन मिशन की रोहतक में शाखा स्थापित की तथा दलितोद्धार एवं शुद्धि का काम किया। वे जीवन पर्यन्त वैदिक आर्य प्रचारक के रूप में सक्रिय रहे तथा हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह में भी गये। डी. ए. वी. कालेज लाहौर में वे महात्मा हंसराज के शिष्य तथा आचार्य विश्वबंधु के सहपाठी थे। ८ सितम्बर १९७४ को उनका निधन हो गया। वे हिन्दी तथा अंग्रेजी के सशक्त लेखक थे।

ले. का.—कांग्रेस की मुस्लिम पोषक नीति, क्या हम स्वाधीन हैं ?, भारतीय रिपब्लिक और स्वाधीनता, Freedom of India : A Big Hoax.

विनायकराव विद्यालंकार

पं. विनायकराव का जन्म हैदराबाद के प्रसिद्ध आर्य नेता श्री केशवराव कोरटकर के यहाँ ३ फरवरी १८९६ को कलम (उस्मानाबाद) में हुआ। इनकी शिक्षा गुरुकुल कांगड़ी में हुई जहाँ से आपने १९७४ वि. (१९१८) में विद्यालंकार की उपाधि प्राप्त की। तत्पश्चात् आपने एल. एल. बी. तथा इंग्लैण्ड से बार एट लॉ की उपाधियाँ ग्रहण कीं तथा वकालत में लग गये। आप अनेक वर्षों तक आर्य-प्रतिनिधि सभा हैदराबाद के प्रधान रहे तथा हैदराबाद के आर्य सत्याग्रह में सर्वाधिकारी बने। गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी ने उन्हें विद्या मार्तण्ड की उपाधि से सम्मानित किया तथा वे हैदराबाद राज्य की विधानसभा के सदस्य तथा

राज्य मंत्रिमण्डल में मंत्री (१९५१-५३) भी रहे। ३ सितम्बर १९६२ को आपका निधन हो गया।

ले. का.—चाबुक (कथा संग्रह), एब्राहम लिंकन (जीवनी) साप्ताहिक आर्य भानु का सम्पादन (१९४६-५२)

वि. अ.—पं. विनायकराव विद्यालंकार अभिनन्दन ग्रन्थ।

डा. शशिप्रभा कुमार

डा. श्रीमती शशि प्रभा का जन्म १ नवम्बर १९५१ को दिल्ली में श्री हंसराज तथा श्रीमती कृष्णा सचदेव के यहाँ हुआ। आपने संस्कृत में एम. ए. तथा भारतीय दर्शन पर पी-एच. डी. की उपाधियाँ प्राप्त की हैं। वे विगत अनेक वर्षों से दिल्ली के मैत्रेयी कालेज में संस्कृत की वरिष्ठ व्याख्याता हैं। वे दिल्ली के आर्यसमाजों में नियमित-रूप से भाषण तथा प्रवक्ता भी करती हैं।

ले. का.—वैशेषिक दर्शन में पदार्थ निरूपण (शोध-ग्रन्थ), आधुनिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय दर्शन की प्रासंगिकता तथा विभिन्न शोधपत्रिकाओं में स्तरीय शोध निबंध।

व. प.—२१ साक्षर एपार्टमेंट्स, ए. ३ पश्चिमी-विहार, नई दिल्ली-११००६३

पं. श्रीपाद जोशी

जोशीजी का जन्म २३ जनवरी १९२० को महाराष्ट्र के जिला कोल्हापुर में मुरगूड नामक स्थान में हुआ। वे महात्मा गांधी के निकट कई वर्षों तक वर्धा में रहे और विभिन्न भारतीय भाषाओं का अध्ययन किया। १९४२ के स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने के कारण उन्हें दो वर्ष का कारावास दण्ड मिला। १९४६ में वे पुणे आये व लेखक वृत्ति अंगीकार की। तब से उनकी अनेक पुस्तकें तथा लेख छप चुके हैं। उनके ग्रन्थों में आधे अनुवाद हैं। साहित्य अकादमी तथा महाराष्ट्र हिन्दी साहित्य अकादमी ने उनके ग्रन्थों को पुरस्कृत भी किया है।

ले. का.—सत्यार्थप्रकाश का मराठी अनुवाद (आर्य-समाज पिंपरी पुणे द्वारा प्रकाशित), महर्षि दयानन्द का मराठी जीवनचरित।

व. प.—श्री रघुवंश, डा. केतकर मार्ग, पुणे ४११००४

सत्यवीर शास्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्यप्रदेश व विदर्भ के मंत्री पं. सत्यवीर शास्त्री का जन्म अमरावती (महाराष्ट्र) जिले के पथरोट ग्राम में श्री चन्द्रप्रकाश के यहाँ १ जुलाई १९५० को हुआ। मैट्रिक करने के पश्चात् आपने उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर से सिद्धान्तशिरोमणि तथा पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। पुनः जबलपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम. ए. भी किया। आपने पंजाब के हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भाग लिया और कारावास सहा। आपका मुख्य कार्यक्षेत्र विदर्भ प्रान्त रहा। यहाँ आकोला, अमरावती आदि स्थानों में आपने लेखन तथा प्रचार कार्य किया।

ले. का.—मराठी ग्रन्थ—विधार्थ्या चे आदर्श जीवन, स्वामी दयानन्दाचे चरित्र, सत्संग गुटका, खाड़ी देशों में वैदिक धर्म (हिन्दी)।

व. प.—आर्य प्रतिनिधि सभा म. प्र. व विदर्भ, प्रशान्तनगर, अमरावती (महाराष्ट्र) ४४४६०६.

डा. सावित्री शर्मा

संस्कृत की विदुषी श्रीमती सावित्री का जन्म १५ अप्रैल १९३७ को बदायूं में पं. रामस्वरूप शर्मा के यहाँ हुआ। इनका अध्ययन हिन्दी और संस्कृत में एम. ए. तक का हुआ। तत्पश्चात् आपने सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से शास्त्री तथा पुराणेतिहास, साहित्य, वेद और व्याकरण—इन चार विषयों में आचार्य की परीक्षायें उत्तीर्ण कीं। 'शतपथ-ब्राह्मण में प्रतीक विधानः एक विवेचनात्मक अध्ययन' विषय पर शोध कार्य कर आपने पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

ले. का.—काव्याञ्जलि, गीता पद्यानुवाद (मोहन मंत्र), गायत्री रहस्यम्, काव्यालोकः, वीर हकीकतराय (संस्कृत नाटक)

व. प.—द्वारा-डा. सुरेन्द्रनाथ शर्मा, १० केला बाग, बरेली (उ. प्र.)।

□□

परिशिष्ट—१

दण्डी स्वामी विरजानन्द सरस्वती प्रणीत साहित्य

स्वामी दयानन्द के विद्या गुरु दण्डी विरजानन्द अपने युग के महान् वैयाकरण तथा आर्ष विद्या को पुनः प्रतिष्ठित करने हेतु कृतसंकल्प मनस्वी महापुरुष थे। उन्होंने अपने जीवन काल में संस्कृत व्याकरण विषयक तीन ग्रन्थ लिखे जो अप्रकाशित हैं। इनका विवरण इस प्रकार है—

१. शब्द बोध—यह उनके अलवर निवास काल की रचना है। सम्भवतः अलवर नरेश महाराजा विनयसिंह को संस्कृत का बोध कराने के लिये यह ग्रन्थ लिखा गया था। इसकी मूल पाण्डुलिपि अलवर के राजकीय म्यूजियम में विद्यमान है।

२. पाणिनीय सूत्रार्थप्रकाश—यह मथुरा निवास काल की रचना है।

३. वाक्य मीमांसा—नागेश भट्ट के परिभाषेन्दुशेखर के खण्डन में यह ग्रन्थ लिखा गया था।

ग्रन्थ संख्या २ और ३ की पाण्डुलिपियां स्वामी दयानन्द के सहपाठी और दण्डीजी के शिष्य पं. उदयप्रकाश के पास रहीं। वहां से पं. अखिलानन्द शर्मा ने इनकी प्रतिलिपियाँ प्राप्त कीं। पं. अखिलानन्द की प्रतियों से स्व. डा. हरिदत्त शास्त्री ने उक्त दोनों ग्रन्थों की प्रतिलिपि प्राप्त कीं। हमारी सूचना के अनुसार इन दो ग्रन्थों की प्रतिलिपियाँ सार्वदेशिक सभा के पास भी हैं।

परिशिष्ट—२

आर्यसाहित्य के पोषक और संरक्षक

(१) चौधरी प्रतापसिंह, राय साहब

आर्य साहित्य के प्रबल प्रचारक चौधरी प्रतापसिंह का जन्म ९ जनवरी १९०४ को जिला मुलतान (पाकिस्तान) के कस्बा शुजाबाद के एक सम्पन्न जमींदार चौधरी नारायणसिंह के यहां हुआ। पाकिस्तान (जिला शाहपुर) में उनकी विशाल भू सम्पत्ति तथा अचल सम्पत्ति थी। देश विभाजन के पश्चात् चौधरी जी ने करनाल (हरयाणा) को अपना स्थायी निवास बनाया और अपने पिता रा. ब. नारायणसिंह की स्मृति में चौधरी नारायणसिंह धर्मार्थ ट्रस्ट की स्थापना की। आर्यसमाज के साहित्य के प्रकाशन तथा प्रचार में उनकी प्रबल रुचि थी। वे लेखन कार्य को सदा प्रोत्साहन देते थे। एतदर्थ आर्य लेखकों की आर्थिक सहायता करने के साथ-साथ वे उन्हें यथावसर पुरस्कार देकर सत्कृत भी करते थे।

स्वस्थापित नारायणसिंह ट्रस्ट से उन्होंने पं. युधिष्ठर मीमांसक सम्पादित दयानन्दीय ऋग्वेद भाष्य (३ खण्ड) तथा पं. विश्वनाथ विद्यालंकार रचित अथर्ववेद के कुछ काण्डों के भाष्य प्रकाशित कराये। दयानन्द-निर्वाण शताब्दी के अवसर पर उन्होंने अनेक लेखकों तथा आर्य साहित्य के प्रकाशकों को सम्मानित एवं पुरस्कृत किया। वे आर्य प्रादेशिक सभा के उपप्रधान तथा परोपकारिणी सभा के सदस्य थे। उन्होंने करनाल तथा दिल्ली में पुस्तकालय स्थापित किये तथा स्वव्यय से उनका संचालन किया। २७ जुलाई १९८५ को साहित्य प्रेमी चौधरीजी का निधन हो गया।

आर्ष साहित्य के प्रेमी, प्रचारक तथा प्रकाशक

लाला दीपचन्द आर्य

स्वामी दयानन्द के अनन्य अनुयायी, आर्ष साहित्य के प्रति प्रगाढ़ आस्थावान तथा आर्य सामाजिक लेखन के पोषक एवं संरक्षक लाला दीपचन्द आर्य का जन्म भाद्रपद कृष्णा २, सं. १९७४ वि. को गुड़गांव जिले के ग्राम धारुहेड़ा में लाला हरकरणदास के यहां हुआ। आठवीं श्रेणी तक अध्ययन करने के पश्चात् वे जीविकोपार्जन में लग गये तथा अपने असाधारण पुरुषार्थ, परिश्रम तथा अध्यवसाय से व्यवसाय में अपूर्व उन्नति की। १९५९ में आपका साबुन निर्माण का कारोबार सफलता की ऊंचाइयों को छूने लगा। किन्तु लाला जी मात्र द्रव्योपार्जन से ही संतुष्ट होने वाले नहीं थे। वास्तव में वे सरस्वती पुत्र थे।

पं. रामचन्द्र देहलवी के भाषणों को सुनकर लाला दीपचन्द आर्यसमाज की ओर अभिमुख हुए। सत्यार्थ-प्रकाश तथा स्वामी दयानन्द कृत अन्य ग्रंथों के अध्ययन से उनकी आस्था आर्ष ग्रन्थों में अधिकाधिक जागृत हुई और वे महर्षि दयानन्द की ही भांति इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि मानव जाति का सर्वविध कल्याण और परित्राण आर्ष विद्या के पुनः प्रचार से ही सम्भव है। फलतः उन्होंने १९६६ में आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट की स्थापना की और इसके लिये अपने व्यवसायगत लाभ की एक निश्चित राशि रक्खी। लालाजी के मार्गदर्शन में स्वामी दयानन्द के लगभग सभी ग्रंथों के प्रामाणिक, सटिप्पण संस्करण प्रकाशित हुए तथा उनके ऋग् तथा यजुभाष्य पर 'भाष्य-भास्कर' नामक प्रौढ़ व्याख्या ग्रंथों का प्रकाशन हुआ।

आर्ष साहित्व प्रचार ट्रस्ट ने योगदर्शन, मनुस्मृति तथा उपनिषदादि शास्त्रों के भी सुन्दर टीका युक्त संस्करण प्रकाशित किये। स्वामी दयानन्द के प्रथम जीवनचरित दयानन्द दिग्विजयार्क का संक्षिप्त सम्पादित संस्करण तथा पं. लेखराम कृत ऋषि के बृहद् जीवनचरित को हिन्दी में अनुवाद कराकर प्रकाशित करना लाला दीपचन्द की ऋषि भक्ति का प्रबल प्रमाण है। १९७३ में उन्होंने 'दयानन्द संदेश' नामक मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया। इसके द्वारा महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों की पुष्टि में उच्च कोटि के लेख प्रकाशित किये जाते हैं। आर्ष-साहित्य के इस महान् प्रेमी तथा पोषक का निधन पौष शुक्ला २, २०३८ वि. (२८ दिसम्बर १९८१) को हो गया।

परिशिष्ट—३

भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों में सम्पन्न ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज विषयक पी-एच. डी. के लिये स्वीकृत शोध-प्रबंध

दयानन्द शोध पीठ, पंजाब विश्वविद्यालय : शोध कार्य का विवरण

क्र. सं.	शोधकर्त्ता	विषय	वर्ष	निर्देशक
१.	आनन्दकुमार	वैदिक संहितानामालोके महर्षि दयानन्दीय त्रैतसिद्धान्तस्य पर्यालोचनम्	१९८०	डा. रामनाथ वेदालंकार
२.	विक्रमकुमार	स्वामी दयानन्द कृत संस्कारविधौ विवाहगृहाश्रम प्रकरणयोऽध्ययनम्	१९८१	डा. रामनाथ वेदालंकार
३.	विशम्भरदास धवन	Study of Mysticism and Symbolism in the Aitareya and Taittiriya Aranyakas.	१९८२	डा. रामनाथ वेदालंकार तथा डा. जयदेव विद्यालंकार
४.	वेदपाल वर्णी	माध्यन्दनीयशतपथदयानन्दीययाजुषभाष्ययोंतुलनात्मकमध्ययनम् (शतपथ ब्राह्मण एवं दयानन्दीय यजुर्वेद भाष्य का तुलनात्मक अध्ययन)	१९८५	डा. भवानीलाल भारतीय
५.	राजपालसिंह	आर्यसमाज के प्रमुख विद्वानों की भारतीय षड्दर्शन को देन	१९८५	,,
६.	धर्मदेव शर्मा	गृह्यसूत्रों के संदर्भ में महर्षि दयानन्दीय संस्कारविधि का अध्ययन	१९८५	,,
७.	वसुन्धरा रिह्वानी	वैदिक देवता—महर्षि दयानन्दकृत यजुर्वेद भाष्य के संदर्भ में।	१९८६	,,
८.	राजपाल नैन	मनुस्मृति में राजधर्म	१९८६	,,
९.	ओमप्रकाश	आर्यसमाज की हिन्दी धार्मिक और दार्शनिक साहित्य को देन	१९८७	,,
१०.	वीणा कल्ला	स्वामी दयानन्द की विचारधारा का हिन्दी काव्य पर प्रभाव	१९८७	,,

क्र. सं.	शोधकर्ता	विषय	वर्ष	निर्देशक
११.	राजकुमार	प्राच्य व्याकरणशास्त्र के प्रचार में महर्षि दयानन्द का योगदान	१९८७	डा. भवानीलाल भारतीय
१२.	कमला	ऋग्वेद में नारी : एक विवेचनात्मक अध्ययन	१९८९	"
१३.	सतीशचन्द्र शर्मा	मनुस्मृति और याज्ञवल्क्य स्मृति : एक आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन।	१९८९	"
१४.	वेदपाल शास्त्री	दयानन्ददीय वाङ्मय में विवेचित राजनैतिक चिन्तन	१९८९	"
१५.	सुरेन्द्रकुमार	वैदिक व्याख्यान—संस्कृत एवं हिन्दी काव्यों में चित्रण और स्वरूप-विवेचन	१९८९	"
१६.	कर्मसिंह शास्त्री	दयानन्दीय वाङ्मय में षड्दर्शन विषयक संदर्भों का आलोचनात्मक अध्ययन	१९९०	"
१७.	रामकृष्ण आर्य	महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों में प्रतिपादित आर्थिक विचारधारा	१९९०	"
१८.	देवेन्द्रनाथ शास्त्री	शुक्ल याजुष सूक्ति विमर्शः	१९९०	"
१९.	उदयभान शास्त्री	वेदाध्ययन में आर्यसमाज का योगदान	१९९०	"
२०.	अनीता वालिया	भारतीय पुनर्जागरण की दार्शनिक पृष्ठभूमि	१९९०	"
२१.	धर्मवीर	दयानन्द सरस्वती के जीवनीपरक संस्कृत काव्यों का आलोचनात्मक अध्ययन	१९९०	"
२२.	निर्मल शर्मा	सायण एवं दयानन्द कृत वेदभाष्यभूमिका का तुलनात्मक अध्ययन	१९९०	"
२३.	नरसिंहचरण पण्डा	Contribution of Maharshi Dayanand and AryaSamaj to Vedang Literature.	१९९०	"
२४.	सुकुमार आर्य	स्वामी दयानन्द की शैली के परवर्ती वेद भाष्यकार : तुलनात्मक अध्ययन	१९९०	"
२५.	उमेश यादव	याजुष मंत्रों में अध्यात्म भावना : एक आलोचनात्मक अनुशीलन	१९९०	"
२६.	बलराज शर्मा	मनुस्मृति में विवेचित व्यवहार-पदों का अन्य स्मृतियों से तुलनात्मक अध्ययन	१९९०	"

क्र. सं.	शोधकर्त्ता	विषय	वर्ष	निर्देशक
२७.	नरेशकुमार शास्त्री	पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय की भारतीय दर्शन को देन	१९९०	डा. भवानीलाल भारतीय
२८.	दिनेशचन्द्र शास्त्री	स्वामी दयानन्दकृत आर्याभिविनय की परम्परा में रचित वेदव्याख्या ग्रन्थ	१९९०	"
२९.	निरोत्तमा शर्मा	महर्षि दयानन्द प्रणीत ग्रन्थ, शास्त्रार्थ एवं प्रवचन: एक समीक्षात्मक अध्ययन	१९९०	"
३०.	सविता कुमारी	स्वामी दयानन्द के अनुवर्ती विद्वानों का उपनिषद् व्याख्या-कार्य	१९९०	"
३१.	पिनाकपाणि शर्मा	गोपथ ब्राह्मणगत निर्वचनों का अनुशीलन	कार्यरत	"
३२.	अशोक कुमार आर्य	आर्यसमाज का हिन्दी जीवनी साहित्य को योगदान	"	"
३३.	शान्तिकुमार शर्मा	ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में यज्ञ का स्वरूप	"	"
३४.	योगेन्द्रकुमार	शतपथ निरुक्तव्याकरणशास्त्रालोके दयानन्दीय याजुष-भाष्यालोचनम् ।	"	"
३५.	नरेशकुमार बत्रा	वार्तिक परिप्रेक्ष्ये कात्यायनस्य समीक्षात्मकध्ययनम्	"	"
३६.	निर्मल शर्मा	महीदास के भाष्य के संदर्भ में शौनकीय चरणव्यूह का आलोचनात्मक अध्ययन ।	"	"

	विश्वविद्यालय एवं विषय	शोधकर्त्ता	वर्ष	प्रकाशित/अप्रकाशित
	जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू			
१.	महर्षि दयानन्द प्रतिपादित त्रैतवाद का उद्भव और विकास	योगेन्द्रकुमार शास्त्री	१९७९	प्रकाशित
	पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़			
१.	स्वामी दयानन्द सरस्वती कृत ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका (अंग्रेजी) (आलोचनात्मक प्राक्कथन तथा व्याख्यात्मक टिप्पणियों सहित अंग्रेजी अनुवाद)	परमानन्द		प्रकाशित

	विश्वविद्यालय एवं विषय	शोधकर्त्ता	वर्ष	प्रकाशित/अप्रकाशित
२.	British Policy Towards AryaSamaj (1857-1920)	Shiv Kumar Gupta	१९८४	अप्रकाशित
३.	प्रेमचन्दकालीन हिन्दी उपन्यासों पर आर्य-समाज का प्रभाव	ओमपाल शास्त्री		अप्रकाशित
	कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र			
१.	स्वामी दयानन्द कृत अष्टाध्यायी भाष्य का समीक्षात्मक अध्ययन	ईश्वरदत्त	१९८०	अप्रकाशित
२.	महर्षि दयानन्द कृत यजुर्वेद भाष्य में सामाजिक एवं राजनैतिक संदर्भ	परमजीत कौर	१९८२	प्रकाशित
३.	मोक्ष की धारणा तथा ऋषि दयानन्द	स्वर्ण प्रभा	१९८२	अप्रकाशित
४.	पुराणों का महत्त्व और स्वामी दयानन्द		१९८२	अप्रकाशित
५.	वैदिक रुद्र और स्वामी दयानन्द : एक परिशीलन	ब्रजमोहन	१९८६	अप्रकाशित
६.	सायण तथा स्वामी दयानन्द कृत ऋग्वेद भाष्य-भूमिकाओं का तुलनात्मक अध्ययन	जयदेव	१९८९	अप्रकाशित
	राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर			
१.	वेदभाष्य पद्धति को दयानन्द सरस्वती की देन	सुधीरकुमार गुप्त	१९५७	प्रकाशित
२.	Contribution of AryaSamaj in the Making of Modern India (1875–1947) (आधुनिक भारत के निर्माण में आर्यसमाज का योगदान)	राधेश्याम पारीक	१९६५	प्रकाशित
३.	आर्यसमाज का संस्कृत भाषा और साहित्य को योगदान	भवानीलाल भारतीय	१९६८	प्रकाशित
४.	हिन्दी भाषा और साहित्य के विकास में आर्यसमाज की पत्र-पत्रिकाओं का योगदान	मदनमोहन जावलिया	१९७४	अप्रकाशित
५.	स्वामी दयानन्द के चरितमूलक हिन्दी प्रबन्ध-काव्य	ओमशरण विजय	१९८७	अप्रकाशित

	विश्वविद्यालय एवं विषय	शोधकर्त्ता	वर्ष	प्रकाशित/अप्रकाशित
	जोधपुर विश्वविद्यालय, जोधपुर			
१.	राजपुताना में स्वामी दयानन्द और आर्यसमाज (१८६५-१९४७)	राधेश्याम टेलर	१९८०	अप्रकाशित
२.	महर्षि दयानन्द कृत ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका का समालोचनात्मक अध्ययन	कृष्णपालसिंह	१९८३	अप्रकाशित
	गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार			
१.	आचार्य रामानुज तथा महर्षि दयानन्द की दार्शनिक मान्यताओं का तुलनात्मक अध्ययन	रमेशदत्त	१९७५	अप्रकाशित
२.	महर्षि दयानन्द सरस्वती के यजुर्वेद भाष्य का उव्वट, सायण और महीधर भाष्यों के साथ तुलनात्मक अध्ययन	दिवाकर शर्मा	१९७७	"
३.	Political Thought of Swami Dayanand.	शान्ता मल्होत्रा	१९७७	"
४.	महर्षि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य में समाज का स्वरूप	सत्यव्रत राजेश	१९७७	"
५.	प्रेमचन्द साहित्य पर आर्यसमाज का प्रभाव	सुरेन्द्रसिंह कादियाण	१९८१	"
६.	महर्षि दयानन्द की बृहत्त्रयी : आलोचनात्मक अध्ययन (अंग्रेजी)	सत्यप्रकाश रामबहल	१९८४	"
७.	मौर्यकालीन राजनीतिक चिन्तन के परिप्रेक्ष्य में ऋषि दयानन्द के राजदर्शन का अध्ययन	साधना सिपाहा	१९८४	"
८.	प्राचीन भारतीय नारी शिक्षा एवं महर्षि दयानन्द का योगदान	अरुणा मिश्र	१९८५	"
९.	महर्षि दयानन्द कृत यजुर्वेद भाष्य के प्रथम दस अध्यायों का व्याकरण की दृष्टि से समालोचनात्मक अध्ययन	केशवप्रसाद उपाध्याय	१९८६	"
१०.	शंकराचार्य, मध्वाचार्य तथा दयानन्द का तुलनात्मक दार्शनिक परिशीलन	नामदेव दुधारे	१९८६	"

	विश्वविद्यालय एवं विषय	शोधकर्त्ता	वर्ष	प्रकाशित/अप्रकाशित
११.	महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य के परिप्रेक्ष्य में इन्द्र देवता का अध्ययन	सुक्रामा	१९८७	अप्रकाशित
१२.	महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य के परिप्रेक्ष्य में अग्नि-देवता का अध्ययन	सुमेधा	१९८७	,,
१३.	महर्षि दयानन्द के परिप्रेक्ष्य में महाभारत में निर्दिष्ट धर्मों व दर्शनों का समीक्षात्मक अध्ययन	राजकुमारी शर्मा	१९८७	,,
१४.	महर्षि दयानन्द के ऋग्वेद भाष्य का यौगिक प्रक्रिया के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन	आनन्दकुमार	१९९०	,,
	मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ			
१.	भारतीय राष्ट्रवाद एवं आर्यसमाज आन्दोलन (१८७५-१९२०)	विजेन्द्रपाल सिंह		अप्रकाशित
२.	ऋषि दयानन्द और महात्मा गांधी के समाज-दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन	—	१९८५	अप्रकाशित
३.	स्वामी दयानन्द का समाज दर्शन : एक समीक्षात्मक अध्ययन	—	१९८६	अप्रकाशित
४.	पंजाब एवं पश्चिमी उत्तरप्रदेश में आर्यसमाज का राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदान	नूतन माहेश्वरी	१९८६	अप्रकाशित
५.	स्वामी दयानन्द के वेदभाष्य की दार्शनिक समीक्षा	ओमदत्त शर्मा		प्रकाशित
६.	पंजाब को आर्यसमाज का शैक्षिक योगदान (१८८३-१९४७)	धर्मदेव विद्यार्थी	१९९०	अप्रकाशित
	लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ			
१.	हिन्दी भाषा और साहित्य को आर्यसमाज की देन	लक्ष्मीनारायण गुप्त	१९५७	अप्रकाशित
२.	Swami Dayanand and Indian Nationalism (स्वामी दयानन्द एवं भारतीय राष्ट्रवाद)	शान्ति देवबाला		
	आगरा विश्वविद्यालय, आगरा			
१.	स्वामी दयानन्द का वैदिक ईश्वरवाद	अमरसिंह	१९७०	प्रकाशित
२.	दयानन्द दर्शन	वेदप्रकाश गुप्त	१९७१	प्रकाशित

	विश्वविद्यालय एवं विषय	शोधकर्त्ता	वर्ष	प्रकाशित/अप्रकाशित
३.	स्वामी दयानन्द कृत यजुर्वेद भाष्य का उव्वट-महीधर कृत यजुर्वेद भाष्य से तुलनात्मक अध्ययन	रमासिंह		अप्रकाशित
४.	महर्षि दयानन्द एवं मोक्ष तथा मुक्ति मार्ग	रवीन्द्रकुमार		अप्रकाशित
५.	महर्षि दयानन्द और राष्ट्रीय उत्थान में उनका योगदान	सत्यवीर गौतम	१९८२	अप्रकाशित
	रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली			
१.	The structural and Functional Analysis of the AryaSamaj : A Study in Sociology of Religion.	जयपाल आर्य		अप्रकाशित
	(आर्यसमाज का संरचनात्मक तथा प्रकार्यात्मक विश्लेषण—धर्म के समाज दर्शन का अध्ययन)			अप्रकाशित
२.	स्वतन्त्रता आन्दोलन में बिजनौर जिले की भूमिका (आर्यसमाज के विशेष संदर्भ में)	सरोज सीसोदिया		अप्रकाशित
	गढ़वाल विश्वविद्यालय, देहरादून			
१.	आर्यसमाज और उसका कार्यकलाप (१८७५-१९४७ मेरठ कमिश्नरी)	गुलशनस्वरूप सक्सेना		अप्रकाशित
	काशी विद्यापीठ, वाराणसी			
१.	आचार्य महीधर और स्वामी दयानन्द का माध्यन्दिन भाष्य	प्रशस्यमित्र शास्त्री	१९८२	प्रकाशित
	अवध विश्वविद्यालय, फैज़ाबाद			
१.	स्वामी दयानन्द का राजनीतिक दर्शन	लालसाहब सिंह	१९८८	प्रकाशित
	बरहामपुर विश्वविद्यालय, बरहामपुर (उड़ीसा)			
१.	The Contribution of Maharshi Dayanand Saraswati to Indian National Movement.	दण्डेश्वर दास	१९८०	अप्रकाशित
	महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ोदरा			
१.	A Critical study of the Contribution of AryaSamaj to Indian Education.	सरस्वती पण्डित	१९७४	प्रकाशित

	विश्वविद्यालय एवं विषय	शोधकर्ता	वर्ष	प्रकाशित/अप्रकाशित
	(आर्यसमाज की भारतीय शिक्षा को देन : एक आलोचनात्मक अध्ययत)			
	भोपाल विश्वविद्यालय, भोपाल			
१.	दयानन्द : जीवनी तथा हिन्दी रचनायें	रामप्रकाश		अप्रकाशित
२.	दयानन्द सरस्वती द्वारा पुनः प्रस्तुत वैदिक राज-दर्शन	रामेश्वरदयाल गुप्त	१९७६	प्रकाशित
	रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर			
१.	भारत (विशेषकर मध्यप्रदेश) में आर्यसमाज की शैक्षणिक गतिविधियों का समालोचनात्मक अध्ययन	मंजुला शर्मा		अप्रकाशित
	जीवाजीराव विश्वविद्यालय, ग्वालियर			
१.	भारतीय राष्ट्रीय जागरण में आर्यसमाज का योगदान	रघुवीरसिंह तोमर	१९८१	अप्रकाशित
	विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन			
१.	स्वामी दयानन्द : वेद भाष्यकार के रूप में	राधेश्याम मिश्र		
	शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापुर			
१.	आर्यसमाज की हिन्दी गद्य साहित्य को देन	चन्द्रभानु सीताराम सोनवणे	१९७४	प्रकाशित
	भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर			
१.	The AryaSamaj and Indian Nationalism. (1875–1920) (आर्यसमाज और भारतीय राष्ट्रवाद १८७५-१९२०)	धनपति पाण्डेय	१९७०	प्रकाशित
२.	AryaSamaj Movement in Bihar.	ब्रजमोहनकुमार	१९८८	अप्रकाशित
३.	Contribution of Dayanand Saraswati to Bihar.	प्रतिमा कुमारी	१९८९	अप्रकाशित
४.	The AryaSamaj Versus Christianity in South Bihar.	लाडली लाल	कार्यरत	

	विश्वविद्यालय एवं विषय	शोधकर्त्ता	वर्ष	प्रकाशित/अप्रकाशित
५.	Dayanand Saraswati and Mahatma Gandhi: A Comparative Study.	विपिन यादव	कार्यरत	
६.	The AryaSamaj and Untouchability.	जाफर अब्बास	"	
७.	The AryaSamaj and National Education.	हरिनन्दनप्रसाद	"	
	पटना विश्वविद्यालय, पटना			
१.	सायण तथा दयानन्द के वेद भाष्यों का तुलनात्मक अध्ययन	विमला	१९७४	प्रकाशित
२.	आधुनिक भारत के शिक्षा विकास में आर्यसमाज की भूमिका			
	बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर			
१.	बिहार में आर्यसमाज का शैक्षणिक योगदान (१९१२-१९४७)		१९८८	अप्रकाशित
	रांची विश्वविद्यालय, रांची			
१.	वैदिक दर्शन : एक अध्ययन—महर्षि दयानन्द के विशेष संदर्भ में	जयदेव वेदालंकार	१९८५	अप्रकाशित डी. लिट. के लिये
२.	महर्षि दयानन्द प्रतिपादित त्रैतवाद का समीक्षात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन	बालकेश्वर वैश्य	१९८९	अप्रकाशित

Dissertations on the Educational Work of the AryaSamaj

No.	Dissertation	Author	Year	Status
1.	Osmania University Hyderabad. M. Ed. Dissertation— Education in Ancient Gurukulas.	B: R. Joshi	1953	Unpublished
2.	Rajasthan University, Jaipur, M. Ed. Dissertation— The Gurukul system of Education.	V. B. Lal Mathur	1953	do
3.	Banaras Hindu University, Varanasi, Ph. D. Thesis— The Gurukul system of Education and its application to modern Times.	B. Sharan.	1954	do
4.	Patna University, Patna (M. Ed. Diss.)— Educational Ideas of Dayanand Saraswati.	Asha Kumari	1958	do
5.	Panjab University, Chandigarh (M. Ed. Diss.)— Educational Philosophy of Swami Dayanand	D. N. Bhan	1963	do
6.	Jialal Institute of Education (Dayanand College), Ajmer (M. Ed. Dissertation)— Contribution of Swami Dayanand to Indian Education.	R. K. Chaudhry	1971	do

Research Work done in Foreign Universities

CALIFORNIA UNIVERSITY BERKLEY

AryaSamaj as an Educational Movement.	Lal Chand Mehra	1925

YALE UNIVERSITY

The AryaSamaj as a Reformation in Hinduism with Special Reference to Caste.	Graham, James Reid	1943

DUKE UNIVERSITY

Aspects of Hindu Muslim Relations in British India–A Study of the AryaSamaj-activities, Govt. of India Policies and Communal Conflict in India.	G. Thursby	1972

UNIVERSITY OF TRINIDAD

AryaSamaj in Trinidad : A Historical study of Organisational Behaviour in Acculturative conditions.	D. Richard Huntignton Fobers. (Rameshwar)	1989

परिशिष्ट—४

स्वामी दर्शनानन्द रचित ट्रैक्टों की सूची

१. ईश्वर विषयक—

१. ईश्वर विचार ३ भाग, २. ईश्वर प्राप्ति, ३ भाग, ३. ईश्वर का भय, ४. ईश्वर पूजा, ५. ईश्वर सिद्धि व प्राप्ति, ६. ईश्वर की उपासना क्यों कर की जावे ? ७. आस्तिक किसे कहते हैं ?

२. आत्मा विषयक—

१. आत्म शिक्षा-२ भाग, २. आत्म बल, ३. आत्मिक बल, ४. आत्म ज्ञान प्रकाश, ५. जीवात्मा के अस्तित्व (सत्ता) में प्रमाण ६. मनुष्य और पशुओं का जीवात्मा एक है या नहीं ?, ७. जीवात्मा द्रव्य है या गुण ।

३. वेद विषयक—

१. वेदों की आवश्यकता, २. वेद का विषय, ३. वेदों का महत्त्व, ४. ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता, ५. वेदों का आविर्भाव किस प्रकार हुआ ?, ६. वेद किस पर प्रकट हुए ?, ७. क्या वेदों को पढ़ने का अधिकार सबको नहीं ?, ८. ऋग्वेद का प्रथम मंत्र, ९. बाबा नानक और वेद ।

४. दर्शनशास्त्र और दार्शनिक विषयक—

१. षड्दर्शनों की उत्पत्ति, २. षड्दर्शनों की उत्पत्ति का क्रम ३. मुक्ति व्यवस्था ४. मुक्ति और पुनरावृत्ति ५. कर्म-व्यवस्था, ६. सृष्टि प्रवाह से अनादि है, ७. प्रकृति का अनादित्व, ८. अकाल मृत्यु, ९. अकाल मृत्यु-मीमांमा, १०. स्थावर में जीवविचार, ११. भोगवाद, १२. पुनर्जन्मवाद, १३. प्रश्नोत्तर नवीनवेदान्ती, १४. नवीन व प्राचीन वेदान्त, १५. वेदान्ती-आर्य शास्त्रार्थ, १६. नवीन वेदान्त की बुनियाद और उसकी रिव्यू ।

५. स्वामी दयानन्द विषयक—

१. स्वामी दयानन्द का उद्देश्य २ भाग, २. शंकराचार्य और स्वामी दयानन्द, ३. बाबा गुरु नानक साहब और स्वामी दयानन्द, ४. स्वामी दयानन्द और वृक्षों में जीव, ५. तत्त्ववेत्ता ऋषि की कथा-४ भाग ।

६. आर्य सिद्धान्त विषयक—

१. वर्ण व्यवस्था, २. आश्रम व्यवस्था, ३. यज्ञ, ४. मांस भक्षण निषेध, ५. मांस मनुष्य का प्राकृतिक भोजन नहीं ।

७. वैदिक धर्म और आर्यसमाज विषयक—

१. वैदिक धर्म सब मतों की उत्तमताओं का केन्द्र है, २. वैदिक धर्म सर्वश्रेष्ठ है, ३. समाज किस प्रकार चल सकता है ?, ४. आर्यसमाज क्या है ?, ५. आर्यसमाज और और सनातन धर्म सभा के बीच प्रश्नोत्तर ।

८. पौराणिक मत खण्डन—

१. सनातन धर्म का चरखा, २. श्राद्ध व्यवस्था, ३. मृतक-श्राद्ध, ४. मृतक श्राद्ध खण्डन, ५. मूर्तिपूजा खण्डन, ६. पितृ-श्राद्ध पर विचार, ७. सनातन धर्म सभा से प्रश्न ।

९. विविध विषय—

१. महा अंधेर रात्रि, २. भोला यात्री (भोला मुसाफिर), ३. अविद्या के चार अंग, ४. रामायण सार, ५. कनफुकवे गुरु, ६. धर्म शिक्षा, ७. बाल शिक्षा, ८. शिक्षा प्रणाली, ९. निःशुल्क शिक्षा से जगत् का कल्याण, १०. क्या हम जीवित हैं ?, ११. अधिक रोगी कौन ?, १२. सईस का नाम रईस, १३. अक्ल के अंधे और गांठ के पूरे, १४. हम रूहानी डाक्टर हैं, १५. गोहत्या कौन करता है ?, १६. पात्र, १७. पाप और पुण्य, १८. देह ब्रह्माण्ड का नक्शा है, १९. मिथ्या अभिमान और धर्म का नाश, २०. डाकू, २१. क्या शतपथ आदि में मिलावट नहीं ?, २२. नवयुवको उठो, २३. धोखे से बचो, २४. मुफ्त तालीम, २५. कर्मकाण्ड, २६. नुस्खा तबाहिए हिन्द, २७. भारतवर्ष की उन्नति का सच्चा उपाय, २८. हम मृत्यु से क्यों डरते हैं, २९. स्वराज्य और शान्ति, ३०. धोखेबाजी से बचो, ३१. रिफार्मर, ३२. अधर्म का उतार चढ़ाव, ३३. तांबे से सोना, ३४. असली कंगाल, ३५. कायर नेताओं के कारण शूरवीरों का दल भी अपकीर्ति पाता है, ३६. हमारा निरादर होगा, ३७. इल्हाम का द्वार खुल गया, ३८. साकार निराकार विचार, ३९. ज्ञान-गुटका

४०. धर्म प्रचार, ४१. तर्क सिद्धान्त, ४२. प्रश्नोत्तर, ४३. अन्तरात्मा का खून, ४४. मेंढकी को जुकाम, ४५. सुख का एक मात्र उपाय, ४६. भ्रान्ति से बचो, ४७. अहिंसा प्रचार, ४८. हम विज्ञान पढ़ें या दर्शन ?, ४९. मनुष्य व सिंह का शास्त्रार्थ, ५०. नित्यकर्म विधि, ५१. आर्य पथिक (आर्य मुसाफिर), ५२. आर्य धर्म सभा की योजना।

१०. शास्त्रार्थ ग्रन्थ—

१. तकज़ीबे हक प्रकाश (मौलवी सनाउल्ला कृत हक प्रकाश का उत्तर) २. वेद और बाइबिल (पादरी ज्वालासिंह कृत दयानन्द वेदोक्त धर्म का उत्तर) ३. आगरा शास्त्रार्थ, ४. देवरिया शास्त्रार्थ, ५. शास्त्रार्थ स्वामी दर्शनानन्द का मौलवी सनाउल्ला के साथ ६ मुकाबिल खूब है।

११. स्फुट ग्रन्थ—

(जिनका उल्लेख पूर्व नहीं हो सका) शंकराचार्य के मोह मुद्गार, कौपीन पंचक, यति पंचक, आत्मपूजा, प्रश्नोत्तरी तथा निरञ्जनाष्टक का भाषानुवाद, मनुस्मृति टीका, चाणक्यनीति भाषा टीका, भर्तृहरिकृत शतकत्रय की भाषा टीका।

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय रचित ट्रैक्ट साहित्य

प्रथम माला—प्रत्येक ट्रैक्ट में १६ पृष्ठ

१. ईश्वर और उसकी पूजा
२. हमारे बच्चों की शिक्षा
३. प्राचीन आर्यावर्त
४. हमारा धर्मशास्त्र
५. हमाराधर्म
६. घर की देवी
७. राजा और प्रजा
८. हमारी देशसेवा
९. हमारा बिछुड़े भाई
१०. सच्ची बात
११. हमारा संगठन
१२. मुसलमानी मत की आलोचना
१३. राम भक्ति का रहस्य
१४. हमारे स्वामी
१५. ईसाई मत की आलोचना
१६. कुम्भ माहात्म्य
१७. देवी देवता
१८. धार्मिक भूलभुलैया
१९. जिन्दा लाश
२०. हमारा भोजन
२१. दलितोद्धार
२२. वैदिक सन्ध्या
२३. हवन विधि
२४. प्रार्थना भजन
२५. वैदिक प्रार्थना
२६. वेदोपदेश
२७. मूर्तिपूजा
२८. अवतार
२९. आर्यसमाज क्या है ?
३०. जीवरक्षा
३१. नशा
३२. अछूतों का प्रश्न
३३. ब्रह्मचर्य
३४. हमारा बनाने वाला
३५. संस्कार
३६. आनन्द का स्रोत
३७. हिन्दुओं के साथ विश्वासघात
३८. स्वामी दयानन्द की दो भारी भूलें
३९. हिन्दू जाति का भयंकर भ्रम
४०. मुसलमान भाइयों के सोचने योग्य बातें
४१. कलियुग
४२. ग्रहण
४३. साधु संन्यासी
४४. जीवन क्या है ?
४५. गुरु माहात्म्य
४६. पुनर्जन्म
४७. अद्भुत चमत्कार
४८. पितृयज्ञ

४९. लोग क्या कहते हैं ?
५०. स्वामी दयानन्द की सूक्तियाँ
५१. ईश्वर और जीव का सम्बन्ध
५२. पञ्चयज्ञ महिमा
५३. वेदों में ईश्वर का स्वरूप
५४. यज्ञोपवीत या जनेऊ
५५. धर्म से होने वाली कल्पित हानियाँ
५६. भेड़िया धसान
५७. यज्ञ के सामान्य मन्त्र
५८. आर्यसमाज की सार्वजनिकता
५९. दलित जातियाँ और नया प्रश्न
६०. वैदिक त्रैतवाद
६१. ईसाई मत की समीक्षा
६२. तुम कौन हो ?
६३. तुम्हारी भाषा क्या है ?
६४. तुम्हारा धर्म क्या है ?
६५. शुद्धि पद्धति
६६. मुर्दा क्यों जलाना चाहिए ?
६७. गाजी मियाँ की पूजा

द्वितीय माला—प्रत्येक ट्रैक्ट में ८ पृष्ठ

१. मौलवी साहब और जगतसिंह
२. हिन्दुओ जागो
३. हिन्दू स्त्रियों की लूट का कारण
४. हिन्दू धर्म का नाश
५. ?
६. हिन्दू जाति की रक्षा के उपाय
७. दान की दुर्गति
८. विधवायें और देश का नाश
९. दहेज
१०. दुःखदायी दुर्व्यसन
११. मसजिद के सामने बाजा
१२. हिन्दू मुसलमानों में मेल का प्रश्न
१३. हिन्दुओं का हिन्दुओं के साथ अन्याय
१४. स्वामी दयानन्द का बलिदान
१५. हिन्दुओं पर एक नई आफत
१६. आदि हिन्दू सभा क्या है ?
१७. आदि हिन्दू कौन हैं ?
१८. शारदा एक्ट क्या है ?
१९. आर्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशन का अन्तिम पाठ
२०. डा. अम्बेडकर की धमकी
२१. हिन्दू संगठन का मूल मन्त्र
२२. आर्य गीतावली
२३. आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग
२४. शिवलिंग पूजा पर शास्त्रार्थ

तृतीय माला—अंग्रेजी ट्रैक्ट १६ पृष्ठ

1. The AryaSamaj Introduced.
2. The Vedic Conception of God.
3. The Five Great Sacrifices of the Aryas.
4. The Claims of the AryaSamaj.
5. Between Man and God.
6. The Great Bugbear.
7. The Vedic View of Life.
8. Vedic Womanhood.
9. Shuddhi.
10. The AryaSamaj and Hinduism.
11. The AryaSamaj and the Depressed Classes.
12. The AryaSamaj and Christianity.
13. The AryaSamaj and Islam.

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के ट्रैक्ट (गुजराती में अनूदित)

सांची बात, पितृयज्ञ, (श्राद्ध) दान नी दुर्गति, आपणा बालको नी धर्म शिक्षा, नशाथी नुकशान, हिन्दू जाति नुं भयंकर भ्रम, वेदोक्त धर्म नी विशेषताओ, हिन्दुओ साथे विश्वासघात, भगवान नी याद, हिन्दू जाति ने बचाव-वानो मार्ग, ग्रहो ना गुलाम, अने कुम्भ नो मेलो।

पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय के उर्दू ट्रैक्ट

१. ईश्वर और उसकी पूजा
२. हमारे बच्चों की तालीम

संशोधन एवं परिवर्धन

पृ. १७—पं. आनन्दप्रिय पण्डित का निधन १६ जनवरी १९९१ को हुआ।

पृ. २१—पं. आशुराम आर्य का निधन १० नवम्बर १९९० को हुआ।

पृ. २६—डा. उदयभान शास्त्री का वर्तमान पता-ग्राम बेलरखा (जींद)

पृ. २६—पं. उदयवीर शास्त्री का निधन १७ जनवरी १९९१ को हुआ।

पृ. ३२—स्वामी ओम् प्रेमी चतुर्थाश्रमी का निधन ९ सितम्वर १९९० को हुआ।

पृ. ३८—शुद्ध नाम लाला कालीचरण फर्रुखाबाद पढ़ें।

पृ. ४५—कृष्णलाल कुसुमाकर का निधन १७ नवम्बर १९९० को हुआ।

पृ. ४८—केशवदेव ज्ञानी का वर्तमान पता—बी. २७/८८ दुर्गाकुण्ड रोड, न्यू कालोनी भेलूपुर, वाराणसी २२१००५

पृ. ५१—पं. गंगाधर शास्त्री का जन्म आश्विन पूर्णिमा १९७८ वि. को सारण जिले (बिहार) के ग्राम रीठा में पं. यमुना पाण्डेय के यहाँ हुआ। इनकी शिक्षा शास्त्री तथा व्याकरणाचार्य की हुई। १९४३ से इन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के उपदेशक के रूप में कार्य आरम्भ किया।

ले. का.—वैवाहिककृत्यरहस्यम्, ईशप्रकाश, सच्चिदानन्द कथा, मरणं किम्।

पृ. ५३—पं. गंगाप्रसाद जज की जन्मतिथि वैशाख शुक्ला ३, सं. १९२८ वि. है।

उनके पिता का नाम श्री रामदास तथा पितामह का श्री फकीरचंद था।

पृ. ५६—श्री गणेशनारायण सोमानी की निधन तिथि ८ दिसम्बर १९६१ है।

पृ. ५९—श्रीमती गार्गी माथुर की जन्मतिथि २८ अगस्त १९५४ है।

पृ. ६६—श्री घनश्यामसिंह गुप्त के विशेष अध्ययन के लिये उनकी पुस्तक 'मेरे संस्मरण' द्रष्टव्य है।

पृ. ७७—पं. जगदीशचन्द्र शास्त्री की निधन तिथि १६ जून १९६७ है।

पृ. ११२—पं. वेदप्रकाश के स्थान पर पं. देवप्रकाश पढ़ें।

पृ. ११७—दिवंगत देवेन्द्रनाथ शास्त्री को पं. देवेन्द्रनाथ शास्त्री पढ़ें न कि डा. देवेन्द्रनाथ शास्त्री।

पृ. १२९—डॉ. नरदेव शास्त्री का ग्रन्थ 'पाणिनीय-शब्दार्थसम्बन्ध-सिद्धान्त' १९९० में दिल्ली संस्कृत अकादेमी द्वारा ५१०० रुपये के पुरस्कार से पुरस्कृत हुआ है।

पृ. १८५—डा. मंजुलता विद्यार्थी का जन्म वर्ष १९५४ है।

पृ. २०७—डा. यज्ञवीर ८ जनवरी १९९० को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के संस्कृत विभाग में प्रोफेसर पद पर नियुक्त हुए। उनका वर्तमान पता है—२३ टाइप III महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक (हरयाणा)

पृ. २१७—डा. रणजीतसिंह का जन्म ८ मार्च १९२६ को हिसार जिले के ग्राम नारनौंद में श्री चन्दनसिंह के यहाँ हुआ। इनकी शिक्षा हिन्दी, संस्कृत तथा इतिहास में एम. ए., एल. एल. बी. और पी-एच. डी. तक की है। ले. का.—धर्मप्रवेशिका, धर्मभूषण, हैदराबाद सत्याग्रह में हरयाणा का योगदान (१९९०)

पृ. २३३—पं. रामदयालु शास्त्री का जन्म २ अक्टूबर १९३४ को हुआ। इन्होंने शास्त्री, साहित्याचार्य, विद्या-

भास्कर तथा एम. ए. (संस्कृत) का अध्ययन किया। वे विश्व संस्कृत प्रतिष्ठान नई दिल्ली के मंत्री हैं तथा दिल्ली में संस्कृत के अध्यापक हैं।

पृ. २५५—पं. वंशीधर पाठक १९२८ में गुरुकुल वृन्दावन के सहायक मुख्याधिष्ठाता थे। उन्होंने गुरुकुल संस्था की उपयोगिता का निदर्शन कराते हुए 'गुरुकुल दर्शन' शीर्षक एक पुस्तक लिखी थी।

पृ. २६२—शुद्ध नाम विज्ञान मार्तण्ड वात्स्यायन।

पृ. २६२—पं. विद्यानन्द मन्तकी का जन्म १८८५ में हुआ।

पृ. २७९—डा. वेदप्रकाश उपाध्याय का वर्तमान पता है—विश्वेश्वरानन्द विश्वबंधु संस्कृत तथा प्राच्य विद्या संस्थान, डा. साधु आश्रम, होशियारपुर (पंजाब)

पृ. २८०—डा. वेदप्रकाश वाचस्पति का वर्तमान पता है– २२७, सैक्टर १५ ए. चंडीगढ़

पृ. २९१—शिवचन्द्र के द्वारा लिखित ग्रन्थ—The Case of AryaSamaj in Hyderabad, The case of Satyartha prakash in Sind.

पृ. २९७—शुद्ध नाम श्यामलदास

पृ. ३०७ पं. सत्यकाम विद्यालंकार का निधन १४ मार्च १९९१ को हुआ।

पृ. ३३०—डा. सुनीता के स्थान पर डा. सुनीति पढ़ें।

पृ. ३६४—डा. लक्ष्मीनारायण गुप्त का शोध प्रबन्ध प्रकाशित हो चुका है।

आर्थिक सहयोग

आर्य लेखक कोश के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग निम्न महानुभावों तथा संस्थाओं से सधन्यवाद प्राप्त

२००० रु. स्वामी सर्वानन्दजी दयानन्द मठ, दीनानगर।
२००० रु. श्री गजानन्दजी आर्य, कलकत्ता।
२००० रु. श्री घनश्यामदासजी गोयल, बैंगलोर।
१००० रु. पं. युधिष्ठिरजी मीमांसक, बहालगढ़।
१००० रु. श्री फूलचन्दजी आर्य, कलकत्ता।
१००० रु. श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़।
१००१ रु. श्रीमती राज सूरी, चण्डीगढ़।
१००० रु. श्रीमती लाजवन्ती अग्निहोत्री, दिल्ली।
१००० रु. श्री महेन्द्रकुमार कपूर, बम्बई।
१००० रु. डा. हरिश्चन्द्र, पुणे।
१००० रु. आर्यसमाज सैक्टर ७ चण्डीगढ़।
१००० रु. आर्यसमाज सैक्टर १६ चण्डीगढ़।
१००० रु. आर्यसमाज सैक्टर २२ चण्डीगढ़।
१००० रु. आर्यसमाज विधानसरणी, कलकत्ता।
१००० रु. आर्यसमाज बड़ा बाजार, कलकत्ता।
१००० रु. आर्यसमाज बड़ा बाजार, पानीपत।
१००० रु. आर्यसमाज दीवानहाल, दिल्ली।
१००० रु. आर्यसमाज दयानन्द बाजार, लुधियाना।
१००० रु. आर्यसमाज, नारनौल।
१००० रु. डी. ए. वी. प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली।
१००० रु. डी. ए. वी. कॉलेज, चण्डीगढ़।
११०० रु. श्री हरिवंशलाल शर्मा, जालंधर।
२५०० रु. आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्यप्रदेश व विदर्भ।
२५० रु. स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती, नई दिल्ली।
५०० रु. आर्यसमाज मद्रास।
५०० रु. श्री कृष्णलाल पोद्दार, बैंगलोर।
५०० रु. श्री कृष्णलाल आर्य, सुन्दरनगर।
५०० रु. श्री विद्याप्रकाश सेठी, दिल्ली।
५०० रु. पार्वती मोहन ट्रस्ट, जयपुर।
५०० रु. श्रीमती कान्ता बत्रा, दिल्ली।
५०० रु. श्री ओमप्रकाश पारीक, अहमदाबाद।
५०० रु. आर्यसमाज. कोटा जंक्शन।
५०० रु. डा. नरसिंह पण्डा, चण्डीगढ।
५०० रु. श्री अशोक आर्य, बड़ौदा।
५०० रु. आर्यसमाज हनुमान रोड़, नई दिल्ली।
५०० रु. श्री हरिदेव आर्य, दिल्ली।

ग्रन्थ के प्रकाशन में सहयोगी बंधु बांधव तथा मित्रगण

सर्वश्री बजरंगलाल माथुर जोधपुर, प्रो. नवलकिशोर माथुर जोधपुर, डा. बी. के. माथुर जोधपुर, जगदीश-प्रसाद माथुर उज्जैन, प्रेम जीतन मॉरिशस, प्रेमप्रकाश भटनागर बरेली, रमेशचन्द्र श्रीवास्तव भिलाई, सुभाष माथुर 'सेठ' जयपुर, जगदीश माथुर 'कमल' जयपुर, रूपचन्द माथुर अजमेर, नारायणलाल माथुर भटिण्डा, कामेश्वरलाल माथुर अबोहर, डा. सुभाष आर. माथुर बीकानेर, बिरदलाल माथुर जोधपुर, प्रेमप्रकाश माथुर बम्बई, सूरजप्रकाश माथुर जोधपुर, सज्जनमल माथुर सोजत सिटी, किशनलाल माथुर, सीकर, डा. पुखराज जैन पाली।

का माध्यम बनाते हैं। इस ग्रन्थ में कोशकार क
यह भी प्रयास रहा है कि आर्य लेखकों द्वारा कि
गये प्राचीन ग्रन्थों के भाष्य, टीका, व्याख्या—
लेखन जैसे प्रयासों के साथ साथ रसात्म
साहित्य को दिये गये उनके योगदान का भ
इसमें समावेश रहे। साथ ही प्रचारात्मक लेखन
उच्चतर शोधकार्य तथा पत्रकारिता से जुड़े लेखक
और मसि जीवियों के सारस्वत अनुष्ठानों
भी इसमें पूर्ण विवरण दिया गया है। प्रस्तु
ग्रन्थ में संस्कृत तथा हिन्दी के अतिरिक्त अ
भारतीय भाषाओं तथा कतिपय यूरोपीय भाषा
में निबद्ध आर्यसमाजी लेखन का यथोपल
विवरण प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया ग
है। इस प्रकार यह ग्रन्थ एक ऐसे सन्दर्भ ग्र
का रूप ले लेता है जो भारतीय नवजागरण
विद्यार्थियों, भारत के सुधार आन्दोलनों
अध्येताओं तथा अन्य शोधार्थियों के लिये सम
रूप से उपयोगी है। लगभग १२०० लेखकों
जानकारी भरी प्रविष्टियों तथा अन्य उपयो
परिशिष्टों से युक्त यह ग्रन्थ लेखक के वर्षों
अध्ययन, अन्वेषण तथा सारस्वत साधना
साररूप नवनीत है।

□□

कोशकार का परिचय

भारतीय नवजागरण में ऋषि दयानन्द तथा आर्यसम[illegible] के अधिकृत व्याख्याता डॉ. भवानीलाल भारतीय अपने विष[illegible] एवं प्रामाणिक विद्वान् माने जाते हैं। १९२८ ई. में उनका ज[illegible] नागौर जनपद के गांव परबतसर में एक मध्यवित्त परिवार में [illegible] उच्चशिक्षा भूतपूर्व मारवाड़ राज्य की राजधानी जोधपुर में हु[illegible] संस्कृत में एम. ए. करने के पश्चात् उन्होंने 'संस्कृत भाषा औ[illegible] आर्यसमाज की देन' विषय लेकर १९६८ में राजस्थान विश्वविद्यालय से [illegible] ऑफ फिलासफी की उपाधि प्राप्त की।

वे अपने युवाकाल से ही आर्यसमाज की साहित्यिक और [illegible] सम्बन्धी प्रवृत्तियों से जुड़े रहे। उनका लेखनकाल चार दशकों की सुदीर्घ अवधि तक विस्तृत है और इस बीच उनके लगभग ७० ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं। उन्होंने आर्य-समाज के ऐतिहासिक और वैचारिक पक्ष को उभारने का सतर्क प्रयास किया है, साथ ही ऋषि दयानन्द के जीवनचरित एवं व्यक्तित्व-विश्लेषण-परक उनके शोधपूर्ण ग्रन्थों की सुधी समाज में सर्वत्र सराहना हुई है। आर्य-समाज विषयक पुरातात्त्विक सामग्री का उन्होंने न केवल गम्भीर अध्ययन ही किया है, अपितु अपने लेखन में उसका उपयोग भी किया है। यही कारण है कि सभी स्वदेशी एवं अन्य देशस्थ शोधकर्मी सम्बन्धित शोधकार्यों में उनसे सहायता एवं परामर्श लेते हैं।

ऋषि दयानन्द द्वारा स्थापित तथा उनकी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के वे गत २१ वर्षों से सदस्य तथा अधिकारी हैं एवं महर्षि के ग्रन्थों के सम्पादन प्रकाशन में उनका मार्गदर्शन सदा से रहा है। उनकी श्रीकृष्णचरित, आर्यसमाज : अतीत की उपलब्धियाँ और भविष्य के प्रश्न, नवजागरण के पुरोधा : दयानन्द सरस्वती तथा श्रद्धानन्द ग्रन्थावली आदि प्रसिद्ध पुस्तकें पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय स्मारक पुरस्कार, पं. लेखराम पुरस्कार, चौधरी नारायणसिंह ट्रस्ट पुरस्कार, आदि से पुरस्कृत हो चुकी हैं। इनके अतिरिक्त भी वे पं. गोवर्धनशास्त्री पुरस्कार (गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी) तथा महर्षि दयानन्द साहित्य पुरस्कार से सम्मानित हुए हैं। पूरे एक दशक तक दयानन्द शोध पीठ पंजाब विश्वविद्यालय के अध्यक्ष एवं प्रोफेसर पद पर रहने के पश्चात् उन्होंने दयानन्द अध्ययन—संस्थान की स्थापना की है और इस संस्था के माध्यम से वे स्वयं को भारतीय पुनर्जागरण के अध्ययन और शोध हेतु समर्पित कर चुके हैं। □